100/3

सूर सागर

पद ५-५११, १-१२०५

थम २ पत्र नहीं

82

827

सूस
3

एजमलीननतिहिहितआपुवधाएहों ॥ वस्त्रकुचीलदुर्व
लछजदेषततकेतदुलपाएहो ॥ संपतिदईवाकीपति
नीकोंमनअभिलाषपुराएहो ॥ जवगजग्रह्यौग्राहज
लभीतरतवहरिनामपुकार्यौहो ॥ गनडछाडिआतुर
कैधाएसोततकालउवार्यौहो ॥ कलानिधानसकलगु
नसागरगुरधौकहापढाएहो ॥ तिहिउपगारमतकसु
तजाचैसोजमपुरतेंल्याएहो ॥ तुममोसेअपराधीमाधौ
केतकमुकतपठाएहो ॥ सूरदासप्रभुभक्तवछलतातें
वावननामकहाएहो ॥ ६ ॥ रागधनासिरी ॥ देषोदेषो
एकसुभाइ ॥ अतिगंभीरउदारअवधिसुरज्ञानसिरोमनि
राइ ॥ तिनुकासोअपनैजनकौगुनमानतमेरसमान ॥
सकुचसमुझिगनतअपराधैवूंदतुल्यभगवान ॥ वदनप्र
सन्नकमलसनमुषकैदेषतहोंतोजैसें ॥ विमुखभए
नअकिरपाविमुषनाफिरिचितवततोतैसें ॥ भक्तविरह
कातरकरुनामैडोलतपाछैलागे ॥ सूरदासऐसेस्वा
मीकौदेहपाविमुअभागे ॥ ७ ॥ रागनट ॥ हरिसेठाकुर
औरनजनकौ ॥ जिहिविधिजिहिसेवकसुषपावैतिहि
तिहिविधिराषतमनकौ ॥ भूषेवहुभोजनजुउदरकौं त्र
षातोयपटतनकौं ॥ लग्योफिरतसुरभीज्योंसुतसंगऔ
चटगानिगहवनकौं ॥ परमउदारचतुरचिंतामनिकौ
टिकुवेरानिरधनकौ ॥ राषतहैजनकीपरतिग्याहाथ
पसारतकनकौं ॥ संकटपरेतुरतउठिधावतपरमसुभ

827

रनिजप्रनकों ॥ कोटिकमैरेएकनहि मानतसूरमहाकृतघ
नको ॥ ८ ॥ रागधनासिरी ॥ हरिसोमीतनदेष्यौकोइ ॥
अंतकालसुमिरतति हिंऔसरआनितिरीछौ होइ ॥ ग्रा
हगहेगजपतिमुकरायौहाथचक्रलेधायौ ॥ तजिवैकुंठ
गरुडतजिश्रीतजिनिकटदासकेआयौ ॥ दुर्वासाकौश्राप
निवारयौअंबरीकपतिराषी ॥ ब्रह्मलोकपरजंतफिरयौ
तहांदेवमुनीजनसाषी ॥ लाषाग्रहतेंजरतपंडसुतजोदि
नाथउवारे । सूरदासप्रभुअपनेंजनके नानात्रासनिवारे
९ ॥ रागधनासिरी ॥ रामभक्तवत्सलनिजपावन ॥ जातगो
तकुलनामगनतनहिरंकहोइकैरांवन ॥ ब्रह्मादिकशिव
कोजानतप्रभुहौअजानन हिजांनौ ॥ मिथ्याजहांतहांप्र
भुनाहीसोमिथ्याकौमानौ ॥ प्रगटषंभतेंदईदिषाई
जदिपकुलकोदांनौ ॥ रघुकुलराघौकृष्णसदापेकीनौ
गोकुलथांनौ ॥ वरनीनजाइभक्तनकीमिहमावारंवारव
षांनौ ॥ ध्रूरजपूतविदुरदासीसुतकौनकौनउरगानौ ॥ जु
गजुगनरदेहीचलिआयौभक्तनहाथविकानौ । राजसूइ
मेंचरनपषारतस्यामसवनगुरमानौ ॥ रसनाएकअने
कस्यामगुनकहंलगकरौंवषानौ ॥ सूरदासप्रभुकीम
हिमाकीसाषजुवेदपुरानौ ॥ १० ॥ रागविलावल ॥ का
हूकेकुलतिननांहिविचारत ॥ अवगतिकीगतिकहो
कहालौंव्याधअजामिलतारत ॥ कौनजातिअरुपांति
विदुरकीताहीकेपगधारत ॥ भोजनगनततनष्टघरउ

हरिचरनारविंदतजिलागतअंतकहूंतिहिकीमतिकांची
सूरदासभगवंतभजननितितिहिकीलीकचहूंजुगघां-
ची ॥ १६ ॥ रागसारंगहरिभक्तमहिमा ॥ हरिकेजनसब
तेंअधिकारी ॥ ब्रह्मामहादेवतेंकोवडतिनकेसेवकभ्रम
नभिषारी ॥ जाचिकपैजाचिककहाजाचैजोजाचैसोर-
सनाहारी ॥ गनिकापूतसोहनहिपावनजिहिकोकुल-
कोउनवनारी ॥ तिहिकासाषदेषोहरनाकुसरावनकुटं
मसहितमईख्वारी ॥ जनपहलादप्रतिज्ञापारीभभीषन-
अजहूराजारी ॥ नरीसिलाचलिरामसत्तेंमिलिवहचर
नअहिल्यानारी ॥ जेरघुनाथसरनतकिआएतिहिकीस
कलआपदाटारी ॥ जिहिगोविंदअचलधराध्यौकरदह
नावुतदेनदिहारी ॥ सूरदासभगवंतभजनविनधरि-
ननजियेवोऊकितमारी ॥ १७ ॥ रागसारंग ॥ जापरदी-
नानाथढरै ॥ सोईकुलीनवडेसुंदरसोईजिहिपरकृपा
करै ॥ कौनभभीषनरंकनिसाचरहरिहसिछत्रधरै ॥ जो-
गीकौनवडोसंकरतेंमुक्तनसद्धिधरै ॥ राजाकौनवडोर-
रावननेंगर्वहागर्वजरै ॥ रंकहूकौनसुदामाहूतेंआप-
समानकरै ॥ अधिककुरूपकौनकुविजातेंहरिपतिपा-
इतिरै ॥ अधमकौनअनअजामेलतेंजमतेजातडरैं ॥
सुंदरकौनअधिकसीतातेंजनमवियोगपरै ॥ सूरदास
भगवंतभजनवितुफिरिफिरिचंद्रजुरै ॥ १८ ॥ रागके-
दार ॥ जाकौंहरिअंगीकारकीयो ॥ याकेकोटिविघनह-
रिहरिकेअभैप्रतापदीयो ॥ दुर्वासाअंब्रीकसतायो

४ सू.सा

सोहरिसरनगयौ॥ परतिग्याराषीमनमोहनताहीयेपरयौ
बहुतसासनादईप्रह्लादहितांहिनिसंककीयौ॥ मतक
नएसबसषाजिवाएविषजलजाइपियौ॥ निकसिषंभ
तैनाथनिरंतरनिजजनराषिलियौ॥ सूरदासप्रभुभक्त
वछलहैउपमाकौंनवियौ॥१९॥रागदेवगंधार॥ जाकौं
मनमोहनअंगकरै॥ ताकौकेसषसेनहिसिरपरतैजोज
गवैरपरै हरनकसिपपरहाररहेप्रहलादनरंचउरै॥
आजुलौंउत्तानपादसुतनिहचलराजकरै॥ राषीला
जद्रुपदतनयाकीकुरुपतिचीरहरै॥ दुरजोधनकौमान
मरदिकैंबसनप्रवाहधरै॥ जोसुरपतिकोप्यौगोकुलपरक्र
हिधौंकछुनसरी॥ राषेव्रजजननंदकेठाकुरगिरधरवि
रदधरी जाकौविरदहैगर्वप्रहारीसोकैसेविसरै॥ सूर
दासभगवंतभजनकरिसरनगहेउवरै॥२०॥रागवि
लावल॥ कहाकमीजाकेरामधनी॥ मनसासांहिमनो
रथपुरवैसुखनिधानजाकीवानघनी॥ अरथधर्मअ
रुकाममोछफलचारिपदारथदेतछिनैं॥ इंद्रसमान
हैंजाकेंसेवकनरवपुरेसोकहागनैं॥ कहाकृपनकीमा
यागनियैंकरतफिरतअपनीअपनी॥ षाइनसकैषर
रचिनहिजानैंज्यौंभवंगसिररहतमनी॥ आनंदमग
नरामगुनगावैदुःखसंतापकीकाटितनी॥ सूरकहतजे
भजतरामकौंतिनसोंहरिसौंसदांवनी॥२१॥रागकेदा
र॥ वंदौचरनसरोजतिहारे॥ सुंदरस्याममकमलद

नलोचनललिततत्रिभंगीशानपियारे ॥ जेपदपदमस
दाशिवकेरहैं सिंधसुताउरतेंनहिटारे ॥ जेपदपदम
परसजलपावनसुरसरिदरसमिटतअघभारे ॥ जेप
दपदमतातसुतत्रासतमनवचक्रमप्रहलादसंभा
रे ॥ जेपदपदमपरासिवृजभिपतिनीविप्रगुनव्याधवि
पतिवहुटारे ॥ जेपदपदमरमतविंद्रावनअहिसिर
धरीअगिनितरिपुमारे ॥ जेपदपदमपरासिवृज
भामिनिसरवसदैसुतसदनविसारे ॥ जेपदपदम
रमतपंडौदलदूतभएसवकाजसमारे ॥ सूरदास
तेईपदपंकजत्रविधिताप दुखहरनहमारे ॥ २२
॥ रागधनासिरी ॥ हरिजीतुमतेंकहानहोइ ॥ वो
लैगुंगपंगगिरिलंघैअरुआवैअंधाजगजोइ ॥ प
तितअजामिलदासीकुविजातिनहूंकेकलमल
सवधोए ॥ रंकसुदामाकीयोइंद्रसमपांडौहितकौ
रोदलषोए ॥ वालिकमृतुजिवाइदीयेजुजोआई
दरवाँरोई ॥ सूरदासप्रभुइछापूरनश्रीगुपालसुमि
रतसवकोई ॥ २३ ॥ रागकेदार ॥ विनतीसुनोंदीन
कीचितदैकैसेतोगुनगावै ॥ मायानटीसरीकरली
नेंकोटिकनाचनचावै ॥ दरदरलोभलागिलीयेडो
लतनानास्वांगवनावै ॥ तुमसौंकपटकरावैप्रभुजू
मेरीवुधिभरमावै ॥ मनअभिलाषतरंगअसंगत
मिथ्यानिसाजगावै ॥ सोवतसपनेमेरीसंपति
त्योंदिषाइवौरावै ॥ महामोहनीमोहआतमा

की

मनकरकाँबिलगावैं ज्यौंदूतीपरवधूभोरिकैलेपरपुरुष
दिषावैं मेरेतोतुमगतितुमहीपतितुमसमानकोपा
वैं सूरदासप्रभुतुम्हरीकृपाविनकोमोदुषहिछुडावैं ॥
२४ ॥रागसोरठ॥ हरितेरीमायाकोनविगोयो ॥ सौजो
जनमरजादसिंधकीपलमैंरामबिलोयो ॥ नारदमग-
नभएमायामैंज्ञानबुद्धिवलषोयो ॥ साठपुत्रअरु वा-
दसकन्याकंठलगाएजोयो ॥ संकरकोचितहर्योका-
मिनीसेजछांडिनहिसोयो ॥ जारमोहनीआधआध
कीयोतववनघसिघतैंरोयो ॥ सोमैयादुरजोधनराजा
पलमैंगरदसमोयो ॥ सूरदासकांचअरुकंचनएकहि-
हीधगापरोयो ॥ २५ ॥रागसारंग॥ गोपालतुम्हरीमा
यामहाप्रवलयहसवजगवसकीनोहैं ॥ नेकचितैमु
सकाइकैंसवहीकोमनहरिलीनोहै ॥ कछुकुलमर-
मनजानियैंरूपसकलजगराचौहै ॥ औरकहालग-
वरनऊपुरुषनउवरनपायौहै ॥ सुषसौवैजहीनीद
मैंनहूंजाइजगायौहै ॥ पहिरेरातीकंचुकीसिरसेंत-
उपरनासोहौहै ॥ कटिलहगानीकौवन्योसुकोउदे-
षिनमोह्यौहै ॥ चोलेचतुराननठगेअमरऔनर-
नारचैहैं ॥ औतरनाअवलोकिकैंअसुरमहामदमाचैहैं
एकनकोउदासनकेरैएकनसंगसोवैहैं ॥ एकनलैमं
दिराचैठैंएकवरजिविगोवैहैं ॥ सुनियाकीअतिअट-
पटीसुकसनकादिकवहुभागेहै ॥ नैकदयतिहिहै

रिकैं शिवसिरटो नालागैहैं जोगजुगति विसरी सवै काम
क्रोध मद जागैहैं । लोक लाज सव मिटि गई धाए चले संग
लागैहैं ॥ अकथ कथा ताकी कछु कहत न कही जाइहैं ॥ छे मवें
ल संग ऐसे फिरि जैसें तन न सग छांडईहैं ॥ इहि विधि व-
हु उह के सवै जीव जल थल जेते हैं ॥ चतुरासि रोम नि नंद
सुन कही कहां लगते तेहैं जोग जुगति विसरी सवै उठि-
धाए संग ताकैहै ॥ नेकहू छिन जिहि परपरीत सव सिरटो
नालौगैहिं वहुत कहा लगवरनियें यह निरधनि स
नावैहैं ॥ नरसोवत सुष नीद मैं नहां जाइ जगावैहैं ॥
इहि लाज न मरियै सदा सव कोउ कहै तुम्हारी हैं ॥ सूर
स्याम यह वरजि कै मेटौ गोकुल गारी है ॥ २६ ॥ राग
विहागरा ॥ इदे की कव हैं जरन घटी ॥ विनमो पाल-
वि थाया तन की कैसे जाति कटी ॥ अपनी हाचि जि
न हीजिन थे चनरइ डी क र्मगरी ॥ होतितहा उठि चल-
न कपट लगवाधैं नैनपटी ॥ मूंठो मन मूंठी सव काया
मूंठी आरन अटी ॥ उर मूंठे केवदन निहारन मारन फि-
रत सटी ॥ दिनदिन छान नैन सव काया दुख जंजाल छर
टी ॥ चिंता की नहि मूष मुलानी नीद फिरति उचटी
मगन भयो मायारस लं पट समुझत नांहि हवी ॥
तापर मूंठ चटीना चतिहैं मीच अजि नी चनटी ॥ कि
चनखादस्वा न पान ज्यों चातक रीति ठटी ॥ सूर-
सु जल सींचें कहनानिधि निज जन जरन मिटी ॥
२७ ॥ राग सारंग ॥ माधो मन मुहि कठिन परयो ॥ जदि

सू.सा
६

पविधनासवनिरषनुहैंदुःखसरीरभस्यो ॥ वारवारनि-
सदिन अति आतुरफिरतदसौदिसधाए ॥ ज्यौसुक-
सेंवरफूलविलोकतजाततहीविनधाए ॥ जुगजुगज-
नमअोरविछुरनसवसमुझतमतभेव ॥ ज्यौंदिनक-
रअवलोकिनमाननपरीआनियहदेव ॥ होंकुचील
मतहीनसकलविधितुमकृपालजगजान ॥ सूरमधु
पवसिकवलकोशवसकरोकृपादिनमान । २८ ॥ रा
गधनासिरी ॥ आछेगातअकारथगास्यौ ॥ करीन-
प्रीतिकवललोचनसोंजनमजुवाज्योहास्यौ ॥ आमी-
कृपनकुचीलकुदरसनकौंनकृपाकरितास्यौ । तातें-
कहतदयालदेवमनिकाहेंसूरविसास्यौ ॥ २७ ॥ रा
गसारंग ॥ माधोजीमनसवहीविधिपोच ॥ अति
उनमतनिरंकुसमैंगलचिंताराहितअसोच ॥ महा
मूढअग्यानतिमिरमंहमगनहोतसुषमान ॥ ते
लीकेविर्षमज्योंभिरम्योभजततनसारंगपान ॥ गी-
धौदुखहेमतसगरज्यौंअतिआतुरमतिमंद । लुव-
धौस्वानमीनआमिरवज्यौंऔलोवधोनहिफंद-
ज्वालाप्रीतिप्रगटसनमुखहठिज्योपतंगतनजा-
स्यो ॥ विषैआशक्तिआमितअघव्याकुलतवहौंकछु
नसम्हास्यौ ॥ ज्यौंकपिसीतहुतासनगुंजासमिटहो
नलोलीन । त्योसवव्रिथातजतुनहिअवहूंरहतवि
षेआधीन । सेंवरफूलसुरंगअतिनिरषतमुदितन-
होतवगाभूप ॥ परसतचोंचतूलउडिपरतिमुखप

रतदुषके कूप ॥ जहां गयो तहां भलो न आवत सब कोऊ
सकुचानो ॥ तान अहवे राग मगति प्रभु इन मे कहूं न-
सानो ॥ और कहां लौं कहौं एक मुख यामन के कतका-
ज ॥ सूरपतित नमपति न उधारन गहो विरद की लाज
३० ॥ राग सारंग ॥ मेरो मन मति हीन गुसांई ॥ सव
सुखनिधि पद कवल छांडि श्रम करत स्वान की नां-
ई ॥ फिरत वृथा भाजन अवलोकन सूने सदन अहां-
न ॥ तिहि लालच कवहूं कैसे हूं त्रपति न पावत ग्रान
कौर कौर कारन कुबुधि जड केते सहत अपमान ॥ तुम-
सरवग्य सव ही विधि पूरन अखिल भवन निजनाथ
तिन्हे छांडि यह सूर महा सठ भ्रमत भ्रवन के साथ ॥ ३१
॥ राग गौरी ॥ कहू नामे तेरी गति लखि न परै ॥ धर्म अधर-
म निषेद विधि अविद्यहि कर्म अकर्म करै ॥ जे अरु विजै क-
हा अकरम कीयो ब्रह्म सराप दिवायो ॥ असुर जोनि दी-
नी ताऊपर धर्म औछेद करायो ॥ पिता वचन षंडै सो
पापी सो ईय हलाद हि कीनों ॥ निकसे षंभ वीच ते-
नरहर ताहि अभै पद दीनों ॥ दान धर्म वहु कीयो भान-
सुत सो तुम विमुख कहायो ॥ वेद विरोध सकल पंडौ-
सुत सो तुम्हरे मन भयो ॥ जज्ञ करत जु विरोचन को सुत-
वेद वचन विधि कर्म ॥ सो छलि वांधि पताल पठायो को-
न दया विधि धर्म ॥ द्विज कुल पतित अजामिल विषई-
गनिका हाथ विकायो ॥ सुत हित नाम लियो नाराय-
न सो वैकुंठ पठायो ॥ पती वृता जालंधर युवती सो प

सू॰सा

त्रिबुननेतैं टारी ॥ दुष्ट पुलली अधम सुगनिका सुवा पढावत
तारी ॥ मुक्ति हेत जोगी श्रम करई असुर विरोधी पावै ॥ अ
विगति गति करुनामै तेरी सूर कहा कहि गावै ॥ ३२ ॥
॥ राग सारंग ॥ अवगति गति जानी न परै ॥ मन वच अग
म अगाध अगोचर कि हि विधि बुध संचरै ॥ अति प्रचंड
पौरष बल मानौ केहरि भूख मरै ॥ अजिउ दिम आसा करि
बैठ्यौ अजगर उदर भरै ॥ रीते भरै भरे पुनि ढारै चाहै फेरि
भरै ॥ कबहु कतिन बूडत पानी मै कबहु क सिला तिरै ॥ बा
गर तें सागर करि राखे चहुं दिसि नीर भरै ॥ पाहन बीच
कमल विगसांही जल मै अगिन जरै ॥ राजा रंक रंक ते राजा
लै सिर छत्र धरै ॥ सूर पतित तरि जाइ छिन कमै जो प्रभु टेक
धरै ॥ ३३ ॥ राग केदार ॥ अपनी भक्ति देहु भगवान ॥ कोटि
लाल च जो दिषावहु नाहि नै रुचि आन ॥ जरत ज्वाला
गिरत गिरि तें सुगिर कांपत सीस ॥ देषि साहस सकुच मा
नत राषि नसकै ईस ॥ काम नाक रि कोप कीनो करत क
र विस पान ॥ सिंह साव कज्ञान गहत जंईद आधि कध्या
न जा दिनां तें जनम पायो यहै मेरी रीत ॥ विषै वि
ष हर षात कबहु न डरत करत अनीत ॥ पकेकिंकर
जूथ जम के टारयौ टरत न नेक ॥ नरक कोपु निजाइ जं
मपुर परयौ बार अनेक ॥ महा माचल मारिवे की सकु
च नाहि नै मोहि ॥ परयो होप्र नकीयै वारै लाज प्रनकी
तोहि ॥ नाहि नै कहा चोप बांधौ करहु कहा रिसाइ ॥ सू
र कबहु न द्वार छाडै डारि हौ कढराइ ॥ ३४ ॥ राग विहागरा ॥

हरितेरो भजन करो न जाइ ॥ कहा करौ तेरी प्रबल माया देति म
न भरमाइ ॥ जबै आऊं साधसंगति कछु मन ठहराइ ॥ ज्यौं ग
यंद न्हाइ सलिता बहुरि उही सुभाइ ॥ भेष धरि धरि हर्यौ प
रधन साध साध कहाइ ॥ जैसे नट वा लोभ कारन करत स्वां
गवनाइ ॥ करौं जतन न भजौं तुम्हकौं कछुक मन उपजाइ
सूरप्रभु की सबल माया देति मोहि भुलाइ ॥ ३५ ॥ राग धना
सिरी ॥ इतक दिन हरि सुमिरन विनु षोए ॥ पर निंद्या रस
नाके रस मैं अपनें परत रगोए ॥ तेल लगाइ कीयौ रुचि म
र्दन वसतर मलि मलि धोए ॥ तिलक लगाइ चले स्वामी ह्वै
विषियन के मुख जोए ॥ सिगरो जनम गंवाइ अकारथ अं
तकाल बहुरोए ॥ सूर पतित की कहौ कौन गति उदर भरे
परि सोए ॥ ३६ ॥ राग विहागरा ॥ माधोजी मन माया वस की
नौं ॥ लाभ हानि कछु समुझत नाही ज्यौं पतंग तन दीनौं ॥ ग
हदीपक धन तेल तूल तिय सुत ज्वाला अति जोर ॥ मैं मति
हीन मरम नहि जान्यौ पर्यौ अधिक करि दोर ॥ विवस भयौ
नलनी के सुक ज्यौं विनु गुन मोहि गह्यौ ॥ मैं अज्ञान कछु
नहि समुझौ परि दुष वीच सह्यौ ॥ वहुतक दिवस भए या ज
ग मैं भ्रमत फिर्यौ मतहीन ॥ सूरस्याम सुंदर जो सेवै क्यौं
होवै गति दीन ॥ ३७ ॥ राग कान्हरा ॥ पतित पावन विरद
के भरोसे हैं हरि तेरे ॥ नाम तें जप तप न तीरथ संजम नां
ज मत्रा सतें नहि निहचै जिय मेरे ॥ अब तौ मोहि प्रभु तारै ही
वनै गो कहा होइ विरद फेरे ॥ सूरदास प्रभु अंतरजामी आप
नी नेक दिष्टि हेरे ॥ ३८ ॥ राग धनासिरी ॥ हरि विनु को

सू.सा
सूच

उद्धारमनआयो॥ऐसीमायापरेपंचवसरतनसोजनमगवायो
कंचनषंभविचित्रचतुररचिरुचिभवनबनायो॥छांडिचले
पछिताइबहुतचितजबजमत्रासदिषायो॥होंहासंगच
लोगानेरेत्याधूत्रिधनपायो॥चलतबारचितचोरिमो
रिमुषपगभरिहनलंघायो॥आसाकरिजायोसुतजननन
मांतिनमांतिलडायो॥तोरिलियोकटिहूकोबंधनजापर
वदनजरायो॥नेकुनलीनभयोचितचरननिसूरयहैपछि
तायो॥३८॥रागधनासिरी॥जनकेउपजतदुषकिनकाट
त॥जैसेप्रथमअसाढकोउपज्योमरकटकपितुउपाटत
जैसेनैनकिलकिलादरसनऐसोरहोप्रभुडाटत॥पुनिपाछे
अघसिंधुबढतहैसूरषारकिनपाटत॥४०॥रागकान्हरा
कीजेहरिविरदअपनेकीलाज॥महापतितकबहूंनहिआ
योनैकुतिहारेकाज॥मायासबलधामधनबनिताबांध्यो
होंइहिसाजदेषतसुनतसबेजानतहोंतऊनआयोबाज
कहियतपतितबहुततुमतारेश्रवननसुनीअवाज॥दई
नजातिपारउतराईचाहतचढ्योजहाज॥लीजेपारउतारि
सूरकोंमहाराजब्रजराज॥नईनकरनकहतप्रभुमहींस
दागरीबनिवाज॥४१॥रागबिलावल॥महाप्रभुमेरेवि
रदकीलाज॥कृपानिधानदानिदामोदरसदासंवारनकाज
जबगजग्राहचरनगहिराष्योतबहीनाथपुकार्यो॥तजि
कैगरुडचलेअतिआतुरपकरिचक्रकरमार्यो॥निसानि
सहीकछिलएसहसदसदुरवासापगधार्यो॥तातका
लतबप्रगटभएहरिराजाजीवउबार्यो॥हरनाकुसपहला
दभगतकोंबहुतसासनाजार्यो॥रहिनसकैनरसिंहरू

पधरिगहिकरअसुरपछारयौं। दूसासनगहिकेसद्रोपदी
नगिनकरनकौल्यायौ॥ सुमिरतहीततकालकृपानि
धिवसनप्रवाहबढायौ॥ मागधपतिभूजीतमहीपति
कछुमननैमेगरवाए। जीत्योजुरासिंधुरिपुमारयोबलकरि
भूपछुडाए॥ मिहमाअतिअगाधकरुनामैंनकछुहैतहि
नकारी॥ सूरदासपरकृपाकरीअवदरसनदेहुमुरारी
४२॥ रागधनासिरी॥ सरनआएकीलाजधरीयै॥ स
ध्योनहीधर्मसुचशीलतपव्रतकछुकहामुखलैतुम्हें
विनैकरीयै॥ कछुचाहोकहौसकुचिमनमेरंहौंकर्म
आपनेंजानित्रासआवै॥ भईनिजसारआधारमेरे
महापतितपावनविरदवेदगावै। जनमतेंएकटकला
गिआसारहीविषैविषखातनहीतप्रमानी। जोछि
याछिरिकरीसकलसंतनतजीतासमतिमूढरसप्री
तिठांनी। पापमारगजितेतेसवकीनेतितेवच्यौन
हिकोउजहांसुरतिमेरी। सूरऔगुनभरयोआइद्वारें
परयोतकीगोपालअवओटतेरी॥४३॥ रागधना
सिरी॥ मेरेगुनऔगुननविचारौ॥ कीजेलाजसरन
आएकीरविसुतत्रासनिवारौ। मेनजोगजपतप
व्रतकीनौवेदविमल[illegible]नहिभाख्यौ॥ अतिरसलु
ब्धस्वानजूठनज्यौंअंततनहांचितराख्यौं। जहांजहां
जोनफिरयोसंकटगतवसनहांतहांयहैकमायौ॥
कामक्रोधमदलोभग्रसतमैंविषैपरमविषखायो॥

जौपर्वतमसिघोरिउदधिमैंलैसुरसरिनिजहाथ॥ममकृत
दोषलिषौवसुधाभरितऊघटैनहिनाथ॥कामीकुटिल
कुचीलकुदरसनअपराधीमतिहीन॥तुमसमानऔ
रनहिंदूजौजाहिमजौहोंदीन॥अषिलअनंतदयाल
कृपानिधिअविनासीसुखरास।भजनप्रतापनाहिंमैं
जान्यौबंध्यौमोहकीपास॥तुमसरवग्यसबैविधिसम
रथअसरनसरनमुरारि॥कृपानिधानसूरबूडतुहैली
जैभुजापसारि।४४॥रागकेदार॥अबकैनाथमोहिउ
बार॥परयौहौंभौअंबनिधिमैंकृपासिंधुमुरारि॥नीरअ
तिगंभीरमायालोभलहरतरंग॥लियेजातअगाधजल
कौंगहेग्राहअनंग।मीनइंद्रीअतिहीकाटतिमोटअ
घसिरभार।पगनइतउतधरनपावतउरझिमोहसिवा
र।क्रोधकामसमेततृस्नापवनअतिझकझोर॥नाहि
चितवनदेतसुततियनाममनवकाऔर॥थक्यौबीचबि
हालबिहवलसुनौकरुनामूल॥स्यामभुजगहिकाढि
लीजैसूरब्रजकेकूल।४५॥रागसारंग॥तुमहरिसांक
रेकेसाथी॥सुनतप्रकारपरमआतुरह्वैदौरिछुडायौहा
थी।गरभपरीछतरछाकीनीवेदउपनषदसाषी॥
बसनबढाएद्रुपदसुताकेसभामांझपतिराषी।राज
हूनीगावनव्याकुलकैंदैदैसुतनकौधीरक॥मागध
हतिराजासबछोडेऐसेहौपरपीरक॥कपटसरूपग
यौजबगोकुलतपपरनीतनमानी।कठनपरीतब

हीतुमप्रगटे रिपुहति सब छलदानी ॥ ऐसे कहो कहां ल
गि गनि गनि लिषत अंत नहि लहिये ॥ कृपासिंधु
आवै मेटन की मम लज्या उर मंहिये ॥ सूर तुम्हारी आ
स विने की संकट मैं तुम साथी ॥ ज्यौं जान्यौ त्यौं करौ दी
न की वाम सकल तुम हाथी ॥ ४६ ॥ राग भैरो ॥ तुम बिनु
सांकरै कोन काको ॥ तुमही दीनदयाल देव मनि नांव ले
व धौं ताको ॥ सभा मांझ द्रोपदी राषी पति पानप कुल
नाको ॥ बसन ओट करि कोट विसंभर परानन दीनौं
झांको ॥ गर्भ परीक्षत रक्षा कीनी हतो नहीं बस मांकौं
मोदी पीर परम पुरषोतम दुष मेट्यौं दुहु घांकौं ॥
हाकह नाम कुंजर टेर्यो हतो हीन बल जाको ॥ ला
गि पुकार तुरत छुटकायो काट्यो बंधन ताको ॥ अंब
रीक को श्राप देन गयो ढोर न पायो तहांको ॥ उलटी
गाढ़ परी दुरवासा दहत सुदरसन जाको ॥ निधर
कके पंडो सुत डोलैं रह्यौ नहीं उर वाको ॥ चार्यौ बे
द चतुरमुष ब्रह्मा जस गावत है ताकौं ॥ छोरा बंदि
विदा करि राजा परन हतो जरा चरांको ॥ जरासिंधु
जोर औधीरा फारि कीयो द्वै फांको ॥ विप्र सुतन
आनन के कारन मन समान रथ हांक्यो ॥ भारप
रै भीषम पनु राख्यो नकव छल उरमां को ॥ गोपी
नाथ सूर के प्रभु के विरद न लाग्यो टांको ॥ हरि हरि
हरि हर नाक समार्यो जाको मरिबो बांको ॥ ४७ ॥

रागविलावल॥ तुमरी क्रपा जगदीस गुसाईं हो अप
ने अज्ञान न जानत॥ उपजै घट छन हिं सूरु तु रोगी
कारन की लो ऊन मानत॥ सब सुख निधि हरि रूप
महानिधि ताहि अब नहि॰ पहिचानत॥ परम
कुबुद्धि तुछ रस लोभी कौडी वदले मागउ छानत
शिव कौ ध्यान संतन कौ सर्वस महिमा वेद पुरा
न वखानत॥ इते मान यह सूर महा सठ हरि नग
वदल विषै घर आनत॥४८॥ रागविलावल॥ अ
पने जान मै वहुत करी॥ कौंन भांति हरि क्रपा तुम्हा
री सो स्वामी समुझी न परी॥ दोरि गयौ दरसन के
कारन व्यापक पीर। विथा विसरी मनसा वाचाक
र्म अगोचर सो मूरति नहि नैन धरी॥ गुन विनु गुना सरू
प रूप विनु नाम लेत श्री स्याम हरी॥ क्रपा सिंधु अप
राध अपरमत छमौ सूर तैं सब विगरी॥४९॥ राग
विलावल॥ तुम प्रभु मो सौ वहुत करी॥ नर देही दी
नी सुमिरन कौं मो पापी तें कछु न सरी॥ गरभवास
अति त्रास अधोमुख तहां न मेरी सुधि विसरी॥ पा
वक जठर जरन नहीं दीनौ कंचन सी मेरी देह करी॥
जग मैं जनमि पाप वहु कीनौ आदि अंत लौं सब वि
गरी॥ सूर पतित तुम पतित उधारन अपनें विरद की
लाज धरी॥५०॥ रागधनासिरी॥ माधौ जौ जन तैं वि
गरै॥ सुनि क्रपाल कमलनैन मै [illegible] कैसो प्रभु नहि चित

धरै ता दिन जतन करैं अनपोषै विगसें अंग भरै ॥ जद्यपि
मलय बिरछ चढि काटैं कर कुठार पकरै ॥ तऊ सुभाव सु
सील सुसीतल रिपुतन ताप हरै ॥ कारन करन दयाल
दयानिधि निजभै दीन डरै ॥ इहिं कलि काल व्याल मु
खग्रासत सूर सरन उवरै । ५१ ॥ राग कान्हरा ॥ दीनाना
थ अब बारि तिहारी ॥ पतित उधारन विरद जानि कैं वि
गरी लेव सँवारी ॥ बालापन खेलत ही खोयो जुवा विषै
रस माते ॥ विरध भए सुधि प्रगटी मो कौं दुखित पुका
रत ताते ॥ सुतन तज्यो त्रिय तज्यो भ्रात तज्यो तन तैं तुचा
भई न्यारी ॥ श्रवनन सुनत चरन गति थाकी नैन भए
जलधारी ॥ पलित केस कफ कंठ विरुध्यौ कल न परै दि
न राती ॥ माया मोह न छांडै त्रिस्ना ए दोऊ दुख थाती ॥
अब या विथा दूरि करिवे कौं और न समरथ कोई ॥ सू
रदास प्रभु करुनासागर तुम तैं होइ सु होई ॥ ५२ ॥ रा
ग आसावरी ॥ मिहमा पतित पावन जानि सरन आ
यो उदध संसार सुभ नाम नौका तरन अटल अस्था
न निज निगम गायो ॥ व्याध अरु गीध गनिका अ
जामिल द्विज चरन गौतम नारि परस पायो ॥ अंत
औसर अरधनाम उच्चार करि सुमरत गज ग्राह तैं तु
म छुडायो ॥ अबल प्रहलाद बलि दैत सुख ही भजत
दास ध्रू चरन चित सीस नायो ॥ पांडु सुत विपत मोच
ण महादास लखि द्रौपदी चीर नाना बढायो ॥ सूरप्र
भु चरण चित चेति चिंता करत ब्रह्म शिव सनक

धनासि
अहसिंधधायौ।५३॥राग[illegible]वरी॥श्रीनाथसारंग
धरकृपाकरिदीनपराउरतभीत्रासतेंराखिलीजे॥नांहि
जपनांहितपनाहिसुमिरनभजनसरनआएकीलाजकी
जेजीवजलथलजितेभेखुधरिधरितितेरचेलघुदीर्घ
भूअदलभारेमुसलमुदगारहथनत्रविधकरमभगन
तमोहिउंउनधरमदूतहारे॥वृषभधेनुकप्रलंबकेसि
चानूरमलपूतनांरजककेदुखतारे॥अजामिलगज
गनिकागीधतेंभेनघटिआजुक्यौंसूरचिततैंविसारे॥
५४॥रागधनासिरी॥कवहुनांहीगहरकियो।सदासु
भाउसुलभसुमिरनवसमकनअभेदीयो।माइगोपगो
पीजनकारनगिरकरकंवलालियो॥अघअरिष्टकेसीका
लीनथिदावानलहिपीयो।कंसवंसवधजरासिंधुहनगु
रुसुतआनिदियो।कुरुसुतसभाद्रुपदतनयाकोंअंवरअछ
कैकीयो॥सूरस्यामसर्वज्ञकृपानिधिकरुनासिंधुहियौ॥
काकीसरनजावकरुनामेंनांहाऔरवियौ।५५॥सारंगरा
ग॥तातेंतुम्हरौभरोसोआवे।दीनानाथपतितपावनजस
सवेदउपनषदगावें।जोतुमकहौकौनषलतारयौतोहों
वोलौंसाषि॥पुत्रहेतहरलोकगयोद्विजसकेनकोउरा
षि।गनिकाकीयोकौनव्रतसंयमसुकहितनामपढावे॥
मनसाकरिसुमिरयौगजवेरीग्राहपरमगतिपाई॥वकी
जुगईघोषमेंकुलकरिजसुधाकीगतिकीनी।औरक
हतश्रुतवृषभव्याधकीजेसीगतितुमदीनी॥द्रोपदसु
ताद्रुष्टदुरजोधनसभामाहहंकरावे॥ऐसोकौनऔर॥

करुनामैंवसनप्रवाहवढावै ॥ दुखितजानिकैंसुतकुवेरकेति
नहितआपुवधावै ॥ ऐसोकौनठाकुरजनकारनदुखसहि
भलोमनावै ॥ दुरवासाकुरजोधनपठयोपंडोविपतिविचा
री । सुमिरततीनौलोकअघाएन्हातभज्योकुसडारी । देव
राजव्रतभंगजानिकैंवरस्योव्रजपरआई ॥ सूरस्यामराख्यो
निजकरगिरिगोपनुभएसहाई । ५६ ॥ रागधनासिरी ॥ दीन
कोदयालसुन्योदानीदाता ॥ सांचीतेराविरदावलिजग
पितमाता ॥ व्याधगीधगजगनिकाइनतेंकोत्राता ॥ सु
मिरततुमकोहासदाप्रभूविख्याता ॥ केसीकंसदुष्टमारिमु
ष्टिकघाता । धाएगजराजकाजकेतकवाता गोतमकीना
रितारीपरसेलाता औरकौहैतारिवेकोकहौकृपाता तीन
लोकविभौदईतंदुलखाता ॥ सरवसप्रभुरीझदेततुलसीपा
ता । मांगतुहैसूरत्यागजिहिमनराता ॥ आपनीप्रभुभक्ति
देहुजासौंनाता । ५७ ॥ रागमारू ॥ सोकहाजौमैनकियो
सोईचित्तधरिहौ ॥ पतितपावनविरदसांचकौनभांतिहरि
हो । जवतैंजगजनमलीयोजीवनामुपायौ ॥ तवतैंछुटऔ
गुनरतनामनकहिआयौ । करनीसुचसेवकजनकाहि
नजियभावै । प्रभुकौप्रभुताईजोदीनसरनपावै । साधनिंद
कऔलंपटकपटीऔद्रोही जेतेअपराधजगतलागतसव
मोही । गृहगृहगृहद्वारफिरेतुमकोप्रभुछांडे ॥ अंधटेक
छांडिचलैंक्योंनपरैगांडे ॥ कंवलनैनकरुनामैंअंतरजा
मा । विनतीकहाकरैंसूरकूरकुटिलकामी ॥ ५८ ॥ राग
सारंग ॥ कौनगतिकरिहौमेरीनाथ । हौंतौकुटिलकुचिल
कुदरसनरहतविषैकेसाथ । दिनवितीतमायाकेलालच

सू.सा
१२

कुलकुटुंबके हेत ॥ सारी रैनि नींद भरि सोवत जैसे पसू अचेत
कागर धरनि करै द्रुम लेषन जल सायर मसि घोर ॥ लिषै गने
स जनम भरि मम दुषनऊ दुख नहि ओर ॥ लिखि लिषि मम
अपराध जनम के चित्रगुप्त अकुलाए ॥ भ्रगु रिषि आदि सोचत च
कृत भए जम सुनि सीस डुलाए ॥ परम पुनीत पवित्र कृपानिधि
पावन नाम कहायौ ॥ सूर पतित जब सुन्यो विरद यह तब धीर
ज मन आयौ ॥ ५८ ॥ राग केदार ॥ मेरी कौन गति रजनाथ ॥ भ
जन विमुख अरु सरन नाही फिरत विषयन साथ ॥ हो पति
त अपराध पूरन भरौ करम विकार ॥ काम क्रोध अरु लोभ चित
ऊं नाथ तुम्हें विसार उचित अपनी कृपा करियै तबै तौ बनि आ
इ सोई करौ जु रन सैवे सूर जू बिन पाइ ॥ ६० ॥ राग धनासिरी ॥
सोई कछु कीजे दीनदयाल ॥ जाते जन छिन चरन न छाडै करु
ना सागर भक्त रिसाल ॥ इंद्री अजित बुद्धि विषयारत मन की
अनुदिन उलटी चाल ॥ काम क्रोध मद लोभ मोह वस निसदिन
नाथ रटत वेहाल ॥ जोग जुगति जप तप तीरथ व्रत इन में एक
कौ अंक न भाल ॥ कहा करौं किहि भांति रिझाऊं हौं तुम कौ सुंद
र नंदलाल ॥ सुनि समरथ सर्वज्ञ कृपानिधि असरन सरन ह
रन जग जाल कृपानिधान सूर की यह गति कासौं कहा परै इ
हि काल ॥ ६१ ॥ राग गूजरी ॥ किरपा कीजे अब बलि जाउं ॥ नां
हि मेरै और कोऊ बलि चरन कंवल वि[illegible] नु ठाउं हौं असोच अ
किरित अपराधी सनमुख होत लजाउं ॥ तुम कृपाल किरपा
निधि केसौ अधम उधारन नाउं ॥ काके द्वार जाइ हौं ठाढौ देष
त काहि सुहाउं ॥ असरन सरन नाउं तुम्हारौ हौं कामी कुटि
ल सुभाउं ॥ कलंकी अरु मन मलिन वहुत मैं सुनियत मीत

नगांउ ॥ सूरपतितपावनपदअंबुजक्यौंपरहरिसोजांउ ॥ ६२
॥ रागसारंग ॥ दीनदयालपतितपावनप्रभुदेवबुलावत
कैसो कहाभयोगजगनिकानारीज्यौंतारोजनऐसो ॥ जि
नकबहूंनरजनमपाइनहिंनामतिहारोलीनौं ॥ काम
क्रोधमदलोभमोहतजिअंतनहींचितदीनौं ॥ अकरम
अबुधअग्यानअवग्याअनमारगअनरीति ॥ जाकोना
मलेतअघउपजैपैसोईकरीअनीति ॥ इंद्रीरसबसभयोभ्र
मतरह्यौजोकछुकह्यौसुकीन्हौ ॥ नेमधर्मब्रततपनहिसं
जमसाधसंगतिहिचीन्हौ ॥ दरसनमलिनदीनदुरबलअ
तिसहैदुमतिदुखखानी ॥ ऐसोसूरदासजनहरिकौंस
बअधमनमैंमानी ॥ ६३ ॥ रागदेवगंधार ॥ मोप्रभुतुमसौं
होउपरी ॥ नाजानौंअबकहाहोतहैकहातुमनागरनवलहरी ॥
मोरीजितनीकितीपतितार्योतेमैंसबैकरी ॥ पतितसमूहन
उद्धरवेकौंतुमजियजकपकरी ॥ मैंजुरह्यौउसीराजीवलोच
नपापपहारदरी ॥ पावहुगेमुहिकहांतारनकौंगूढगंभीर
घरी ॥ इकअधारसतसंगतकौंरचिपचिकैमनसंचरी ॥ यहै
सोजसंचिचितराखीअपनीधरनधरी ॥ मोकौंमुक्तिविचा
रतहैंप्रभुपत्तऔपहरघरी ॥ श्रमतैंतरनहिपसीनाऐहैंकि
नयहजकपकरी ॥ सूरदासविनतीकहाविनवैदु[illegible]खनदे
हभरी ॥ अपनौंविरदसमारहुगेतौयामैंसबनिबरी ॥ ६४ ॥
रागधनाश्री ॥ कबतुममोसौपतितउधार्यौ ॥ पतितनि
मेविख्याधपतितहींपावननामतिहारौ ॥ बडेपतितहूंमो
समनांहीअजामिलकौनविचारौ ॥ भाजेनरकनामसु
निमेरौजमनदयौहठितारौ ॥ छुद्रपतिततारिरमाप

सू.सा
९३

ति अवनकौ जियगारो ॥ सूर पतित कौ ठौर कहूं नहि है हरि नाम
संभारौ ॥ ९५ ॥ राग धनासिरी ॥ कब तुम मो सो पतित उधारयौ
काहे कौं हरि विरद बुलावत विनु मसकति कौ तारयौ ॥ गीधव्या
ध गज गौतम नारी उनकौं कहा निहोरौ ॥ गनिका तरी आप
नी करनी नाम भयौ प्रभु तेरौ ॥ अजामेल तौ विप्र तुम्हारौ हुतौ
पुरातन दास नेक चूक तें यह गति दीनी फिरि वैकुंठ निवास
पतित जानि तुम सब जन तारे रह्यौ न काहू खोट ॥ तौ जानौं
जो मोहि तारिहौ सूर कूर कविखोट ९६ ॥ राग नट ॥ कहा व
न औसे त्यागी दान । चारि सुदाम पै दारथ दए हि अरु गुरु के
सुत आन ॥ रावन के दस मस्तक छेदे सर गहि सारंगपान ॥
भभीषन कौं लंका दीनी पूरवली पहिचान ॥ विप्र सुदामा
कौ यौ अजाची प्रीति पुरातन जान ॥ सूरदास कौं कहा निठु
र भए नैनन हू की हान । ९७ ॥ राग धनासिरी ॥ मो सो बात न
सकुचत जिन कहियै किन वहरावत हौं तुम मो कौं कहौ का के
के रहियै ॥ कै धौं तुम पावन प्रभु नाही कै कछु मो मैं झोलौ ॥
तौ हौं अपनौ फेरि सुधारौं बचन एक जो बोलौ । तीनौ प
न मैं ओर निबाहें यहै स्वांग कौ काछें ॥ सूरदास कौं यहै ब
डौ दुख परत सबन के पाछें । ९८ ॥ राग धनासिरी ॥ पतित
पावन हरि विरद तिहारौ कौनें नाम धरयौ । हौं तौ दीन दु
खित दुरबल औति लवारैं सुनत परयौ । गरभ जनरनि जि
न ठाहर मास मैं जब जब जिंद रजरयौ ॥ तब हूं तौ नहि नि
करत ज्यौं तौ सुत अपराध भरयौ ॥ गज गनिका अरु व्याध
गीध तैं मैं घटि कहा करयौ ॥ विद्यमान अब सूल सहत हौ

कलकुलकठिनउरयौ ॥ चारिपदारथदएसुदामहितंदुलभे
टधरयौ द्रुपदसुताआपतिनुमराषीअंवरदानकरयौ ॥
संदीपनसुतप्रभुतुमदीनैंविद्यापाठवरयौ ॥ सूरकीवि
रियांनिठुरभएप्रभुमोनैंकछूसरयौ ॥ ६९ ॥ रागसारंग ॥
प्रभुहौंवडीवेरकौठाढौ ॥ औरपतितनुमजैसेतारेतिन
हूंतेंलषिगाढौ ॥ जुगजुगविरदयहैचलिआयौटेरिक
हतहौंतातैं ॥ मरियतुलाजपांचपतितनमैंहौंहीहौंघटि
कातैं ॥ कैप्रभुहारिमानिकैवैठौकैकरिविरदसही ॥ सूर
पतितजोझूठकहतहैदेषौषोजियही ॥ ७० ॥ रागसारंग
प्रभुहौंसवपतितनुकौटीकौ ॥ औरपतितसवदिनाचा
रिकेहौंतोजनमतहीकौ ॥ वधिकअजामिलगनिकाता
रीऔरपूतनांहीकौ ॥ मोहिछांडितुमऔरउधारेमिटैसू
लक्योंजीकौ ॥ कोउनसमरथअघकरिवेकोषैंचिक
हतहौंलीकौ ॥ मरियतुसूरलाजपतितनुमैंमोहूतैंकोनी
कौ ॥ ७१ ॥ रागसारंग ॥ हौंतौपतितनासिरोमनिमा
धौ ॥ अजामेलवातनहींतास्योंहुतौजुमोतैंआधौ ॥ कै
प्रभुहारिमानिकैवैठौकैअवहीनिस्तारौ ॥ सूरपतितन
कौंऔरठौरनहिंहैहरिनामसहारौ ॥ ७२ ॥ रागसारंग ॥
माधौजीमोतेंऔरनपापी ॥ घातिककुटिलचवाईकप
टीमहाक्रोधीसंतापी ॥ लंपटधूतपूतदमरीकौविषेजा
पजपजापी ॥ भछअभछअपानपानकरिकवहूंनमन
साधापी ॥ मनवचक्रमदेषासवहुनकौकपटवचनआ
लापी ॥ कामीविवसकामिनीकेरसलोभलालसाथा

पी जेतक जीव अधम उधारे तिन की गति मैं मापी ॥ सागर
सूर बिकार भर्यौ जल पति न अजामिल पापी ७३ ॥ रा
ग कान्हरा ॥ हरि हौं सब पतितनि कौ ईस ॥ औरन सर करि बे
कौ दूजौ महा अधम मम दीस आसा के सिंहासन बैठ्यौ
दंभ छत्र सिर तान्यौं ॥ अपजस अति निंदा कहि टेर्यौ स
व सुर आपु समान्यौं मंत्री काम क्रोध निज दोऊ अपनी
अपनी रीति ॥ काया नगर रहैं निसबासर उपजावन बि
प्रीति मोदी लोभ खवास मोह के द्वारपाल हंकार पाप
अहं मुसाहिब मेरे माया कौ अधिकार ॥ सेवक त्रस्ना भ्र
मति टहल हित लहति न छिनु बिसराम ॥ अनाचार से
वक तन बल के करत जु उनके काम ॥ बाज मनोरथ गर्व म
त्त गज असत कुमत रथ सूत ॥ पाइक मन बानैत अधीर
ज और दुष्ट मति दूत ॥ गढवै भयौ नरक पति मौसौं दीनैं र
हतु किवार ॥ सेना साथ बहुत भांतिनु के कीनै पाप अपा
र ॥ निंदा जग उपहास अकीरति मंगन जस जै नगावत
हठ अन्याव अधर्म सूर नट नौबति द्वार बजावत ॥ ७४ ॥

॥ राग सारंग ॥ हरि हौं सब पतितनि कौ राजा ॥ पर निंदा
मुख पूरि रह्यौ गज यह निसान नित गाजा ॥ त्रस्ना देस अ
रु सुभट मनोरथ इंद्री खर्ग हमारी ॥ मंत्री काम कुमति दैवे
कौं क्रोध कोधप्रनहारा ॥ गज हंकार जीव चढि गवि जई छ
त्र लोभ कौ सीस ॥ फौज असत संगति की मेरैं ऐसौ हौं मैं
ईस ॥ मोह मई बिंदी गुन गावति मागध दुख अपार ॥ सूर
पाप कौं गड दृढ कीनैं मुहकम लाइ किवार ॥ ७५ ॥ रा

२

गसारंग ॥ हरि हौ सब पतितनु कौ राव ॥ को करि सकै बरा
बरि मेरी सो धौं मोहि बताव ॥ व्याध गीध अरु पतित पू
तना तिन तें बैठो जु और ॥ तिन तें अजामेल गनिका पति
उन मैं मैं सिरमौर ॥ जहां तहां सुनियत यहै बडाई मो स
मान नहि आन ॥ अरु है आज काल्हि के राजा मैं तिन मैं
सुलतान । अब लगि तुम प्रभु बिरद बुलायो भई न मो सौं
भेट । तजौ बिरद कै मोहि उधारौ सूर कहै कसि फेट ॥ ७६
॥ राग सारंग ॥ हरि हौं सब पतितनु कौ नायक ॥ को करि
सकै बराबर मेरी और नही कोऊ लायक जैसो अजामे
ल कौं दीनों सो पाटौ लिखि पाऊं ॥ तो बिस्वास होइ जिय
मेरै औरौ पतितन बुलाऊं ॥ बचन बांह ले चलौ गाढि दै
हौ रभरौ सौ भारी । यह मारग चौगुनौ चलाऊं तौ सांचौ
ब्यौपारी । यहू सुनि जहां तहां तें समिटि आइ होइ इक
ठौर ॥ अब कै तौ इतनै लै आऊं बेर बहुर की और । होडा
होडी मन भावतें कैरे पाप भरि पेट ॥ सबै पतितन पायन
तर डारौ यहै हमारी भेट । बहुत भरोसो जानि तुम्हारौ
अघ कीनें भरि भांडौ लीजै बेगि निबेरि तुरत ही सूर
पतित कौ टांडौ ॥ ७७ ॥ राग धनासिरी ॥ मो सौ पतित
न और गुसांई । औगुन मोह तें अजौं न छूटत भली तजी
अब नांई । जनम जनम तें हौं भ्रमि आयौ कपि गुंजा की
नांई । परसत सीत जातु नहि क्यौं हूं लै लै निकट बना
ई । मो स्यौ जाइ कनक कामिनि रस मि थ्या मोह बढा
ई । छांडि स्वाद मीन ज्यौं उरझौ सूझै नही फंदाई

सोवतमैंजैसेसपनेमेंपाईनिधिजुपराई॥ जागिपरेकछु
हाथनआयौयोजगकीनिठुराई॥ सेयेनाहिचरनगिर
धरकेवहुतकरीअन्याई॥ सूरपतितकोठौरकहूंनहिं
राखिलेवसरनाई॥७८ ॥रागधनासिरी॥ हरिहौमहा
पतितद्रौहीअभिमानी॥ परमारथसोंविरचिविषैरस
भावभगतिनहिजानी॥ निसदिनदुखमनोरथकरिकै
रिपावतहौंचमानतुठानी॥ सिरपरमीचनीचनहिचि
तवतआवघटतिज्यौंअंजुरीपानी॥ विमुखनुसौंहित
जोरतदिनप्रतसाधनसोंकवहूनपिछानी॥ तिनुविनुर
हतनहीनिसवासरजिनसवदिनरसविखेवखानी॥
मायामोहलोभकेलीनेजानीनविंद्रावनराजधानी न
वलकिसोरजलदसुंदरवपुविसर्योसूरसकलसुखदां
नी॥७९ ॥रागधनासिरी॥ माधौजीमोकाहेकीलाज॥
जनमजनमयौंहींभरमानोअभिमानीवेकाज॥ जल
थलजीवजितेजगजीवननिरखिदुखितभएदेव॥ गुन
औगुनकीसमुझनसंकापरीआइयहटेव॥ सर्वसषा
इरह्यौघरविद्योभौनकछूविचार॥ सूरस्वानकेपाल
नहारेपावतहैनिजगार॥८०॥ ॥रागसारंग॥ माधौजी
सोंअपराधीहौं॥ जनमपाइकछुभलोनकीनोकहोसु
क्योंनिवहौं॥ सवसोंवातकहतजमपुरकीगजपपाल
कायौं॥ पापपुन्निकौंफलदुखसुखहैभोगकरौज्योंक्यौं
मोकौंपंथवतावोसोईनर्वकिसगैलहौं॥ काकेवलहौ
नरोगुसांईकछुनभगतिमोमैं॥ हंसिवोलेजगदीसज
गतपतिवारनुसारायौं॥ कहनासिंधुक्रपालकृपानि

वात
षि मज्ञो सरनक्षों क्यों । ७ सुनैते वहुत हसो गे चरनकमल
कीसौं । मेरी देह छुटत जम पठए जितक दूत घरमो लेलै
तेऊ थि यार आपने सान धराए यौं । जिनकों दाहन दरस
देखिकें पतिन करत म्योंम्यों ॥ दांत चवात चले जमपुरतें
धाम हमारे कौ । दूरि फिरे घर कोऊ न वतावे सो निज कुरी
पायौ । रिस मरि गए परम किंकर सव पकर्यो छु दिन सकौं
लेलै फिरे नगर मे घर घर जहां मन क हो हौ ॥ नारि सही ना
नै वहुत नक मार्यो कहा लगावर निसकौं ॥ हार हार मै पर्यौ
पुकारौं राम नाम न कहौं ॥ नाल पधावज चलेवजावत स
मधी सो माकों । सूरदास कौं मला वनी है गजी गई अघ पों
८१ ॥ राग केदार ॥ थोरो जीवन वहुत न भारो ॥ गयो न सुन
त समागम कव हूं लयो न नाम तुम्हारो ॥ अति उनमत्त मो
ह माया वस रह्यो किहि वान विचारो ॥ करन उपाव न सूरु
नक वहूं भनत न धायो धारो । इंद्री स्वाद विवस निस वास
र आप अपुन पो हारौ । जल औंडे मैं चहूं दिस पैर्यो पां
उं कुहारौ मारौ ॥ वांधी मोट पसारि त्रिविध गुन नहिं कहु
वीच उतारे ॥ देखौ सूर विचारि सीस पर न वह मसरन पु
कारौ । ८२ ॥ राग धनासिरी ॥ अव मैं नाच्यो वहुत गुपाल
काम क्रोध कौ पहरि चोलना कंठ विषे की माल । महा मो
ह के नूपुर वाजत निंद्या सुंदर साल । भरम न हो मन भयौ
पधावज चलत कुसंग गति चाल ॥ त्रस्ना नाद करत घट भी
तर नाना विधि दे ताल । माया कौ कटि फेटा वांध्यो लोभ ति
लक दियो माल ॥ कोटिक कला काछि दिखराई जल थल

सूसा
१६

सुधिनहिकाल सूरदासकी सबैअविद्यादूरिकरौनंदलाल द
॥रागधनासिरी॥ जनमगायौसंतोषनआयौ। दिनदिन
अधिकदुरासालायौ सकललोकभ्रमिआयौ। सुनिसुनि
सरगरसातलभूतलतहींतहींउठिधायौ॥ कामक्रोधमदलो
भअगिनितेंकाहूनजरतबुझायौ॥ सुततनयाबनिताबि
नोदरसरहिजरजरनजरायौ॥ मैनअग्यानअकुलाइअधि
कलेंजरतमांहझिरिनायौ॥ भ्रमिभ्रमिहौंहारयौहियअप
नेंअतुलजलचषछायौ॥ सूरदासप्रभुतुम्हरीकृपाबिनुकै
सेंजातनसायौ॥ ८४ ॥रागधनासिरी॥ बादहाजनमगयौ
सिराइ हरिसुमिरतुनहिगुरकीसेवामधुबननबस्योनजाइ
अबकीवारमनुष्यदेहधरिभज्यौनआनउपाइ। भटकत
फिरयौस्वानकीनाईनेनिकजूठकेचाइ। कबहुनरिझएलाल
गिरधारीबिमलबिमलजसगाइ। प्रेमसहतपगबांधिघूंघ
रूसक्यौनअंगनचाइ॥ श्रीभागोतिसुनीनहिकबहूंने
कहूंरुचउपजाइ॥ आनिंनभक्तिकरिहरिभक्तनुकेकबहूंन
धोएपाइ तुमसौंकहाकहौंकरुनामैविनतीबहुतबनाइ॥
भौनिधअंबनामनिजनौकासूरहिलेवचढाइ। ८५ ॥रा
गसोरी॥ माधौजीतुमगतिक्योंबिसरयौ। जानतसबअं
तरकीकरनीजोमैंकरमकरयौ॥ पतितसमूहसबैतुमता
रयौहुतेजुलोकभरयौ होंउनतेंन्यारोकरिडारयौदहिदु
षजातुमरयौ। फिरिफिरिजोनअनंततनभ्रम्यौंअबसुखस
रनपरयौ। इहिओसरकिनबांहछुडावतइहिडरअधिक
डरयौ हौंपापीतुमपतितउधारनडारेंहौ किततदेत। जो
जाननयहसूरपतितनहितौतारोनिजहेत॥ ८६॥

॥ राग देवगंधार ॥ ज्यौ पै तुम ही विरद विसाऱ्यौ ॥ तौ कहौ क-
हां जाउं करुनामै कृपन करम कौ माऱ्यौ ॥ दीन दयाल प-
तित पावन जस वेद बखानन चाऱ्यौ ॥ सुनियत कथा पुरा-
नन गनिका व्याध अजामिल ताऱ्यौ ॥ राग दोष विधि अ-
विधि असुच सुच जिहि प्रभु जहां सम्भाऱ्यौ ॥ कियो न कहूं
विलंब कृपानिधि सो यह सोच निवाऱ्यौ ॥ इहां लग नाम र-
रूप गुन गुनि सब आजु अपुन तन न धाऱ्यौ ॥ सूरदास स्वा-
मी यह मन श्रम करत करत अब हाऱ्यौ ॥ ८७ ॥ राग सारं-
ग ॥ जैसे और बहुत पलतारे ॥ चरन प्रताप भजन महि-
मा सुख को कहि सकै तुम्हारे ॥ दुखित गीध दुष्ट मति गनि-
का निरग कूप उधारे ॥ विप्र बजाइ चल्यौ सुत के हित कटे म-
हा दुख भारे ॥ व्याध गीध गौतम की नारी कहौ कौन व्रत धा-
रे ॥ केसी कंस कुवलय मल मुष्टिक सब सुधाम सिधारे ॥ अ-
सन कौ विष बांटि लगायौ जसुमति की गति पाई ॥ रज-
चानूर दलन दावानल दुख भंजन सुखदाई ॥ नृपसिसु-
पाल महामद मांनौ सर औसर नहि जानै ॥ अघ बक तृ-
नावर्त धेनुक सब गुन गनि दोषन मानै ॥ करत विवस्त्र
दुपद तनया कौं सरन सबद कहि आयौ ॥ विपत काल सु-
मिरत छिन भीतर तहां न हीं उठि धायौ ॥ गोप ग्वाल गो सु-
त जल त्रासत गोवरधन कर धाऱ्यौ ॥ अब यह दास महा-
अपराधी काहे सूर विसाऱ्यौ ॥ ८८ ॥ राग नट ॥ बहुरत कौ कृ-
पा कहा कृपाल ॥ दीन महा जन दुखित जगत मैं तुम प्र-
भु दीन दयाल ॥ जौवत जाचि कवन न कन गनि निर्धन दर दर रट

नविहाल ननछूटैनें धरमन हीकछुजोदीजेमनिमाल ॥ क॰
हादानाजोदेनदीनकौदेखि दुखितकलिकाल । सूरस्या
मकोकहानिहोरोचलनवेदकीचाल । ८८ ॥ रागकेदार ॥
कोनसुनेयह वातहमारी । समरथ औरनदेखोंतुमवितु
कासोंविथाकहौवनवारी । तुमअवगतिअनाथकेस्वामी
दीनदयालभक्तहितकारी । सदासहाइकरी दासनकोंजो॰
उरधरीसोईप्रनपारी ॥ अवकहिंसरनजाऊंजादोंपतिरा
खिलेववलिआसनिवारी । सूरदासचरननकीवलिवलि
कोनकथातेंकृपाविसारी । ९० ॥ रागकल्यान ॥ जैसेंराखो
तैसेंईरहौं ॥ जानतहो दुखसुखसवजनको मुखकरि क॰
हाकहौं ॥ कवहुंकभोजनलहौं कृपानिधिकवहुंकभूखस
हौं । कवहुंकचढौंतुरंगमहागजकवहुंकभारवहौं ॥ कमल
नैनघनस्यामम नोहरअनुचरभयोरहौं ॥ सूरस्यामप्रभु
भक्तकृपानिधितुम्हरेचरनगहौं । ९१ ॥ रागधनासिरी ॥
कवलगफिरिहोंदीनभयो । सुनसलितासमिमोरत्रगुनतें
मनपर्वतनलयो ॥ वातचक्रत्तस्मापरकनमिलिवनत
नतुघराह्यो । उरझोविवसकरमनिरअंतरभ्रमसुखस
रनचह्यौ ॥ विनतीकरतउरतकिरपानिधिनाहीपरन॰
रह्यो ॥ सूरकरनतररचौजुनिजकरसोनहिहमैंकह्यौ
९२ ॥ रागधनासिरी ॥ नेऊंचाहतकृपातुम्हारी । जिहिके॰
वसअनमिखिअनेगगुनअनुचरआग्याकारी ॥ भम॰
तिपवनभरमतदिनकरदिनफनपतिसिरनडुलावे । दाह॰
कगुननतजिसकतिनपावक सिंधनसलिलवढावे ॥ श्री॰

व विरंचि सुरपति समेत सब सेवत प्रभुपद जाई ॥ जो कछु करत कहत सोई करि कारन करन अकुलाई ॥ तुम अनादि अविगत अनंत गुन पूरन परमानंद ॥ सूरदास पर कृपा करौ प्रभु श्रीवृंदावनचंद ॥ ८३ ॥ राग मलार ॥ तुम तजि और कौन पे जाऊं ॥ काके द्वार जाइ सिर नाऊं पर हथ कहा बिकाऊं ॥ ऐसो कौन दाता है समरथ जाके दिऐं अघाऊं ॥ अंत काल तुम्हरे सुमिरन गति और कहूं नहि ठाऊं ॥ रंक सुदामा कियो अजाची दियो अभै पद ठाऊं ॥ कामधेनु चिंतामनि दीनो कलपबिरछ तर छाऊं ॥ भवसमुद्र अति देखि भयानक मन में अधिक डराऊं ॥ कीजे कृपा सुमिरि अपनो सूरदास बलि जाऊं ॥ राग मारू ॥ हौं कहा इनेरो अब कौन कौं कहाऊं ॥ हे गयंद उतरि कहा गर्दभ चढि धाऊं ॥ कंचन मनि छांडि कहा गुंज कंठ नाऊं ॥ कुंकुम कै लेप मेटि काजर मुख लाऊं ॥ पाटंबर अंबर तजि गूदर पहराऊं ॥ अंब कफल छांडि कहा सेंवर कौं धाऊं ॥ सागर की लहरि छांडि छीलर गत न्हाऊं ॥ सूर कूर अंध रो मैं द्वार पर्यो गुन गाऊं ॥ ८५ ॥ राग मारू ॥ स्याम बलराम गुन सदा गाऊं ॥ स्याम बलराम बिनु दूसरे देव कौं सपनहूं नाहि नें हृदे ल्याऊं ॥ यहै जप यहै तप यहै मम नेम व्रत यहैं मम प्रेम फल यहै पाऊं ॥ यहै मम ग्यान यह ध्यान सुमिरन यहै सूर प्रभु देव मैं यह चाहूं ॥ ८६ ॥ राग सारंग ॥ मेरे जिय ऐसी आनि बनी ॥ छांडि गुपाल और जो जाचौं तौ लाजै जननी ॥ कहा काच कौ संग्रह कीजै तजि कै रतन

" सुनयै दे कान सुंदर स्याम बल गाऊं ७

कामधेनु छांडि कहा अजा दुहाऊं ४

मनी । विषकौ मेनकहालौ कीजै अमृत एक कनी । मनव
चक्रम सत भावक हत हैं ते हौं मेरे स्याम घनी ॥ सूरदास
प्रभु तुम्हरी भक्ति लागत जो जानि अपनी ॥ ९७ ॥ राग के
दार ॥ मेरौ मन अनत कहां सुच पावै ॥ जैसे उड़ि जहाज कौ
पंछी फिरि जहाज पर आवै ॥ कमल नैन कौ छांडि महा
तम और देव कौ ध्यावै ॥ परम गंग हित छांडि पियासौ दु-
रमति कूप षनावै ॥ जिन मधुकर अंबुज रस चाष्यौ क्यौं
करील फल भावै । सूरदास प्रभु कामधेनु तजि छेरी कौन
दुहावै ॥ ९८ ॥ राग सारंग ॥ तुम्हरी भक्ति हमारे प्रान ॥ छू-
टि गए कैसैं जियत जीव ज्यौं पानी बिनु पान । जैसैं मगन
नाद रस सारंग बधत बधिक बिनु बान ॥ ज्यौं चितवत स
सि और चकोरी देखत हि सुच मान ॥ जैसैं कंवल होत पर
फुलित देखत दरसन भान ॥ सूरदास प्रभु हरि गुन मीठे
नित प्रति सुनियत कान ॥ ९९ ॥ राग सारंग ॥ जो हम बुरे भ
ले तौ तेरे ॥ तुमही हमारी लाज बडाई बिनती सुनौ प्रभु मेरे
सब तजि तुम सरनागत आयौ निज कर चरन गहे रे ॥ तुम
प्रताप बल बदत न काहू निडर भए घर चेरे ॥ और देव स
ब रंक भिषारी त्यागे बहुत अनेरे ॥ सूरदास प्रभु तुम्हरी
कृपा तैं पाए सुख जु घनेरे ॥ १०० ॥ राग सारंग ॥ हम नंद नं
दन मोल लिये ॥ जम के फंद काटि मुकराए अभै अजाद कि
ये । भाल तिलक स्रवननि तुलसी दल कंठी अंग लिये । मू
ड मुडाइ कंठ बन माला छाप चक्र दिये ॥ सब कोउ कहत गु
लाम राम के सुनत सिरात हिये ॥ सूरदास कौं और बडौ सुख

स्या

सूदिन धार जिये। १०१ ॥ अथ प्रथम अस्कंध श्री भागवत ॥
राग सारंग ॥ हरि हरि हरि हरि सुमिरन करौ। हरि चरनारवि
द उर धरौ हरि की कथा होइ जब जहां। गंगाहू चलि आवै तहां
जमुना सिंधु सरस्वती आवै ॥ गोदावरी विलंब न लावै। सर्व
तीर्थ कौ वासा तहां। सूर हरि कथा होवै जहां ॥ श्री भागवत
बरनन ॥ राग सारंग ॥ आमुख चारि इ श्लोक दिये ब्रह्मा कौं
समुझाइ। ब्रह्मा नारद सौं कहे नारद व्यास सुनाइ। व्यास
कहे सुषदेव सौं द्वादश स्कंध बनाइ। सूरदास सोई कहे
पद भाषा करि गाइ। १०२ ॥ अथ व्यास सुत संवाद ॥ राग बि
लावल ॥ व्यास कह्यो सुत सें समुझाइ। कहो सुत नो संत
चित लाइ। व्यास पुत्र हित बहु तप कियो। तब नाराय
न यह बर दियो ॥ ह्वै है पुत्र भक्त अतिग्यानी ॥ जाकी ज
ग मैं चलै कहानी ॥ यह बर दे हरि कियो उपाइ। नारद म
न संसै उपजाइ ॥ तब नारद गिरजा पै गए। तिन सौं या बि
धि पूछत भए। रुंडमाल सिव ग्रीवा कैसा। मो कौं बरनि सु
नावौ तैसा उमा कह्यो मैं तो नहि जानी। आप सिव हू मो
सौं न बषानी। नारद कह्यो अब पूछो जाइ। बिन पूछें नहि
देहिं बताइ। उमा जाइ सिव कौं सिर नाइ। कही सुनो बि
नती पुरराइ। रुंडमाल कैसी तुम ग्रीवा। या की मोहि ब
तावहु सीवा। सिव तब बोले बचन रिसाल उमा आ
हि सो यह रुंडमाल। जब जब जनम तुम्हारो भयो तब
तब रुंडमाल मैं गयो। उमा कह्यो। सिव तुम अबिनासी

सा०
१६ सूरसा

की
मैंतुम्हरेचरननदासी मेरोहितइतनौदुखमेरो॥ मोहिंआस
रकोहेंनाहिंकरो॥ तवशिवउमागएवाठोर॥ जहांनहींदु
तियाकोऊऔर॥ सहसनामतहांतिनहिसुनायो॥ जाते
आपुअमरपदपायो। तहांहुतोइकसुकको अंग॥ तिनयह
सुन्योसकलपरसंग॥ ताकौंशिवमारनकोधायो। तिनउडि
अपनोआपुवचायो॥ सुउनउडनसुकपहुंच्योतहां। नारि
व्यासकीवैठीजहां॥ शिवहूताकेपाछेधाए। पैताकोमारन
नहिंपाए॥ व्यासनारिजवहांमुखवायो। तवतनतजिमु
खमांहसमायो। द्वादशवरषगर्भमेरह्यौ। व्यासमागव
तितासौंकह्यौ॥ वहुरयोतवजदुपतिसमुझायो। तेरीमा
तावहुदुखपायो। तूंजिहिहिततनहिंवाहरआवै। सो
हमसौंकहिक्योंनसुनावै॥ प्रभुतेमायामोहिसतावत
तातेंमेंवाहिरनहिआवत। हरिकह्योअवनव्यापिहैं
माया तवववहगर्भछांडिजगआया। मायामोहताहि
नहिगह्यौ। सुन्यौज्ञानसोसुमिरनरह्यौ जैसेंसुककौं
व्यासपढायौ। सूरदासनेसेंकहिगायौ। १०४ ॥ श्रीभाग
वतवक्ताश्रोतावरनन॥ रागविलावल॥ व्यासदेवजव
सुकहिपढायौ॥ सुनिकैंसुतसौंहृदेवसायौ। सुकसौंन
पतिपरीछनसुन्यौं। जिनपुनिभलीभांतिकरिगुन्यौं॥ सू
तसौनककनसौपुनिकह्यौ॥ विदुरमनअंतरसोपुनिलह्यौ
सुनिभागोतसवनसुखपायो। सूरदाससोवरनिसुनायो
१०५ ॥ अथसूतसौनकसंवाद॥ रागविलावल॥ सूत
व्याससौंहरिगुनसुन्यौं। वहुरौंतनतजिमनमैंगुन्यौं॥

सोपुनितीमसरमेंआयो॥तहांऋषिनओदरसनपायो॥ऋषिनकह्यौहरिकथासुनावो॥तलीभांतिहरिकेगुनगावो॥प्रथमकह्यौव्यासअवतार॥सुनोसुरसोअबचितधार॥१०६॥अथव्यासअवतारबरनन॥रागबिलावल॥हरिहरिहरिहरिसुमिरनकरो॥हरिचरनारविंदउरधरो॥व्यासजनमभयोजापरकार॥कहौंसुकथासुनोचितधार॥सतवंतीमछोदरीवारी॥गंगातटठाढीसुकुमारी॥पारासरऋषितहांचलिआए॥विवसहोइतिनपारलंघाए॥ऋषबकह्यौनाहिदानरितदेहि॥मेवरदेवतोहिसोलेहि॥तूंकुमारिआवहुरीहोई॥तोकोंनाउंधरेनहिकोई॥मेरीकह्यौनजोतूंकरिहै॥दैउंसरापमहादुखभरिहै॥सतवंतीसरापभैमान॥ऋषिकौंवचनकियोपरमान॥व्यासदेवजाकेसुतभए॥होतजनमबहुरौवनगए॥जोजनगंधागताकरी॥मत्सवासताकौसवहरी॥दियोकामप्रतापअधिकाई॥वसकियोपारासरऋषिराई॥प्रवलसत्रुआहियहमार॥तातेसतनोचलोसंभार॥याविधिभयोव्यासअवतार॥सूरकहतभागोतअनुसार॥१०७॥श्रीभागोतआरिवर्नन॥रागबिलावल॥भयोभागवतजापरकार॥कहौंसुनोसोंअवचितधार॥सतजुगलाषवरषकीआउ॥त्रेतादससहसकीगाइ॥द्वापरसहसएककीभई॥कलजुगसतसपतरहिगई॥सोऊकहनसुननकौंभाई॥कलिमरजादकहीनाहिजाई॥तातेहरिकरिव्यासअवतार॥करीसंगीतवेदविचार॥वहुरिपुरानअठारहकियेपैन॥

ऊसांतिनआरीहिये ॥ नवनारदतिहकीरिगआई । चा
रिइस्लोककहेसमुझाई ॥ एब्रह्मासोंकहेभगवान । ब्रह्मा
मोसोंकहेवषान । सोईअवमैतुमसोंभाषे ॥ कहोभाग
वतियहहियराषे । श्रीभागौतसुनैजोकोई ॥ ताकोहरिप
दप्रापतिहोई ऊंचनीचव्योरानवझाई ॥ ताकीसाषीमैं
सुनिभाई जैसैंलोहाकंचनहोई । व्यासभएनेसीगतिसो
ई । दासीसुततेंनारदभयो । दोषदासपनकौमिटिगयो
व्यासदेवकीनवहरिध्यान ॥ कियोभागवतिकोव्याषा
न । सुनैभागवतिजोचितलाइ । सूरसुहरिभजिभौतरी
जाइ ॥ १०८ ॥ श्रीभागवतिश्रवनमहातम ॥ रागसारंग
कहोसुकश्रीभागौतविचार । जातिपातिकोऊपूछतुनां
हाश्रीपतिकेदरवार ॥ श्रीभागौतिसुनैजोहितकरितरी
है भौजलपार । सूरसुमिरिगुनरटनिसवासरराम ना
मनिजसार । १०९ ॥ नाममहातम ॥ रागकान्हरा ॥ व
डीहैरामनामकीओट । सरनगएप्रभुकाढिदेतनहिंक
रतकृपाकरिओट । बैठतसबैसभाहरिजूकीकौनबडोकोछो
ट । सूरदासपारसकेपरसे मिटतिलोहकीषोट ॥ १
१० ॥ रागधनासिरी ॥ सोईभलौजुरामहिगावै । नीच
कूतहोइरजसेवकविनगुपालद्विजजनमनभावै ॥
वादविवादजग्यव्रतसाधेगतिहूजाइजनमडहकावै ॥
होइअटलजगदासभजननैंसेवाचोरिनोसफलपा
वै ॥ कहूंहोउनहिंचरणकमलविनभृगीज्योंदसहूंदि
साधावै ॥ सूरदासप्रभुसंतसमागमआनदअभैनिसा

नवजीवे॥१११॥ रागगूजरी॥ आहूकैवेरकहासौ॥ जाकी-
सरवरकैरसुकूरौ जाहिकृपालकृपाकैरै॥ ससिसनमुष
जोधूरिउडावैउलरितासकेंमुखपरै॥ चिरियाकहासमु
द्रउलीचेपवनकहापर्वतटरै॥ जाकीकृपापतितपाव-
नहैंपगपरसतपाहनतरै॥ सूरकेसनहिदासिसकैकोऊ
दांतपीसिजोजगमरै॥११२॥ रागकेदार॥ हेहरिभजन-
कोपरिवान॥ नीचपावतऊंचपदवीबाजतेनीसान
भजनकौपरतापऐसोजलतैरैपाषान॥ अजामेल-
अरुभीलगनिकाचढेजातविवान॥ चलततारेसकल
मंडलचलतससिअरुभान॥ भगतधूकौअटलपद
वीरामकेदीवान॥ निगमजाकोसुजसुगावतसुनत-
संतसुजान॥ सूरहरिकीसरणआयौराखिलेभगवा-
न॥११३॥ भगवानविदुरघरभोजन॥ रागविलावल
हरिहरिहरिसुमिरोसवकोइ॥ ऊंचनीचहरिगनतन-
होइ॥ विदुरगेहहरिभोजनपाए॥ कौरीपतिकौंमन
नहिल्याए॥ कहिंकथासुसनौचितल्याइ सूरस्याम
भजनमनआइ॥११४॥ रागविलावल॥ भएपंडवनके
हरिदूत॥ गएजहांजहांकौरौपूत॥ उनसौजोहरिवच-
नसुनाए॥ सूरकहतसोचितनलाए॥११५॥ रागमला
र॥ चलेहरिधर्मसुवनकेदेस संतनहितभूभारउता
रनकारनवंदनरेस॥ जवहरिजाइसंखधुनिकीनी-
आएनगरप्रवेस॥ कुटंवसहितराजाउठिधाएकारन
पदरजकेस॥ अतिआदरभोजनविधिकीनीनारदस

भापुदेस। तिहिछिनभीमधनिजैमाधो धरौंविप्रकौभे
स मांग्योजुकजुरा।सिंधुपैतत्रीकुलआदेस। सूरदास
प्रभुपीतवसनतैंकाटेकठिनकलेस।११६ ॥रागविला
वल॥ सुमिराजादुरजोधनाहमनुमपैआए। पांडोसुत
जीवतमिलेउनकुसलपठाए। बेमकुसलअनदानता
उंडौतसुना ई करजोरैविनतीकरीदुरवलसुखदाई
पाँचगावपांचौजनकेफिरपाकरिदीजै॥ एतुम्हरेकुलवं
सहैंहमरेसुनिलीजै॥ उनकोमोसौदीननताकोऊक
हिनसुनावो। पंडोसुतअनद्रोपदीकहिंमारिकढावो॥
राजनीतिजानौनहीं गोसुतचरवारे पीवोछाछिअ
घाइकैंकवकैरैधोरे॥ गाइकाजकैवत्सलामेरेसुखदाई
इनकोहमलज्जानहींतुमराजवडाई। जोछमकरनदु
वनसुनेकोऊमुखहूनबोले॥ एपांडोकैयांकाढिहैं ध
रनीधरडोले। हमकछुलेननदेनमेंएवारनिहारे॥
सूरदासप्रभुउठिचलेकौरोसुनहारे॥११७ ॥रागध
नासिरी॥ ऊधोचलो।विदुरकेजाईये दुरजोधनके
कोनकाजजहां आदरभावनपाईये। गुरमुखनहीं
वडेअभिमानीसेवाकहाकराईये। टूटीसाछांनिमे
घजलवरषैटूटीसोपलगाविछाईये॥ चरनधोइ
चरनोदिकलीनोत्रयाकहेप्रभुआईये। सकुचनपि
रतजुवदनछिपाएभोजनकहामगाईये॥ तुमनो
तिहूलोककेठाकुरतुमतैंकहाडुराईये॥ हमतोप्रे
मप्रीतिकेगाहकभाजीकेछोछुकाईये। हांसिहांसि

कहत श्रीमुख महिमा प्रेम प्रीति अधिकाई ॥ सूरदास प्रभु भ
क्तन के बस भक्तन प्रेम बडाई ॥ ११८ ॥ राग धनासिरी ॥ हरि
हाँकि रथ चढे दुवारे ॥ तुम दारुक आगे ह्वै देखौ भक्त मो नहि
जो अंत सिधारे ॥ सुनि सुंदरि उठि उतर दीनो कौरौ सुत
कछु काज हंकारे ॥ तहां आए जदुपति सुनियतु है कम
ल नैन हरि हितू हमारे ॥ तिन कौ मिलन गयो पति मेरो
ते ठाकुर है बडे हमारे ॥ सूर प्रभू सुनि संभ्रम धाए प्रेम मग
न तन बसन बिसारे ॥ ११९ ॥ राग धनासिरी ॥ प्रभु जू तुम
हो अंतरजामी ॥ तुम लाइक भोजन कछु नांही ग्रेह हमा
रे स्वामी ॥ हरि कह्यौ साग पत्र जु तन पय मुहि अंमृत ता स
मनाही ॥ बारंबार सराहि सूर प्रभु साग बिदुर घर खाही ॥
१२० ॥ भगवान दुरजोधन संवाद ॥ राग सोरठा ॥ क्यों हरि
दासी सुत के पग धारे ॥ भीषम करन द्रोन मंदिर तजि मम
ग्रेह तजे मुरारे ॥ सुनियत हीन दीन घर खाले जाति पाति
सब तें न्यारे ॥ तिन कें जाइ कियो भोजन जदुवंसी लाज
न मारे ॥ हरि जू कह्यौ सुनौ दुरजोधन सत्त सुवचन हमा
रे ॥ सोई निधन सोई कृपन दीन है जिन मम चरन बिसारे
भक्त भागवत वे है मेरे तुम साकित हो मत मोरे ॥ सूरदा
स नंदनंद कहत हम ग्वालन के जुठहारे ॥ १२१ ॥ राग सा
रंग ॥ हम तें बिदुर महा हैं नीकौ ॥ जाके रुच सौ भोजन की
नो कहियतु सुत दासी कौ ॥ द्वै बिधि भोजन कीजे राजा
बिपति परें के प्रीति ॥ तेरे प्रीति न मोहि आपदा यहे बडी
बिपरीति ॥ ऊंचे मंदिर कौंन काम के कनक कलस जु च

ढाए भक्त भवनमैंमैंजुवसतहौंजदपितनकौं छाए ॥
अंतरजामीनाउहमारौहोअंतरकीजानौं जदपि सूरप्र
भुवत्सलहौंभक्तनहाथविकानौ।१२२॥रागसारंग॥
प्रभुजूक्यौंनहमारैंआए। षटरसभोजनछांडिरसोईसा
गविदुरघरषाए।ताकीकुटियामैंतुमवैठे कौनवडाप
नपायौ।जानतजातियांतितिन्यारौहैदासीकौंज्यायौ मै
तौसनिकहौंदुरजोधनसुनितूंवातहमारी।विदुरहमारैं
प्रानप्रियारेतूंविछियाअधिकारी॥जातिपांतिहौसव
कौजानतुवाहिरछाकमगाई।ग्वालनकेसंगभोजनकी
नौंकुलकौलाजलगाई।जहांअभिमानतहांमैनांहा
यहभोजनविषुलागै।सतपुरुषसोदीनगहतुहैअभि
मानीकौंत्यागै।जहांजहांभीरपरैभक्तनकौंतहांतहांउ
ठिधाऊं भक्तनकेहौंसंगफिरतुहौंभक्तनहाथविकाऊं
भक्तवछलहैंविरदहमारौवेदसुम्रतहूंगाई॥ सूरदास
प्रभुयहनिजमहिमांभक्तनकाजवढाई।१२३॥द्रौपदी
महारकथा॥रागविलावल॥ हरिहरिहरिसुमिरौसव
कोइ।नारिपुरुषहरिगनतनदोइ॥द्रुपदसुताकीराषीला
ज।कौरौंसुतकौपापलौनाज।कहौसुकथासुनौचितलाइ
सूरस्यामभक्तनहितुआइ॥१२४॥रागविलावल॥ कु
रसुतपासाकपटवनाए।धर्मपुत्रकौंजुवाषिलाए।तिन
हारौसवभूमिभंडार।हारीवहुरिद्रौपदीनारि॥ताकौ
पकरिसभामेंल्याए।दुसासनकटवसनछुडाए।तव
विहहरिसौंसेइपुकारी॥सूरराषिममलाजमुरारी॥
१२५॥रागनट॥अवकछुनाहिंनाथरह्यौ॥सकलस

भामैंवैठिदूसासन अंवरआनिगह्यौ ॥ हार्‍योसवमंडारभू-
मिअरुअपवनवासलयौ ॥ एकुचीरहौ मेरेऊपर सोदुन-
हरनचह्यौ ॥ हाजगदीसराषिद्वाहि औसरप्रगटपुकारिक-
ह्यौ ॥ सूरदासउभगे दोऊ नैना सिंधप्रवाहवह्यौ ॥१२६

॥राग बिलावल॥ जितनीलाजगुपालेमेरी ॥ तितनीनां
हिवधूहौंजिनकी अंवरलेतसवनतिनहेरी । पतिअतिरो
समारिमनमहियांभीषमदई वंदविवेरी ॥ हाजगदीसद्वा
रिकावासीभई अनाथकहतिहौंटेरी ॥ वसनप्रवाहव-
ढौजवजान्यौ साधसाधसवहुनमतिफेरी ॥ सूरदास-
स्वामीजसप्रगट्योजनमजनमकीभईसुचेरी ।१२७॥

॥राग देवगंधार॥ निवाहौवांहगहेकीलाज । द्रोपदसुता
कहतिनंदनंदनकठिनवनीहै आज ॥ भीषमकरनद्रोन
दुर्जोधनवैठेसभाविराज ॥ तिनदेषतममपटकाढतुहै
लीकलगीतुमलाज । पंचभारिहरनाकुसमार्‍योजनप्र
ह्लादनिवाज । जनिकसुताहितहन्यौलंकपतिवांध्यौ
सागरगाज । गदगदसुरआतुरतनपुलकितनैननीर-
समाज । दुःखितद्रोपदीजानिप्रानपतिआएखगपति-
त्याज । पूरिचीरभीरतनकछमाताकेभरेजहाज ॥ कौटिका
ढियाकौ दूसासनहाथनउपजीषाज । विकलमान-
षोयोकौरौकुलपार्‍योसिरकीताज । सूरप्रभूयहरीति-
सदाईभक्तहेतमहराज ॥१२८ ॥राग धनाश्री॥ तुम्ह
राकपाकौकौनउवारे ॥ अर्जुनभीमजुधिष्ठिरसहदेव-
सुनतनकुलवलभारे ॥ केसपकरिल्यायौदूसासनरा
षौलाजमुरारे ॥ नानावसनवगरदियेप्रभुवलिवलि

सूःसा
२३

नंददुलारे। नगिननहोतिचक्रतभयोराजासासधुन्यौं
करमारे। जापरकृपाकरैकरुनामैकोनादिसजुनिहारे॥
जिनजिनजननिश्चैकरिसेयेहरिप्रभुविरदसंभारे॥
सूरदासप्रभुअपनेजनसवउरतेनेकनटारे। १२९ ॥राग
सारंग॥ हैवलबीरबिनाकोपीर। सारंगपतिप्रगटेसारं
गतेंजानिदीनपरभीर। सारंगबिकलभयोसारंगमेंसा
रंगतुल्यसरीर। परयोकामसारंगवासीसोंराषिलियौबल
बीर १३०। सारंगइकसारंगकैलोटीसारंगहोकेनीर। सा
रंगपानगएताऊपरभएपरीछितकीर॥ गहेदुष्टद्रुपदी
कोसारंगनैनतवरसतुनीर॥ सूरदासप्रभुअधिककृपा
तेंसारंगभयोगंभीर ॥रागमारू॥ इतउतदेषिद्रोपदाहे
री। ऊंचनवसनहंसतकौरीसुततृभुवननाथसरनहैं
तेरी। सरवसदैअंवरतनभयांचौसोअवजातिपतिवृजमे
री। क्रोधवंतदेषतकौरौकुलमानोमृगासिंघवनघेरी
गहिदुसासनकेससभामेंपरवसगहिगहिल्योज्योंचे
री। पंडोसुतपुरुषारथछांडोवंधेजुवचनकंपटकीवे
री। हाजदुनाथद्वारिकावासीजुगजुगभगतआपदाफे
री। वसनप्रवाहवढ्योसूरजप्रभुआरतवचनकह्योहा
जवटेरी। १३१ ॥रागबिलावल॥ मोअनाथकेनाथहर
री। वृह्मादिकसनकादिकनारदजिहसमाधिनहिध्यां
नटरी॥ बूडतिस्यामथाहनहिपाऊंदूसासनदुखसिं
धमरी। भक्तवछलप्रभुनामसुमिरिकैताकारनमेंसं
रनपरी॥ भीषमकरनद्रोनअस्यामासबदेसहतवहो
सीसधरी। महावीरसुतवैठेदेषतकेसगहतकछुधर
नकरी। कहांकहांद्रोपदीपुकारीनिजवैकुंठअवाजपरी

सूरस्याम छिरि कहा कैरोगे जव जैहै एव सन हरी ॥ १३२ ॥
॥ राग सारंग ॥ अव धौ कहौ कौन दर जाउं ॥ तुम जग
पाल चतुर चिंतामनि दीनवंधु सुनि नाउं ॥ माया का
चौ पिंड जु पकस्यौ लोभ मोह मद मारी ॥ परवस परी
सुनौ कलना निधि मम पति संत्र हौ येरी ॥ क्रोध दुसा
सन गहे लाज पट मरत अंध गति नेरी ॥ सुर नर मुनि को
उ निकट न आवत सूरस मुझि हरि चेरी ॥ १३३ ॥ राग
आसावरी ॥ जो मेरे दीनदयाल न होते ॥ तो मेरी अप
ति करत कौरौ सुत होत पंडव न ओते ॥ कहा भीम के ग
दा धरें कर कहा धनुक धरे पारथ ॥ काहु न धर वरवकरी
हमारी कोउ न आयो स्वारथ ॥ समुझि समुझि गृह आ
र स आपने धर्म पुत्र मुख जोहै ॥ सूरदास प्रभु नंदनंद
न गुन गावे मन वच सोहै ॥ १३४ ॥ सुखदेव परीक्षित
संवाद ॥ राग विलावल ॥ हरि हरि हरि हरि सुमिरन
करो ॥ हरि चरनारविंद उर धरो ॥ हरि पैडै कौ दीनो राज
पुनि जो गए राज कौं त्याज ॥ वहुरौं भयो परीक्षत राजा ॥
जा को श्राप विप्र उपराजा ॥ सुनि हरि कथा मुकति सो
भयो ॥ सूत सौनकन सों सो कह्यौ ॥ कहौं सुकथा सु
नो चित धार ॥ सूर कहै भागौत अनुसार ॥ १३५ ॥ कथा
राजा जुधिष्ठिर ॥ राग विलावल ॥ हरि हरि हरि
हरि सुमिरन करो ॥ हरि चरनारविंद उर धरो ॥ भारथ यु
द्ध होइ जव वीता ॥ भयो जुधिष्ठिर अति मैं भीता ॥ गुरु कु
ल हत्या मो तैं भई ॥ सो अव कैसा करि हौं दई ॥ कौरौं न

पतोहृसतापमननआयार

विष्यापापनिवारौं राजछत्रनाहीसिरधारौं। लोगनि
हिवहुविधिसमुझायौ॥ नवहरिकह्योटेकपरिहरयौ॥
भीषमपिताकहेसोकरौ। हरिपंडौरनभूमिसिधाए॥
भीषमदेषिवहुतसुखपाए॥ हरिकह्योराजनअरनु
धर्मसुत। कहतहतेमैंभ्रातभ्रातसुत॥ गुरहत्यामोतेंव्है
आई। कहौसुछूटैकौनउपाई॥ राजधर्मभीषमनवपा
यौ दानापदपुनिमोक्षसुनायौ। पैनपकौसंदेहनगयौ
नवभीषमराजासौंकह्यौ॥ धर्मपुत्रतूंदेषिविचार॥
कारनकरनहारकरतार॥ नरकेकहेकछुनहिंहोई॥ कर
ताहरताआपैसोई॥ ताकौसुमिरिराजनुमकरौ। अहं
कारचिततेंपरिहरौ॥ अहंकारकियेंलागतुपाप॥ सू
रस्यामभेटैंसंताप। १३६ ॥राग धनासिरी॥ करीगो
पालकीसवहोइ॥ जोअपनोपुरुषारथमानतु अति
झूठौहैसोइ॥ साधनमंत्रजंत्रउदिमवल एसवडारौधोइ
जोकछुलिखिराख्योनंदनंदनमेटिसकैनहिकोइ। दुख
सुखलाभअलाभसमुझितुमकतहिमरतहौरोइ। सूर
दासस्वामीकरुनामैंस्यामचरनमनपोइ॥ १३७ ॥रा
गकान्हरा॥ होतसोजोरघुनाथठटै॥ पचिपचिरहेसि
द्धसाधिकमुनितऊनवढैघटै॥ जोगीधरतध्यानमन
अपनेसिरपरराखिजटै। ध्यानधरतमहादेवअरुब्र
ह्मातिनहूपेनघटै। जपीतपीतपसाआराधेचारौवेद
रटै। सूरदासभगवंतभजनविनुकरमफांसनकटै। १॥
३८ ॥राग सारंग॥ भावईकोहू सोनटरै। कहावहराहक

हांवहरविससिआनिसंजोगपरै मुनिवसिष्ठपंडितअ
तिग्यानी रचिपचिलगुनधरै ॥ तातमरनसियहरनरा
मवनवपुधरिविपतिभरै ॥ रावनजीतिकोटितेती
सोंत्रिभुवनराजकरैं ॥ अमिरतवांधिकूपमेंराषी
भावीवससुमिरैं ॥ अरजुनकेहरिहूतेसारथीतऊजु
वनभुकरैं ॥ द्रुपदसुताकेराजसभादूसासनचीरहरैं
हरीचंदसोंकोजगदातासोघरनीरभरैं ॥ जोग्रहछा
डिदेसवहुधावेतउवहसंगफिरैं ॥ भावीकेवसतीनलो
कहैंसुरनरदेहधरैं ॥ सूरदासप्रभुरचीसोहूहैकोकहि
सोचमरैं ॥ १३९ ॥ रागकान्हरा ॥ तातेसेईहैहरीराइ ॥ सं
पतिविपतिविपतितेंसंपतिदेहधरेकोभाइ ॥ तरवरफू
लिफलेओरपतझर अपनेकालहिपाइ ॥ सरवरनीरभ
रेभरिउमडैसूकेषेहउडाइ ॥ दुतीयाचंदवढतहीवा
ढैघटतघटतघटिजाइ ॥ सूरदाससंपदाआपदाजिन
कोईपछिताइ ॥ १४० ॥ रागमलार ॥ अवनिधिकहाघटै
गोतेरो ॥ नंदनदनघरघरकोठाकुर अपुनभयोज्योचेरो
कहाभयोजोसंपतिपावेकियोवहुतघरघेरो ॥ कहूंह
रिकथाकहूंहरिपूजाकहूंसंतनकोडेरो ॥ ज्योवनितें
सुतजूथसकेलेहेरथकहिकघनेरो ॥ सवतजिसुमि
रोंसूरस्यामयहसांचोहेमतमेरो ॥ १४१ ॥ भाषमेदे
हत्याग ॥ रागसारंग ॥ भक्तवछलश्रीजादोंराइ ॥ भा
षमकीपरतिग्याराषी अपनोवचनफिराइ ॥ भारथ

सू॰सा २५

मांहकथायहविस्तनकहतहोइविस्तार॥ सूरभक्तवत्सलना
वरनैंसुरनकथाकौसार॥१४२॥ रागसारंग॥ भक्तवत्सल
ताप्रगटकरी॥ सतसंकल्पवेदकीआग्याजनकाजेप्रभु
दूरिकरी॥ भारथआदिदुरजोधनअर्जुनभेंटनगएवारि
कांवरी कमलनैनपौढेसुखसिज्यावैठेपारथपाइनत्री
प्रभुजागेअर्जुनततनचितयोकवआएतुमकुशलघरी॥
तापाछेंदुर्जोधनपोछ्योसिरदिसतेंमनगर्वधरी॥ अर्जु
नमनोरथअपनौंभाष्यौतवश्रीपतिवानीउचरी॥ जु
द्धनकरौंशस्त्रनहिंपकरौंएकओरसेनासिगरी॥ हरि
प्रभावराजानहिंजान्यौंकहीसेनमुहिदेवहरी॥ अर्जु
नकह्यौजानिसरनागतअपाकरौज्यौंप्रवकरी॥ निज
पुरआइराइभीषमसौंकहीजुवातेंहरिउचरी॥ सूरदा
सभीषमपारिग्याशस्त्रगहावनपैजकरी॥१४३॥
दुर्जोधनवचनभीषमप्रत॥ रागधनासिरी॥ राजमन
विह्वलपूछतराव॥ सुनौपितामहिभीषमममगुरको
जेकौनउपाव॥ उतअर्जुनअरुभीमपंडुसुतदुऊगरवा
रागभार॥ इतहिंकरनभगदंतद्रोनमूनमसेनापतिधी
र॥ जेजेजातपरततेमूतलज्यौंज्वालागतिचारकौन
संहारजानियतुनांहाहोतवीरनरवीर॥ जवतौसौंसमु
झरहीनयनवमेंकरीनकान॥ पावकदहतसवैदल
नेरीसेवरतूलसमान॥ अविगतिअविनाशीपुरुषोत्त
महौकेरथकिवयान॥ अचाजकहाजुवेधेपारथनी

नलोकरइकवान॥ अवतोहमतुमकों नकिआए सोईरजा
यसुदीजै।जातेरहैछत्रपनुमेरौसोईमंत्रकछुकीजै॥
जासहाइपोतधपंडोसुनपारथकोरयलीजै।नांनरतु
हमसवनसंघारिकैंकोनआजकोजीजै।नेरेआजक्रीर
पुतधारथजयाजीवघटमांह।यहकोकहैजातिहैरन
चढिहममतिसवकोगाह।आ जहूंसमुलिक्यौकरि
मेरयोकहतपसारेहाथ॥सूरनाहिकोसारवापूजैप्रभू
दिवावैसाथ।१४४॥भीषमप्रतिग्या॥रागमलार॥
आजजोहरिहिनशस्त्रगहाऊं॥तोलाजोंगंगाजननी
कौंसातनसुतनकहाऊं।स्यंदनखंडिमहारथीखंडोक
पिधुजसहतढहाऊं।पंडोसुतसनमुखव्हैधाऊंसलि
तासधिरवहाऊं।इतीनकरौसपिमुहिहरिकीछत्रीगत
तिहिनपाऊं।सूरदासरणभूमिविजैविनुजियतनपी
ठिदिखाऊं॥१४५॥रागमारू॥सुरसुरीसुतरणभूमिआ
ए।वानवरषालगेकरनअतिक्रोधव्है पारथकोसानत
नवसवनुलाए।कह्योअरिकोपप्रभुआवपतिज्ञातजो
नहीतोयुद्धनिजहमहिराए।सूरप्रभुभक्तवत्सलविर
दआनितुरतताहियाविधिवचनकहिसुनाए।१४६।
॥श्रीभगवानवचनअर्जुनप्रति॥रागमलार॥ हमभ
क्तनकेभक्तहमारे।सुनिअर्जुनपरतिग्यामेरीयहव्रि
धिटरतिनटारे॥भक्तनकाजलाजजियधरिकैंपायपि
यादेधाऊं जहांजहांभीरपरीभक्तनकोंतहांतहांजाइछु
डाऊं जोमभक्तनसोवैरकरतुहैसोनिजवैरीमेरोदेखि

विचारि मन्कहि न काल न रथ हांकत हौं मेरी जीते जीत मनक अ
पने के हारे हार विचारौं ॥ सूरदास जो मन को विरोधी चक्र सु
दरशन जायो ॥ १४७ ॥ राग मलार ॥ गोविंद कोपि चक्र कर
लीनो ॥ छांडि आपनो पन जादौंपति जन को भायो कीनो
रथ तें उतरि चले आतुर ह्वै चरन चरन अति धाए ॥ मन सं
कट भू भार बहुत हो चपल भए अकुलाए ॥ कछु अंग तें
उडत पीत पट सोहत बांह विशाल । स्वेद श्रवत तन न सो आ
छवि घन कन बरषत मनु लाल । सूरसु भुजा समेत सुदरस
न देखि विरंचि भ्रम्यो ॥ मानौ आन सृष्टि करिवे को अं
बुज नाभि जम्यो ॥ १४८ ॥ राग मलार ॥ मेरी परतिग्या र
हो कि जाउ ॥ इत पारथ कोपे है मऊ पर उत भीषम भट रा
व । रथ तें उतरि चक्र धरि कर प्रभु सुरसुरी सुत सन मुख आ
इ ॥ ज्यों कंदर तें निकसि सिंह झुकि गजजूथन पर धाइ ॥
आइ निकट श्रीनाथ निहारे परी तिलक पर डीठि ॥ सी
तल भई चक्र की धारा हरि हांसि दीनी पीठि । जै जै जै चिं
तामनि स्वामी सांतन सुत यों भाषै । तुम बिनु और को
न कृपा करि जो मेरो पन राखै ॥ साधू सो सुरसुरी सुवन
तुम मैं पन लागि डराऊं ॥ सूरदास भक्त दोऊ दिस का
पर चक्र चलाऊं ॥ १४९ ॥ अर्जुन भीषम संवाद ॥ राग
धनासिरी ॥ कहौं पितामो सों सो सत भाव ॥ जानें दुर
जोधन दल जीतो को विधि कौन उपाव । जब लगि जि
य अंतर घट मेरे को सर वर कर पावै ॥ चिरंजीव तौ लौं
दुरजोधन जियत न पत्र रचो आवै ॥ कोरो छांडि भ्रम

परकैसैंदूजो नृपकहावै ॥ पैंकछुवसनहिं हमपारथ तोश्री
पति तोहि जितावै ॥ अवमैंसरनतुम्हेंनकि आयौ मोहि
मंत्रकछुदीजै ॥ नांतरकुटमसैनसंघारि सवकौं नका
जकौंकीजै ॥ द्रुपदिकुमारहोइरथआगैं धनुकगहौतु
मवान । धुजावैठिहनवंत किलकौरैं प्रभुहांकिरथपान
कितककजीव किरपनमम अंतरदीजै कालहि प्रान ॥ सू
रएकहीवानविदारैं श्रीगुपालकी आन ॥ २५० ॥ भीष
मदेहत्याग ॥ प्रसंग ॥ राग सारंग ॥ पारथ भीषमसौंज
तिपाइ ॥ कियौसारथी सिखंडी आइ ॥ भीषमनाहिदे
खिमुखफेर्‍यौ । पारथजुझहेतरथपेर्‍यौ ॥ कियौजुद्धअ
तिहा विकार । लागीचलनरुधिरकी धार ॥ भीषमसर
सिज्यापरपर्‍यौ । पैंदक्षिनाइनलखिनहिमर्‍यौ । हरिपं
डौसमेत तहां आए सूरजप्रभु भीषमनमाए ॥ २५१ ॥
॥ राग सारंग ॥ हरिसौं भीषमनवैसुनाई ॥ कृपाकरीतु
मजादौं राई ॥ भारथमैंमेरोपनराख्यौ ॥ अपनोक
ह्यौदूरिकरिनाख्यौ । तुमविनुप्रभुऐसीकोकरै ॥ जोभ
कनकेवसअनुसरैं । तुमदरसनसुरनरमुनि दुलभ मो
कौंभयौसुअतिहीसुलभ । अवैदानअवमोकौंदीजै
सूरदासप्रभुइननीकीजै । २५२ ॥ राग सारंग ॥ गोविंदअ
वनदूरिवहकाल ॥ दीनानाथदेवकीनंदनभक्तवछल
गोपालमैंभीषमतुमकृष्णसारथी कियेपानपटला
ल । वहुतनसनाहसमरसरखेघेकंटकतुहिसुभाल ॥ तु

सू॰सा
२८

सोचरनकमलमोमस्तकछिनताकोंसरजाल। सूरदास
जनजानिआपनौंदेहुअभैकीमाल॥ १५३ ॥रागमला
र॥ वापटपीतकीफहरान॥ करधरिचक्रचरनकीधावनि
नाहिविसरतिवहवान॥ रथतेंउतरिचलनआतुरव्है
कचरजकीलपटान॥ मानोसिंहसैलतैंनिकस्यौमहा
मत्तगजजान। जिनगोपालमेरोपनराख्यौमेटिवेदकी
कान। सोईसूरसहाइहमारे निकटभएहैंआन। १५४॥
॥रागसारंग॥ नीकमधरिहरिकोउरध्यांन॥ देषतहरि
केतजेप्रान। प्रभूकृपातेंसवगृहआए॥ राजासिंहा
सनवैठाए। हरिपुनिद्वारावतीसिधाए॥ सूरदासहरि
केगुनगाए। १५५ ॥जुधिष्ठिरराजभगवानद्वारिका
गोनकौनाविनती॥ रागविलावल॥ धर्मपुत्रकौदेह
रिराज। निजपुरचलिवेकौकियोसाज। तवकौनाव
नतीउच्चारी॥ सुनोकृपानिधिकृस्नमुरारी। जवजव
हमकोंविपदापरी। तवतवप्रभुसहाइनुमकरी॥ तु
मविनुहमहिराजकिहिकाम। सूरविसारौहमैनस्या
म। १५६ ॥रागकल्यान॥ परवेविपदाहूनरही॥ मनसा
वैजोसुमिरेंजवजवमिलतेतवतवहीं॥ रनअरुवनवि
गृहडरआगेंआवतजवजवहीं॥ राषिलएतुमतौजग
जीवनत्रासहतेंसवहीं॥ कृपासिंधुकीकथासुनीत
हीनांहीपरतिकही॥ कहासूरसुखसंपतिजाकीजहां
जदुनाथनहीं॥ १५७ ॥रागकल्यान॥ परिवहविपतौ
नलीविचारी॥ धगयहराजविमुखहरिचरननकौ

हतपिंडुकारीनी ॥ महाअग्निजरविषलाडूनेराषिलर
योवनवारी ॥ अंबरहरतसभामेकृश्ना सोकसिंधुतेंटा
री । जन अर्जुनकेरत्थआरनसारथीभएमुरारी । जनम्र
त्रासनेराषिसूरप्रभूसंतनकेहितकारी ॥ १५८ ॥ राग
कान्हरा ॥ प्रभूजू विपदाभलीविचारी ॥ धमयहराजवि
मुखचरननतेंकहतिपंडुकीनारी । लाखामंदिरकैरौ
राचियोतहांराषेवनवारी ॥ दुरजोधनकीसभाद्रोपदी
अंबरदियेअपारी ॥ असीसहससिषिआपनआएसो
चभयोजियभारी ॥ सोसबसागपत्रनतिरपितिकरिक
छिनआपदाटारी ॥ परतिग्यापहनारकीराषीश्री
नरहरिवपुधारी ॥ सोईसूरसहाइहमारेसंतनकोहि
तकारी । १५९ ॥ राजाधृतराष्ट्रवैराग ॥ रागविलावल
कुरपतिज्योंहीवनकोंगयो ॥ धर्मपुत्रपरागटपुनिभ
यो । वरनिसुनांऊं ताअनुसार ॥ सूतकहीजैसीपर
कार भारथआदिकुरपतिकीसभा ॥ चलीपंडवनकी
जवकथा । विदुरकह्योमतिकरिअन्याइ देहपंडवन
राजवटाइ । कुरपतिकह्योधानममभाइ । पंडसुतनकी
करतुसहाइ । याकोंधांनिदेहुनिकार ॥ वहुरिनआवैम
रेद्वार । विदुरशस्त्रसवतवेउतारि । चल्योतीरथनमू
उउघारि ॥ भारथकेवीतेपुनिआयौ । लोगनसव
व्रितांतसुनायो । तवपूछौकुरपतिहैंकहां ॥ कह्योपं
डुसुतमंदिरजहां । राजासेवभलीविधिकरैं ॥ दिनप्र

सा.
सू.सा
२८

तिसुखसंपतितहांरहै॥ विदुरकह्यौदेषोहरिमाया॥ जिनय
हसकललोकभरमाया॥ इनमायासवलोगनलूट्यौ॥ जि
हिहरिकृपाकरीसोछूट्यौ॥ इहिंभेपुत्रएकसोभए॥ तिन्हें
विसारिसुखीसवहुए॥ अवमैंउनकौग्यानसुनाऊं॥ जिहि
तिहिंविधिवैरागउपाऊं॥ वहरौधर्मपुत्रपैआयौ राजादे
षिवहुतसुखपायौ॥ करिसनमान[illegible]कह्यौयामाई॥
ग्रं६ करीहमारीवहुतसहाई॥ लाखाग्रहतेंजुरतउवारे॥ अरु
वालातनतेंप्रतपारे॥ कौंनकौंनतीरथफिरिआए॥ विदुर
सकलविरतांतसुनाए॥ वहुरिकह्यौहरिसुधिकछुपाई
कह्यौनकछुरह्यौसिरनांई॥ वहुरौकुरपतिकेढिंगआइ पू
छेसमाचारसतभाइ॥ कह्योजुधिष्ठिरसेवाकरत॥ तातेंवहु
तअनंदितरहित॥ कह्यौपुत्रसुधिआवतिकवहीं॥ कह्यो
भावइकैवससवहीं॥ विदुरकह्यौसतपुत्रतुम्हारे॥ पंडोसु
तनसकलसंघारे तिनकेगृहतुमभोजनकरत॥ अरुपु
निकहतसुखीहमरहत॥ धृगतूंधृगयाकहिकेऊपरजी
वतरहिहौकवलौंभूपर॥ स्वानतुल्यहैवुधितुम्हारी॥ गू
ढनकाजसहतदुखभारी॥ द्रुपदीकेतुमवसनछिनाए
इनतुमराजवहुतदुखपाए॥ इनकेग्रहवहिसुखतुममा
नत॥ अतिनिलज्जकछुलाजनआनत जीवनआसपव
नतुमलेषी॥ शास्त्रानसोईतुमदेषी॥ कालआजिनसवही
जगजारत॥ तुमकैसेंअपजियतविचारत॥ आयुतुम्हारीग
ईसिराइ॥ वनचलितजोद्वारिकाराइ॥ कुरपतिकह्यौअंध

हमदोई। वनमेंमजनकौनविधिहोई॥ विदुरकहौसेवामेंक
रिहौं।सेवाकरतनेकनहिंडरिहौं॥ अर्धनिसातिनकौलेग
यो।प्रानभयौनृपविस्मैभयो॥ बूढिमैरैकैकहुंउठिगए॥
तिनकैतापनृपतिदुखभए॥ उहांजाइकरुपतिवलजोग
दियौछांडितनकैसंजोग॥ गंगधारासहगामनकियौ॥
विदुरमकौनीरथमगलियौ॥ तिहिअंतरनारदतहांआए
नृपकौसवविरतांतसुनाए॥ नृपकैमनउपज्योवैराग॥भ
जोसूरप्रभुसवकेअवत्याग॥१६०॥ राजत्यागहरिवियोग
पंडौउत्तरगवन॥ रागविलावल॥ हरिहरिहरिहरिसुमिरन
करौं।हरिचरनारविंदउरधरौं॥ हरिवियोगपंडौनजिराज
गएवनभयोपरीछतराज॥ कहौसुकथासुनौंचितधार॥
सूरकहैभागौतअनुसार॥१६१॥ रागविलावल॥ राजासौं
अर्जुनसिरनाइ॥ कह्यौसुनौविनतीहमराइ॥ वहुदिनभ
येहरिसुधिनहिंपाई॥ आताहुइतौदेषौजाई। यहकहि
पारथहरिपुरगए॥ सुन्यौसकलजादौछैभए॥ अर्जुन
सुनतनैनजलधार।परयोधरनिपरखाइपछार॥ तवदा
रुकसंदेशसुनायौ॥ कह्यौजुहरिजीगीतागायौ॥ सोसह
पमनहिंदेआन॥ राहियौसदाकरनममध्यान॥ तवअ
र्जुनमनधीरजधारि॥ चल्यौसंगलैजेवरनारि॥ तहांक
वनसौंभईलिराई॥ लूटीसवविनस्यामसहाई॥ अर्जु
नवहुतदुखितनवभए॥ घांआएनवहुतदिनभए॥ रोवैं
रुपमनतुरंगअरुनाग॥ स्यारघोसनिसवोलहिंकाग॥ कंपे
तरुवरपानहिंहोइ॥ भयोसचेतनृपतियहजोइ॥ इहि

पाले

अंतरअर्जुनफिरिआयौ। राजाकेचरननसिरनायौ। राजाता
कोकंठलगाइ। कह्योअबहैंजादौराइ। वलवसदेवकुसलस
वेलोई॥ अर्जुनयहसुनिदीनोरोई। राजेकह्योतनकहाभयोतो
हि॥ तूक्योंकहिनसुनावहिमोहि। काहूअसनकारनुहि
कीनो॥ कैकहिदाननद्विजकोदीनौ॥ कैसरनागतकोंनहि
राख्यौ। कैतुमसौंकाहूकटुभाख्यौ। कैहरिजीभएअंतरध्यां
न। मोसौंकहितूप्रगटवखान। तवअर्जुननैननजलधा
रि। राजासोंकह्योवचनउचारि। सूरजप्रभुवैकुंठसिधारे।
जिनहमरेसवकारजसारे। १६२ ॥रागमलार॥ हरिविनु
कोपुरवैमोस्वारथ मूडधुननसिरसोकरमारतु नदनके
रतनपपारथ। कैथेहसकोथकीचरनगति। अबध्यावैको
उहथारथ। पांचवानसंकरमुहिदीनेतेऊगएअकारथ
ताकेसंगसेनवंदकीनो अरुजानेमहाभारथ। कोपरहरै
सूरकेप्रभुविनुघटतनुप्रानपदारथ। १६३ ॥रागविला
वल॥ यहसुनिराजारोइपुकारे॥ भीमआदिकरोएपुनि
मारे॥ रोवनसुनिकुंतातहांआई॥ कह्योकुसलजादोज
दुराई। अर्जुनकह्योसवैलरिमुए। हरिविनुहमअनाथ
सवहुए। कुंताप्राननतजेधरिध्यांन। जीवनमरनउन्हैसमान।
राजपरीछतकोंनृपदीनौं। वज्रनाभमथुरापति
कीनौं। द्रुपदासुतासमेतसवभाई॥ उत्तरदिसागएहर
िध्याई। जोगपंथकरिउननतनतजे॥ सूरसवैनजिहरिप
दभजे॥ १६४ ॥श्रीभगवानपरीछतगर्भरछ्यापरीछतज
न्मवरनन॥ रागविलावल॥ हरिहरिहरिहरिसुमिरनुक

रौं हरिचरनारविंदउरधरौं ॥ हरिपरीछतगर्भमझार राषि
लीयौ निजक्रपाआधार । कहौंसुकथासुनौ [illegible] चितला
इ जोहरिभजेरहेसुखपाइ ॥ भारथयुद्धवहुतजवभयौ
दुरजोधनघाइलनहारह्यौ ॥ अस्वसथामातापेजाइ ॥
ऐसीभांतिकह्यौसमुझाइ ॥ हमसौंतुमसोवालमिताई
हमसौंकछूनभईमिताई ॥ अवजोआग्यामोकौंहोइ ॥
पांडुविलंवकरौंअवसोइ ॥ राजगएकौंदुखनहिसोई ॥
पंडौराजनहीजोहोई । उनकेमूयेंतेंसुखहोई ॥ जोकरि
सकौंकरौंअवसोई ॥ हरिसर्वग्यबातयहजानि पंडुसुतन
सौंकहीवषानि ॥ आजुसरसुतीतटरहौसोइ । पैयहवात
नजानैकोइ ॥ पंडौहरिकीआग्यापाइ ॥ तजिग्रहरहेसर
सुतीजाइ ॥ आहसौंयहकहिनसुनाई ॥ उहांजाइसवरैनि
विताई । अस्वस्थामातवहांआइ ॥ द्रुपदासुतनसोवते
पाइ उनकेसिरलैगयौउतारि ॥ कह्यौपंडुवनुआयौमा
रि ॥ विनदेषेताहिसुखभयौ ॥ देषेतेंदूनौदुखभयौ ॥ ए
वालिकतेंवृथासंघारे ॥ काहिकुरपतिनजिप्राणसिधा
रे ॥ अस्वस्थामाभैकरिगयौ ॥ इहांलोगसोवततेंजगयौ
द्रुपदीदेषिसुतनदुखपायौ ॥ अर्जुनसौंयहवचनसु
नायौ ॥ अस्वस्थामाजवलगमारौ ॥ तवलगअन्ननमु
खमेंडारौं ॥ हरिअर्जुनरथपरचढिधाए ॥ अस्वस्थामा
पेचलिआए ॥ अस्वस्थामाब्रह्मास्त्रचलायौ ॥ अर्जुनहूं
ब्रह्मास्त्रपठायौ । उनदोऊसोंभईलिराई ॥ तवअर्जुनदो
ऊलएवुलाई ॥ अस्वस्थामाकोंगहिल्याए ॥ द्रुपदासी

समूहमुकराए॥तिनकेमारेंहत्याहोइ॥मरैजियतननहिं
देषोकोइ॥अस्वस्थामारह्यो।बिसिआइ॥ब्रह्मअस्त्र
कौदियोचलाइ।गर्भपरीक्षतजारनगयौ॥तवहरि
नाहिजारननहिंदियौ।रूपचतुरभुजगर्भमझार॥
तासोंताकौलियौउवार।जन्मपरीक्षतकौजवभयो
६ कों कह्यौचतरभुजअवकहांगयो॥जिनजवहरिदे
ष्योसोइ पाइसंतोषसुषीभयौजोइ।राजाजन्मसमैंकौ
देष।मनमैंपायोहर्षविशेष।गर्भपरीक्षतरक्ष्याकरी
सोईकथासकलविस्तरी।श्रीभगवानकृपाजिहिंकरी
सूरसुमारेकाकेमरै।१६५॥राजापरीक्षतकथा॥रागवि
लावल॥हरिहरिभक्तनकौसिरनाऊं।हरिहरिभक्तनकौ
गुनगाऊं।हरिहरिभक्तएकनहिंदोइ।पैयहज्ञानलखैवि
रलाकोइ।भक्तपरीक्षतहरिकौंप्यारो॥गर्भमझारहु
तौजवबारो।ब्रह्मअस्त्रतेंताहिवचायौ।जुगछगवि
रदपहैचलिआयौ वहुरिराजताकौजवभयौ।जसदि
गविजैचहूंदिसगयौ।सिगरीप्रजाधर्मयुतदेष।ताकै
मनभयौहर्षविशेष।कुरक्षेत्रमैंपुनिजवआयौ।गाइ
वृषभनहांदुखितपायौ॥तासवृषभकेपगत्रयनाहिं
रोवतिगाइदेषिकरिताहिं।वृषवकह्यौतासौंयाभा
इ।मेरेहिततूरोवतिआइ॥कैअधर्मतुमऊपरहोत॥
ताकारनतुमकौंदुखहोत॥गौकह्योहरिवैकुंठसिधा
रे।समदमउनहींसंगसिधारे।दयाधर्मसंतोषहूगा

यों ॥ त्यागिछिमादिकसपनोभयो ॥ जगसराधनाहिको
ईकरैं ॥ कोईधर्मनमनमेधरैं ॥ अरनोकौंविनपाइन
देष ॥ मोहिहोतुहैंदुखविसेष ॥ इहिअंतरराजासु
उरायो ॥ रषवगाइकौंघाइचलायो ॥ ताहिपरीक्षित
सर्वर्डुउठाइ ॥ वहुरोंवचनकह्यौयाभाइ ॥ तूंकोकौं
नदेसहैतेरो ॥ कैछललागनोराजसवमेरो ॥ याविधिन
पतिपरीक्षितकह्यौ ॥ पैउनकछुउतरनदयौ ॥ क
ह्यौवृषभसौंकोउदुखदाइ ॥ तासनाममुहिदेहव
ताइ ॥ इंद्रहोइताहूकौंमारौ ॥ तुम्हरौइहसंतापनिवा
रौं ॥ वृषभकह्यौतुमऐसेईराव ॥ पैमैंलेवकौनकौ
नांव ॥ कहियतुहरिइछादुखहोइ ॥ दुतियादुखदा
इकनहिकोइ ॥ कुइकहैहैनर्मदुखनकेदाता ॥ काहूदु
खनहिदेतुविधाता ॥ कोउकहतसतुहोतदुखदाई ॥
पैमैंतीनकरीशत्राई ॥ काकानामवताऊंतुमसौं ॥ दु
षदाइकदुष्टजोहमसौं ॥ कहियतइतनेदुखदातार
सोतुमदेषौहृदैविचार ॥ नवविचारकरिराजादेष्यौ
सोनिरपतिकलजुगकरिलिष्यौ ॥ वृषवधर्मअरुपृ
थ्वीआनमाइ ॥ इनकौंभयोयहदुखदाइ ॥ ताहिक
ह्यौतूंवडोअधर्मी ॥ तोसमआननाहिऔरकुकर्मी ॥
छिमादयातपपगतैंकांटै ॥ छांडिदेसममयहक
हिडांटै ॥ तिनकह्यौमोमैंएकभलाई ॥ तुमसौंकहौं
सुनौंचितलाई ॥ मनसापापनलागतकोई ॥ राज
यस्सीविचारतमननैंमैहोई

तुह्मारो है सब ठौर । तुम बिन न्रपत न दुतिया और । जौन
ठौर मुहि आज्ञा होइ ॥ ताही ठौर रहौं मैं जोइ ॥ कह्यो हरि बिम
ख अन्न बिस्वा जहां । सुरापान बधिक ग्रह तहां । जूवा खेल
त है जहां ज्वारी ॥ ए पांचौ है ठौर तुम्हारी ॥ पाचौ ठौ हिं न्रप
त ए जहां मो कौ ठौर बतावौ न हां ॥ तब न्रपता कौं कनक ब
तायौं । कनक मुकुट लखि सो लपटायौ ॥ इक दिन राव अ
खेटक गयौ । ता वन मांह पियासो भयौ । ऋषि समीप के
आश्रम आयौ । ऋषि हरि पद सों ध्यान लगायौ । राजा ज
ल ता ऋषि सौं माग्यौं । ताकौ मन हरि पद सों लाग्यौ ॥
राजा कों उतर न हिं दियौ ॥ तब मन मांह क्रोध तिन कियौ
यह सब कलजुग कौ परभाव । जो न्रप के मन भयौ कुभा
व । ऋषि कौ न्रप समाधि बिचारि । दियौ भुजंग म्रतक गु
र डारि । ऋषि समाधि मैं त्यों ही रह्यौ सिंगी ऋषि सों
लरकन कह्यौ ॥ श्रंगी ऋषि तब कियौ बिचार । प्रजा दु
खकै न्रपत कुमार । दियौ आप जो तिहि कपाई । सप्तम
द्यौस राइ मर जाइ । दैकरि आप पिता पै आयौ । देख्यौ सर्प
पिता गर नायौ रोवन लाग्यौ मन अब हजानि । रुदन
सुनत छूट्यौ मुनि ध्यान । सुत सौं कह्यौ कहा भयौ तो
हि । क्यों न सुनावत निज दुख मोहि । श्रंगी ऋषि तब
कहि समुझायौ । न्रप भुजंग गरी बातें नायौ । यह आप
राध बडो उन कियौ ॥ तिहि कउ सन आप मैं दियौ । ऋ
षि कह्यौ बहुत बुरौ तैं कियौ । जो यह आप न्रपति कों
दियौ तो सराप तें मरिहि सोइ । यह अपराध मोहि सब

होइ ॥ सुख सोंव सत राज कैयो सब ॥ दुख पै है सो सकल
प्रजा अब । या को रच्या हरि जी कैरें ॥ हरि आज्ञा यह तुम
अनुसरैं । इहां राजा मन में पछिताइ ॥ मै यह कियौ बडो
अन्याइ । जाके हृदै बुद्धि यह आवै ॥ ताकौ फल सो भ
लो न पावै ऋषि सुत कौ मै ज्यो समुझाइ ॥ नृप सों क
हतू ऐसें जाइ । मम सुत श्राप दयो या माइ ॥ सप्तम
दिन तुम्ह तक्षक खाइ । शृंगी यह कीनो विन जानें
हो तुम कहा अब के पछितानें । ताते तुम उपाव सो क
रो । जाते भौ सागर कौं तरो ॥ नृप सुनि लाग्यो करन वि
चार सप्तम दिन मरिवौ निरधार । जन्म दान करि सुरपु
र जै हैं ॥ तहां जाइ कै सुख बहु पैहैं बहुरि कह्यौ सुरपु
र कछु नाहीं पुन्य छीन तिहि ठौर रहाहीं ॥ ताते पु
त्र कलित्र हित्याग ॥ गहों एक हरि पद अनुराग ॥ बहु
रि कह्यौ अब को कहा त्याग ॥ खोयो जन्म दुखै सुख
लाग । सूर न हरि पद सौं चित लायो ॥ इन उत देखत ज
न्म गवायो ॥ १६६ ॥ राग धनासिरी ॥ इन उत देखत जन
म गयो । या माया झूठी के कारन दोऊ दृग अंध भयो
जनम कर्म याते दुखित भई जानि दुख प्रान सह्यौ ॥ वे
ष भुवन पति विसरि गए तुहि सुमिरन क्यों न रह्यौ ॥
श्री भागोत सुनी कवहू वीच हि भटकि मर्यो ॥ सूर नहीं
दास कहि सब जग बूड्यो जुग जुग भगत तर्यो ॥ १६७
॥ राग नट ॥ जनम सिरानों अटकें अटकें । राजकाज

सू.सा.
२२

सटपटकौ दौरैं विना विवेक फिर्‍यौ भटक्यो ॥ कबिन कं
दाजुरच्यौ मायाकौ नेरयौ जात न उटक्यो ॥ नाहरि भग
ति न साधसमागम रह्यौ वीच हिलटक्यो ॥ ज्यौं वहु कला
लकाछि दिषरावै लोभन छूटत नटक्यो ॥ सूरदास सो
भा क्यौं पावैं पीये भवन धन मटक्यो ॥ १६८ ॥ राग सारंग
जनम सिरानो ऐसै ऐसैं ॥ कै घर घर भरमत जदुप
ति विनु कै सोवत कै वैसैं ॥ कै कहुं षान पान रत्नादि
क कै कहुं वाद अनैसैं ॥ कै कहुं रंक कहूं ईस्वरता नटवा
जीगर जैसैं ॥ चेत्यौ नाहीं गयो टरि औसर मीन विना
जल जैसैं ॥ यह गति भई सूर की ऐसैं स्याम मिलें धौं कै
सें ॥ १६९ ॥ राग केदार ॥ विरथा जनम लियो संसार ॥
करी न कबहूं भक्ति हरि की मारी जननी भार ॥ योगय
ज्ञ जप तप नहीं कीनों अलप मति विस्तार ॥ प्रगट
प्रभु नहिं दूरि हैं तूं देषि नैन पसार ॥ प्रवल अविद्या
ठग्यो सव जग जनम जूवा हार ॥ सूर हरि कौ सुजस
गावहुं जाहिं मिटि भव भार ॥ १७० ॥ राग सोरठ ॥
काया हरि कै काम न आई ॥ भाव भगति जहां हरि ज
स सुनियत तहां जात अलसाई ॥ लोभ आतुर व्है
काम मनोरथ तहां सुनत उठि धाई ॥ चरन कमल
सुंदर जंह हरि के क्योंहूं जात न वाई ॥ जव लग स्या
म अंग नहीं परसत अंधे ज्यौं भरमाई ॥ सूरदास
भगवंत भजन तजि विषै परम विष पाई ॥ १७१ ॥

सवैदिनएविषकेहेत ॥ तौलोपनऐसैहीवितएकेसभए
सिरसेत ॥ नैननअंधश्रवननभयौप्रानतजेतिहि
येत ॥ तजिगंगउदिककूपजलअचवतहरितजिपूजतप्रे
त ॥ मनवचक्रमजोभजेस्यामकौंचारिपदारथदेत ॥ ऐ
सेप्रभूछांडिकहांभटकैंअजहूचेतअचेत ॥ राममनामवि
नुक्योंछूटैगोचंदगहेज्योंकेत ॥ सूरदासकछुखरचन
लागतुराममनाममुखलेत ॥ १७२ ॥ रागसारंग ॥ जोतूंरा
मनामचितधरतौ ॥ अबकौजनमआगिलौतेरौदोऊज
नमसुधरतौ ॥ जमकौत्रासससबैमिटिजातौभगतनाम
तेरौपरतौ ॥ तंदुलघिरतसंवारिस्यामकौंसंतपरोसाकरतौ
होतौमहासाधकीसंगतिमूलगांठिनाहिटरतौ ॥ १७३ ॥
॥ रागमलार ॥ देमैएकौतौनभई ॥ नाहरिभजेनग्रहसुख
पायौवृथाविहारगई ॥ ठानीहुतीऔरकछुमनमेऔरेंआ
नभई ॥ अविगतगतिकछुसमुझपरतिनहिंजोकछुकरतद
ई ॥ सुतसनेहत्रयसकलकुटुंवमिलिनिसदिनहोतिखई
पदनखचंदचकोरविमुखमनखातअंगारमई ॥ विषैं
विकारदावानलउपजीमोहवयारलई ॥ भ्रमतभ्रमत
वहुतैदुखपायौअजहूनटेवगई ॥ होतकहाअवकेपछि
ताएहोतनवेरविनई ॥ सूरदाससेयेनक्रपानिधिसोसुख
सकलमई ॥ १७४ ॥ रागसारंग ॥ यहसवमेरीआरकुम
ति ॥ अपनेहीअभिमानदुखितदुखपावतहौंमेअति
जैसैकेहरिउझकिकूपजलदेषेंआपपरत ॥ कूपपरयौक
छुमरमनजानौंभईआरसोईगत ॥ ज्योंगजफटकसिला

सूरदास वैकुंठ पद २ मंकौ ३ लप २ पद करतो

मैंदेषतदसननजाइअरत॥जौतूंसूरसुखहिचाहतुहै तौक्यों
विषैपरत॥१७५॥रागकेदार॥कूहेहीलागजनमगंवायो
भयोकहासपनेकेसुखकोहरिसोंचितनलगायो॥कव
हुंकवैठ्योरहसिरहसिकैठोटागोदखिलायो॥कवहुंक
फूलिसभामैंवैठ्योमूछनतावदिवायो॥टेढीचालिपाग
सिरटेढीटेढैटेढैधायौ॥सूरदासप्रभुक्यौंनहिचेततजव
लगकालनआयौ॥१७६॥रागकान्हरा॥जगमेंजीवतहीं
कौनातौ॥मनविछुरैंतनछारहोइगोकोउनवातपुछातौ॥
मैमेरीकवहूंनहिकीजेकीजेंपंचसुहातौ॥विषैअशक्त
रहतनिसवाँसुखसियरोदुखतातौ॥सूढसांचकरिमा
याजोरीआपुनरुखोषातौ॥सूरदासकछुथिरनरहीजो
आयोसोजातौ॥१७७॥रागधनासिरी॥कहालाइतेंह
रिसौंतोरी॥हरिसौंतोरिकौनसौंजोरी।सिरपैधरिनचलैपा
कछुकोऊ जोजतनकरिमायाजोरीराजपाटसिंघासन
वैठ्योनीलपदमहूसोंकहीथोरी॥मैंमेरीकरिजनमगंवावत
जबलगनांहिपरतजमडोरी॥धनजोवनअभिमानअलप
जलकाहेवूडिआपनीवोरी॥हसाहैंमनकौंगर्वितातामूरष
कीमतिदैथोरी॥सूरदासभगवंतभजनविनुचलेषेलिफाग
नज्योंहोरी॥१७८॥रागधनासिरी॥विचारतहीलागेदिन
जान॥सजलदेहकागदतेंकोमलकिहिविधिराषोप्रान॥जो
गजुगतिध्याननहिसेवासंतसंगनाहिंज्ञान॥जिव्हास्वा
दइंद्रीकारनआवघटतिदिनमान॥औरउपावनहींरिवो
रसुनिसुनियहदेकान॥सूरदासअवहोतिविगूचनभजि

ले सारंगपानि ॥ १७९ ॥ राग जैतसिरी ॥ अब मै जानी देह बुढानी
सीस पाउ धर कह्यौ न मानत तन की दसा सिरानी । आन कह
त आनै कहि आवत नैन नाक वह पानी ॥ मिटि गई चमक द
मक अंग अंग की हृष्ट अरु मति जु हिरानी । नारी गारी बिनु
नहि बोलति पूत करै कल कानी । घर मैं आदर का डरकै सौ घा
कत रैनि विहानी । नाहि रही कछु सुधि तन मन की भई
जु वात पुरानी ॥ सूरदास अव होति विगुचनि भजि ले सारंग
पानी १८० ॥ राग केदारा ॥ रे मन सुमिरि हरि हरि हरि सत ज
ग्य नांहि न राम सरपर जानि करि करि करी हरि नाम हरनाकु
स विसार्यौ उठ्यौ वरि वरि वरी ॥ प्रहलाद जन हित असुर
मार्यौ नाहि डरि डरि डरी ॥ गज गीध गनिका व्याध के अघ ग
ए गरि गरि गरी । चरन अंबुद बुद्धि भाजन लेह भरि भरि
भरी ॥ द्रोपदी की लाज कारन दौरि परि परि परी पंडु सुत के
विघन जेते गए टरि टरि टरी ॥ कान दुरजोधन दुसासन सकु
न अरि अरि अरी । सुत हित अजामिल नाम लीनो गयौ
तरि तरि तरी ॥ चार फल के दान मैं प्रभु रहे भरि भरि भरी ॥ सू
र श्री गोपाल हिरदैं राखि धरि धरि धरी ॥ १८१ ॥ राग केदार
भजि मन नंदनंदन चरन । परम पंकज अति मनोहर सकल
सुख के करन ॥ सनिक संकर ध्यान धावत निगम असरन
सरन । सेस सारद रिषी नारद संत चिंतत चरन ॥ पद पिरा
ग प्रताप दुर्लभ रमा पो हित करन ॥ परसि गंगा भई पावन
तिहूं पुर उधरन ॥ चित्त चेतन करत अंतर जी अघ हरन तितार
न तरन ॥ गए तरि लैं नाम केते पतित हरि पुर धाम जा सब

दरजपरसिगौनमनारिगनिउद्धरन।कृष्नपदमकरंदपावन
औरनहिसरवरन॥जासमिहमांप्रगटकेवटधोइसिरपग
धरन।सूरभजिचरनारविंदनमिटेजामनमरन।१८२॥
॥रागकेदार॥करिमननंदनंदनध्यान॥सेवचरनसरोजसी
तलतजिविषैरसपान जानुजंघत्रभंगसुंदरकलितकंचन
दंड।काछनीकटपीतपटदुकूंवलकेसरखंड॥मनुप्रवाल
मरालछोनाकिंकिनीकलराव॥नाभिहृदेहमावलीअल
चलतसैनसुभाव।मनिकंदमुक्तामालमिलिअंगऔरउर
वनमाल॥सुरसुरीतटरहीउरझिमानोलतास्यामतमाल॥
बाहुपानसरोजयहवधरैमदुमुखवैन॥अतिविराजतव
दनविधमनुसुरभिमंडितरैन।अधरअहनकपोलनासा
परमसुंदरनैन।चलतकुंडलगंडमंडलमनोनिरखतमैन॥
कुटिलकचभ्रूतिलकरेषासीसमुकटसिखंड।मनुमदनध
नवानसांधेदेखिघनकोदंड सूरश्रीगोपालकीछविदृष्टि
भरिभरिलेहि॥प्रानपतिकीनिरखिसोभापुलकपरनन्नदे
हि।१८३॥रागकेदार॥रेमनसमुझिसोचविचार॥भगति
विनभगवंतदुर्लभकहतनिगमपुकार।डारिपासासाध
संगतिफेरिरसनासार दांवअवकेपरयोपूरोकुमतिपिछ
लीहार राषिसत्रहसुनिअठारहचोरपांचौमार।डारिदे
तूतीनिकानेंचपरचौकनिहार॥कामक्रोधजुलोभमोह्यौ
ठग्योनागरिनार।सूरश्रीगोविंदभजनविनुचलेपादोऊ
करझार।१८४॥रागसारंग॥होहुमनरामनामकौगाहक
चौरासीलखजियाजौनमेंठगतफिरयोअनाहक भक्ति
हाटबैठिअस्थिरव्हेहरिनगनिर्मललेह॥कामक्रोधम

दलोभमोहनूसकलदलालिनुदेह कहिहियाव[illegible] यह
सोंजलादिकेहरिकेपरलेजाह घाटवाटकहूंअटकहोइ
नहिंसवकोऊदेहिनिवाह ओरवनमेनांहीलाहाहोति
मूल मेहानि सूरस्यामकोसोदासांचोकह्योहमारोमानि
१८५ ॥रागकेदार॥ रेमनरामसोंकरिहेत हरिभजनकीवा
रकरिलेउवरैतेरोखेत मनसुवातनपींजरातिहिमांझरा
खोचेत कालफिरतविलारतनधरिअवघरीतिहिलेत
सकलविषैविकारतजितोतिरैसायरसेत सूरभजिगोवि
दगुननगुरवताएदेत १८६ ॥रागकान्हरा॥ मनवचक्रम
मनगोविंदसुधिकरि सुचरुचसहजसमाधिसाजिसठ
दीनवंधुकरुनामैउरधरि मिथ्यावादविवादछांडिदेकाम
क्रोधमदलोभहिपरहरि चरनप्रतापआनिउरअंतर औरे
सकलसुखयासुखतरहरि वेदनकह्योसुमतहूभाख्यो
पावनपतितनामनिजनरहरि जाकोसुजससुनतअरु
गावतजेहेपापवृंदभजिजरहरि दीनदयालगुपालगो
पपतिगावतिगुनआवतिढिगधरहरि परमउदारस्या
मसुंदरघनसुखदाईसंतनहितनरहरि अतिभैभीतनि
रखिभैसागरधनज्योंआनिरह्योघटघरहरि अवअमजा
लपसारपरेगोहरिविनुकोनकरैगोधरहरि अजहूंचेत
मूढसिरऊपरपसरीकालअगिनझरझरहरि सूरव्याल
मुखकालग्रसतहैश्रीपतिसरनपरनछिनछरहरि १८७
॥रागकेदार॥ तिहारोंकृष्णकहतकहाजात विछुरेमि

लनवहुहरिकितकैहैज्योंतरवरकेपात॥प्रानलियेंजमुजातमूढमम
तिदेषतजननीतात।छिनकमांहिकोटिजुगवीततनरककी
केतेवात इहिजगप्रीतिसुवासेवरज्योंचाषतहीउडिजात
जमकेफंदपस्योनहिजवलगचरननकिनलपटात॥कहत
३ह सूरविथादेहीएतीकितइतरात।१८८॥रागकेदार॥दिनद
सलेहगोविंदगाइ।छिननचेततचरनअंवुजवादजीवनजा
इ दूरिजवलौंजुरारोगअरुजोतिइंद्रीभाइ॥आपनोकल्यान
करिलेमानुषातनपाइ रूपजोवनसकलमिथ्यादेषिजि
नगरवाइ।ऐसेंहीअभिमानआलसकालग्रसिहैआइ॥
कोपकियेगतिजाइरेनरजरतभवनवुझाइ।सूरहरिकोंभ
जनकरिलेजनममरननसाइ।१८९॥रागधनासिरी॥तों
सोंकितिकहीसमुझाई।नंदनंदनकेचरनकवलभजितजि
पाषंडचतुराई।सुखसंपतिदारासुतहितकरिजोसवआ
वगवांई।छिनहीकरएसवैस्यामविनुअंततनहीसंगजाई
जनमतमरतवहुतजुगवीतेअजहूंलाजनआई।सूरदास
भगवंतभजनविनुजैहैजनमगवांई।१९०॥रागमलार॥
अवमनदेहौंरामदुहाई।मनवचक्रमहरिनामहृदेंधरिज्यों
करिवेदवताई महकष्टदसमासगर्भमेंधोमुखसीसरहाई अ
टकनिकठिनसहनतेंनिकस्योअजहूंनतूसमुझाइ।मिटिगए
रागदोषसवतिनकेजिनहरिप्रीतिलगाई॥सूरदासहरिना
मकीमहिमापतितपरमगतिपाई।१९१॥रागगौरी॥वेदिन
विसरिगएइहआइ।अतिउनमत्तमोहमदछाक्योंफिरतकेस
मुकराइ।जिनदिनजननीजिहुरअगिनमेंवस्योवहुतदुः

खपाइ अवसुनिकरजिमल्लिरनुमठानोमलमैमूड़गाडा
इ बुद्धिविवेकहीनबीनतनसवहितहाथपराई कहिं
हिधोंकौनसाथहोतिरेषानपानपहुचाई तिहिनक
रताचितु अधमअजोलोंजीवतजाकेत्याइ सूरसुमु
गज्योंसकनसहतसरविषैव्याधकीनाई १८२ ॥रागआ
सावरी॥ बौरेमनरहीअटलरिजान धनदारासुतवंध
कुटुंबकुलनिरषिनिरषिबौरान जीवनजनमअलप
सपनौसोसमुझिदेषिमनमांहि वादरछांहधूमधौरा
हरजैसेंथिरनरहाहिं जवलगडोलनवोलचितवत
धनदाराहैतैरें निकसतहंसप्रेतकहितजिभजि कौ
ऊनआवैनेरें मूरषसरअज्ञानमूरमतनाहीकोऊते
रें जोकोऊतेरोहितकारीसोकहैकाढसवैरें घरीएक
सजनकुटुंबमिलिवैठेंरुदनविलापकराहीं जैसेंका
गकागकेमूएकांकांकहिउड़जाहीं कमपावकतेरोत
नभषिहैंसमुझिदेषिमनमांहीं दीनदयालसूरभजि
लेअवयहऔसरफिरिनांहीं १८३ ॥रागधनासिरी॥
रेमननिपटनिलजअनीति जियतनकीकोचलौवै
मरतविषियनप्रीति स्वानकुविजसिकंजकानोंश्रव
नपुछहीन गरेभाजनकंठकृमसिरकामिनीआधान
निरषिनीज्योंलियेंआवतधरतनीतएधार अजा
नारदकमनकोउनमुरिनवारंवार छिनकमैयहदेहषे
हीदिषदेषनलोग सूरजेनरविमुखहरितेंसतीकेसे
नोग १८४ ॥रागसारंग॥ बौरेमनसमुझिसमुझिकछु

सू.सा.
हे ३६
३। हरि

चेत अपनोंजन्म अकारथ खोयो स्याम चुहर मए सेत न
वलगसेवा करी निहचें करी जवलग सुर खेत सूरदास भ
रमो जिनि भूलौ करि विधिना सौं हेत १२५ ॥रागकान्ह
रा॥ रे सठ विनु गोविंद सुख नांहीं तेरो दुख दूरि करिवे
कों रिधि सिधि फिरि फिरि जांही शिव विरंचि सनकादि
मुनीजन ऊन हूं गति (वी) औ गाहीं जगत पिता जगदीस सर
न विनु सुख तीनों पुर नांहीं और सकल मैं देखे ढूंढे तिनै
अगिन सी छांहीं सूरदास भगवंत भजन विनु दुख कव
हूं न हि जांहीं १२६ ॥रागकान्हरा॥ मन सों कोटिक वार क
ही समुझि न चरन गहत गोविंद के उर अघ सूल सही
सुमिरन ध्यान कथा हरि जू की यह एकों न भई लोभ ल
पट विषियन सों हित यह तेरी निवही छांडि कनक मनि
रतन अमोलिक गुंज की गर जगही ऐसें तू हे चतुर वि
वेकी पे तजि विषय नु मही ब्रह्मादिक रुद्रादिक रवि स
सि देखे सुर सव ही सूरदास भगवंत भजन विनु सुख
तिहुं लोक नही १२७ ॥रागपरज॥ मन रे करि माधो सों
प्रीति काम क्रोध मद लोभ मोह तू छांडि सवे विपरीति
भौंरा भोगी वन वन भरमैं मोद न मानै पाप सुमसुम
न न वलि नीरस रस करि कंवल वंधावे आय सुनि प
रमत पिय प्रेम की चातक चेत न विचार घन आसा स
व दुख सहै अंतन मांगे वार देखो करनी कंवल की की
नौं जल सों हेत प्रान तजे हित ना तज्यो सूक्यो सर हि
समेत दीपक पीर न जाने ही पावक परत पतंग त

नैनो तिहि ज्वाला जरयौ चित न भयौ रस भंग मीन वियो
ग न सहि सकै नीर न छूछेवान देषि जु नागी गति हिहि
तन घटै तन जात पानि परेवा प्रेम कौ। चित लै चढ़ तु आ
कास तहां चढ़ि तिहि जो देषई भूपाप रनु निस्वास सु
मिरि सनेह कुरंग कौं श्रवन न राष्यौ राग धरन धरैं पग
पछ मनौ सरसन मुख उरलाग देषि जरन जउ नारि
की जरति प्रीतम के संग चिता न चित न षीकौ भयौ राची प्री
यके रंग लोक वेद वरजत सवै नैनन देषत तास चो
र न चित चोरी तजै सरवस सहै विनास सरवस कौं र
सप्रेम हैं विषई वैले सार तन मन धन जोवन घटै
तऊ न मानै हार तैं जुरतन पायौ भलौ जानौ साधन सा
ज प्रेम कथा अनदिन सुनै तऊ न उपजै लाज सदा सं
घाती आपनौं जिय कौ जीवन प्रान सुनैं विसाह्यौ
सहज ही हरि ईश्वर भगवान वेदपुरान समत सवै
सुरनर सेवत जाहि महामूढ अज्ञान मति तू न सभारत
ताहि षग म्रग मीन पतंग लौं मैं सोधे सव ठौर जल
थल जीव जिते तिते कहौ कहां लग और प्रभु पूरन पा
वन सषा अपरन हू कौ नाथ परम दयाकर कृपानिधि
जीवन जाके हाथ गरभ वास अति त्रास मैं जहां न एकौ
अंग सुनि सठ तेरौ प्रानपति तहां न छांडो संग दिन
राति पोषत रहै जैसैं चोली पान वा दुख तें तुहि काढि
कै लै दीनो पै पान जिन जड तैं चेतन कियौ रज गुन त
त निधान चरन चुहर करन ख दए नैन नासिका औ

न असनवसनवहुविधिदएऔसरऔसरआन मातपि
तामैयामिलेलैरवि नईपहिचान सजनकुटुंवपरवदे
सुतदाराधनधाम महामूढविषईभयौचितअकाध्यौ
काम षानपानपरनारिसुखजोवनगयौसववीत ज्यों
पतिपरतयसंगवस्यौंभोरभयौभएभीत जैसेंसुखही
धनवढ्यौतैसेंनेहअनंग धूमवढ्यौलोचनषस्यौसखा
नसूझौसंग हमजान्यौसवजगसुन्यौवादेअजसआपा
र वीचनकाहूनवझियौदूतनदीनीमार कहाजानैं
केवारसौंऐसेकुमतिकुमीच हरिसौमीतविसारिकैं
सुखचाहतहैनीच जोपैजियलज्यानहींक होकहौसौं
वार एकहूंओकनहीभजेरेसठसूरगंवार २८८ ॥रागके
स्यान॥ धोषेहीधोषेउहकायौ समुझनपरीविषैरसगीध्यौ
हरिहीराघरमांझगंवायौ ज्योंकुरंगजलदेषिप्रछनगौ
प्यासनगईचहूंदिसधायौ जनमजनमवहुकरमकिये
अरुजनेपेआपवंधायौ ज्योंसुकसेंवरसोआसालगिनि
सवासरहदिचित्तलगायौ रीतौपस्यौजवैफलचाष्यौउ
डिगयौतूलतांवरोआयौ ज्योंकपिडोरवाधिवाजीगरक
नकनकौचोहटेनचायौ सूरदासभगवंतभजनविनु
कालव्यालज्योंजानिडसायौ २८९ ॥रागधनासिरी॥
जनमगवायौआवउपाई भजेनचरनकमलजदुपतिके
रहेविलोकतछाई धनजोवनमदऐंठेऐंठेताकतना
रिपराई लालचलुवधस्वानजूठनज्योंसोऊहाथन

आई रंचांच सुखलागिमूढन्नितकंचनरासगंवाई सूरदा
सश्रमु छांडिसुधारसविषैपरमविषखाइ २०० ॥रागध
नासिरी॥ भगतिकबकरिहोजनमसिरानों बालापनुखे
लतही खोयो तरुनाएगरबानों बहुपर पंचकरै मायाकौ
तऊनपतितअघानौ जतनजतनकरिमायाजोरीलैगयो
रंकुनरानौं रह्मएंत्रमकंठनिरूध्योसिरधुनिधुनिपछि
तानौं सुतपितुवनिताप्रीतिलगाईझूठेभरमभुलानौं लो
नमोहतेचेत्योनाहींसपनौज्योंडहकानौं सूरदासभगवं
तभजनबिनुजमकेहाथबिकानौं २०१ ॥रागधनासिरी
॥रामनामसुमिरनबिनुजनमबादखोयौं रंचिकसुखका
रनतेंअंतक्योंबिगोयौ साधसंगभक्तिबिनानिस्वारथ
जाई ज्वारीज्योंहाथझारिचालैंचुपकाई सुतदारागेह
देहसंपतिसुखदाई इनमेंकछुनाहितेरोकालअवधि
आई कामक्रोधलोभमोहतृस्नामनपोषोगोविंदगुन
।चितविसारिकोननींदसोयौ सूरकहैचितविचारिभ
रमभूलिअंधा राममनामभजिलैतजिऔरसकलधंधा
२०२ ॥रागकल्यान॥ भगतिबिनुबैलबिरानेह्वैहौं चारि
पांवसिरसींगगुंगमुखतवकैसेगुनगैहौं चारिपहरदिन
चरतफिरतवनततऊनपेटअघैहौं टूटेकंध अरुफूटीना
कनकौलौंभुसखैहौ लादतजोततलकुटबाजैतै
बकहामूंडडुरैहो सीतघामघनबिपतिबहुतसहिभा
रनरैमरिजैहौ हरिसंतनकोकह्योनमानतकियोआप

सू.सा
३८

नोपैहो सूरदासभगवंतभजनबिनुमिथ्याजनमगांवैहो
२०३ ॥रागसारंग॥ छांडिमनहरिविमुखनकोसंग जिन
केसंगकुमतिउपजतिहैपरतभजनमेंभंग कहाहोतपैपा
नकराएविषनहितजतुभुजंग कागहिकहाकपूरचुगा
एस्वानन्हाएगंग खरकौंकहाअरगजालेपनमरकटभू
षनअंग गजकौंकहान्हाएसलिताबहुरिधरैवहैढंग पा
हनपतितबाननहिबेधतरीतोकरतनिषंग सूरदासकारी
कांवरीपैचढतनदूजोरंग २०४ ॥रागसोरठ॥ रेमनजनम
अकारथखोरस हरिकीभक्तिकबहूनहिकीनी उदरभरेसोप
रिसोरस निसदिनफिरतरहतमुहबाए अहंकारकरिज
नमविगोरस गोउपसारिपर्योदोऊनीकैं अवकेरुदनकि
येंकहाहोरस कालजमनसोंआनिवनीहैदेषिदेषि
मुखरोरस सूरस्यामबिनुकोनछुडावैंचलेजावकरिघो
रस २०५ ॥रागसारंग॥ नवतुमगोविंदकौनसंभारे भूम
परेतेंसोचनलागेमहाकठिनदुखभारे अपनेंपिंडपोषि
वेंकारनकोटिसहसजियमारे उनपापनतेंकोंउउबा
रेगेरावन[illegible]मारनम्हारे आपलोभलालचकेकारनपा
पनतेंनहिहारे सूरदासजमकंठगहेतेंनिकसतप्राणदु
खारे २०६ ॥रागधनासिरी॥ रेमनमूरखजनमगवायो
करिअभिमानविषैरसगीध्योस्यामसरननहिआयो
यहसंसारसुवासेंवरज्योंसुंदरदेखिलुभायो चाषनला
ग्योरुईउडिगईहाथकछुनहिआयो कहाहोतअवकेंप

४

छिनाएयहिलेपापकमायौ॥ कहतसूरभगवंतभजनवि
नुसिरधुनिधुनियछितायौ॥ २०७ ॥रागपरज॥ औस
रहार्योरेतेंहार्यौ॥ मनुषाजनमपाइनरबौरेहरिकोभज
नविसार्यौ॥ रुधिरबूंदतेंसाजिकियौतनसुंदररूपसंवा
र्यौ॥ जठरअगिनतें ऊरधमुखदुखतेंजिहिंदसमासउबा
र्यौं॥ जबतेंजन्मलियौजगभीतरतबतेंप्रभुशतपार्यौं
अंधअचेतमूढमतिबौरेसोप्रभुक्योंनसंभार्यौ॥ पहरी
पटंबरकरीआडंबरयहतनझूठसंवार्यौ॥ कामक्रोधमद
लोभतर्यारतिवहुविधिकाजविगार्यौं॥ मरनविसारिजि
यनजियन।थिरथाप्यौबहुउदिमजियधार्यौ॥ सुतदारा
केमोहअचेविषहरिअंबरतफलडार्यौ॥ झूठसांचकरिमा
याजोरीरचिपचिभवनउसार्यौ॥ कालअवधिपूरनभ
ईजादिनतनहूंत्यागसिधार्यौ॥ प्रेतप्रेततनौनामपर्यौ
जबजेवरीबांधिनिकार्यौ॥ जिहिसुतकेहितविमुख
स्यामतेंप्रथमतिहींमुखजार्यौ॥ भाईबंधकुटंबसहो
दरसबमिलियहेविचार्यौ जैसेकरमलहोफलतैसें
तिनकानौरिउचार्यौ॥ सतगुरुकोउपदेसहृदैधरिजग
भ्रमसकलनिवार्यौ॥ हरिभजिविलंबछांडिसूरजप्रभू
ऊंचेटेरिपुकार्यौं॥ २०८ ॥रागदेवगंधार॥ चकईरीचलि
चरनसरोवरजहांनप्रेमवियोग जहांभ्रमनिसाहोतनहि
कवहूंसोइसागरसुखजोग जहांसनिकसेहंसमीनश्री
वमुनिजनमकरंदप्रकास। प्रफुलितकमलनिमषनहि
ससिडरगूंजतनिमधुवास॥ जिहिंसरसुभगमुक्ति प्रभो

फलापलसुकृतनअंरनजलपीजे ॥ सोसरछांडिकुबुद्धिविहंग
मइहांकहारिहिकीजे ॥ जहांलक्ष्मीसहितहोतनितगोविंदजू
सोभितसूरजदास ॥ अवनसुहातविषैरसछिल्लरहरिसमु
द्रकीआस ॥ २०८ ॥ रागदेवगंधार ॥ चलिसषीतिहिंसरो
वरजाहिं ॥ जिहिंसरोवरकमलकमलारूपनाविनासांहि ॥
हंसउज्जलपंषनिरमलअंगमलिमलिन्हाहिं ॥ मुक्तिमुक्ता
अंवनेफलतहांचुगिचुगिषांहिं ॥ अतिहिमगनमहामधु
ररसरसहामद्धिसमांहि ॥ पदमवाससुगंधसीतलले तु
पापनसांहिं ॥ सदाप्रफुलितरहेजलविनुनिमुखनहिकुं
भिलाहिं ॥ सघनगुंजतबैठिउनपरभौंरहुविरमांहिं देषि
नीरजुझलमलोअतिसमुझिकछुमनमांहि ॥ सूरक्योंन
हिंचलहिउडितहांभौंरउडिउडिआंहि ॥ २१० ॥ रागरामक
ली ॥ भृंगनिरीमजिचरनकमलपदजहांननिसकोत्रास
जहांविधिमानसमानप्रमानरवसोवारिजसुखरास ॥
जिहिंकिंजलकमलिमुमलसुएकामग्यानरसएकनि
गमसनकसुकनारदसारदमुनिजनभृंगअनेक ॥ शिव
विरंचपंजनमनरंजनछिनछिनकरतप्रवेश ॥ आषि
लकोशतहांलहोसुकृतजलपरगटस्यामदिनेस ॥ सु
निमधुकरीसुत्यागिकुमदगतुराजिववरकीआस ॥ सू
रजप्रेमसिंधतेंप्रफुलिततहांचलिकरेंनिवास ॥ २११
रागदेवगंधार ॥ सुवाचलितावनकोरसपीजे जावन
राम नाम अंम्रतरसश्रवनपात्रभरिलीजे ॥ कोतेरोपुत्र
पितानूकाकोघरस्वामीग्रहकोतेरो ॥ कालकरालस्वानकौ

जोजन तू कहै मेरो मेरयो ।। वन नानार समुझि छत्री चलि
नो कोंदि घराऊं ।। सूरदास साधन की संगति वडे भाग जो
पाऊं ।। २१२ ।। राग बिलावल ।। या विधि राजा करी विचार ।।
राजसाज सब ही कों डार । जोरन पर कुपान तन धारि ।।
चलो पुरपुरी सा सउ घारि ।। पुत्र कलित्र देषि सब रोवें ।।
राजा तिन की ओर न जोवें ।। राजा चलत चले सब लोग
दुखित भए सब षरी ति वियोग ।। नरपति पुर सरि के ढिंग
आइ ।। कियो स्नान मन जु का लाइ ।। करि संकल्प अन्न ज
ल त्यागो केवल हरिपद सों अनुराग्यो ।। अत्र वसिष्ठा
दिक तहां आए । नारद आदि मुनि वहु रिसि धाए ।। कुश
आसन दै नैवेदाए ।। यों कहि मुनि तिन कों सिर नाए ।। ध
नि भाग तुम दरसन पाए । मम उधार कारन तुम आए ।।
तुम देषत हरि सुमिरन होइ ।। और प्रसंग चले नहि कोइ
अपा हाइ करों अब सोइ ।। जाते मेरी सतगति होइ ।। को
ऊ कहैं दान यज्ञ विस्तारो ।। कोई कहै तीरथ सेवन करो क
हू कहु काहू कछु वरना ।। काहू कह्यो मंत्र जप करना ।।
राजा कह्यो सप्त दिन मांहि होत अंत मुहि सूझत नांहि
सूझि तें शुक देवन हां आए । राजा देषि तुरत उठि धा
ए ।। करि दंडौत कुशआसन दीनों ।। मुनि सनमान अधि
न सब कीनों मुनि कों तप कह्यो नहि जाइ । मुक हियर ह्यो
करम रस छाइ ।। सुक की महिमा सुक ही जानें । सूरदास
कहि कहा वषानें ।। २१३ ।। राग बिलावल ।। हरि के जन
के अति ठकुराई ।। महाराज रिषिराज मुनी जन देषत

रहेलजाई ॥ ।निरभैदेसराजकरिताको लोगन मनतउन मा
हो ॥ कामक्रोधमद लोभमोहयेनए चोरतें साहो ॥ ड्डढ़
विस्वासकियेसिंघासनतापरवैठे नूप हरिजसविम
ल छत्रसिरऊपरराजतपरमअनूप । हरिपदपंकजपि
येप्रेमरसताहीकेरंगराते ॥ मंत्री ज्ञान न औसर पावैं
कहतवातसकुचाते ॥ अरथकामदोऊरहेदुवारैं धर्म
मोक्षसिरनावैं । बुद्धिविवेकविचित्रपौरियासमैनक
वहूंपावैं ॥ अष्टमहासिद्धि द्वारैं ठाढीकरजोरैंडर लीनें
छरीदारवैरागविनोदी झिरकबाहिरी कीनें ॥ मायाका
लकछूनहीव्यापैयहरसरीतिजुजानैं ॥ सूरदासयह
सकलसामिग्री गुरुप्रतापपहिचानैं ॥ २१७ ॥ रागवि
लावल ॥ नृपकनकऔरकृपाकरिदेख्यौ धन्निभागनि
नअपनौलेख्यौ ॥ विनतीकरीचरनसिरनाइ ॥ सप्तद्यौ
ससवमेरीआइ । तऊंकुटुंवकौमोह न जातु ॥ तनधन
लोभआरलपटातु जानिबूझि मैं होतुअज्ञान उपज
तुनाहींमनमैंज्ञान ॥ अततन छूटतवहुतदुखहोइ ॥
तातेंसोचरहैनहिकोइ । विनासोचसुमिरनक्यों होइ
आताहोइकरौंअव सोइ ॥ सुकसुनिनृपकेवचन
भाइ ॥ हरिपदभजीनऔरउपाइ ॥ अवअंजलीजल
ज्यों छीजै ॥ आहनिसहरिहरिसुमिरनकीजै ॥ नपष
टवांगकेपूर्वनमस्यौ । सोतौ दोइघरीमैनस्यौ ॥ तेरा
तोहैंदिनसातआइ । कहौंभागौतसुनौंचितलाइ ॥ सु
निहरिकथाधरौधरिध्यान जगसवजानौंसुप्न

समान याविधिजोहरिपदउरधरिहै निसंदेह सूरतवत
रिहैं २२५ ॥कथाषट्वांग॥ रागविलावल॥ हरिसवक
थासुनो।चितलाइ ज्यौंषट्वांगतयौगुनगाइ न्रपष
ट्वांगभयौभूमांहीं ताकेसमदुतियाजगनांही इकदि
ननागरइंदरआयौ राजाउठिकरिसीसनवायौ ध
नममगृहधनभागहमारे जोतुमपगधरिपाउधारे
अवमोकौंजोआज्ञाहोई आपुसमानिकरौंअवसोई
इंद्रकह्योममकरौसहाई असुरनसौंहैहमैलराई
इंद्रपुरीषट्वांगसिधाए नामसुनतसवअसुरपराए
सुरपतिसौंन्रपआज्ञामांगी उनकह्योलेहुकछूवर
मांगी न्रपतिकह्योकहौमेरीआइ वरलेहौंपुनिसी
सचढाइ दोइमहूरतआइवताई न्रपवोलोतवसी
सनवाई तुरतदेहुमुहिवरभूजाइ तेरौंजाइतहांहरि
गुनगाइ एकमहूरतधुनिभूआयौ एकमहूरतहरि
गुनगायौ हरिगुनगाइपरमपदलह्यौ सूरन्रपतिसु
निधीरजगह्यौ २२६ ॥इतिप्रथमअस्कंधसमाप्तं॥
अथद्वितीयअस्कंधकथाश्रीभागौतवरनन॥राग
विलावल॥ सुकदेवहरिचरननसिरनाइ राजासौंवो
ल्योयाभाइ जोकहौसप्रथौसमझाइ कहौं हरिक
थासुनोचितलाइ चिंताछांडिभजौजदुराइ सूरत
रोहरिकेगुनगाइ २२७ ॥हरिभक्तिमहातमवरनन
॥रागसारंग॥ कहैसुकश्रीभगौतविचारि हरिकीभक्ति
जुगजुगविरधैगीआनधर्मदिनचारि चिंतातजोपरी

हतराजामुनिसिवसाधहमारी कंवलनैनकीलीलागा
वनकठिनअनेगविगारी सतजुगसतत्रेतातपकीनों द्वा
परपूजाचारी सूरभजनकलकेवलि कीजैलज्याकानरषि
वारि २१८ ॥रागबिलावल॥ गोविंदभजनकौरहिवा
रा संकरपार्वतीउपदेसतनारिकमंत्रलिष्यौश्रुतद्वारा
अस्वमेदजग्यसतकीजैगयाबनारस अहकेदारा रा
मनाम सरनऊनपूजेजोतनगारैजाइहिंवारा सहस
वारजौवेनीपरसैचंद्रग्रहनसौंवारा सूरदासभगवंतभ
जनविनुजमकेदूतनषोरैंहैं द्वारा २१९ हरिनाममहिमाव
रनन॥रागकेदार॥ है हरिनामकौआधार औरयाकल
कालनांहीरह्यौविधिव्यौहार नारदआदिसुकआदिमु
निमिलिकियौबहुतविचार सकलश्रुतदधिमथतका
ढ्यौ एतौई घ्रतसार दसौदिसतैंकर्मरोक्यौ मीनकौज्यौं
जार सूरप्रभुकौसुजसभागवतजाहिंमिटिमोभार २२०
॥रागबिलावल॥ हरिहरिहरिसुमिरौसवकोइ हरिहरि
सुमिरतसवसुखहोइ हरिसमानदुतियानहिकोइ श्रुत
सुमिरतसवदेषाजोइ हरिहरिसुमिरतहोइसुहोइ ह
रिहरिहरिसुमिरौरेलोइ हरिचरननचितराषौगोइ
विनुहरिसुमिरनमुक्तिनहोइ कोटिउपावकरैजोकोइ
हरिहरिहरिसुमिरौसवकोइ हरिकेगुनसुमिरौसवको
इ शत्रुमित्रहरिगुननदोइ जोसुमिरैताकीगतिहोइ
रावंकहरिगुननदोइ जोगावैताकीगतिहोइ हरिह
हरी रिसुमिरौसवकोइ हरिहरिहरिजिनसुमिरयौजहां ह
रिनहांदरसनदीनौंतहां हरिहरिहरिसुमिरौरेनरा

त मंतरजम ग्रभार थजात सोवात नकीवात सूरसु
मिरि हरिहरिदिनरात २२१ ॥राग सारंग॥ जो सुख हो
तु गुपालहि गाएं सो न हि होतु जपो तप कीने कोटिक
तीरथन्हाए दियेलेतु नहि चारिपदारथ चरण कमल
लचित लाए तीनि लोक तृन करि समलेषतु नंदनंद
न उर लाए वंसीवट वृंदावन जमुना तजि वैकुंठ हि जाइ
सूरदास हरि को सुमिरनु करि बहुरि न भव जल आइ २२
२ ॥राग केदार॥ सोइ रसना जो हरि गुन गावै नैनन
की छवि चतुरा इयह जो म करंद मुकुंद दिखावै निर्मल
चित तो सोइ सांचो कृष्ण विना जिहि और न भावै श्रवनन
की यहि यै अधिकाई सुनि हरि कथा सुधा रस प्यावै क
र कीये जु स्याम जपवै कों चरन चली वृंदावन जावै
सूरदास बलि जैये वाकी जो हरि जू सो प्रीति बढावै २२३
॥राग सारंग॥ जव तें रसना राम कह्यो मानो धर्म साधि
सब वैठ्यो पढि वे मे धों कहा रह्यो प्रगट प्रताप ज्ञान गु
रु गमि तें दाधि मथि घृत लें तज्यो मह्यों सार को सार
सकल सुख को सुख हनू मान सिव जांनि कह्यो नाम प्रती
ति भई जा जन के ले आनंद दुख दूरि दयो सूरदास ध
नि धनि वह प्रानी जो हरि कों व्रत लें निवह्यों २२४
॥अनन्य भक्ति महिमा वरनन॥ राग सारंग॥ गोविंद सो
पति पाइ कहा मन अंति लगावै गोपाल भजन विन
सुख न ही जु चहूं दिस धावै पति को व्रत जु धरे त्रया सो
सो भा पावै आन पुरुष को नाम लेत पति व्रत हि लजा

२

सू.सा
४२

वै गनिका तें उपजे सुकोंन को पूत कहावै वसत सुरसरी तीं
र मंद मति कूप पय नावै जैसें स्वान कुलाल के पीछें लगि
धावें आन देव नजि हरि भजें सो जन मगवावै कलका
आसा की वहुर जो विरछ वगावे महामूढ जो मूलत
जि साखा जल नावे सहज भजे नंदलाल को सो सव
सुख पावै सूरदास हरि नाम लै दुख निकट न आवै
२२५ ॥राग केदार॥ जो मन कवहुं क हरि को जांचे आन
प्रसंग आन वृत छांडे मन वच क्रम अपने रस सांचे नि
स दिन स्याम सुमिरि जस गावै आमन मेंट प्रेम रस मांचे
यह व्रत धरें लोक में विचरें सम के गनें महामनि कांचे
सीत उस्न सुख दुख नहि मानें हानि लाभ कछु सोच न
राचे जार समार सुसूर सिंध में वहुरि न उलटि जग
त में नांचे २२६ ॥राग कान्हरा॥ जाको मन लागो नंद
लाल हि ताहि और नहि भावै हो जो लै मीन दूध में डा
रें नीर हीमें सुच पावे हो अति सुकमार डोलत रस
भीनों सो रस जाइ पियावे हो ज्यों गूंगो गुर खाइ अ
धिक रस सुख सवाद न वतावे हो जैसें सलिता मि
ले सिंधु कों फिरि प्रवाह नहि आवे हो ऐसें सूर कंव
ल लोचन तें चित नहि अनत डुलावे हो २२७ ॥राग
विलावल॥ जनम जनम जव जव जिहिं जिहिं जुग जहां
जहां जन जाइ तहां तहां हरि चरन कंवल रति चाहें द
ढ हो धार श्रवन सुजस सारंग नाद विधि चातक वि
धि मुख नाम नेन चकोर संत संतन सासि करउ ज

नअभिराम सुमतिसरूपपसाजिसिआलों उरअंबुजअनुरा
ग ॥ नितप्रतिअलजिम गुंजिमनोहरआवतप्रेमपिराग
औरोसकलसुरतआयतितिनु ततमनरहिनुसुप्रीति
नाहपैरें सुखदुखसूरनहिं जिहिकीभजनप्रतीति २२८

वि ॥ हरिमुख निंद्या राग सारंग ॥ अचंभोइनलोगनको आ
वे ॥ छांडेंस्याम नामअंमतफलमायाविषफल भावे नि
दित मूढमलयचंदनकोराषअंगलपटावे मानसरोवर
छांडिहंसतटकागसरोवरन्हावे पगतरजरतनजाने
मूरषघरतजिघोरबुझावे चोरासीलषजोनिस्वांगध
रिभमिभमिजियहि हसावें मगतह्माआचारजगत
जलतासंगमनललचावें सूरदासअवसरादासपंतत
मिलिहरिजसकाहेनगावे २२९ ॥ राग सारंग ॥ भज
नबिनुकूकरसूकरजेसो जेसेंघरबिलावकेमूसारहत
इंदुनवसेसो बकीबकुल आगीघितगीधए जन
मलियोहे तेसो उनहूकेग्रहसुतदाराहें इन्हे भेदकहो
केसो जीवमारिकेउदरभरतहे तिनकोलेखोऐसो
सूरदासभगवंतभजनबिनुमनोऊंटषरभेंसो २३०

॥ राग सारंग ॥ भजनबिनुजीवतजेसेंप्रेत मलिनमं
दमतिडोलतघरघरउदरभरनकेहेत मुखकटुवच
नानितनिंद्यापरसंगतिसुजसनलेत कबहूनपुन्नि
करैवेस्याकोंगांठिधूतिधनदेत गुरुब्रह्मनअरुसं
तसुजनकेचोरेंनकभूनिकेत सेवनहिंभगवंतचरन
कोभवननीलकोखेत कथानहींगुनगीतसुजसहर
िसबकाहूदुखदेत ताकीकहाकहोंसुनिसरजबू

उन कुटुंबसमेत २३१ ॥ राग सारंग ॥ जिहिं तन हरि भजन कौ न कियौ सो तन सूकर स्वान मीन ज्यौं यह सुख कहा जियौं चारि पदारथ के हरि दाता तिन्हैं न मिलो हियौं सूरदास रसना बस अपने टेरि न नाम लियौं २३२ ॥ मन संगति निमित्त भावरनन ॥ राग केदार ॥ जा दिन संत पाहुने आवत तीरथ कोटि स्नान करे फल तैसौ दरसन पावत मन वच करम और नहि जानत सुमिरत औ सुमिरावत बंधन करम कठिन जे पहिले सो ऊकारि बहावत संगति रहै साध की अनदिन बहु दुख दूरि नसावत सूरदास संगति करि तिन की जे हरि सुरति करावत २३३ ॥ भक्ति साधन राग धनाश्री ॥ हरि रस तौ कबहूं जाइ लहियें गए सोच आए नहि आनंद ऐसो मारग गहियें कोमल वचन दीनता सब सौं सदा आनंदित रहियें वाद विवाद हरष आतुरता इतनौ दुंद जव सहियें ऐसी जो उपजै याहि जिय कौं तौ सुख कहा लौ कहियें अष्ट सिद्धि नौ निद्धि सूर प्रभु पहुचें जौ कछु चहियें २३४ राग धनाश्री जो यह मन का मन न छूटै तौ कहा जोग जुगति व्रत कीने विन गुन तुस कौं कूटै कहा स्नान कियें तीरथ के अंग भसम जट जूटै कहा पुरान पढे जु अठारह उर्ध धूम गर घूटै जग सोभा की सकल वडाई इहि तें कछू न घूटै और और कहि ये कछु औरै मन दहि तें कहुं संदे लूटै काम क्रोध मद लोभ शत्रु है जो इतनन सहूं छूटै सूरदास तब ही तम नासै ज्ञान अगिन झर फूटै

हूहै २३५॥राग बिलावल॥ नहिं पंथ कोजो अनुसरै सु
नकलि इसो हित पर हरै असन वसन की चिंतन करै
विस्वंभर सब जग कौ भरै निसजाके द्वारे परहोइ ताको
पोषन अहि निसि सोइ जो प्रभु की सरनागत आवै ता
कों प्रभु क्यों करि बिसरावै मात उदर मे रस पहुंचावतु त
हु रुधिर ते छीर पियावतु असन काज प्रभु बन फ
ल करै त्रखा हित जल झिरना झरै पातस्या न हाथ ह
रि दीने वसन काज वलकल प्रभु कीने सज्या पृथ्वी
करी विस्तार गृह गिरि कंदर कीए अपार ताते चिंता
सकल तियाग सूर करै हरि पद अनुराग २३६॥
राग बिलावल॥ नहिं पंथ कोजो अनुसरै सो अष्टांग जो
ग कों करै जम नेम आसन पानायाम करि अभ्यास हो
इ निहकाम प्रत्याहार धारना ध्यान करै छांडि वासना
आन क्रम क्रम करि पुनि करै समाधि सूर स्याम भजि
मिटे उपाधि २३७॥वैराग वरनन॥ राग धनाश्री॥
सबै दिन एक से नहीं जात सुमिरन भजन कियो करि हरि
कौ जब लग तन कुसलात कबहुं कमला चपल पा
इकै टेढे टेढे जात कबहुं मग मग धूरि बटोरत भोजन कों
बिलषात या देही कौ गरब बावरो तदिप फिरत उतरात
होंव उहों व उ बहुत कहाव त सूधे कहत न बात वाद विवाद
सबै दिन बीते षेलत ही अरु षात जोग जुगति नहि ध्या
न अरु पूजा विरध भए पछितात बालापन षेलत हीषो
यों तरुणापे आलसात सूरदास औसर के बीते रहिहौ

पुनिपछितात २३८ ॥गर्वदूषन॥रागसारंग॥गरवको
विदहिभावजुनांही कैसीकरीहरनकशिपसौं प्रगट
होरूप्छिनमांही जाजाभेकरतूतकंसकी नकी सुरमास्यो
पलमांहीं ब्रह्मारुद्रादिकपाछितानेगर्वधारिमनमांही
जोवनरूपराजधनधरनीवादरकीसीछांही सूरदासह
रिनजोगर्वतजिविमुखजातिकोंजांहीं २३९ ॥का
मदूषन॥रागकान्हरा॥विषियाजातहीरकह्योगात
जैसोअंधजानिमूरषजोपरत्रीयहिलपरात वरजिर
हेसवकहौमानतकरिकरिजतनउडात पैरेअचा
नकरौंरसलंपटतनतजिजमपुरजात यहतोसुनी
व्यासकेमुखतेंपरदारादुखदात रुधिरमेदमलमूत्रक
ठिनकचउदरगंधगंधात तनधनजोवनताहितपोव
तनर्कपाछेंजात जोनरभलोचाहतुतौ सोतजिसू
रप्रभुगुनगात २४० ॥आतमग्यान॥रागनट॥ जो
लौंसतसरूपनहिसूझत तौलोंमगमदनाभिविसारें
फिरतसकलवनबूझत अपनोंमुखमसिमलिनमंद
मतिदेषतदर्पनमांही ताकालिमांमेटिवेकारनप
चतुपषानछांहीं तेलतूलपावकपुरभरधरिवनेन
विनाप्रकासत कहतवनाइदीपकीवातैंकैसेंधौंतमना
सत सूरदासजवयहमतिआवैवेदिनगए अलेषे २४१
रागनट अपुनपोआपनहीविसार्यो जेसेंस्वानका
चमंदिरमेंभ्रमिभ्रमिभूंसिमर्यो हरिप्रभुतोहीमाह
वसतहैंदुमतनसोधिफिर्यो ज्योंसपनेमेंभूपरंक
...कैंकीमरिमापधनेनचिन रोवे ४

नयोतसकृ आपकस्यौं ज्यौंके हरपूतविदेषिकैं आ
पुनकूपपर्यौं जैसेंगजलषिप्रतिक्रसिलापरदसनन
जाइअस्यौं मरकतमूंगि छांडिनहीदीनी घरघरद्वारफि
र्यौं सूरदासनलनीकौसूवाकहौकौनैंपकर्यौं २५२
॥राग केदार॥ नैननिरषिस्याम स्वरूप रह्यौघटघट
व्यापिसोईज्योतिरूपअनूप चरनसप्तपतालजाकेसी
सहैआकास सूरचंदनक्षत्रपावक सर्वतासप्रकास
२५३ ॥राग धनासिरी॥ हरिजूकीआरतीवनी अति
विचित्ररचनारचिराषीपरतिनगिरागनी कछिपआ
दिआसनअनूपअतिडांडीसेसफनी महीपत्रसप्तसा
गरघृतवातीसैलघनी रविससिज्योतिजगतिदसहूंदि
सहरतितिमिरजितनी उडतिफूलतिहिअंतरतारेअंज
नघटाघनी नारदआदिसनकादिप्रजापतिसुरनरअ
सुरअनी उहिप्रतापदीपसुनिरंतरलोकसकलभजनी
जाकेउदितनचतनानाविधिगतिकरनीअपनी सू
रदाससवप्रगटध्यानजेअतिविचित्रवजनी २५४
नृपति विचार॥राग सारंग॥ नृपतिसुनिलाग्योकर
नविचार कूहेनातेजगतकेसुतकलित्रपरिवार चल
तनकोऊसंगचलैंमोरिरहेमुखनार आवतमाडेआ
महरिदेख्यौसूरविचार २५५ ॥राग गूजरी॥ हरिविनु
कोऊकामनआयौ याकूंठीमायाप्रपंचलगरतनसौं
जनमगंवायौ कंचनकलसविचित्रचित्रकरिरचिप
चिभवनवनायौ तातेंतनछिनहीगहिकाढ्योपल

भरि रहै नन पायो ॥ हौं तौ संग जरौंगी यह कहि तृषा धू
ति धन पायौ ॥ चलन वार चित चोरि मोरि मुख एकन
पग पहुचायो ॥ वोलि वोलि सुत सुजन मित्र जन ली
नौ सुजस सुहायो ॥ पस्यौ काज अंत की विरियां तिन
हुन आनि छुडायौं ॥ आसा करि करि जननी ज्यायौ
कोटिकु लौ लडायौ ॥ तोरि लियौ कटहू को डोरा ता
पर वदन जरायौ ॥ पतित उधारन गनिका तारन सो
तैं सठ विसरायौ ॥ लियौ न नाम नेकहू धोषें सूरदा
स पछितायौ ॥ २४६ ॥ राग देवगंधार ॥ सकल तजि
भजि मन चरन मुरार ॥ श्रुति सुमिरत मुनिजन सव
भाषत मैं हू कहत पुकार जैसें सुपनां सो ए देषत तैसे
सो यह संसार ॥ जात विलाइ सु छिनक वार मैं उघरत
नैन गंवार ॥ वारंवार कह्यौ मैं तोसौं जनम जुवा जिनि हा
र पाछे भई सु भई सूरजन अजहूं सुरति संभार ॥ २४७
॥ राग टोडी ॥ अजहूं सावधान किन होइ ॥ माया विष
म भुवंगनि कौ विष उतस्यौ नाहीं तोहि ॥ कृष्ण सु मंत्र
सु ध्यावन मूरैं जिन जन मरत जिवायौ ॥ वारवार श्रव
नन निकट है गुरु गारुडु सुनायौ ॥ यह छिन भंग देह
अभिमानी देषत ही दुख पायौ ॥ उवस्यौ साधु कौ तु सं
गति तैं स्याम सजीवनि पायौ ॥ जाकौ मोह मंद मति
घूटैं सुजस राग लकै गाए ॥ सूरमई औ ज्ञान मूरछा ता
न सुभू घज धाए ॥ २४८ ॥ नृपति वचन सुखदेव प्रति
॥ राग केदार ॥ नमो नमो करुनानिधान ॥ चितवत कृ

पाकटासनम्हारे मिटि गयौ तम अज्ञान मोहनिसा
कौ लेस रह्यो नहिं भयौ विवेक विहान आतमरूप
सकल घट दरस्यौ उदौ कियौ विज्ञान मैं र मन अ
वर हीन मेरी छूट्यौ देह अभिमान भावै परौ आजु
ही यह तन भावै परौ समान मेरे जिय अति भई ला
लसा लीला श्रीभगवान श्रवन करौं निसवासर हित
सौं सूर तुम्हारी आन २४८ ॥ शुकदेव वचन ॥ राग
॥ सारंग ॥ कह्यौ शुक सुनौ परीक्षत राव ब्रह्म अगोचर
मन माया तैं आगम अति जिन प्रभाव भक्तन हित औतार
धारि जौं करी लीला संसार कहौं ताहि जो सुनै चित्त ध
रि सूर तरै सो पार २५० ॥ राग बिलावल ॥ शुक कह्यौ
हरि लीला ज्यौं व्यास कही शुक ह्यौ सुनी अवनास ना
रद ब्रह्मा सौं सिर नाइ कह्यौ सुनौ त्रिभुवन पति राइ
सकल सृष्टि यह तुम तैं होइ तुम तैं दुतीया और न को
ई तुम हूं धरत कौन कौ ध्यान यह तु मम मोसौं कहौ व
खान कह्यौ करता हैं ना भगवान सदा करत हैं तिनकौ
ध्यान नारद सौं कह्यौ विधि जा भाइ सूर कह्यौ त्यौंही
शुक गाइ २५१ ॥ चतुर्विंसत औतार वरनन ब्रह्मा व
रनन नारद प्रति ॥ राग धनासिरी ॥ जो हरि करैं सु होइ
करता राम हरी ज्यौं दर्पन प्रति बिंब त्यौं सब सृष्टि क
री आदि निरंजन निरंकार कोउ और न दूसर रचौ सृ
ष्टि विस्तार भई इच्छा इक औसर त्रिगुन प्रकृति तें मथ्यो
मिथुन ता तें हंकारा मन इंद्री शब्दादि पंचताई विस्ता

री शब्दादिकतेंपंचभूत सुंदरप्रगटाई पुनिसबकौंर
चिअंडआपमेंआनिसमाई तानिलोकनिजदेहमें
राषेकरिविस्तार आदिपुरुषसोईभयौजौप्रभुआगमअ
पार नाभिकंवलतें आदिपुरुषमोकौंप्रगटायौ षोजत
पुराएवीतगालकौंअंतनपायौ तिनमोकौंआज्ञाकरी
रचिसबसृष्टिवनाई स्थावरजंगमसुरअसुरचेसबैमें
आई मछकछवाराहवहुरिनरसिंहरूपधरि वावनव
हुरौंपरसरामपुनि रामरूपकरि वासदेव सोईभयौ
वोधभयोपुनिसोई सोईकलकीहोइऔरनहिदुतिया
कोई एदसहरिऔतारकहेपुनिऔरचतुरदस भक्त
वछलभगवानधरेंतनभक्तनकेवस अजअविनासी
अमरप्रभुजनममरेंनसोइ नरवानि कलाकरतसक
लवूझैविरलाकोई सनिकआदिकपुनिव्यासभए पु
निभएहंसहरि पुनिनारायणऋषभदेववहुरौंधन्वं
तर दत्तात्रेपुनिजज्ञपुरुषवहुरौंप्रथुवपुधार क
पिलमुनागुरवूडहें कीनोधूऔतार भूमिरेनकोऊ
गनेंनछत्रनिसमुझावें कीनोंजिहिऔतार अंतसा
ऊनहिपावें सूरनहीकौं कहिसकैजनमकरम
औतार कहेकछुगुरकृपातेंश्रीभागोतअनुसार

२५२ ॥ब्रह्मावचननारदप्रति॥रागविलावल॥

ब्रह्मापुनिनारदसोंकह्यो जवमैंनाभिकमलतेंभयो
षोजतनालकईजुगगायौ तोहूकछुमरमनहिल
यौ भईआकासवानी तिहिवार तूएचारिश्लो

कविचार इन्है विचारत ह्वैहै ज्ञान ऐसी भांतिनकह्यौ
भगवान ब्रह्माजो नारद सौंकहे व्यास सो ईनारद
सो लहें व्यासकह्यौं मोसो विस्तार भयो भागवत या
परकार सो ईंपुनि श्रवनीं सो भाखौं नैंरइ देन संस
राखौं मूल भागवतनिको एचारौं सूर भली विधिइ
न्है विचारौं २५३ ॥ चतुरश्लोकश्रीमुखवाक्य राग
कान्हरा॥ पहिलै होंहीहोनवएक अमलअकलअ
जभेदविवरजितसुनि बुधिविमलविवेक सो ईंहों
एकअनेकभांति करीसोभितनानाभेष तापाछें
इनगुननभएते हो रहिहों ओसेष सूरहे सांची
सीलगति ममममायात्नुजांन रविशसिराहसंजोग
विनाज्यौहे ॥ निसामितदिनमान ज्यों जलमस
कजीवघट अंतर ममममायाइमजान सो ईजसस
नबादिकहि गावतनेतनेतगाहिमान ज्योंगज
परिकमछिन्यारो वसि पंचपंचविभूत ऐसें
मैसवहुनतेंन्यारो तनगाभितज्यों पूत पहिलेज्ञा
नविज्ञानदुतियमत ॥ ततीयमक्तिकोभाव सूर
दाससो ईमधुरामिष्ठमतगच्छ्वमनलाव २५४
॥ अथत्रितियअस्कंध श्री भागवत राग बिलाव
ल॥ नवहरिजीमएअंतरध्यान हरिहरिहरिहरि
सुमिरनकरो हरिचरनारविंदउरधरो सुकदेवह
रिचरननसिरनार राजासोंबोलोयाभाई ॥

कहौं हरिकथा सुनि चित लाइ सूर नरोहरि के गुन गाइ
२५५ ॥मैत्रीबिदुरसंवादबरनन राग बिलावल॥ जब
हरिजी भए अंतरध्यान कहि ऊधौसौं तमुगियान कहि
ह्यौ मैत्री सौं समुझाइ यह तुम बिदुरहि कहियौ जाइ
बद्रिकाश्रम दोऊ मिलि आइ तीरथ करत कीनी अपका
इ ऊधौ बिदुर तहां मिलि आए दोऊ करम प्रेम वस भए
ऊधौ कह्यौ हरि कह्यौ जु ज्ञान कहिहै तुम्है मैत्री आ
न कहि कहि ऊधौ आगें चले बिदुर मैत्री बहुरौं मि
ले जो कछु हरि सौं सुन्यौ गिआन कहौ मैत्री ताहि
बषान सोइ मोहि दियौ व्यास समझाइ कहौं सु सूर
सुनौं चित लाइ २५६ ॥बिदुरजनमबरनन॥ राग बि
लावल॥ बिदुर धर्मराइ औतार ज्यौं भयौ कह्यौ सुनौ चि
त धार मांडिप ऋषि जब सूरी दयौ तब सो काठ हस्यौ
है गयौ मांडिप धर्मराइ पै आयौ क्रोधवंत यह बच
न सुनायौं कौन पाप मैं ऐसौ कीनौं जातें मोकौं सूरी
दीनौं धर्मराइ कह्यौ सुनु ऋषिराइ छिमा करौ तौ देउ
बताइ बाल अवस्था में तुम धाइ उतनभ भीरी पकरी
जाइ ताहि सूल पर सूरी दयौ ताकौ बदलौ तुमसौं
लयौ ऋषि कह्यौ बालदिसा अज्ञान नयौ पाप मो
तें अनजान बालापन कौं लगत न पाप तातैं देउं
तुमहि मैं श्राप दासीपुत्र होहु तुम जाइ सूर सु बिदुर भ
यौ या भाइ २५७ ॥मैत्रीबचन बिदुर प्रति सन

सनकादिकनकौ अवतारवरनन ॥ राग बिलावल ॥ ब्रह्मा हंस रूप धरि मनसों प्रगट किये सुत चारि सनक सनंदन संतकुमार बहुरि सनातन नाम ए चार ऐ चारौ जब ब्रह्मा किये हरिकौ ध्यान धर्यौ तिन हिए ब्रह्मा कह्यौ सृष्टि विस्तरियौ उन यह वचन हृदै न हि धर्यौ कह्यौ पहै हम तुम सों चहैं पांच बरस के नित ही रहैं ब्रह्मा सों यह कहि तिन पाइ हरि चरनन चित राख्यौ लाइ सुकदेव कह्यौ जिहिं परकार सूर कह्यौ ता ही अनुसार २५८ ॥ रुद्र उतपत्ति वरनन ॥ राग बिलावल ॥ सनकादिकन कह्यौ नहि मान्यौं ब्रह्मा क्रोध बहुत मन आन्यौं तव रुद्र प्रगट भौंहनि तें भयौं होत समै तिन रोवन ठयौ तासुनाम रुद्र विधि राख्यौ तासौं सृष्टि करन कौ भाष्यौ तिन बहु सृष्टि तामसी कीनी सो तामस करि मुनि अनुसरी ब्रह्मा मन सौं मलीन भई सूर सृष्टि नव और उपाई २५९ ॥ सप्त ऋषय चार मुनि उत्पत्ति ॥ राग बिलावल ॥ ब्रह्मा सुमिरन करि हरिनाम प्रगट किये ऋषि सप्त अभिराम भृगु मरीच अंगिरा वसिष्ठ अत्र पुलह पुनि भयो पुलस्ति कस्यप गोतम विस्वामित्र ९ भरद्वाज वसिष्ठ पुनि अत्र सप्त ऋषि जनम दातिन भए त्यौं ही और भौ चार मुनि भए इनतें प्रगटी सृष्टि अपार सूर कहां लगि कहै विस्तार २६० ॥ सुर असुर उत्पत्ति वरनन ॥ राग बिलावल ॥ ब्रह्मा ऋषि मरीच निर्मायौ ऋषि मरीच कस्यप उपजायौ सुर असुर कस्यप के पुत्र मानवि

मानआपश्रमेश्राज्ञ सुरहरिभक्तअसुरहरिद्रोही सुर
अतित्रभीअसुरअतिक्रोही उनमेंतिनउठिहोभिल
राई कौसुरनकीरछ्यासुहाई तिनजोजोकीनोंऔता
र कहौंसूरभागोतविचार २६१ ॥वाराहअौतारवरन
न ॥रागबिलावल॥ ब्रह्मानेंग्रांभूमुनिभयौ तासौंम्र
ष्टिकरनकौंकह्यौ तिनब्रह्मासौंकहोसिरनाइ म्रष्टि
करौसुरहिंकिहिभाइ ब्रह्माहरिपदध्यानलगायौ
तवहरिवपुवाराहधरायौ हैवाराहपृथ्वीज्यौंलायौ
सूरदासप्रभुत्यौंहीगायौ २६२ ॥रागधनाश्री॥ हरि
गुनकथाअपारपारनहिपाइयै हरिसुमिरनसुखहो
इहरिगुनगाइयै ब्रह्मपुत्रसनकादिगए बैकुंठ एकदि
न द्वारपालजैविजैहुतेवरज्यौतिनकौंतिन श्रापदयौ
तवक्रोधकै असुरहोहुसंसार हरिदरसनकौंजानक्यौं
रोक्यौविनाविचार हरितिनसौंकह्यौआइभलीवि
ध्यानुमदीनो वरज्यौंआवनुतुमें असुरविधि
इनहीकीनी तिन्हेंकह्यौसंसारमें असुरहोहु अ
वजाइ रूपजनमकरिकैविरधमोकौंमिलिहौंआइ
कस्यपकीदितिनारिहुतीताकौदोउआए तिनकै
तेजप्रतापदेवतनवहुदुखपाए गर्भमांससतवरषर
हि प्रगटभए पुनिआइ तिनदोउकौंदेखिकेंसुरस
वगएडराइ हाटकलोचनइकभयो हरिनकस्यप भयौ
दूजौ तिनकेवलकौंइंद्रवरुणकोउनाहिपूजैं ह

रणाहतनवपृथ्वीकौलैराख्योपाताल ब्रह्माविनतीकरिकै
ह्योदीनवंधगोपाल तुमविनुदुतीयाओरकौनजौअ
सुरसंघारे तुमविनुकरुनासिंधओरकोपृथ्वीउधारे
तवहरिधर्योवाराहवपुल्याएपृथ्वीउठाइ हरणाक्ष
लेकरगदातुरतनहीपहुंचो आइ असुरक्रोधकैकैहो
वहुततुमअसुरसंघारे अवलेहौंवहदावछोडिहौं
नहिविनुमारे यहकहिकेमारीगदाहरिजोताहिसंभारी
गदायुक्रनासोकियोअसुरनमानीहारि तवब्रह्माकरि
विनैकह्योहरिताहिसंघारो तुमतौलीलाकरतसुरनमु
निपरयोदुखभारो मार्योताहिपछारिहरिसुरमुनिभयो
हुलास सूरदासकेप्रभुवहुरिकियोवैकुंठनिवास २६४
॥रागविलावल॥ शंभुमुनिकेसुतभएदोइ तनयाती
निसुनोअवसोइ दक्षप्रजापतिकोइकदई इकअज
इककर्दमतयभई कर्दमकेभयोकपिलऔतार सूरक
ह्यो भागौतअनुसार २६५ ॥कपिलदेवऔतारवरन
न॥रागविलावल॥ हरिहरिहरिसुमिरननितकरो हरि
कोध्यानसदाचितधर्यो ज्योंभयोकपिलदेवऔतार
कहौंसुकथासुनोचितधार कर्दमपुत्रहेततपकियो
तासनारिहूंयहव्रतलियो हरिसौपुत्रहमारेहोइ और
जगतसुखचहैनकोइ नारायनतिनकौंवरदियो मो
सोऔरनहींकोउवियो मैंलेहौंतुमग्रहऔतार तजि
तपकरौभोगसंसार दुहुंनवतीरथमांहअन्हायो सु

जन्म

दरसरूपदुहूंजनपायौ भोगसामिग्रीजुरीअपार विचरन
लागेसुखसंसार तिनकेकपिलदेवसुतभयौ परमभा
गमानितिनलए कर्दमकह्यौतिन्हेंसिरनाइ आज्ञाहो
इकरौतपजाइ अभेदछेदरूपममज्ञान जोसवघटहैं
एकसमान मिथ्यातनकौमोहबिसार जाइरहौभावी
गहद्वार करतइंद्रियनचेतनजोइ ममसरूपतुमजा
नौंसोइ जबममरूपदेहतजिजाइ तबसवइंद्रीशक
नसाइ ताकौजानिमग्नह्वैरहै देहअभिमानताहिन
हिरहैं विनअभिमानताहि... सजाइ सोनररहैसघ
सुखपाइ औरजोअैसोजानौनांहि रहैसुसदाकालभै
मांहि यहसुनिकर्दमतहांसिधाए उहांजाइहरिपद
चितलाए हरिकौसवघटपूरनजान्यौ रूपमांहज्यों
रसहैसान्यों छोहीतनरसआतमसार असीविधिजा
न्योनिर्धार यौंलविकैहरिपदअनुराग मिथ्यातनकौं
दीनौत्यागतनत्यागकैंहरिपदपायौ नपसुनिउरहरिरू
पवसायौं २६६ ॥देवहूतज्ञानप्रश्न॥रागविलावल
इहांकपिलसोंमाताकहौ ममअज्ञानतिमिरतुमदहौं
आतमज्ञानदेहुसमुझाइ जातेजनममरनदुखजाइ
कपिलकह्योकहौतुमसोंज्ञान मुक्तिहोइतिरियाकौजा
न मुक्तिबुद्धिकेलछनकहौं जेरसवसंदेहेदहौ ममस
रूपकोसवघटजान मग्नरहौतजिउदिमआन आठसु
खदुखनहिमनमेल्यावे मानासोवरमुक्तिकहावे
औरजोमेरोरूपनजानै कुटंवहेतनितउदिमठानै

जाकौयाविधिजनमसिराइ सोनरमरिकैनकौहिजाइ
ज्ञानीसंगतितिउपजैज्ञांन अज्ञानीसंगहोइअज्ञान ता
तैंसाधसंगनितकरना जातैमिटैजनमअरुमरना
थावरजंगममैमुनिजानैं दयासीलसबसौंहितमानैं
सतसंतोषदृढकरैसमाध मानानाकौकहियैसाध का
मक्रोधलोभपरहरै दुंदरहितउदमनहिकरै अैसेल
छनहैंजिनमांही मानातिहिकौसाधकहांही जाकौका
मक्रोधनितव्यापै अरुपुनिलोभसदासंतापै ताहिन
साधकहतकाविलोइ साधभेषधरिसाधनहोइ संत
सदाहरिकेगुनगावैं सुनिसुनिलोगभक्तिगुनपावैं
नैं
भक्तिपाइपावैहरिलोक तिन्हैंव्यापैहर्षनशोक ॥ भक्ति
प्रश्न ॥ देवहूतकह्यौभक्तिसुकहियैं जातैंहरिपुरवासा
लहियैं अरुसुभक्तिकाजैकिहिभाइ सोऊमोंकोदेहुब
ताइ मानाभक्तिचारिपरकार सतरजतमगुनसुधाप्रसा (तम)
र भक्तिएकपुनिबहुविधिहोई ज्योंजलरंगमिलिरंगसु
होई भक्तिसात्वकीचाहैमुक्ति रजोगुनीधनकुटुंबअनु
रक्ति तमोगुनीचाहैयाभाइ ममबैरीक्योंहूंमरिजाइ
सुधाभक्तिमोसकौचाहैं मुक्तिहूकौंनहिसोंओगाहैं
सब
मनवचक्रममममसेवाकरैं मननैंआसौपरहरैं अैसो
भक्तसदामुहिप्यारौ इकछिनतातैरह्यौंनन्यारौ ता
कोजोहितममहितसोई तासममेरैऔरनकोई त्र
विधिभक्तहैंमेरैजोई जोमांगहिदेवमैंसोई भक्तअन
न्यकछुनाहिमागैं तातैंमोहिसकुचअतिलागै अैसो

ग्यानी भक्त सु होई जाके शत्रु मित्र नहि दोई हरि माया सब
जग संतापैं ताको माया मोह न व्यापैं ॥ बुद्धमायाप्रस्न
कपिल कह्यौ हरि कौ निज रूप अरु पुनि माया कौ जु सरू
प देवहूति जब याविधि कह्यौ कपिलदेव सुनि अति सु
ख भयो कह्यौ हरि के भै रवि ससि फिरैं बार वेग अति सं
सेवैं आगि निरहै जाके भै मांहि सो माया हरि जा वस
नांहि माया को त्रगुन आन मजानौं सत रज तम ताके गु
न मानौं तिन प्रथम हि महतत्त्व उपायौ तातैं अहंकार प्र
गटायौं अहंकार कियो तीन प्रकार सत तें मन सुर सात
अरु चारि रजगुन तें इंद्री विस्तारी तमगुन तें पुनि मात्रा सा
री तिहिं तैं पाच तत्त्व प्रगटाइ इन सब कौ इक अंड बनाइ
अंड सु जड चेतन नहिं होइ तब हरि पद माया मन पोइ
ऐसी विधि विनती अनुसरी महाराज बिन शक्ति तुम्हा
री यह जड अंड चेतन न हि होइ करहु कृपा चेतन [illegible] हो
इ सोइ तातें हरि शक्ति अपनी धरी चच्छादिक इंद्री वि
स्तरी चोदह लोक भये ता मांहि ग्यानी तिहि वैराट कहा
हि आदि पुरुष चेतन कौ कहत जो है तिहूं गुनन तें रहि
त जड सरूप सब माया जानौ ऐसौ ग्यान हृदै मैं आनौ
जब लगि है जिय कौ अग्यान चेतन कौ सो सकै न जांन सु
त कलित्र कौं अपनो मानैं अरु तिन सौं ममता बहु ठानैं
ज्यौं कोऊ दुख सुख सपनें जोवै सति मानि कै ताको सो
वै जब जागे तब सति न मानैं बिना ग्यान त्यौंही जग जा
नैं चेतन घट घट है या भाइ ज्यौं घट घट रवि प्रभा ल

थाइ घटउपजैवहुरोनसिजाइ रविनितरहैएक हीं
भाइ जउतनकोहैजन्मअरुमरना चेतनएकघरुअ
मरअजवरना ताकोंऐसोजानेजोइ वाकोंतनसों
मोहनहोइ जवलगऐसोज्ञाननहोइ वरनधर्म
कोनजैनकोइ संतनकीसंगतिनितकरैं पापकर्म
मनतेंपरहरैं अरुभोजनसोइहिविधिकरैं आधौं
उदर अन्नसोंभरैं आधेमेंजलवाइसमावै तवति
हिआलसकभूनआवै अरुजोपरालब्धतेआवै
ताहिकोंसुखसोंवरतावै वहुरतेकौउदिमपरहरैं नि
भैठौरवसेराकरैं तीरथहूमेंजोमेहोइ ताहूठांवप
रहैंसोइ वहुरौंधरैइष्टदेवध्यान रूपचतुरभुजसु
दरस्याम प्रथमचरनकमलनकोध्यावै गंगापर.
सिरन्हाकोवही शिवशिवताइनहीतेंलही लछ
मीइनकोंसदापलोवैं वारंवारपानिकरिजोवैं जंघ
न्कों कदलीसमजाने अथवाकनकषंभसम
मानें उरअरुग्रीवहरिहियधारे तापरकौस्तुभ(धां
मनहिविचारै हियभगलता स्मीजाने ताभि
कवलत्यौंधारेध्यान मुखमदुहासदेखि सुख(
पावै तासोंप्रेमसहितमन ल्यावै नेनकमलद(
लसेअनिआरे दासनतिनेकदैदुखभारै तासा(
कारपरमअतिसुंदर दासनताहिमिटैदुखदुंदर(

रूपसमानअरुदोउजानैं मुखकौध्यानऐसोविधि
ठानैं केसरितिलकरेषअतिसोहै ताकीपटतर
कोंजगकोहैं मगमदवेंदाताभैंराजै निरषतनाहि
कामसुतलाजै जटितमुकटपीतांवरसोहै जोदेषै
ताकौमनमोहै श्रवननकुंडिलपरममनोहर नख
शिषध्यानधरैयौंउरधर क्रमक्रमकरियहध्यान
वढावै मनकहुंजारप्रेरितहांल्यावै ऐसेकरतम
ग्नहोसोई वहुरीध्यांनसहजहीहोई ।चितवत
चलतनाचिततेंटरै सुतत्रयतनधनविसरनकरै
तवआतमघटघटदरसावै मग्नहोइतनसुधि
विसरावै भूषप्यासताकौनहिव्यापै सुखदु
खतनकौंनिहिनसंतापै जीवनमुक्तिरहैयाभा
इ ज्योंजलकमलअलिप्तरहाइ॥ देवहूतप्रसमु
गमउपाव॥ देवहूतयहसुनिपुनिकह्यौ देहम
मिनघेरिमुहिरह्यौ कईमनमोहनमनतेंजाइ ता
तेंकहियेसुगमउपाइ अवताकोंम्यौरोसमुझाइ
मेरीभक्तिचतुरविधिकरैं सुनेसुनेतेंसवविस्तरैं
ज्यौंकोउदौरिचलनकौंकरैं क्रमक्रमकरिडिगडिग
पगधरैं रवादिनसोंद्वापहुंचेजाइ त्योंममभक्त
मिलेमुहिआइ चलतपंथकोउथाक्योहोइ
कियेदौरिडरिमरिहैसोई जोकोउताकोनिकटन

पावैं धीरजधरिसुदिनानैंआवैं जोकोऊरिषकोमहि
बोचाहैं रजोगुननधनकुटुंबऔगाहैं भक्तिसातव
त्तिसेवैसंत लषानहीमूरतिभगवंत मुक्तिमनोर
थमनमेंल्यावैं ममप्रसादतेंसोवहपावैं त्रगुन
मुक्तिहूकौंनहिचहै ममदरसनहीतेंसुखलहै
ऐसोभक्तसुमुक्तिकहावै सोवहुरौंजलमोनहिआ
वै अमअक्रमकरिसबकीगतिहोइ मेरोभक्तनिश्चा
नहिकोइ हरितेंविमुखहोइजोइ मकीनर्कपरतु लेर
हैसोइ महाजातनावहुविधिपावै वहुरौंचौरा
सीमेंआवै चौरासीभ्रमिनरतनपावैं पुरुषवीर्य
वलत्रयगर्भआवैं मिलिरजवीर्यवैरसमहोइ
दुतीयमाससिरधारैसोइ तीजेमासहाथपगहोइ
चौथेमासनषअंगुरीजोइ प्राणवाइपुनिआइस
मावैं ताकीरतउनकौंसुचलावैं पंचममासहाड
पलपावैं छटेमासइंद्रीप्रगटावै सप्तमचेतनता
लहैसोई अष्टममाससंपूरनहोई नीचेंसिरअ
रुऊंचेपाइ जिमरअगिनतिहिव्यापैआइ नव
वहुतसोपावैउहां पूर्वजन्मसुधिआवैतहां नौम
मासपुनिविनतीकरै महाराजममदुखयहटरै
इहांतेमेंजववाहिरपरों अहिनिसभक्तितुम्हारी
करौं अबमोपैप्रभुकिरपाकीजे भक्तिअनिआ

पनीदीजे अरुयहज्ञानन चितनेटरे वारवारयहवि
नतीकरे दसममासपुनिवाहिरआवे तवयहज्ञान
सकलविसरावे वालापनदुखवहुविधिपावे जी
भविनाकहिकहासुनावे कवहूं विष्ठामेंरहिजाइ
कवहूं माषीलागीआइ कवहूं जुवनदियेदुखभारी
ताकोसोनहिसकेनिवारी पुनिजवपंचवरषकोहो
इ इतउतखेल्योचालेसोइ मातापितानिवारेजव
ही मनमेदुखपावेसोतवही मातापितापुत्रतिहि
जानें वहहूउनसोंनातामानें दसमवरषवितीत
पुनिहोइ वहुरिकिसोरहोइपुनिसोइ सुंदरिनारी
देखिविवाहें असनवसनवहुविधिसोंचाहें वि
नाभागसोकैसेंआवे तववहमनमेंवहुदुखपा
वे पुनिलछमीहितउदिमकरे अरुजवउदिमथा
लीपरे तववहरहेवहुतदुखपाइ कहांलगकहीं
कहानहीजाइ वहुरोंताहिवुढापाआवे इंद्रीशक्ति
सकलमिटिजावे कानन सुनेआंखिनहिंसूझे वा
तकहेंतें कछुनवूझे कहिवेहूकोजवनाहिपावे
तववहुविधिमनमेंपछितावे योदुखपाइपाइ
सोमरे विनुहरिभक्तिनर्कमेंपरे नर्कजाइपुनि
वहुदुखपावे पुनिपुनियोंहीआवेजावे तौहूह
रिसुमिरननहिकरे तातेंवारवारदुखभरे॥ भक्ति
धान॥ भक्तिनिकामीहूजोहोइ करमकरमकरि

उधरैसोइ सतीसतीविधिलोकहिजाइ ब्रह्मासंगह
रिपदहिसमाइ निहकामीवैकुंठसिधावैं जनमम
रनतिहिबहुरिनआवैं त्रिविधिभक्तिकहोंअव-
मुनिसोइ जानेंहरिपदप्रापतहोइ एककर्मजोगकों
करैं औरअधर्मकछूनहिकरैं एकभक्तिजोगकोक
रैं सुमिरनहरिपूजाविस्तरैं हरिपदपंकजप्रीतिल
गावैं तेहरिपदकोंयाविधिपावैं एकज्ञानजोगवि-
स्तरैं ब्रह्मजानिसवसोंहितकरैं तेहरिपदकोंयावि
धिपावैं क्रमक्रमसवहरिपदहिसमावैं कपिलदे
ववहुरोंयोंकह्यौ हमैंतुमैंसंवादजुभयौ कलयुग
मेंयहसुनिहैजोइ सोनरहरिपदप्रापतहोइ देव
हूतज्ञानकोंपाइ कपिलदेवसोंकहौसिरनाइ आ
जेमैंतुमकोंसुनजान तुम्हराक्रपाभयौमुहिज्ञान-
अवनव्यापिहैमुक्तिअग्यान जान्यौमेंतुमकोंभग-
वान पुनिनितिनजाइ।दियौतनत्याग करिकेंहरिप
दसोंअनुराग कपिलदेवसांख्यजोगगायौ सोराजा
मैंतुमहिसुनायौ ताहिसमुझिजुरहैलोलाइ सूर
वसेसोहरिपुरजाइ २६७ ॥अथचतुर्थस्कंधप्रा
भातिनरागविलावल॥ हरिहरिहरिहरिसुमिरनक
रौ हरिचरनारविंदउरधरौ सुकहरिचरननकोंसिर
नाइ राजासौंवोल्योयाभाइ कहौंहरिकथासुनि-

चितलाइ सूरतोहरिकेगुनगाइ २६८ ॥दत्तात्रेअौता
रबरनन॥ रुचकेअत्रनामसुत भयौ व्याहअनसुइया
सौंसोदयौ ताकैंभयौदत्तअौतार सूरकहतभागोत
अनुसार २६९ ॥रागबिलावल॥ हरिहरिहरिहरि
सुमिरनकरौं हरिचरनारविंदउरधरौं कहौंअबदत्ता
त्रयअौतार राजासुनौताहिचितधार अत्रपुत्रहि
तबहुतनपकियौ तासुनारिहूयहव्रतलियौ तीनोंदे
वतहांमिलिआए तिनसौंऋषियेवचनसुनाये
मैंतोएककरतांकौंध्यायौ औरएकहीसौंमनलायौ
अपनेंआवनकौंकहौंकारन तुमहौसकलजगतके
उधारन कहौतुमएकपुरुषजोध्यायौ ताकोंदरस
नकाहूपायौ ताकीशक्तिपाइहमकरें सृतपाल
नबहुरोसंघरें हमतीनोंहिजानकरतार मांगिलेहु
हमसौंबरसार कह्यौबिनतीमेरीसुनिलीजें ग्यान
वानपुत्रमुहिदीजें विस्नुअंसदत्तअौतारे रुद्रअं
सदुर्वासावरें ब्रह्मअंसचंद्रमाभयौ अत्रअनसु
इयाकौंसुखदयो यौंभयौदत्तात्रेअौतार सूरकहीं
भागोतअनुसार २७० ॥जज्ञपुरुषअौतारबरनन
॥रागबिलावल॥ दक्षकैंउपजीपुत्रीसाठ तिनमेंस
तीनामविख्यात महादेवकौंसोउनदई सोवहद
क्षकेयज्ञमेंमुई तहांकियोहरियज्ञअौतार सूरक

ग

होंभागोतअनुसार २७१ ॥जयपुरनषओनारवर
नन॥ हरिहरिहरिहरिसुमिरनकरौं हरिचरनारवि
दउरधरौं कहौंअवयज्ञपुरनषओनार राजासु
नौताहिचितधार सतीदक्षकीपुत्रीभई दक्षसु
महादेवकौंदई ब्रह्मामहादेवऋषिसारे इकदि
नवैठेसभामझारे दक्षप्रजापतिहूतहांआए क
रिसनमानसभुनवैठाए काहूसमाचारकछुपू
छे काहूसौंवहूरौंउनपूछे शिवकौलागीहरि
पदतारी तातेंशिवनहिआंषिउघारी महादेव
वैठरहिगए दक्षदेषिकरिनहिंदुखनए महादे
वकौंभाषनसाध मैंनौदेछ्यौवडोअसाध जह
भागयाकौनहिदीजे मेरोकह्यौमानिकरिली
जे नंदहिइंदेभयोसुनिताप दयोब्राह्मनन
कौंयहश्राप श्रुतपढिकैंतुमनहिउधरिहौ वि
घावेचिजावकानकरिहौ भगुनवकोपहारति
हिंकहेवा तेसरापसवकोंवयौंदयौ महादेवहि
नजोतपकरिहैं सोऊभोजलतेंनाहितरिहैं दक्ष
प्रजापतियगयरचायौ महादेवकौंनहिवुला
यौ सुरगंधर्वसवन्यौतेवुलाए तेसववधुनस
हिततहांआए सतीसवनतहांआवतदेषौसि
वसौंवोलीसुनौमहेस चालियेदक्षगृहहमजा
हि जदपिहमैवुलायौनांहि मोकौंतोअचर

जयहआयो उनिकोंहमकोंविसरायो गुरपितुगृहवि
नुबोलेजैये हेयहनीतिनहीसकुचैये ।शिवकह्योतुम
यहनीतिसुनाई पैवहमानतुहैशत्राई उहांगएजो
होइअपमान तोयहवातभलीनहिजांन दुर्जनवच
नसुननदुखजैसो वानलोगदुखहोननतैसो ममश
त्राईहरिदेखान करिहैतेराहूअपमान भएअपमा
नउहांतूमरिहैं जोममवचनहृदैनहिधरिहैं सती
कह्योममभगनीसारे सवैवुलाईव्हैहैंजान मोहू
कौंअवआज्ञादीजे महाराजअवविलंवनकीजे
वारंवारसतीजवकह्यो तवशिवअंतरमतियोलह्यो
सतीसदाममआज्ञाकारी कहतिजुयाविधिवारंवारी
देषतिहैकछुहोवनहारी सोकाहूपेजाइनटारी
गननसमेतसतातहांगई तासोंदक्षवातनहिकी
ही सतीजानिअपनोअपमान शिवकोवचनकि
योउनमान कह्योउहांअवगयोनजाइ वेहिगई
।शिरनीचेंनाई ।शिवआदुतकोवरजवआई ।वि
प्रनदक्षहिपूछीआई ।शिवनिंद्याकरितिनसोंभा
ख्यो मैतोयहिलेहीकहिराख्यो मेरोवचनमानिकि
रिलेव ।शिवनिमित्तआहुतिमतिदेव तवव्हैमी कौ
घसतीतिहिंकहा मेंशिवकीमिहमानहिलही महा
देवईस्वरभगवान शत्रुमित्रउनएकसमान तिहि
अग्यानमुनिकराशत्राई उनकीमिहमातेंनहिपाई
पितानजानितोकोनहिमारौं अपनोहिमेंप्राणसं

धारौं जोग धारना करि ननत्यागौ ।शिवपदकमलमांहि
अनुरागयौ वहुरि हिमालै कैं औतरी समै अंत।शिव
वहुरौं वरी इहा।शिवगनन उपद्रह कियौ नवमरगक
।घि उपावयह कियौ आहुति यज्ञकुंडमैंडारी कह्यौ प्र
गट उपजैं वलभारी पुलघकुंडनैं परगट भए मगकह्यौं
यज्ञकरन येनास इनकौं रहानैं देहु निकास ।शिवके
गननि नवहुनैं मारे नेगन।शिवपै जाइ पुकारे ।शिवकैं
क्रोधकरि कजटाउपारी वीरभद्र उपज्यौ वलभारी वीरभ
द्रकौं नहां पठायौ नासौं या विधि कहि समुझायौ दक्ष
।सिरकाटि कुंडमैं डारौ आवौ वेगि नकरौ अवारौ वीर
भद्र दक्षकौं मारि असमगु रुषि कै केस उपारि हाथपा
इ वहुतन के काट आइ नवायौ।शिवकौं माथ नवसुर
रुषि वृह्मापै जाइ ।दियौ सकल विरतांन सुनाइ कह्यौं
वृह्मा।शिव निंद्या जहां वुरौ कियौ तुम वैठे तहां वृह्मा
तिन लै शिव पै आए ।शिव पुनाम करि रिगवे दाए
।शिवकौं सवना कियौ परनाम भोलानाथ लियौ पु
निनाम वृह्मा।शिवकौं वचन सुनायौं दक्ष तुम्हारी मरम
नपायौं जैसो करो सु तैसो पायौ अव तुम वाकों फेरि
जियावौं ।शिव कह्यौ मेरैं नहि शत्रुताई सतीमरी मन
मैं नहिं आई अव जु तुम्हारी आज्ञा होइ छांडि विलं
वकौं जियै सोइ वृह्मा।शिव सुर रुषि तहां आए भृगु
रुषि कैस आपनै पाए घायल सवनी कै है गए सु
ररुषि सव के भाए भए दक्षसा सकुंडमैं जरयौ ताके

वदलें अजसिर धर्यो महादेव तिहि फेरि जियायो दक्ष ज्ञा
नि यह सीस नवायो विप्रन यज्ञ बहुरि विस्तरी यज्ञपुरुष
तव प्रगट भए निकसि कुंड तें दरसन दये सुंदर स्याम च
तुरभुज रूप ग्रीवा कौस्तुभ माल अनूप उठि के सब हुन
माथ नवायो दक्ष बहुरि यों विनै सुनायो मैं अपमान तु
म्हरौ कियो तव मम यज्ञ संपूरन नहिं भयो अब मुहि कृपा
कीजियै सोइ फिरि दुख बाधै न ऐसी होइ वहुरौं भृगु कृ
त अस्तुति कीनी महाराज मम बुधि भई हीनी दियो
क्रोध करि शिव हि सराप कर हु कृपा जु मिटै यह पाप
पुनि शिव ब्रह्मा अस्तुति करी जज्ञपुरुष बानी उच्चरी
दक्ष कियो शिव को अपमान ताते भई जज्ञ की हानि वि
ष्णु रुद्र विधि एक ही रूप दूहे जान मति भिन्न सरूप
जाते एप रगट भए आइ ताको तुम मन मांह रिसाइ
यों कहि पुनि वैकुंठ सिधारे सुर विधि गए गंध्रप सा
रे या विधि भयो यज्ञ औतार सूर कह्यो भागौत अ
नुसार २७२ ॥ संछेप यज्ञपुरुष औतार ॥ राग मारू ॥
जज्ञपुरुष प्रगट दरसन दिखायो विष्णु विधि रुद्र मम
रूप ए तीनूं हूं दक्ष सों यह वचन कहि सुनायो दक्ष
रिस मानि जब यज्ञ आरंभि कें सबन को सहित परतनी
हंकार्यों रुद्र अपमान कियो सती तन जी दियो रुद्र
गनन आइ ताको संघार्यो वहुरि विधि जाइ शिव वा
उके लई कों विष्णु विधि रुद्र तहां तुरत आए जज्ञ

रंभामिलिकरिषिनिवहुरौं कियौसीसअजराषिकेदक्षजि
वाए कुंउतेपुत्रेहप्रेगटिजगदरसनदियौंस्यामसुंदर
चतुरभुजमुरारी सूरप्रभुनिरषिउंडोतसवहुनकियौं
सुरऋषिनसवनअस्तुतिउचारी २७३ ॥पार्वतीवि
वाहवरनन॥रागविलावल॥ सतीहिदेंधरिशिवकौ
ध्यान दक्षयज्ञमेंछांडेप्रान वहुरिहिमालयकेंसुभ
घरी नामपार्वतीतिहूंओतरी पार्वतीवरप्रापतभई
तवहेमाचलतासौंकही तेरीतासौंकीजेव्याह उनक
ह्यौमेरीपतिशिवआह कह्यौहिमालेशिवप्रभुईश
हमकौंउनसौंकैसीरीस पार्वतीशिवहिततपकस्यौं
तवशिवआइतहांतिहिवस्यौं पार्वतीविवाहव्योहा
र सूरकह्यौभागोतअनुसार २७४ ॥ध्रुववरदेनओ
तारवरनन॥रागविलावल॥ शंभूमनकेसुतभएदो
इ तिनकीकथाकहोंसुनिसोइ उत्तानपादएककोना
म दुतियप्रीयव्रतअतिअभिराम उत्तानपादकेध्रूव
सुतभयौ हरिजानाकौंदरशनदयौ वहुरिदियौता
कौंअस्थान जहाप्रदक्षिनेहैससिभांन कहौंसुकथा
सुनौचितधार सूरकह्यौभागोतअनुसार २७५
॥रागविलावल॥ हरिहरिहरिहरिसुमिरनकरौं हरि
चरनाविंदउरधरौं कहौंअवध्रूवरदेनओतार रा
जासुनौंताहिचितधार उत्तानपादपृथ्वीपतिभयौ
ताकौंजसतानौंपुरछयौ नारिसुनीतवडीतिहिदा

र सुरुचदूसरीताकीनार भयौसुतचतेंउतिमकौ सुनी
तनारिकेधुरुकुमार राजाकौसूरचसौनेह सुनीतव
सेदूसरेगृह इकदिननृपसूरजगृह आयौ उतिमकौ
गोदवैठायौ धूषेलतषेलततहां आए गोदवैठि
वेकौतिहिधाए राजानृपउरगोदनलीनौ धुरुकुमार
रोदनवदीनौ तवसूरजधूकौसमुझायौ तेंगोविंद
चरननहिधायौ जौहरिकौसुमिरनतूकरतौ मेरेग
र्भआनिकौतनरतौ राजातववहुहिलैतौगोद वैठिगो
दतूकरतोमोद अजहूंतूहरिपदचितलाइ होहिप्र
सन्नतोहिजदुराइ वचनसूर्जैवानसमलागे धू
आएमातापैमागे मातातासौंरोव नदेष दुखपायौ
मनमांहविसेष कह्यौपुत्रतोकौकिनमार्यौ धूका
तिदुखितवचनउच्चार्यौ मातातासौंकंठलगायौ
तवधूसर्ववितांतसुनायौ कह्यौपुत्रसूरजसनक
हौ विनुहरिभक्तिपुत्रममभयौ अजहूंजोहरिप
दचितलैहै सकलमनोरथमनकेपैहै जिनजिन
हरिचरननचितलाए तिनतिनसकलमनोरथ
पाए उतयालोवूझानपकीनौं हरिप्रसन्नह्वैतिहिं
वरदीनौ तिनकीनौसवजगविस्तार जाकौनाहीं
पारावार वहुरिशांभूमननपकीन्हौ ताहूकौंहरि
जीवरदीन्हौ ताकेभयौवहुतपरिवार नरपसकी
रगाननतनहिपार नेहूंजोहरिहितनपकरिहैं स

कलमनोरथतेरेपुरिहै धूप्रहसुनिवनकौंउठिचले पंथ
मांहितिहिनारदमिले देष्योपांचवरषकौबाल वच(
नसुरजनहिंसक्योसंभाल अवमैहूंयाकौडिठदेषौं
लषिविस्वासबहुरिउपदेसौं धूसौंकह्यौकोधपरह(
रौ मैजुकह्यौंसोचितमेंधरौं मेरेसंगराजापैआवौ
घांऊतोहिराजधनगांवौ भक्तिभावकौजोतुहिचाह
तोसौंहोइनहीनिरवाह बहुतभक्ततपसीपचिपाचिमु
ए पैतिनहीदरसननहिहुए मैंहीभक्तनामममना
ए मोसोंकहतूअपनोहारद राजापासकहौंजोजाइ
लेहैमानिनपतिसतभाइ धूविचारितवमनमेंकि
यौ सुमिरनमारददरसनदियौ जवमैंभक्तिस्यामकीके
हौं जानतनहींकहामैंपैहौं कह्यौनारदसोंकरोसहाइ
करौंभक्तिहरिकौचितलाइ तुमनारायनभक्तकहाव
त काहेकौंतुममुहिभरमावत तवनारदधूकौंउठिदे
ष कह्यौदेतहौंतुहिउपदेस मथुराजाइसुसुमिरनक
रौ हरिकौध्यानहृदैमेंधर्यौ द्वादशअक्षरमंत्रसुना
यौ औरचतुरभुजरूपवतायौं मथुराजाइसोईउन
कियौं तवनारायनदरसनदियौ धूअस्तुतिकीनी
बहुभाइ तवहरिजीबोलेमुसकाइ धूजोतेरीइछ्या(
होइ मांगिलेहमोसोंअवसोइ प्रभुमैंदरसनतुम्हरे
लह्यौ मांगनकौंपाछेकहारह्यौ हरिकह्यौराजहैत(
नपाकियौ धूप्रसन्नहैमैंतुहिदियौ असतेरेहितकि

यो अस्थान देहि प्रदत्ति नजहां ससिभांन गहन नछत्र हूं
त्यौं ही फिरें तूं भयो अटल न कबहू टरें अरु जुनि महा
प्रलै जब होइ मुक्ति अस्थान पाइ है सोइ यह कहि हरि
निज लोक सिधारे धू निज पुर कौ पुनि पग धारे जब धू
पुर के बाहिर आयौ लोगन नृप कौं जाइ सुनायौ उनकें
कहे न मन में आई तब नारद कह्यौ नृप सौं जाई धू
आयौ हरि सौं वर पाइ राजा जाहि ताहि मिलि धाइ
नृप सुनि मन आनंद बढायौ अंतर पुर में जाइ सुना
यौं नृप कुटुंब सहित तहां आए नगर लोग सब सुनि
उठि धायौ धू राजा के चरनन परयौं राजा कंठ लाइ हि
त करयौं पुनि सुरुच के पायन परयौं ता सौं वचन धू अ
उचरयौं तुम उपदेस में हरि हि ध्यायौ यह उपगार
न हि जात मिटायौ पुनि माता के पायन परयौं माता
धू कौ अंक में भरयौ धू नृप सिंघासन बैठाए नृप तप
कारण बन हि सिधाए सम्प्रदाय राज धू कियौ पुनि भयौं
सीतल भयौ मान कौ हियौ पुनि भयौ धू वचन ओता
र सूर कह्यौ भागौत अनुसार २०६ ॥राग आसावरी
धू कि माता वचन सुनि रिसायौं दीन प्रनपाल किरपाल
गोपाल की मान सो सुनि तुरत सरन आयौ बड़रिज
बन चल्यौ पंथ नारद मिल्यौ कह्यौ निज धाम मथु
रा बतायौ मुकुट सिर धरें बनमाल कौस्तुभ गरें चतुर भु
ज स्याम सुंदर धियायौ भए अनुकूल हरि दियौ तिहि
जगत वर जगत करि राज पद अटल पायौ सूर प्रभु की

सरनगहीजिनआइनरकरिजगतमोमवैकुंठधायौ
२७८ ॥पृथअौतारवरनन॥रागमारू॥ धारिपृथरू
पह्रिराजकीयौ विप्रनकीमानिपरवतजगमेंकरीप्र
जाकोंसुखसकलमांनिदीयौ वेननृपभयौवलवंत
जवपृथीपरकछ्विनसोंकह्यौजपतपनिवारौ होइ
तिनकोधनवआपनाकौंदयौमारिकैताहिजगदु:
खटारौ भयोआराजजवसवकछ्विनमंत्रकीवेन
कीजांघकौमथनकीनौं जोघनेमथैतेंपुरुषपरगट
भयौस्यामतिहिभीलकौराजदीनौं वहुरिजवकछ्विन
भुजदक्षकीनीमथनलक्ष्मीसहितप्रभुदरसदीनौं प
हिरिआभरणपुनिराजलागेकरनआनिसवप्रजाडंडौ
तकीनौ वहुरिवंदीजननआइअस्तुतिकराइंद्रअसव
रनतुमतुल्यनांही कह्यौनृपविनाप्राक्रमेनअस्तु
तिकरौविनाकियेमोहिपुनिहर्षजांही करौभगवा
नकौंजससदागुनीजनजोजगतसिंधतेंपारटारै
कियेनरकीअस्तुतिकौंनकाजसरैंकरैसोआपनोंज
नमहारैं कह्यौतिनतुम्हेंहममनुषजानतनहींजग
नपतिजगतहितदेहधारौ करहुगेकाजजोकियेन
काहूनृपतिकियेजसजाइहमदुखसारौ वहुरिस
वप्रजामिलिआइनृपसौंकह्यौविनांआजीविका
मरतसारी नृपधनुषवानलेंरिपृथीपरकोपकियौ ५
तिनगऊरूपविनतीउचारी वेनकेराजओषदीजेग

लाई होंहि मीं सकल किरपानु म्हारी पर्वतन जहां तहां रो-
कि मोकों लियो देह करि कृपा रक दिसाटारी धनुष सों
टारि पर्वत किये एक दिस पृथी सम करि प्रजा सब बसाई
पुर ऋषिन नृपति पुनि गिर पृथा दुहन करि आपनी जी-
वका सबन पाई बहुरि नृप यज्ञ निन्नानवे पूर्न करि सत्त-
म जगि जब हि आरंभ कीनों इंद्र मे मानि हैं ग्रहन सुत कों
कह्यौ सो न ले सको तब आप लीनों नृपति सुत सों क-
ह्यो जाइ ल्यावो अबे इंद्र तिहि देखि है छांडि दीनों नृप
कह्यो सुरन के हेत मे जग करतु इंद्र मम अस्व किंहि काज
लीनों ऋषिन कह्यो तुम सत्तम जज्ञ आरंभ लखि इंद्र कों
राज हित कंप्यो हीयो नृप कह्यौ इंद्र पर कोन रिस्या हमें
ऋषिन तब पूर्न आहूत दीयो पुनि कह्यौ कुंड तें जज्ञ पूर्न
भयो इंद्र जम बरन न कछु मांगि लीजै पृथु कह्यौ नाथ मे-
रे न कछु शत्रुता अन न कछु कामना भक्ति दीजै जात पुर-
षा ए निज धाम बैकुंठ जव न्योत परजा सबै तब हं अ-
सो तिन्हें संतुष्टि कह्यौ देह मागों है मे विष्णु की भक्ति सब
चित्त धारी सुनत यह वात सनकादि कह्यो आए तहां पानें देव
ह्यो महिमा न दीजै भागमैरजु तुम चरन धारेइ हां ग्यान
दे मोहि जन सुजान लीजै पुनि कह्यौ देह अस्सी सम मनु-
ज जाकों सबे हरि भक्ति निज चित्त धारें कृपा तुम करी मे मे-
टको मन धरा नहीं कछु बस्त ऐसी हमारें बहुरि सन-
कादि गए आपने धाम कों नृपति सब लो गै हरि भक्ति लाए
सूर प्रभु चरित अगनित न गजाइ कछु जथा मति आप

नि

नीकहिसुनाए २७८ ॥ पुरंजनकथावरनन ॥ रागबिलाव-
ल ॥ हरिहरिहरिहरिसुमिरनकरौं हरिचरनारविंदउरध-
रौं कथापुरंजनकीअबकहौं तेरेसबसंदेहनदहौं
पराचीनप्रतनृपइकभए आयुपुजंतजज्ञतिनकिए
ताकेमनउपजीगिलान मैंकीनीबहुजियकीहान
यहममदोषकौनविधिटरै ऐसीभांतिसोचमनकरै
तिहिअंतरनारदतहांआए नृपसोंयौंकहिबचनसुना-
ए मैंअबहीसुरपुरतैंआयो मगमैंअद्भुतचरितलषा-
यो जज्ञमाहितुमपसुजेमारे तेसबठाढेशस्त्रनधारेजो-
हतहैंवेपंथतुम्हारो तुमअबअपनोआपसंभारो नृ-
पकह्यौमैंऐसोईकीनो जग्यकाजमैंतिनदुखदीनो र-
सनाकोजोकोजसार्यो मैंपुनिअपनोकाजबिगार्यो अ-
बमैंयहबिनतीउचरौं जोकछुआग्याहोइसुकरौं कह्यो
कहौंइकनृपकीकथा उनिज्यौंकियोकियोतुमजथा
ताहिसुनोतुमभलेप्रकार पुनिमनमैंरेषोउपचार ता
नृपकोपर्मातममित्र इकछिनरहेनतासोंअंत्र षान
पानसोसबपहुंचावे पैनृपतासोंहितनलगावे नृप
चौरासीलषफिरिआयो नववहपुरमानुषतनपायो
पुरकौदेषिपरमसुखलह्यौ रानीसोंमिलापनह्यांभ-
यो तिहिपूछेतूकाकीअहे उनकह्यौनाहिसुमिरन
नमरहे पुनिकह्यौनाउकहाहैतेरो कह्यौनजाइनाम
सुहिमेरो नवपुरजीवपुरंजनराव कुमतिनापुरा

जीकोनांव आंखिनाकसुखमूलदुवार श्रोत्रसूत्रनीसु
रनेद्वार लंककदेह नृपकौ निजगेह इसइंद्री दासीसो
नेह कारनननसौसैंन अस्थान तहां अविद्या नारिप्र
धान कामआदिकपाचौं प्रतिहार रहेंसदागहेदरबार
संतोषादिक आवनपावे । विषैभोगहिरदेहरषावे जा
द्वारेपरइछाहोइ रानीसहितजाइनृपसोइ तहांत
हां जोकोतिकदेषि मनमेंपावेंहर्षविशेष इंद्रीदासी
सेवाजेरें नृपतिनहोइभोगविस्तरें इनइंद्रनकोंयहीसु
भाव नृपतिनहोंहिनितिनोउछाव निद्रावसकबहू
जोसोवे मिलितअविद्यासुधिबुधिषोवे उनमतज्यों
सुखदुखनहिजानै जोगेवहारीतिपुनिठानै संतदरस
कबहूजोहोइ जगसुखमिथ्याजानैसोइ पैकुबुद्धिव
हराननदेई राजाकोअंकमभरिलेई राजापुनितकहीं
उकरे छिनभरिहूं अंतरनहिंधरे जबहि अषेटकइ
छाहोइ तबरथसाजिचलेनृपसोइ जाकनकोनृप
इछाकरे ताहीद्वारहोइनासरे जसादिकइंद्रीदरजा
नो रूपादिकपुनिवनसबमानो मनमंत्रीसोरथहक
वैया रथननपुन्निपापदोउपहिया अस्वपांचज्ञा
नइंद्रीपांच विषैअषेटकनृपमनराच राजामंत्री
सोंहितमानै ताकेदुखसुखदुखसुखजानैं नृपत
त्सअंससुखरूप मनमिलिपरयो दुखकेकूप ग्यां

नीसंगतिउपजैज्ञान अज्ञानीसंगहोइअज्ञान मं
त्रीकहिअषेटसुभैरै विषैभोगजीवनसंघैरै नि
समएरानीपेषिरिआवै सोवनसोनितिहिवातसुना
वै आजुकहाउघिम करिआए कहीरथानमिम
मिश्रमपाए कालिजाइसोउदिमकेरौं नेरेसवभं
डारनभरौं सवनिसयाहाभांतिविहार दिनभए
वहुरिअषेटकुजाइ नहांजीवनानासंघैरै विषैभो
गनिनकोहितभैरै विषैभोगकवहूनअघाइ थोर
हिनषनितिआवैजाइ इकदिननृपनिजमंदिरआ
यो रानीसोंअहनिसमनलायो ताकेपुत्रसुताव
हुभए विषैवासनानानाठए कानलागितासोंक
ह्योजाइ जुराकालकीकंन्याआइ कहौप्रियाअव
कीजैसोइ राजादेषिकहाधौंहोइ नगरद्वारतास
वेगिराइ लोगननृपकौंआनिसुनाइ कहौप्रिया
अवकीजैसोइ देषौंनृपतिकहाधौंहोइ कान
नसुनेआषिनहिसूझै कहेऔरऔरहीबूझै क
होप्रियाअवकीजैसोइ देषौनृपतिकहाधौंहोइ
नृसमाकरिदियौ चाहैभोग भोगनहोइहोइतहं
रोग कहोप्रियाअवकीजैसोइ देषौनृपतिकहा
धौंहोइ देहसिथलभईउठीनजाइ मानौदानौं
कूपगिराइ कहोप्रियाअवकीजैसोइ देषौनृपति

भा.सा.
८६

कहाधोहोइ जुरदोदानींपुराहिलगाई जानलगेपुरलो
गलुगाई कहीथयाअवकीजोसोइ देषोनृपतिक
हाधोंहोइ मरनअवस्थाकोंनृपजान तोहूधरैनम
नमैंध्यान ममकुटंबकीकहोगतिहोइ पुनिपुनिमू
रखसोचैसोइ कालभएंतिहिंनारनिकारो सखा
प्राणनिकौ नसंभारो रानीहीमेंमनरहिगयौ मरिनद
रूपसुकंन्याभयौ महबहुजसोंभयोविवाह पतुन
सति नकिकोपसुतनसाह बहुरोतिनसंगतिपाइ कहो
सुकथासुनोचितलाइ तासंगतिनेसुनपुनिजाए
श्रवनादिकमिलिहरिगुनगाए याविधितिनानिज
आपुविनाइ पूर्वपापसवगएविलाइ मरनअव
स्थाजवनियराई ईससखाकेमनयहआई वहुन
जन्मयहभ्रमभ्रमकीनो येइनमोकोंनवहुनचीन्
हो नवदयालवेदरसनदीन्हो कह्योमूढनेंमोहि
नचीन्हो विषैभोगहीमेंपगिरह्यो जानोंमोहिओ
रकहुंगयो मेंतोनिकटसदाईरह्यो तेरेसकलदुखन
कोदह्यो इहमुनिकेतिहिउपजोज्ञान पायोतिनपु
निपदनिर्वान यहकहिनारदनृपसोंकह्यो तेराहूतै
सोगतिलह्यो मेंजुकह्योसोदेखिविचार विनुहरिभ
जननहीनिस्तार हरिकीकृपामनुषतनपावै मूरख
विषैहेतसुगंवावै तनअंगनकोंसुनोविवेक करचें
लाषमिलेनहिंएक तेनदरसदेषनकोंदिये मूढदे

विपरनारीजियैं श्रवणकथासुनिवेकौंदीनें नूरखपर
निंदाहितकीनें हाथदियेहरिपूजाहेत तिनकरसूख
परधनलेति पगादियेतीरथचलवेकाज तिनसौंकु
चलिकुकरतुअकाज रसनाहरिसुमिरनकौंकरी ता
सोंपरनिंदाउच्चुरी यहसुनिन्पकीनोअनमान मे
तोन्पतिनदूसरआन नारदजीनुमाविहियोउपगा
र तूवतमोहिउतारीयार न्पतिपाइयहज्ञानमया
न राजछाडिबनिगयोउद्यान यहलीलाजोसुनेसु
नावै सूरहरिकृपाज्ञानसोपावै सुकज्यौंराजाकौं
समुकायो मेंहूंताअनुसारसुनायो २७८ ॥ रागनट
अपुनपौआपुनहींमेंपायौ सबदहिसबदभयौ
उजियारौ सतगुरभेदवतायौ ज्योंकुरंगनाभिकस्तू
री टूंढतफिरतभुलायौ फिरिचितयौचेताचेत
नहोइकरिआपुनहीतनछायौ राजकुमारकंठमनि
भूषनभ्रमभयौकहूंगवायौ देयौवजारऔरसंगि
नतवतनकौतापनसायौ सपनेमांहिनारिकौभ्रमभ
यौवालिककहूंहिरायौ जागिलख्योज्योंकौत्योंहीहैंना
कहूंगयौनआयौ सूरदाससमुकेकीयहगतिमनहीम
नमुसकायो कहिनजाइयहसुखकीमहिमाज्यौंगू
गेगुरखायौ २८० ॥ पंचमस्कंद श्रीभागवतरागविला
वल॥ हरिहरिहरिहरिसुमिरनकरौं हरिचरणारविं
दउरधरौ हरिचरननसकृतसिरनाइ राजासौंवोलें

पाभाइ कहौ हरि कथा सुनौ चित लाइ सूर नरौ हरि के गुन
गाइ २०१ ॥ रिषबदेव अवतार वरनन राग बिलावल ॥
ज्यौं लयौ रिषबदेव अवतार कहौं सुनौं सो अब चित धार
सुक बरनौ जैसे परकार सूर कह्यौ ताही अनुसार बृह्मा
प्रांनू मन उपजायौ ताते जन्म प्रीयव्रत पायौ प्रियव्रत
के आगि निध्र भयौ नाभ जनम ताही ते लयौ नाभ न
पति सुत हित जगि कियौ जग्यपुरुष तब दरशन दियौ
विप्रन अस्तुति वेद सुनाई पुनि कह्यौ सुनियै त्रिभुवन
राइ तुमसम पुत्र नाभ के होइ कहौ मो सम जग और न
कोइ मैं ह्रतार करतासंसार मैं लैहौं नृप गृह अवतार
रिषबदेव तब जन्मौ आई राजा के मन भई बधाई व
हुरौं रिषब वडे जब भए नाभ राज देवन कौं गए रिषभ
राज परजा सुख पायौ जस ताकौ सब जग मैं छायौ इंद्र
ईरषा मन मैं लायौ अरिकै औध न जल बरषायौ रिष
व देवन वहीं यह जानी कह्यौ इंद्र यह कहा मन आनी
निज बल जोग नीर बरषायौ पूजा लोग अति ही सुख पा
यौं रिषभ राज सब मन उत्साह कीयौ जैन्ता सौं पुनि
ब्याह ता सौं सुत निन्यानवे भए बृह्मादिक सब हरि रंग
रहे तिन मैं नौ नौ खंड अधिकारी नौ जोगीश्वर प्रभु हिवि
चारी असी इक कर्म विप्र कौं लियौ रिषब ज्ञान सब हू
न कौं दियौ बुद्धिमान व्यास सम होइ साछी व्यापक न
सिन सोइ ताही सौं तुम चित लगावहु ताकौं सेय परम गति
पावहु ज्ञानी संगति उपजै ज्ञान अग्यानी संग वडै अ

अज्ञान तातें संतसंग नित करना । संतसंग सेवो हरि चरना
बहुरौं दियो भरथ कौं राज रिषभ भिन्न देह कौ त्याज उन
मन की जौं बिहरन लागे असन बसन की सुरति तियागे
कोऊ खवावै तौ कछु खाहीं नातर वैठे रहिहि जांइ मूत्रपुरी
ष अंग लपटावैं सो सुगंध दश योजन जावैं अष्ट सिद्धि
बहुरौं तहां आई रिषभदेव तें मुख न लगाई राजा रह
नु हुतौ तहां एक भयौ श्रावगी रिषभ वहि देख वेदधर्म त
जि कै अन चलावै प्रजा सकल कौं यह सिखावै अव बहु
श्रावगी जैसो करैं ताहि के मारग अनुसरैं अंतर कछु पार
हित नहि जानैं वाहिर कछु पादे हौंवि मानैं हरि है रिषभ
देव औतार सूरदास भाष्यौ अनुसार ॥२८२॥ भरथ कि
थावरनन राग बिलावल ॥ हरि हरि हरि हरि सुमिरन करौं
हरि चरणारविंद उर धरौं रिषभदेव जब वन कौं गए
नौ सुत नव खंड नृप भए भरथ भरथ खंड कौ राव करै स
दा सुधर्म कौ न्याव पालै प्रजा सुतन के भाइ पुरजन सैं व
सदा सुख पाइ भरथहु देह तजन कौं राज गए वन कौं त
जि राज समाज तहां करी नृप हरि की सेव भए प्रसन्न दे
वन देव एक द्यौस गंडकि तट जाइ करन लग्यौ सुमिर
न चित लाइ गर्भवती हरनी तहां आई पानी कौं सो पिय
न न पाई सुनि कै सिंह भयान अवाज मारि फलांग च
ली वह भाज हूदन वा कौ तन छुटि गयौ ताके छौना सु
दा भयौ भरथ दया ताऊपर आई ल्याये आश्रम ता हित ल

वाई पोषेताहिपुत्रकेभाइ घाइआपनववाहिषवाइ सो
वैतवजववाहिसुवावै तासोंकाउतअतिसुखपावै सुमि
रनभजनविसरिसवगायो इकदिनमृगछौनाकहुंगयो
ताकेमोहभरथवसभयो सवदिनविरहअगिनतनत
यो संध्यासमैनिकटजवआयो ताकेदूरनहिनचरि
धायो पगकेचिन्हपृथीपरदेष वहुरौंदेष्यौससिकीओ
र तामेदेषिस्यामताकोर कहनलग्योममसुतससिगो
द तासेतीससिकरनविनोद दूढतढूढतवहुश्रमपायो
पैमृगछौनानहिदरसायो मृगकोध्याननहिदेरहिगयो
भरथदेहतजिकैमृगभयो ऐवकाहूसोंसगनकरौं ह
रिचरणारविंदउरधरौं ऐरवजन्मनाहिसुधिरही आ
पआपसोंनवयोंकही मैमृगछौनाभैमनदयो तातैं
मैंमृगछौनाभयो संगमृगनहूकोंनहिकरै हस्योघा
ससोउनहिंचरै सूकेपातऔरत्रणखाइ याविधिउ
सोजनमवितोइ मृगतनतजिब्राह्मनतनपायो पू
रवजनमनहांसुमिरायो मनमैयहीवातठहराई
होइअसंगभजोजदुराई पितापढावैसोनहिपढै म
नमैरामरामनितरटै पितातासकालवसभयो भ्रात
नहू [illegible] श्रमवहुविधिदयो ऐसोहरिहरसुमिरनरहै
औरकछुविधानहिकहै जडसरूपसोंजहांनहांफिरै
असनवसनकीसुधिनहिधरै जैसोआनिदेहिसोषा
इ ताकोभूषाहोरहिजाइ कबरात्रिकभारनतवभी
नोंउनतंहहरिचरननाचितदीनों नहांआनिदेहि
तोषाइ जोनदेहिभूषोरहिजाइ भीलरावनिजलो

मेरेमनकीआसपुजावौ २
नकह्यौ तुमप्रसादममगृहसुतहोइ नरवलदेवभयो
वासोइ तुमकाहूधनदेलेआवौ तेघोजनतघोजनतन
हांपूंए जहांजडभरथरूषनमेंछाए मर्थहिदेषतन
नअतिसुंदर स्थूलशरीरहितसवसुंदर तिजन
पपासताहिलेंआए नपतिहिदेषिवहुतसुषपाए
विप्रनकह्यौयाहिअन्हवावौ याकेअंगसुगंधिल
गावौ देवीमंदिरजहांलेगए षडगरावकेकरतेंह
हुए जवराजातिहिंमारनलग्यौ देवीकालीमनउमगड
ग्यौ हरिजनमारेंहत्याहोइ ज्योंनहिमेरेकरौंअवसो
इ देवीनिकसिरावकौंमारयौ भरथसाधयहवचन
उच्चारयौ जानेविनाचूकयहभई मेंउनसोंऐसीनहि
कही विप्रनवेदधर्मनहिजान्यौं यहसुनिस्रातेंभ
रथसिधायौ हरिसुमिरतनिजआयौ राजाकौंसुक
ज्योंसमुझायौ सूरदासत्योंहींकहिगायौ २८३
जडभरथरघोघनगोष्टराग॥विलावल॥ हरिहरिहरि
हरिसुमिरनकरौं हरिचरणारविंदउरधरौं नपतिर
घोघनकेमनआई सुनियेंग्यानकपिलसोंजाई ज
उसुषआसननपतिसिधायौ तहांकहमएकदुख
पायौ भरथपंथपरदेष्यौषस्यौ वाकेवदलेंताकौं
धस्यौ तिनसौंभरथकछुनहिकह्यौ सुषआस
नकांधेपरगह्यौ भरथचलेजियपंथनिहार चलै
नहींज्योंचलेकहार नपतकहौमारगसमआह
चलतनवैयौतुमसूधाराह कह्यौकहारनहमैंनयो

। नयो कहा रचलन मगछोरि कह्यो नपत मो दौलं
आहि बहुत पंथहूं आयो नांहि तूं जोटे टेटे टो चले
न विवेक मे मन नहि धरै ऐसी भांति बहुत नप भोवै
मुनिजइ मर्थ ईदे मेरावे मनमहलेग्यो करन विचा
र हर्ष शोक तन को व्योहार जैसो करै मुनेसो लहै
सदा आत्मा न्यारो रहै नप कह्यौ मे उतर नहि पायो
मेरो कहो न कछु मन ल्यायो नपदिस देखि भरथ प्र
स कार बहुरो याविधि कह्यो मुनार तुम कह्यो तें है
बहुत मुटायो अनबहु मारगहूं नहिं आयो टे टौटे
टौ तू कितजात मुनिराज मो सो यह बात जियकरि
कर्म जनम बहु पावै फिरत फिरत श्रम अंतन आवै
आजनहूं न कर्म परहरै जो तिया को फिरिबो टरै तन
स्थूल कें दुख रो होइ परम आतम कौं आइन दोइ त
न मिथ्या छन भंगुर जानो चेतन जीव सदा थिर मा
नो जियकों दुख सुख तन संग होइ जो विचरै तन के
संग सोइ देह अभिमानी जीव हि जानें ग्यानी तन
आलिप्त करिमानें तुम कह्यो परिव की नहिचाह सव
का हू को हे यह राह कहा जानि तुम मोसो कह्यो य
ह मुनि ऋषि सरूप नप भयो तजि सुख पालर ह्यो
गहिपाइ मे जान्यो तुम होऋषिराइ भृगु कि दुर्वासा
कहो हि कपिल किदत कहो तुम मोहि अव हू सुरक
वहू न रहो हि अवहू क रावरंक जिय सोइ जीव कर्म

करिबहुतनपावै अज्ञानीतिहिदेखिभुलावै आ
तमसदाजनमअविनासी ताकौदेहमोहवडफांसी
ऋषबपुत्रभर्थममनाम राजछाडिलियवनविश्रा
म तहांमृगछौनासौहितभयो नरतनतजिम्रग
तनलयो अबमैजनमविप्रकोपायो सबतजि
हरिचरननचितलायो तातेंग्यानीमोहनकरै
भ्रमिकुटुंबसौंहितपरहरै जबलगभजेंनचरन
मुरार जबलगहोइनभवजलपार भवजलमैनरब
हुदुखलेहैं पैवैरागनावनहिंगहैं सुतकलित्रदुर
वचनजुभाषै ताहिमोहबसमनहिनराखै जोवेवच
नओरकोउकहैं ताकौंपुनिकैसठनहिरहैं पुत्रअन्या
इकरैवहुतेरे पिताएकअऔगुननहिहेरे औरजुएक
करैअन्याइ तिहिवहुऔगुनदेहिलगाइ इकमन
अरुग्यानरुइंद्रीपांच निर्गुनसदानचावैंनाच ज्यों
मगचलतचोरधनहरैं त्यौंएइंद्रिनधनहिपरह
रैं तसकरज्यौंछुटतधनलेहि अहहरिभजननक
रननहिदेहि ग्यानीरनसौंसंगनकरैं तसकरजां
निदूरिपरहरैं तबयहसुनिभरथहिसिरनाइ ब
हुरिकह्यौयाभांतिसुनाइ नरसुरनरसुरउपरआहि
तहीज्ञानकहियेकहांताहि यातेंतुमकौंकारतडरौ
न औरसवनरहूकोपरतीत सुकक्ह्यौसुनियहवा
तसुजान लह्योज्ञानतजिदेहअभिमान जोयहली
लासुनैसुनावैं सोअग्यानभक्तिकोंगावे सुकदेव

नृपहि
ज्यौं दियौ सुनाइ सूरदास कह्यौ ताही भाई २८४ ॥ष
ष्ठम स्कंध श्री भागवति परीक्षत वाच ॥ राग बिलावल
सुक सौं कह्यौ परीक्षत राउ नरक पायौ वन राज हि पाउ
तहां जाइ मग सौं चित लायौ ताते भेंग मेरित न छिरिया
यौं जिन कौ पाप करत दिन जाइ ते तौ परै नरक में जाइ
सो छूटै किंहि विधि कहि बिराइ सूर कहौ मो सौं समुझा
इ २८५ ॥ राग बिलावल ॥ सुकदेव कह्यौ सुनौ नृप रा
इ पतित उधारन हैं जदुराइ अंतकाल जिन हरि हरि क
ह्यौ तातकाल तिन हरिपद लह्यौं ताते कहौं एक क
था नारायन कहि उधर्यौ यथा ताहि सुनौ राजा चि
त लाइ सूर तरौ हरि के गुन गाइ २८६ ॥ अजामेल उ
धारन कथा राग बिलावल ॥ हरि हरि हरि हरि सुमिरन
करौ हरि चरनारविंद उर धरौ हरि हरि कहत अजामि
ल तर्यौं ताको जस सब जग विस्तर्यौ कहौं सु कथा सु
नौ चित लाइ कहे सुने सो नर तरि जाइ अजामिल वि
प्र कनौज निवासी सो भयौ भीलनि के ग्रहवासी जाति
पांति तिन सब बिसराई भक्त अभक्त मिलै सो खाई
ता भीलनि के दस सुत भए पहिले पुत्र भूलि तिहि गए
लघु सुत नाम नारायन धर्यौ तासौं हेतु अधिक करि
कर्यौ काल अवधि जब पहुंची आइ तब जमदूत दिये हू
तपठाइ नारायन सुत नाम उचार्यौ जमदूतन हरि
गनन निवार्यौ गनन कही इन नाम उचार्यौ नाम
महातम तुम न बिचार्यौ जानि अजानि नाम जो ले

य हरिविंकुंठवासनिहिदेहि विनुजानेकोऊऔषधखाइ
जाकोरोगसकलनसिजाइ त्यौंज्योहरिविनुजानेंकहैं
सोसवअपनेपापनदहैं जोअजाननामउच्चारै सो
अपनेंपापनकोंजारै अगिनविनाजानेजोगहै ता
नकालसौताकोंदहै दोउपुरुषकोनामइकहोइ ए
कपुरुषकोवोलेकोइ दोऊताकीओरनिहारैं हरिहू
ऐसोभावविचारैं हांसीमेंजेनामउचारैं हरिजीता
कोसतिविचारैं मेंहूकरिकोउकहेंजुनाम हरिजीदेहि
ताहिनिजधाम जावनकेहरसवदसुनाइ तावनतेंम
गचलेवराइ नामसुनतयेोपायपराहि पायौहूवैकुं
ठहिजांहि यहसुनिदूतचलेखिसियाइ कह्योतिनधर्मरा
इसोंजाइ अवलोंहेहमतुमकोंजानत तुमहीकोंउंडदाता
मानत आजुगह्योहमपापीएक तिनभैमाग्योहमकों
देख नारायनसुनहेतउचार्यौ पुरषचतुरभुजहमेंनि
वार्यौ उनसोंहमरोकछुनवसायौ तातेंतुमकोंआनि
सुनायौ औरदंडदाताकोउआहि हमकौंक्योंनवताव
नताहि धर्मराजकरिहरिकोध्यान तिनदूतनसोंकह्यो
वषान नारायणसवकेकरतार पालतअरुपुनिकरतसं
घार तासभजेंसवकागतिहोइ तासमऔरनदुतियाको
इ ताकोजवउनुनामउचारौ तवहरिगनननकेहिनिवा
र्यौ हरिकेगनहूंजहांतहांरहैं हमतुमउनकीसोधनल
हैं जोजोमुखहरिनामउचारैं ।। हरिगनतिहिंतिहिं
तुरतउधारैं नाममहातमतुमनहिजानौं नाममहात

मसुनौंवखानौं ज्यौंत्यौं कोऊ नामउचारै॥ निश्चैकरिसु
नैपैतरै जान्नेगहमिंहरिजनजाइ नामकीरतनकौसु
गाइ जदिपवहहरिनामनलेय तदपिहरितिंहिनिजपद
देय कैसोइपापीक्यौंनहिहोइ रामनामजबउचारैंसोइ
तुमरूसेनहींनहांअधिकार मैतुमसोंपहकहीपुकार अ
जामेलहरिभक्तनदेख मनमेंकीनोहरखविसेख जमह
तनकोइनहीनिवारयौ वामेंतैंमुहिइनहींउवारयौ तब
मनमांहिजानिवैराग पुत्रकलित्रमोहसबत्याग हरि
पदसौंउनध्यानलगायौ तातकालवैकुंठसिधायौ अं
तकालजोनामउचारै सोसबअपनेपापनजारै ग्या
नवैरागतुरततिंहिहोइ सूरविष्णुपदपावैसोइ २८७
॥श्रीगुरुमहिमावरनन॥रागविलावल॥ हरिहरिहरिह
रिसुमिरनकरौं हरिचरणारविंदउरधरौं हरिगुरुएककरू
पनपजांन यामेंकछुसंदेहनआन गुरुप्रसन्नहरिप्रस
न्नहोइ गुरुकेदुखितदुखीहरिजोइ कहौंसुकथासुनौं
चितधार कहैसुनैसुतरैभवपार इंद्रएकदिननिजसभा
मझार वैठ्योहतोसिंघासनडार सुरऋषिसवगंधर्वपन
हांआए पुनिगुरुवेर[illegible]हूतहांसिधाए सुरगुरहूंनि
हिंआसनदा[illegible]यौ इंद्रउठिनाहिनसीसनवायौ सुरगु
रजानौंमदरहिभयौ तहांतेंफिरिनिजआश्रमगयौ सु
रपतितबलाग्योपछितान मैंयहकहाकियोअग्यान
पुनिनिजगुरुआश्रमचलिगयौ पैसुरगुरतिहिंदरसन

दयो यह सुनि असुर इंद्र पर आइ । कियो इंद्र सौं युद्ध बनाइ ।
इंद्र सहित तब सब सुर भागे । आश्रम अपने सब कहुं न त्या
गे पुनि सब सुर ब्रह्मा पै जाइ । कह्यौ वृत्तांत सकल सिर ना
इ ब्रह्मा कह्यौ तुरतैं जैयो । निज गुर कौं आदर नहिं दियो
अब तुम विस्वरूप गुर करौ । ता प्रसाद यौं दुख तैं तरौ सुर
पति विस्वरूप पै जाइ दोऊ कर जोरि कह्यौ सिरनाइ कृपा
करहु मम प्रोहित होहु । कियो बृहस्पति मो पर कोहु कह्यौ
पुरोहित और न भलौ जातु वीजन पतागलो पै तुम
विनती करु विधि करी ता तैं मैं मन मैं यह धरी यह कहि
इंद्र हिय तक लायो गयो राज अपनो पुनि पायो असुरन
विस्वरूप सों कह्यौ भली भई तू सुरगुर भयो तो तन सा
र मोहि हम आहीं आहुति हमै देत क्यों नाहिं तिनानि
मित्र तिन आहुति दई सुरपति वात जानि यह लई क
रि कै क्रोध तुरत तिहि मास्यौ हत्या हित यह मंत्र विचारौ
चारि अंस हत्या के भए चारौं अंस बांटि पुनि दए एक अं
स पृथ्वी कौं दयो ता तैं ताम ऊसर भयो एक अंस वृच्छन
कौं दीनौं गोंद होइ प्रगास तिन कीनौं एक अंस जल कौं
पुनि दयौ है करि काई जल पर छयौ एक अंस सब ना
रिन पायौ है रज सु लाजि ननन छायौ तुष्टा विस्वरूप
कौ बाप दुखित भयो सुनि सुत संताप तिन करि क्रोध
इक जग्य उपारी दनुज असुर उपज्यौ बलभारी सो सुरपति

कौंमारनधायो सुरपतिहूंतासनमुखआयो जेतकरा
स्वक्रिपेपरहार सोकरिलियेअसुरआहार तवसुरपति
मनमेंभेमांन गयोतहांजहांश्रीभगवान नमस्कार
करिविनैंसुनाई राखिराखिअसरनसरनाई कह्योभ
गवानउपावनआन रुखिदधीचहाउलेदान ताकौंतू
निजवज्रूवनाव मरिहैअसुरतासकेघाव तवसुरपति
रुखिकोढिंगजाइ करीविनैवहुसासनवाइ वहुरिक
हीअपनीसवकथा हरिजूकह्योकह्योपुनितथा तिन
कह्योदेहमोहअतिभारी सुरपतिनूयहदेखिविचारी
यहतनवचौहूंदियोनजावै औरदेनकछुमनहिनआ
वै पैयहअंत नाहिहैभाई परहितदेवनीआहिभला
ई तनदेवेनैंनाहीभजों जोगधारनाकरितिहितजों गौ
चढारममतुचाउधारौ हाउनकोंतुमवज्रसंवारौ सुर
पतिरुखिकीआग्याधाइ लएहाउकियोवज्रवनाइ गौ
मुखअसुचतभीतिंभयो रुखिसुकदेवनृपतिसौंक
ह्यो इंद्रआइतवअसुरप्रचारौ कियोयुद्धपेअसुरन
मारौ इंद्रहाथतेंवज्रछिनाइ मारयोऐरावतकेधाइ
ऐरावतघायलह्वेगयो तववत्रासुरकोंसुखभयो ऐ
रावतकेइंद्रनलायो भयोसचेतइंद्रतवधायो कत्ता
सुरकोंवज्रप्रहारो तिनत्रसूलसुरपतिकोंमारयो लग
तत्रसूलइंद्रमुरझायो करतेंअपनोवज्रगिरायो क
ह्यो असुरसुरपतिहिसंभारि लेकरवज्रमोहिपरहारि

जो मरिहैं तेसुरपुरजैहैं जीतिजगतमांझजसलैहैं
हारिजातिनहिंजियकेहाथ कारनकतात्रानहैनाथ
हमतुमकौंकछपुनरीवनाइ देषनकौतिकविविधि
नचाइ तवसुरपतिलैवज्रसंघारी जयजयशब्दसुर
नउच्चारी पैइंद्रहिसंतोषनभयो ब्राह्मनहत्याकेदुख
दहैो सोहत्यालागीतिहिधाइ छप्योसुकंवलनालमें
जाइ सुरगुरजाइनहाँतेंल्यायौ तासौंहरिहितजागयक
रायौ जगिकियेहत्यागईविलाइ पुनिनृपभयोइंद्र
पुरआइ नृपयहसुनिसुकसौंयौंकह्यौ ग्यानबुद्धि
असुरनकौंभई पुनकह्यौसुनौपरीक्षतराइ देवनो
हिविरतांनसुनाइ ।चित्रकेतपृथ्वीपतिराव सुतहित
भयोतासचितचाव जद्दिपरानीवरीअनेक पैतिन
नतैंसुतभयोनएक नारदहरिचिअंगिरासिधाये अ
ईआसनदैतिनैवैठाए ऋषिसौंनृपनिजभावयासु
नाई कहौमोहिसोकरौंउपाई ऋषिकह्योतेरेंपु
त्रनहोइ होइकभूंतौदुखदेसोइ नृपकह्योएक
वारसुतहोइ पाछैंहोनीहारसुहोइ ऋषिवानृप
सौंयज्ञकरायो दैप्रसादतिहिवचनसुनायो जा
रानीकौंनृपहदैहै तारानीसेतोसुतहूहै पटरानी
कौंनृपसोदियौ तिनप्रणामकरिभोजनकियो ऋषि
प्रसादतेंसुततिनउपायौ सुनलहिंदंपतिअतिसुख
पायौ ।विप्रजाचकनदानौदान कियोउतसौकहा

करैवखान तारानीसौंनृपहितभयो औरनृपनकों
मनअतिभयो तिनसबहूनकरि मिंतरनाई नृपन
कुंवरकोंजहरपियाई बहुतवेरभईकुंवरनजग्यो दा
सिनसौंरानीतबमांग्यो ल्यावहु कुंवरहिवेगिजगा
ई दूधपियाईकेराखौस्वाइ दासीकुंवरजगावनआ
ई देख्यौकुंवरमरनकीनाई दासीवालकमरतके
निहारि परीधरनिपरखाइपछारि नवरानीतहांधा
ईआइ सुतमृतदेखिगिरिमुरझाई पुनिरानीजबसुर
तिसंभारी रुदनकरनलागीअतिभारी रुदनसुनतरा
जातहांआयौ देखिकुंवरकौंअतिदुखपायो कबहू
मूर्छितह्वैनृपगिरे कबहूसुतकोंअंकभरे ऋषिना
रदअंगूनहांआए राजासौंयेवचनसुनाए कोतूकौ
यहदेखविचार सुपनसरूपसकलसंसार सोयोहो
इसुइहिसुतमानैं जोजागौतौमिथ्याजानैं तातेंमिथ्यामो
हविसार श्रीभगवानचरनउरधार हमतुमसौंपहिलें
हीकही सोवहवातआजुभईसही नृपकोंसुनिउ
पज्यौवैराग बनकौंगयौराजसबत्याग बनमेंजाइतनपि
ष्यावरी मरिगंधर्वदेहतिनधरी इकदिनसौंकैलास
सिधायो शिवकोंदरसनहांउनपायो उमानगनदे
खीवनराइ दियोआपनाहियाभाइ तूअवअसुरदेहध
रिजाइ मेरोकहोनविरथाजाइ उमाआपनाकौंजवभ
यो वृत्रासुरसोयाविधिभयो हरिकीभक्तिवयानहि

जाइ जनमजनमसोप्रगटैं आइ तातें हरिगुरसेवाकीजै
मेरोवचनमानियहलीजै ज्योंनृपसुतसोंकहिसमुझा
यों सूरदासत्योंहींकहिगायो २८८ ॥रागसारंग॥
गुरुबिनऐसीकौनकरै मालातिलकमनोहरबानालै
सिरछत्रधरै भवसागरतेंबूडतराखैदीपकहाथधरै
सूरस्यामगुरऐसोसमरथपतितनलैउधरै २८९ ॥
सप्तमस्कंधश्रीभागवतकथावरननरागदेवगंधार॥ पढौ
भाईराममुकुंदमुरार चरनकमलमनसनमुखराखौक
महूंनआवैहार कहैप्रल्हादसुनौरेबालकलीजैजनमसं
वार कोहैहरनकशिपअभिमानीतुम्हैसकैकोमारि जि
निडरपौजडमतिकाहूसोंभक्तिकरौइकसार राखनहार
औरहैकोई स्यामभुजाधरेचार सकलसरूपदेवनारा
यनदेखौहृदेविचार सूरदासप्रभुसबमैंव्यापकज्योंधर
नीमैवार २९० ॥श्रीनरसिंघऔतारवरननरागबिलाव
ल॥ हरिहरिहरिहरिसुमिरनकरौं नरहरिपदनितहिर
दैंधरौं नरहररूपधरोजिहिभाइ कहौंसुकथासुनोचित
लाइ हरिजबहरणाक्षकोमारयो दसनअग्रपृथ्वीकोधा
रयो हरिणकशिपसोंदिनकहोआइ भ्रातावैरलेहुंजा
इ हरिणकशिपदुसरतपकियो ब्रह्मातबतिहिदरसन
दियो कह्योतोहिइच्छाजोहोइ मांगिलेहिवरमोसों
सोइ कह्यौयोंसनिसधरननमरौं अस्त्रशस्त्रपरहार
नधरौं तेरीसृष्टिजहांलगिहोइ मोकोमारिसकैनहिको
इ ब्रह्माकह्यो ऐसेंहीहोइ पुनिहरिचाहैंकरिहैंसोइ

सू.सा
६८

यहकहिब्रह्मानिजपुरआए हिरणकशिपनिजभवनसि
धाए फूलिआइ त्रिभुवनपतिभए इंद्रवरुनसवहीभजि
गए ताकेपुत्रभयोप्रह्लाद भयोअसुरमनअतिअहलाद
पांचवरषकेजवभयेआइ संडामरकोलएवुलाइ तिन
केसंगचटसालपठायो रामनामसोंतिनचितलायो संड
मरकारहेंपचिहार राजनीतिकहिवारंवार कहैपहलाद
पढ़तमेंसार कहापढ़ावतुअनजंजाल जवपांडेइनउन(
कोगए वालकसवइकठेभए कहैयहग्यानकहांतुम
पायो नारदमातागर्भसुनायो कह्योहमैंहूंदेहुसिखाई
सवहुनकेमनऐसीआई कह्योसवनसोंतवसमुझाइ
सवतजिभजोचरनरघुराइ रामहिरामपढोरेभाई राम
हिजहांतहांहोतसहाई इहांकोऊकाहूकोनाहीं कुए
सनवंधमिलतजगमांहि कालअवधिजवपहुंचेआई
चलतनवेरकोऊसंगनजाइ सदासंघातीश्रीरघुराइ भजि
येताहिसदालोलाइ हरताकरताआपेसोइ घटघट(
व्यापिरह्योहैसोइ तातेंदुतियाऔरनकोइ ताकेंभजें
सदासुखहोइ दुर्लभजनमसुलभनहीपाइ हरिनभजें
सोनर्कहिजाइ यहजियजानिविषेपरहरो रामहिराम
सदाउरधरो सतसंगतमनुष्यकीआइ आ[illegible]धीसो
वतहीमेंजाइ कछुवालापनहीवीते कछुवउपेमां(
हिवितीते कछुनृपसेवाकरतविहाइ कछुइकविषेमो
गहिनजाइ ऐसेंजनमअजाइसिराइ विनुहरिभज(
न[illegible]नरकमेंजाइ वालापनगएज्वानीआवे विरध

नएमूरखपछितावै तीनौपनऐसेहीजाइ तातेंचेतिमन
जोमहुराइ विषैभोगसवतनमेंहोइ जोनकरैतौपसु
समहोइ तातेंभक्तिकरौसवकोइ जवलगकालनप
हुचेआइ हरिकीभक्तिकरौचितलाइ हरिव्यापकहैस
वसंसार ताहिभजौयोंमनहिविचार सिसुविसोर
विरधतनहोइ सदाएकरसआतमसोइ जानिऐसोत
नमोहतियागौ हरिचरनारविंदअनुरागौ माटीमेज्यौ
कंचनपरै त्योंहीआतमतनसंचरै कंचनतेंज्योमाटी
तजै त्योंतनमोहछाडिहरिभजै नरसेवातेंजोसुखहो
इ।छिनभंगरथिररहैनकोइ हरिकीभक्तिकरौचितुला
इ होइपरमसुखकमहूंनजाइ नीचऊंचहरिगनतन
होइ असुरहोइभावेंसुरहोइ जोहरिभजैपियारौसो
इ यहजियजानिभजौसवकोइ रामहीरामकहौदि
नरात नातरजनमअकारथजात सोवातनकीएकेवा
त सवतजिभजौजगतकौनाथ सवघटीयनऐसीम
नआई रहेसवेहरिपदचितलाइ हरिहरिनामसदाउ
चरैं विद्याओरनमनमेंधरैं नवसंउामरकासकुचाइ
कहोअसुरपतिसोंपुनिजाइ तोसुतकोंपगाइहमहारे
आपनपढैंअहओरविगारे रामनामनितरटिवौकरै रा
जनीतिनहिंमनमैंधरै तातैंकहौतुम्हेंहमआइ करि
वेहोइसुकराहुउपाइ हरिनकशिपतवसुतहिबुलाइ
कछुकपीतिकछुडरदिषाइ कहुरिमोदमांहवैठारि
कहीकहापढिविद्यासार मारवेदचारौकोजोइ छुहै

शास्त्रसारपुनिसोइ सबपुरानमांहिजोसार रामनाम
मैंपढ़ोविचार कह्योयाहिलैजाहुउचार सुमिरनमम
रिपुकौचितलाइ मेरोकोरनकछूनिहारो याकोपा
वकभीतरडारो जोकैसेंकरिविंनहिमरै औरोमैंबहुगज
मततरै पर्वततेंयादेहुगिराइ मरैजोनविधिमारोजा
इ नृपआग्यालियोकुंवरउगाइ कुंअररह्योहरिप
दचितुलाइ असुरनगिरितेंदियोगिराइ राखिलि
योतहांत्रिभुवनराइ पुनिगजमैमंतआगेंडारयो राम
नामतबकुंवरउचारयो गजदैदंतटूटिधरपरे देखिअ
सुरयहअचिरजउरै बहुरौंदीनेंनागधुकार जिनकी
ज्वालागिरिजरिजाइ हरिजीतहांहूंकरीसहाइ करैउपा
इसुविथाजाइ तबसबअसुररहेखिसियाइ कह्योअ
सुरपतिसोयोंजाइ जदिपिकटिनअतिकियेउपाइ म
रतनहिंयहकाहूभाइ हमतौबहुतभांतिपचिहारे
इनतौरामहौरामउचारे नृपकह्योमंत्रजंत्रकछुआहि
तौकौकौनबचावतुआइ सोतूमोकौंदेहुबताइ मंत्रजं
त्रमेरेहरिनाम घटघटमैंजाकोविश्राम जहांतहांसो
करतसहाइ तासोंतेरीकछुनबसाइ कह्योकहांसो
मोहिबताइ नातरतेरोज्योअबजाइ जोसबठौछिनहू
सोइ कह्योपहलादआहितूसोइ हरिनकरिपक्रोध
मनधार्यो जाइखंभकोमुष्टिकामारो प्रगटिनवर्षभभयो
दोफारि निकसेहरिनरहरिवपुधारि देखिअसुरच
कनहोगयो बहुरिगदालैसनमुखभयो हरितासौं

छियोपुछवनाइ नवसुरमनमेंमएउराहि संध्यासमेभयो नवआइ हरिजीनाओंपनस्योधाइ निजजंघनपरना-
हिपछास्यों नखननसाथनवउदाविदास्यो जैजैकारद-
सोंदिसभयो असुरप्राणनजिरिपुरगयो ब्रह्मादिकरहे सबआरगाइ ओधदेषिओउनिकटनजाइ वहुरोंब्रह्मा सुरनसमेत नरहरिजीकेजारनिकेत करिडंडोतनविनें उच्चारी तुमअनंतनशाक्रमवनवारी तुमहिकरतनित्त नविस्तार उतपतिथपिपुनिकरनसंघार गयोनओध-
फिरीपुनिहार महादेवपुनिविनेउचारी नमोनमोन्न
कनमेहारि भक्तिहेतुतुमअसुरसंघारी थ्यानरहरीअ वक्रोधनिवारौ क्रोधनगयोनवऔसेकह्यो छिमीपु लेकेसमीनभयो नोहूगयोनक्रोधविकार महादेव-
हूंफिरेनिहार वहुरिइंद्रअस्तुतिअनुसारी मयोअ-
सुरसुरभएसुरवारी है हेजनअवदेवमुरारी छमिये क्रोधसुरनसुखकारी पुनिलक्ष्मीपोंविनेसुनाई डरीदे षियहतूपनवाई महाराजयहतूपदुरावहु तूपचतु-
रभुजमोहिदिषावहु वतनकुवेरआदिनपुनिआर करीविनेंतिनहूंवहुभार नोहूक्रोधछिमांनहिंभयो नवसवमिलिपहिलादहिकह्यो तुम्हरेहेतलियोओ-
तार तुमअवजाइकरोमनुहार नवपहलादनिकटह रिआइ करिदंडोतपर्योगहिपाइ नवनरहरिजूता-
हिउठाइ देकैपालवोलियाभाइ वहुजे मनोरथने-

करीछिमा किये असुरसिंघार

सू.सा ६०

तेहोइ छांडिविलंबकरौंअबसोइ दीनानाथदयालमुरा
र ममहितनुमलीनौंअौतार असुरअधचहै मेराजान
मोहिसनाथकियोतुमनाथ भक्तितुम्हारीइछाकरै जैसें
असुरनवकवननतैं भक्तन हितनुमधारीदेह नरिहेगा
इगाइगुनएह जगप्रभुवतिप्रभुदेषीजोइ सपननललाछि
नभंगुरसोइ इंद्रादिकजानैंभैक्यो सोममपितामत्यु
कदेतयो साधसंगतिप्रभुमोकोंदीजै तिहिसंगतितु
मभक्तिकरीजै अतइकमेरीइछासोइ भक्तिअविक्षि
तुमारीहोइ अबमोपरयहकृपाकरी जोसवजीवनकों
उधरी जौकहुकर्मभोगजवकरिहैं तवएजीवसकलनिस्त
रिहैं ममकृतइनकेवदलेंलेहु इनकेकर्मसकलमुहिदेहु
मोकोंनर्कमांहिलैडारौ पैप्रभुजीइनकोंनिस्तारौ पुनि
कहौजीवदुखितसंसार उपजतबीनतवारंवार विना
कृपानिस्तारनहोइ करौकृपामैंमागतुसोइ प्रभुमेदे
खितुम्हैंसुखपावत पैसुरदेखिसकलउरपावत तातैंम
हाभयानकरूप अंतरध्यानकरौसुरभूप हरिकह्यौमो
हिविरदकीलाज करौमंतुतरलौंतुमराज राजलक्ष्मीम
दनहिहोइ कुलइक्कीसउधरैंसोइ जोममभक्तनमुख
मैंजाइ होइपवित्रताहिपरसाइ जाकुलमांहिभक्तिम
महोइ सप्तपुरुषलौंउधरैंसोइ पुनिप्रहिलादराजवैठा
यो सवअसुरनमिलिसीसनवायो नरहरिदेषिहरष
मनकीन्हो अभैदांनप्रहिलादहिदीन्हो तवब्रह्मावि

नतीअनुसारी महाराजनरसिंहमुरारी सकलसुरनकौं
काराजसख्यो अंतरध्यानरूपअवकैरैं नवनरहरिभए
अंतरध्यांन राजासौंसुकनक्ह्यौवखान जोयहलीला
सुनैसुनावैं सूरदासहरिभक्तिसुपावैं २८१ ॥रागका
न्हरा॥ जोमेरेभक्तनदुखदाई सोमेरेरहिलोकवसोजिनि
त्रिभुवनछांडिअंतकहूजाई शिवविरंचिनारदमुनिदे
खतनिनहुंनमोकौंसुरतिदिवाई वालिकअवलअज्ञान
रहैवहदिनदिनदेतत्रासअधिकाई षंभफारिगलगा
जिसुखवलक्रोधमानछविवरनिनजाई नेनअरुन
विकालदसनअतिनखसोंह्रदैविदार्योंआई करजो
रैप्रहलादजोविनैवैविनैसुनोअसरनसरनाई अपने
रोसनिवारितातममअपराधीसुपरमगतिपाई दीनद
यालकृपानिधिनरहरिअपनौंजानिलयौउरलाई सूर
दासप्रभुपूरनठाकुरगह्यौसकलमेंहूंनियराई २८२
॥रागमारू॥ ऐसीकोसकै करिविनातुममुरारी कहत
प्रहलादकेधारिनरसिंहवपुनिकसिआएतुरतषंभफारी
हिरणकशिपनिरखिचकतसोंह्वैरह्यौवहुरिलैगदाकरअ
सुरधायौ हरिगदायुद्धतासौंभलीविधिकियौवहुरिसं
ध्यासमैंहोइआयौ गह्यौअसुरधाइपुनिनाइनिजजंघ
परनखनिसौंउदरउरौविदारी देखियहसुरनवरषाकरी
पुहपकीसिद्धगंधर्वजैधुनिउचारी वहुरिपहिलादव
हुभाइविनतीकरीताहिदेराजवैकुंठधाएभक्तकेहेत

हरिधरोनरसिंघवपु सूरजनजांनियहसरनआयो २८३
॥रागधनासिरी॥ जवलगहोवैकुंठनजैहौं सुनिप्रहला
दप्रतिज्ञामेरी तौलगतोसिरछत्रनदैहौं मनवचकर
मजानिजिपअपनेंजहांजहांजनतहांतहांजैहौं नि
गुनसगुनहोइसवदेषौंतोसौंभगतकहूंनाहिपैहौं
मोदेषतममदासदुषितभयुयहअलंकडुकहांगने
हौं हृदैकठोरकुलिससैंमेरीअवनाहिदीनदयालकहै
हौं गहितनहरनकशिपकौंकुचरोंफारिउदरनवउर
उधरौहौं यहमनमनैंकहतसूरजप्रभुयाकूनकौंप्रन
पुरनचषैहौं २८४ ॥श्रीभगवानशिवसहाइवरनन
॥रागविलावल॥ हरिहरिहरिहरिसुमिरनकरौं हरिचर
नारविंदउरधरौं हरिज्योंशिवकीकरीसहाइ कहौंसु
कथासुनौंचितलाइ एकसमैसुरअसुरप्रचार लरे
नईअसुरनआहार तिनब्रह्माकेहितनपकानौं बुला
प्रगटदरसतिनदीन्हों तवब्रह्मासौंकहौसिरनाइ जै
हमरीहोवैकिहिभाइ ब्रह्मानवयहवचनउचारौ
मैमायामैंकोटसंवारौ तामैंवैठिअसुरनजेकरौं तुम
उनकेमारैंनहिमरौं असुरनयहमोंकोसमुझाई तव
मैंदीन्होकोटवनाइ लोहनेरमधिरूपालायौ ताके
ऊपरकनकलगायौ जहांलेजाइतहांवहजाइवै ह
रवरनामसुकोटवनावैं गढकेवलअसुरनजेपाइ
लयौसुरनसौंअमननछिनाई सुरनकह्यौशिवसौं

हिरनाइ शिवतवतिनकीकरीसहाइ पैशिवजातीमारौंध
इ अमृतप्याइतिहिलेहिंजिवाइ तवशिवकीनौहरिकौ
ध्यान प्रगटभएतहांश्रीभगवान शिवहरिसौंसवक
थासुनाई हरिकह्यौअवमैंकरौंसहाई सुंदररूऊ
रूपहरिकीनौं वछरागकरिवुह्मासंगलीनौं अमृतकुंड
नेपैठेधाइ कह्यौअसुरमारयौयाभाइ एकनकह्यौया
हिमतिमारौ याकौसुंदररूपनिहारौ किनकअमृतन
पीवैयाभाई हरितिनकीमतियौंभरमाई हरिअमृत
लेगएअकास असुरदेखिपहभएउदास कह्योयहा
हरनाछसमारयौ यासौंहमरौकछुनवसाइ यहकहि
असुररहेबिसिआइ शिवतवकीनौजुद्धअपार पै
असुरननहिंमानीहार वानएकहरिशिवकौदियौ ता
सौंसवअसुरनछैकियौ याविधिहरिजीकरीसहाइ
सोमैंतुमकौदईसुनाइ सुकज्यौंनृपसौंकहीसमुझाई
सूरदासजनत्यौंहीगाई २८५ ॥नारदजन्मकथा॥राग
विलावल॥ हरिहरिहरिहरीसुमिरनकरौं हरिचरणार
विंदउरधरौं हरिभजिजैसैंनारदभयौ नारदव्यासदेव
सौंकह्यौं कह्यौसुकथासुनौंचितधार नीचऊंचहरिके
इकसार गंधृपवुह्मासभामझार हस्यौअपछराओरनि
हार कह्यौवुह्मादासीसुतहोहि सकुचनकरीदेखितेंमो
हि भयौदासीसुतव्राह्मनगेह तुरतछांडिकैगंधृपदेह
व्राह्मनगहहरिकेजनआए दासीदाससेवहितलाए
हरिजनहरिजनचरचाजोकरैं दासीसुतहिरदैसोधरैं

सू.सा.
११२

श्री

सुनतसुनतउपज्योवैराग कह्योजांवमैमातात्याग ताकी
माताभाईकोरें सोमरिगईसांपकेमारें दासीसुतवनमें
नजाइ करीभक्तिहरिपदचितलाइ बहुस्पुत्रमनतजि
सुरभयो नारदयोंअपनेमुखकह्यौ हरिकीभक्तिकरैजो
कोइ सूरनीचतेंऊंचसुहोइ २८६ ॥अथअष्टमअसकंधभागवति॥ रागबिलावल॥ हरिहरिहरिहरिसुमिरनकरौं ह
रिचरणारविंदउरधरौं हरिचरननसुकजूसिरनाइ राजासों
बोलेयाभाइ कहौंहरिकथासुनोचितलाइ सूरदास
हरिकेगुनगाइ २८७ ॥गजमोचनअवतार॥ गजमोचनज्यौं
भयोअवतार कहौंसुनोंसोअबचितधार गंध्रपएकनदी
मेंजाइ देवलऋषिकौंपकरयौपाइ देवलकह्योग्राहतूहोहि
कह्योगंध्रपदयाकरिमोहि नवगजराइकोपतनगहिहै हरि
जीताकोंआइछुटइहै केसपरसदेवननधरै मेरोकह्यो
नहीयहटरै राजाइंद्रमनकियोध्यान आएअगस्त
नहींतिनजान दियोश्रापगजइंद्रतूहोहि कह्योनृप
दयाकरौऋषिमोहि कह्योग्राहजानितुहिधरिहै तूना
रायनसुमिरनकरिहैं याहीविधितेरीगतिहोहि भयो
त्रकूटनृपतगजसोइ कालपाइग्राहगजगह्यो गजबल
करिकरिकैथकिरह्यो सुतपतनीहूंबलकरिरहे छूट्यो
नहीग्राहवेगहैं तेसबभूखेदुखितभए तवगजहरि
कीसरणहिआयो सूरदासप्रभुताहिछुडायो २८८
॥रागधनासिरी॥ माधौगजग्राहतेंछुडायो भक्तनकौंम
नवचनअगोचरप्रगटस्वरूपदिखायो शिवविरंचिसब
देवनटारेबहुतदीनदुखपायो विनवदलेउपगार

करे कौ काहू कारन आयौ । चितं तहा । चितमें करुनामें चक्र लि
ये कर धायौ अति करुना आकार कृपानिधि गरुड़ हू कौं
बिसरायौ सुनि पद सुज सकु निजजन गावन कहूं न गहरु
लगायौ ना जानौ जु सूर इहि औसर कौन दुखहि बिसरायौ
२९९ ॥ राग बिलावल ॥ हरि कर चक्र धरे धरि धावत गरुड़
समेत सकल सेनापति पाछें लागे आवत चलि नहिं सक
त गरुड़ मन उरपत बुधि वल वलहि बढ़ावत मनहु पव
न वस पत्र पुरातन अघनो चारन चलावत कोजानै प्रभु
कहां चले हैं काहू कछु न जनावत अति व्याकुल नि दे
वि देवगन सो । चि सकल दुख पावत गज हित धावन ज
न सुकरावन वेद विमल जस गावत सूर समुझि समुझाव
अनाथ न रहि विधि नाथ छुड़ावत ३०० ॥ राग सारंग ॥
धाये न मेटन पाए आये हरि आतुर कै जब जान्यौ गज
ग्राह लिये जात जल में जादौं पति जदुनाथ छांडि खगपति
साथ जन जान्यौ विहवल नाहि छांडौं पल में नीरहू तें न्या
रो कीनौ चक्र मक्र सीस छीन्यौ देवकी के प्यारे लाल ऐ
चि लीनौं थल में कहै जन सूरदास देखि नैनानि री व्या
स कृपा कीनी गोपीनाथ आरू गए पल में ३०१ ॥ राग केदा
र ॥ अब हौं सब दिस हेरि रह्यौ रावन कोऊ नाहि कृपानि
धि अति दल ग्राह गह्यौ सुर नर सब स्वारथ के गाहक कत
श्रम आनि करै औगुन उदित करि गुनें न सात पुनि रिपु क
प धरै इतनी वात सुनत करुनामै चक्र गहें कर धाए ह
ति गज सबु सूर के स्वामी तन छिन सुख उपजाए ३०२

कूर्मअवतारवरनन ॥ राग बिलावल ॥ जैसें भयो कूर्मअवतार
कहौं सुनौं सो अवचित धार नरहरि हरनकसिप जब मारयौ
प्रहलाद राज बैठारयौं ताके सुत बैरोचन भयौं बलि
सुरपति कौं बहु दुख दयौ तब सुरपति हरिसरनै गयौ ह
रि जू अपनो बिरद संभारयौ सूरजप्रभू कूरम तन धारयौ
३०३ ॥ राग मारू ॥ ऐसी कौ सकै करि बिना तुम मुरारी सुर
न के कहत ही धारि कूरम तनहि मंदराचल लयौ पीठि धारी
सिंधु मथि सुरासुर अमृत बाहिर कियौ बलि असुर लै चल्यौ
सो छिनाई मोहनी रूप तुम दरस ताकौं दयौ आइ तब सबन
बिनती सुनाई अमृत यह बांटि करि देहु तुम सबन कौं
कृपा करि रारि झगरौ मिटाई सुरासुर बांटि करि सुरा असु
रन दयौ सुरन कौं अमृत दीनौं पिवाई राहु सिर केतु ध
र भयौ यह तबहिं तें सूर ससि दयौ ताकौं बताई च
क्र सौं काटि सिर कियौ द्वै टूक तुम असुर हू देवगति
तुरत पाई भक्तबछल कृपाकरन असरन सरन पति
न उधरन कह्यौ बेद गाई चारि हू जुग करी कृपा पर
कार जहिं सूर हू पर करौ तिहि सुभाई ३०४ ॥ राग मा
रू ॥ सुरन हित हरि कछिप रूप धारयौ मथन करि
जलद अंबुदनि कारयौ चतुरमुख त्रिदसपति बि
नै हरि सौं करी बल असुर सौं सरन देखि आयौ दीन
बंधु कृपाकरन असरन सरन मंत्र यह तिन्हें निज मुख
सुनायौ बासुकी नेति करि मंदराचल रई कमठ में

आपनी पारि धारी असुरसौं हित करि करी सागर मथ
न तहांते अमृत उपजि निकारी रतन चौदह तहांते व
हु रिप्रगट करि असुरनीं सुरात मैं अमृत प्याऊं जाति
है तब असुर महा बलवंत नौं मरे नहि देव नायौं जि
याऊं इंद्र मिलि सुरन वल पास आए बहुरि तिन कहे
कहौ किहि काज आए आसि तव सिंधु के मथन नेव
चन जौ सो सकल ताहि कहि के सुनाए वलि कहौ
अब विलंब पत्त नहि कीजिये मंदिराचल अचल
न्पाव धारई दोउ एक मंत्र कै जाइ पहुचे तहां कह्यो
अवला जिये यह उचाई मंदिराचल उपार तन्मद्यो
बहुत श्रम बहुरि ले चलन कौं जब उठायौ सुर अस
र बहुत ता भार तें मरि गए दुहु मनौ गर्भ हरि यौन सायौ
न बदुहुन ध्यान भगवान कौं धरि कहौ विनतन्हारी
कृपा गिरि जाइ यामकरसौं पकरि गरुड पररा वि
हरि क्षीर के जल दनट धस्यौ जाई कह्यो भगवान अ
ब वासुकि न्याइ जाइ तिन वासुकि सो सुनायौ मा
नि भगवान आज्ञा सुआयौ तहां ने ति करि अच
ल कौं सिंधु नायौ मंदिराचल समुद्र मांहि बूड न
लग्यौ तब सबन बहुरि अस्तुति सुनाई कूर्म कौ
रूप धरि धरि अचल पीठ धरि सुर असुर सबन मन
भई विधाई पोच कुंपित अमुर दोरिकैं मुख गह्यौ पु
रन तब पूछ कौ ओर लीनी मथत भए छीन तब

बहुरि विनती करी श्री महाराज निज शक्ति दीनी भए ह
लाहल प्रगट पृथम ही मथत जब लहु कौं दए तिन कंठ
धारे चंद्रमा बहुरि जब मथत आयो निकसि सो कर
रि कृपा दीनो पुरारि कामधेनु हि बहुरि सप्त रिषि कौं द
ई लई उनि बहुत मन हर्ष कीनें अपछरा पार जाति बंध
नृप अस्वराज सेत ए पांच सुरपति हि दीनें संख अरु कौ
स्तुभमनि लई आप ही बहुरि श्री लक्ष्मी दई दिखाई प
रम सुंदरि मनोहर अति है दूसरी कमल उर माल करि लियें
आई सकल भूषन मनिनके सकल अंग में अरु वसन
अरु न सुंदर सुहाए देखि सुर असुर सब दौरि लागे गह
न कह्यौ मैं वर वरौं आप भाए मोहि जो चहै मैं ताहि चाहौं
नहीं असुर कौ राज थिर ताहि देखौं तपसियन देखि क
ह्यौ क्रोध इनमें बहुत ग्यानियन मांहि आचार देखौं सु
रन कौं देखि विधु कौं कह्यौ यह बुढायौ चिरंजीविन कौं दे
खि कह्यौ निडर ए लोक तिहुं मांहि कोऊ चित न आयौ ब
हुरि भगवान कौं देखि पेम सुंदरि कहो इन मांहि सब है भ
लाई पै नर स्याइन्हें है कछु वस्तु की अतन यै देखि मो
कों लुभाई कबहू किये न किहूं के न एरी नहीं कबहूं कि
ये वैर एरी किजा ही औरगुन चाहियें सो सकल है इन्हें
उरि दई माल गहि गरे मांही हरि कह्यौ मम हृदे मांहि र
ह तूं सदा सुरन मिलि दियो दुंदुभि बजाई धन्य धनि क
ह्यौ पुनि लक्ष्मी सों सबन नारिस्क गंधर्प जे धुनि सुनाई
बहुरि धनवंतर आयो समुद्र तें निकसि सुरा अरु अम

कौं
तनिजसंगल्यायौं भयौ आनंद सुर असुर देषि कैं असुर
नव अमृत न कौं विललाइ छिनायौं सुरन भगवान सौं आनि
विनती करी असुर सब अमृत लै गए छिनाई कह्यौ
भगवान चिंता न कछु मन धरौ मैं करौं अब तुम्हरी सहाई
परसपर असुर सब युद्ध लागे करन होइ बलवंत लै गए
छिनाई मोहनी रूप धरि स्याम आए तहां देषि सुर
असुर सब ही लुभाई आइ असुरन कह्यौं लेहु यह अ
मृत तुम सबन कौं बांटि मेटौ लराई हंसि कह्यौ नहीं
हम तुमैं कछु मित्रता विना विस्वास बांध्यौ न जाही
कह्यौ तुम कौं टपर हमैं विस्वास है देहु तुम बांटि ज्यौं
धर्म आही कह्यौ जो करौ सो हमैं परिवानु है असुर
सुर पांति करि तब बिठाए असुरनि तन चितैं मुसक्याइ
मोहे सकल सुरन कौं अमृत दीनो पिवाइ राहु ससि सू
र कै बीच मैं बैठि कै मोहनी सौं अमृत मांगि लीनौं सू
र ससि कह्यौ यह असुर तब चक्र हरि जी लै सुदरसन सु दू
क कीनौं राहु सिर केतु धर सौं भयौ तब ही तें सूर ससि कौं
सदा दुखदाई करन भगवान रस्या ससि अरु सूर कौ
होतु है तब सुदरसन सुहाई तब अंतर ध्यान करि मोहनी
रूप कौं गए असवार है तहां आए असुर चक्रत भए
कहां गई नारि वह सुर असुर दोऊ हि न युद्ध धाए सुरन
कौ जीति भई असुर मारे बहुत जहां तहां गए तजि सब
पराई सूर प्रभु जिहि कौं कृपा जाने सोई बिनु कृपा जाइ

मैं रउदिमरथाई ३०५ ॥ मोहनीरूपवरनन ॥ रागमारू ॥
हरिकृपाकरैजि।हिजानैसोई वादअभिमानजिनिकरोको
ई पाइसुधिमोहनीकोसदाशिवचलेजाइ भगवानसौं
कहिसुनाई असुरअजितइंदरीदेषिमोहितभए रूपसो
मोहिदीजैदिषाई हरिकह्योव्रह्मव्यापकनिरंकारसोन
गुननुमसगुनकौंकहाकरिहो पुनिकह्योवीनतीमानि
लीजैप्रभूउमादेष्योचहतिकृपाकरिहो हंसिकह्योतुम्हें
दिषिराइहौंरूपवहकरौविश्रामइककौरजाई वेठिए
कांनजोहनलग्योपंथ।शिवमोहनीरूपकबदे[illegible]दिषा
ई कैअंतरध्यानहरिमोहनीरूपधरिजाइवनमांहि
दीनीदिषाई सूरसषिकिधौंचपलापरमसुंदरीअंगरू
पननछविकहिनजाई हावअरुभावकरिचलतिच
तिवतिजर्वैकोउअैसोजुमोहितनहोई उमांकौछांडि
अरुडारिमृगचर्मकौंजाइकैंनिकटफैलइजोई लइकौं
देषिकैंमोहनीलाजकरिलियेअंचललइनवअधिक
मोह्यो उमांहूदेषिपुनिताहिमोहितभई तासममरू
पअपनोंनजोह्यो लइनजिधाईपुनिजाइताकौंगह्यो
सोचलीआपकौंनवछुडाई लइकौंवीजैषसिकैपरयो
धानपरमोहनीरूप[illegible]लियौदुराई देषिकैउमांकौंल
इलजितभएकह्योमैकौंनयहकामकीनों इंदराजितक
हावनतौआपुकौंसमुझिमनमांहिफेरह्योघानो
चतुरभुजरूपधरिआइदरसनदयौकह्योशिवसोच

प्रभु

दीजैवहाई समझुम्हारैनहींदूसरोजगतमैंकह्योतुम
रूपनवरियोदिखाई नारिकेरूपकोदेखिमोहेनजो
सोनहींलोकतिहुंमाहिजायो सूरस्वामीसरनग(
हिंजुमायासदाकोजगतजोनकपिज्योंनचायो ३०
६ ॥शंभुआनशंभुवधरागमारू॥ असुरहैहुतेवलवं(
तभारी शंभुआनशंभुसुरजीतहारी भगवतीजवउन्हे
दरीदिखाई देखिसुंदरहोऊरहेलुभाई भगवतीकह्यो
तिनकोंसुनाई युद्धजितिसमुहिवैरआई तवदुहुनयुद्ध
कीनोंवनाई लरिमरेतुरतहीदोऊभाई देखिकेनारिसो
हिनजुहोवे आपनोमूलयाविधिसुखोवे सुकनृपति
पासजिहिविधिसुनाई सूरजनहूंतिहिभांतिगाई ३०
७ ॥वावनअवतारवरनरागविलावल॥ जैसेंभयोवाव
नअवतार कहौंसुनौसोअवचितधार हरिजवअंमृत
सुरनपिवायो तववलिअसुरवहुतदुखपायो सुक्र
ताहिपुनियज्ञकरायो सूरजराजलोकपायो तिन्हान
देवग्यजवलिये तवदुखभयोआदितकेहिये हरिहित
उनपुनिवहुतप्रकास्यो सूरस्यामवावनवपुधार्‌यो
३०८ ॥रागविलावल॥ धरिठाढेहैंद्विजवावन चारौवेद
पढमुखआगरअतिसुगंधें सुरगावनवारिनसोंवा(
लिपूछनलागेरहांविप्रकहांआवन चखिचितचंदन
नीलकलेवरवरसतवंदनसावन चरनधोइचरनोदि
कलीनों कह्योमांगिमनभावन तीनिपेडवसुधा

सू.सा.
७६
पी०
हौं चाहौं परन कुटी कौं छावन इनमैं कहा विप्र भ(
मांग्यो देव रतन अन गावन सूरदास प्रभु नवल छ(
वीलि धर्यो विलि पावन ३०८ ॥रागसोरठा॥ आयौं
पंडित एक तिहारे चार्यो वेद पढ़ै मुख आगर है बावन
वपु धारे अपद दुपद पसु भाषा बूझैं अवगति अलप(
अहारी नगर सकल नरनारी मोहे सूरज जोति विसा
री सुनि आनंद चले बलि राजा आहुति यज्ञ विसारी
देखि सरूप सकल हम्मा कृत कीनी चरन जुहारी भी
तर चले जहां जग वेदी बहुत करी मनुहारी जो मांगो(
सो देव तुरत ही हीरा रतन भंडारी रहु रहु राजा यौं नहिं
कहियै दूषन लागै भारी हूं ठ पैंड दै वसुधा हम कौं न
हार चौंध मैं सारी सुक्र कह्यो सुनियै बलि राजा भू(
मि कौ दान निवारी ए तौ विप्र होंवै राजा आए छल
न मुरारी कहु धौं शुक्र कहा अब कीजै आपुन भए भि
षारी जब ही उदक दियौ बलि राजा बावन देह पसारी
जै जै कार भयौ भू नापत तीनि पैंड भई सारी अर्ध पैं
चलि
उ दै वसुधा राजा नाना रिस तै हारी अब सत क्यौं हौरौं(
जगस्वामी मांग्यौ देह हमारी सूरदास बलि सर्वस दी(
नौ पायौ राज पतारी ३१० ॥मत्स औतार वरनन॥
रागमारू॥ भक्तन हित हरि मत्स रूप धारौं चतुर मुष क
ह्यौ संख असुर श्रुत लैं गयौ सुन तुरत कह्यौ पर लैं दिषा
वौ भक्त वछल कृपा करन असरन सरन मत्स कौ त(
सदा हरि भक्त संकट निवार्यौ

पतनवधारिआयो स्नानकरिअंजुलजलजवैंन्रपलयों
मत्सकोंदेखिकह्योडारिदीजे मत्सकहीमेंगहीआइ
तुमरीसरनकरिक्रपामोहिअवराखिलीजे • न्रप
सुनतवचनचकृतप्रथमह्रेरह्योंकह्योमछवचन
किहिभांतिभाख्यो पुनिकमंडलधर्योतहांसोवढिग
योकुंभधरिवहुरिपुनिमाटराखो पुनिधर्योंबाउता
लावमेंपुनिधर्योनदीमेंवहुरितिहिडारिदीनों वहु
रिजववढिगयोसिंधतवलैगयोतहांहरिरूपउनि
चीनिलीनों कह्योकरिवीनतीतूमतुमअनंत
होमत्सकोरूपकिहिकाजकीनो वेदविधिचहत
तुमप्रलैयदेखनकहततुमकुंहेतऔतरलीनों
कवहुंवाराहनरसिंहकवहूंभयोकवहूंमेंकछकोरूप
लीनों कहूंभयोरामवसुदेवसुतकहूंभयोऔरवह
रूपहितमकीनों सातएंद्योसदिखराइहोंप्रलेतु
हिसप्तऋषिनावमेंवैठिआवैं तोहिवेतारिहैंनावमें
हाथगहिवहुरिहमग्यानतुहिकहिसुनावें सर्पेइ
कआइहेंवहुरितुम्हारेनिकटनाहिसोंनावममश्रंग
वांधो इतोकहिध्यानअंतरभएमत्सप्रभुन्रपतित
वआपनोंकर्मसाधो सातएंद्योसआयोंनिकटज
लदजवन्रपकह्योअवकहांनावपावें आइगइनाव
तवऋषिनतासोंकह्योआवहमन्रपतितुमकोंवचा
वें पुनिकहोमत्सहरिअवकहांपाइयेंऋषिनकहैं

सा. ८८
८ सूरसा

ध्यानचित्तमांहि धारो मत्सऔर सर्पनाठोर परमदम
ए बांधि नृपनावर्यों कहि उचारौं ज्यों महाराज या
जलदनें पारकियो त्यौं जलदनें पारकरौ स्वामी यहै
ममताहमें सदां लागी रहति मोहमद क्रोध जुतमं
दगामी करम सुभाहि तकरतु होतु है दुखबहुतनकू
नरमूढनाहिं संभारें करनकारनमहराज है आपुही
ध्यान प्रभु कौन मन मांहि धारें वितुम्हारी कृपा
गति नही नरनकौं जानि मुहि आपनौं कृपाकीजे
जनम और मरनमें सदां ही दुखरहतु देहु मुहि ग्या
न जो सदां जीजे मत्स भगवानक ह्यौ ग्यानपुनि नृ
पति सौं भयौ सुविवान सब जगत जानौं लेह नृ
पग्यान कह्यौ आंबिअवमीचतू मत्स जो कहौं
सो नृपतिमान्यों आंबिकौ खोलि जब नृपति देख्यौ
बहुरि कह्यौ हरि प्रलैमाया दिखाई कह्यौ जो ग्यान
भगवान सो आनि उर नृपति निजु आउ यहि विधि व
नाई बहुरि संख असुर कौं मारि वेद आनि दिए
चतुरमुख वेद अस्तुति सुनाई सूरके प्रभू कीनि त
लीला नई सबै कहि कौन यह कछु जगाई ३११ ॥रा

गमारू॥ ऐसो कोसकि करि विना तुम तारी कहै
न है व्रसकें वेद उद्धरन हित गए पाताल तन मत्स धारी
संख असुर मारिकें वेद उधारि कें आप दए चतुरमुख
कौ निवारी सुरन आकास ने पुहपवरषा करी सू

रसुनिसुजससषीरनिउचारी ३१२ ॥ नवमस्कंधराग
बिलावल ॥ हरिहरिहरिहरि सुमिरणकरौं हरिचरणा
रविंदउरधरौं हरिचरणनसुकजूसिरनाइ राजासौं
बोलेयाभाइ कहौंहरिकथासुनोचितुल्याइ सूरना
रोहरिकेगुणगाइ ३१३ ॥ वैराग्यकथाराजापूरण ॥ रागभै
रौं ॥ सुकजूकह्योसुनौंहोराव नारीनागिनिएकसुभा
व नागिनिकैकाटेंविषहोइ नारीचितवतनरहैभोइ
नारीसोंनरप्रीतिलगावैं पैनारीतिहिमनहिनल्यावैं
नारीसंगप्रीतिजोकरैं नारीताहितुरतपरिहरैं नरपति
एकपिरूरामयौ नारीसंगहेतचितनदयौ तासौंउर्वसिक
टुवचनसुनाए पैताकेमनकछुनआये ३ बहुरोतिहि
उपजौवैराग गयौउर्वसीकौंसोत्याग हरिकीकृपा
करनगतिपाई कहौंसुकथासुनौचितलाई एकबार
महाप्रलैभयौ नारायणआपुहिरहिगयौ नाराय
नजलमैरहैसोइ जागिकह्योबहुरौंजगहोइ नाभिक
मलतैंब्रह्माभयौ तिनमनतैंमरीचऊठयौ पुनिम
रीचकश्यपउपजायो कश्यपतरयपुनिसूरजजायौ
सूरजकैवैवस्वतभयौ सुनहिनसौवसिष्ठपैगयौ
ताकीनारिसुनाहिनभाख्यौ मुनिवशिष्ठअपनेमन
राख्यौं ऋषिनृपसोंजगविधिकरवाई आलिसुताता
केगृहआई नृपकहौपुत्रहेतजगकियौ पुत्रीभईसु
अचाजभयौ ऋषिकह्योरानीपुत्रीचही मेरेमनमैं

सोईरही ताकैंपुत्रीउपजीआइ करिहोंपुत्रयाहिहरिरा
इ हरिताषुत्रीतेंसुतकर्यौं नामसुदम्नताहिकौधर्यौं
एकद्यौसआषेटकगयौं जाइअंबिकाबनत्रयभयौं सु
धकेआश्रममेंसोआयौ तासौंगंधर्पब्याहकरायौं बहु
रौंपुत्रएकतिनजायौं नामपुरूरवाहिधरायौं पुनिसु
दमनवसिष्ठसोंकह्यौं अंबावनमैंत्रयकैगयौं ।कबि
।शिवसोंबहुबिनतीकरी तबशिवयहबानीउचरी ए
कमांसयहह्वैहैंनार ।दुतियमासपुरुषआकार तबसु
दमनअपनेग्रहआयौं राजसमाजमांहिसुषपायौं
तिनपुत्रीइकऔरउपाई दछिनराजसुकरनपठाई दस
सुततांकेउपजेऔर भयोइक्ष्वाकसबनसिरमौर सूर
जबंशीताकहिबाए रामचंद्रताहीकुलआए सोम
बंशपूरातेंभयौं सकलदेशन्रपताकोंदयौ तासबंश
लियरूपओतार असुरमारिकियैसुरउद्धार कहिहैं
कथासुकरिबिस्तार पूराकथासुनौंचितधार पूरागेह
उरवसीआई मित्रवरननें श्रापहिपाई न्रपतिदेषिति
हिमोहितभयौं तिनयहबचनन्रपतिसौंकह्यौ ।बिनुर
तिकालनगिनताहिहोबहु आतममेंरनकौंमानिबोब
रु तबलगमैंतुम्हरोसंगकरौं बचनभंगभएतेंपरहरौं
न्रपतिकह्यौंतुमकहसुकरिहौं तुम्हरीआग्यामेंअनु
सरिहौं तासौंमिलिन्रपबहुसुखमांनें षटसुततासौं
उतपानें सुरपुरतेंगंधर्पनबआए उरवसीसोंएबचनसुं
नाए

अवहमरंइलोककोंचलौ तुमविनसुरपुरलागतनभलौ
नवउरवसीकहीयाभाइ वलकरिसकौंनहीलैजाइ
ममचलिवेकौंयहैउपाव छलकरिमेंढननिसलैजाइ
व गंधूपमेंढननिसलैंधाए सोवतन्रपउरवसीजगा
ए ममभेंढनकौंलैगयोकोई देषौनापुरुषहिनुमजो
ई अरधनिसान्रपनांगोधायो पेंमेंढनकौंकहूंनपा
यौ इतउतदेषिन्रपतिजवआयो तवउरवसीयहवच
नसुनायौ राजावचनतुम्हारोटरौ तातेमेंतुमकौंपर
हरौ यहकहिकेंसुचलीमहराइ जैसेंतडितअकासेजा
इ ताकेविरहन्रपतिवहुतयो नगिनपगनतेंपाछें
धयौ भ्रमतभ्रमतन्रपवहुश्रमपायौ कुरुक्षेत्र
रमेंआयौ तहांउरवसीसषिनसमेत आइगईअ
न्हानकेहेत पेंउनकौंकोऊदेषौनांहि उनकौंसकल
लोकदरसाइ उरवसीसौंतिलोनमाझह्यो कोनपुरुष
तुमभूलोलह्यौं ताकेदेषनकौमुहिचाहि कह्योपुरुष
वहठाढोआहि न्रपकौदेषिसुविस्मैभई कह्यौविर
हतेंन्रपसुधिगई वहुतदुखितहैतेरेनेह एकवार
यादरसनदेह जिनमायाआवरषनकरी तववहदष
न्रपतकीयरी राजानिरषिप्रफुल्लितभयौं मानौंम
तुकवहुरिजियलह्यौं उरवसीनिकटन्रपतिचलिआ
यो कारविनतीयहवचनसुनायौ तैंमोकौंकाहेविस
रायौ मेंतुमविनुअतिहीदुखपायौ तुमविनुनांद

भूपनहिंआवैं पलपलजुगसममोहिबिहावैं मेरेगृह
कृपाकरिचलौ वाहाविधिमोसोंहिलिमिलौं कह्योहि
नहमेंकामसोंआहि विनाकामहमरेंनहिंचाहि हमसौं
सहसवरसहिनधरें हमतिहिंछनकमांहिपरहरैं बि
नुअपराधपुरुषहममारें मायामोहनमनमेंधारें
हमैंकहीनैनेतोकिनकोई चाहिकरनकैंहमसोंई नृप
पुनिविनतीवहुविधिकरी तवउरवसीवानीउच्चरी
वरषसप्तवीतेमेंऐहौं एकरातितोकोंसुषदैहौं वरष
सप्तवीतेंसोआई नृपतासोंमिलिरैनिविताई प्रात
होतचलिवेकोंचह्यौ तवराजातासोंयोंकह्यौ तूमो
कौंछांडिकिंहिजाति मोकोंतोविनुनाहिंनविहाति
जवयाभांतिनृपतिवहुकह्यौ तवउरवसीयहउतरद
यो यहतोहोनहारिहिंनांहि सुरपुरछांडिरहोंभूमां
हि जोतुममेरीइछाधरौ गंधर्वनकेहितनपकरौं
तपकीनैतेदेहैंआग तासेतीतुमकीजोजाग जगकि
येगंधर्वलोकवसिधैहो तहांआइतुममोकोंपैहो नृ
पजगकरनालोकसिधाए मिलिउरवसीवहुतसुषपा
ए जवयाविधिवहुकालवितायौं तववैरागनृपति
मनआयौ वहुतकालभोगमेंकियौ पैसंतोषनआ
योहियौ श्रीनारायनकोंविसरायौ विषैहेतसव
जनमगमायौ याविधिजवविरक्तनृपभयौ छांडि
उरवसीवनकोंगयो वनमेंजाइतपस्याकरी विषै
वासनासवपरिहरी हरिपदसोंनृपध्याननलगायौं

त्रिष्यानन कों मोह भुलायो हरि आपकृ जगमें सवजांन
हरि प्रसाद पायो निर्वान तातें नर त्रिय संगति तजे श्रीनाराय
न कौं नित भजे सुक जैसें नृपकों समुझायो सूरदास त्योंही
कहि गायौ ॥२१५॥ ॥चिमन ऋषि कथा वरनन राग भैरों॥ सुक
कह्यौ सुनौ हो राव जैसो है हरिभक्ति प्रभाव जग सुख याइ
मुकति लहै सोइ हरिकों भजन करै जो कोइ ॥चिवन ऋषी
श्वर बहु तप कियो तासम औरन ही जग वियो मारी ताकों
लयो छिपाई तातें ऋषि नहिं देहि दिषाई ता आश्रम
जनात नृप गयो तहां जाइकै डेरा दयो छांडि तहीं सवरा
ज समाज राजा गयो अषेट के काज नृपकन्या तहं खेल
न गई ऋषि दृग चमकत देषत भई पै तिन ऋषि दृग जा
ने नांहि षेलत सूल दये तामांहि रुधिर धार ऋषि आषि
न ढरी नृपकन्या सों देषन उरी सूल वियास बलोगन
भई राजा कह्यौ कहा भयो दई तहां के वासी नृपति बुला
इ पूछौ न वतिन कह्यौ बुझाइ चिवन जासम ऋषि है इहां
राइ कैरौ वीन तीउन सौं जाइ नृप षोजत ऋषि आश्र
म आयौं ऋषि दृग देषन बहुत डुर्यौं कह्यो कियो किन
ऐसो काज कंन्या कह्यौ सुनौ महाराज मोतें बिन जा
नें यह भई ऋषि के दृगन सूल मैं दई नरपति मन हाम
न पछितायो ऋषि सों पुनि यह वचन सुनायौ महा
राज तुम तौ हौ साध मम कंन्या तें भयो अपराध याकं
न्याकौं तुम प्रभु वरौं कंटक सूल कृपा करि हरौ सूल
नि कहि नीकौ जब भयो नृप कंन्या दे गृह कौं गयो

ऋ:सा.
१६८०

ऋषिसमाधिहरिचरनलगाई कंन्याऋषिचरननलौंलाई
सुरपतितारूपलुभायौ कुहरिकुंवेरतहांचलिआयौ
पेतिंहिदिसउनिदेख्यौनांहि गए।खिस्याइदुखमनमांहि
कौदहवरसभएयाभाइ तवरिषिदेख्यौतासनुवाइ हा
उचामतनयरराहिगए ऋपावंतऋषितापरभए अमु
नी सुनइहिऔसरआए करिपनामयहवचनसुनाए
जोकछुआग्यामोकौंहोइ छाडिविलंवकरौंअवसो
इ कह्यौदगनकौकरोउपाइ तुरतनेत्रतिनदएवनाइ
कह्योजतमें भागनपावत वेदजानिमुहिसुरभरमाव
त ऋषिकह्योमैंकरिहौंजहांजाग देहैंतुहिअवश्य
करिभाग नृपकंन्यासोंऋषियोंकह्यौ तोऊपरपुसन्न
मैंभयौ जदपिनहींकछुइच्छामेरें तदपिइछपावकरौं
हितेरे दोऊमिलितीरथमांहिअन्हाए सुंदररूपदुहू
ननपाए दासीसहसप्रगटतहांभई इंद्रलोकरचना
ऋषिठई ।त्रियकौंऋषिसुखवहुविधिदिये तासम
नोरथपूरनकिये तवजजमानरानीसोंकहा जवतेंकं
न्याऋषिकौंदई तवतेंसुधिकछुनांहीपाई विनुप
संगतहांवचौंजाई जगआरंभकरिनृपतहांगयौ दे
खिऋषिआश्रमविस्मैभयो कह्यौयह।विधौ कहां
तेंआई ।किनयहऐसीनीतिवनाई इहिअंतरनृ
पकंन्याआई पितादेखिमिलिवेकौंधाई नृपता
कौंआदरनाहिंदियौ तैंयहकौनकर्महैंकियौ ।वि
रधऋषिसरकौंकहाभयौ कुलकलंकतैंकाहेंदयौ

कह्यौजोगबलऋषिसवकीनो मुहिसुखसकलभांतिकरि
दीनो नृपप्रसन्नकैऋषिपैआयौ जागप्रसंगकहिकैंसु
हलायौ रानीसुतादेषिसुखमान्यौ धन्यजनमअ
पनोकरिजान्यौ नरपतिकौंऋषिजज्ञकरायौ असुनी
सुतहितभागउठायौ इंद्रकोपकैऋषिसौंकह्यौं ताहि
भागतुमकाहेदयौं भुनिमारनकौंवज्रउठायौ पैऋषि
कौंमारननहिपायौ इंद्रहाथअधवरारहिगयौ तिनि
कह्यौदईकहाइहभयौ कह्यौसुरनतुमऋषिहिसता
यौ तातैंकररहिगयौउचायौ इंद्रविनैऋषिसौंवहु
करी तवऋषिफिरपातापरहरी सुरपतिकरनवनी
चैंआयौं अस्वनीसुतवलसुरमैंपायौ ऐसोहैहरि
भक्तिप्रभाव वरनिकह्यौमैतुमसौंराव हरिकीभक्ति
करैजोकोई इहुंलोकसोसुखतिहिहोई सुकज्यौंनृ
पकौंकहिसमुझायौं सूरदासत्यौंहीकहिगायौ ३२५
॥हलधरविवाहकथावरनन॥रागभैरो॥ रूपतनैभयौ
रैवतराजा तासमजगदुतियानविराजा ता[illegible]रजन
मैरेवतीलयौ ताकौंलैसुब्रह्मपुरगयौ विधितिहि
आदरकरिवैठायौ तवनृपमनमैंअतिसुखपायौं
तहांदेषिअपछराआषारा नृपनहींकछूवचनउचा
रा जवअपछरानृत्यकरिरही तवराजाब्रह्मासौंकही
ममपुत्रीवरयायपतआहि आग्याहोइदेवतिहिताहि
ब्रह्माकह्यौसुनौनांह तुमसौंनृपअवजगमैंनांहि
नर१

हलधरकौंनुमदेवविवाहि ब्याहजोगअवसोईआहि
रेवनब्याहदियोजगआइ आपुदियोनपवनमेंजाइ
हलधरब्याहभयोयाभाइ सूरदासजनदयोसुनाइ ३
१८ ॥राजाअंबरीकथावरननराग विलावल॥ हरिहरि
हरिहरिसुमिरनकरौ हरिचरणारविंदउरधरौ हरि
पदअंबरीकचितलायो कविआपतेंताहिवचायो
कविकौंतापेकेरिपठायो सुकनृपसौयोंकहिसमुझा
यौ अंबरीकराजाहरिभक्त रहैसदाहरिपदअनुरक्त श्र
वनकीरतनसुमिरनकरैं पदसेवनअरचनउरधरैं वं
दनदास्यतनपुनिकरैं भक्तनसोंसिषभावअनुसरैं आ
त्मनिवेदनसदाविचारैं प्रेमसहितनौधाविस्तारैं नौ
मीनिमलीविधिकरैं दसमीकौसंजमविस्तरैं एका
दसीकरैंनिरहार द्वादशीयोधैपैआहार पतिव्रतात
तानृपकीनारी अहनिसिनृपकीआग्याकारी दुंदा
सुखकौंदोऊत्याग धरैसदाहरिपदअनुराग ऐसीवि
धिपूजैंहरिसदा हरिहितलावैसबसंपदा राजकाजक
छुमननहिंधरैं चक्रसुदरशनरक्षाकरैं धरीदोइद्वादशा
जान कविआयोनृपकियोसनमान कह्योभोजन
कीजेऋषिराइ ऋषिकह्योआवनहौंमैंन्हाइ यहक
हिकैऋषिगएअन्हान कालवितानौकरतस्नान रा
जाकह्योकहाअबकीजे विप्रनकौंचारनोदिकलीजें
राजातबकरिदेख्योसोन याविधिहोइनऋषिअपमान

लैचरनोदिकनिजब्रतसाध्यो ऐसीविधिहरिकौंआराध्यो
इहिअंतरदुरवासाआए अंबरीकसोंवचनसुनाए
मुनिराजानेरीब्रतटर्यौ क्योंनकरैरेभोजनकर्यौ कहै
नृपतिसुनियैऋषिराइ मैंब्रतहितयहकियौउपाइ
चरनोदिकलैब्रतपनपार्यौ अवलौंअन्ननमुखमैंडा
र्यौ ऋषिकरिक्रोधइकजटाउपारी सुगिरिलगाभई
ज्वालाभारी जबनृपऔरदृष्टिकौंकरी चक्रसुदर्शन
सोसंघरी पुनिऋषिहूकौंजारनलाग्यौ तबऋषिभ्र
मनौंज्यौंलैभग्यौ ब्रह्मारुद्रलोकमैंगयौ उनहूंअभैदान
नहिंदयौबहुरौंऋषिबैकुंठसिधाए अरिप्रनामयहब
चनसुनाए मैंअपराधभगतकौकीनौं चक्रसुदरसन
अतिदुखदीनौं औरकहूंमैंठौरनपायौ असरनसरन
जानिकैआयौ महाराजअबरक्षाकीजै मोकौंजरतरा
।खिप्रभुलीजै हरिजीकह्यौसुनौऋषिराइ मोपैतूराखौ
नहिंजाइ तैंअपराधभक्तकौकीन मैंनिजभक्तनकौआ
धीन ममहितभक्तसकलसुखतजै औरसकलतजि
मोकौंभजै बिनुममचरननउनकैआसा परमदया
लसदाममदासा उनकेमननाहीशत्राई नातैंकहुंउ
नहीपैंजाई तुमकौंलैहैंवेईविचाई यातैंनाहीऔरउ
पाई इहांराजाअतिदुखितभयौ ऋषिममद्वारेतेंफि
रिगयौ ऋषिमगजोवनवरषविनायौ पैभोजनतो
हूनसिरायौ अंबरीकपैतबऋषिआयौ हाथजोरि

पुनि सीस नवायौ रिषि हि देखि नृप कह्यौ या भांइ लेव
सुदर्शन याहि विचाइ श्रासन हरि हरि भक्तन धारौं तातें
अब याकौं मति जारौ चक्र सुदर्शन सीतल भयौ अभै स
न दुरवासा लयौ पुनि नृपति हि भोजन करायौ रिषि
नृप सौं यह वचन सुनायौ मैं नहिं भक्त महातम जान्यौं
अब मैं भली भांति पहिचान्यौ सुक राजा सौं ज्यौ समुझायौ
सूरदास त्यौं ही कहि गायौं जो है ये ली ला करि सुने सुना
वै सो हरि भक्त पार सुख पावैं ३१७ ॥राग गूजरी॥ त्रि
रतन त्रिरतन बलहीन भयौ कहा करौं यह त्रास कृपा निधि ज
पत पक्कौ अभिमान गयौ धायौ धरा सुरसैल विदिस दि
सन हां चक्र न छूचा हि लयौ जाचे शिव विरंचि सुरपति
सबने कछ न काहू सरन दयौ भाज्यौ फिरयौ लोक लोकन
दीन मैं पत्र पुरातन पवन हयौ सूरदास द्विज जानि प्रभु न
वनि जजन सन मुख पठायौ ३१८ ॥शोभन रिषि कथा
॥वरनन॥ राग भैरो॥ सुकदेव कह्यौ सुनौ हो राव जैसौ हैं
हरि भक्ति प्रभाव हरि कौं भजन करै जो कोइ जग सुख भु
गति लहै पुनि सोइ सोभन रिषि जमुना तट गयौ तहां
मन्त्र बत देखत भयौ सब कुंहू बसौ क्रीडा करैं अति उ
त्साह हृदै मैं धरै ताहि देखि रिषि कै मन आई गृह
आश्रम हैं अति सुखदाई नप तजि कै गृह आश्रम
करौं कंन्या राजनृपति की वरौं कह्यौ मानधाता सौं
जाइ पुत्री एक देव मुहि राइ नृप कह्यौ देखि विरध कृ

विदेह हैं पचासपुत्री मम गेह अंतहि पुर भीतर तुम जाहु
वीरै तुम्हें सो देहुं वियाहु तव ऋषि मन में कियो विचार
विरध पुरुष कौं वरैं न नार तवैं पै लाइ कियो रूप अति सुंद
र गयो जहां नहां नृप कौ मंदिर सव कंन्यन सो मन कौ व
र्यौ ऋषि विवाह सव हुन सौं कर्यौ ऋषि तिन के हित
गृह वनाए तिनके भीतर वाग लगाए भोग सामिग्री भ
रे भंडार दासी दास गनत नहिं पार ऋषि नारिन मिलि
वहु सुख पाए सहस पचास पुत्र उपजाए तिनके वहु
त भई सन्तान कहां लग तिनकौ करौं वषान वहुत का
लया भांति विताये पै ऋषि मन संतोष न आयौ क
ह्यौ विषै तें तृपत न होइ कैतो भोग करौ किनि कोइ या
विधि उपज्यौ वैराग तव तप करि कीनौं तन त्याग
सव नारिनु सह गाम न कियौ हरिजी ताकौं निजपद दि
यो तातें नर हरि सेवा करैं हरि चरनन नित हांचित
धरैं सुक नृप सौं ज्यौं कहि समुझायौ सूरदास त्यौंही
कहि गायौ २१८ ॥श्रीगंगाभूलोकआगमनकथारागम
रौ॥ सुकदेव कह्यौ सुनौ नरनाहि गंगा ज्यौं आई जग मा
हिं कहौं सु कथा सुनौ चित लाइ सुनैं सु भव तरि हरि
पुर जाइ सप्त मजत सगर जव भयौ इंद्र अस्व कौं हरि
लै गयौ कपिल आसर मतां कौं राख्यौ सगर सुतन
तव नृप सन भाख्यौ हम तिहूं लोक माहिं फिरि आए
अस्व षोज कहूं नहिं पाए आग्या होइ जांहि पाता

ल जातु तिन्हें माध्यौ भूपाल तिनके भोदे सागर भयौ
कपिल आसरम पैं पुनि गयौ अस्व देखि कह्यौ धाव
हु धावहु भागि जाइ मति बिलमन लावहु कपिलहु
लाहलसौं अकुलायौ कोप दृष्टि करि तिन जरायौ स
गर नृपति जब यह सुधि पाई अंसमान कौं दयौ पठा
ई तिन कपिल अस्तुति बहु बिधि कीनी कपिल ताहि
यह आग्या दीन्हा जग्य हेत अस्व यह लेहु भ्रातनि म्हा
रे भए जु येह सुरसरि जब भू ऊपर आवै उनकों अपनें
जल परसावै तब ह्वै उन सबकी गति होइ याविधि उ
औरउ पावन कोइ अस्व लाइ जग पूरन कियौ अंस
मान पुनि राज भयौ अंसमान पुनि राज बहाइ गंगा
हेत कियौ तप जाइ याही बिधि दलीप तप कीनौं पै
गंगा को हरि नहिं दीनौं भागीरथ जब बहु तप कियौ
तब गंगा जू दरसन दियौ कह्यौ मनोरथ तेरौ कहैं
पै मैं जब नभ तें भू परौं मो कौं कोउ धारन हारै नृप क
ह्यौ शंकर तुम कौं धरैं तब नृप शिव की सेवा कीनी
शिव प्रसन्न होइ आग्या दीनी गंगा सौं नृप जाइ सु
नाई तब गंगा जू भूमैं आई साठ सहस सागर के पुत्र
कीने सुरसरि तुरत पवित्र गंग प्रवाह मांह जो न्हाइ
सो पवित्र ह्वै हरिपुर जाइ गंगा या बिधि भू पर आई
नृप मैं तो सौं भाषि सुनाई सुक नृप सौं ज्यौं कहि सम
झाई सूरदास त्यौं ही कहि गाई ३२० गंगाविदमपा

देवकीअस्तुतिवरनन ॥राग विलावल॥ हरिपदकमलकौं
मकरंद मलिनमतिमनमधुपपरहरि विषैनीरस मं
द अमृतहू तें अमल अतिगुन श्रवनविधि आनंद
परमसीतलजानिशंकरसिरधस्यौ निजचंद नागनर
बो पससबननचाझैसुरसरीबिंद सूरतीन्यौंलोकपरस्यौ
सुरअसुजेसछंद ३१२ ॥परसरामअौतारवरनन
रागभैरौ॥ ज्यौंभयौपरसरामअौतार कहौंसुकथासुनैं
चितधार सहसबाहरविदुसीभयौ सरितातटइकदि
नसौगयौ निजभुजबलतिनसरिताग्रही वहिगयो
जलबरेवाकही नृपतुमहमसौंकरौलराई कह्यौक
हौंमध्यानविनाई वहुस्यौक्रोधवंतजुधचह्यौ स
हसबाहुतवताकौंगह्यौ वहुसौनृपकरिबैमध्या
न दीनौताकौंछांडिनिदान फिरिनृपजमदगिन
आश्रमआयौ कामधेनवलिकरिलेधायौ परस
रामजवयहसुधिपाई मास्यौताहितुरतहीधाई
ताकेसुतनजमदगिनमास्यौं परसरामरेनुकाहूं
कास्यौं मारेछत्रीइकइसवार यौंभयौपरसराम
अौतार सुकनृपसौंज्यौंकहिसमुझायौ सूरदासत्यौं
हींकहिगायौ ३२२ ॥रागधनाश्री॥ परसरामजम
व दगिनकेगेहलीनौअौतार मातातासौजसुनजल
लेनगईइकवार लागीतहांअवारतिहिनृविकार

क्रोधअपार परसरामसौंकह्यौंन्रृयाकौंवेगिसंघार
औरसुतननवकह्यौंपितानहिंकीजेऐसी क्रोधवंत
ऋषिकह्यौंऔरननहूंसौंवैसी परसरामतिनसब
नकौंमारीयकुप्रहार ऋषिकह्यौंहोरप्रसन्नवरमां
गोदेंवकुमार परसरामतवकह्यौंयहेवरदेउमातअ
वजानेमांहीमरेभ्रातकेंजीवेंएसव ऋषिकह्यौंय
हदयौमैंरननकौंदेहुउदार परसरामउनकौंदयौसो
वतमनौंजगार परसरामवनगएतहांदिनवहुतल
गए सहसवाहतिहिंसमैंजमदगिनआश्रमआए
कामधेनजमदगिनकौलिगयौंन्रपतिछिनाइ परसए
मकौंवोलिऋषिदयौंविरतांतसुनाई परसरामपुनि
पितावचननताकौंसंघारयौं कामधेनदईआनिवच
नऋषिकोप्रतपारयौ सहसवाहकेसुतनपुनिराषी
घातलगाइ परसरामजववनगएमारयौऋषिकों
धाइ ऋषिकीयहगतिदेषिरेनुकारोइपुकारी पर
सरामतुमआइलगनदयौंनहींगुहारी यहसुनिकैं
आयौतुरतमारेतवहिंप्रचार पुनिजियधरिक्रोध
हिहनेतिक्रीवीसइकवार जगअराजकैगयौंऋषि
नअतिहीदुखपायौं लेप्रथ्वीकौदाननाहिंपुनिव
नहींपठायौ वहुरिराजत्रहिंदयौभयौऋषिन
आनंद सूरदासपावतहरषगावतगुनगोविंद ३२३
॥श्रीरामकौअवतारकथावरनन॥रागविलावल॥ ०० ०

हरि हरि हरि हरि सुमिरन करौ हरि चरनारविंद उर धरौ
जै अरु विजै पारषद दोइ विप्र सराप असुर भए सो
इ इक बाराह रूप धरि मार्यौ इक नरसिंघ रूप संघा
र्यौ रावन कुंभकरन भए सोइ रामजनम तिहि हनहि
न लए दसरथ नृपति अजुध्याराव ताकें गृह कियौ उ
र भाव नृप सौं ज्यौं सुखदेव सुनायौ सूरदास त्यौं ही
कहि गायौ ३२४ ॥ बालकांड श्रीरामचरित्र जनमली
लावरनन ॥ आजु दसरथ कै आंगन भीर भू भा
र उतारन कारन प्रगटे स्याम सरीर फूले फिरत अजु
ध्यावासी गनत न त्यागत चीर परिरंभन हसि देत प
रसपर आनंद नैनन नीर त्रिदसा नृपति ऋषि व्योम
भीर तिन देषत रहत न धीर त्रिभुवन नाथ दयाल
दरस दै हरी सबन की पीर देत दान राख्यौ न भूप क
छु मां डे मैं नग हीर भए निहाल सूर सब जाचिक जो
जाचे रघुवीर ३२५ ॥ राग कान्हरा ॥ अजुध्या बाजति
आजु वधाई गरभ मुच्यौ कौसिल्या माता रामचंद्र नि
धि आई गावैं सखी परसपर मंगल ऋषि अभिषेक ब
जाई भीर भई दसरथ कै आंगन स्याम वेद धुनि गाई
पूछत ऋषि हि अजुध्या कौ पति कहि ये जनम गुसां
ई बुध वार नौमी तिथि नीकी चौदह भुवन वडाई
चारि पुत्र दसरथ के उपजे तिहुं लोक ठकुराई सदा
सर्वदा राजराम कौं सूर उरै न हां पाई ३२६ ॥ राग

सूरसा

गानरा॥ रघुकुलप्रगटेहेरघुवीर देसदेसतेंटीका आए यौरतननननमानिहार घरघरमंगलहोनवधाई अ तिपुरवासिनभीर आनंदमगनभएडोलत नहनून सोधसरीर मानिनवहुरछासीलुटाए गोगयंदहिंय चीर देतअसीससूरचिरजीवौरामचंद्ररनधीर

३२७ ॥बाललीलाराग विलावल॥ करतलशोभि तवालधनुहियां पेलतफिरतननमेआंगनप हिरेलालपनहियां दशरथकोशिल्याकेआगेंल सतसुमननकीछहियां मानौंचारिहंस सरवरतें वेठेआपसरहियां रघुकुलनमलचंदचिंतामनि प्र गटेभूतलमहियां आयेओपदेनरघुकुलकों आ नदनिधिसवनहियां एसुखतीनलोकमेंनांहीजो पाएप्रभुपहियां सूरदासहरिवोलभगतकोंनिर वाहतदैवहियां ३२८ ॥रागविलावल॥ धनुहीवा नलियेकरडोलत चारौवीरसंगइकशोभितवचन मनोहरवोलत लछमनभरथशत्रुघनसुंदरराज जिवलोचनराम अतिसुकुमारपरमपुरुषारथमु क्तिधरमधनकाम कटपटपीतपिछोरीवाधेंका कपछधरिसीस सरकोंडादिनदिषत आवतनार दसुरतेतीस शिवमनसकुचइंद्रमनआनंदसुख दुखविधिहिसमान दितदुखलअतिअदितहर षचितदेषिसूरसंधान ३२९ ॥रागकान्हरोविरव

मिथिलागमन॥रागसारंग॥दसरथसौंऋषिआनिकह्यौ
असुरनसोंजगहोननपावतरामलछननवसंगदयौ
मारितारिकाजगयकरायौविस्वामित्रआनंदभयौ
सूरस्वयंवरसियसुनिप्रभुकौंऋषिलैकैताठौरगयौ
३३० ॥रागमारू॥देषनकौमंदिरआनिचढी रघुपति
पूरनचंदविलोकतमानोकुमुदिनरंगवढी पियदरस
नप्यारीअतिआतुरनिसिवासरगुनमेंरढी नजिकु
ललाजपीयमुखनिरखतनाइसीसआसीसपढी
मनुदिहजोविहकरमवसज्यौरटगंगाअनलउठी
सूरदासप्रभुदिघिसुधानिधिमानौंप्रेरिवनाइगढी
३३१ ॥सीतावचनसखीप्रतिरागसारंग॥चितैरघु
नाथवदनकीवदनकीओर रघुपतिसौंअतिनेहह
मारोविधिसौंकरतिनिहोर अतिहीदुसहपिनाक
पितापनराष्योवेसकिसोर इनपैदारघधनुषचढै
क्यौंयहसखीसंसैमोर सियअंदेसजानिसूरजप्र
भुलयौकरजुकीकोर टूटतधनुनृपलुकैसकलज्यौं
रविलषितारारुसूर ३३२ ॥रागधनाश्री॥ महाराजद
सरथनहांआएवैठेजायजनकमंदिरमैंमोतिनचौ
कपुराए विप्रलगेधुनिवेदउचारनजुवतिनमंगल
गाए सुगंधधूपगगनकौंछिकआएगगनविमानन
छाए रामलछनअरुभरथसत्रुघनव्याहनिरखिसु

सा.
सू.सा
८८

खपाए सूरभयौ आनंद नृपति मन दुंदुभी देव बजाए
३३३ ॥ राग आसावरी ॥ करकंपे कंकन नहि छूटैं राम
सुपुर समागन कौ तिनकैं निरखि सखी सुख लूटैं गांव
नारि गारि सब गावैं नातन कौ कोन चलावैं नवकरडोरि
छूटैं रघुपति कौ सिल्या माइ बुलावै पुंगीफल जुत जल
निरमल भरि आनि कुंडी कं नवकी खेलत जुवा सकल
जुवती कहैं हरि जितीज नवकी धरें निशान आनु ग
ह मंगल विप्र अभिषेक कराये सूर आमित आनंद कौ
सिपुर सुखपुरान नगायो ३३४ ॥ संक्षेप विवाह क
थावरनन राग धनाश्री ॥ ललित गति राजत आति रघुवी
र नरपति सभा मद्धि भए ठाढे युगल हंस मति धीर अल
ख अनंत अपरमित महिमा वलकटछए तुनीर लघुध
नु कर कपल सिर सोहत अंग अंग दोऊ वीर भूखन वि
विध वसुद अंबर जुत सुंदर स्याम शरीर देखत मुदित
चीर वरसें सुर व्योम विमानन भीर प्रमुदित जनक
निरखि मुख अंबुज पुगट नैनन माधि नीर तात कठिन
प्रनमान जानि सिय जनक सुता आधीर डोलति महि
अधीर भयौ जनपति जल भ्रम अकुलान दनुज
चलत दहलत दस आनन इंद्रादिक भै मान रवि त
जि नचौं हरचिता के हत लखि उन के कल्यान त्रि
व विरंचि व्याकुल मुनि सुनि भए जब तोर्यौ भगवान

मंजनशरदपुगटजातिअद्भुत अघदिसानभूर श्रवन
सुनि नपुनिं भए अघकुलनागब्याघभैचूर दूषसुरनवो
लतनरतहंपुनिदानसुभटवउसूर मोहितसकलस
यानजानिजियमहाप्रलयकीभूर पानगहनरघुवरा
जूकीनेंजनिकसुना सुखदीन जैजैधुनिपुनिकरत
अमरगननरनारीलोलीन दुषनदुषसुदिषिसंतनकों
नपवनतपूरनकीन रामचंद्रदशरथहिविदाकरिसूरदा
सआधीन ३३५ ॥राग सारंग॥ दशरथचलेअवधिआ
नंदित जनिकराइवहुदाइजदैकरिवारवारपगवंदत
तनियाजामातिनकौसमदतनैननीरभरिआए सू
रदासदसरथआनंदितचलेनिसानवजाए ३३६
॥राग सारंग॥ परसरामतिहिऔसरआए घएपि
नाकरघोघनपूरयौ क्रोधवंतयहवचनसुनायौ वि
पूजानिरघुवीरवीरदोऊ हाथजोरिसिरनायौ वहु
तदिननकौं हुतौपुरातन हाथछुअतउठिआयौ तु
मनौ द्विजकुलपूजहमारेहमतुमकौनलराई क्रोध
वंतकछुसुन्यौनहिं लियोसारंगधनुषचढाई तव
हूंरघुपतिक्रोधनकीनौं धनुषवानसं[illegible]धायौ सू
रदासप्रभुरूपसमुझिपुनि परसरामपगधायौ ३३७
॥राग सारंग॥ अवधिपुरआएदशरथराइ रामलछि
मनभरथशत्रुघनसोभितचारयौभाइ कौसिल्याआ
दिकमहतारी आरतीकरीवनाइ यहछविनिरखि

सूसा

मुदितसुरनरमुनिसूरदासबलजाइ ३३८ ॥अर्थ॥ कौंडरा
मरनविचारतथावनगवनरागसारंग॥ महाराजदशरथ
मनधारी अवधपुरीकौंराजुरामदैं लीजैवूतवनचारी
यहसुनिवोलीनारिकेकई अपनोवचनसंभारौ चौद
हवरषरहेंवनराघौ छत्रभर्थसिरधारौ यहसुनिनृ-
पतिभयोअतिव्याकुलकहतकछु आवैकानहिंआइ
सूरहिसमुझाइकहुनपैकेकईहठनहिंजाइ ३३९
॥रागकान्हरा॥ महाराजदशरथयौंसोवत हारघुनाथ-
लछिनवैदेहीसुमिरिसुमिरिगुनरोवत त्रियाचरितमैं
मंतनसमुझतउठिपुछालमुखधोवत महाविशातिर-
तिकछुऔरैंवारवारमुखजोवत परमकुबुद्धिकछोन-
हिंसमुझतिरामलछनहंकराए कोसिल्याअतिपरम-
दीनकैनैननीरभरिआए विहवलतनमनचक्रतभई
सुनिसापश्रवनसुनिपाए गदगदकंठसूर कोसिलपुर-
मुरनसु[illegible]नतदुखपाए ३४० ॥रागकान्हरा॥ फिरिफि-
रिनृपतिचलावतवात कहौसुमिंतकहांलौंविलटापा
नजीवनकैसें[illegible]वनजात केविरछसिरजटाधनुषकर
दुमचूमपहरिमसमसवमात रामलछनसीताफल
भोजनतेउसवैंपात विनरथकठुसहदुखविनुप
दत्रानचलहिदोउभ्रात इहिविधिसोचकरतअतिही
नृपजानुकीओरदेखिविलखात इतनीसुनतसिमि-
टिसवआएप्रेमसहितगाठेअंसुपात तादिनसूरसह
रसवचक्रतसुमिरिसनेहतज्योपतिनात ३४१ ॥केक

इतिवचनश्रीरामसौं॥रागनट॥सकोचनकहतनहींमहरा
ज चौदहवरषनुमैंवनदीनोममसुतकोंनिजराज तुमश्रा
इसिरधरिरघुनायककीसिख्याहिंगआइ सीसनाइ
पुनिआज्ञामांगीसूरसुननदुखपाइ ३४२॥रागसारं
ग॥आतुरहोरघुनाथपियारे अनुरहु चारिजामवि
श्रामहमारें।छिनछिनमीठवचनकहौ वारिपितव
चनजाहुविरथांकैकेकैकोंजियकलहसहौ आतुरकैं
नछांडिकोसिख्याप्रानजीवधन चलनकहौ विछु
रतप्राणपयानकरतहैंमिलितौलेहुनवपंथगहौ सूरज
दिनदरसनदुर्लभहैंकलितकंवलकरकंठगहौ ३४३
॥श्रीरामकौसिख्याप्रतिऊतर॥रागकान्हरा॥आतुरघु
नाथपयानोदेत विहवलभएश्रवणसुनियरजनपु
त्रपिताकौहित ऊंचेंचढिदसरथलोचनभरिसुतमुख
देखिलेत रामचंद्रसेपुत्रविनामैंमूंजिवयोकुलषे
त देषतगवननैनभरिआएगातुगह्योज्यौंकेत तात
तातकहिप्राणगंवाएकैगएभूपअचेत कपटत्रान
हाथसायकधनुसीतासुभगसमेत सूरगवनगहवर
कोंकीनोंजाननपिताअचेत ३४४॥श्रीरामवचन
जानुकीप्रति॥रागगूजरी॥तुमजानुकीजनकपुरजाहु
कहाआइममसंगभरमिहौवहुदुखसिंधुअन्हाहु न
जिवहराजजननिकभोजनसुखनपसीठैफलषाहु गी
षमकांममलेनजिसागरछीलरकहाअन्हाहु नफिरि

रहु सीतामेरी सौं जिनि वनवसिय छिनाहु सूरसती ज्यों पत
व्रताओं संग चली जिनि जाहु ३४५ ॥ जानुकीवचनश्रीरा
मप्रति ॥ रागकेदार ॥ ऐसी जियन धरो रघुराइ तुमगृह
नजिमोसी दासी यह अंतनकहूं समाइ तुम्हरो रूपअनू
पमान ज्यों जवनैननभरि देखौं ताछिन हृदौं कमलपर
फुल्लितजननमधुफलकोलिखौं तुम्हो चरनकमलसुख
सागर यह व्रत हौं प्रतपालिहौं सूरसकलसुखछांडि आ
पनौं वनविपदासंगचलिहौं ३४६ ॥ श्रीरामवचनलछि
मनप्रति ॥ रागगूजरी ॥ तुमलछिमननिजपुरहि सिधारो
विछुरनभेटदेहु लघुबंधू जियतनजैहै सूलतिहारौ यह
भावीकछु औरकाजहै सोकोजो या मेटनहारौ तुमम
तिकरौ अवज्ञानृपकी यह दुखनोआगेको भारौ याकौं
कहा परेखौहरि कियो मधुजीलरसलिता पतिखारौ सू
रसुमित्रा अंगदीजियो कौसिल्या परनामहमारौ ३४७
लछमनउतररागसारंग ॥ लछमननैननीरभरिआए
उतरकहतकछूनहिं आयौरह्यौचरनलपटाए अंतर
जामीप्रीतिजानिकैं लछिमनलीनेसाथ सूरदासरघु
नाथचलेवन पितावचनधरिमाथ ३४८ ॥ अहिल्या
उद्धारनकथा ॥ रागसारंग ॥ गंगातटआएश्रीराम तहां
पषानरूपपगपरसी गौतमऋषिकीवाम गई अका
सदेवतनधरिकैं अतिसुंदरअभिराम सूरदासप्रभु
पतितउधारनविरदकितकयहनाम ३४९ ॥ लछिम
नकेवटसंवाद ॥ रागमारू ॥ लैभैयाकेवटउतराई रघु
पतिमहाराजरनठाढेनेउतनावदुराई अवहिंसिलातें

गई देवगति जव ही चरन छुवाई हौं कुटुंव काहे प्रतिपालौं वैसी मति कै जाई जाके चरनरेनु की महिमा सुनियत अधिक वडाई सूरदास प्रभु अगिनित महिमा वेद पुरानन गाई ३५० ॥केवट लछिमन संवाद॥ नौका नां ही हौं ले आऊं प्रगट प्रताप चरन दे कौ नाहि कहां लौं गाऊं कृपासिंधु पै केवट आयौ कंपित करत जु वात चरन परस पाषान उडत है मेरी यह उड जात जो यह वधू होइ काहु की नाव सरूप धरें छांडि देह जाइ सलिनात जि पग सौं परस करें मेरी सकल जीवका या में रघुपति मुकति न कीजि सूरजदास चढौ प्रभु पाछें चरन पषारन दीजि ३५१ ॥राम विलास॥ मेरी नव का जिनि चढौ त्रिभुवन पति राइ मोदेषत पाहन उडे मम काठ की नाइ मै षेई ही पार कौं तुम उलटी मगाई मेरी ज्यों घोही उर मति होइ सिल हाई मैं निरवल विन वल नहीं जो और गढाऊं मो कुटुंव या ही लग्यो ऐसी कहां पाऊं मै निरधन कछु धन नहीं परवार घनेरा सेंवर टाक हि काटि के वाधौ रक वेरा वारवार श्रीपति कहैं धीवर नहि माने मन प्रतीति नहिं आवही उडवे ही जाने नियरे ही जल थाह है चलौ तुम्हे वताऊं सूरदास की वीनती नीकें पहुचाऊं ३५२ ॥पुरवासी वचन जानुकी प्रति॥ राग धनाश्री॥ सखी री कौन तिहारी जात राजिव नैन धनुष कर लीनैं वदन मनोहर गा

न लज्जित रहैं पुरवधू पूछत अंग अंग मृगसकात अति
मृदु चरन पंथ विन विरहत सुनियत अद्भुत वात सुंदर
तन सुकुमार वदन दोऊ सूरकिरनि कुम्हिलात महा म
नोहर तीनौ मूरति देखि तापतन जात ३५३ ।।राग गौ
री।। अरी अरी सुंदर नारि सुहागिनि लागौं तेरै पाव कि
हिं गांव के तुम वीरवटाऊ कौन तिहारौ गांव उत्तर दिस ह
म नगर अजुध्या है सरजू कै तीर वड कुल वडौ भूप दशर
थ सषि वडौ नगर गंभीर कौने गुन वन चली वधू जन
क हि मोसौं सतभाव यह घर द्वार छांडि सुंदरि चली
पयादे पाव सासनी सौति सुहागिनि सो सषि अति
ही पिय की प्यारी अपने सुत कौ राजु दिवायौ हम कौं
देस निकारी यह विपरीति सुनी तव सजनी नैनन भरे
नीर आजु सखी चल भवन हमारै सहन दोऊ रघुवीर
वरष चतुर्दश भवन न वरिहैं आज्ञा दीनी राइ उत्त
के वचन सानि करि सजनी वहुरि मिलैंगे आइ वनिता
विहसि सरस मुख सुंदरी सिय सौं पूछी वात कौन
वरन तुम देवर सषि री कौन तिहारौ नाथ कटि तट प
ट पीतांवर काछें कांधें धरें तुनीर गोरवदन मेरौ देवर
सखि पिय मम स्याम शरीर तीनि जनानि हूं लोनकी
सोभा छांडि सकल पुर धाम सूरदास प्रभु रूप चकै
न भए पंथ चलत श्रीराम ३५४ ।।राग वियोग श्रृंगार
षप्रानत जन राग कान्हरा।। कहियौ सखी वटाऊ कौं

हैं अद्भुतवधूलियेंसंगडोलतदेषतत्रिभुवनमोहैं पर
मसरूपसुलछनजोरीविधीकोरचीनहोई कोकीता
कोंउपमादीजोदेहधरैं धोंकोई इनमेंकोपतित्रियातु
म्हारीपुरजनपूछैंधाई राजिवनैननमैननकीमूरतिसेनन
दएवताई गएसकलमिलिसंगदूरिलौंमननफिरतपुर
वास सूरदासस्वामीकेंविछुरतभरिभरिलेतउसास
३३५॥रागधनाश्री॥तातवचनरघुनाथजवेवनकौंग
ये मंत्रीगयोफिरावनरथलैंरघुवरफेरिदयो भुजाछु
डाइतोरितनज्योंहितकरिप्रभुनिठुरहियो सुरतिसा
लज्वालाउरअंतरजनुपावकहिपियो यहसुनिनृतभूप
नत्यागोविछुरतमानहियो इहिविधिविकलसकलपुर
वासीनाहींचहतजियो पसुपंछीतृनकनकोत्यागैं
बालकपेननपियों सूरदासश्रीनाथबोलहितसुखघन
विरतकियो ३५६॥ननसारनेभरथकोबुलावनरागगू
जरी॥ रामहिराखोकोईजाइ जबलगभरथअजुध्या
आवैंकहतकौसिल्यामाइ पठयोदूतभरथकौल्या
दनेंवचनकहौ॥सिरनाइ दशरथमरनरामवनगवन
नयहकहियोअरथाइ आएभरथदीनह्वैबोलेकहा
कियौकेकैमाइ हमसेवकवात्रभुवनपतिकेस्वानन
सिंघबलषाइ आजुआजुध्यानांजलअचऊंनामुख
देषौंमाइ सूरदासराघोविछुरनतेंमरनदेवदोंला
इ ३५७॥अथरागधनाश्री॥आजुकोउरामहिराखो

जाइ दाहीलदनकरति कोपि त्याष्छनीयाविहरीजाइ
विहरतविपनधामतजिनिलौंतेंजिनिरवमलकुह्विलाइ
पठवौदूतकहौतितहिंवतितेंरथराषेविरमाइ दशरथमरन
रामवनगौन्योंहमङ्खमरतविसंवाइ सूरदासप्रभुव
नहिंसिधारेहमकोडहंडिमुलाइ ३५८ ॥अथशत्रुघ
नवचनकेकईप्रति॥ तैंकैकैकुमंत्रकियौ अपनेंकरङ्ख(
रिकालहंकास्योहठकरिन्रपअपराधलियौ श्रीपति
चलतरह्यौकहिकैसेतेंरोपाहनकठिनहियौ हमअ
पराधिनुकेहितकारनतेंरामहिवनवासदियौ कौनका
जयहराजहमारेंरहयावकअपकौनजियौ छूटतिसूरध
रनिदोउवंधुनमनुसंपतिदुखविषमपियौ ३५८
॥रागकेदार॥ राममज्ञकहांगएरीमाता सूनोभवन(
सिंघासनसूनोंनाहींदशरथताता सेवकराजनाथ(
वनपठएयहगतिलिषीविधाता धगतोजननमजि
यनध्यन-तेरींकहीकपटकरिवाता मुखअरविंददे
षिहमजियतेज्योंचकोरससिराता सूरदासश्रीरा
मचंद्रविनुकहाअजुध्यानाता ३६० ॥वसिष्ठव
चनरथप्रति॥ गुरुवसिष्ठभरथहिसमुझायौ राजा(
कोपरलोकसंवारौजुगजुगयहचलिआयौ चंद
नअगरसुगंधिऔरसवविधिकरिचितावनायौ च
लेविवानसंगकरिपुरजनतनापरआजपौगायौ
दिनदसलौंजलकुंभसाजिसुचदीपदानकरवायौ

ससमअंगनिलअंकुलदीनीदेवविवानचढायौ जानि
रकादशविप्रकुलाएभोजनवहुतकरायौ दीनौदान
वहुतनानाविधिरहाविधिकरमकुजायौ सवकरनूति
केकईकेसिरजिनअभिलाषउपायौ इहविधिसूर
अजुध्यावासीदिनदिनमंगलगायौ ३६१ ॥भरथचि
त्रकूटगमनश्रीरामसनावनहित॥रागसारंग॥ रामपै
भरथचलेअतुराई मनहिमनसोचतमारगमें/पिरेदईर
घुराई देषिदरसचरननलपटानेगदगदकंठनकछु
कहिआई लीनेहृदेंलगाइसूरप्रभुपूछतमइमएकौं
नाई ३६२॥रागसारंग॥ भरथमुखनिरषिरामपछिता
ने मूंडकेससीसविहवलदोउअंगछेहलपटाने तात
मरनसुनिश्रवनकृपानिधिधरनिपरेमुरझाई मोहम
गनलोचनजलधारापियतहृदेनसमाई लोटतिधर
निपरीसुनिसीतासमुझतिनहिसमुझाई दारुनदुख
दावाज्यौवनतृन नाहीबुझतिबुझाई दुर्लभभयौदर
सदशरथकौ सो अपराधहमारे सूरदासस्वामीकरु
नामैनेननजानउघारे ३६३॥श्रीरामभरथप्रतिउत्तर॥
रागकेदार॥ तुमवेमसवरघुनाथकौनविधिजीवनहमैं
वनें चरनसरोजविनाअवलोकें कोसुखधरनिगनैं
हरवरिरह्यौचरननहिछांडे नाथतजीनिठुराई पर
मदुखीकौसिल्याजननीचलौसदनरघुराई चौदहव
रषतातकीआग्यामोपैमेटिनजाई सूरनाथकीपाव

रीसिरधरिभरथचलेबिलषाई ३६४ ॥ रागमारू ॥ बंधू
करियौराजसंभारे राजनीतिअरुगुरुकीसेवागाइविप्र
प्रतपारें कौसिल्याकैकेईसुमित्रादरसनसांझसवारें
गुरुवसिष्ठअरुमिलिसुमंत्रसौंपरजाहेतविचारें भरथ
गातसीतलकैआयौनैनअधिकजलधारें सूरदासप्र
भुपांवरीसिरधरिअवधपुरीपगधारें ३६५ ॥ रागमा
रू ॥ बंधूभरथबहुतसमुझायौ कौसिल्याकैकेईसुमि
त्राकौंपुनिसीसनवायौ गुरुवसिष्ठअरुमिलिसुमंत्र
सौंअतिहीप्रेमबढायौ बालिकप्रतिपालिकतुमदोऊ
दशरथलाडलडायौं भर्थशत्रुघनकरिप्रनामरघुहि
तकरिकंठलगायौं गदगदगरेसजललोचनहियें
सिंधजलछायौं कीजौअभैविचारपरसपरराजनीतन
समुझायौ सेवामातप्रजाप्रतिपालनयहजुगजुगच
लिआयौ चित्रकूटतेंचलेतिंहिछिनमनविश्रामनपा
यौ सूरदासवलिगयौरामकैनिगमनेतिकहिगायौ
३६६ ॥ वैरागअरुसूपनखानाककछेदनरागमारू ॥ डं
डकवनआएरघुराई कामविवसव्याकुलराक्षसनी
औरएकअंतरतिंहिआई हांसिकैरामकह्यौसीतासौं
यहलछिमनकैनिकटपठाई भ्रकुटिकुटिलअरुनअ
तिआननअगिनसिखामुखकह्यौवराई एवोरीसक
र्ममदनवसमेरोध्यानचरनरघुराई विरहविथात
नगईलाजछुटि वारंवारउठैअकुलाई रघुपति
कह्यौनिलजनिपरतूनारिराछिसीइहांतेंजाई सूर

रपभूवेनी भुतवाकौ छेघोनाकगई विसि आई ३६७ ॥रा
गसारंग॥ खरदूषनयह सुनि उठि धाए तिहिकें संग अने
कनिसाचर रघुपति आश्रम आए श्रीरघुनाथ लछनतें
मारे एकसु भागिपराए सूपनखाए समाचार सब लंका
जाइ सुनाए दशकंधर मारीच निसाचर यह सुनिकें अ
कुलाए उंडकवन आए छलकरिकें सूर राम लषि धाए
३६८ ॥सीताहरन राग मारू॥ सीतामुह पमालिका लाई
वारवार श्रीग आदि कै नैनह प्रेमसहित सीचे रघुराई अंकु
रमूल भए सो पेषे करम भोग फल लागे आई नाना भांति
पात सुंदर मनु कंचन की हिलता वनाई सिरगरूप मारी
च धरी व पुवहुरि चल्यौ मारग जु दिषाई श्रीरघुनाथध
नुषधर लीनो लागन वान देवगति पाई हालछिमन
सुनि टेर जानुकी विकल भई आतुर उठि धाई रेषाषें
चि वार वंधन मे हा रघुवीर कहां हो भाई रावन तुरत वि
भूत लगाएं कहत आइ भिछा दे माई हरा सिया जि यउ
रन च ल्यौ लें मन नौरंक महानिधि पाई दीनजानि
सुधि अनि वचन किऐ प्रेमप्रानि मरहि चानन जाई
सूरसंकि पाछि तानु यहे करि करमरेष मेटि नहि जाई
३६९ ॥राग केदार॥ रामकर लिये धनुष कर सायक सां
धें सिय हित मृग पाछे उठि धाए वनतिन वसन फेंट
दृढ़ वांधें नौघन नाल सरोज वरन वपु सलिता हू गं
भीर गुन गाढें इंद्र व दन राजिव नैना वर शीस जटा शिव

समसरबांधें पालनश्रजनसंघारनसेंननरुंइत्रानेकत्र
वधिपलसांधे सूरभजनमिहमादिखरावनरुमत्रानि
सुगमचरनआराधें ३७० ॥रागमारू॥ रहिविधिवसें
वनरघुराइ उसिनैंत्रनभूमसोवनतुमननेफलखाइ
जगनजननीनारीवारीमगाचरिचरिजाइ कोपिकेप्र
भुवानलीनेंनवहिधनुषचगाइ जनकनननयाधरि
आनिमिमें छायारूपवनाइ यहनकोउभेदजानेंवि
नाश्रीरघुराइ कह्यौअनुजसोंरहुंरहांनू छाडिकहुं
जिनिजाइ कनकमृगमारीचमास्यौगिरौलखनपु
नाइ मयौदेसोरेखसीताकह्यौपुनकह्योनजाइ नव
हिनिश्चरगयौयहछलिलईसायचुराइ गीधताकौं
देखिधायौलरौसूरवनाइ पंखकाटिजवगिस्यौअपु
रनवगयौलंकाधाइ ३७१ ॥रागसारंग॥ वनअसो
कमेंजनकसुताकौं रावनराखौजाइ भूखअनप्यास
नीदनहिआवे गईवहुतमुरझाइ रखवारीकौंवहुत
निश्चरीदानीतरनपठाइ सूरदाससीतातिननिरख
नमनहीमनसकुचाइ ३७२ ॥श्रीरामलछनासीता
वियोगरागकेदार॥ रघुपतिकहिसियनामपुकारत
हाथधनुषलिविकटवनघनेंचकृतभएदिसविदिस
निहारत निरखतसूनभवनजडकेरहिखनलोटत
धरवपनसंभारत हासीतासीताकहिश्रीपति उमगि
नेनजलभरिभरिढारत लागिहिलकिऔविलखिजग
नगुरअद्भुतगतिनहिपरतविचारत चेननचितनसू

रसीतापति मोहमेरदुखदरनन दारन ३७३ ॥राग केदार
फिरत प्रभु पूछत बन बन द्रुम बेली अहो बंधु काहू अवलो
की इहिं मग बधू अकेली अहो विहंग पतंग अरु पन्न-
मृग याकें दर केराइ अवकी बार मो विपत घटा वहुजा
दु की दिहु बताइ चंपक पहुप बरन तन सुंदर मनो चि
त्र ओरो षी होइ रघुनाथ नि साचर के संग चली जात में दे
षी यह सुनि धावत धरन चरन की प्रतमा पथ में पाई
नैन नीर रघुनाथ सानि कैं शिव ज्यों गात चढाई कहुं
हिय हार कहूं करकंकन कहुं अंचर कहुं चार सूरदास ब
न बन अवलोकत बिलषवदन रघुवीर ३७४ ॥गी
ध उधार ॥ राग केदार ॥ तुम लछिमन या कुंज कुटी में दे
षो जाइ निहारि कोऊ जनो नाम हमलैले उठत पुकारि
पुकारि यह तिहि कहत कंधते करगहि लीनो धनुष सं
भारि कृपानिधान नाम हित धाए अपनी विपति वि
सारि अहो विहंग कहो अपनो दुख पूछत तन व तिपु
रारि कैमतिमूढ कयो तन तेरो कि धौं विछोहो ना
रि श्री रघुनाथ रवन जग जननी जनकनरेस कुमारि
हरिले चल्यो ताहि दसकंधर है उठि लयो गुहारि इ
तनी सुनत कृपाल कृपानिधि दियो धनुष कर डारि मा
नों सूर प्रान ले रावन गयो देह कों डारि ३७५ ॥राग
केदार ॥ रघुपति निरषि गीध सिर नायो कहि कै वात
सकल सीता की तनतजि चरन कमल चित लायो श्री
रघुनाथ जानि जन अपनो अपने कर करि ताहि जरा

यौ सूरदासप्रभुदरसपरसकरि ततछिन हरिवेलोकसि
धायौ ३७६ ॥सिवरीउधारन राग धनाश्री॥ सिवरीआ
श्रमरघुपतिआये अरघआसनदैप्रभुवैठाए षाटेफल
तजिमीठेल्याई जूठेभयेसुसहस्रसुमाई भोजनकीने
स्वादवषानि अंतरजामीअतिहितमानि जातिन
काहूकीप्रभुजानत भक्तिभावहरिजुगजुगमानत क
रिडंडौतभईवलिहारी पुनितनतजिहरिलोकसिधा
री सूरप्रभूकरुणामैमए निजुकरकरितिलअंजुल
दए ३७७ ॥राग कान्हरा॥ अंतरजामीश्रीरघुवीर क
रुनासिंधअकामकल्पतरुजानतजनकीपीर वालत्रा
सकपिवसतवनविषमव्याकुलसकलसरीर सोसु
ग्रीवकियोकपिपति प्रभुमेटिमहारिपुभीर दसमुख
दुसहक्रोधदावानलपुंजउपाधिशरीर तिहिंऊरजर
तभभीछनराख्यौसींचिसुकिरपानीर कहिकहिकथा
प्रेमपीरातनजसगावतजगजीर सूरनामकलाकियौ
सूरप्रभुरामचंद्ररनधीर ३७८ ॥कंदरनामवनकांडरा
गसारंग॥ निरषिमूकपर्वतविष्याता इकदिनआतु
जसहिततहांआएसीतापतिरघुनाथा कपिसुग्रीव
वालिकैभैतैं वस्योडुंगैतहांआइ त्रासमानितवप
वनपुत्रकौ दोनौंतुरतपठाइ कौहौवीरफिरतवनभी
तरविहिकारनइहांआए सूरप्रभूकेनिकटआइकैं हा
थजोरिसिरनाए ३७८ ॥~~संदरनाम~~॥राग मारू॥ व
लीहनूंपूछीप्रभुवात महामधुरप्रियवानीवोलत

साखामृगहौंकौनेनात अंजनीकौपुतकेसरीकेकुल
पवनगौनउपजायौगात तुमहीवीरहेरिभरिलोचन
मीनहीनजलज्यौंमुरझात दशरथकुलकौतिलपु
रवासीत्यायाहरीतातेंअकुलात एगिरियतिकपिप
तिमुनियतहैंवालत्रासकैसेदिनजात महादीनवल
छीनविकलअतिपवनपूतअतिहीविलषात सूरसु
ननसुग्रीवचलेउठिचरनगहेपूछीकुशलात ३८०
॥रागमारू॥ मागवडेंरहिमारगआए गदगदकंठसोक
सुनिरोवतवारिविलोचनछाए महाधीरगंभीरवच
नसुनिजामवंतसमुझाए वडीपरसपरप्रीतिरीतिनव
भूषनसियादिषाए सप्तनारसरसांधिवालहतमन
अभिलाषपुजाए सूरदासप्रभुऊपरवलिवलिविम
लिविमलिजसगाए ३८१ ॥रागविलावल॥ राजद
योसुग्रीवकौंतिनहरिजसुगायौ पुनिअंगदकौंवोलि
ढिंगयाविधिसमुझायौ होनहारसोहोतिहैनहिजा
तुमिटायौं सूरदासप्रभुचतुरमासनाठौरविनायौ
३८२ ॥रागविलावल॥ श्रीरघुपतिसुग्रीवकौंनिजनि
कटवुलायौ लीजिसुधिअवसायकीयहकहिसमुझा
यौ जामवंतअंगदहनूउठिमाथोनायौ हाथमुद्रि
कादिप्रभूसंदेससुनायौ आएतीरसमुद्रकेकछुसो
धनपायौ सूरसंपातीतहांमिलियायहवचनसुना
यौ ३८३ ॥रागविहागरा॥ विछुरीमनोसंगतेहरनी

चितवतिरहतिचकृतचारोंदिसश्रोजविरहतनचरनी
तिरिवासूनश्रकेलीठाढीदुखितरामकीघरनी वसन
कुचीलचुहरलपटानेविपतिजातनहिवरनी लेतिउ
सासनैनजलभरिभरिधुकिसुपरतिधरिधरनी सूर
सोचजियपोचनिसाचरराम रामकीसरनी २८४ ॥
सुंदरकांडहनूमानलंकागौनरागकेदार॥ वहुतद्योस
विछुरेभएश्रतश्रसुरनकेत्रास श्रवलौंजीवतिजानुकी
काहिमिलनकीश्रास जामवंतसुग्रीवहनुश्रतश्रंगदर
नधीर जनकसुतासुधिपाइकैंकह्योश्राइरघुवीर स
वकंपिजनविनतीकरैंरघुपतिसौंकरजोर दिसावांधि
प्रभुदीजियेहमवांदरजुकरोर सुनिसंदेससंपातकेस
वहुनकेमनचाइ मनौंमतकक्रेहृदेमेंफिरिजियपेधौं
श्राइ दिसविदिसनकपिपठएतिहूलोककेईस ज
नकसुतासुधिलेनकौंश्रवधिवदीदिनतीस २८५
॥रागधनाश्री॥ तवश्रंगादइकवचनकह्यो कोतरि
सिंधुसियासुधिल्यावैकिहिवलइतौलह्यो इतनोव
चनश्रवनसुनिहरष्यौहंसिवोलोजमवंत महाव
लीहैंप्रगटपवनसुतजाइनामहनवंत यहिल्याइ
हैंसियसुधिछिनमेंश्रेहैनिपटतुरंत उनिप्रनापत्रि
भुवनकोपायोकाकेवलहिनश्रंत जोमनश्रावैइक
वासरमैंछिनश्रावैंछिनजाइ सुरगपतालमहावल
ताकोंकहियेकहावनाइ केतकलंकउठाइवामकरलें
श्रावैउचकाइ पवनपुत्रवलवंतवज्रतनकांपेहट

क्योंजाइ लयोवलाइअदितचितकैकैकहौमंवोलहिले
हु त्यावहुजाइहु जनकतनयासुधिरघुपतिकोंसुखदे
हु योरयोरपुरघिरहिविलोकतगिरिकंदरवनगेहु स
मोविचारिमुद्रकादीजोसुनोमित्रसुतयेहु लियोत
वोरमायधरिहनवंतक्रियोवजूकोगात चढिगिरिसि
खरसवदरइगउचवोंगगनउडीआघात कंपतकमठ
सेससोहांपतधरनिभयोउतपात मानोपरसुमेर
कैलागेउड्योअकासहिजात चक्रतसकलपरसपर
वानरवीचकरीकिलकार तहांअद्भुतदक्षलघीनिश्च
रीतामुखमगविस्तार पवनपुत्रउरपैठिविदारीत
हांलगीकछूवार सूरदासस्वामीप्रतापवलउतस्योज
लनिधिपार ३८६ ॥रागकेदार॥ वनउपवनगिरिकं
दरादषिनपसारनिताहि जिहिचढिहनवंतदेषईलंक
कोतदिसआहि मनिमुक्ताहलवजूहिमकलसाअधि
कसुरंग कनकपुरीयोंदेषियेज्योंसरताकोछंग आ
नंदोहियघनोजवलंकनैनभरिदीस लंकापहुंच्योप
वनसुतवेठ्यो मनकससीस रतनजोतिजगमग
घनातततउदोनहिहोइ मनमहहनवंतसोचईय
हेलंकगढसोइ निरषतलोचनअतिविकट मनसो
चेहनुमान चहुंदिसलंकादनुजदलकैसेंपाऊंजान
३८७ ॥राग॥ सोजोजनविस्तारकनकपुरऊंचीजोज
ननीस मानोंविसकरमाअपनीहाचिरापीधरि

रं.सा.
८५

निजसीस गरजनरहत मतंगचहूं दिस छत्रधुजावहुदीस
भरमित भयौ देखि मालनसुत देव महा बलबीस वनउप
वन गम अगम अगोचर मंदिर फिरी निहार भईपिअपन
हीन हमारी मन मन करत विचार उपेहनूं उडिगयौ अ
वासैं पहुंच्यौ नगर मझार परखि पूछ मायौ धुनी बोले
लखे न राघौ नारि ना नारूपनि साचरअरुन सदा करत
मदपान ठांव ठांव इन हास महाभटनि न नट कहै पुरान
जियजियसोच करत मालन सुत जियति न मैं ज्ञान वैं
वह भाजि सिंधमें डूबी कै उनन जै पिरान कैसें नाथ वद
दन विषराऊं जो विनु देखें जान वांदर वीर इसे गमो सौं
नैं बोल्यौ पितमान इन्द्रपान कै बोलि है मो सौं ताकौ वहु
नउरांव भली राम कौं सिया मिलाई जाति लंकपुरि गांव
जब मुहि अंमद जुसल पूछि है कहा कहौं गो नाहि मा
र्यौ आज आ लंक लंकापति लै दिषराऊं नाहि यौं जा
वननैं मरन भलौ है मैं देख्यौं औगाहि चौदह सहस
आहि पुरमें त्रिय लैहैं राघौ चाहि मंदिर कौ पर छाया
वै ढैयो करमाजें पाछि नारू पहिलें हूं नल षा मैं सी ताकौं
पहिचानी जाइ दुरवल छीन दीन चिंता अति जप नि
नाम रघुराइ ऐसी विधि देखि हौं जाउ कीराहि हौं सीस
नवाइ भूरभार जब गयौ अवास हि जहां वसें दसकंध
नग नजटित मनि षंभ वनाए पौरि नुवास सुगंध स
प्त छत्र फहरान सी सपर मनौं लछ मोविंद चौदह सहस

नागकंन्यारतिपरचौसुरतिमतिअंध वानाऊंठपषा
वऊ आवऊ औरराजसीभोग कुसमपुंजंकपरानोजो
वनसुखपरमलसंजोग जयजयकहैंकरीशिवअेसी
जानैलंकालोग यहसुखसेज. हरीहैसीतारायोहैत
वियोग पुनिआयोसीताजहांवेठी वनअसोकके मां
हि चहूंओरानिश्चरीघेरैंनराजिहिंदेषिडराइ देषिआ
इऐकतरवरतरजाकीसीतलछांह वहुतनिसाचरिम
ध्यजानुकीमलिनवसनतनमांह वारंवारउसासस्
रप्रभुजपतिरामकोनांव मलिनअरधपटदेषिवदन
परचंदगह्योज्यौंराहु ३८८ ॥राग मारू॥ गयोहूदिहन
वंतजवसिंधपारा सेसलागीकमठपाठसोंपाठहै धसे
गिरवरसवैत्रासभारा लंकगढमांहआकासमारगक्रि
यो चहूंदिसवजूलागेकिंवारा पेरिसवदेषिआश्रो
कवनमेंगयो निरषिसीताछरायोवूतडारा सोचलाइ
ज्योकरनयहै धोंजानुकीकेकुऊ औरमुहिनहिचिन्हा
रा सूरआकाशवानीभईनवेनहहैंविदेहायहैकर
जुहारा ३८९ ॥दोहा॥ दसशिरसदनसिधारिऔ आ यो
कोउपचार कछुछलवलकरिदेषियेमानेसीतानारि
त्रिजटीकहीभवालसोंमोहिरजायसुहोइ सीतासी
पतिव्रताकोंमोविनुल्यावेकोइ वहुनेचलानिसाच
रावांधिविरदकेभेस सीतासनतुलावईकहिपठई

रा.सा.
२९

लंकेस ३८७ ॥सहचरीवचनजानुकीप्रतिउत्तर॥राग
मारू॥ समुझि अवनि रघि जानुकी मोहिं बडे भाग अव अ
गम दिसाते शिवबरदीनो तोहि छिनक राम छिरपनता
कापित मात घटाई आनि तेरो पिता जनक जानुकी की
रति कही वषानि विधसंजोग टरत नहि टार्यो वनदु
खदेष्यो आनि अवरावन घरविलसि सहज सुख कहै
हमारी मानि इतनो वचन सुनत श्रवननके बोली सिय
रिसाइ अहो दीरघहे मुग्ध निसाचरि सनमुख बैठो आइ
प्रति
जो पियपति बिरता तू तेरे जीवन बिछुरी आइ तवाक्षिनस
रीदसनरसनाविभुजाग हा जवराइ अवकूरौं अमि मा
नकरति सियतु अनितु उनके नाइ सुखहार हासिनि
लिरावनको अपने सहज सुभाइ मेरो हरनमरन है वां
कौ तू अपने जियजांन केतनदेवमाहि पायननके के अ
रिहौं हधपांन जो तूं रामहि दोस लगावैं करौं प्रानकौ घा
न उनके क्रोध घनेघर जैहैं तूं अपनें जियजांनि जरि
है लंकपत्रतनल वनज्यौं राघौ केधनुवान चौदह सहस
खप्रकरि देख्यौं राघौ आवतवान ।लछमन राम धनु
ककैकाके राहिहै घटमें प्रान सुरपति कुतनै फल सांचो
करिकरों असुरकुलघान तुम्हरो कुलको वैरन लागी
होनभसमसंधान मेरी निसासरवा है मानो कवदेषौं
परभान उनके क्रोधजरैं लंकापति तेरे हृदै समाइ
तौपै सुरपति कुत सांचौहि जौ देषौं धुराइ ॥दोहा॥

त्रिजटा कही भवालसौं ए रावन मति अंध जनक सुता तन गा
रह्यौ तोरन क्रोर स कंध गुप्त मनौ रावन कहौ सुनि त्रिजटी
तूं आइ जो पै सीता सत टरैं तौ त्रभुवन जरि जाइ ३८१
॥ सहचरी वचन रावन प्रत उतर ॥ राग धनाश्री ॥ सुनौ त्रि
नकन कपुरा केराइ हौं वुधि वल छल करि पचि हारी ल
छौ न सीस उठाइ प्रलै गगन सहत सुरपति हू पुहमि पल
टि जग परई नासे धर्म पाप विचलै तौ शंभ अचंभौ करई
अचला चलै चलत पुनि थाके चिरंजीव सो मरई श्री रघु
नाथ प्रताप पतिव्रत सीता सत न टरई ऐसी त्रिया हरत
क्यौं आई ताकौ यह सत भाव मन वच क्रम और नहीं
दूजौं न जि रघुनंदन राव उन ते क्रोध समर्दे जे हौ करहु
न सीता चाव अवनु मकामी सरन उवरि हौं सो वलि मो
हि वताउ सो सीता सत तें विचलै तौ आपति काहि सं
भारैं मोसे मुग्ध महापापी कौं कौन क्रोध करि तारे यह
जननी वे प्रभु नंदन हौं सेवक प्रतहार सीताराम सूर संग
म विनु कौन उतारे पार ३८२ दोहा दिन कर किरनि प्रका
शि यौ पंछि नु किये पुराव जिहि वन सीता सांथरी आ
यौ लंका राव ग्रीवन वाइ देखिकै अमुवन भीजे अंस
मानौ शोक समुद्र मै ज्यौं हंसिन विनु हंस वैठी देइ पटी
हुती अभरन उरे धूरि सीता वन यौ देखियै कनक पता
का धूरि दससिर सनमुख जानि कै मन मैं मानी संक कं
पै वैदेही डौरे मानौं राहु मयंक एवानैं रघुनाथ जू कवका
ही परमान वेलनु री हा जानकी ज्यौं पानी विनु पान

देखि निसाचर रूप कह कपि मारन मन होइ अपै स्रीनाथ आ
पने प्रगटि सकै नहि सोइ ३८३ ॥रावनजानुकीप्रतउतररा
गमान॥ जनकसुतानु समुझि चित्त में हरषि मोहि जिनु
हेरि चौदह सहस्र कि अगराजे ताने सब दासी तेरि करें हे
तो जनक गृह है देय पटऊं आध लंक कौ राज तो हि देखि चतु
रानन मोहे तू सुंदरि सिरताज छांडि राम तपसी के मोहि
उठि आभूषन साज चौदह सहस त्रिया में तो को पटबंधा
ऊं आज कहि न वचन सुनि श्रवन जानुकी सकै न वचन संभा
रि त्रिन अंतर दे दृष्टि ति छौंडी डारि दई जल धारि पापी
जार जो मगरि तेरी अनुगत वान विचारि सिंधम लसि रगा
लन पावे हो समरथ का नारि चौदह सहस सेन षरदूषर
रघुपति जिन्हे वांन रामचंद्र लछिमन के आगें कहे रहि
हैं प्रान मेरो हरन मरन हैं तेरेयो स्योंकुटंव संतान जरिहें
लंक पत्र पुरयन ज्यों उदवत रघु कुल भान तेरी अवध कहत
सब कोऊ जानि कहियतु वात विन विसवास मोहि है कों
आतुरे निके प्रात यह राक्षस कुल जाति हमारी मोहन उप
जे गात परत्रिय रमें धर्म कहा जानें डोले मान सघात तो
हि अबुद्धि कहे सब कोई जानें सहियत वात अति विस्वा
स करी हों ता को आतुरे नि के प्रात मन में डरे कानि जिनि तो
रे मो अबला जिय जानि नखसिख वसन सम्हारि सकु
चि तन कुच कपोल गहि पान करे दस कंध अंधमति तेरी
आरतु लाजी आनि सु राम की कोरे अवधा डारे सव भुजा

भाति ३८४ ॥दोहा॥ त्रिजटीआईसीयपैंरावनकोमनजो
इ तूंसीतावृतराखिजैरामभिलैंगेतोहि सेतछत्ररघुनाथ
सिरसेतपहुपकीमाल सेतेचंदनजानुका सोहैकंठउर
माल सरवसतरात्रिजटीकहैं सुनेनिसाचरभेव पूलेका
लमैंराखिहिंसीतागहियासेव ३८५ ॥त्रिजटीसाआश्वत
उत्तरराग मारू॥ त्रिजटीसीतापैचलिआई मनमेंसोच
नकरितूंमातायहकहिकैंसमुझाई नलछुवेरआपराव
नकौंतोपरवलनवसाई सूरदासमनोजरीसजीवनश्री
रघुनाथपगाई ३८६ ॥रागमारू॥ सोदिनत्रिजटीकहु
कबकैहैं जादिनचरनकमलरघुपतिकेहरषिजानकी
हृदैलैगेहैं कबहुकलछिमनपाइसुमित्रामाइमाइक
रिमोहिसुनैहैं कबहुककृपावंतकौशिल्यावधूवधूक
हिमोहिवुलैहैं जादिनरामरावनहिमारैंइसहिलेदस
सीसचैहैं तादिनजनमसुफलकरिमानौंमोहिपका
जुआलिमाजैहैं जादिनकंचनपुरप्रभुऐहैंनीलधुजा
रथपरफहरैहैं तादिनरामसूरप्रभुसीतासर्वसवारिव
धाईदैहैं ३८७ ॥रागमारू॥ सुनुसीतासपनेकीवात
रामचंद्रलछिमनमैंदेखेऐसीविधिपरभात कुसुमवि
मानवैठिवैदेहीदेखीराघौपास स्वेतछत्ररघुनाथ
सीसपरदिनकरकिरनप्रकाश मैविलाइमानौदानौकु
लव्याकुलसाइकत्रास पजरतिधुजापताकछत्ररथम
निमैंकनकआवास रावनसीसपुहमपरलोटतमंदो

सू.सा.
९८

दरिविलषाइ कुंभकरननतनयंकलगाई लंकमभोघनपार
प्रगट्योआइ लंकदलकपिकौं रघुवरफिरिदुहाई दहस
पनेकौंभावसियासुनिकहूंननिर्फलजाइ अजटीवच
नसुननवैदेहीअतिदुखलेतिउसास हाहारामचंद्रल
छिमनहाहाकौसिल्यासास त्रभुवननाथनाहजोपा
वैंसहैंसुक्योंवनवास हाकैकैसुमित्रारानीकठिनानिसा
चरत्रास कौनपापमैंपापिनिकीन्हो प्रगट्योहैयाहिंवार
धगधगजीवनहैंअवयह वनक्योंनहोइजरिछार
वहिदोषमुहिलगिआवतुहैं मगहिनदईहचार जा
न्योंनहींनिसाचरकौछलुनाघीसीसकरार पंछीएक
सुहृदजानतिहीं लरीनिसाचरसंग तातेंविरमिरहेरघु
नंदनकरिमनसामनपंग इतनौंकहतनिनउरपरकेस
गुनजनायोअंग आजुसूररघुनाथसंदेसनमिटिविर
हदुखदंग ३९८ ॥रागमारू॥ मैंप्रभुकेचरननचितदेहौं
मनसावाचाओरकर्मनावहुरिमिलनकौंआगमकेहौं
दुलैसुमेरसेसशिरकंपेपछिमउदैकरैंवासरपति सु
नित्रिजटीनेहूनहिछोडौंमधुरिमूरतिरघुनाथगातर
ति सीताकरतिविचारमनैमनआजुकालिदसरथसु
नआवैं सूरदासस्वामीकेतनामैं सोकृपालमोहिक्यों
विसरावैं ३९९ ॥रागमारू॥ तिहिछिनपोनपूतनहां
प्रगट्योसियाअकेलाजांनि यासुंदरहितमोहिपठा
यौ सकौनहोंपहिचांनि औरदसरथकुमारदोऊवंधूध

रेधनुषसरपान प्रयावियोगाग्रिरेननमारे ? परेसिंधुनट
आन वारंवारनिरषिनावरनरकरमीडिनपाछितार दा
नौदेववंशपंछीकेउलेननामरघुराइ बोलेनहींदुस्यौ
तुमवानररहौतिहिंसंगछिपाइ कैअपराधकोडिअति
मेरोकैनमोहिदिषाइ नरवरत्यागिचपलसाखामगास
नमुखदेदेरुषो आइ तुमहितनाथकठिनरतकीनोनहिं
जलभोजनषाइ कुशलजानुकौहिरघुनंदनकुशलहैं
लछिमनभाइ ऐसेनअंगधरौजियकंपैनिसवासरसम
जाइ तुमघटप्रानदेषिपुनसीताविप्रानरघुराइ उदि
ममेरोसुफलभयोअवमैदेष्यौतुमआइ वंदरवीरदसों
दिसपठएटूंढेगूहवनवारी सुभटअनेकमहादलजौरे
परेसिंधुकेपारी श्रवनमूंदिआचरमुखढांप्योजेरेनि
सा?चरचोर काहेकोछलकरिकरिआवतुधरमविनास
नमोर पापीकोननीठिदेमोकोंपाहनसरसकठोर पाव
कवरौसिंधुमेंबूडोंनहिमुखदेषोंतेरो अवरघुनाथक्रि
लाकुतोकौंसुंदरिशोकनिवारि यहसुनिसियमनसंका
उपजीरावनदूतविचारि जियअतिडरौमोहिजिनिआ
पेव्याकुलवचनकहंत ज्योंवरदयोसकलदेवनमुहि
नांवधस्योहनिवंत सुग्रीवअंगदसवेउवारेवध्योवालि
मेंमंत अंजनीपुत्ररामकेपाइक तोकेवलगरजंत माता
पुत्रजानिदिउतरकिहिकिहिविधिविलषाइ किन्नरना?
गदेवसुरवर्काकोडरनउराइ कैनजनककुमारिजानु

र:सा·

९६ कौरामवियोगिनिआहि ४०० रामनामसुनिउनरदीनोपि
रावन नाबंधुमुहिहोइ मैंसीताहरिल्यायौत्रासदिखावनमोहि
अबमैंजाइसिंधुमैंबूडौं चितमैंआवैकोह सुनौवत्सजी
वनधनमेरौलछमनरामविछोह लेवसजीवनिमूरिमु
द्रिकादईप्रीतिकरिनाथ समाधानकैशोकनिवारौंओऊँ
दतिनहाथलेहुमातमुद्रिकानिसानी ओरउठिवैम्योदूरि
मूलैनहीपानपरमुंदरीनेनरहेजलपूरि छिनमुदरीछि
नहनूमानसौंकहतिविसूरिविसूरि कहौमुद्रिकातुमकह
छांडीमेरीजीवनमूरि कहियौवत्सदेसाइतनोजबह
मबेइकथान सोवतकागचह्यौतनमेरौविरहगस्योलै
वान ओसौनैनकोपनहिछांडौंसुरपतिकेविदमान अ
बबहकोपकहांरघुनंदनदससिरग्रहहथियान निकटखु
लाइविठाइनिरखिमुखआंचललैतिवलाइ चिरंजीवौ
सुकुमारपवनसुतगहतदीनह्वैपाइ बहुतभुजनबलहो
इतुम्हारेएअमृतफलखाहु अबकीबारसुरप्रभुमिलवौ
बहुरिप्रानकिनजाहु ४०० ॥हनूमानवचनजानुकीप्रति
रागमारू॥ जननीहौंअनुचररघुपतिकौ मतिमाताकरि
कोपसरापहिनहिदानौधनमतिकौ आज्ञाहोइदेवकरमु
दराकहौसंदेसौउनकौ मतिहाविलंबकरौरघुवरकौ धि
हैकुलदैयतिकौ कहौतौलंकउखारिडारियौंनहांपिनासंघ
तिकौ कहौतौमारिसंघारिनिसाचररावनकरौअगतिकौ
सागरतीरभीरबंचरकीदेखकटकरघुपतिकौ लैमिलऊँहौं
अबैरामकौनगहुलाघउरउनकौ ४०१ ॥रागमारू॥ अनु

चररघुनाथनेरेदासन्नाजन्नायौं यौंनपून कपिसरूपभक्त
नमैंगायौं नपसीजाइतपनकौं सोरविनसांकौं जाकीनुम
छांहरेतीसोरेडुमरायौं चढिचलौजुपीठिमेरी अवहौ
लेमिलाऊं सूनसिरायौंकीलीलायौंगाऊं ५०१ जानु
कोहनुमानप्रतउत्तरसमाल ॥ तुम्हेंपहिचानतिनाहींवी
र हनतेननमैंकहूनदेषेंरामलछननदेतीर लंकावसतदेव
ऋतदानौंउनकैअगमशरीर तोदेषेंमोजियडरपतुहैंनेन
नआवतुनीर नवकुरकाठिअगूठीदीनीतोजियउपजेधीर
सूरदासप्रभुलंकाजारनआएसागरतीर ५०२ ॥ रागकां
न्हरा ॥ जननीहौंरघुनाथपगायौं रामचंद्रआएकीतुमकौं
देनवधाईआयौ हौंहनवंतकपटजिनिसमुझौमातकहति
सतभाई मुदरीदूतधरीलेआगेंनवप्रतीतजियआई अ
तिसुखपाइउठाइलईतववारवारउरऐंठी ज्यौंमरयाणि
रपाइआपनीजरनइदेकीमेटी लाछिमनयालागतुकहि
परयौंवहुतवकुतकरिमाता दईअसीसतरनमुखदेसेनहैं
चिरजीवौदोऊभ्राता विछुरनकौंसंतापहमारौंतुमदरसन
देकाटयौं ज्यौंरविनेजयाइदसहूदिसदोषकुहरकौफाटयौं
ठाडोविनतीकरतपवनसुतअवजोआग्यापाऊं अपने
देखिचलेकीयहसुखउनहूंजाइसुनाऊं कलपसमानए
कछिनराघौंक्रमक्रमकरिचितवत तातेहौंअकुलात
कृपानिधिहैहैवैडोकिचिवत रावनहतिलेचलौंसाथहौ
लंकाधरौंअपूठी यातेंजियसकुचातकृपानिधिकरोपति
ज्ञाकूठी इहांकोसवदिसाहमारीसूरसुकहियोजाइ विन

नीवहुतकहाकहौरघुपतिजिहिविधिदेषौपार ४०४ ॥रागम
लार॥ वनचरकौनदेसतैंआयौ कहांवेरामकहांवेलछिमन
कहांमुद्रिकापायौ हौहनवंतरामकौसेवकतुमसुधिलेनप
ठायौ रावनमारितुमैलैजातोरामआग्यानहिल्यायौ
तुमपतिउरपौमेरीमातारामजोरिदलआयौ सूरदासरावन
कुलषोवनसोवतसिंघुजगायौ ४०५ ॥रागमारू॥ कहौ
कपिकैसेंउतरैंपार दुस्तरअतिगंभीरमहाअतिसनजोजन
विस्तार इतउतदेषतकोधमानअतिमहाअंधअधिकार
लंकपुरीअतिकठिनपंथहैंआएकौनप्रकार रामप्रतापस
तसीताकोमईनावगुनधार वनकौहारछिनेकौलंघ्यौं
आवतमईनअवार पिछभागचढिजनकनंदिनीपौरषदेषि
हमार सूरदासलैजावजहांतहांरघुपतिकंतनुम्हार ४०६
॥रागमारू॥ हनमतभलीकरीतुमआए वारंवारकहतिवैदे
ही दुखसंतापमिटाए श्रीरघुनाथअरुलछिमनकेसमाचा
रसवपाए अतिपरनीतभईजियमेरेंसंगमुद्रिकाल्याए
क्यौंकरिसिंधुपारतुमउतरेक्यौंकरलंकाआए सूरदासर
घुनाथजोनिजियतोवलरहोंपराए ४०७ ॥रागकान्ह
रा॥ सुनिकपिवेरघुनाथनहीं जिहिरघुनाथपिनाककवि
तानौतोरयौनिमषचहीं जिहिरघुनाथफरसभृगुपतिग
निउरीकारिवहीं जिहिंरघुनाथहाथषरदूषनहारेप्रा
नसहीं केरघुनाथनज्योवृतअपनौजोगिनुदशागहीं
केरघुनाथदुखितकाननकेनृपतिभएकुलहीं केरघुना
थअतुलरात्तसवलदसशिरसोंडरहीं छांडीनारिविचा

रिपवनसुतलंकावागवसहीं जैहौंकुचिलरूपकुलछननि
जीवंततवहीं सूरदासस्वामीसोंनहियोंअवविरमियोन
हीं ४०८ ॥रागमारू॥ जिहिभुजवलशिवधनुषभंजनकि
यो सोवलअवरघुनाथनहीं सुरनरमुनिपन्नगजेजेकरि
देखतसुरपतिविदितनहीं कैधोंअवग्यानधरयोजिय
अंतरकैधौंवनवसिभएनिवलवहीं कैधौंकछुपरीअ
सुरसंग्रामनगह्यौजोगनकछुचित्तमहीं कैधोंवुधिकछुऔ
रभईअवहारिमानिसववचनसहीं सूरदासप्रभुदीनभए
हमइतनीनहिनपिरेइतहीं ४०९ राग रूठेहूरघुनाथकौं
मोहिरजायसहोहि सहतलंकउतपातकेलएजांवहीनो
हि हानगातनपिदेखियेंवानन्हेवलवार कैयोंसालितनाप
तिनाथिहिंमोअंगविसिरभार मातामरमनजानहीमोहि
दिखावहुसिंधु सहनलंकउतपारईयेंजोनहोइसतवंध अ
रुनदांतविकरालछविपरवततुल्यसरीर साधसाधसा
नाकहेंसाचौंहनवतवीर धनराघोवलप्रगटियौ धन्यकं
जनीमार अैसेसमरथ्यहूतविनुकैसेंम्राजासिराइ सकल
सराहतदेवमुनिराघोलछिमनवान तेमानौंनिरफल
भए नहियौमेरेजान मुहिचिंतानहिआपनी तुम्हेंहंसनहैं
लोग मानैंराघोवलनहींरावनमारनजोग ४१० ॥राग
कान्हरा॥ मेरेकौनेंविनतीकरनी पाहिलें जननिचलितो
हि अवलेंजांव कितनअपारसिंधकौमारगनहिंदूहिवेडरा
व तुम्हेंपरसिरघुवरकेचरननहौंसनमुखसिरनाऊं जा
नेंसुजसनहैं सवनपिउनजाति अभेपचवाऊं श्रीरघुनाथ

पतवूतमेरें सुनौ वत्तसनभाव हौं अवलापर प्रतषपीठि घर-
कैसें राषौं पाव चरिममसी सत्तत्र करौं गहि पिअकासे धा
ऊं जैसें सोधन लहै निसाचर वीच विलंव न लाऊं जव तुम
कोप करो त रवि कौं होउ चित नर कौं जाव वूडौ सिंधकौं न मति-
करि है ऊ व पूछै रघुराव रोकै जाइ सिंधु कौ मारग तुम सिर घाले
घाव जानि हम दुख होइ पवन सुत सो लालच वहि जाव नि
र मोलि क मनि छोरि गांठि तें दीनी हनवत हाथ जाहो वत्त-
न हा रघुनंदन क हौ विपति की गाथ काहे कौं प्रभु धनुष धरयौ
है अलकवंद वांधे वान यह पापी तुम पति न तउधारन हरि कहां-
रहे सुजान यह गति देषे जात संदेसो कैसे कै जु कहौं सुनि क
पि अपुन प्रान कों पहरौ कवला देत रहौं एअ ति चपल चलैगा
चाहति है करत न कछू विचार कहि धौं प्रान कहां लगि राखौं री
झिरोकि मुख द्वार इतनी वात जनावति तुम सौं सकुचति हौं
हनिमंत नाहीं सूर सुन्यौं दुख कवहूं प्रभु करुनामे कंत ४
११ ॥रागकान्हारा॥ मेरे कौं तें विनती करनी पाहिले कीपरना
म पाइ परि मन रघुनाथ हाथ ले धरनी मंदाकिनि तट फट
क सिला पर मुख मुख जोरि तिलक की करनी कहा कहौं क
पि कहत न आवै सुमिरत प्रीति होइ उर अरनी तुम हनिवं
श्री त सिरि रघुवर सौं कहियौ जाइ जो ई मैं वरनी सूरदास प्रभु
आनि मिलावौ मूरति दुसह दुष्य मैं हरनी ४१२ ॥राग
मारू॥ कहियौ कपि रघुनाथ राज सौं यह इक विनती मेरी
नाहीं सहा परति यह मोपै दारुण त्रास निसाचर केरी य

हजो अंधवंसलोचननैं छलबलकरनु आनिमुखहेरी प
हसिरगालसिंघभछचाहतयहमरजादजातिप्रभुतेरी
जिहिंभुजपरसरामबलुकरगह्यौतेभुजक्यौंनसंभारहु
फेरी सूरसनेहजानिकरुनामैंलेहुछिडांइजानिकैचेरी
४१३ ॥रागमारू॥ मैंपरदेसनिनारिअकेली बिनरघुना
थऔरनहिकोऊमातापितानसहेली रावनभेषधरीत
पसीकोछिनमैभिक्ष्यामेली अतिअज्ञानमूढमतिमेरी
रेखपारमैपेली बिरहतनपतनअधिकज रावनुजैसेबुं
मरीबेली सूरदासप्रभुवेगिमिलावहुप्रानजातपुनि
बेली ४१४ ॥रागमारू॥ तूजननीअवदुखजिनिमानहि
रामचंद्रनहिंदूरीकहूंपुनिमूलिइचितचिंतामातिआन
हि अवेलवारजांवसवरिपुहतिउरपतिहौंअपनेंअप
मानहि राखिप्रकृतिसिवारासिविको जैसेंप्रफलकरीवा
मानहि केतकपहहेरुषनिसाचरदूतएकरघुकुलकेम
नहि काटनदेदससीसवीसभुजअपनीकृतआपुनजि
यजानहि देहिदरसनिजनैनानिकटमैंरिपुकोनाससह
नसंतानहि सूरसप्रभहिइनहिछिनमैलेजुआरहौंकृ
पानिधानहि ४१५ रागमारू ॥दोहा॥ मातरजायसु
पावईतौवनदेखौटोई कछुमांगेफलपावईपेंदनभुज
नवलहोइ मूलमूललंकेशगनदानौवहुतअसोचजा
हुवत्समनसाभरीभलीहोइगीपोच मनपाएकपिफूलि
योपैंगौवनउधान आजुनरावनदेखिघैरामचंद्रकीआ

न ४२६ ॥हनूमानइंद्रजीतयुद्धरागधनाश्री॥ हनवंतवली
प्रगटभयौसीताजवपाई जनकसुताचरनवंदिफूल्यौनस
माई अगिनततरफलसुगंधमधुरमिष्टचाटे मनसाक
रिप्रेमअर्पिभोजनकैडाटे द्रुमनगहिउतपाटनएदेकि
लकारी दानौवितुधानभएदे।विचरितभारी विहवल
मतिकहनगएजोरिदोउहाथा वंदरावनविधनकियौत्र
भुवनकेनाथा यहनिसंकअतिहोढीठविडरैंनहिभाजे
मानौंवनकदलिवीचआनितगजगाजे मानौमठकूप
वारूसरवरकौ प पानी मोरिकुंजकीदुहाईनैकहूंनमा
नी क्रोध्यौसुरअसुरसवनसारवामगजान्यौ मानौंज
लजीवसिमिटिजालमेसमान्यौ नरवरइकअतिअपार
हनवतकरलीन्हो किन्नरकरपक्करिवानतानिखंडकी
न्हो जोजनविस्तारसिलापोनसुतउपाटी किन्नरकरल
न्हो सवानअंतराइकाटी आगरइकलोहजरितलीन्हो व
लवंउ दुहूंकोनअसुरहन्यौंन यौमासपिंड दौरिकैपू
हसलंवलुल्याएसेनभारी पौनपूतदानौदलताडेजल
चारा रोमरोमहनूमानवलछलकुलचान जहांतहां
देषतकपिकहतरामआन मंत्रीसुतपांचसहतअक्ष
कुंवरसूर धीरसहतसवैहनेझपटिकैंलंगूर चहुंदिस
मीअसुरसोरसितावेभीरा पावकमौपौनपूतदामोद
लवीरा चतुरननवलसंभारिमेघनादआयौ मानौं
घनपावसमेंनगपतिहैछायौ देषौजवदछिवानकि
श्वरकरतान्यौं छांडौनयसूरहनूवछहतेजमान्यौं

४१७ ॥रावनवचन॥ काकेबलबनधाइयो औरवडाईरारि
सोबलहनवतनकहांगयोजोचहौंडारीमारि याकीबांहउ
टावहू ~~जनकसुतासोमागि~~ पत्रपत्रप्रतिलागि याकोवरन
द्दिषावहुजनकसुतासोमागि जिनतोसौंकछुजानुका
प्रानकहौहोआइ सोतोलंकापतिगह्योमारनदोषदिषाइ
वाचवीचमेंधरिलई घनसंजुतअहनेल पूंछअंजनहिपा
ईयेरासलागेघेल जोकवहूंरघुनाथजूसोमनभयोनअं
ग तोपावकजलरूपकेजरैनकपिकोअंग तिहिसंकटक
हिकवपरयोश्रीपतिजाकेअंग तोपावकतोहिगह्योसु
निरावनमतिभंग पूंछजरारोमनदहोदेषोयहसतभाव
केकछुरामकृपाकरीकेसीतासतचाव ४१८ ॥हनूमानव
चनरावनप्रत॥रागकान्हरा॥ सीतापतिसेवकतुहिदेषन
कोंआयौ काकेवलवैरनैंरघुनाथसौंवढायौ जेजेतोसू
रसुभटत्रनसमनहिलेषौं तेरोदशकंधआवप्रानतवि
नुदेषौं नषसिषलौंनैंविचारिजस्योअंगअंगा अजउ
हूनाहिसंकधरतुवादरमतिभंगा [illegible]वनगयोसूनमंदि
रमसमअंगयोतो अरतोविनु[illegible]शानकंधलछमनघर
होतो पाछैनैंसियाहरामरजादाराषी जोपैदसकंधव
लीरिषक्योंननाषी आजुहौंलेजांवसियावासभुजाभा
नेंरघुपतियहपैजकरी भूतलधरमानैं बूझवानकानि
करीवलकरिनहिवांध्यो कैसेंपरनापघटैरघुपतिआरा
धे दिषतकपिवाहउंउतनप्रस्वेदछूटे जैजैंरघुनाथक

रा.सा.
१०३

हनवंधनसवटूटे देषतदलदूरिदूरिमेघनादजारो आपुन
हीभयोसूरवंधतेंनेन्यारो ४१९ ॥दोहा॥ आवनजैसें कें
भयोंसोआग्याकहिकोन अजीरिसतामसभरे फिरतनि
हारेभोन जनकसुतापतिवृतहि दयोरजायसुमोहि के
तकवललंकापुरीदेषनआयोतोहि तवकिंआयुधगहें
लेयसुभटसतकीय ताहिअचिंतकैसेवनैपरघरजातकी॥ती
यलतहोइसुदाजियेंलाजिजससंसार लतविहूनोपुरुष
जोंमारनमरनसंवार ४२० ॥रागमारू॥ मानोंगठआतु
भाईएकसकामानें पायकरघुनाथजूकोंआयोकोजानें
दूनकीकछुभेंटफेरिदनहाकोंदीजे पावकप्रजारपूछले
करदहनकीजे जोमंदिरनिसभवंतसीताहितभारी पाव
ककैपोनपूतविषमज्वालजारी वीचवीचधूमधूधवी
चवीचकंका देषिकेनरहैंतनकोरवरनलंका चमकत
उलकाआवासमानिकमनिहारी मानोमरचढिविका
नपरतहैंअधीरा चहुंदिसतेंअसूरसूर धावतभतिजो
रा मानोंपरभूमिहनूंषेलतहैहोरा जितजिततेंजुव
तिसूरदेतिफिरिगारी घ्याध्यगदसकंधअंधरामसोंवि
गारी ४२१ ॥रागमारू॥ मंत्रनुनीकोमंत्रविचास्यो रा
जनकहोदूतकाहूकोंकोननृपतिहिसास्योंदूतनीसुनत
भभीषनवोलेवंधूपायपरयों यहअनरीतिसुनात
हिंश्रवननअवलेंकहाकरों तेलतूलपावकवपधरि
कैदेषततुमहिजरों अवमेरेजियपहेवसीहिंरघुप

तिकाज करें हरीविधाताबुद्धि सबहुन की अति आतुरहोंधाए समअरसूत चीरपाटंवरलेलंगूरबंधाए बंधनतोरि मोरिमुख असुरनज्वालाप्रगटकरी रघुपतिचरनप्रतापसूरप्रभुलंकासकलजरी ४२२ ॥रागमारू॥ सोचिजियपोनसुतपछिताई आगमअपारसिंधुदुस्तरतरिकहाकियोमेंआइ सेवककोसेवापन ओप्रतिआज्ञाकारीहोइ बिनआग्यामेंभोनप्रजारे अपजससकारहिलोइ वेरघुनाथचतुरकहियतहें अंतरजामीसोइ यहमेंभीनदेखिलंकामेंसीयजरीमतिहोइ इतनीकहतगगनवानीभई हनूसोचकितकरई चिरंजीवसीतातरुवरतरअटनककहूंटरई सिरिआसोकसूरसुखलीजोप्रहमीरोमनपरिहें जाकेहियअंतररघुनंदनसोवयोंपावकजरिहें ४२३ ॥दोहा॥ पूछबुझाइलहरसोंरावनकेविदमानतोहूजरनबुझाइहोंरामचंद्रकीआन होंओछोसबसेनमेंओबलपौरखहीन ओछोकारजजानिकेमोहिरजायसुदीन परमअगारहसंखदलदेख्योदखिपसारि पेनूरावनदेखिहेकोकरिमैरखवारि सोजोजननखति व
,खिरिगिरिचढिगयोहनिमतधाइ प्रांदोजघनवलभयोपस्योपातालहिजाइ ४२४ ॥हनूमानवचनसीताप्रतरागमारू॥ लंकाहनूमानसवजारी रामकाजसीताकीसुधिलगअंगदप्रीतिविचारी जारावनकतितिहूपुर कीसें
किनहूंनआज्ञाटारी तारावनकेआछितअछपरवालिकसिखिपछारी पूछबुझाइगएसायरतटहांजहांसी

ताकौं री करि दंडौत प्रेम पुलकित है हौं सुनि राघौ कौ दिधारी
तुम हौं तेज प्रताप रहि है हौं तुम्हरी यहै अटारी सूरदास स्वा
मी के आगें जाइ कहौं सुखभारी ४२८ ॥दोहा॥ उड्यौ हनू
आकास कौं मनौ पवन कौ वान आवन अंगद कौ भयौ यौ
न पून पहिचान जोजन वास कपरासिला वेड्यौ हनिवन
वीर सुनी कथा आरज कियौं आयौ सायर तीर ४२९ ॥
॥अंगद हनूमान सहित आवन निकट श्रीराम जूके॥ रा
ग मारू ॥ हनूमान अंगद के आगें लंक कथा सब भाषी
अंगद कही भली तुम कीनी हम सब की पति राषी हरष
वंत है चले तहां तें मग में विलम न लाई पहुंचे आइ नि
कट रघुवर के सुग्रीव आयौ धाई सवन प्रनाम कियौ रघु
पति कौं अंगद वचन सुनायौ सूरदास प्रभु पर प्रताप
करि हनू सीय सुधि ल्यायौ ४३० राग हनूनें सव कौं
कासं भाष्यौं वारवार अंगद यौं भाषै मेरे प्रान उवार्यौ
तुरत ही गवन कियौ सायर तें वीच ही वाग उजार्यौ ग
यौ रावन कौं चोर चहूं दिस माली जाइ पुकार्यौं धन हन
वत सुग्रीव कहत हैं रावन कौ दल मार्यौ सूर सुनत रघुना
थ भयौ सुख काज आपनौ सार्यौ ४३१ ॥श्री रामह
नूमान प्रतउत्तर ॥ राग मारू ॥ कहौ कपि जनकसुता कुसला
त्यात आवागवन सुनावहु आपुनो देहु हमें सुख गात
सुनौ पिता जल अंतर कैकें रोक्यौ भग रूक नारि धर्यौ
अपुरि घन रूप निसाचर गरजी वदन पसारि तव मैं उ
रचि कियौ छोटौ वपु पैठ्यौ वदन मझार फार फरपरा द
उदर

षेतुनपैठें जानेपहिलाराइ गिरिमैनाकउदधमेंअकुलत
आगेंरोक्यौजान पौनपितानैंमंत्रनजान्यौ धोषेमारी
लान नवहीअैररह्यौंसालिनापति आगेंजोजनसात
तुमपूनाघपेलेदिसघउचौकौनवगवेवात लंकापौरियो
रिमैंहूठाअलवनउपवनजारि नरअसोनरदेषिजानुका
नवहींरह्यौलुकाइ रावनकह्यौतुकहीनजाइरह्यौक्रोध
अतिछाइ नवहीअवधजानुकीराष्यौमंदोदरीसमुझाइ
नवहींगयौसमलवारीमैंदेषीदछिपसारि असीसहस
किंकरदलजिहकैदीरेमोहिनिहारि तुमपनापतिनकौं
छिनमीनरजूझनलगीनवार उनकौंमारितुरतमेंकीनी
मेघनादसौंराइ कूलवांसजवलईहाथकरमेचितयौक
रजोरि तज्यौक्रोधमरजादाराषीवंध्यौआपुहीमोरि रा
वनपैलेंगयेसकलमिलिज्यौंलुवधकवसजाल क्रोधव
चनश्रवननसुनिमेल्योअतिरिसकरीनवाल आपुन
हीमुगदरलेधायौकरिलोचनविकरार चहूंदिसस्रासो
रकरिधावैंज्यौंकेहरीसियार ४३२ ॥श्रीरामवचन॥रा
गमारू॥ कैसेंपुरीजराकहिराइ वड़ैदितकैसेंकरिमारे अंजन
रआपक्चार पुगटकपाटविकटदीनेहैं वहुजोधारषवा
रे तेतीसकोटदेववसकीने तेतुमसौंक्यौंहारे तीनलोक
उरजाकेकंपेतुमहनूमानविवेषी तुम्हरैक्रोधआपसीता
केधूरजरनहमदेषी होजगदासकहांकहौंतुमसौंतुमव
रतेजमुरारी सूरजदासहनौसवसंतौं अवगतिगति
न्यारी ४३३ ॥लंकाकांड॥रागमारू॥ सीयसुधिसुनतर

रघुबीरधाए चल्योनवलछ्छनसुग्रीवअंगदहनूजामवतन
लनलसबैआए भूमिअतिडगमगीजोगिनिसुनिजगी(
सहसफनसेसकोसीसकांप्यो कटकअगनितजुरयोंलं(
कघरभरप्योसूरकोतेजधरधूरिढांप्यो जलदघनरआर
रघुराइठाढेभएरातनकपिगरजिकै धुनिसुनायो सूर
घुराइचितएहनूमानदिसआइतिनतुरतहीसीसनायौ
३३४ ॥हनूमंतवचन॥रामकेदार॥ राघौजूकितनकवात(
निजचित केतकरावनकुंभकरनदलसुनिहौदेवअनं(
त कहौतोलंकालकुटज्यौंफेरैफेरिकहांलैंडारौं कहौतोप
खनचांपिचरननतरनीरखारमैंगारौं कहौअसुरलंगूरल
पेटौं कहौतौनखननविदारौं कहौतौसैलउपारिपैंडमैंहौ
सुमेरलौंमारौं जैतकसैलसुमेरधरनिमैंभुजभरिआ(
निमिलाऊं सप्तसमुद्रदेंवछातीनरएतकदेहवढाऊं च
लीजावसेनासवमोपरधरौचरनरघुवीर मोहिआसीस
जगतजननमाकानौतनवजूसरीर जितकवोलवोलौंतु(
मआगैंरामप्रतापतुम्हारे सूरदासप्रभुकीसवसांचीजि
नकीपैजप्रकारे ३५ ॥रागमारू॥ रावनसेंगहिकोटिक
मारौं जोतुमआग्यादेहुकृपानिधितौयहपरहससारौं
कहौतौजननिजानकील्याऊं कहौतौलंकउदारौं कहौतौ
अववनपेठिसुभटहतिअनलसकलपुरजारौं कहौतौं(
संजोवाधिसकलउरएकहिएकपछारौं कहौतौतुमप्रता
पश्रीरघुवरउदधपषाननतारौं कहौतौसेनाचारचौक(
पिधरनीव्योमपनारौं सैलसिलाद्रुमनिरखिव्योमचढि

शत्रुसमूहसंघारौं वारवारपरषरासिन्नहतहौं होकवहूंनहिंमा
हारौं सूरदासप्रभुतुम्हरेवचनलगि शिववचननकौंटारौं
४३६ ॥रागधनाश्री॥ रघुपतिवेगिजतनअवकीजे वांधे
सिंधुसकलसेनामिलिआपुनआयुसदीजे तवलगतुरत
एकतौवांधौं द्रुमपाषाननछाइ दुतियसिंधसहनेननी
रकैजवलगमिलिनआइ यहविनतीहौंकरौंकृपानिधि
वारवारअकुलाइ सूरजदासअकालप्रलैप्रभु मेटौंदरसदि
षाइ ४३७ ॥रागमारू॥ हौंप्रभुजीकोआयुसपाऊं अव
हीजाइउपारिलंकगढउदधपारलैआऊं अवहींजंवूदीप
इहांतैलैलंकापहुचाऊं सुषैसमुद्रउतारौंकपिदलछिन
कविलंवनलाऊं अवआवैंरघुवीरजीतिदलतौहहनिवंत
कहाऊं सूरदाससवपुरीअजुध्याघोषुवसवसाऊं ४
३८ ॥नभीषनवचनरावनसौं॥रागमारू॥ लंकापति
कौंअनुजसीसनायौ परमगंभीररनधीरदसरथतनें
कोपकरिसिंधुकेतीरआयौ सीयाकौलेमिलौयहमतौहि
नलौंकृपाकरिममवचनमानिलीजै रैसकौरैसकरतार
संसारकौंतासपरकमलपरसीसदीजे कहौंलंकेसदैत
सषगकीमांहजाहमतिमूढकायरउरानौं जानिअसरन
सरनसूरकेप्रभूकौंतुरतहीआइद्वारेवुलानौं ४३८ ॥न
भीषनश्रीरामसरनआवन॥रागमारू॥ आइभभीषन
सीसनवायौ देषतहीरघुवीरधीरकहिलंकपतीतिहि
नामवुलायौ कह्यौसुग्रेरिकह्यौनहिरघुवरायहेविरद
चलिआयौ भक्तवछलकरुनामयप्रभुकौसूरदासजसुगा

मय

यो ४४० ॥श्रीरामवचन॥रागमारू॥ तबहौं नगर अजुध्या जै
हौं एकबात सुनि लीजै मेरी रावनराज भभीषदैहौं कपिदल
जोरि और सेना सायर सेन बंधैहौं आदिद सो सिर दास भुजा तव
दस पुनजु करिहौं छिनएकमाह लंकगढ तोरौं कंचनकोट ढ
है हौं सूरदास प्रभु कहत भभीषन रिपु हति सिया मिलैहौं
४४१ ॥श्रीमंदोदरीवचनरावनरावनसौं॥रागधनाश्री॥
बेल बिन आए राम रजा जलके निकट कटक एनाठे दासनि विमंध
जा सोवत कहा चेत हो रावन अब कित खात दगा कहति म
दोदरी रावेन सुनि प्रिय मेरी बात अगा अनदसानन नदें सिलि
दस कंधर कंठहि मेलि पगा सूरदास प्रभु रघुपति आए दहप
ट भैलै ईका ४४२ ॥रागधनाश्री॥ सरनपरि मन बच क्रम
विचारि ऐसो और कौंन त्रभुवन में जो अवलेयउवारि सु
निसिप कंतदं नत्रन रिक्षि स्यो परवार सिधारौ परमपुनी
तजानुकी संगलै कुलकलंकनिनटारौ एदससीस चरन
तरराखौ मेटहु सब अपराध महाप्रभु अपा करन रघुनंद
न त्रिसन गहैं पल आध तोरि धनुष मुख मोरि नृपन कौ
सिया स्वयंवर कीनौं छिनक मैं भृगुपति प्रतापबल ह
रि हिरदै धरि लीनौं लीला करत कनक मृग मारयो बध्यौ
बाल अभिमांनी सोइ दशरथ कुलचंद अमितबल आए
सारंगपानी जाके बल सुग्रीव सुमंत्री प्रबल जु अ सुभ का
री महासुभट रनजीत पवनसुत वडौ वजूवपधारी क
रि है वंक लंक छिनभीतर वजू सिला लैं धावैं कुलकलंक
परिवार सहित तुहि बांधत वानर लावैं अजहूं वल जि

निकरि संकर कौं मानि वचन हित मेरौ जाइ मिलौ कौसि
लनरिस कौं है न भभीषन तेरौ कटक सूर अवद्दू रिदसौ
दिसदीसनि वनचर भार सूरसमुझि रघुवंसतिलक दोउ
उतरे सायर तीर ४४३ ॥राग मलार॥ काहे हरि त्रयात्र
या पर आनी यह सीता जु जनक की कंन्या रमा आपु रघु
नंदन रानी रावन मुग्ध करम निके हीने जनकसुता ते निय
करि मानी जाके क्रोध भूमि हलि कंपै कहा सुकै रै सिंधु बिच
पानी वे प्रभु सकल लोक के करता तिन सौं बैर कियो अ
भिमानी जिहि के क्रोध भूमि न भपलटैं सूरवन सकल
सिंधु कौ पानी मुखसु ध वाइ पिंड नहि पैहै लैहैं लंकवा
स मुजमानी सूरन मिटति भाल की रेषा अलप मिनु तो
आइ तुलानी ४४४ ॥राग मारू॥ तोहि कौन मति रावन
आई आजु काल्हि दिन चारि पांच मैं लंका होति पराई
लंका कोट देषि जिन गरवो और समुद सी खाई जाकी
करि सदा जोवन सौं सो क्यौं हैरै पराई जाके हित सेना
पति आए राम लछिमन दोऊ भाई सूरदास प्रभु लंका तो
रैं गेरै राम दुहाई ४४५ ॥राग मारू॥ आयौ रघुनाथ
बली सीष मानि मेरी सीता लै जाइ मिलौ पति जु रहै ते
री तुम जु डरे करम करे सीता हरि ल्याए घर बैठे बैर कि
यो कोपि राम आए चेतत क्यौं नांहि मूढ सुनि सुबात
मेरी अजहूं सिंधु नांहि बंध्यौ लंका है तेरी सायर कौं
पोज बांधि पार उतरि आवैं सेना कौ अंत [नाहि] इन मादन

ल्यावें देखति यांकों सो तु हि बल करि दिखराऊं रील कपि
नव सन करि के राम हि नहि ल्याऊं जानति हो वली बालसों
न छूट पाई तुम्हें न हा दोस लगी काल अवधि आई वलि
ने वड्डु यग्य किये इंद्र सो स नाए छल करि लै छानि तिन्हें
रावन के धाए हरन करि प अति प्रचंड संक रबर पायौ
नरसिंघ रूप देह धरी छिन न विलम लायौ पाहनसों
वांधि सिंधु लंक गढ़ तोरें सूरदास मिलि न भी षन रा
मदे हि फिरें ४४६ ॥ रावन दूत पठावन ॥ सुक सारन द्वै
दूत पठाए वांदर भेष किर तसे नामें जानि भी षन ते
रत वंधाए रीच हि मार परी तिन मारी राम लछन तिन
दरसन पाए दीन दयाल विहाल देखि के छोरि तुजा क
हों ते आए हम लंके स दूत पत हारी समुद तीर कों जानत आ
न्हाए सूर कृपाल भए जव नामि आपुन हाथ दूत पहिरा
ए ४४७ ॥ दूत वचन रावन प्रत ॥ राग धनाश्री ॥
रघुपति जव सिंधु तट आए कुस सांथरी वैठि इक आस
न वासर तीनि गंवाए सागर गरव धस्यो उर भीतर रघु
पति नर जव जान्यों तव रघु वीर धीर अपने कर आगिन
वान जव तान्यों तव जलधर परस्यो त्रास नहि चे तिउ
स्यो अकुलाइ कही नाथ वान मुहि जारत सरन परयो
हों आइ आया होइ एक छिन भीतर जल दिय दिस क
रि डारौं अंतर मारग होइ सवन कों यहि विधि सेन उता
रौं और मंत्र जो करो देव मनि जो रघुवीरें विचार रीन

जानिप्रभुचापविसरसिन्निंदयोबंगनेंडार यहैमंत्रसवहुन
परधान्योंसेनवंधप्रभुकीजें सवदलउतरिहोइपारगन
जोनकोऊरनछाजें यहसुनिमेंआयोलंकामेंदेखिन
गरअकुलानों रामचंद्रपरतापदुहूंदिसजलधरनरतप
छानों दससिरबोलिनिकटवैठायेंघोकहोतिमनसतिभा
व उद्दिमकहाहोतलंकाकोकौनेंकियोउपाव जामवंत
अंगदबंधूमिलिकेंसेंउहिपुरऐहैं मोहिआछिनजा
तु आनिनमरिकेसिंदेखनपैहैं हौसनभावकहौलंकाप
तिजोवजीवतुमपाऊं सकलभेवव्योहारकटकौपर
गटभाखिसुनाऊं वारवारयोंकहतनहिंतोहतिलेहौं =सकृत
प्रांन मेरेजानकनकपुरछिरिहैरामचंद्रकीआन कुंभ
करनहूंकह्योसभामेंसुनोआदिउतपात एकसेंघोहम
वूझसभामेंचलतसुनाएकवात कामअंधकेसहदु
दंवधनजैहैंएकहिवार सोअवसतिहोतितिहिंओस
रकोहैमेटनहार औरमंत्रउरनहिअवमानोंआजुवि
कटरनमांडो ऊचेवांहरघुपतिकेसनमुखकैकरिय
हतनछांडों यहजसजीजानिपरमपदपाऊंउरसंसेस
वछोड़ सूरसकुचजोसरनसंभारौंतवीधर्मनहोइ
४४८ ॥सेनवंधउपाव॥रागमारू॥ रघुपतिचंद
विचारकरयो जानोंमानिसगरसायरसोंकुससांथरेप
रयो तौ निजामकोरवासरवीतेसिंधुगुमानभरयो की
न्होकोपकुंवरकमलापतिनवकरधनुषधरयो

दसनेप्रआयौ अतिव्याकुल देख्यौ वानरउच्यौ दुमपषां
नप्रभुवेगिमगावहु रचनासेतकरैं नलअरुनील सुत
विसकरमाछु अतपषानतर्यो सूरदासस्वामी प्रता
पतें सवसंतापहर्यो ४४९ ॥रागसारंग॥ आपुनतर
रिनरि औरनतारत असमप्रचेत प्रगट प्रगटपानीमें व
नचरडारत इहिविधिऊंचीवाटपाटसें आपनिहारत
वुद्धिनसकतसेतरचनारचिरामप्रतापविचारत जि
हिजलवतनसमात बूडिसंगऔरलेवोरत तिहिंजल
गाजतमहावीरसवतिरत आंबिनहिमोरत रघुपति
चरनप्रतापप्रगटसुरव्योमविवाननगावत सूरदा
सक्यों बूडतकलऊ नामनबूडतपावत ४५० ॥सिंधुओ
लंघन॥ सिंधुतटउतरतरामउदार रोषविवसकीनौं
रघुनंदनसुरपतिशंभुविचार सागरपरगिरिगिरिपर
अंवर कपिघनकेआकार गरजकिलककरपांतिउठतिमा
नो दामिनीपावककछार पैरतफिरेंपयोदधनीरस
लिताउलटिचिरार्ई मनोरघुपतिमैं भीतसिंधुपत
नीध्यौ सारपटार्ई वालाविरहदुसहसवहुनकोंजा
न्योराजकुमार वानरदषश्रवनतकरिताको व्याहनल
गीनवार सोरनलंककलस आभूषनमनिमुक्तामनो
हार सेतवंधकरितिलकसूर प्रभुरघुपतिउतरेपार
॥४५१॥ मंदोदरीवचनरावनप्रत॥रागधनाश्री॥ दे
खिरेवह सारंगधरआयो सायरतीरभीरवानरकी

सिरपरछत्रतनायौ संखकुलाहलसुनियनलागे ली
लासिंधुबंधायौ सोवतुमहालंकगवभीतरअतिकौकोप
दिवायौं परमकोटिजाकीसेनासुनियत जंबुजुएकरूप
टायौं सूरदासजोहरिनिवेमुखतिनकैनकहुसुखपायौं
४५२॥रागमारू॥मोमतिअजहुंजानुकीदीजै लंकापति
तियकहतिपियासोंयामैंकछूनछीजै पाहननारे
सागरबांध्योंनापरचरननभीजै बनचारएकलंकातिहि
जारीताकीसरवरियोंकोजैसौ वेत्रभुवनपतिकरहिकृपा
अतिकुटुंबसहितसुखजीजैं आवनदेछिवानररघुप
तिकेनैरोमननपतीजै सूरदासप्रभुलंकजारिकैं राज
भभीछनदीजैं ४५३॥रावनवचनमंदोदरीसौं॥कहा
तूंकहतित्रियवारवारी कोटितेतीससुरसेवाशिवकीक
रैं रामलछिमनदोऊहैंकहारी मनकौवाघिमैंराखि
यौं कूपमैंदेहिआवनकहाडरतिनारी कहतिमंदोदरी
मेटिकोंसकैहरिजोरचीसूरप्रभुहोनहारी ४५३॥अं
गदवचनरावनसौं॥रागमारू॥लंकपतिपासअंगदप
ठायौं सुनिअरेअंधदसकंधलैसियमिलिसेनकरिबं
धरघुवीरआयौ यहसुननजरिजरिमरयौवचननहि
मनधरयौकहातैंरामतैंमोहडारयौं सुरअसुरजीतिमैं
सबकियैआपुवससूरममभुजनपुनिहुंलोकधारयौं
४५५॥रागसारंग॥रावननवलगहैरनगाजतजबल
गसारंगधरिकरनाहसारंगपानविराजत जबकुबेर

रंध्रहेजानतरचिरचिकैरथसाजत रघुपतिरावि प्रतापतेदे
खौंउडगनज्यौंतुहि भाजत ज्यौंमहगवद पुंडरीकेसंगवड
वाजतहेवाजत औसेंसूरअसुरअनेकस वसंगतेरेहैं
राजत ४५६ ॥रागकेदार॥ जानिहौवलतेरोअवरावन
परऊंकुटुंवसहितजमआलयतेकदेहिरघुवीरहिआवन
उरौंरूपरिपुभटवरसनमुखलैहैसंभिनासवलताऊं
अगिनपुंजसतवानधनुषधरितोहिअसुरकुलसहत
जराऊं अरिहौंनामअचलपसुपतिकौंपूजाविधिकौतिक
दिखराऊं दसमुखछेदिसुपक्वतेफलज्यौंउरसंकरदस
सासचराऊं देहौराजभभीषनजनकौंलंकापुररघुआ
निचलाऊं सूरदासनिस्तरिहैंप्रभुमुहियहजसकरेंदीन
जनगाऊं ४५७ ॥अंगदवचनरावनप्रत॥रागमारू॥
मोकौरामरजायसुनांही सुनिदसकंधनिसाचरनाततरघ
लेवरोछिनेमांहीं पलटिधरौंतोखंडभूमिपरजोवलअ
जासंभारौं राखौंमेलिभंडारसूरससितिहिंनागदज्यौं
फारौं करौंनिसंकलंकगढढाहौंसुरसंकोचनिवारौं
श्रीरघुनाथप्रतापचरनगहिउरतेंभुजाउपारौं ४५८
॥रावनवचन॥रागमारू॥ रेरेचपलविरूपढीठतूंवोलत
वचनअनेरौ जियतजाहकहूंमोआगेतेंप्रानप्रहारौंतेरौ
कैसुरसंगजुगलवंधूविनुमानहुअसुरअहेरा तातिलो
कमेंगावतहेसवप्रवलनामनामेरा ४५९ ॥अंगदवच
नरागमारू॥ रेरेअंधवीसहुलोचनपरत्रियहरनविका
री सूनेभवनगवनतेंकीन्होसाघरेघनहिंटारी आजहं

कह्यौसुनैजोमेरौंआएनिकटमुरारी जनकसुतालैचल
पायनपरिश्रीरघुनाथपियारी ४६० रावनवचन॥ सं
कटपरैजुसरनपुकारौंतौछत्रीनकहाऊं जनमहितेनता
सअराध्यौकैसेंहिनउपजाऊं अबतोसुरयहैवनिआरिहु
रिकौनिजपदपाऊं एरससीसईसनिरमाइलकैसेंचरन
छुवाऊं ४६१ ॥अंगदवचन॥ सूरारघुपतिशत्रुकहाव
त जाकेनामध्यानसुमिरनतेंकोटियज्ञफलपावत नार
दआदिसनकादिमहामुनिहूंमनवचक्रमधावत अंबरी
कपहलादभक्तमिलिनिगमनेतिजिहिंगावत जाकीघ
रनिहरीछलवलकरि तातेंपलकलनलावत दसअरुआ
ठसंखवनचरलैलीलासिंधवंधावत जाइमिलौकौ
सिलनरेससौंमनअभिलाषवढ़ावत देसीतालकैस
पाइपरिनवलअंकैसवकहावत तूसूल्यौदससीसवीस
भुजमोहिगुमानदिखावत वंधउमारिडारिहौंसूतल
सूरसकलदुखपावत ४६२ ॥रावनवचन॥ रेकपिकौं
पितुवैरविसार्यौ तोसमकुलकंन्यायनिउपजौजि
हिकुलशत्रुनमार्यौ ऐसोसुभटनहिरहिमंडलदेख्यौ
वालसमान तासौंकियौवैरमैंहार्यौ कीनीपैजप्रवान
ताकौवधनकियौइनरघुपतितोदेषतविदमान ता
कीसरनभयौक्यौंभावैसवरसुनोदेकान रेदसकंध
अंधमतिमूरखक्यौंभूल्यौयहिरूप सूरजननहिंवास
हूंलोचनपर्यौतिमिरकेकूप धन्निपिताजापरपर

सुन्नित राघौ सुजा अनूप वा प्रताप की मधुर विलोकनि पर
वारौ सब भूप जो तुहि नाहि वाहु वल पौरुष अरु धरा जघौं
लंक मो सम तन ए सकल निसाचर लरत न मानै संक जव
रथ साजि चढौ नैरे सनमुख जिय हि न आनौं दंक राघौ से
न सम नन सघारौं करौ रुधिर मैं पंक श्रीरघुनाथ चरन वन
उर धरि क्यौं नाहि लागतु पाइ सव केरे सिपर मक्कनानी मैं स
वही को सुखदाइ हौं जु कहत लै चलौ जानुकी छाडौं सवैं
फां उहान सनमुख होहु सूरस्वामी कै मक्कन कृपानिधान
४६३ ॥राग मारू॥ लंकपति इंद्रजीत हि वुलायौ कह्यौ ति
हि जाहु रन भूमि दल साजि कै कहा भयौ राम कपि जोरि ल्या
यौं कोपि अंगद कह्यौ धरौ धर चरन मैं नाहि जो सकै
कोऊ उठाइ जो विना युद्ध कि ये जांहि रघुवीर फिरि यह सु
नत उठे जोधा रिसाई रहे निजु हारि नहि टारि कोऊ सकै पौ
उठौ न व आपु रावन अति रिसाई कह्यौ अंगद कहा मम च
रन कौं गहतु चरन रघुवीर गहि लै निचाई सुनत यह स
कुचाइ पौगवन निज भवन कौं वाल सुत हू उहा तैं सिधा
यौ सूर के प्रभू कौं नाइ सिर यौं कह्यौ अंधर सकंध कौ का
लआयौ ४६४ ॥अंगद वचन राम सौं॥ राग मारू॥
वाल नंदन आइ सीस नायौ अंधर सकंध कौ काल सूर
नन प्रभु नाहि मेव कहुन विधि कहि जनायौ इंद्रजित चढ्यौ
निज सेन सव साजि कै रावन[illegible]सैन हू साज कीजै सूर प्र
भु नारि दस कंध व कहु वंधि न हां जानुकी छोरि ज सजग
न लीजै ४६५ ॥लछमन वचन श्रीरामपति॥ राम॥

मारू ॥ रघुपतिजो न इंद्रजित मारौं तौ न हिरै चरनन कौ चेरौ जौ
न प्रतिज्ञा पारौं कुंभकरन दससीस बीसभुज दानौ दलन हि
विदारौं तब हौं सूर संधान सपूत लिहौं रिपु कौ सीस उता
रौं ४६६ ॥राग मारू॥ लछमन दल संग लै लंका घेरी पू
रब माझ पछिम उत्तर दिसा समर इहि बिदिस कौं उनंझ जा
न हेरी रीछ लंगूर किलकार करत घेरी आन रघुबीर की जा
इ फेरी पाग गए हूट पटरी लूट सब नगर के सूरदरबान इक
छौ जाइ नेरी ४६७ ॥मंदोदरी वचन रावन सौं॥ राग मारू
रावन उठ निरखि देखि आजु लंक घेरी कौटजतन करि रहौ
सिख मानी नहीं मेरी कुंभकरण छकि लसा नक पि अंधका
र आयो रवि को रथ सूझत नहि धूरि गगन छायो पौरपा
र टूटि परे भागे दरबाना लंका मैं रोरि परी अजहू तें न जानं
कौ रघुरार तोर तौ गमन जो तिमाजै सूरदास लंकपर चक्र सं
ख बाजै ४६८ ॥राग सोरठ॥ लंका फिरि गई राम दुहाई
कहति मंदोदरी सुनि पिय रावन तैं कहा कुमति कमाई द
स मस्तक मेरे बीस भुजा हिं सो जो जन की भाई मेघनाद से
पुत्र महाबली कुंभकरन से भाई रहु रहु अबला बोलन न
बोलौ उन की करति बडाई जानि लोक ने पकार मगाऊं बे
न पसा दोऊ भाई मारि तुम्हें महरावन मारै देहि भभीखन
राई पौन को पूत महाबली जो धाप लमें लंक रजराई जन
क सुता पति हिं रघुवर था संग लछमन से भाई सूरदास प्र
भु तुम्हहि मारि के देहैं बंध छुडाई ४६९ ॥मेघनाद युद्ध रा
ग मारू॥ मेघनाद ब्रह्मा वर पायो आहुति अगिन जिवा

रु संतोषी निकस्यौ रथ वैठ्यौ न न नायौ आयुध धरें समस्त
कवच सजि गरजि चढ्यौ रन भूमिहि आयौ मनौ मेघ ना
पकरि तु षाव स वान दृष्टि करि सव न ज नायौं कीनौ कोप
कुंवर को तिलन व पंथ आक स सायक न छायौ हंसि हंसि
नागफांस सर सांधन वंधन वंधु समेत न वधायौं नारद स्वा
मी कह्यौ निकट ह्वै गरुड़ास न काहें विसरायौं भयौ पोष
द सरथ के सुतन कों मुनि सुन ग्यान हमायौ सुमिरन ध्यां
न जानि आयौं नागि प्रेम प्रांस सव सेन छुडायौ सूर वि
रान चढ़ि सुर पुरनौं आनंद अभै निसानव जायौ ८७०
॥ कुंभकरन रावन संवाद ॥ राग मारू ॥ लंकपति अनुज
सोवत जगायौ लंक पुर आइ रघुनाथ डेरा दयौ त्रिया जा
की सिया में लै आयौं नैं वुरी वहु करी कहा तू हि न हो मैं धं
ति जस अजस जग में वगायौ सूर अवउर न कछ युक्त सोसा
जन कह होइ सु वहि जो दई भायौं ८७१ ॥ लछमन वचन
श्री रामसों ॥ राग मारू ॥ लछमन कह्यौ करवाल संभारो
कुंभकरन अरु इंद्रजीत कौं टूक टूक करि डारौं महावली
रावन जिहि वोलन पल में सास संघारौं सव राक्षस रघु
वार कृपा तें एक हि वार निवारौं हंसि हंसि कहत भभीषन
सो प्रभु महावली दल मारौं सूरसु नत उठि धायौ रावन
क्रोध अतुल जल गारौं ८७२ ॥ जुद्ध लछमन मूरछा
राग मारू ॥ रावन चल्यौ गुमान भरयौ श्री रघुनाथ अना
थ वंध सौं सनमुष कहत षरयौं कोप कर्यौ रघुवीर धीर
न वल छिमन पार परयौ तुम रे तेज प्रताप नाथ जू मैं क

रथनुरथरयौं सारथीसहितअस्ववहुमारेरावनजोध
जरयौं दूंदुजीतलीनीतवसेंथा देवनहाहाकरयौं छूटी
वीजतुल्यवहमानोंमूतलवेधसेयौं कलनाकरत कुंवर
कौसिलपति नैननतीरढरैं सूरदासहनूमानदानकै
अंजुलजोरिधरयौं आज्ञाहोहिसजीवननल्याऊं द्रौन
ऊंचेलिह्यो ४७३ ॥श्रीरामवचन॥रागमारू॥ निरखि
मुखराघौधरतनधीर भएअतिअरुनविसालकमल
दललोचनमोचितनीर वारहवरसनींदहैसाधीतातें
विकलसरीर वोलतनहींमौनकहासाधीविपतिव
टावनवीर दशरथमरनहरनसीताकौरनवैरिनुकी
भीर दूजौसूरसुमित्रासुतविनुकौनधरावैधीर ४७४
॥रागमारू॥ अवहौंकौनकौमुखहेरौं रिपुसेनासमू
हदलउमडीकाहिसंगलैधेरौं दुखसमुद्रजिहिंपार
वारनहिंतापैनावचलाई केवटथक्योरहीअधवीच
हि कौनआपराआई नाहींभरथशत्रघनसुंदरि जि
नसौंचितलगाऊं वीचहिभईऔरकीऔरैं भयौश
त्रुकौभाऊं मैंनिजप्राणतजौंगोसुनिकपितजिहैसी
तासुनिकैं केहैकहाभभीषनकीगतिभयौसोचुजि
यसुनिकैं वारवारसिरलेलछिमनकौंनिरखिगोदपर
राखैं सूरदासप्रभुवारवारयौंहनूमानसौंभाखैं
४७५ ॥रागमारू॥ कहाकहौंमाततपुत्रकुमार कैसे
जायरघुनाथपुकारैसंकसुवहमार इतनीविपति

भरथसुनिपावैं आवैवेगिसजूथ करगहिधनुषजगतकों
जीतैंजितकनिसाचरजूथ नाहींऔरहितूकोईसमरथ
जाइपराऊंदूत कोअवहैपौरषदिषरावैविनापौनके
पूत इतनींवचनश्रवणसुनिहरषैयोफूलौअंगनमात
लैलैचरनरेणनिजप्रभुकीरिपुकोंओननन्हात अहो
पुनीतमातकेसरसुतनतुमहितवंधुहमारे जिकारोमरो
मप्रतिनांहीपोतषगनेंतुम्हारे जहांजहांजिहिकालसं
भारेतहांतहांत्रासनिवारे सूरसहाइकियोंवनवसि
कैंपुनिविपदादुखटारे ४७६ ॥हनुवंतवचनश्रीरा॥
मप्रति॥रागमारू॥ रघुपतिमनसंदेहनकीजैं मुहिदे
षतलछिमनकोंमरिहैं मोकोआग्यादीजै कहौतोसू
रजउगनदेवनहिदिसदिसवाढैनाम कहौतोगनसमे
तग्रसिषानौंजमपुरजाइनराम कहौतोकालहिषंडषं
उकरिटूकटूककरिकाटौं कहौतोमृतुहिमारिडारिकैं
षोजपतालहिपाटौं कहौतोचंदहिलैअकासतैंलछि
मनमुखहिनिचौरौं कहौतोपैठिसुधाकेसागर
जलसमसमेंबोरौं श्रीरघुवरमोसोंजनजाकेताहि
कहासकराई सूरदासमिथ्यानहिभाषतमोहिरघु
नाथदुहाई ४७७ ॥श्रीरामवचनहनुवंतप्रतिरागमा
रू॥ कहौंतवहनुवंतसोंरघुराइ दोनागिरिपरआहिस
जीवनिमतुकजियतसोंपाइ तुरतजाइलेआवउहानें
विलंबनकरऊअबभाई सूरदासप्रभवचनसुनतहनवं
तचल्योंअतुराई ४७८ ॥हनूमानसजीवनल्याव

वन ॥ रागमारू ॥ दोनागिरि हनूमान सिधायौ संजीवन कौ भे
दन पायौ नव सब सैल उठायौ चितै रह्यो तिहिं भरथ दे खिकै
अवधपुरी जब आयौ मन मैं जानि उपद्रव मारौ बान अचा
नचलायौ राम राम पहन्न हनवै पेन सुन भरथ निकट तब
आयौ पूछे सूर कौन हैं कहि नू हनुमत नाम सुनायौ ४
७८ ॥ भरथ हनूमान संवाद ॥ रागमारू ॥ कहौ कपि रघुप
ति संदेस कुसल वंधु लछमन वैदेही श्रीपति सकल नरेस
जिनि बूझहु तुम कुसल नाथ की सुनौ भरथ बलवीर वि
लपवदन दुख धरे सिया कै है जलनिधि के तीर वनमेव
सत निसाचर छल करि हरी सिया मम मात तागार नल
छमन सर लाग्यो भए राम बिनु भ्रात इतनो वचन श्रव
न सुनि सुनि कै सब न पुहमति न जोयौ आह आह कहि पु
त्र पुत्र कहि मात सुमित्रा रोयौ धन्नि सुपुत्र पिता पन रा
षें धन्नि सु कुल तिय राज सेवक धन्नि जे अंत के औसर आ
वें प्रभु के काज चिन रघुनाथ सूर के कारन मो को लेन प
ठावै पकयौ समाहि अरधनि सिवानी कौ लछिमन हि
जियावै पुनि धरि धार कहो धन लछमन राम कहा जजो
आवै सूर जियै तौ जग जस पावै मरि सुरलोक सिधावै
४८० ॥ सुमित्रावचन ॥ रागमारू ॥ धनि जननी जो सुभ
ट हि जियावै भीर परे रिपु कौं दल दलि मलि कौतुक करि
दिखरावै मो हग है लाल चकरि जियकौं औरौ समर ल
जावै मेरौ मंडल वेधि मान कौं सुरपुर जाइ वसावै को
सिल्पा सौं कहति सुमित्रा जिनि स्वामिनि दुख पावै ल

छमनकुअनसोंहोइसघुनीरामकाजजोआवैं जियेतौसु-
खविलसिजगभीतरसवजगकीरतिगावैं सूरदासप्र-
भुजीतिशत्रुकौंकुशलछेमघरआवैं ४८१ ॥हनमंत
वचनभरथसोंरागमारू॥ पवनपुत्रवोल्योसतभाव जा-
तितितातिरातिवानमैंसुनौभरथचितुलाइ औरघुप-
नाथसजीवनकारनमोकौंइहांपठायौ भयोअकाजअ-
रधनिसवातैं लछमनकाजनसायौ ल्योपर्वतसरथै
हिपवनसुतहौंप्रभुपैपहुचाऊं सूरदासप्रभुपावरामम
सिरइहिवलभरथकहाऊं ४८२ ॥कोशिल्यावचनह-
नूमानप्रति॥रागमारू॥ सुनोकपिकौशिल्याकीवात
इहिपुरजिनिआवहिंममवछलविनुलछमनलघुभ्रात-
जिनतज्योराजकाजमातहितनुमचरननमनमानें कहा
कहोंकछुकहतनआवैसुजनहोइसोजानें लछमनसहि
तसकलसेनापतिआनराजपुरकीजे नातरसूरसुमित्रा
सुतपरवारअपुनपौदीजै ४८३ ॥कौशिल्यासुमित्रा
वचनहनूमानसौं रागमारू॥ विनतीकहियोजाइपवन
सुततुमरघुपतिकेआगें यापुरजिनिआवौविनुलछिम
नजननीलाजनलागें मारुतसुतहिसंदेशसुमित्राऐसें
कहिसमुझावैं सेवकजूझिपरैरनभीतरठाकुरतौघरआवैं
जवतेंतुमगौनेकाननकौं भरथभोगसवछांडे सूरदास
प्रभुतुम्हरेदरसविनुदुखसमूहउरवाढे ४८४ ॥लछ
मनमूर्छानिरखनैं॥रागसारंग॥ हनूमानसजीवनिल्या
यौ महाराजरघुवीरधीरकौंहाथजोरिसिरनायौ पर्वत

आइ धर्‍यो सायर नट भरथ संदेस सुनायो सूरसजीव नदि दल
छमन कों मूर्छित फेरि जगायो ४८५ ॥ श्रीरामवचन रामक्र
न्द्र ॥ दूसरे कर कृपान न हि लै हों सुन सुग्रीव प्रतिग्या मेरी
ए कहि बान असुर सब गो हि हों । शिव पूजा जिहि भांति करी हैं
बधत नाहि प्रान तिन दिषै हों दैत अपराध पाप फल पेरत कु
ल समेत शिव सीस चढै हों मानों तूल गगन पारत अगिन मुख
जारि सब न ज मघं थप ढै हों करिहों नहिं बिलंब आपु उठि राव
न सन मुख हों इठ है हों रमद मड घरे वद्दि ज मोचन लंक भी
षन तुम कों दे हों लछमन सिय समेत सूरज पिस बसुषस
हत अजुध्या जै हों ४८६ ॥ रावन वध कुटुंब सहित रामम
न्द्र ॥ आजु अति कोप है रन राम ब्रह्मादिक आए विवानन
देषत हैं संग्राम घनतन दिव्य कवच सज करि अनक रधा
र्‍यो सारंग सजकरि सबल बान सूधे करि कटन टक स्यो नि
षंग सुरपुर तें आयो रथ सज करि रघुपति चढ्यो निषंग
भए असवार कांपी भूमि कहा कब कहें सुमिराति नाम मुरा
र छोभित सिंध सेस सिर कंपित पवन भयो गति पंग
कुंड हस्यो ब्रह्मा बिलषानौं जानि बचन भयो भंग धर अंब
र दिस बिदिस जु छूटे सायक किरनि समान मानो प्रलै म
हा के कारन उदित भए अति भान टूटति ध्वजा पताक छत्र
रथ चांप चक्र सर जान जूझत सुभट जात जानो दोंव न दु
म साषा पान ओनत छिछ उछरत आकास लौं गज बाज
न सर लागि मानो गिरि तर नरि धून ते उपजी है अति आ
गि उठि कवंध भ रान भीत कें नि कसति हैं उर जागि उ
भ

सा॰ सूर॰सा

४ ११६ रतसंग्रामसज्योसोंग्राठनचलतसुसिरलैमागि रघुपतिरिस
पावकप्रचंडअतिसीतास्वाससमीर रावनकुलअरकुंभकर
ननपुनिसकलसुभटरनधीर भएभसमकछुवारनलागी ज्यौं
ज्वालापटचीर सूरदासप्रभुआपुनवाहवल कियेनिमषमें
ग्रार ४८७ ॥भभीषनराजदेनवाननराममारू॥ रघुपति
अपनौवचनप्रतपाल्यौं तोस्यौकोपिप्रवलगढरावनटू
कटूकरिडास्यौ कहुंभुजकहुंधरकहुं सिरलोटतमानौमं
दमतवारौं भभकतनरघनश्रोननमैंतननाहीपरतनिहा
रौं चहूंओरसकलसुखसागरवांधिउदधजलपारौं सुर
नरमुनिसवसुजसवषानतदुष्टदशाननमारौं उरपत
वरुनकुवेरइंद्रजममहासुभटपनधार्यौ रहौमासकौ
पिंडुप्रानलेगयौवानअनियारौ जोगृहपरेरहैंपाटीतर
कूटेकालडसारौ सोरावनरघुनाथछिनमेंकियोगाध
कोचारौ सिरसंभारिलयोउमापतिरह्यौरधिरकोगा
रौ दयौभभीषनराजसूरप्रभुकियौसुरननिस्तारौ ४८८
॥मंदोदरीवचन॥ रागमारू॥ कहतनाथरानिमंदोदरीरानी
चौदहसहससुंदरीउभी उन्हैंनगानतमहाअभिमानी वार
वारवर्ज्योनहिमानैंजनकसुताहैजिनघरआनी एजगदी
स एईकमलापतिसीतातियहैंवोकरजानी लीनीगोरभ
४लंक भीषनरावनकुलकेसीमतिठानी चोरीकरीराजहू
षोयौअलपमरुतौआइतुलानी कुंभकरनसमुझाइर
हेपचिदेसीतामिलिसारंगपानी सूरसवनकोंकह्यौन
मान्यौतोषोईअपनीराजधानी ४८९ ॥अथरावनवध॥

॥ राग मारू ॥ सुरपति हि बोलि रघुवीर बोले अंमृत विष्टि रन षे
त ऊपर करौ सुनत तिन अमी अंतुरघोलें उठे कपि पालि तत
काल जैजै करत असुर भए भक्ष रघुवर निहारे सूर प्रभु अगम
महिमा न कछु कहि परति सिद्ध गंधर्व जै जै उचारे ४८०
॥ सीता मिलाप श्रीराम ॥ राग मारू ॥ लछिमन सीता देखी
जाइ अति कृस दीन छीन तन प्रभु बिनु नैनन नीर बहाइ
जामवंत सुग्रीव भभीषन करी दंडवत आइ आभूषण व
हु मोल पाटंबर पहिरि मातवनाइ विनु रघुनाथ मोहि सब
फीके आया मेटि न जाइ पुहप विमान वैठि वैदेही त्रिजटी स
व पहिराइ देषि दरस राम मुख मोस्यौ सीया परा मुरछाइ सू
रदास स्वामी तिहुंपुर के जग उपहास डराइ ४८१ ॥ सीता
अग्नि प्रवेश परीक्षा हित राग मारू ॥ लछिमन रचौ हुतास
न भाई यह सुनि हनूमान दुखपायो मोपै लख्यो न जाई
आसन एक हुतासन वैठी ज्यौं कुंदन अरुनाई जैसे रवि इक
पल घन भीतर विनु मारुत दुरजाई लै उछंग उपसंग हुतास
न निहि कलंक रघुराई लई विवान चगाइ जानुकी कोटि म
दन छवि छाई दसरथ कह्यौ देव हू भाष्यौ भूमि विवान
लगाई सिया राम लै चले अवधपुर सूरदास वलि जाई
४८२ ॥ राग सारंग ॥ वैठी जननि निकरति सगनौती लछि
मन राम आइ अव मिलिहिं मोहि दोउ निमीलि कमोती इ
तनी कहत सुकाग उहां तें हरी डार उडि वैठ्यो जौलौंहो जा
यौं भरजीवन सराना मनोज पिहौं दधि ओदन दोना

रिदैहौं अहमायनमेथपिहो अवकैजोपरचोकरिपाऊं अलदेषो
मरिआवैं सूरदाससोनेकेपानीमगोचाचअलपावैं ४८३
॥ संदेषरामाइनकथालंकाकांड॥ सुभट अंगदवलाविकटवा
नामहाद्वाररघुवीरकीविह आयो पौरिनेंदौरिदरवानदससी
ससौं जाइसिरनाइयोंकहिसुनायो सुनिश्रवनदसवद
नसदनअभिमानकरिनैनकीसेनअंगदवुलायो देषि
लंकेसकपिभेसहहरहरहस्योसुन्यौंभटकटककोपारपायौं
विविधआयुधधरेसुभटसेवकषरेतत्रकीछांहनिर्भैजना
यौ देवदानौमहाराजरावनसभाकहनकौंमंत्रइहंकपिप
ठायो रंकरावनकहातंकनेंरोइतौ दोऊकरजोरविनतीव
नारौं परमआभिरामरघुनाथकेनामपरवीसभुजसीस
दसवारिडारौं ऊपटिहाटकमुकटपटकिभटभूमिसोंऊ
तिनरवारतौसिर संघारौं जानुकेनाथकेहाथतेरोमरन
कहामतिमंधतुहिमदिमारौं पावकपावककैरेवारसुरपति
सु भैरैपौनपावनगिरैदौरिभिरै मानतनारदकैरेवारगुरकैहेंव
दवुसापदैमोभिरैं जछमनवासुकेना गमुनि सुरे
ं धर्पसवु ज वसुजाति ं छिये चेरे शंठदसकंठगुनगुनियहैंरामनयसीदइ आनिडेरे तय
वलीसनवाइसनप्रवरविनावारपरकौनपारखानकौरें
कौनऐसोवलीसुभटजननीजन्योंएकहीवानतनकिवाल
मारै परमगंभीररनधीरदसरथतनैसरनगएकोटिकीो
नेगुविसारौं जानिलिच्छधदसकंधिगहिरंगतेमलेमत
मुरवतेंउवारें आपिकरिवाराहिआलनंकाधिपतिसूठ

कहाराम कौं सासनाऊं शिंभु कौ सम सव कटक काय रकैरौ
स्वास आज्ञा सव चैनेरउराऊं होइ सनमुख भिरौं संकन
हिं मन धरौं मारि सकल कटक सागर वहाऊं कोटि नेतास
मम सेव नित पुन करन कहां अवराम नर सोंउराऊं परौं
प्रहराइ भै घंतरि पछांइ सोति रै जोल घिर भै स्यौं अघाऊं
सूरसा जो सवै देहु डौडी अवै एक नै नैं एक रन करि वनाऊं
चढ्यौ रावन सुन्यौ से सन व सिर धुन्यौं उमडि रन भूमि
रघुवीर आए रामसर लागि मनो अगिनि गिरि पर जरि
उछलि छिन छिन सरन मान छाए लंउ मकलंउ धुक्रि प
रन धरि धरन परत रुधिर सलिता वही पार पाए मारि दस
कंध भट वंध कौं सूर प्रभु राजि वभैन बरासिया ल्याए ४
८४ ॥उत्तरकांड श्री रामवचन॥रागमारू॥ हमारी जन्मभू
मय हगांव सुनउ कपि सखा सुग्रीव भभीषन तास अजुध्या
नांव देखत वन उपवन सरिता सर परम मनोहर गांव अ
पनी प्रकृति लिये वोलत हौं सुरपुर मैं न रहांव इहां जे वा
सी अवलोकत हौं आनंद उरन समांव सूरदास जो विधि
सकुचे हि तौ वैकुंठ न जांव ४८५॥ हनुमंत वचन भरथ प्रति
॥राममारू॥ राघौ आवत अवध आज रिपु जीतें साधे देव
काज प्रभु कुसल वंधु सीता समेत भुसकल देस आनं
द देत कपि सोभित सुभट अनेक संग ज्यौं पूरन ससि सा
गर तरंग सुग्रीव भभीषन जामवंत अंगद गाध अल सुख
न संत नल नील सुपर अतकीर कुछ कपि कहौं कहां

सा॰ ११६
२६

पुरजनेजलद जवनही पवनसुतविविधिवात नवतुरी
सभासवहराविरात ज्योंपावसरितुमेंप्रथमघोर जल
जावकदादुररटनमोर जवसुनेंभरथपुरानिकटभूप
नवस्यो नगररचनाअनूप प्रतप्रतगृहतोरनधुजाधू
प सजिसजलकलसअनकदलीकूप दधिदूबहरदफ
लफूलपान करकनकथारजुवतगान पुनिभेरविद
धुनिशंखनाद सवनिरखिपुलकिआतिहीप्रसार दे
खतप्रभुकीमहिमांअपार सवकिसराए मनोवुधिवि
कार जैजैदशरथकुलकंवलभान जैजनकुमुदसारि
प्रजापान जैदोऊभूतलसोभासमान जैजैजैसूरनसव
दआन ४८६ ॥श्रीरामवचन॥ रागमारू॥ देखिअविराजवे
नर्थे आए ममपावरीसीसपरजोकेरअंगुरारघुनाथ
वताए छानसरीरवीरकेविछुरे राजभोगचितते विसराए
नपअवलघुदीरघतासेवास्वामधर्मसवजगसिखाए
पुहपविमानदूरिहीछांडोचांपिचरनप्रभुप्रमकरिधाए
आनदमगनदुहुनकोऔसे ननकदंडमनुगिरिउगए में
टतउतसोभयोपंथपरविरहअगिनि मनोजरतवुझाए
औसेंमिलेसुमित्रासुतकोंगरअकहियलोचनजलछाए
छतियांमिलिपरसेपुरवासीसकलसुखसिंधनहाए सी
नारामचंद्रमुखनिरखतसूरदासकेमेनसिराए ४८७
॥अजुध्यावासीवचन॥ रागमारू॥ वेदेखोरघुपतिहैं
आवत दूरिहितेंदुतियाकेससिज्योंव्योमविमाननछा

वत सीयसहत संगवीर विराजत अवलोकत आनंद वढा
वत चारुचांप कर पर सस रस सर मुकर धरें सोभा अति पा
वत निरखत नार त्रियजा निधसे सुरजन मम भूमि की कथा
चलावत उपजे देव काज सुख संपति सूरज सब जग रन
नें पावत एहन वत अंगद हनुपानि धि पुर पैठ ति जिन कों ज
स गावत ४९८ ।।रागमारू।। अति सुख कौसिल्या उठि धा
ई उदित वदन आनंद मुदित सदन तें आरति साजि सुमित्रा
लाई ज्यों सुरभी वनवसति वछ विनु परवस वट दै कैं म
राई चली सांझ समुहाइ श्रवत थन उमगि मिलन जन
नी दोऊ आई दधफल दूव कनक कोपर पर आरति जोति
विचित्र वनाई अमी वचन सुनि होत कुलाहल देवन सुर
न दुंदुभी वजाई सुरंग वरन पट पर तपां वडे वा छिन स
कल सुगंध सिचाई पुलकित रोम हरख गदगद सुर जुव
तिन मंगल गायागाई निज मंदिर में आनि तिलक दै
द्विजन असीस सुनाई सियासहित सुखवसो इहां त
तुम सूरदास वलिजाई ४९९ राग देखन कों मं
दिरन चढी रघुपति पूरनचंद विलोकत मनपुर अवाधि
त रंगवढी अति प्यासादरसन की आरत निसवासर गुन
रामरढी रहीन लाज लोक सुख निरखत सवन सुनाई
असी सपढी भई विह की पिह करम मनु वदि घुरका अ
ति आनल उढी सूरसुदिछि सुधा अवलोकत मनु विधि
माता पेरि गढी ५०० ।।राग पुनि जे आसन

सा.
११८

आनिहरे दधिमधुनीर कनककोपर आनेभरथभरे प्र
थमभरथवेठाइकेंपौढे वूहगहि पाइपरे हौंपाऊं प्रभुपार
पखारन तु चकरि आपुकरे निजकरचरनपखारि प्रेमरस
आनदशोककरे जनुसीतलसेंतातसलिलदै सुचितस
मोकरें परसतपानचरनपावनदुखअंगअंग सकलह
रें सूरसहित आमोद चरनजललेकरसीसधरे ५०१ ॥रा
ग ॥विनतीकिहिविधिप्रभुहिसुनाऊं महा
राजरघुवीरधीरकोंसमैनकवहूंपाऊं जामुरहत जामिनि
केवीते तिहिंओसरउठिधाऊं सकुचहोतिसुकुमारनीद
मेंकैसेंप्रभेजगाऊं दिनकरकिरनिउदितव्रह्मादिकरु
द्रादिकद्वकगाऊं अगिनतभीरअमरमुनिगनकीतिहि
तेंहेरनपाऊं उठतसभादिनमधिसेनापतिदेषतप्रि
रिफिरिआऊं न्हातषातसुखकरतसाहिवी कैसेंकरिअ
नषाऊं रजनीहोतआवतगुणगावतनारदसेसिरना
ऊं तुमकीन्होंकरविनुरघुपतिकिहिंतिनतीमेंआ
ऊं एकउपावकरौंकमलासौंश्रीमुखवेरसुनाऊं पति
तउधारननामसरूपप्रभुयहतुछापहुचाऊं ५०२ ॥इंड
अहिल्यावधावरननराग भैरो ॥ सुरपतिगौतमनारि
निहार आतुरह्वैगयो विनाविचार आगरूपकरितिहि
गृहआयौ अर्धनिसातिहिवोलसुनायौ गौतमल
ख्यौप्रातहैभयौ न्हानकाजसोसरितागयौ तवसुर
पतिमनमांहिविचारी पतिविरताहैंगौतमनारी ॥

हे

मेरोरूपजानिजोजैहैं तौवहमहाश्रापमुहिदैहैं गौतमरू
पधारितहांआयौ मुदितभयौअहिल्यापायौ कह्यौअ
हिल्यातूकोआहि वेगिरहांतेंबाहिरजाइ इहिअंतरगौ
तमजबिआयौ इंद्रजांनियहवचनसुनायौ तूरइहानी
तजिरहांआयौ मूरखतेंपरत्रयमनल्यायौ इनभगकी
तुहिइछाभई भगसहश्रदेतोतनदई इंद्रशरीरसहस
भगभई छप्योसुकंवलनालमेंजाइ कालवहुतगयौ
रविनायौं सुरगुरुरिषिनसहिततबआयौ जगपअरा
धप्रभुन्हवायौ तबसवरिषिनदईअसीस भगतेभे
अरीजगदीस भगस्थाननेत्रतबभए अबिइंद्रहिसुर
पुरलैगए परत्रयमोहइंद्रदुखपायौ सोन्रपमैतुहिक
हिसमुझायौ परत्रयनेहकरेंजोकोई जावतनर्कपरतुहै
सोई सुकन्रपसौंयहकहिसमुझायौ सूरदासत्योंहीक
हिगायौं ५०२ ॥राजानहुषकथा॥ सुरपतिकौंसरापजब
भयौ लज्जितकैसुरपुरतजिगयौ भूपन्रपतिकेमहरिषि
आइ कह्यौसुरराजकरौतुमराइ भूपइंद्रराजजबपायौ
इंद्रानीकौंदेखिलुभायौ कह्यौइंद्रानीमोपैआवै न्रप
सोताकोंकहावसावै सुरगुरुसौंयहवातसुनाई अवधक
रनउनकहिसमुझाई सचीन्रपतिसौंसोईभाषी न्रपसु
निकैंइहैंमिराषी सचीअगिनकौंतुरतपठायौ सुरप
तिदिसादेखिसोंआयौ इंद्रानीसुनिव्याकुलभई अ
वधिकराबितानकैगई इहिअंतरभूपसुत्रलाई तव

सा·
११८

तिनऐसीबुद्धिउपाई कह्योतुमअस्वमेधनहिकिये ऋषिआ
ग्यातुमनरपतिभए विप्रनपरचढिकैतुमआवहु तवतुम
अस्वमेधफलपावहु नृपतिऋषिनपरकैअसवार चल्यो
तुरतसचीकेद्वार कामअंधकछुरहीनसंभार दुर्वासाऋषि
कौंपगमार सर्पसर्पकह्योवारंवार तवऋषिदीनौताकौं
डार कह्योसर्पतैंभाष्योमोहि सर्परूपतूहीनृपहोहि तव
सरापऋषिसोंनृपपायौ तवऋषिचरननमाथोनायौ
रह्यौआपमोगतिजोहोइ ऋषिमोसौंअबभाषौसोइ कह्यौ
जुधिष्ठिरदेखैजोइ तवउधारतेरौनृपहोइ नृपऐसौहैंप
रत्यपुकार मूढकरतहैविनाविचार ज्योंसुकनृपसौंकहि
कौं समुझायौ सूरदासत्यौंहीहीगायौ ५०४ ॥कछदेवजानी
कथा॥ अवगतिगतिकछुसमुझिनपरै जोकछुप्रभुचाहैसो
करै जियकौकियौकछुनहिहोइ कोटिउपाइकरैजोकोइ
एकवारसुरपतिमनआई शुक्रअसुरनकौलेतजिवाई
ममगुरहूंविद्यापढिआवै मरसुरनकौं फेरिजियावै
निजगुरसौंभाष्यौतिनजाइ शुक्रअसुरनकौंलेतजिवा
इ तुमहूयहविद्यासिषआवहु मृतकसुरनकौंतुमहूजि
वावहु तवतिनगजकौदयौपठाइ कह्योशुक्रसौंतिनसि
रनाइ मैंआयौतुमपैऋषिराइ तुममुहिविद्यादेहुप
ढाइ शुक्रकह्यौतासौंयाभाइ देहौविद्यातोहिपढाइ
विद्यापढैंकरैंगुरसेव सवविधिसुधानाकौदेव शुक्रसु
ताहिदेवजानीनाम सवगुनपूरनरूपअभिराम सुरगुर

सुतकौं देषि लुभाई देषैं ताहि पुत्र पढौनाई काल वितीत निज
कछव भयौ गाइ चरावन कौं सो गयौ असुरन मिलि यह हि
यौ विचार सुरगुरु सुत कौं उरैं मार जो यह संजीवन पढि जा
इ तौ हम शत्रुन देहि जिवाइ इहि विचार कछ कौं मारयौ
शुक्र सुता कौं पंथ निहारौ सांझ भए हू जव नहि आयौ शुक्र दिनं
पास तिन जाइ सुनायौ शुक्र हू दैमें वरयौ विचार कह्यौ रा
क्षसन उारौ मार सुता कह्यौ तुम फेरि जियावौ मेरे जिय कौं
सोच मिटावौ शुक्र ताहि पढि मंत्र जियायौ भयौ तासन
न याकौं भायौ पुनि इह तिम दिरा मांहि मिलायौ दयौ दां
नवन शुक्रहि पियाय तवैं तैं हत्या मद कौं लागी यहै जा
नि सव सुरन तियागी आप दयौ ना कौं या मार जो तुहि पि
ये सुन कैहि जार ता विनु शुक्र सुता दुख पायौ तव कवि
तासौं कहि समुझायौ मारौ कछ कौं असुरन धार मदिरा मैं
मुहि दयौ पिवार जाहि जिवाऊं तौ मैं मरौं जो तुम कहो सो
ई अव करौं कह्यौ विनै करि सुनि कवि राइ दोऊ जियैं सो
करौ उपाइ संजीवन तव कछहि पढाई तासौं तायौं कहै सो
बुझाई जव तुम निकसि उदर तें आवौ याविधा करि मोहि
जियावौ उदर फारि तिहि बाहिर कियौ मन कच्छ कै सा
विधि जियौ पुनि वउ उदर मैं बाहिर आयौ संजीवनि पढि
कै जियायौ वहुत काल वीतियौं भयौ कछ कवि लिन्न विन
नया सौं कहैं जो तुम मारी मुहि आज्ञा होइ तात मात कौं
देषौं जोइ कवि तनया कहि मोहि वियाहि नचव कह्यौ न

सू.सा.
१२८

गुरु वहिनी आइहै तिन तब आप दयौ या भाइ । विद्या पढी सुवि
रयो जाइ कच हूता हि कह्यौ या भाइ विद्या बहु हि सिखयौ
आइ यह कहि कच अपने गृह आयौ पिता पास विरतांत सु
नायौ सुक्र नृप सौं ज्यौं कहि समुझायौ सूरदास त्यौं ही कहि
गायौं ५०५ ॥ देवजानी जजाति विवाह कथा ॥ दानव वृषपव नृप
ति बलधारी नाम सुमिष्टा तासु कुमारी ताहि देवजानी सौं
प्यार रहै नित तासौं पल न रहि न्यार एक बार ताके मन आई न्हो
वे आरज प्राग सिधाई तासंग दासी गई अपार न्हान लगी स
व वस्त्र उतार अधियारी आई नहीं भारी दनुजसुता तिहि तें न
निहारी वसन सुक्र तनया के लीन्है कारन उतावल पहिरन चा
न्है सुक्रसुता जब आई बाहिर वसन न पाए तिन ता ठाहर
असुरसुता कों पहिरैं देखि मन मैं कीन्हौ क्रोध विसेखि कह्यौ
मम वसन न हीं तुही जोग तुम दानौ हम तप सो लोग मम
पितु दयौ राज नृप कारन तूं मम वसन हरत न हि उरति तिन
कह्यौं तो पिता भिख्या खात बहुरि कहति हम सौं ए वात या
विधि कहि करि क्रोध अपार दीनों ताहि कूप मैं डारि नृप
ति जजाति अचानक आयौ सुक्रसुता को दरसन पायौं द
यौ वसन तब अपनौं डारि हाथ पकरि कैं लई निकारि
बहुरौ नृप निज गृह सिधायौ सुता सुक्र सौं जाइ सुना
यौ सुक्र क्रोध करि नगर तियाग्यौं असुर नृपति सुनि
कपि संग लाग्यौं जब बहु भांति विनै नृप करी तब कवि
यह वानी उचरी मम तनया प्रसन्न जिहि होइ करौ असुर
पति अब तुम सोइ सुक्रसुता सौं कहौ पुनि आइ आ

ताहो इसु करौं उपाइ । तो पुत्री मम दासी होइ । जो तुम कहौ करै
ममसोइ । नृप पुत्री दासी करि दई । दासी सहस तास संग भई
सो सब ताकी सेवा करैं । दास भाव हृदै मैं धरैं । इक दिन श्रु
क्र सुता मन आई । देषौं जाइ फूल फुलवाई । ले दासी फुल
वारी गई । पुहप सेज रचि सोवन भई । असुर सुता तिहिं वि
जन डुलावैं । सोवै सेज सु अति सुष पावैं । तिहिं औसर जजा
ति नृप आयो । श्रुक्र सुता तिहि वचन सुनायो । नृप मम पा
न गहन तुम करौ । श्रुक्र संकोच हृदैं मति धरो । नृप कौं पृथ
म दयो मैं आप । उनहूं आप दयो मुहि आप । ताहि और ड
न हि सकै मिटाइ । तातैं ब्याह करौ तुम राइ । नृप कह्यौ क
हौ श्रुक्र सौं जाइ । कियौ ब्याह कवि नृपति बुलाइ । असु
र सुता के संग दई । दासी सकल तास संग गई । दंपति भोग
करत सुष पाए । श्रुक्र सुता पुनि द्वै सुत जाए । कह्यौ श्रमि
ष्ठा औसर पाइ । रितु कौ दान देहु मुहि राइ । नृप ताहू सौं
कीनो भोग । तानि पुत्र भए वि[illegible]धि संजोग । श्रुक्र सुता ति
हि पुत्र न देष । मन मैं कीनो क्रोध विशेष । कहौ सुमिष्ठा
सुत कहां पाए । उन कह्यौ इक रिषि रिपा तैं जाए । बहुरि कह्यौ
क रिषि कौ कहा नाम । कह्यौ स्वयुंवर देषी तिन वाम । पुनि
पुत्रन सौं पूछ्यो जाई । पिता नाम मुहि कहौ बुझाइ । वै पुत्र भा
षौ यौं ताहि । नृपति जजाति पिता मम आहि । सुनि नृप सौं
कियो जु हवनाइ । बहुरि श्रुक्र सेती कह्यौ जाइ । पाछै तें जजा
ति हूं आयो । कवि ता सौं यह वचन सुनायो । तैं जोवन मद

नैयहकीन्हों जातैंआपतोहिमेदीन्हों जराअवेतुहिआयेआ
इ भयौविरधतवकह्यौसिरनाइ अपितुमतौआपमुहिद
यौ पूरनकामनाहिमेभयौ जातैंजोमाहिआ(तो)हाइ आय
सुमानिकरौंअवसोइ कहौजरातेरासुतलेय अपनोतर
नायौसोहिदेय भोगमनोयतवतूं पावै मेरोवचनट
यानहिंजावै वडेपुत्रसोंजउकह्यौआइ उनकह्यौविरधअ
तोहि यौनहिंजाइ नृपकह्यौराजनहिहोइ विरधपनोलेरा
जासोइ औनेरैहूंसोंनृपजवभाष्यौ नृपति[illegible]वचन
काहूनहिराख्यौ लघुसुतनृपतिजुठायौलयौ अपनो
तरुनायौतिहिदयौ वरषसहस्रभोगनृपकियै पैसं
तोषनआयौहियै कह्यौविषैनैंतृप्तिनहोइ भोगकरौ
केतौकिनिकोइ नवतरुनायासुतकौदीनों विरधपनौ
अपनौपुनिलीनौं वनमेंकरीतपिस्याजाइ रह्यौह
रिचरनमैंचितलाइ याविधिनृपतिकनारथभयौ
सोराजामैंतनसौंकह्यौ सुकज्यौंनृपकौंकहिसमुझा
यौ सूरदासत्यौंहीकहिगायौ ५०६ ॥इतिनौमस्कंद॥
॥संपूर्ण॥ अथदशमस्कंधलिख्यते॥ दोहा॥ व्यासकह्यौ
सुकदेवसौंश्रीभागौतवखानि द्वादशस्कंधपरमसुभग
प्रेमभक्तिकीखानि नौमस्कंधनृपसौंकहे श्रीसुखदे
वसुजान सूरकहतअवदसमकौंउरधरिहरिकौध्या
न ५०७ ॥रागबिलावल॥ हरिहरिहरिहरिसुमिरनुकरौं
हरिचरनारविंदउरधरौं जेचरनविजैपारखनहोइ

विप्रसापकरिसुरभएसोइ दोइजनमज्योंहरिउधारे सोतौ
मेंतुमसोंउच्चारौं दंतवक्रससिपालजुभए वासुदेवहैं
सोपुनिछए औरौलीलावहुविस्तार कीन्होज्योंमोर
पनुनिस्तार सोअवतुमसौंकहौंवखानि प्रेमसहितसु
निहृदैंआनि जोयहकथासुनौचितलाइ सोवहतरि
वैकुंठहिजाइ जैसेंसुकनृपसोंसमुझायौ सूरदासत्यौंही
कहिगायौं ५०८ कहौंसुककौमाग्यैनविचारि हरिकी
भक्तिजुगजुगविरधैगी आनधर्मदिनचारि चिंतातजोपरी
छतराजासुनिसिषसाषहमार कमलनैनकीलीलागा
वतरटतअनेकविकार सतजुगसततत्रेतातपकीन्हेंद्वा
परपूजाचार सूरभजनकलकेवलकीजैलज्जाकानतिं
वार ५०९ ॥रागभैरौ॥ आदिसनातनहरिअविनासी
सकलनिरंतरघटघटवासी पूरनब्रह्मपुरानवखानैं
चतुराननशिवअंतनजानैं मिहमाआगमनिगम
जिहिंगावैं ताहिजसोधागोदखिलावैं एकनिरंतर
ध्यावैंग्यानी पुरुषपुरातनसोनिरवानी सुकसारदसे
करतविचार नारदसेनहिंपावैंपार जपतपसंजमध्या
नअवैं सोईनंदकेआंगनधावैं लोचनश्रवननर
सनानासा विनुपदपानकरैपरगासा अतनअसि
तसितवरनतधारैं मनमेंमनसाकहाविचारैं विस्वं
भरनिजनामकहावै घरघरगोरससोईचुरावै जराम
रनतेंरहितअमाया मातपितासुतबंधुनजाया आ
दिअंतरहैसबगुसाईं परमानंदसदासुखदाईं तानक

सू.सा.
१२१

पहूंचैमैबोलै सोवछ्रानकेपाछेंडोलै जलधरअनिलअ
नलनछाया पांचतत्तनिंजगउपजाया लोगस्वेराखें
अनमारें चोदहभवनपलकमेंटारें कालडरैजाकेडर
भारी सोऊखलवाधोमहतारी मायाप्रगटसकलज
गमोहैं कारनकरनकरैसवसोहैं जाकीमायालखैन
गुर कोई निरगुनसगुनधारैसोई शिवसमाधिजिहिअंतन
पावें सोईगोपग्वारईचुरावें गुनअनंतअविगत[illegible]
[illegible]हिजनावें जसअपारश्रुतपारनपावें चरनक
मलनितरमापलोवें चाहेंरसपलोपलजोवें अग
मअगोचरलीलाधारी सोईराधाकुंजविहारी जोरसव्र
जादिननहिपाया सोरसव्रजग्वालीनहाया वडभा
गएसवव्रजवासी जिनकेसंगखेलेअविनासी सूर
सुजसकहिकहावखानें गोविंदअगाधगोविंदजानें
५२० ॥रागनट॥ अद्भुतचरितगोकुलराइ स्वानलकौं
पानकीनोंपियतदूधखिराइ पूतनाकेप्राणसोषेरहें
उरलपटाइ कहतिजननीदूधडारतु विठततकछुनहि
बाइ त्रनावर्तअकासपटक्यो सिलापरपरयोआइ
उरतमूलतडोलमोहनधरेदेतझुलाइ वकासुरकीचों
चफारीदेखिदुष्टसुभाइ कीरपिंजरदेनअंगुरीललन
लेतमजाइ विनासीपकघरअध्यारे स्यामधरतनघा
इ अघासुरउरपैठिनिकसेबालवस्तजियाइ लयो
गिरवरदोहनीभरलेतवांहपिराइ सकटभंजनपरस
कंजनकठिनलागतपाइ लिख्योहारीनागनारी

स्याम देषि उपार सहस फन पर नितन की नो सप्तताल वजार जम
म लाजु नि तोरि न रवरा हृदे प्रेम वषार हस्त पत्र पलास पत्र व
गहत देहन पार हेरव छन वाल नो कृत हेत दौरी मोर वहत
नि सब में हेत वन में द्रुमन द्रुतन जार वषभ अंज न हतन
के सा हत्यो पूंछ फिरार मजनन सघन समेत मोहन दे षि
व्याई गाई घोष नारि संग मोहन र चोर सव नार कह
ति जननी व्याह को जेव लजन वदन दुरार कहा वरनो जीम
को टिक होंहि वुद्धि उपार सु प्रभु की अगम महिमा उन वरनी
जार ५११ ॥राग गौरी॥ द हन विरंच अह सेस सुकन रज वासी नकी
ज्योति रूप जग नाथ जगत गुरु जगत पिता जगदीस जुग जुग
ज पल पर में डोलें सो प्रभु गोकुल को ईस रुख रुख रोम विरार को
टि पुनि अनत कोटि व्रह्मंड ता को उचके ले नि ज सो दा अप
ने निज भुज दंड आनंद रूप सदा रस संजम चिंता मनि आधे
न सो निज जसुमति को पे पीवत भक्तन कों सुखदेन रविस
सि कोटि कला धर लोचन त्रिविध निमा अजि तान अंजन
देति हेत सुतन केंदु करत हि जसुमति तात कमला नायक
वैकुंठ नायक सुख दुख जा के हाथ सिर अमरि करलत
ह न गि न पग चार न व छ राजात जाके जिठर लोक त्रिय जल
थल पंच तत्त्व चहु षांन सो वा लक के रूल नु पल ना जसुम
ति मैन निधान छिन सब त्रिय परकारि कहनो मैव ल छलि
दयो प तार दिहरी उलंघि सकत न हि सो प्रभु षेलत नंद दुवा
र हरन करन दाता भुगता प्रभु विस्वंभर जग जानि ति हिला गि
र माषन की चोरी वाध्यो है नंद रानि विदत वेद उपनषद पर
ग ट छहो रस भुगता नाथ गोपी गोप ग्वाल मंडल में हंसि हं २५

सि

जूठनखात वकीव चाषुरसकरत नाबुन अयशलंववूष८
नासु केसीकंसहिपहगति दीनी राधेचरननिवास भक्त
वछल प्रभुपतिउरधारनरह्यौ सकलभरिपूर माखरो
क्रिपर्यो तिहि द्वोरपतितसिरोमनि सूर ५१२ नैना
मेरे हाथनरहे देषतदरसनस्यामसुंदरकौं जलकी धारविव
हे वहनीचिकौं धावत आतुरऐसेहीनेनगहे वहतोजात
समातुउदधिमें एइततिअंगरये वहअगाधकहूवारपार८
नहिंएसोमानहियार लेमनमिलें त्रिवेनीदेकै सूरसमुद्र
अपार १ नैनामेरेमानतनाहिनवरजो इनकेलिये सखी
सुनुमेरीवाहिररहतनघरजौ जपपिमानपिनातमत्रास
ननऊनमानतहरजौं अतिआधीनभईसंगडोलतपरीपरा
येगरजो विनदेखे चटपटी सीलागतिमनहूमंत्र पढियर
जो कोकहिमेरेसखीसुनमेरी सूरस्यामकोथरजो २ नैना
नीकेंउन्हेरये नजुलवगायो नहीमेंजानेंा एदोऊ निदरिगये ऊे
नेभएभांवतेहरके सदारहतउनपाही कामाउनशिरधुनत८
नारिसवयहकहिकहिपछितानी सूरषकाज्यो बुद्धिपाछि
ली हमहीकरिदियोआगे अवतोमिलेसूरकेप्रभकोंपा
वतनांवकेभागे ३ नैनानहिआवेतुमपास कैसेंहू
केनिकसेंहियातें चातिहीभयेउदास अपनेस्वारथकोस
वकोऊ मेंजानीवात वेसुषहीपाइकेसविराकेकौं पतिया
न: ।।रामसारंग।। वालविनोदभांवतीलीलाअतिपुनीतम
निभाषीहो साधुसाधुकैसुनउधारीतिनसकलदेवमुनि

साख्यहो कालिंद्रीकेकूलवसतहैं मधुपुरीनगरविसाल
हैं कालनेमिउग्रसेनिवंसइकुउपज्योंकंसुभुवालहैं
दई विवाहि कंसवसुदेवहि अघभंजनउरमालाहो हय
गयरत्नहेमपाटंवरआनरमंगलचाराहो समरतभईअ
नाहदवानीकंसआनपरीमाराहो याकोछिओतेरेजो
सुतकरिहैप्रानप्रहाराहो रथतेंउतरिकेसंगहिराख्यो
करोषड्गपटसाराहो २ तववसुदेवदानकहिमाख्योपुतज
नत्रियवधुकरईहो मोकौंभई अनाहदवानीतातेसोखु
नधरईहो औरदसकैलैजोविषफलरत्तहिविनुसर
ईहो जाहिमारितैकोंऔरविवाहोअग्रसोचुक्योमरई वैर
हौ ३ यहसुनिसकलदेवमुनिभाख्योराजाऐसीनहि
कीजैं तुममानीवसुदेवदेवकीजीवदानइन्हेदीजैं की
न्हेजगयहोतुहैंनिर्मलवेदभंगनहिकीजैं याकोछि
ओतेरेजोसुतसावधानह्वैकेलीजैं ४ पहिलोपुत्रदेव
कीजायोलैवसुदेवदिखायो वालकदेखिकंसहंसिदी
न्हों सवअपराधछुडायो कंसएकलरिकाईकानीनार
दकहिसमुझायो जाकोउमनकरतहौराजासोपहिलेनहि
आयो ५ यहसुनिकंसपुत्रधरिलीनो रहिविधिसकल
सिधारो तवरैवैनतनभई व्याकुलकैसेंप्रानप्रहारौं कं
सवंसकोनासकरनहों कहंलौंजीउउवारौं यहअपराध
मिटेकवश्रीपति औरैकाहिसमारौं धेनुरूपह्वैधरनि
पुकारातिवविरंचिकेद्वारा सवमिलिगयेजहांपलशो

नमजिनगावतिआगमअपारा छीरसमुद्रजहांहरिपौढेंबोले
निगमअपारा उधरीधरनिदनुजकुलमारीहैनरहेओ
तारा छूछीमसनकपवनभरिपूरतनुमविनुजनमविचारी
अस्तुतिकरतअमरअमरादिकअवगतिकथानुम्हारी
हंसनकपरपापंउजहांलौंदेवोहदेविचारी अमततछांडि
विषैरसपीवतलगतिअधमकौमारी ८ सुरनरदे
वतपापसुपछासवकोआदरसदीनों गोकुलजन्मलेहु
संगमेरेजोचाहुसुखकीनों जिनिमायाविरंचिसवमोहे
वावानीकरिचीन्हो देवेकोविआनछिरौहिनीआपु
उआसनुसीन्हीं कछुदिननाएदेवकीअपनीवदनति
हारनलागी कंसकालदेतनोविपायोमनहामनअनु
रागी यहसुनिकंसआइभयोठाडोदेखिमहानमजा
न्यौं अवकीवारमोरअरआयौंआउअपनुपोन्या
न्यो १० हरकौंगर्भरियोनादिनतेंवदनउज्यारीलायो
मानौसरदचंद्रमाप्रगटयौदेखतिहीनभभाग्यो सुरमु
निसदैवंधनाआएवसुधोसोवतजागे आवनासी
कौं आगमुजान्यौसकलस्वअनुरागे कछुदिनगए
एगर्भकेआलसउरदेवकीजनायो कहाकहौंसखिना
हिंकोरईचाहतिगर्भउरायो औरौंवुकरोहिनीपहुंची
वसुधोनिकटवुलायों अतिलक्षोकनादबसुखदा
कअजनजन्मधरिआयो १२ माथेंमुकटपीतांवरसौ
हैउरसोहेभ्रगुरेखा शंखचक्रगदापद्मविराजितआ

तिष्ठतापसिसुवेषा नवदेव श्रीमईजियथ्या कुल अनुनच रिनमेदेषा वेदीसकुचिनिकटपतिवोलें दुहुंपुत्रसुखये षा १३ सुनीदेवश्रीश्रानजन्मश्रीतोश्रौंकथासुनाऊं तुममांगयोमैंदियोनाथकैं तुमसौंवालकपाऊं शिवसन कादिश्रादिब्रह्मादिकग्यानध्याननहिश्राऊं भक्तवत्सल मेरेविरदवानोविरदहिकहालजाऊं १४ यहकहिमाया मोहअतध्यानेंसिसुहरोवनलागे हौवसुदेवजाइकैं गोकुलतुमहीपरमसभागे अतिरामिनीधरनिलीश्री धौंजमुनाजलसोघागे लैवसुदेवधसेईसधेसकलदेव अनुरागें १५ श्रागेजाइजमुनजलगाहिरोपाछेसिंहहुंहागें गुलफजंघकटिग्रीवनासिकालीन्हेस्यामउछागें नवचरनपसारिपरसिकालींद्रातरवनितारनेंश्रागें ऊ परसेसहसफनुछायेंलेगयेोउछाहउमागें १६ प हुंचेजाइमहरमंदिरमेंनेकहूनरीभकानी पाईघरीजो गमीसंपतिवसुधोगोदलेंश्रानी धरवसुदेवतुरतलेंश्रा ए सकलदेवजेवानी देवेश्रोचिश्रोतरीकन्याकंसपती तनमानी १७ यहसुनिकंसपकैलेधायोंतवेदेवेश्राधी ना यहकन्यामोहिवकसवंधतूदासीजानिकरीदीनी कूरकंसअपवंसविनासककसमुझोनहीरिसजीश्रानी नाजानियेंहोरछलकीन्होअवगतिगतिनहिजानी १८ पटकीसिलागईश्रासासहिछुभजसोंलपटाई अष्टभुजासवोलीसुदेवीकंसअवधिनियराई जेसें

सू.सा.
१२४
२४

मीनजलहिमेंजीउतसकेंनआपुलघाई ऐसेंकंसकाल
है प्रगटे ब्रजमेंजादौराई १८ जैसेंव्यालवेगजोडाके वेगा
पधारीडा की जैसेंसिंहनिरखिमुखअपनोंपरेकूप
मेंधाकें ऐसेंकंसमहाअघघेख्यौ भूल्यौराजसभाके
गतिकीपतिपतिकीगतितेरी मसुहाथहेताके २० यह
मुनिकंसगयौदेवैकेंरह्यौ चानमेंदवौजाई याकीकोवि
ओनसौंहेसुनवुझैमंत्रवुलाई चारिप्रहरसिज्यासुख
पैंढेनेकहूनींदनआई २१ देसदेसके दूतवुलावहुका
सौंहेंघलुजेसो अवगतिअजरअजीतअमरतो करताकों
वलुजेसो दिनहीदिनवहपुरखुहोतुहे वठनुअसुरघलुजे
सें वुधुतुंहिजनमानवुलाएधनपलिकाधनजैसेंरो २२
जागीमहरिपुत्रमुषदेख्यौ आनदतूरवजायौ रोचनक
लसहेमद्विजपूजाचंदनभवननिपायौ वारनवंदणवा
रवधाईजुवतिजुमंगलगायौ दानदयालसेदोरिनप्रग
टे फूलनिगोकलछायौ २२ आनंदमेंभरतकौतूहल
उदितमुदितनरनारी हैनिभेजुनिसानवजायेदेतनंदकौं
गारी नाचतुमहरमगनमनहियेकीकानें पोरुवजावें
नारी सूरदासहरि गोकुलप्रगटे मथुरागर्वप्रहारी २४
॥रागविहागरो॥ कमलनैनससिवदनमनोहरदेखिहो
विचित्रगति स्यामसुभगतनपीतवसनदुति उरसों
हैंवनमालाछवि नमनिमुकटप्रभाअतिउदितचक्र
नचितैंतेउनमानुनपावति अतिप्रकाशनिसिनिमिर

विमल छुटिकलिमलिपतिहि जगावति दासनसुखदाइ
रवी आति सोचति घटसुत सोक सुरति जिय आवति सूर
दासप्रभु देहु प्रकृतिभुज भुजके चिन्ह दुरावति २ ॥राग
केदार॥ होजियसोंविचारकछु कीजे जिहिं तिहि विधि
दुराइयह बालक राषिकें संपेलीजे मनसिवचासि कर्म
नाकहतिहिं नपतिहि तौ नपतीजे बुद्धिबलछलकैसे
हूकरिकें काढिनेंओनलेदीजे नाहिनइतनो भाग सुयह
रसनिनलोचन भरिपीजे सुनहु सूर ऐसे सुत कोमुष
निरषिनिरषि जगजीजे ३ ॥रागबिहागरो॥ सुनुदेव
कीकोहि तूह मारो असुरकंस अपवंसविनासन सिर
ऊपर बैठेरषवारे ऐसेंको समरथ त्रिभुवन मैं जो यह बा
लकनेकुउवारें षड्ग धरें आछो नो देषत अपने कराषि
नमेंहंपछारे यह सुनि अति अकुलाइ गिरीधरनि मैंजनी
रभरि दोऊ ठाढ़े दुषिनदेषि वसुदेव देवकी प्रगट भए
धरिकें भुजचारे बोलनलठे प्रति ग्याय हे प्रभु मोतेंउ
वेरनकमोहिमारें अतिदुषमें सुषुदेपितुमातहि सू
रकेप्रभु नंदभवन सिधारे ४ ॥रागकेदारो॥ भादोंकीरे
निअंधियारी द्वारकपाट कोटिभटरोकें दुहुंदिसि कंत
कंसभैभारी गरजत मेघ महाडर लागत वीचवगी जमु
नाजलभारी तबनैंसोचुपहें जियमैं रे वेधो दुरिहि स
सिवदनउज्यारी कनप्रियबोलवचनकरिराषौ बरका
हिनतादिनजियमारी कहिजा कोएसो सुतविछोरे

सू॰सा॰
१२५
२५

सोकैसें आवैमहतारी करिनविलापदेवकीसोंकहि दीनद
यालमकलमेंहारी छूटेनिगडवचहिगएगोकुलसूरसमु
झिदेविपतिनिवारी ५ ॥रागकेदार॥ देवकीमन मनचक
तभई देषौआइपुत्रमुषकाहिन ऐसाकहुंदेषा नहिदई
सिरपरमुकटपीतउपरना भ्रगुपदउरभुजचारिधरें पूरव
कथासुनाइमातकों तुमभांग्योयहभेषुधरें छोरेनिगड
सुवाएपहरूद्वारकपाटउघरे तुरतमोहिगोकुलहिजा
हुलैंयहकहतहिसिसुभेषुधरे नवहीराइउठेवसुदोसु
निएहरषवंतनंदभोनगए वालकधरिलैकरिसुरदेवा
आइसूरमधुपुरीभए ६ ॥रागकेदारो॥ हरिमुषदेषिहो
वसुदेव कोटिकामसरूपवालक कोउनजानेभेव हि
रेनारेपरेपहरू नींदउपजीयेहु दामिनीचहुदिसचमकै
सघनवरसैमेह चारिभुजजाकेचारिआयुध निरषिकै
नपत्याहु अजहुमनपरतीतनांहिन नंदघरहिलैजाहु
सिंधुआगेंसेषुपाछेंनदीभईभरिपूरि नासिकालौंनी
रुआयोपारपैलोदूरि गोदतेंकुंआरदीनी नहीपायोने
द पुलकिकैहरिचरनपरसैं पारगयोवसुदेव महरि
डिगमनिजानिराषे अमरमुनिआनंद सूरदासविला
सवृजहितप्रगटेआनंदकंद ७ ॥रागकेदार॥ अधिया
रीभादौंकीराति वालकआनवसुदेवदेवकी परैपगैपछि
नाति वीचनदीगरजतघनवरषत कहिनहे आवनजा
ति वैगतिउगतिसेजसोवरिमें कंसडेरनिअकुलाति गो

कुलहोतिवधाईदेषतिमहतरिसहाति सूरदासआनंदनं
दकेंदानदेतवहुभांति ८ ॥रागुविलावल॥ आनंदेआ
नंदवढ्योअति देवनिदुंदुभीवजाएसु नीमधुपुरी प्रग
टेजादौपति विद्याधरीकिंनरीगंधरउपजावतअनु
रागअमितगति गावतगानधरानियहसुनियतगरजत धुंन
घनतिहिकालजतनजति वरषतिसुमनदिवेससूरसुर
जेजेभारभरतमानरति शिवविरंचिइंद्रादिसनकमुनि
फूलेसुखनिसमानमुदितमति ९ ॥रागविलावल॥ गो
कुलप्रगटभएहरिआइ अधमउधारनअसुरसंघार
नअंतरजामीत्रिभुवनराइ माथैधरिवसुदेवलैआएनं
दमहरघरगएपहुचाइ जागीमहरिपुत्रमुषदेषतिपुल
किअंगउरमैंनसमाई गदगदकंठवोलिनहिआवैंहरि
षवंतह्वैनंदवुलाई आवहुकंतदेवपरसनभए पुत्रभ
योदेषहुमुषआइ दौरिनंदगएसनमुखदेख्योंसोसो
भामोपैवरनीनजाइ सूरदासपहिलैंयहमांग्योंदूध
पिवावनजसुमतिमाइ १० ॥रागविलावल॥ नंदराइ
केनौनिधिआई माथेमुकटश्रवनमनिकुंडलपीतव
सनभुजचारिभुजाई वाजततालमृदंगवेदधुनि
घिसेंअरगजाअंगचढाई दधिपीवतआतचंदनछि
रकतउलटिपरतअतलेतउठाई आतिनदूवलियें
छिअठाठेवारनवंदनवारवधाई सूरदासमवमिलेंक्षे
परसपरदानदेतनहिनंदअघाई ११ ॥रागदेवगां॥

आजुकोउवनरेजिनिजाइ सवगाएवछरासमेतिब्रज ल्या
वहुचीतिवनाइ वेटाहैघरभयोनंदकेकहतसुनाइसुना
इ कनहोगहलकरनवेकाजेवेगिचलोउठिधाइ चहुंदि
सिघोषघहेकोलाहलआनदउरनसमाइ आयोआ
पनेमनकोचीतोनैननदेखोआइ एकफिरतिदधिहू
वदेतहंसिएकरहतिगहिपाइ एकपरस्परदेतवधा
ईएकहंसतउठगाइ वालकविरधऔरनरनारीभयो
चौगुनोचाह सूरसकलअतिप्रेममगनमनगावतनरा
जाराइ १२ ॥रागुरामकली॥ हौंतोइकनईवातसुनिआ
ई महरिजसोदाढोटाज्यायोघरघरहोतिवधाई द्वारे
भीरगोपगोपिनुकीमहिमावरनिनजाई अतिआ
नंदहोतुगोकुलमेंरतनभूमिसवछाई नाचततरुन
विरदअरुवालकगोरसकीचमचाई सूरदासस्वा
मीसुखसागरसुंदरस्यामकन्हाई १३ ॥रागुरामक
ली॥ हौंसखीनईचाहएकपाई ऐसेदिननिनंदकेसु
नियतउपज्योपूतकन्हाई वाजत पनवनिसान
पंचविधिरुंजमुरजसहनाई महरिमहरब्रजहाटलु
टावतआनदउरनसमाई चलहुसखीहमहूमि
लिजैयेवेगिकरोअतुराई कोउभूषनपहिरेकोउ
पहरतिकोउवैसेहीउठिधाई कंचनथारदूवदधि
रोचनगावतिचलीवधाई भांतिभांतिवनिचलीजु
वतिगनउपमाकहतिनआई अमरविमानचढेसव

देखतजेधुनिसवरसुहाई सूरदासप्रभुमनकेहेतहिनदुखनि
केदुखदाई १४ ॥रागगूजरी॥ सखीरीकाहेनेगहरुलगाव
ति सोधौंकहोइनीसुखसुनिकें कैयोनाहिनउठिआव
ति आजुसुवानविधानाकीनी मनजुहुतानितभावति
सुनकेनामविधानाकेगृहनालगिनुम्हेबुलावति कनक
थारलेदधिओदनभरिवेगिचलीउठिगावति अंचलुउ
डनुसिथलकवरीसिरछुटिजहांतहांधावति साचेहूदि
ननंदराइकौंहौनाहिनवीरावति सूरदाससुरपतितिहि
औसरसुमनविष्ठिवरषावति २५ ॥रागआसावरी॥
वृजभयोमहरिकेंपूततवयहवातसुनी सुनिआनंदेस
वलोग गोकुलगनितेंमुनी अतिपूरवपूरेपुन्यरोपा
सुफलपुनी ग्रहनक्षत्रसवसोधिकेंकीनीवेदधुनी १
सुनिधाईवृजकीनारिसहजसिगारकियें तनपहिरेनू
तनचीरकाजरनैनदियें कसिकंचुकीतिलकलिलारसो
भितहारहियें करकंकनकंचनथारमंगलसाजिलियें
२ सवअपनेअपनेमेरनिकसीभांतिभली मनोलाल
लमनितुकीपांतिपिंजराचूरिचली तेगावतिमंगल
गीतमिलीदसपांचअली मनोभोरभयेरविदेखिफू
लीकमलकली ३ उरअंचलुउडतिनजानति सारीसु
रंगसुही तवश्रवननितरिलतसोनावेनासिथलगु
ही मुखमंडितरोरीरगसेंदुरमागछुही सिरवरषतकु
सुमसुदेशमानोमेघफुही ४ इकपहुचीपहिलिहिजा

र:सा.
२५७

इअतिआनंदभ[illegible]री लईजीमारवेंसेनखुलाइसवैसमुपाइ
परी नेवरनउघारिनिहारिदेतिअसीसघरी चिरजीव
हुजसुधापूनपूरनकामभरी ५ धनिदिनधनियहरात
धनियहपहलघरी धनिमहरिकीकोषिभागसुहागभ
री जिनिजायोऐसोपूतअतिसुघफलनिहूरी धिरी
थाप्योसवपरिवारमनकोसूलहरी सुनिग्वालनिगा
इवहोरिवालनवोलिलिये गुहिगुंजावनधातुआंग
आंगचित्रगए सिरदधिमाघनकेमांटगावतगीतनए
धाघिमृदंगवजावतसवनदभवनगए ७ इकधाइनं
दजूकेपाससुनिसुनिपाइपरी इकआपुआपुहामांह
हंसिहंसिअंकभरे इकअंवरसकलउतारिदेतनहिसं
कभरे इकदधिअछितरोचनदूवसवनिकेसीसधरें
८ इकनाचतकरतकुलाहलछिरकततहरददही जहीं
जहींमनुजाइजोंतुकतहींतहीं मानोवरघतभादों
मासनदीघनदूधवही अतिआनंदमंगलग्वाल
काहूवदतनहीं ६ तवन्हाइनंदुभएठाढेलैकुसहा
थधरे नादीमुखपितरपूजाइअतिसोचुहरे वरवि
जगुरुपहिराइसवकेपाइपरे घिनमगमदमलयक
पूरसवकेतिलककरे १० तंहगैयागनिनजाइतरुन
सवकछरवगी वेचरहिजमुनकेकूलदूनेदूधचगी ते
दीनाहिजनअनेमाहरघिआसीसपढी ११ नवकुल
पनेमित्रसुवंधुहसिसवकोलिलिये घिसिचंदन

चारनभाटसबविनैंतिलकदिये उरमालापहिराइबसनवि
चित्रवदिये वरषतभादौंआसाढदादुरमोरदिये १२
मागधवंदीसूतसवैनंदभवनभरे वोलेलेलेनामहेत
कोऊनविसरें जिहिजिहिजांचौजेसोताहिनोरसहि
टरे अतिदानमानपराधानपूरनकामकरे १३ नवचो
वरओरमगाए सारीसुरंगचुनी तेदीनीवधुनवुलाइजे
सीजाहिबनी देतिअसीसचलीतचिआपनीआपनी
वेअंदरहसापहुचीनिजुपुनितोधिघनी १४ नवघर
घरभेरिमृदंगपटहनिसानवजे बंवाधीवंदनवारधुजा
जलकलससजे ताहिदिनतेंलोगसुषसंपदनतजे सुनि
सूरसवनिहैंयहगतिजेहरिचरनभजे १५ ॥रागविला
वल॥ धन्यजसोदाभागतुम्हारेजिनिएसोसुतज्यायौ
जाकेदरसपरससुषतनकुलकीतिमिरनसायौ विप्र
सुजनचारनवंदीजनसकलनंदघरआए नूतनसुभ
गहरदद्रूबदधिहरषिअसीसवधाए गावतिरूपकहत
सुमलषनअवगतिहैंअविनासी सूरदाससुनतप्रभु
कोजसआनंदेब्रजवासी १६ ॥रागसारग॥ गोरिगलोग्र
सुरवीनऊसारददेवीतोहि गाऊहरिकोसोहिलोमनआ
षरदेमोहि वधायोहरिजूकौमनरह्यौ आठमासवं
दतुधिमोनवधौपियोकपूर दशयेमासमोहनभयेमे
रेआगनवाजततूर हरषीपासपरोसिनीभएहराषिन
गरकेलोग हरषासषासहेलरीआनदभयोसुभयोग

सू॰स॰सा॰ १२८
१२.२८

बाजनबाजेगहगहे बाजेमादरभेरि मालिनिबांधेतोरनेमे
रो॰अंगनरोपेकेरि अनागरसोंनोदोलनागाठिल्यायोच॰
तुरसुनार बीचबीचहीरालगेनवलालगरेकोहार जसुम
तिमागसुहागिनीजिनिज्यायोहरिसोपूतु अरीलालकी
आरती॰अरुदधिकाटोंसूत नाइनिबोलहुनवरंगारो॰
बामहिबरबेगु लाघटका॰अरुहूमकसारीदेहुदाईको
नेगु आरचंदनकोपालनोंगढिदैगुरढारिसुढार लें
आयोगढिकेबनो॰बिसकर्मासुतिहार धनिसुदिनध
सु निसोघरीधन्यजोतिकजागु धन्यधन्यमथुरापुरीहो
धनिधनिमहरिकोंभागु धनिधनिमातादेवकीधनि
वहदेवसुजान धनिधनिमाटीअष्टमीधनिजन्मलियो
जवकान्ह कांधेकोरेकापरेहो॰अरुकाढोघीकोमोनि जा
तिपांतिपहिराइकेंसवसमदिअनासोंपोति काजररो
री॰आनोरीमिलिचकौरोछठीकोचार ऐपनकेसीपूतरा॰
सवसखिनिकियोसिंगार कीटमुकटसोभावनीसुभगकौ
ग॰अंगवनमाल सूरदासप्रभुगोकुलजन्मेमोहनमदन
गुपाल १८ ॥रागगौरी॥ गोपीगावहिमंगलचारवधायो
ब्रजराजके॰ अवभयोअमरसवकाजुवधायोब्रजराज॰
जके रानीजायोमोहनपूतुवधायो ब्रजराजके वहुतना
रिसुहागसुंदरिओरगोपकुमारि सजनपानमुनापुले
लेदेहिपरस्परगारि आनंदअतिसोभयोघरघरनृत्य॰
ठांवहिंठाउं नंददारेभेटलैलैउमजेगोकुलगाउं सखि

वेद्वारे देति स्याम सांन सोंक वनाइ नवल किसोरी मु
दित कैहै गह निज सुके पाइ चोक चंदन लीपि कैं आ
रती धरि संजोइ कहति घोष कुमारि एसो नित आनदु
होइ करि कुरि अलं कृत गोपिका पहिरे आ भूषन ची
र गाइ वछ सवारि ल्याए भई ग्वालनि की भीर मुदित
मंगल सहित लीला करहि गोपी ग्वाल हरद अछित दू
व दधि लै तिलक करैं वृज वाल एक हेरी देहि गावहिं एक
भेटहिं धाइ एक एक न गान न कोहे इक विलाव न गाइ ए
क विर घ कि सोर वाल न एक जोवन जोग कृष्न जन्म सु
प्रेम सागर क्रीडे सब वृज लोग प्रभु मुकुंद के हेत नोतन
होहि घोष विलास देखि वृज की संपदा कौं फूले सूरज
दास १८ ॥राग गोरी॥ आजु वधायो नंदराय कै हो गोपी
गावहि मंगलचार आई मंगल सकल लै कैं ताऊपर
फलउार अ[illegible]तरोच नाइ वलै चली वहु विधि भरे प्र
थार घर घरनि गावति चली जुवती झुंड झुंड अपार
चली जुवति सब मिलि महर के घर देखन नंद कुमार
देखि मोहन आस पूरी सवै देति असीस महरि दान
वहुत दीनो अहदियो नंदराइ ऐसो सुष देष हसरवा
जन सूरजन कहि गाइ २० ॥राग गोरी॥ धनि धनि नं
द जसोमति धनि जग पावन रे धनि हरि लियो अव
तार सु धनि दिनु आवन रे दसए मास भयो पूत सु
नित सुहावन रे संष चक्र सारंग चतुर्भुज भावन रे

वनि वृजसुंदरी चली सुगाइ वधावनरे २१ ॥राग बिलाव
ल॥ कनक थार दधि रोचन तिलक बनावनुरें नंदघर
हि चली गाइ मिहरि जह पावनरे पाइनि परि सब वधू म
हरि बैठीं बरे जसुमति सुम धनि को धिज हारे बावनरे
नलेसु दिन भयो पूत अमर अजरावनरे जुगजुग जीव
हु कान्ह सुबनि मन भावनरे गोकुल हाट बजार करत
जु लुटावनरे घर घर बाजे निसान नगर जुरवावनरे
अमर नगर उत्साह अपसरा नाचावनरे बृह लियो अ
वतार दुष्ट के दावनरें दान सबै जो देत बरासि जनौं साव
नरें मागध सूत भाट धन लेत जरावनरें चोवा चंदन अ
बीर गलिनु छिरकावनरें बृह्मादिक सनकादिक गगन
नभरावनरें कश्यप रिषि सुर नातन सुलगन गनावन
रे नौनिमबन आनंद कंस हि डरावनरें सूरदास प्रभु
जन मिभगत हुलसावनरें २१ ॥राग बिलावल॥ म
हर म बन रिषि राजगए चरन धोइ चरणोदिक लीनों
अरघासन करि हिं नदरे धनि आजु बड भाग हमारे रि
षि आए अति कृपा करी हम कहि धनि धनि नंद जसो
धा धनि यह बृज जहं प्रगट हरी आदि अनादि रूप
रे घन हि इन ने नहि औतारु वियो देवै उर अवतार लेन क
ह्यौ धूप दूध पियन सुमा मांगि लियो बालक करि इ
नकौ जिन जानौ कंस कौ बध ये करि हैं सूर देह धरि सुर
न उधारन पुहमि भार ये हरि हैं २२ ॥राग कल्यान॥

सोभासिंधु न अंत रही री नंदभवन भरि पूरि उमगि च-
लि ब्रज की बीथिनि फिरति बही री देखी जाइ आजु गोकु-
ल में घर घर बेचति फिरति मही री कहँ लगि कहौं बना-
इ बहुत बिधि कहत न मुख सहसहु निबही री जसुमति
उदर अगाध उदधि तें उपजी ऐसी सबनि कही री सूर
स्याम प्रभु इंदु नील मनि ब्रज बनिता उर लाइ गही री २३
॥ राग आसावरी ॥ आजु हो निसान बाजै नंद महर कै आनँद
मगन नर गोकुल सहर कै आनँद भरि जसोदा उमगि
अंग न समाति आनंदित भई गोपी गावति चहर कै दूब
दधि रोचन कनक थार लै लै चली मानों इंद्र बधू जुरि पाँति-
नि बहर कै आनंदित भए ग्वाल करत बिनोद ख्याल भुज
भरि भरि अंक भरे उर कै आनँद मगन धेनु थन पै स्रवै थे-
नु उमग्यो जमुना जल लहर कै अंकुरित तरु पात उठि रहे
जे गान बन बन बेली प्रफुलित कलनि कहर कै आनंदित बिप्र
सूत मागध जाचक गन उमगि असी देत न रहत रह कै आ-
नँद मगन सब अमर गगन छाए पुन्य बिमान चढि पहर कै सू- पहर
रदास प्रभु गोकुल प्रगट भए संतनि हरष दुष्ट जन मन कै द्वार
२४ ॥ राग आसावरी ॥ माई आजु हो बधायो बाजै गोप नंदराइ कै
जदुकुल जादौराइ जनमे हैं आइ कै आनंदित गोपी ग्वाल
नाचै दै दै कर तार अति अहिलाद भयो जसुमति माइ कै
सीस पर दूब धरि बैठे बाबा सभा मधि द्विजनि कौं गाय दी-
नी बहुत मगाइ कै कनक माट मगाए हरद दही मिलाये-

छिरकेपरस्पर छलवलधाइकैं ओटैंदधिपलनादोमहर
केदधिकादोंमोतिनुवधाएवारमहलमेजाइकैं गोपि
निओगोपिनिगावेंदुरकैंउडेवजावैं हरषिअसीसदेंजिम
नवनवाइकैं जोईजोईमांग्योजिनिसोईसोईपायोति
निदीनेसूरदासनंदसुतनिवुलाइकैं २५ ॥रागकान्हरो॥
पालनोअतिपरमसुंदरगढिल्यौउवढैया सीतलचंदनक
टाउधरिखरादकराइरंगुरंगनाउ रंगलाउविविधिचोक
रीचुन्नउपचारगेरसमुलगाउ हीरामोतीलालमढैया
विसुकर्मासुतहाररचौहैकामसुनारमनिगनलागे
अपारनंदसुतमेहरकाजअढैया आनिधर्योनंदलाल
वारअतिहीसुंदरसुढार वृजवधूदेखैंवारवारसोभानहि
वारपारधनिधनिधन्यहैगढैया पालनोआन्योंअ
तिमनमान्योंनाकोसोदिनुधराइसषिनुमंगलगवाइ
रंगमहलमेंपौढ्योहैवारोंकन्हैया सूरदासप्रभुजीमैयाज
सुमतिनंदरानीजोरमांगनुसोइलेनुवधैया २६ ॥राग
आसावरी॥ वृजकोजीवनिनंदलाल कनकरतनमनिपा
लनोंअतिगढ्योकामसुतिहार विविधिषिलोनाभांतिके
गजमुक्तावहुधार सुभगपालनेझूलेनंदलाल जननीउ
वटिन्हवाइकैं अतिक्रमसौंलीनेगोद पौढायेपटपालने
सिसुनिरषिजननिनिमोद मातसुवनप्रलनंदलाल अ
तिकोमलदिनसातके अधरचरनकरलाल सूरस्याम
छविअरुननानिरषिहरषिवृजवाल २७ ॥जैतसिरी॥

नंदजू मेरे मन आनंद भयो मै गोवरधन तैं आयौ तुम्हरे
पुत्र भयौ मै सुनि कै अति आतुर ह्वै धायौ बंदीजन अरु
भितुक सुनि सुनि दूरि दूरि तैं आयौ इक पहिले ही आसा
लागे बहुत दिननि तैं छाए तुम दीने कंचन मनि मुक्ता नाना
भांति अनूप मोहि मिले मारग आवत मनो बहू के नूप
दीजे मोहि कृपा करि सोई जो हौं आयौ मांगन जसुमति
सुत जब अपने पाइनि षेलन आवै आगन कोटि देहु तौ
रुचि नहि मानौं बिन देषे नहि जैहौं नंदराइ सुनि बिनती
मेरी तब ही बिदा भले ह्वैहौं तुम तौ परम उदार नंदजू जो
मांग्यो सो दीनो तुम सौ और कौन त्रिभुवन मैं तुम सरि
साको कीनौं जब लैं मधुसूदन को बोलैं यह देषे घर जा
उं हौं तौ तेरे घर को ढाढी सूरदास मोहि नाउं २८ ॥राग जै
तसिरी॥ हौं तौ तेरे घर को ढाढी हौ को मो सरि कौरे आन सोई
ले हौं जोई मो मन भावै नंद महर को आन धनि नंद धनि
धन्य यसोदा धनि धनि जायो पूत धन्य भूमि ब्रजवा
सी धनि धनि आनंद करन अकूत घर घर होति आनंद
बधाई जहं तहं मागध सून मनि मानिक पाटंबर अंब
र लैन नव नन बहून हय गय सहित भंडार दिये सब पे
रि भरे सो भांति जबहीं देन बहौं करि देखन संपति बर
न अमाति ते मुहि मिले जात घर अपने मैं बूझी सब जा
१६ ति हंसि हंसि देत मिले भरि अंक महर मनु भए कै ग्याति

संपतिलैंउ देहु नहिं एकौं अंनवस्त्र किहिं काज हौं जो मा
गन तुमसौं आयौ सौ लेहौं नंदराज अपनें सुतकौ वदन
दिषावहु वडेमहरसिरताज तुमसाहिबमेठाकुरतेरोष
षुमेरौ वृजराज चंद्रवदनदरसनसंपतिदै सोलैमैघरजा
उं जोसंपति सनकादिकदुर्लभसोसवतुम्हरेठाउं जाकौ
नेतिनेति श्रुतिगावहि चरनकमलतेहिं ध्याउं हौंतौने
रोजमजनकौं ठाढीसूरकहाउं २८ ॥अथपूतनावध
॥रागगौड॥ आजुहौरानुकाजुकहिआउं वेगिसधारौंस
कलघोषसिसुजोमुषआइसुपाउं मोहनमूर्छनवसी
करनपठिआमनितदेहवगाउं अंगसुअंगहैं मधुमूरति
सजिनेननिमाषसमाउं घसिकैंकौलचराइउरोजनि
निलेरुचिसौंप्याउं सूरसोचुमनआवहिहरीहौंतौपू
तनाकहाउं ३० ॥रागधनासिरी॥ रूपमोहनीधरिजैव्रै
आई अद्भुतसाजिसिंगारमनोहरअसुरकंसदेपानप
ठाई कुचविचवाटिलगाइकपटकरि वालघातिनाघर
मसुहाई वैठीहुतीजसोदामंदिर दुलरावतिसुतस्या
मकन्हाई प्रगटीनहांजुआनिपूतनाषेरिनबालअव
धिनियराई आवतपाढिवैठनारीनौंकुशलपूछिअ
तिनिकटबुलाई पौढाएहरिसुभगपालनें नंदघरनि
वछुकामसिधाई वालकुलियोउछंगदुष्टमतिहरषि
तआस्तनपाननराई वदननिहारिप्रानहरिलीनें

परीराक्षसीजोजननतार्इ सूरजुदुजननि गति ताकौंरूपार्
सिंधुसुषधामपठाई ३१ ॥राग आसावरी॥ प्रथमकंसपू
तनापठाई नंदघरनिसुतलिहें जहवेगीचली चलानि
जधामहि आई अतिमोहनीनामुधरिलीनें देखतही
सवकेमनभाई जसुमतिदेषिरहीवाकौमुषुकालीवघूंकों
नधौंआई नंदसुवननतवहीपहिचानीअसुरघरनिअसुरन
कीज्याई आपुनवजूसमानभएहरिमातावुझिनमईआर
पाई अहोमहरिपालागतुमेरोमैंतुम्हेरोसुतदेषनआ
ई यहकहिगोदलियेअपनेतवत्रिभुवनपतिमनमन
मुसिकाई मुषचूम्योमहिकंठलगायौंविषलपटेआर
स्तनमुषनाई पैसमप्राणऐंचिहरिलीनोंजोजनएक
गिरीमुरझाई त्राहित्राहिकरिवुजधनआई अतिवालकुर्
क्योंवच्योकन्हाई अतिआनंदसहितसुतपायोहिरदैमां
झरहेलपटाई करवरटरीवडीमेरेकीघरघरकरतआर्
नंदवधाई सूरस्यामपूतनापछारीयहसुनिजियडर्
प्योनृपराई ३२ ॥राग विलावल॥ देष्योयहविपरीतम
ई अद्भुतरूपनारिइकआई कपटहेतक्योंसहेदई कान्ह
हिलेजसुमतिओरानेंहचिकरिकंठलगाई तवउहिदेह
धरीजोजनलौंस्यामरहेलपटाई वडेभागहैंनंदमहरि
केवडभागिनिनंदरानी सूरस्यामउरऊपरउवरेयहस
वघरघरजानी ३३ ॥राग विहागरो॥ नेकुगुपालहि

मोंकोदेरी देषौंकमलवदननीकेंकरिपों। तोछैंनंदनंदनि
पालेरी अतिकोमलकरचरनसरोरुह अधरदसननासा
सोहेरी लटकनिसीसकंठमनिभ्राजतमन्मथकोटि
वारनैंगेरी घोसनिसाजुविचारतहीसषीयहसुषकवहु
नपायोमेंरी निगमनिधनुसनकादिकसर्वसुभागवडे
पायोहैंतैंरी जाकोरूपजगतकेलोचनकोटिचंदरविला
जतभेरी सूरदासवलिजाइजसोदागोपिनुप्रानपूत
नावेरी ३४ ॥रागजैतसिरी॥ कन्हैयाहालरोहोहोवारी
तेरेवदनरंदुपरअतिछविअलसनरों कमलनैनकौंक
पररूपकियेरहवृजआवइजोर पालागों विधिता
हिवकालोंतूतिहिंतुरतविगोरै सुनिदेवतावडेजगपा
वनतूपतियाकुलकोपि पूजिहौवेगियहवालककरिदे
मोहिवेडा यहसुषुसूरदासकेनैननिदिनदिनदूनोहो
इ दुतियाकेससिलोंवाढेसिसुदेषेजननितसोइ ३५
॥रागधनासिरी॥ जसोदाहरिपालनैंझुलावै हलरावै
दुलराइमल्हावैंजोईसोईसोईकछुगावै मेरेलालको
आउनिदरियाकाहिनआनिसुवावै तूकाहेनवेगिरी
आवैतोकोंकान्हुवुलावैं कवहुपलकहरिमूंदिलेत
हैं कवहुअधरफरकावै सोवतजांनिमौनह्वैकैरहिक
रिकरिसैनवतावै इहिअंतरअकुलाइउठेहरिजसुमतिम
धुरेगावैं जोसुखसूरअमरमुनिदुर्लभसोनिंतजसु

मनिपावे ३६ ॥रागगौड॥ हालरोहलरावैमाता वलिव
लिजाउं घोषसुषदाताजसुमति अपनोपुन्यविचारै
वारवारसिसुवदननिहारे अंगप्रकारअलपमुसिका
ने याछविपरउपमांकोजानें हलरावतिगावतिकहि
प्यारें वालदसाकेकौतिकभारे महरिनिरषिमुषहि
येहुलसानी सूरदासप्रभुसारंगपानी ३७ ॥कानरो
पलनास्यामझुलावतिजननी अतिअनुरागपरस्य
रगावति प्रफुलितमगनमुदितनंदघरनी उमगिउमगि
प्रभुभुजापसारत हरषिजसोमतिअंकभरनी सू
रदासप्रभुमुदितजसोमति पूरनभईपुरातनकरनी
३८ ॥विलावल॥ गोपालमाईपालनेझुलाए सुरमु
निदेवकोटितेतीसो देखतकौतिकअंवरछाए जाको
अंतनब्रह्माजानत शिवसनकादिनपाए सोअव
देखौनंदजसोदाहरषिह[illegible]रषिहलराए हुलसत
हंसतकरतकिलकारी मनअभिलाषवढाए सूरज
स्यामभक्तहितकारननानावेषवनाए ३९ ॥अथ
कागासुरकोआइवो॥रागसारंग॥ कागरूपइकदनुज
धर्यो नृपआइसुलेंकरिमायेंपरहरषवंतउरगर्भभ
र्यो छितिकवानप्रभुतुमआइसतेंउहिजानौमुहि
जातमर्यौ इतनीकहिगोकुलउठिआयोंआइनंदघ
रछाजूरह्यौ पलनापरपोढेहरिदेषेंतुरतआनि

मैननि सुख्यौं कंठ चापि वहु वार छिरायौ गहि पटक्यौ नृप
पास परयौं तुरत कंस तिहि पूछन लाग्यौं कैं आयौ नहि का
ज सरयौं वीते जाम जु ग्वाल तिहि आयौ सुनौ कंस तेरौ आइ
सरयौ सूरदास प्रभु कंस निकंदन भक्त हेत अवतार धरयौ
४० ॥ राग बिलावल ॥ नृपति वचन यह सवनि सुनायौ मु
हाचही सेनापति कीनौ सकटासुर सुनि गर्व वढायौ दोऊ
कर जोरि भयौ नव ठाढो प्रभु आइसु मैं पाऊं घातें जाइ तुरत
ही मारौं कैहौ तौ जीवत ल्याऊं यह सुनि नृपति हरष मन
कीनौं तुरत ही वीरा दीनौं वार वार सूर कहैं ताकौं आपुप्रसं
सा कीनौं ४१ ॥ बिलावल ॥ मथुरापति जिय अतिहि डरा
नौं सभा मांझ असुरनै आगैं वार वार सिर धुनि पछिता
नौं व्रज भीतर उपज्यौ मेरौ रिपु मैं जानी यह वात दिन
हा दिन वहु वढतु जातु है मोकौं करिहै घात दनुज सुता पू
तना पठाई छन कमांझ संघारी धींच मरोरि कागासुर
दीनौ मेरै छिंग पर डारी अवहीतें यह हालु करतु है दिन
दिन होतु प्रकासु सेनापति नृसुनाइ वात यह नृप मन
भयौ उदास ऐसौ कौन मारिहै ताकौं मोहि कहौ सो आइ
वाकौ मारि अपुन पौ राखौं सूर व्रजहि सो जाइ ४१ ॥ रा
ग गौड ॥ पान लै चल्यौ नृप आनंद कीनौ गयौ सिर ना
इ कै गर्वहि वढाइ कै सकट कौ रूप धरि असुर लीनौ सुन
न यह रानि व्रज लोग सब चकृत भए कहा आघात धुनि
करतु आवै देखि आकास चहू पास दस हू दिसा उरे नर

नारिनन सुधि भुलावैं आपु गयो न हां जहीं प्रभु रहे पाल
ने करि गहे चरन अगुंठा चचौरैं हि किलकि किलकन हंस
न बाल सो भाल सन जानि तिहिं कंस न रिपु आयो भेरहि
ने कपट क्यौ लान शाट भयौ आघात गिरो भहरान सक
टा संघार्यौ सूर प्रभु नंदलाल दनुज मार्यौ ब्याल मेटि
जंजाल ब्रजजन उबार्यौ ४३ ॥राग बिलावल॥ कर गहे अ
गुंठा मुहमें मेलत प्रभु पौढे पालने अकेले हरषि हरषि
अपने मन खेलत बिडरि चले घन प्रलै जानि कै दिगपति
दिगदंतीन सकेलत शिव सोचत विधि बुद्धि विचारत ब
ट बाढ्यौ सागर जल झेलत मुनि मन भीत भए भुवि कंपि
त सेस सकुचि सहसौं फन ठेलत इन ब्रजबासिनु बातन पूं
जानी समुझि सूर संकट पग पेलत ४४ ॥राग बिलावल
चरन गहे अंगुठा मुह मेलत नंद घरनि गावति हलराव
ति पलना पर हरि खेलत ये चरणारबिंद
श्रीभू भूषण उर तें नेक न टारत देखौं धौं का रस चरननि मैं
मुख मेलत करि आरति जा चरणारविंद सेर कौं सुरनर कै
करत बिवाद यह रस है मोहू कौं दुर्लभ याते लेत सवाद
उछलत सिंधु धरा धर कांप्यौ कमठ पीठि अकुलाइ
सेस सहसफन डोलन लाग्यौ हरि पीवत जब पाइ ब
ढ्यो बृच्छ बट सुर अकुलान्यौं गगन भयौ उतपात म
हा प्रलै के मेघ उठे करि जहां तहां आघात करुना करी

छाडिपागदीनोंजानिपुरनिमनिसंस हूहाँ गूंगो रटत सू
रप्रभुसुरनरञ्जरतप्रसंस॥रागविहागरो॥जसुदामदनगु
पालसुवावे देखिसयनगतित्रिभुवनकंपितईसविरंचि
भ्रमावें असितअरुनसितआलसलोचनउभैपलकपरि
आवें मनोसंसिरविगतिहोतमहानिसिअलिगनउर
ननपावें चोकिचौकिसुदसाप्रगटकरि छविमनमेन
हिआवें जानोनिसिपतिआतिअंमरतमैश्रुति संडार
भरावें सासउदरउससतियोंजानोदुग्धसिंधु छविपा
वैं नाभिसरोजप्रगटपद्मासनउतरनालपछितावें
कासिरनरकन्स्यामसनोहरअलकअधरसोआवें
सूरदासमनोपन्नगपतिप्रभुऊपरफनछावै ४९॥
रागविलावल॥अजरस्यामकोंप्रातहियलिआयोगाए
आपुचलीगृहकाजकौंनहनंदबुलाए निरखिहरखि
मुखचूमिकैमंदिरपगुधारी आतुरनंदआएतहांज
हंबलमुरारी हसेतातमुखदेखिकैंकपगअतुराई
किलकिघरकिउलटेपरेदेवनिमनराई सोछविनं
दहेरिकैंतहमहरिवुलाई निरखिचकितगोपालकेस
रजवलिजाइ ५० ॥रागरामकली॥ हरखेनंदुटेरतमह
रि आइसतमुखदेखिआतुरडारिदेदधिउहारि मथति
दधिजमुमतिमथानीधुनिरहीघरघहारि श्रवनसुनि
तिनमहरिवातेंजहांतहांगईचहरि यहसुनततववमा

नाधाईगिरेजानेघ्रहारि हसतनंद मुखदेखिधीरजुतवकं-
रोघोटहारि स्यामउलटेपरेदेखेवढीसोभालहारि सूर
प्रभुकरसेजटेकतककवहुटेकनटहारि ४८ ॥रागविलाव-
ल॥ महरिमुदितउलटाइकैमुखचूमनलागी चिरजी
वौमेरोलाडिलौमैंभईस[illegible]भागी एकपाषत्रैमास-
कौमेरोभयोंकन्हाई पटकानिउलटेपरेमैकरौवधाई नंद
घरनिआनंदभरीवोलीव्रजनारी यहसुखसुनिसईसवेस
रजवलिहारी ४९ ॥रागविलावल॥ यहसुखसुनिहरषी-
व्रजनारी देखनकोंआईविन-वारी कोउजुवतीआईकौ-
ऊआवति कोउउठिचलतिसुनतसुखपावति घरघर-
होतिअनंदवधाई सूरदासप्रभुकीवलिजाई ५०॥
रागरामकली॥ जननीदेखिछविवलिजाति जैसेंनिध-
नाधनहिपाएहरखिहरखिदिनअरुराति वाललीला
निरखिहरषतधन्यधन्यव्रजनारि निरखिजननीवद
नकिलकैंत्रिदसपतिदैतारि धनिनंदधनिगोपगोपी-
धन्यधनिव्रजवास धन्यधरनीकरनपाऊंजन्मसूरज
दास ५१ ॥रागरामकली॥ जोसुखव्रजमेंएकघरी सो
सुखतीनिभुवनमेंनाहीं यहधनिघोषपुरी अषसि-
द्धिनवनिधिकरजोरेंद्वारेरहतिखरी सिवसनकादिसुका
दिअगोचरतेअवतारेजुहरी धन्यधन्यवडभागिनिजसु-
मतिनिगमनिसहाधरी ऐसेसूरदासकेप्रभुकोंलीनों-
अंकभरी ५२ ॥रागविलावल॥ जसुमतिभागसुहागिनि

हरिकौमुखजोने मुषमुषजोरिवनावरीसिसुताईमाने मो
नि धनीकौ धनुयहैकिलकतमनमोहन वलिहारीछ
विपरगईऐसीविधिजोहन लटकतिवेसरिजननिकीइक
टकचषलावें चकृतवदनउठावईमनहीमनभावे मह
रिमुदितहितउरभरेयहकहिमैवारी नंदसुवनकेचरित
परसूरजवलिहारी ५३ ॥राग आसावरी॥ गोदलिये हरि
कौनंदरानी अस्तनपानकरावतिहै वारवाररोहिनि
कौकहिकहिपलिकाअजरमगावतिहै प्रातसमेरविकि
नि कौंवरासोकहि सुनहिवतावतिहैं आउधाममेरे
स्यामलाडिलेवालकेलिकोंगावतिहैं रुचिरसेजलैगई
मोहनकौंभुजाउछंगिसुवावतिहै सूरदाससोएकन्हैया
हलरावतिदुलरावतिहैं ५४ ॥राग विलावल॥ नंदघर
नि आनंदभरी सुतस्याम षिलावें कवहुंघुटुरुअन
चलहिगेकहिविधिहिमनावें कवहुंदतुलियादूधकी
देषोंइननैननि चूमतिकरपदअधरपानलटकनिल
टचूरतिति ५५ ॥राग विलावल॥ नान्हरियेगोपालवे
वेगिवडोकिनिहोहि इहमुषमधुरवचनहंसिकवहुं
जननिकहोगेमोहि इहलालसाअधिकदिनदिनप्रति
कवहूईसकरें मोदेषतकवहुंसषिमाधौंपगजोधरनिध
रैं हलधरसहितफिरैवृजआगनचरनसवदसुषपाऊं
छिनछिनछुधितजानिपैकारणहोहरिनिकटवुलाऊं

कहा वरनि सूरज कहै कहा पावै सोभा नि

आगमनिगमनेति करिगायौंसिवउनमानुनपायौं सूर
दासबालकरसलीलामनअभिलाषबढायो ५६ ॥ रा
ग्रबिलावलब्धविलावल ॥ जसुमतिमनअभिलाष
करैं कबमेरोलालघुटुरूनुरेंगेकबधरनींपाईकधरैं
कबद्वैदांतदूधकेदेषौंकबतुतरेमुषवैनधरै कबनंद
हिबाबाकहिबोलहिकबजननीकहिमोहिररैं कबमेरो
अचराहिमोहनजोईसोईमोसोंकहि झगरैं कबधौंत
नकतनककछुषैहैं अपनेकरलेमुषहिभरैं कबहंसि
बातकहैंगेमोसोंबाछबितेंदुषदूरिहरैं स्यामअकेले
आगनछांडेंआपुगईकछुकाजघरैं पारअंतरअंधवा
हिउठीउकगरजतगगनसहितघरैं सूरदासब्रजलो
गसुनतधुनिजोजहंतहंसबअतिहहरैं ५७ ॥ राग
सूहो ॥ अतिविपरीततनावतआयौं बातचक्रमिस
ब्रजऊपरबैंनंदपवरिकेभीतरधायो पौंढेस्यामुअ
केलेआगनलेतउव्योआकासचढायो अंधाधुंधिभ
योसबगोकुलजोजहरह्योसुतहांछपायो जसुम
तिधाइआइजोदेषैस्यामस्यामकहिसोलगायो
धावहुनंदगुहारिलगोकिनितेरोसुतअंधवाहिउडा
यो इहिअंतरअकासतेंआवतपरवतसमकहिसब
नितनायो मार्योअसुरसिलासोंपरवेरौंआपुचरे
ताऊपरआयौं दौरेनंदयसोदादोरीतुरतहिलेलेतिहिदं
रलगायो सूरदासयहनकहतिजसोदानाजानोविध

नहिकहभायौ ॥५८॥ रागु बिलावल ॥ सोहतिसुभगानं
दकीरानी अतिआनंदआगनमैंठाढीगोदलियेसुत
सारंगपानी त्रिनावर्तकीसुरतिआनिजियपठयौअसुर
कंसअभिमानी गहएभएमहिमेवेठारेसहिनपरैंजन
नीअकुलानी आपुनुगाईसदनहिदौरीकाहूएकनका
नलपटानी वोउरम हाभयानकआयौगोकुलसवहि
पुलेकीजानी महादुखलैउडोगुपालहिचलौअकास
रहमयहठानी चापिग्रीवहनिप्रानहेरोइगरकप्रबाह
चलौंअधिकानी पाहनसिलानिरषिहरिडार्यौंउरय
रषेलतस्यामविनानी ब्रजवनितनुउपवनमै पा
यौंलएउठाइकंठलपटानी लेआईग्रहचूमतिचाट
तिघरघरसवनिवधाईमानी देतिआभूषनवारिवा
रिसवसूरजपियतिवारिसवपानी ५९ ॥रागधना
सिरी॥ उवरौस्याममहरिवडभागी वहुरिदूरितेंआ
इपयोधरदेषौंकहूंमैंचोटनलागी रोगुलेउवलिजा
उंकन्हैयायहकहिकंठलगाई तुमहाहोव्रजकीजीव
निधनदेषतनैनसिराई भलीनहींतेरीप्रकृतिजन
सोदाछांडिअकेलीजाति गृहकोकामुइनहूतेंप्या
रोंनेकहुनहींउराति भलीभईअवकेहरिवाच्यौअ
वहूसुरतिसम्हारि सूरदासप्रिकहतिग्वालिनी
मनमैंमहरिविचारि ६० ॥रागविलावल॥ अवहौंव
लिवालिजाउंहरी निसदिनराहितविलोकतहारमुष

आंउसकननहिएकघरी होंअपनोगोपालुलेंहैं हों कोन
चाउसवरहैहोंधरी पाऊंकहांघिलावनकोसुष्यमेंदुषिया
दुषकोषिजरी जासुषकोंशिवगोरिमनाईत्रियबूजनें
मकरी सूरस्यामपाएपैंड़ेंमेंमेंनिधिरंकपरी ६१॥ध
नासिरी॥ हरिकिलकतजसुदाकीकनियां निरषिनिर
षिमुषुकहतिस्यामसोंमोनिधनीकेधनियां अति
कोमलतननचितेस्यामकोवारवारपछितातिं कैसेंब
चौजाउंवलिमेरीतिनोंवतेंकीघात नाजानोंधोंको
नपुन्यतेंकोकरिलेतुसहाई वैसोकामपूतनाकीनों
इहिऐसीकरिआई मातादुषितजानिहरिविहसे
नान्हीसादतुलियादिषाई सूरदासप्रभुमाताचि
ततेंदुषडाखोविसराई ६२॥रागधनासिरी॥सुत
मुषदेषियसोदाफूली हरषतिनिरषिदूधकीदंति
यांप्रेममगनतनकीसुधिभूली वाहिरतेंनवनंदबु
लाएदेषौंधोंसुंदरसुषदाई तनकतनकसीदूध
कीदंतियांदेषौनेनसुफलकरोंआई आनेंसहित
महलनवआएमुषचितवतदोऊनेनअघाई सूर
स्यामकिलकतद्विजदेषोमनोंकमलपरबीजजमा
ई ६३॥अन्नप्रासन॥राग बिलावल॥कान्हकुंवर
कीकरोंप्रासनीकछुदिनघटिषटमासगए यहसु
निनंदमहरपुलकिततिय हरिअनप्रासनजोगभए

सू०सा
९३६

ए विप्रबुलाइ नामु लै पूछैं रासि सोधि इक सुदिन धरौ
आछौ दिन सुनि महरि जसोदा सखिनु बोलि सुभ गान क
रौं जुवति महरि कौं गारी गावति और महरि कौ नामु लि
यो ब्रज घर घर आनंद बढ्यौ अति प्रेम पुलकि न समातु
हियें जाकौ नेति नेति श्रुति गावत ध्यावत शिव मुनि ध्या
न धरें सूरदास तिनकौ ब्रजवनिता झकझोरत उर अंक
भरें ६४ ॥रागसारंग॥ आजु कान्हु करिहैं अंन्नप्रासन (
मनि कंचन के थार भराए भांति भांति के वासन नंदघरनि
ब्रजवधू बुलाई जे सब अपनी पांति कोऊ जिवनार क
रति कोऊ घृत पकु षटरस के बहु भांति बहुत प्रकार किये
सब व्यंजन और सबै मिष्टान अति उज्जल कोमल सु
ठि सुंदर महरि देखि मन मान जसुमति नंदहि बोलि क
ह्यौ नव महरि बुलाव हु जाति आपु गए नंद सकल म (
हर घर लै आए सब ग्याति आदर कै बैठारि सबहि न कौं
भीतर गए नराइ जसुमति उबटि अन्हवाइ कान्ह कौं प
ट भूषन पहिराइ वारवार मुष निरषि जसोदा पुनि पु
नि लेति बलाइ तनक धगुली कटि लाल चौतनी कर चू
ठा दुहुं पाइ घरी जानि सुत मुष जुठरावन नंद बैठि लै
गोद महरि बोलि बैठारि मंडली आनद करत विनोद
कनकथार कै षीरि धरी लौं ता पर घृत मधु नाइ नंद लै
लै हरि मुष जुठरावत नारि सु उठी सब गाइ षटरस कै

परकारजहांलगि लेलै अधरछुवावत विस्वभरनज
गदीसजु कगुरपासतमुषकावावत तनकतनकज
लअधर पोंछिकैजसुमतिपेपहुंचाए हरषवंतजु
वतीसवलैलेमुषचूमतउरलाए महरिगोपसवहि
लिमिलिवैठेपनवारेपरसाए भोजनकरतअधिकरु
चिउपजीजोजिहिंकेमनभाए इहिंविधिसुषविलस
तवृजवासीधनिगोकुलवृजनारी नंदसुवनकीयाछ
विऊपरसूरदासवलिहारी ६८ ॥रागसारग॥ हरिकौ
मुषमाईमुहि अनुदिनभावै चितवतचितनैननि
कीसवगतिविसरावै लालनलैलैउछंगिअधिकलो
भलागे निरषतिनीरतिनिमिषकरतओरआगे सो
भितसुभककपोलअधरअलपअलपदसना कलक
लकिलकिवैनकहनिमोहनमनरसना नासिक
लोचनविसालसंततसुखकारी सूरदासधन्यभाग
देषतिवृजनारी ६९ ॥रागधनासिरी॥ लालनतेरे
मुषपरवारी वालगुपालनोगोरनैननिरोगुवला
इनुम्हारी लटलटकनिमोहनमसिविंदुकातिलकु
भालसुखकारी मनहुकमलअलिसावकपंकति
उडतमधुपछविभारी लोचनललितकपोलनिका
जतछविउपजतिअधिकारी सुषमेसुषऔरेतचि
वारतिहसतदैदैकिलकारी अलपदसनिकलव

लकरीबोलनितुधिनहिपरतिविचारी। निकसिजो
निअधरानिकेविचविचविधुमेवानउज्यारी। सुंदर
ताकौपारनपावनिरूपदेखिमहतारी। सूरसिंधुकी
बूंदभईमिलिमतिगतिदृष्टि[illegible]हमारी ६७ ॥
रागजैतश्री॥ लालनहौंवारीतेरेमुषऊपर माईमेराहि
उीदिनलागैतातेंमसिबिंदादियौभ्रूपर सर्वसुमैंपहि
लेहीदीनोंनान्हीनान्हीदतियनिछूपर अबकहन्या
छावरिकरौं सूरजसोचातिअपनेलाललल्लूपर ६८
॥रागजैतश्री॥ ललाहौंवारीतेरेमुषपर कुटिलअल
कमौंहनमुषविहसनिभ्रकुटिविकटनैननिपर द
मकतिदुद्वेदंतुलियाविहसतमनोंसीपजलधरछि
पोवारिजपर लघुलघुलटकचघूंघरवारेलटकनि(
लटकिरह्यौलिलारपर यहउपमांकहिकापेआवेंक
छुककहतिसकुचतिहौंहियपर नूतनचंदरेषमाधि
राजतिसुरगुरसुक्रउदोतपरस्पर लोचनलोलकपोलल
लितअतिनासाकोंमुक्तारदछदपर सूरकहाम्योछाव
रिकरिहौंअपनेलाललितलरषरपर ६९ ॥रागआ(
सावरी॥ जबतेंमैंषेलतदेष्यौं आगनजसुदाकौरीष्न(
री तबतेंगृहसोंनातोंछूटोजैसेंकाचोसूतुरी अतिवि
विसालबारिजदललोचनराजतकाजररेषरी ६ इछा
सोमकरंदलेतमनोंअलिगोलककौवेषरी श्रवननि
नहिउपकंठरहतहैं अरुबोलनतुतरानरी उमगोप्रेम(

नैनमगनव्है कै कापेरी कैं जानरी दमकनदोइ दूधकी दतियां
जगमगजगमगहोतरी मानौ सुंदरतामंदिरमैं रूपरतन
कीजोतिरी सूरदासदेषौ सुंदरमुष आनदउरनसमाइ
री मानौ कुमुदकामनापूरनपूरनचंद्रहिपाइरी ७०
अंहुनएकचितैयौं सजनी नंदमहरके
आगनरी सोमैं निरषिअपुनुपैषोजौ गई मथनीयां मां
गनरी वालदसामुषकमलविलोकत कछुजननी सौंवो
लेरी प्रगटहसतदतियामानौसीपजदमककुरेदलओ
लेरी सुंदरभालतिलकगोरोचनमिलिमसिविंदुकाला
ग्योरी मनौमकरंदअचैरुचिकैअलिसावकसोइनजा
ग्योरी कुंडललोलकपोलनिझलकतमनोदर्पनमैंझा
ई रहीविलोकिविचारिचारुछविपरमितिकहुनपाई
मंजुलतारनिकीचपलाई चितुचतुराननकरषेरी मनो
सरासनसमकधरेकर भौंहचढेंसरवरषेरी नाजानौकि
हिअंगमगनमनुचाहिरह्यौनहिपायोरी जलधिष
कितजनौंकागयोतज्यौं कूलनकवहूं आयोरी कहंलगि
कहौंवनाइवरनिजितनीछविनिरषतहारारी सूरस्या
मकेएकरोमपरदेउप्रानवलिहारीरी ७१ ॥राग धना
सिरी॥ जसोदाचिरजीवहुगोपाल वेगिवढैंवलिसहि
तविरधलटमहरिमनोहरवाल उपजिरहिंकोछिनरम
वससमुरसीपिज्योंलाल याेगोकुलकोंप्रानजीवनध

नवैरिनकेउरसाल सूरप्रभुमनसचुपावतहै देषनस्या-
मतमाल रजआरतिलागैमेरीअषियनि रोषदोषजंजा-
ल ॥राग अथ घुटुअनचलिवे॥ रागविलावल॥ षेलत-
नंदआगनगोविंद निरषिनिरषिजसुमतिसुषपावतिम-
दनमनोहरचंद कटिकिंकिनिचंद्रमनिआलटमुक्तावलि
भरिभाल परमसुदेसकंठकेहरिनषविचविचवज्रप्रवा-
ल करपहुचियापाइपैंजनसुरंगनरंजितरजपीत घुटुरु-
नचलतअजिरमेविहरतमुषमंडितनवनीत सूरविचि-
त्रकानकीवातनकवानीकहततआवैं वालदसाअवलो-
किसनकमुनिजोगविरतिविसरावैं ७३ ॥रागआसा-
वरी॥ घुटुरुनचलतस्याममनिआगनमातपितादोऊ
देषतरी कवहूंकिलकिलकितातमुषदेषतकवहूंजननीमु-
षपेषतरी लटकनिलटकतभालपरआनरविंदभुवरूप
ररी यहसोभानैननिभरिदेषेनहिउपमामतिसूपररी-
कवहूंकदौरिघुटुरुवनलपकतउठतउठतफिरिधावति-
री इततेनंदवुलाइलेतहैं उततेजननिवुलावतिरी
दंपतिहोडकरतआपुसमेंस्यामषिलौनाकीनौरी सू-
रदासप्रभुब्रह्मसनातनसुतहितकरिदोऊलीनोरी ७४
॥रागललित॥ माईविरहतगोपाललालमनिमेरच्यौं-
आगनापरिरगनाघुटुरुनडोलें निरषिनिरषिअपनोप्र-
तिविंवुहंसतकिलकतपाछेफिरिफिरिचितैमैयामैया-
वोलें ज्योंज्योंआलिगनसहितविमलजलधाइरहेंकटि-

लअलककवदनकीछविअवनीप्रतिलोलै सूरदासप्रभु
निहारिविथकितरहिसवघोषनारितनमनधनदेतिवा
रिवारिओलै ७५ **॥बिलावल॥** सोहतकरनवनीतलि
ये घुटुरुनचलतरेनुतनमंडितमुषदधिलेपकिये चा
रुकपोललोललोचनगोरोचनतिलकदिये लटलटक
निमनोमतमधुपगनमाहकमदहिपिये कठुलाकंठवज्र
केहरिनषराजतरुचिरहिये धन्यसूरएकोपलयहसुष
कहसतकल्पजिये ७६ **॥अथवरसगांठि॥रागबिला**
वल॥ आजुभोरतमचुरकेरोर गोकुलमेंआनंदहोतु
है मंगलधुनिमहरानेटोल: झूलेफिरतनंदअतिसुष
भयोहरषिमगावतफूलतमोल झूलीफिरतिजसोदा
घरघरउवटिकान्हअन्हवाइअमोल तनकवदनदोउ
तनकतनककरतनकचरनपोछतिपटझोल कान्हग
रेसोहतिकंठमालाअंगभूषनअंगअगुरिनुगोल सि
रचौतनीडिठौनादीनौंआंषिआजिपहिरायनिचो
ल स्यामकरतमातासोंझगरौअटपटातकलवलक
रिबोल दोउकपोलगहिकैमुषचूमतिवरषगांठिकहि
करतकलोल सूरस्यामव्रजजनमनमोहनवरसगांठ
कोडोराषोल ७६ **॥रागधनासिरी॥** अरीआजुमेरेला
लकीवरसगांठिसवसषिनुवुलावो सुमंगरिमंगलगा
नकरावौं चंदनआंगनसवलिपवावौ मुतियनुतुम

चौकपुरावौ उमगि आगन आनद तूर वजावौ मेरेक
हैतु महिपूतु लावौ सुभ घरी एक आनि धरावौं वाग
वीरवनि ठनि आवौ आभूषन पहिरावौ आछित दूव
वदावौ ललनकी वरसगांठि जुरावौ यहै मोहि नैननि
लाहो दिषरावौ पचरंग सारी मगावौ वधूजन पहि
रावौ नाचे सव उमगि अंग आनंद वगावौ नदरानी
सव ग्वाल वुलावति यहैरी तिनहि नाहि सुनावति वेगि
करौ किनि विलमु काहे लगावौं जसुमति नव नंद सु
लावति लाल लिये कनिया दिषरावति लगनकी घरी
तुरत आवति मैं ने न्हवा रचनावौं सूरस्याम मुष
छवि निहारति अति सुष भयो वरसगांठि जुरावौ ७७

॥राग आसावरी॥ उमगि उमगी हैं व्रजनारि कान्हकी व
रसगांठि वरसनि गावत मंगल गान कीने सुरनाकी ना
न आनद हरसनि कंचन जटित थार दधि रोचन फू
ल उर देषन चली नंदकुमार हे मिलि वे कान तरसनि
सूरदास प्रभुकी वरसगांठि जोरत वह छवि परत्रिन
तोरति अरस परसनि ७८ ॥विलावल॥ वाल विनोद
षरे जिय भावत मुष प्रतिविंव पकरिवे कारन हुल
सि घुटुरुन अनुधावति छिनक माह त्रिभुवनकी ली
ला सिसुता मांह दुरावत सवद एक वोल्यो चाहत हैं
प्रगट वचन नहि आवत कमल नैन माषन मांगत

हैं ग्वालिनि सैन करावत सूरस्याम सुसनेह मनोहर जे
सुमति श्रांति कटावत ७९ ॥राग सारंग॥ बलि जाउं स्या
म मनोहर नैन जब चितवत मोहन कारि आंषियनि म
धुप देत मनो सैन कुंचित अलक तिलक गोरोचन स
सपर हरि सै भैन कबहुं क षेलन जात घुटरुअनि उप
जावत सुख चैन कबहुं करोइ हंसत हौं बलि गई बोलत
मधुरे बैन कबहुं कदारि होत देखि करि चलनि सकत इ
कै गैन देषत बदन करौं न्यौछावरि तात मात सुषदैन
सूर बाल लीला के ऊपर वारौं कोटिक मैन ८० ॥राग कान्
हरो॥ आंगन षेलत घुटुरुन धाए नील जलद तन स्या
म राम मुख निरखि जननि दोउ निकट बुलाए बंधुक
सुमन अरुन पद पंकज अंकुस प्रमुख चिन्ह बनि आए
नूपुर कलरव मनो सुतहंसनि रचना उदे चाह बसाए
कटि किंकिनि वर हार ग्रीव दर रुचिर बाहु भूषन पहिरा
ए उर श्रीवत्स मनोहर हरि नष हेम मध्य मनिगन ब
हुलाए सुभग चिबुक द्विज अधर नासिका श्रवन क
पोल मोहि सुठि भाए भुव सुंदर करुना रस पूरन लो
चन मनहु जुगल जलजाए भाल विसाल ललित ल
टकन मनि बालदसा के चिकुर सुहाए मानौं गुरस
नि कुज आगे करि ससिहि मिलन तम तें गन आए
उपमा एक अभूत भई तब जब जननी पटपीत चढ़ाए

नीलजलदऊपरयौंनिरषतनतजि सुभाउमनोतडितछपा
रो अंग॥अंगप्रतिमारनिकरि मिलिछविसमूहलेलें
मनुछाए सूरदाससो क्यौंनावरनैजोछवि निगमने
तिकरिगाए ८१ ॥राग धनासिरी॥ हौंवलिजाऊंछवी
लेलालकी धूसरधूरिघुटुरुवनिटेकनिवोलनिवच
नरिसालकी छुटकिरहीचहुं दिसिजुलटुरियांलटक
निमालकी मोतिनुजुतनासिकानथुनिया कंठकमल
दलमालकी कछुकहाथकछुअकमाषनुमुषचितै
वनिनैनविसालकी सूरप्रभुकेप्रेममगनभई ढिंगनत
जतिवृजवालकी ८१ ॥कान्हरो॥ सादरसहितविलोकि
स्याममुषनंदअनंदरूपलियेकनिया सुंदरस्यामस
रोजनालतनअंगअंगसुभगसकलसुषदनिया
अरुनतरुनिनषजोतिजगमगतिरुनुझुनुकरतपाइ
पैजनिया कनकरत्नमनिजटितरुचिरकटि किंकि
निकनितपीतपटधनिया पहुंचीकरनिपदिकउह
रिउरहारिनषकठुलाकंठजगमगनिया रुचिरचिवु
कद्विजअधरनासिकाअतिसुंदरराजतिसोवनिया
सुभ्रूकुटिलमटकुटीसुषनानिधिकलकपोलनीछ
विनउपनिया भालतिलकुमसिबिंदुविराजतिसो
भितुसीसलालचौतनिया मनमोहनातोतरी
वोलनिमुनिमनहरतसुहंसिमुसिकनिया वा

वा लसुभाउविलोकिविलोचनचोरतचितहिचारुचितवनि
या निरषतव्रजजुवतीसवठाढीनंदसुवनछविचंद्रवदनि
या सूरदासप्रभुनिरषिमगनभएप्रेमविवसकछुसुधिन
नअपनिया ८२ ॥रागधनासिरी॥ कहौंलौंवरनौंसुंदरता
ई षेलतकुंअरकनकआगनमैंनैननिरषिसुखदाई कु
लहिलसतिसिरस्यामसुभगअतिवहुविधिरंगवनाई
मानौनवघनऊपरराजतमघवाधनुषचढाई अतिसुदे
शमनहरतचिकुरमनिमोहनमुखवगराई मानौप्रग
टकंजपरमंजुलअलीअवलीघिरिआई नीलसेतपरपी
तलालमनिलटकनिभालरुराई सनिगुरअसुरदेव
गुरमिलिमनौभौमसमुदाई दूधदांतदुतिकहिनजाति सहित
अतिअद्भुतइकउपमाई किलकतहंसतदुरतप्रगटतम
नौघनमैंविद्युछटाई षंडितवचनदेतपूरनसुषअलप जलप
जलपाई घुटुरुनचलतरेनुतनमंडितसूरदासवलिजा
ई ८३ ॥नटनारायण॥ हरिकीवालछविकौवरनि स
कलसुखकीसींवकोटिकमनजसोभाहरनि भुजभुजंगस
रोजनैननिवदनविधुजितलरनि रहेविवरनिसलिल
नभउपमाअपारदुतिडरनि मंजुमेचकमृदुलतनअ
नुहरितभूषनभरनि मनहुसुभगसिंगारसिसुतरु
फरयौअद्भुतफरनि चलतपदप्रतिविंवमनिआगनघु
टुरु अनिकरनि जलजसंपुटसुभगछविभरिलेत

उजनि धरनि पुन्यफलअनुभवति सुतहि विलोकि कैं नंद
घरनि सूरप्रभु की उरबसी किलकनि ललित लरखरनि
८४ ॥राग धनासिरी॥ किलकत कान्ह घुटुरुअन आवत
मनिमैं कनक नंद कैं आंगन मुख प्रतिबिंब पकरिबे धावत
कबहुं निरखि हरि आपु छांह कौं कर सों पकरन चाहत कि
लकि हसत राजति द्वै दतियां पुनि पुनि तिहिं अवगाह
त कनक भूमि पर पग पग छाया इह उपमा इक राजत
करकर प्रति पद प्रति मनि वसुधा कवल बैठकी साजत
बालदसा सुख निरखि जसोदा पुनि पुनि नंद बुलावत
अंचरा तर लै ढांकि सूर के प्रभु कौं दूध पिवावति ८५ ॥
विलावल॥ नंद धाम खेलत हरि डोलत जसुमति कर
ति रसोई भीतर आपुन किलकत बोलत टेरि उठि जसु
मति मो हन कौं आवौ घुटुरुन धाइ बैन सुनत माता प
हिचानी चले घुटरु अनु पाइ लै उचारि अंचल गहि
पोछौं धूरि भरी सब देह सूरज प्रभु जसुमति रज झारति
कहा भरि यह षेह ८६ ॥राग सूहो॥ धनि जसुमति बडभा
गिनी लिये कान्ह हि खिलावै तनक तनक भुज पक
रि कै ठाढे सिखरावै लरखरात गिरि परत हैं चलि घुट
रुन आवैं पुनि क्रम क्रम भुज टेकि कैं पग द्वैक चलावै अ
पने पाइन कबहि लौं मोहि देखन धावैं सूरदास जसुमति
यहै विधि सो जु मनावै ८७ ॥कानरो॥ हरि कौं विमल

जसुगावतिगोपगना मनिमेंआगननंदराइकेंबालगु
पालतहांकरेंरगना गिरिगिरिपरतघुटरुअनुटेकतवे
लतहेदोऊछगनमगना वसुधात्रिपदनकरतआलसु
मयोतिनहिकठिनभयोदिहरीउलंघना सूरदासप्रभु
वृजवधुनिरषतिलचिरहातहियेसोहतवघना ८८
॥चलनसषी॥राग सूहो॥ चलनचहतपाइनगोपाल॥
लैलैगहअंगुरीनंदरानिमोहनमूरतिस्यामतमाल उग
मगातगिरिपरतपानपरभुजभ्राजितनंदलाल जानोश्री
धरश्रीधरतअधोमुषवेधुकतिधरानिमानहुमनिलाल
धूरिधोतननैननिअं॥जनचलतअटपटीचाल च
रनरुनितनूपुरधुनिमानोंमरादिहरतज्योंबालमराल
लटलटकनिसिरचारुचषौडासुटि सोभासोभेसिसु
माल सूरदासऐसोसुखनिरषतजोजीजैतागैव
हुकाल ८९॥बिलावल॥ मनिमेंआगननंदकेषेलत
दोऊभैया गोरस्यामजोरीवनीवलिरामकन्हैया ल
टकनिललितलटुरियामसिविंदुगोरोचन हरिनष
उरभ्रतिराजहीसंतनिदोषमोचन संगसंगजसुमतिरो
हिणीहितकारनिमैया चुटकीदिहिनचावहीसुतजानि
कन्हैया नीलपीतपटओढनीदेषतजियभावें वाल
विनोदअनंदसोंसूरजजनगावे ९०॥धनासिरी॥आंगन
षेलतनंदकोनंदा जदुकुलकुमुदसुषदचितिचंदा सिसु
भूषनभुवकोंमनुमोहैं संगसंगवलमोहनसोहें न

नदुलिमोरचंद्रजिमिघलैकें उमगिउमगिअंगअंगछविछ
लैकें कटिकिंकिनिपगनूपुरवाजें पंकजपानिपहुंचि
आरजें कठुलाकंठवघनहांनीकों नैनसरोजमैनसरसी
कों लटकनललितललाटलटूरी दमकतिदुइदंतुलियाघ
रुरी मुनिमनहरतमंजुमसिविंदा ललितवदनवलि
वालगुविंदा कुलहीचित्रविचित्रघगूली निरषिजसो
दारोहिनीभूली गहिमनिषंभडिंभडगडोलें कलव
लवचननतोतरेंवोलें निरषतझकझकातप्रतिविंवहि दे
तपरमसुषुपितुअरुअंवहि वृजजननिरषतहेंहुलसा
में सूरस्याममहिमाकोंजानें २१ ॥बिलावल॥ कलव
लतेंहरिहोरपरें नवरंगनवीनजलदपरमानुहुंदेसषि
आनअरे नवगिरिकमठसुरासुरसर्पहि धरतनमन
मेनेंकुडरें तिनभुजभूषनभारपरतकरगोपिनुआ
धारधरें विंववदनमानोमषिकाज्योंविहसनिमनहु
प्रकासकरें सूरस्यामदधिभांजनभीतरनिरषतमुष
मुषतेंनटरें २२ ॥बिलावल॥ मथतदधिमथनीटेकिर
रें आरिकरतमटुकीगहिमोहनवासुकिसंभुडरें मंद
रडरतसिंधुपुनिकांपतपुनिजिनिमथनकरें प्रलेहो
नजिनिगहोमथानीप्रभुमरजादटरें सुरअरिसुरठाढें
सवचितवतनैननिनीरढरें सूरदासप्रभुमुग्धजसों
दामुषदधिविंदुगरें २३ ॥बिलावल॥ जवमोहनक

रमहीमथानी परसतकरदधिमांटनेतिचितउरधिसैल
वासुकिसिमानी कवहुंकअहुरपेगनहिवसुधा कवहुंकरै
हरीउलेघिनजानी कवहूंसुरमुनिध्यालनपावत कवहुं
खिलावतिनंदकीरानी कवहुंकअषरिघाटिनहिभावति
कहूंमेषलाउदरसमानी कवहुंकआरिकरतमाषनुकों
कवहुंकवेषदिषाइविनानी कवहुंकअषिलउदरनहि न
चितकवहुंकरलमाषनुरुचिमानी सूरदासप्रभुआयह
लीलारूपरेषवहुरचसाठांनी २३ ॥विलावल॥ चलन
सिषावतिघसुदामैया अरवराइकरपानिगहावतिउगम
गाइधरनीधरपैया कवहूंकसुंदरवदनविलोकतिचिरजी
वोमेरौहोउकन्हैया कवहूंमुषतनतराठीचितवतिरहि
आगनषेलोंदोउभैया सूरदासप्रभुसवसुषदाइक अ
तिश्नापावैलसतनदरैया २४ ॥नरनारायन॥ वलिग
ईवालमुरारि पाउपैंजनरूनतनुधुनुनचावतीनंदनारि
कवहूं हरिकोआइअंगुरीचलनसिषावतिग्वारि क
वहूंहिरदेलगाइहितकरिलेतिअंचलडारि कवहूंहरि
कोंचितेंचुंवतिकवहुगावतिगारि कवहुलेंपाछेंदुराव
तिधांनहीवनवारि कवहुंअंगभूषनवनावतिराईनो
नउतारि सूरसुरनरसवैमोहेनिरषिमहउमहारि २५
॥विलावल॥ भावतहरिकोवालविनोद स्यामरामसुष
निरषिनिरषिसुषप्रमुदितरोहिनिजसमतिजसोद अंग
पंकरागतनसोमितचलतनूपुरधुनिसुनिमनमोद

परमसनेहवढावतमातनिरखिनिरखिवैठनहलिमोद
अतिसोचपलसकलसुखदायकमिसुदिनुरहतकेलिरस
ओर सूरस्यामअंबुजदललोचनकिरिरचिनवतवृजबानिता
मोद ८६ ॥बिलावल॥ बालविनोदआंगनकीडोलनि मनि
मयभूमिनंदकेआलेबलिबलिजाउंतोतरीबोलनि कुटुला
कंठकुटिलकेहरिनषवजूप्रवालबहुलाइअमो लनि
वदनसरोजतिलकगोरोचनलटलटकतिमधुपंगनिडो
लनि लोनीकरआननपरसतहैंकछुकषाइकछुलग्योक
पोलनि कहिजनसूरकहांलौंवरनौंधंन्यनंदजीवनिज
गतोलनि ८७ ॥बिलावल॥ गहेअंगुरियासुवनकीनंद
चलनसिषावति अरबराइगिरिपरतहैंकरदेकिउठावत
वारवारवकिस्यामसोंकछुवोलितुलावत दुहुंघांदेदनु
लीभईअतिमुषछविपावत कबहुंकान्हकरछांडिनंदप
गदैकरिगावत कबहुंधरनिपरवैठिजातमनमेंकछुगा
वत कबहुंउलटिचलैंधामकौंघुटनतुकरिधावत सू
रस्यामसुषदेषिमहरमन हरषवढावत ८८ ॥धं
नासिरी॥ कान्हचलतपगद्वैद्वैधरनी जोमनमेंअभिला
षकरतिहासोदेषतिनंदघरनी ठनुकुठनकुनूपरवाज
नपगायहअतिहैमनहरनी वैठिजातपुनिउठततुरतही
सोछविजाइनवरनी व्रजजुवतीसबदेषिथकितभईसुं
दरताकीसरनी चिरजीवोजसुदाकोनंदनुसूरदासकौंत
रनी ८९ ॥बिलावल॥ चलतस्यामघनराजतपैंजनपग

पगचाइमनोहर उरगमगातडोलत आंगनमोहननिरखिनिरखि मोहिमुनिसुरनर अतमनमुदितयसोदाजननी पाछेंफिरति गहतिकरेंअंगुरी मनोंकुधेनुत्रिनछांडिवछाहितप्रेमपुल किचितवतथनपयोधर कुंडललोलकपोलविराजतलटकनि ललितलटुरियामूपर सूरस्यामसुंदरअवलोकनिविहरत बालगुपालनंदघर १०० ॥रागगौरी॥ भीतरतेंवाहिरलौंआ वत घरआंगनअतिचलतसुगमभयोदेहरीमेंअटकावत गिरिगिरिपरतजातनहींउलघीअतिश्रमहोतनधावत अ हुठपेंगवसुधासवकीनीधामअवधिविरमावत मनहीम नवलवीरकहतहैंऐसेंरंगवनावत सूरदासप्रभुआनित महिमाभक्तनिकेंमनभावत १०१ ॥धनासिरी॥ चलतदेखि जसुमतिसुखपावै ठुमकुठुमकुधरिधरनीरेंगतजननीदेखि दिखावै देहरीलौंचलिजातिवहुरिफिरिफिरिफिरिहीइत आवै गिरिगिरिपरतवनतनहिनांघतसुरमुनिसोचकरा वैं कोटिब्रह्मंडकरतछिनभीतरहरतविलंबनलावैं ताकों लियेनंदकीरानीनानाखेलखिलावैं जवजसुमतिकरटे कि स्यामकोंक्रमक्रमकेउतरावैं सूरदासप्रभुदेखिसुरमुनि मनवुधिहिवनावैं १०२ ॥रागभैरो॥ सोवलुकहाभयोभ गवान जिहिंवलमीनसरूपजलथापोलियेनिगमहतिअ सुरप्राण जिहिंवलकछपरूपधयोहरिसमुदमथ्योरतनाकरजानि जिहिंवलरूपवराहदसनपरराखीपुहमि पुहपसमान जिहिंवलहिरनकस्यपनखप्राणसोंभए

भक्तकौं कृपानिधान जिहिं बल बलि बंधन की पठयो त्रैपद
वसुधा करी समान जिहिं बल विप्र तिलक दै थाप्यौं रघुपति आ
पु करी विदिमान जिहिं बल रावण के सिर तोरे कियो विभीष
न नृपति निदान जिहिं दल जामवंत प्रभु राख्यौं जिहिं बल
भू विनती सुनि कान सूरदास अब धाम की दिहरी चढि न स
कत हरि बिरे अयान १०३ ॥आसावरी॥ देखो अद्भुत अविग
ति की गति जिहिं सि रूप धर्यो है हो तीनि लोक जाके उदर भवन
सो सूप के कोन पर्यो है हो जाके नाल ब्रह्म हर इंद्रादिक सकल
जोग व्रत साध्यौ है हो ताकों नालु पकरि नंदरानी कादिन गा
सो वाध्यो हो जाके मुख सनकादिक तपु कियो सकल चतुर
ई ठानी हो सो मुख चूमति महरि जसोदा दूध लार लपटानी
हो जिन कानन निज गो की विपदा सुनि गरुडासन विसरायो
हो तिन कानन नि कें निकट जसोदा हलरायो गुन गायो हो
जिन हि भुजा प्रहलाद उवार्यो हरिनकसिप तनु प्रासै हो
सो भुज पकरि गोपिका गोपा ठाठे हैं दुलरायो हो विस्व
भरण पोषन सब समरथ माखन काज अस्यो है हो रूप वि
राट रोम प्रति कोटि सुपल नामांठ पर्यो है हो जाको ध्यान
धरे सुर मुनिजन संभु समाधि न टारी हो सो ठाकुर है सूरदा
स कों गोकुल गोप विहारी हो १०४ ॥आसावरी॥ आनंद
प्रेम उमगि जसोदा लाल री खिलावै ~~देखनालवजावति~~
~~भावति~~ ,शिव सनकादि सुकादि ब्रह्मादिक खोजत अनत

नपावैं मोदलियैंहंसिकैंहलरावैं तोतलेबोलबुलावैं देक
रतालबजावतिगावतिराग अनूपमल्हावैं कबहुंककर
पल्लवनिगाहैंवत आंगनमांघुरिऔवैं मोहिरहेसुरना
रनरस्वररविससिरथुनचलावैं कबहूंहिलकैंकिलकैं
जननीमनसुखसिंधुबढावैं मोहिरहीब्रजकीजुबतीज
नसूरदासजोगावैं २०५ ॥रागबिलावल॥सूहो॥ आ
गनस्यामुनचावई जसुमतिनंदरानी तारीतारीदैदै
गावही मधुरीसीवानी पाइनन्नुपुरबाजही कटिकिंकि
नीकूजैं नान्हिरडियनुअरुनतातलबिंबुनपूजे जसु
मतिगानसुनैंश्रवननतबआपुहुगावैं तारीबाजनदे
षहीपुनितारीबजावैं केहरिनषउरपररेसुचिसोभा
कारी मनोस्यामघनमध्यमैंनौससिउजियारी गं
भुवारेसिरकेसहैंनवघूंघरवारे लटकनिलटकैंभा
लपरविधुमधिगनतारे कुंडलाकंठचिबुकतरेमुषदं
तविराजें षंजनबिचसुकआनिकैंमनोपरयोदुराजें
जसुमतिसुतहिनचावई छबिदेषिजियतें सूरदास
प्रभुस्यामकेमुषटरतननहियतें २०६ ॥ललित॥ छोटी
छोटीगुडियाअंछोटीछबीलीनषजोती मोतीमानों
कंजदलनिपरलालितआंगनेषेलें डुमकडुमकडोलेंघु
नकुघुनकुबाजैपैजनीमृदुआरवपर किंकिनीकिल
किनकटिहाटकरतनजटितमदुकरकमलनिपोचिपा

रुचिवर पियरी पिछौरी छीनी और न उपमा भीनी वाल
कदामिनि मनौ ओढे वारि धारि उरवघन घक्कंठ कटु
ला घूटू ले वार केनी लट कन मसिंविंदा भ्रुनि मनहर
अंजन रंजित नैना चितवनि चित चोरे मुषसोभा परखा
रौं अमित असमसा चुटकि वजावति नचावति नंद
घरनि वाल केलि गावति मल्हावति प्रेम भरघर किलकि
किलकि हंसि द्वै द्वै दंतुली लसैं सूरदास मन वसें तोतरे व
चनवर १०७ ॥विलावल॥ त्यौंत्यौं नाच्यौरी मोहन धा
म मधुरसुर होइ मैसिये किंकिनि धुनि हरि पायन रुपुर स
हि मिलि सुर होइ कंचन को अंगुला मनि मोतिनु वाचुव
घन हा पोइ निरषि निरषि सुख नंद सुवनको सुर मुनि
आनद होइ देषत वने कहत नहि आवै उपमा को नहि को
इ सूर भवन को तिमिर नसायो निरषि जननि जसोइ
१०८ ॥विलावल॥ जसुमति दधि मथनु करि बैठी वर धा
म राजे ठाढे हरि हंसत नान्ही नान्ही दंतियन छवि छाजै
चितवत चितु लियो चुराइ सोभा वरनी न जाइ मुनि नुके
मन हरन कों मन मोहनी दल साजै जननी कहति नाचो
तुम दैहौं नवनीत मधुर तनुकु घुनकु चलत पाइ चारन्
पुरवाजे गावत गुन सूरदास जस छायो सू आकास वाच
तत्रै लोकनाथ माषनके काजै १०९ ॥विलावल॥ माधौ
ननककसें वरनत नकसें चरनभुजन नककरनि परननकु

माथनु नन्हकी सीवा तजु नहेन नन्हकै सेत नन्हकारि छिरिहे सु
नन्हकैं धनु नन्हकै कपोल नन्हकी सी दतियां नन्हकै हंसनि
हारलेत हैं मनु नन्हकी हीन नन्हकी जो सूर निकट हैं नन्हकैं
पाकरि नन्हकुं दीजै सरनु १९० ॥बिलावल॥ मा धौत नन्हकै
चरन अत नन्हकै नन्हकैं भुज नन्हकैं वदनु नन्हकै सेबोल
नन्हकी सी दतियां नन्हकै अधर अत नन्हकै हंसनि परलेत हैं
मोल नन्हकै करनि पर नन्हकुं नवनी लिये देष नन्हकै
जाके सकल भुजवन नन्हकै सुने सुजसु लहत परमगति
नन्हकै कहत तासों नंदसुवन नन्हकै राऊ परदेत सकल
नन्हतनकै देषि चितवित कै हरन नन्हकै हि नन्हकै नन्हकै
वारि आवैं सूर नन्हकुं दीजैं नन्हकुं सरनु १९१ ॥ब्राह्मन प्र
साद॥ धनासिरी॥ महरानैं तें पांडे आयो व्रज घर घर बूझ
त नंदराव कैं पुत्र भयों सुनि कै उठि धायो पहुंचा आइ नंद
कै बारे जसुमति देषि आनंद बढायो पाइ धोइ भीतर वैठायों
भोजन कौं निज भवन लिपायो जो भावै सो भोजन कीजें
विप्र मन हि आनि हरष बढायो वडी वेस विधि भयो दाहि
नो धनि जसुदा ए सो सुतु जायो धेनु दुहाइ दूध लै आइ
पांडे तुचि करि षीरि चढायो घृत मिष्टान षीरि मिश्रित
करि परसि कृस्म हि तिन ध्यानु लगायो नैन उघारि विप्र
जो देषे षातु कन्हैया देषन पायो देषौ आइ जसोदा सुत
कृतु सिद्ध पाक जिहिं आइ जु ठायो महरी विनै करि दोऊ

जसो

सा० १४७

कराजौरै घनमिष्टानपै वहरि मगायो सूरस्याम कत्न करन
अचारी वार वार वालनु उ जूठि षायो ११२ ॥रामक
ली॥ षांडे भोग नुलावन पावे करि करि पाकु जव हि अर्पे नु
हैं नव हि नव हि छैं आवैं इस्या करि मैं वास नु न्यो नौं न
गोपाल षिधावें वड़ अपने ठाकुर हि जिमावनु न्ह औसें ही
उठि धावे जननी दोसु देहु जिनि मोकौं विधि विधान
कें ध्यावें नैन मूंदि कर जोरि नाम लें वार वार वुलावे कहि
अंतर क्यों होइ भक्त सों जो मेरे मन भावे सूरदास वलिव
लि ता की जो जन्म जन्म जसु गावे ११३ ॥विलावल॥
सुफल जन्म हरि आजु भयो धनि गोकुल धनि नंद जसो
दा जाके हरि अवतारु लयो प्रगट भयो अव पुन्य सुक
न फलु दीनवंधु मोहि दरस दयो वारंवार नंद के आगन
लोटतु द्विज आनंद भयो मै अपराध कियो विन जाने को
जाने कहि भेष जयो सूरदास प्रभु भक्त हेत वस जसुमति
हित अवतार लयो ११४ ॥राग धनाश्री॥ अहो
नाथ जेई जेई तेरे सरन आए तेई तेई भए पावन महा
पतितु कुल तारन एक नाम अघ जारन तारन दुख विसरा
वन मो ते काहो अनाथ दरसन तें भयो सनाथ देखत
मैं नजु डावन भक्त हेत देह धरन पुहमी को भार हरन जन्म
जन्म जन कौं मुक्तावन असरन सरन दीनवंधु जसुम
ति सुख कारन देह धावन हित के चितन कौं मानत सव के

जियकीजानतसूरदासमनभावन ११५ ॥कानरो॥ म
याकरियेकृपालप्रतिपालसंसारउदधिजंजालतेंपारंपा
र काहूकोब्रह्माकहूकेमहेसकाहूकेगनेसुप्रभुमेरेतौतु
मही अधार दीनदयालकृपाकरीमोकोंयहकहिलोट
तुवारंवार सूरस्याम अंतरजामीस्वामीहोजगतकेकहा
कहोंनिवार ११६ ॥विलावल॥ नंदजूकेवारेकान्हछाडिदे करें
मथनीया वारवारकहेमातुजसोमतिरनिया नेकर
होमाखनुदेउमेरेप्रानधनिया आरिजिनिकरैवलि
गईहोंनिछनिया सुरनरकोध्यानुधरैमुनिजनिया
ताकोजसुमतिमुखचूमिलीनोकनिया सहसाननगु
नगावेगनतनहिवनिया सूरस्यामदेखिसवैभूलीगो
पधनिया ११७ ॥रागुविलावल॥ प्रातसमेदधिमथति
जसोदाअतिसुखकमलनैनगुनगावतिग्वालिनी अ
तिहिमधुरगतिकंठसुघरअतिनंदसुवनचितहितहि
करावतिमरालिनी नीलवसनतनसजलजलदमनु
दामिनिभुजदंडचलावतिचंलिनी चंद्रवदनलटलट
किछवीलीमनहुअमृतरसराहुचुरावतिमालिनी गो
रसमथननादइकबंकनधुनिसुनिश्रवनरमावतिव्या
लिनी सूरस्याम अचराधरेंठाढेकामकसौटीकसिदि
खरावतिआलिनी ११८ ॥रामकानरो॥ गोदखिलाव
तिकान्ह सुनीवडभागिनिहोंनंदरानी आनदकी

सा०
१५८

निधिमुखलाकोनाहिनिरखतिहैनिमुवासरसुतोछविक्यों
हुनजातिवखानी गुनअपारवहुविसारकहीनपरतितनि
गमवानी सूरदासप्रभुकोलियेजसुमतिगोदखिलावति
चितैचितैमुसकानी ११९ ॥रागगौरी॥ मेरेमाईस्यामम नो
हरजीवनि निरखिनैनभूलेतेवदनछविमधुरहसनिपेषी
वनि कुंतलकुटिलमकरकुंडलभुवनैनैनविलोकनिवंक
मनौसंध्यातेनिकसिनयोससिराजतमनोमृगअंक सो
भितसुमनमयूरचंद्रिकानीरनलिननतनस्याम मनहुन
छत्रसमेतइंद्रधनुसुभगमेघअभिराम परमकुसलकोवि
दलीलानटमुसकनिमनुहरिलेत कृपाकटाछकमल
करफेरनसूरजननिसुषदेत १२० ॥रागगौरी॥ सोभामेरे
स्यामहीपैसोहै वलिवलिजाउंछवीलेमुषकीवापटत
रकोकोहै देषतअंगथकेमनमैसषीकोटिमदनछविमो
हे ससिगनगिरिकिधौंविधिआननवंकभौंहमिलिजो
हे सूरस्यामसुंदरतानिरषतमुनिगनकोमनुमोहे १२१
॥विलावल॥ वालगुपालषेलौमेरेतात वलिवलिजाउं
मुषारविंदकीअमीवचनवोलेतुनरात उनिदेनैनविसा
लकीसोभाकहतनिवनिआवैकछुवात द्वारधरेसवस
षापुकारतनैनमीडिआएपरभात दुहुकरमाटुगह्योनंद
नंदनछूटकिवूंददधिपरतअघात मानौससिमुक्ता पहि
राएसोभितकंठसंवारेगात लीलाएकरचीमनमोहनद

धिभोजनमांगतअरसात लोटतपुहमिसूरसुंदरघनचा
रिपदारथजाकेहाथ १२२ ॥रागसारंग॥ पालनेझुलऊं
मेरेलालपियारे सुलक्षनिनीवलिवलिवारीहौंतिलु
तिलुहटुनकरहुजुटलारे काजरहाथभरहुजनिमोहन
ह्वैहैनेनअतिहीरतनारे सिरकुलहीपहिराईपेजनी
नहांजाहुजहंनंदववारे यहविनोददेषतघरनीधरमा
नपितावलभद्रददारे सुरनरमुनिकौतूहलभूलेदेषत
सूरस्यामहैवारे १२३ ॥रागविलावल॥ कीउनप्रातसभै
दीऊवीर माषनमांगतवातनमानतझषतजसोदाजन
नीतीर जननीमधिसनमुषसंकरनेपैचतकान्हसयों
सिरचीर मनोसरसुतीसंगउभैदुजकलरामलअतनी
लकढीर सूरजस्यामगहीकवरीकरमुक्तामांगगहीव
लवीर नातनमधुलीनोअपअपनोमानहुलेतनिवे
रिसीरीर १२४ ॥विलावल॥ गोपालुदधिमांगेअहरो
टी माषनसहितदेहमेरीजननीसुपकसमंगलमो
टी कतहोआरिकरतमेरेमोहनकतनुमआगनलोटी
जोमांगोसोदेहुमनोहरयहैंवाततेरीषोटी प्रातका
लउठिदेतिकलेऊवदनचुपरिअहचोटी सूरदासकों
ठाकुरठाडोहाथलकुटलेछोटी १२५ ॥विलावल॥
हरिकरराजतिमाषनरोटी मनोवारिजशशिवेरजा
निजियगह्योसुधासुसधोटी मजिसिसुमेलिमुषं

सा.
१४९
४२

उजभीतरउपजीउपमामोटी वरनौवराहभूजुवधरसहय
त्रिधरीदसनकीकोटी नगनगातमुसिकातताततिगन्न
नुकरतगाहिचोटी सूरजप्रभुकीयहैजुभूठनिलाल
नललितपलोटी १२६ ॥नटनारायन॥ वरनौवाल
भेषमुरारि थकितजितकितअमरमुनिगननंदलाल
निहारि केसासिरचनवपुनकेचहुदिसाछूटकीधारि
सीसपरधरेजटामनुसिसुरूपकियेत्रिपुरारि तिलककुल
लितललाटकेसरिविंदुसोभाकारि रोधअवनत्रिती
यलोचनराहीरिपुजनीजारि कंठस्यातिजनीलमनि
मैंपालरवीजुसमारि मनोनीलगिरिवरगरलधारीले
लियोमदनारि कुटिलकेहरिनखहियेहरिहराछविनिर
खतनारि ईसजनौरजनीसराख्योभालहूतैंउतारि सद
नरजतनस्यामशोभितसुभगाइहिअनुहारि मनहु
अंगविभूतिभ्राजितसंभुसेमधुरारि त्रदसपतिपति
असनकौंअतिजननिसौंकरेआरि सूरदासविरंचिजा
कौंजपतहैंमुखचारि १२७ ॥नटनारायन॥ सखीरी
नंदनंदनुदेखु धूरिधूसरजटाजुटलीहरिकेनमहरि
भेषु नीलपाटपरोइमनगनफनिगधोखेजाइ भु
जुभुजाकरगहेमोहनुचलततडोहवजाइ जलजमाल
गुपालुपहिरेकहौंकहावनाइ मुंडमालामनौंहरगरें
अैसीसोभापाइ स्वातिसुतजालविराजितस्यामत

नैयौंमाई मनोगंगा गोरिचोरिलियेकंठलगाइ केहरीके
नषहि निरषति नारिमनहिविचारि वालससिमनो
भालतेंलैउरधर्यौत्रिपुरारि देषिअंगअनंगडर्यौनं
दसुतकौजानि सूरदासकेहृदैवसियौस्यामसिवकौध्यं
न १२८ ॥नटनारायन॥ विरहतविविधिवालकसंग उ
रउगमगमागनडोलत धूरिधूसरअंगललितगतिपर
परतेपेजनपरस्परविलजाति मनहुमधुरमराल साव
कसुभगवेनविहात ललितश्रीगोपाललोचनस्याम
सोभाद्रूत मनमयंकहिअंकदीनीसिंधकाकेसूत दूरद
मकतश्रवनसोभाजलजजुगलउहडहत मनहुवासव
वलिपग योजीवकविकछुकहत कवहुंवोरैदौरिआ
वत कवहुंनंदनिकेत श्रीसूरप्रभुकौगहतिग्वालिनिचा
हचुंवनदेत १२९ ॥रागविलावल॥ देषैमैंदधिसुतमैं
दधिजात एकुअचंभौदेषिसषीरीरिपुमैरिपुजुसमा
त दधिपरकीरकीरपरपंकजपंकजकेद्वैपात यहसो
भादेषिपसुपालकफूलेअंगनसमात सुंदरवदनविलो
किस्यामकौनंदुनिरषिमुसिकात ऐसोध्यानुनिहारि
स्यामकौंसूरदासवलिजात १३० ॥रागधनासिरी॥ दधि
सुतजामेनंददुवार निरषिनैनअरुझोमनमोहनरट
नदेहुकरवारंवार दीरघमोलकह्यौवेपारीरहेठगेसव
कौतकहार करऊपरलैराषिरहेहरिदेतनमुकतापरम
सुढार गोकुलनाथवएजसुमतिकेंआगनभीतरभौन

मझार साखापत्रभएजलमेलनफूलनफलननलागीवार
जानतनहीपरमसुरनरमुनिब्रह्मादिकनहिपरतविचार
सूरदासप्रभुकीयहलीलाब्रजवनितनिजुहिपहिरेहार १
३१ ॥रागधनासिरी॥ काजरिकौंपयपियहुलालतेरीवेनी
बढ़ै जैसेदेखिऔरब्रजबालकत्यौंबलचैसचढै यहसुनि
कैहरिपीवनलागेज्यौंत्यौंलियोलैरै अचवतपैंताती
जबलाग्यौरोवतजीभडढै पुनिपीवतिहीकचटकटोरतझू
ठेजननिरढै सूरनिरखिमुखहंसतिजसोदासोसुखुउरन
कढै १३१ ॥रागरामकली॥ जसोदाकबवढिहैगीचोर
टी कितीवारमुहिदूधपियतभईयहअजहूंहैछोटी
तूजुकहतिबलकीवेनीज्यौंह्वैहैलांबीमोटी काढतगुह
तन्हवावतओछत्नागिनिसीभ्वैलोटी काचोदूधपिवा
वतिपचिपचिदेतिनमाखनरोटी सूरस्यामचिरुजियौ
दोऊभैयाहरिहलधरकीजोटी १३२ ॥रागआसावरी॥ ज
सुमतिजबहिकह्योअन्हवावनरोइगएहरिलोटतरी मैं
बलिजाउंन्हाउजिनिमोहनकतरोवतबेकाजहरी तेलउ
बटनौलैंआगेंधरिलालहिचोटतिपोटतिरी पाछेंधरि
राख्यौंछुराइकैंउबटनतेलसमोजेरी महरिबहुतविन
तीकरिराखतिमानतिनहीकान्हरी सूरस्यामअतिही
विरुझानेसुरमुनिअंतनपाईरी १३३ ॥रागसारंग॥
कान्हाबलिजाउंऐसीआरिनकीजे जोईजोईभावेसोई
सोईलीजे कहतिजसोदारानी काचिछवेसारंगपानी
जोमेरेलालखिजावें सोअपनेंरैखिपावे तिहिहें

हौंदेसनिफिरौंताकौब्रजनाहिनागारौं अतिरिसहीनें
तनछीनें सुढिकोमलअंगुपसानें वरजहाविरघानें क
रिक्रोधुमनहिअकुलाने धरनधरनधरलौटें मातानो
चीरनिफौटें अंगअभूषनतौरे नवनीरदधिभांजनफो
रे देखिनपतजलतरसे जसुदाकेपारनुपरसे महरिवां
हगहिआनें नवनेलुउवटनोसानें नवगिरनपरनउठि
भागे कहुनेकुनिकटनहिलागें नवनंदघरनिचुचकारे
आवहुवलिजाउतुम्हारे नहिआवहुतौंभलेलाला स
मुझौंगेमदनगुपाला तुमनेरीरिसनहिजानत मो
कौतुमनहिपहिचानत मैंआजुतुमहिगहिवांधो हहा
करिकरिअनुराधौ वावानंदुउतहितेंआए कौनेहरिअ
तिहिखिजाए मुखचूमिहरखिलैंआए लेजसुमतिपैप
हुचाए मोहनमनछिपतिअयानी ।हिघलारलिपेनंद
रानी वैयोंजुजननजतनकरिपाये नवउवटनतेलुलगा
ये तातोजलआनिसमोयो अन्हवारलियेअंगधोयो
अतिसरसवसनतनपोछ्या लेकरिमुखकमलअंगोछ्यौ
अंजनदोऊदृगभरिदीनो भुवचारुचखोडाकीनो अंग
अभूषनपहिराये लालनुकुर्मकुर्मदुहराए औसीरिस
नकरौमेरेकान्हा अवबाहुकुंअरकछुनान्हा तुतरानक
ल्लोकाहेरी जोमोहिभावेसोदेरी जोईजोईभावेमेरेप्या
रे सोईसोईदेहोंतोहिललारे कीनोहौंसिरवानीसीरा
कछुहदुनकरौजहुवीरा सदुदधिमाखनुहेआनी तापर
मधुमिश्रीसानी खायामेंमधुरमलाई सोदेखतअति

सा.
१५१

रुचिपाई कछुबलदाऊकोदीजैं आतइधुआधावहुपीजैं
सबहिनधरीहैसाठी लैऊपरउपरतेकाठी अतिबोस
रिसरसबनाई जिहिसोहिमिरचरुचिनाई दूधबरादधि
बोरा सोषानआमृतइककोरी सुठिसरसजलेबीबोरी
जिहिजेवतरुचिनहिथोरी आतपुरमानरमसंवारे
तेपरसिधरेहैन्यारे सक्करपारेसदपागे तेपावतपरम
सभागे सिवलाडूसरससुधारे जेमुषमेलतसुकुवारे
मुतिलाडूहैसुठिमीठे वेषातनभवहुउवीठे षडलाडूलौं
गोंजाए लैकरिवहुतजतनबनाए गोंदापकपूरनपूरे
भरिभरिकपूरासचूरे आतेसियेंफूलमसूरी जेचाए
षतमुषदुषदूरी अतहैसिमासुरससवारी अतिसवा
दपरमसुषकारी वावरवरनेनजाही जिहिदेषतआति
सुषपाही मालपुआमधुसानें बेनपतनुरतभरीआने
सुंदरअतिसरसअंदरसे तेघृतदधिमधुमिलिसरसे
घेवरअतिचिरतचभौरे लेषाँडऊपरतरबौरे माधुरि
अतिसरससजूरी सदपारसिधरीघृतपूरी जवपुरीसु
हैं नीहरिराष्यौ नवभोजनपरमनकरष्यौ सुनितुरत
पसोदालपाई अतिरुचिसमेतिरषाई बलदाऊटेरि
बुलाए यहसुनिहलधरतहँआए षटरसपरकारमगा
ए जेवरनिजसोदागाए मनमोहनहलधरवीरा जेंव
तरुचिराषीसीरा सीतलजललियोमगाई भरिझारी
जसुमतिल्याई आचवततनमेनजुडाने दोऊहरषिहर
षिमुसकाने हँसिजननिचूतभरवाए नवकछुकछु

मुषपषराए नवविरीतनकेमुषनाए अतिलालीअध
रछिंआए नवसूरदासवलिहारी मांगतकछुजूठनि
धारी हौतनकतनकसेषाए जूठनिसवभक्तनिपाए
१३४ ॥धनासिरी॥ पाहुनीकरिदैतनेंकमह्यौ आरि
करिमनमोहनमेरो अंचलआनिगह्यौ होंलागीरहका
जरसोंरिजसुमतिविनेंकह्यौ व्याकुलमतिमथनीधा
रतीदधिभ्वैदरकिरह्यौ मापनुजाततजानिनंदरानीस
षिनुसम्हारिकह्यौ सूरस्यामसुषनिरषिमगनभईदुहुनु
सकोंसुसह्यौ १३५ ॥रामकली॥ हरिअपनेंआंगनकछुगा
वत तनकतनकचरननिसोंनाचतमनहीमनहिरिझा
वत वांहउचाइकाजरीधोरीगैरनटेरीवुलावत कवहुं
कवावानंदपुकारत कवहुंकघरमेंआवत माषनुतन
कलितकरआपनेंतनकवदनमेंनावत कवहुंचितैंप्र
तिविंवषंभमेंनोंनवनीलियेषवावत दुरिदेषतिजसु
मतियहलीलाहरषिआनंदवढावत सूरस्यामकेवा
लचरितनितनिहिनितदेखतभावत १३६ ॥रागविला
आजुसषीहोंप्रातसमैंदधिमथनउठीअकुलाइ भ
रिभाजनुमनिषंभनिकटधरिनेतुलियोकरजाइ सु
ननसवदताहीसमीपहरिआएउरिहरवराइ मोहेवा
लविनोदमोदकरिनैननिनिर्तुदिषाइ भूलिरहननप्रति
विंवुविलोकतराधीसहजसुभाइ माषनिपिंडविभाग
दुहूंकरआंपतमुहंमसिक्याइ चितवनिचलनिह

सो चित चंचल चितेरहा चितलाइ सूरदास प्रभु ताकौ सु
मुख की नउरस मुवाइ १३७ ॥बिलावल॥ बलि बलि जा
उं मधुर सुर गावहु अब की बार मेरे कुंअर कन्हैया नंद हिं ना
च दिखावहु नारि देहु आपने कर की परम प्रीति उपजावं
हु आन जंतु धुनि सुनि उरपत कत मो भुज कंठ लगावहु
छिनि संका जिय करौ लाल मेरे काहे कौं भरमावहु बाहेउ
चाइ कालि की नाईं धौरी धेनु बुलावहु नांचहु नैकु जाउं
बलि तेरी मेरी साध पुरावहु रत्न जटित किंकिनि पद नूपु
र अपने रंग बजावहु कनक खंभ प्रति बिंबत सिसु इक लव
नी ताहि खवावहु सूर स्याम मेरे उर ते कहुं टारे नैकु न भा
वहु १३८ ॥श्री कृष्ण जू को कनछेदनु॥धनासिरी॥ कान्ह जू को
कनछेदनो हाथ सुहारी भेली गुड़ की बिधि बिहसत ह
रि हंसत हैं हरि जसुमति जू के धक धकी उर की रोचन
भरि लै देत सार्क सौं श्रवन निकट अति ही चातुर की कं
चन के द्वै दुरम गाइ लिये कहा कहौं छेदन आतुर की लोच
न भरि भरि दोऊ माता के कनछेदन देखत जिय मुरकी रो
वत देखि जननि अकुलानी लियौ तुरत नौवा कौ छिरकी
हंसत नंद उपनंद सब बिगसी घमकि चली सब भीतर दुर
की सूरदास नंद करत बधाई अति आनंद बाल बृज पुर की
१३९ ॥धनासिरी॥ जबहि भयो कनछेदन हरि कौ सुर
बनिता सब कहति परस्पर बृजवासी दासी सम करि को
गोपी मगन भई सब गावति हलरावति सुत नंद महर कौ

जोसुषमुनिजनध्याननपावतसोमुषनंदकरतसवघर
को मनिमुक्ताआगनकरिन्योछावरिनुरतहिदेतविलंवुन
घरिको सूरनंदव्रजजनपहिरावतउमगिचल्योसुष
सिंधुलहरिको १४० ॥अथचंद्रप्रस्ताव॥कानरो॥ठाढी
अजिरजसोदाअपनेहरिलियेचंद्रदिषरावति रोवत
कतवलिजाउंतुम्हारीदेषौधौंभरिनेनजुडावत चिते
रहेतवआपुनससितनअपनेकरलैलैजुवतावत मीठ
ठोलगतुकिधौंयहषाटोदेषतअतिसुंदरमनभावत
मनहीमनमेंबुद्धिकरतहरिमातासोंकहिताहिमगाव
त लागीभूषचंद्रमैषैहोंदेहुदेहुरिसकरिविरुझावत
जसुमतिकहतिकहामैकीनोरोवतमोहनअतिदुषपा
वत सूरस्यामकोजसुधाबोधतिगगनचिरैयाउडत
दिखावत १४१ ॥कानरो॥किहिविधिकैकान्हैसमुझै
हौं मैहीभूलिचंददिषरायोताहिकहतमैषैहौं अ
नहोनीकहुंभईकन्हैयादेषीसुनीनवात यहतोआ
हिषिलौनासवकोषानकहतितिहितात यहेदेतल
वनीनितमोकौंछिनछिनसांझसवारे वारवारतुम
माषनमागतदेहुकहांतेष्यारे देषतरहौषिलौनाचं
दाआरिनकरौकन्हाई सूरस्यामलियेमहरिजसो
दानंदहिकहतवुझाई १४२ ॥रागधनासिरी॥आ
छेमेरेलालहोऐसीआरिनकीजे मधुमेवापकवान
मिठाईजोईभावैसोलीजे सदमाषनघृतदह्योसजा

पो अस मोगे पैपनि पालागों हूं अधिक करौ तिनि अ(
तिरिस तैतनु छोजे आनवतावत आन दिखावत वा
लकतौ नवंपती जे षिसि षिसि परत मान्ह कनिया तें(
ससकि ससकि मन षीजे जलपुट आनि धरयौ आग(
न मैं मोहन नैकु तो लीजे सूरस्याम हठि चंदा मांगे चंद्र
कहा तें दीजे १५३ ॥कानरौ॥ वारवार जसुमति सुत बो
धति आउ चंद तोहि लाल बुलावै। मधु मेवा पकवान(
मिठाई आपुन षैहै तोहि षवावै हाथहि पर तोहि ली
ने षेलै नैकु नहीं धरती विठावै जलवासन कर लै जु
उठावति या ही मे तू तन धरि आवै जलपुट आनि ध
रनि पर राष्यौ गहि आन्यो है वे चंद दिषावै सूरदास
प्रभु हंसि मुसिकाने वारवार दोऊ कर नावै १५४॥
॥रागरामकली॥ मेरो माई ऐसो हठ्यो वालगोविंदा अप(
ने कर गहि गगन वतावै षेलन को दै चंदा वासन कै
जल धरयो जसोदा हरि को आनि दिषावै रुदन क
रत ढूंढै नहि पावत धरनि चंद कैसे आवै दूध दही(
पकवान मिठाई सुकछु मागि मेरे छौना भौंरा चक
ई लाल पाट को लटुवा मांगु षिलौना दयत रलन
गजदंत उपाकन हंस केसधनि कंदा सूरदास व(
लि जाइ जसोदा सुबके सागर दुःषनिकंदा १५५
॥रामकली॥ लै हौरी मा चंदा लैगो कहा करौ
जलपुट भीतर को वाहिर औ किंग हौगो तुम्हरी(

यह तौ कमल मलातु छक छोरतु कैसैं कै जु लही गो वह तौ नि
पट निकट ही देषन वरजै हौं न रहौंगो तुम्हरो प्रभु प्रा
ट मैं जान्यौं चोराए न वहौंगो सूरस्याम कहै करगहिल्या
वो ससि न नदा पद हौंगो १४६ ॥धनासिरी॥ लाल यह
चंद लिलै हौं कमल नैन वलि जाइ जसोदा नी चे नै
कु चितै हौ जाकारन तुम सुनि सुंदर वर कीनी इती अनै
हौं सोई सुधाकर देषि दमोदर या भाजन मैं है हौ नभ तैं
निकट आनि राष्यौ है जलपुट जतन जुगे हौ जे अपने क
र काढि चंद कौं जो भावै सो कै हौ गगन मंडल तै गहि आ
न्यौ है पंछी एक पठै हौ सूरदास प्रभु इतनी वात कौं कत
मेरो लाल हठै हौ १४७ ॥विलावल॥ तुअ मुष देषि डर
तु ससि भारी कर करि कैं हरि हेर्यौ चाहत भाजि पया
ल जु गयो अषहारी वह ससि तौ कैसे हूं आवत यह
ऐसी कछु बुद्धि विचारी वदन देषि विधु विधु संकित
मन नैन कंज कुंडल उजियारी सुनहु स्याम तोहि
ससि डरपतु है यह कहत मैं सरन तुम्हारी सूरस्याम
विरुझाने सोए लिये लगाइ छतिया महतारी १४८
॥केदारो॥ जसुमति लै पलिका पौढावति मेरो आजु
अति हि विरुझान्यो यह कहि मधुरे सुर सौं गावति पौ
ढि गई पुनि हरषे करि कै अंग मोरि तव हरि जमुहाने क
र सौं ठौंकि सुतहि दुलरावति चटपटाइ वैठे अतुराने

पौढे लाल कथा इक कहिहौं अति मीठी श्रवननि कौं प्यारी
यह सुनि सूरस्याम मन हरषे पौढि गये हरि देत हुंकारी १
४८ ॥केदारो॥ सुनि सुत एक कथा कहौं प्यारी कमलनैन
मन आलस उपज्यौ चतुर सिरोमनि देत हुंकारी नगर
एक रमनीक अयोध्या बडे महल जहं अगम अटारी
बहुत गली पुर बीच बिराजति भांति भांति तहं हाटब
जारी तहां नृपति दसरथ रघुबंसी जाके नारि तीन सु
खकारी कौसिल्या केकई सुमित्रा तिनके जन्म भये सु
त चारि चारि पुत्र राजा के प्रगटे तिनमैं रामचंद्र तनधा
री जनक धनुष कृत देखि जानकी त्रिभुवन के सब न
पति हंकारी राजपुत्र दोऊ रिषि लै आए सुनत जनक
धनतहं पगधारी धनुष तोरि सुख मोरि नृपति कौ ज
नकसुता तिनकी बरनारी, पग अगुमा जब पार नृपति
के तब के कै मुख मेलि निवारी बचन मांगि नृप सौं य
ह लीनो रघुपति के अभिषेक सम्हारी तात बचन सु
नि तज्यौ राज जिनि भ्राता घरनि सहित बन चारी उ
न के जात पिता तन त्यागो अति ब्याकुल करि जीव नि
कारी चित्रकूट गए भरत मिलन जब पग पांवरि दिन
री कृपारी जुवती हित कपट मृग मारयौ राजिवलोचन
गर्वप्रहारी रावन हरन कियो सीता कौं सुनि करुनामै
नींद बिसारी सूरस्याम कहि उठे चापु कहं लछिमन दे

उजननिभूमभारी १५० ॥बिहागरो॥ नदनंदनतुमसुनहु
कहानी पहिलीकथापुराननसुनिसुतजननिपाससुखवा
नी राजारामचंद्रदशरथसुतजनकसुतानिनकागृहरानी
कहिपंचतनुअरुपंचवटीवनछांडिचलेरजधानी त
हांवसतसीताहरिलीनीरजनीचर[illegible] अभिमानी
लछिमनधनुषदेहुहरिकहीउठेजसुमतिसूरउरानी १
५१ ॥केदारो॥ जसुमतिमनमनयहाविचारति झझकि
उठ्योसोवतहरिअबहीकछुपढिपढितनदोषनिवारति
खेलतमैकहाउठिलागीलैलैराईलोनुउतारति सांझ
हितैंअतिहीबितझानोचंद्रहिदेखिकरीअतिआरति बा
रवारकुलदेवमनावतिदोऊकरजोरिसिरलैधारति सूर
दासजसुमतिनंदरानीनिरखिवदननैंनापनिवारति १
५२ ॥रामकली॥ प्रातसमैउठिसोवतसुतकोवदनउघा
र्योनंद रहिनसकतदेखनकौंआतुरनैननिसानेदंद
स्वछसेजमैंतेंहुनिकसतुगयोतिमिरमिटिमंद मा मैं
नहुमथिसुरसिंधुफेनफटिदइदिखाईचंद धायोच
तुरचकोरसूरसुनिसबसषीसषास्वछंद आलसवद
नअलककछविपौंअलिपानकरतमकरंद १५३ ॥बिला
वल॥ भोरभयेनिरखनहरिकोमुखप्रमुदितजसुमति
हरषितनंद दिनकरकिरनिनलिनविगसितजनोनि
रखिअतिउपजतुआनंद वदनउघारिजगावनिजन

नीजगहुवलिगई आनंदकंद मनहुमथतसुरासिंधुफेनफरिदे
हदिखाई पूरनचंद जाकोजसुब्रह्मादिकमुनिजननेतिनेति
गावहिश्रुतिछंद सोगुपालुब्रजमेंमुनिसूरजप्रगटेपूरण
परमानंद १५४ ॥रागभैरो॥ उठीयेस्यामकलेऊकरियेम
नमोहनमुषदेषनदीजै षारिकदाषषोपराषारांकेला
आंवऊषरससीरा श्रीफलमधुरचिरोंजीआनीसफराचि
वरीअतनीवानी घेवरफेनीसेवसुहारीषोवासहितषाउ
वलिहारी रुचिपिराकलाडूदधिआनोंतुमकोभावतिपु
रीसंधानो तवनंवीरसञ्चतुलेषवाऊ सूरदासपनवारी
पाऊं १५६ ॥विलावल॥ नंदकेलालउठेजवसोइ निरषि
मुषारविंदकीसोभाकहिकाकेमनधीरजहोइ मुनिमनहर
नहरनजुवतिनकेरतिपतिमानुजाइसवषोइ ईषदाहंस
नंदनुदति विगासनमनिगनओपिधरेजनोपोइ नागर
नवलकुंअरवरसुंदरमारगजातलेतमनगोइ सूरस्यामसन
हारनमनोहरगोकुलवसिमोहेसवलोइ १५७ ॥माटीषेवो
॥रागुविलावल॥ षेलतस्यामपौरिकेवाहिरव्रजलरिकासो
हतसंगजोरी जैसेंआपुनेसेईसवलरिकाअतिअज्ञान
सवनिमतिभोरी गावतहांनरेतकिलकारतदुरिदेखति
नदरांनी अतिपुलकितगदगदमृदुवानीमनमनमहरि
सिहानी मांटीलेंहरिलेमेलिदईमुषतवहिजसोदाजा
नी सांटीलियेदोरिभुजपकरेस्यामलंगरढानी लरिका
नसौतुमसवदिनषुटवतमोसोंकहावहीगे मैयामैमा
टीना

टीनहि षाईमुषदेषौंनिवहोगे वदनउघारि दिषायोत्रि
भुवनवनघननदीसुमेर नभससिरविमुषभीतरहिंसव
सागरधरनीफेर यहदेषतजननी जियव्याकुलवाल
कमुषकत्राआहि नैनउघारिवदनअवमूंदो मातामन
अवगाहि छूंठिहिलोगुलगावतमोकौं माटीमुहिनसु
हावें सूरदासतवकहतिजसोदा व्रजलोगनुयहभावे
१५८ ॥राग धनासिरी॥ मोहनकाहेनउगिलौमाटी वार
वारअनरुचिउपजावतुमहरिहाथलियेसांटी महता
रीकौंकहोनमानतकपटचतुरईठाटी वदनपसारि
दिषावोअपनौंहरिनटवटकीपाटी वडीवारगएलो
चनउघरेभ्रमजामिनिकीघाटी सूरदासनंदरानीभू
वलिमईकहतिनमीठीषाटी १५९ ॥रामकली॥ मोदि
षतअवहीतेरेढोंटाजसुमतिमांटीषाई यहसुनिकैरि
सकरिउठिधाईवांहपकरिलेंआई इककरसौंभुजगहि
गाढेकरि इककरलीनेसांटी मारतिहौंतोहिअवहिंकन्है
यावेगिनउगिलौमाटी व्रजलरिकासवतेरेआगेझूठे
कहतवनाइ मेरेकहेनहींतूमानतिदिषराऊंमुषवा
इ अषिलव्रह्मांडषंडकीमहिमा दिषरायोमुषमांहीं
सिंधुसुमेरुनदीवनपर्वतचकृतमईमनमांही करतें
सांटगिरतनहिजानीभुजाछीनिअकुलानी सूरक
हैजसुमतिमुषमूंदहुवलिवालिसारंगपानी १६०
धनासिरी॥ नंदहिकहतिजसोदारानी मांटीकेमिस

मुषदिषराये ति हूलो व्रजधानी स्वअपिनाल धरनिवन
पर्वनवदन मांघरहे आनी नदी सुमेरदेषि चकृत भई
[illegible] जाकी अकथ कहानी चितैरहे न
वनंदजुवति मुषमन मन करत विनानी सूरदास तव क
हति जसोदा गर्ग कही यह वानी १६१ ॥ सोरठि ॥ कहति
नंदजसुमति सुनुवोरी न जानिये कहा ते देष्यो मेरे कान्है
लावति मैरी पांचवरष को मेरो कन्हैया अचिरज तेरी वा
त वेही काज सांझ लै धावति ता पांछे विलमात कुशल
रहै वलराम स्याम दोउ षेलत षात अन्हात सूरस्याम
को कहा लगावति वालक कोमल गात १६२ ॥ धनासि
री ॥ गुपाल राइ हौं चरननि पर काटी हम अवला रिसवा
चि न जानी वहुत लागि गई सांटी वारौं करं जु कठिन अ
ति कोमल जरहु नैन जिनि डाटी मधु मेवा पकवान छांडि
कैं काहे षात लाल मेरे माटी सिगरोई दूध पियो मे
रे मोहन वलहि न दैहौ वांटी सूरदास नंद लेहु दोह
नी दुहहु लाल की नाटी ॥ १६३ ॥ सोरठि ॥ न्हात नंद सुधि
करी स्याम की ल्यावहु वोलि कान्ह वलि राम हि षेलत
कान्ह वार वडी लागी व्रज भीतर काहू के धाम हि मेरे संग
आइ दोउ वैठें उन विनु भोजन कौन हि काम जसुमति सु
नन चली आतुर ह्वै व्रज घर घर टेरति लै नाम आजु अ
वेर भई कहुं षेलत वोलि लेहु हरि कौं कोइ वाम ढूंढि फि

रीपावति नहि हरि कौं अति अकुलाइ वनावति धाम वा
रवार पछिताति जसोदा वासर वीति गए जुग जाम सू
र स्याम कौं कहुं नहि पावति देषे वहु वालक इक ठांम
१६४ ॥नटनायकी॥ कोउ माई वोलि लेहु गोपालहि
मैं अपने को पंथु निहारति षेलत वेर भई नंदलालहि
टेरत वेर वडी भई मो कौं नहि पावति घनस्याम तमालहि
सिध जेवन सिरात नंद वैठे ल्यावहु कान्ह वोलि तनकालहि
भोजन करैं नंद संग मिलि कैं भूष लगी ह्वै है मेरे वा
लहि सूर स्याम मग जोवति जननी आइ गए सुनि वच
न रसालहि १६५ ॥सारंग॥ नंद वुलावत हैं गोपाल
आवहु वेगि वलैया ले हौं सुंदर नैन विसाल परस्यौ था
र धर्यौ हैं कव कौं मग चितवत घनस्याम तमाल भा
तु सिरातु तात दुष पावत वेगि चलौ तुम मेरे लाल हौं
वलि गई नान्हे पाइनु की दौरि दिषावहु चाल छांडि दे
हु तुम ललित अटपटी यह गति मंद मराल सो राजा जो
आगम जो दीरि सूर सु मन उताल जौ जेहौ वलदेउ पहि
लहि तौ हंसि हैं सव ग्वाल १६६ ॥नटराग॥ हरि कौं टे
रति है नंदरानी वहुत अवार भई कहुं षेलत कहां रहे
मेरो सारंगपानी सुनत हि टेर दौरि तहां आए कव के
निकसे लाल जेवत नहि तुम्हें विन नंद जू वेगि चलौं
गोपाल स्याम हि ल्याई महरि जसोदा तुरत ही पाइ प
षारे सूरदास प्रभ संग नंद के वैठे हैं दोउ वारे १६७

॥राग सारंग॥ जेमत कान्ह नंद इकठौरे कछुक खात लप
टात दुहुं कर बालक हैं अति भोरे बरा मेलि मुख मीजत
कान्हा मिरच दसन टकटौरे तीछन लगी नैन भरि
आए रोवत बाहिर दौरे फूंकति बदन रोहिनी ठाढी लि
ये लगाइ अकौरें सूर स्याम कौं मधुर कौर दैं कीन्हे तात
निहोरे १६८ ॥राग सारंग॥ जेंवत कान्ह नंद की कनिया
कछुक खात कछु धरनि गिरावत छबि निरखति नंदरानी
या बरी बरा बेसन बहु भांतिनु विंजन विविधि अगनि
या डारत खात लेत अपने कर रुचि मानत दधि दुनि
या मिश्री दधि मांखन मिश्रित करि मुख नावत छवि
धनिया आपनु खाइ नंद मुख नावत सो सुख कहत न
बनिया जो रस नंद जसोदा बिलसति सो नहीं तिहूं भु
वनिया भोजन करि नंद अचवन कीनौ मांगत सूर जु
ठनिया १६९ ॥अथ खेलन समै राम कली॥ खेलत
स्याम ग्वालनि संग सुवल हलधर अरु श्रीदामा कर
त नाना रंग हाथ तारी देत भाजत सबै करि करि होउ
बरजे हलधर स्याम तुम जिनि चोट लगि है गोउ तब
कह्यौ मैं दौरि जानत बहुत बल मो गात मेरी जोरी हैं
श्रीदामा हाथ मारें जात बोलि तब ह्यां उठे श्रीदामा जा
हु तारी मारि आगे हरि पाछें श्रीदामा धर्यौ स्याम हैं
हारि जानि कैं मैं रह्यौ ठाढौ छुवत कैसैं मोहि सूर हरि
खीझत सखा सौं मन नहीं कीनो कोहि १७० ॥राग गौरी

सषा कहत हैं स्याम षिस्याने आपुहि आनि वल किमए
ढोठ अव तुम कहा रिसाने वीच हि बोलि उठे हलधर त
व इनके माइ न वाप हारिजीति कछु वे नहि समुझति ल
रिकन लावत पाप आपुन हारि सषा सों झगरत यह
कहि दियेप ठाई सूरस्याम उठि चले रोइ कैं जननी पूछ
ति धाई २७२ ॥रागगौरी॥ मैया दाऊ वहुत षिझायो
मोसों कहत मोल को लीनों तू जसुदा कव जायो कहा क
रों इहि रिसके मारे षेलन हूं नहि जातु पुनि पुनि कहत को
न है माता को न है तेरो तातु गोरे नंद जसोदा गोरी तुम क
त स्याम सरीर चुटकी दै दै ग्वाल हसत हैं सिषै देत वल
वीर तू मोहि कों मार न सीषा दाऊ हि कवहुं न षीझै
मोहन को मुष रिस समेत लिषें वातें सुनि सुनि रीझै सुन
हु कान्ह वलभद्र चवाई जनमत ही को धूत सूर स्याम मो
गोधन की सों हों जननी तू पूत २७२ ॥रागगौरी॥ अव
षेलन मेरी जाति वलैया जबहि मोहि देषत लरिकनु
संग तवहि षिझावत है वल भैया मोसों कहत तात
वसु घो को करि करि जनन वठैया अव वावा कहि कह
त नंद सों जसुमति सों कहै मैया ऐसें ही कहि सव
मोहि षिझावत तव उठि चलो षिस्यैया पाछें नंद सु
नत है ठाढे हसत हसत उर लैया सूर नंद वलरामहि धि
रयो सुनि मन हरष कन्हैया २७३ ॥रामकली॥

देषनै चलो वाल गोविंद सषा प्रिय षरि बुलावत घोष वा
लक वृंद छिछिन है सव दरस कारन चतुर चातिक दास
वराषि छवि नौ वारि धरतन हरहु लोचन प्यास वि
नै वचन निसुनि कृपा निधि चले मनुहर चाल ललित
लघु लघु चरन कर उर वाहु नैन विसाल अजिर प्रति पं
द विंवराजत चलत उपमा पुंज प्रति चरन मानो हेम
वसुधा देत आसन कंज सूर प्रभु की निरषि सोभा रहे
सुर अवलोकि सरद चंद चकोर मानो रहे थकित विलो
कि १७४ ॥धनाश्री॥ षेलन कौ हरि दूरि गयो री संग
संग धावत डोलत हैं कह धौं वहुत अवेर भई री पल
क ओट भावत नहि मो कौं कहा कहौं तुहि जात नंद हि
लात लात कहि वोलत मोहि कहत हैं मात इतनी कह
त स्याम घर आए ग्वाल सषा सव चीन्हे दौरि जाइ उर
ल्याइ सूर प्रभु हरषि जसोदा लीन्हे १७५ ॥विहागरो॥
षेलन दूरि जात कत कान्हा आजु सुन्यो मैं हाउ आयो
तुम नहि जानत नान्हा इक लरिका अवहीं भाजि आयो
रोवत देषे ताहि कान तोरि वह लेत सवनि के लरिका जा
नत जाहि चलो न वेगि सवेरे जैये भाजि आपने धा
म सूर स्याम यह वात सुनत ही वोलि लिये वलिराम
१७६ ॥जैतसिरी॥ दूरि षिलन जिनि जाहु लला नावन
हाउ आये हैं तव हंसि वोले कानुरी मैया कि नै पठा

येहैं अवउरपतसुनिसुनिपेवातेंअहनहंसतवलदाऊ
सप्तरसातलसेपासनराहितवकीसुरतिभुलाऊ चारि
वेदलेगयोसंषासुरजलमेंरह्यौलुकाऊ मीनरूपध
रिकेंजवमार्योतवहिरहेकहंहाऊ मथिसमुद्रसुरअ
सुरकेहितमंदिरजलधिधसाऊ कमठरूपधरिधरनि
पीठिपरसुषुपायोसुहिराऊ जवहरिनाक्षयुद्धअभि
लाष्योमननैंमैंअतिगरवाऊ धरिवाराहरूपरिपुमार्यो
लेछितिदंतअगाऊं विकटरूपअवतारधर्योवलि
छलकरितीनिपैगवसुधाऊ श्रमजलव्रह्मकमंड
लराष्योदरसिचरनपरसाऊ मार्योमुनिविनहीअ
पराधहिकामधेनुलैआऊं इकइसवारनिछत्रीकीनी
तहांनरेछ्योंहाऊं रामरूपरावनजवमार्योदससिर
वीसभुजाऊं लंकजराइछारजवकीनीतहांरहेकहं
हाऊं नृपतिभीमसोंयुद्धपरस्परतहंवहुभातवनाऊं
सुरतचीरदेदूककियोधरिअैसेत्रिभुवनराऊं जमुना
केतटधेनुचरावततहांसघनवनघाऊं पैठिपताल
व्यालुगहिनाथ्योतहांनदेषोहाऊं मांटीकेमिसव
दनुविकास्योंजवजननीउरपाऊं मुषमीतरेत्रैलो
कदिषायोतवहुप्रतीतिनआऊं भक्तहेतअवतारु
धरेसवअसुरनिमारिवहाऊं सूरदासप्रभुकीयहर्

लीलानिगमनेतिनितिगाऊ १७७ ॥रामकली॥ जमु
मतिकान्हयहसमुझावति सुनोस्यामअववडेभयेतु
मयहकहिचूचीपियनछुडावति ब्रजलरिकानुहिपी
वतदेखेंहंसतलाजनहिआवति जैहैविगरिदांतहे आ
छेतातेंयहकहिआवति अजहंछांडिकह्योकरिमेरो
ऐसीवातनभावति सूरस्यामयहसुनिमुसिकानेअं
चलमुखहिलुकावति १७८ ॥सारंग॥ खेलनजाहु
ग्वालसवटेरत यहसुनिकान्हभएअतिआतुर द्वारेतन
फिरिहेरत वारवारहरिमातहिवूझत कहिचोगानकहां
हैं दधिमथनीकेपाछेदेखोलैमैधरीतहांहै लैचौगा
नवटीअपनेकरप्रभुआएघरवाहर सूरस्यामपूछत
सवग्वालनुखेलहिगेकिहिंठाहर १७९ ॥नट॥ खेल
नवनेघोषनिकास सुन्योस्यामचतुरसिरोमनि इहां
हैघरपास कान्हहलधरवीरदोऊ अतिभुजादुहुजोर
सुवलश्रीदामओसुदामावेभएइकओर औरसखावि
टाइलीनेगोपवालकवृंद चलेब्रजकीखोरिखेलत अति
उमगिनंदनंद वटीधरनीडारिदीनीलेचलेढरकाइ आ
पुआपनीघातनिरखतरुप्योखेलुवनाइ सखाजीत
तस्यामजानेंतवकरीकछुपेल सूरप्रभुयोंकहिसुदा
मांकौनुऐसेखेल १८० ॥बिलावल॥ खेलतमेंको
काकोगुसैयां हरिहारेजीतेश्रीदामांवरवसहीकततक
रतरिसैयां जातिपांतिहमतेंवडेनाहीनांहमवसत

नुहैया अतिअधिकाहजनावतजातें आधिकनु न्यारैगि
यां हहंदीकरैं नासौंकोबैलेरहेवेगिजहं नहं सवन्वैयां
सरदासप्रभुषेल्यौ ईचाहतदाउदियो करिनंदढुहैयां
२८१॥ अथकंसीवधराग मारू॥ असुरपति अति हीग
र्वुधरयौ सभामांझबैठोगरजतुहै बोलतरोसभरयो म
हामहाजेसुभटदेतकुलवेठेसवउपराउ तिहुंभुवन
भरिगमुहै मेरौ मोसन्मुषकोआउ मोसमानमेरैसेवक
नहिजाहिकहौंकछुदाउ जाहिकहौं सो ऐसेंलारकना
तेंमुहिपछिताउ नपतिराउआयसुदैमोकौं ऐसो
कौनविचार तुमअपनेचितसोचतजाकोंतिनकोहो
नुसंघार मथुरापतियहसुनिहरषितभयोमनहिध
रयौं अतिभार स्वेतछत्रफहरातुसीसपर धुजपता
कवहुवान ऐसोको जोमोहिनुजानतुतिहुंभुवनमैंम
रीआन असुरवंसजेमहावलीसवकहौकहाक्होंजा
न तनकतनकसेमहर ढोनाकरिआवैविनज्ञान य
हकहिवंसचितेकेमातनकह्योजाइकतकाजु त्रिना
वर्तसकटासपूतनाउनकेहतसुनिलाजु तौतेंकछुके
हैयौंजानतुधनिआन्यौज्यौंवाजु वलकरिछलक
रिमारितुरतहीलैआवहुअवआजु अतिगर्वितदैंक
ह्यौं असुरभ्रमतक्षितिकवानयहआहि कहमारौंजा
वतधरिल्याऊं एकपलकमैंताहि देषौंजाइकौनवह
ऐसो कंसुडरतुहैजाहि मयाचरितकछुगोपपुत्रभ

घोब्रजसमुषमयोआइ वलुमोहनग्वालनिवालक
संगषेलनदेषेजाइ धाइमिल्योकोउरूपनिसाचर
हलधरसिनवताइ मनमोहनमनहीमुसिक्यानेषे
लनषेलनिजनाइ द्वैबालक्लेवैठाइसपानेषेलुरच्यो
व्रजषोरि औरसषासवजुरिजुरि [illegible] ठाढेआपुहनु
जसंगजोरि फलकोनाउवछावनलागेहरिलसिदयो
अमोरि कंधचढेहुनिसिहं महावलनुरनहाथीच
निहोरि नवकेसीयहवरवपुकाछोलैगयोपीठिचढाइ
उतरिपरेहरिताऊपरतेंकोनीपुहकअघाइ दाउघाउस
वभांतिकरनुहैनवहरिबुद्धिउपाइ एकहाथमुषभीत
रनायोपकरिकेसधरिदाइ चहुंघांफेरिअसुरगहि
पटक्योसवदुउट्यो आघात चौंकिपर्योकंसासुरसु
निकैंभीतरचल्योपरात यहकोईव्रजभल्योनजान
न्योयातेंवहुनउरात जान्योकंसअसुरगाहिपटक्यो
नंदमहरिकेतात औरसषासवरोवनधाए आइग
येनरनारि ग्वालरूपसंगषेलनहरिकैलेगयोकाधें
डारि धाएनंदजसोदाधाईनितप्रतिकहांगुहारि ना
जानियेआहिधोंकोवहकपटरूपवपुधारि जसुमति
नवआकुलाइपरीगिरितनकोसुधिनरहाई नंदपु
कारतआरतव्याकुलटेरतफिरतकन्हाई दयतसंघा
रिकसनवआएव्रजनंनमारतजिवाई दोरिनंदउरला
इमिलेसुतमोहीजसोदामाई षेलतरह्योसंगमिलि

मेरेलैंउहिंगयोअकास ॥आपुनहीगिरिपर्यौधरनिपर
मैंउपर्यौतिहिंघास उरडार्यौजियवातमहतउहिंग्रस
पेहैंकरिनासु सूरस्यामघरघरजसुमतिलै॥रजजनम
नहिंलैलास॥ १८२॥राग सारंग॥जसुमतिचूहतिधिर
तिगुपालहि सांझ...वरियाभईसखीरीमैंडरपतिअंजा
लहि जवतेत्रिनावर्तवृजआयौतवतेमोजियसंक ने
ननओटहोतपलएकौमिमनकरतिअदंक दूहिअंत
रवालकसवआएनंदहिकरतगुहारि सूरस्यामकोआ
दूकौनधौलैगयोकाधैंडारि १८३॥कानरौ॥आजुकन्है
यावहुतवच्योरा खेलतरह्योघोषकेबाहिरकोउआयौ
सिसुरूपच्योरा मिलिगयोमनहिंकरनाहींलैचढ्यौहरि
कंधसच्योरा धर्मसहायहोतहैजहंतहंश्रमकरिपूरवपुन्य
पच्योरा गगनउडातगयौलैस्यामहिआइधरनिपरआ
पुरच्योरा १८४॥कान्हरौ॥बडैभागहैमहरमहरिकौ
लैगयोपापीचढाइअसुरदलुकहांकरैउवरिनयाहरिकौ
नंदघरेरानितुलदेवमनावतितुम्हहिलाजसुतघरीयाह
रवौ जहंतहंतुमहिसहायसदाहोजीवनिदैयहस्याम
सुहरवौ हरषभएनंदकरतबधाईदानदेतकहकोनवह
रवौ अंकभमभरिभरिलेतस्यामकौवृजनरनारिअतिहि
मनहरषौ सूरस्यामसंतनिसुखदाइकदुष्टनिकेउरसा
लककरषौ १८५॥सारंग॥खेलनदूरिजाततकतप्यारे

पंचपूदुधतवोजतनोचेगामंगलचा

रामराम

२६२

जबतेंजन्मभयोहेतेरोनवहीतेंदहिमातिललारे कोउ
आवतिजुवतिमिसिकरिकेंकोउलेजातवनासकलारे
अबलगिवचेसूपादेवनिकीवहुतगएभरिसावनुभा
रे हाहाकरतिपाइतिरेलागतिअवजिनिदूरिजाउभैरे
यारे सुनहुसूरजसुमतिसुतवोधतिविधिकेंचरितसवे
हेंन्यारे २८६ ॥नट॥ घेलतस्यामअपनेरंग नंदलालनि
हारिसोभानिरखिथकितअनंग चरनकीछविनिरखि
डरयो असनगगनछपाइ जानुकरभाकीसवेछविनिद
रि लईछडाई जुगलजंघाखंभरंभानाहिसमसरिताहि
करिनिरखिकेहरिलजानेरहेवनघनचाहि हृदेहरिन
खअतिविराजितछविनवरनीजाइ मनोवालकवारि
धरनवदईआइदिखाइ मुक्तमालविसालउरपरकछ
कहोउपमाइ मनोतारागनवेष्ठितनिसिगगनरह्यो
छपाइ अधरअरुनअनूपनासानिरखिजनसुषदाइ
मनोसुफलविंवकारनलेनवैठ्योआइ कुटिलअलकवि
नावदनकेंमनोअलिविसुजाल· सूरप्रभुकीललितसो
भानिरखिरहीव्रजवाल २८७ ॥शालिग्रामप्रस्ताव॥रा
मकली॥ करिअश्नाननंदघरआए लेजलजमुनाकोझा
रीभरिकंजसुमनलेआए पाइधोइमंदिरपगुधारेप्रभु
दजानिपछांनि अस्थललीपिपात्रसवधोए काजदेव
कीजानि वैठेनंदकरतहांपूजाविधिवतसोंवहुभांतिसुरस्या

मुखिलततेआएदेखन न्याति २८८ ॥रागसूहरी॥ नंद
करनपूजाहरिदेखत घंटवजाइदेवअन्हवाएदलचंद
नदेमेखत पटअंतरदेभोगलगायो आरतिकरीवनाइ
कहतकान्हवावातुमआरयोदेवकछूनहिखाइ चितै
रहेतवनंदमहारमुखमुनहुकान्हकीवात सूरस्यामदे
वनिकरजोरीकुसलरहौंजेसेंगात २८९ ॥धनासिरी
जसुदादेखतिहाथिगुठाठी वंलादसाअवलोकिस्याम
कीप्रेममगनचितवाठी एकद्योसपूजाकेओसरमह
रिसमाधिलगाई सालिग्रामपेलिमुखभीतरवैठि
रहेजदुराई सोजतनंदचखतचकुं दिसतेंअचिरजु
सोकछुभाई कहाभयोमेरेइष्टदेवताकोलेगयोचुरा
ई लखतदेखिवदनभीतरहरिमनहमहरिमुसि
क्याई सुनहुवालवलिजाइजननिसुतउगिलहूकुंव
रकन्हाई कमलनेननमोहनहंसिवोलेकहव्याकुलहो
तात सूरस्यामकछुकहतनआवेयहअचिरजकीवात
२९० ॥रामटोरी॥ सुतगुपालनंदकेआगेनंदसरूपन
जान्यौं निर्गुणव्रह्मसगुनलीलाधरिसोईसुतकरिमा
न्यौं एकसमेंपूजाकेओसरमहरिसमाधिलगाई सा
लिग्राममेलिमुखभीतरवैठिरहेअरगाई ध्यानविस
र्जनकियोनंदतवसूरतिआगेनाही कहुंगोपालदेव
ताकहमयोइहविस्मेमनमाही मुखतेंतवहिकाढिज
गुनंदनखियोनंदकेहाथ सूरदासस्वामीसुखसागरके

सुरश्याम व्रजनाथ १८९॥नंदकौवरुनवा।धिलेगएकौस
मो॥विलावल॥उतमसुफलएकादसीआई विधिव
त व्रत कीनो नंदनैराई निराहारजलपानिविवर्जित पा
पराहितफलधर्महिअर्जित नारायनहितध्यानलगा
यो औरनहीकछुमनुविरमायो वासरध्यानकरत
सववायो निसिजागरनकरनमनचायो पाटंवरदिवि
मंदिरछायो पुहपमालमंडलीवनायो देवमहलचं
दनलिपवायो चौकुदेईविठकौवनायो सालिग्राम
तहांविठायो धूपदीपनैवेद्यचढायो प्रेमसहितकरि
भोगुलगायो आरतिकरितवमाथोनायो सादरसहि
तकरीनंदपूजा तुमतजिऔरनजानौदूजा रतीयप
हरतवरैनिगमाई नंदमहरिसौंकहावुलाई दंडएकघा
दसीसकारे पारनाविधिकरौसवारे यहकहिनंदुग
येजमुनातट लेधोतीझारीविधिकमपट झारीभरि
जमुनाजलुलीनो वाहिरजाइदेहकृतकीनो लेमाटी
करचरनपखारि उतमविधिसौकरीमुखारी आचवन
लैपैठेनदपानी जलवाजनदूतनितवजानी वरुनपा
सल्याएततकालहि नंदहिलेगएवाधिपातालहि
जानौवरुनरूपमकेनातहि मनहीमनहरषतइहिवात
हि भीतरलैराखेनंदनीके अंतःपुरमहलनिरानीके
रानीसवैंनंदकौदेख्यौ धन्यजन्मआपनोकरिलेख्यौ
जिनकैसुततैलोक्यगुसांई सुरनरमुनिसवकैहैसांई

बरननहिकहीमन हरषबढाये बडीबातभईनिंदहिल्या
ए अंतरजामीजानहुबाता अबहीआवतहैंजगत्राता
जाकोब्रह्माअंतुनपायो जाकोमुनिजनध्यानुलगायो
जाकौनेतिनिगमगावतहै जाकोमुनिवरवनध्यावत
हैं जाकौध्यानुधरेसिवजोगी जाकोसेवनसुरपतिभो
गी जोप्रभुहैजलथलसबव्यापक जोहैंब्रह्मसगर्वकोदा
यक गुनअतीतअविगतिअविनासी सोब्रजमैंखेल
तसुखरासी धनिमेरेभननंदहिल्याए कहनामयञ्र
वआवनधाए महरिकहीतवसबग्वालिनिकों बडीबा
तभईनिंदमहरिकों गएग्वालनवनंदबुलावन देख्योजा
इजमुनजलपावन जहंतहंढूढिग्वालघरआए धोती
झारिवैलैआए मनमहसोचुकरतअकुलाए नहींज वैं
सोदासोनहिंपाए धोतीझारीतटमैंपाई सुननमहरि
मुषगयोसुखाई निसाअकेलेआजुसिधाए काहूधोंज
लचरधरिषाए यहकहिजसुदारोइपुकारी मोवरजततू
तेरानिसिधायौ व्रजजनलोगसबैउठिआए जमुना
केतटकहूनपाए वनवनढूंढतगाउंमझारे नंदनंदकहि
लोगपुकारे षेलत तेहरिहलधरआए रोवतमातदेखि
दुषपाए कनरोवतिहैंजसुदामैया पूछनजननमोसोंदो
उभैया कहतस्यामजिनिरोवैमाता अबहीआवतहैं
नंददताता मोसोंकहिगएअबहीआवन रोवैंजिनिमैं

जानुकुलावन सबके अंतरजामी है हरि लै गयो वेंचि वस
न नंद हि धरि यह कारज मैं वाकौ दीनो धौ बैं इत नुनंद त
चीन्हो बलन लोकन तव ही हरि आए सुनन तवलन आनु
रहे धाए आनद कियो देषि हरि कोमुष कोटि जन्म
के गए सब दुष धन्य भाग मेरे वडे आजु चरन कमल द
रसन सुष काजु पाटंवर पांवडे उसाए महलन वंदरवा
र वंधाए रतन षचित सिंघासन धार्यो तिहिं पर व्रह्म
हि लै वैठार्यो अपने कर प्रभु चरन पषारे जे कमला उ
र तें न हि टारे जे पद पर सि सुरसरी आई तिहूं लोक है वि
दित वडाई ते पद वरुन न्हाय लै धोए जन्म जन्म के पात
क षोए कृपासिंधु अवसर नु म्हारी इहिं कारन अपरा
ध विचारी आए चले हरि नंद हि देषन वैठे नंद राज वर
मे षन न्परानी सव आतोंढाढी मुषमुष तें सब अ
स्तुति काढी पाइ नु परी कृस्न के रानी धनि ज न्म सव हि
न कहि वानी धनि नंद धनि धन्य जसोदा धनि धनि
तुहे षिलावति गोदा धनि वृज धनि गोकुल की नारी
पूरन व्रह्म जहां वपु धारी सेस सहस मुष वरनि न जाई
सहस रूप कों करे वडाई देषि नंद न वकन तें रे विचारा य
ह कोऊ आहि वडो अवतारा नंद मन हि अति हरष वढायो
कृपासिंधु मेरे ग्रह आयो वरुन हि दीनो लोक वडाई
वृंदावन राज करो सदाई वरुन थापि नंद हि लै आए

महरगोपसवदेषनधाए नंदहिवूझतहैंसववाता हम
अतिदुषितभएसुनिबाता एकादशीकाल्हिमैंकीनों
निसिजागरनतेमुयहलीनो तीनिप्रहरानिसिजागिवि
हाई तवलीनीमैमहरिवुलाई एकदंडद्वादशीसुनाई
ताकारनमैंकरीवडाई एकदंडद्वादसीकैपीयल देनिक
सितमैंगयोजमुनाजल गयोजमुनभीतरजैटि लौंभ
रि वरुनदूतलैगयेमोहिधरि तहंतेजाइकृस्नमुहि
ल्यायो यहकोऊवडोपुरुषहैंआयो इनकीमहिमाको
ऊनजानैं वरुनकोटिमुषकहीवषानैं रानीसहितप
र्योचरननितर वंदनवारिवंधेमहलनिधर मेरोकहो
सत्यकैमानो इनकौंनरदेहीजिनिजानौं जसुमतिसु
नीचकृतयहवानी कहतकहायहअकथकहानी
वृजनरनारिसुनतयहगाथा इनतेहमभएसवैस
नाथा मायामोहकरिसवैभुलाए नंदहिवरुनलोक
तेंल्याए नंदएकादशीवरनिसुनाई कहतसुनतस
वकेमनभाई जोयापदकौंसुनैसुनावै एकादसिव्रत
कोफलुपावै यहप्रतापनंदहिदिषराई सूरदासप्र
भुगोकुलराई १८२ ॥कानरो॥ नंदहिकहतिजसोदा
रानी सुहिवरजेनिसिगएजमुनतट वैठेजाइअके
लेपानी अवतौकुसलपरीपुंन्यनतैं द्विजनिकरो
वहुदान वोलिलेहुवजानेवजावहुदेहुमिगाईपान

गावतिमंगलनारिवधाईवाजतनंददुआर सुनौसूरयह
कहतिजसोदानंदवचेद्दहिवार १८३ ॥बिलावल॥ को
हतनंदजसुमतिपहवात अवअपनेजियसोचुकरतक
नजानेत्रिभुवनपतिसोतात गर्गसुनाइकहीजोवानी
सोसोईप्रगटिहोतिहैंजात इनतेंनहीऔरकोउसमर
थयेहैंसवहीकेनाथ मायारूपमोहनीलगाईउरेभु
लेंसवैयेगाथ सूरस्यामषेलततेंआएमाषनमांगत
देमाहाथ १८४ ॥गौरी॥ तवहिजसोदामाषनुल्याईमे
मथिकेअवहीधरिराख्योतुम्हरेकाजमेरेकुअरकन्हाई
मांगिलेहुएहिविधिमोसोंमोआगेंतुमषाहु वाहिर
कवहूंकछूजिनिषैयोडीठिलगैगीकाहु ननकननक
कछूषाहुललामेरेज्योंवढिआवैदेह सूरस्यामअव
होहुसयानेवैरिनुकेमुषषेह १८५ ॥रामकली॥ हरि
केवालचरितअनूप निरषिरहीव्रजनारिइकटकअंग
अंगप्रतिरूप विथुरिअलकैंरहीवदनपरविनाविपि
निसुभाइ देषिषंजनचंदकेवसमधुपकरतसहाइ
जलजलोचनचारुनासापरमरुचिरवनाइ जुगलषं
जनकरतअवनितवीचुकीयोवनराइ अरुनअध
रनिदसनझाईकहौंउपमाथोरि नीलपुटविचमो
तीमानोधरेचंदनवोरि सुभगवालमुकुंदकीछवि
वरनिकापैजाइ भ्रकुटीपरमसिविंदुसोहेसकैसू

रू नगाइ १८७ ॥ रागु कानरो ॥ सांझ भई घर आवहु प्यारे
दौरन कहा चोट लगिहैं कहुं पुनि खेलौंगे होत सकारे
आपुही जाइ बांह गहि ल्याई खेह रही लपटाइ धूरि धा
रि तातो जल ल्याई ते लपरसि अन्हवाइ सरस वसन
तन पोंछि स्याम को भीतर गई लिवाइ सूर स्याम क
छु करौ वियारू पुनि राखौ पौढाई १८८ ॥ विहागरो
कमलनैन कछु करो वियारी लुचई लपसी सद्य जलेबी धं
सोई खवहु जो लगे पियारी घेवर मालपुआ मुतिला
डू सघर सजूरी सरस संवारी दूध बराउ तिमद हरी सी
मू ल मसूरी की रुचि न्यारी आछो दूध औटि धोरी को
लैं आई रोहिनि महतारी सूरदास बलिराम स्याम दो
ऊ जेंवहु जननि जाहि बलिहारी १८९ ॥ विहागरो ॥ व
लमोहन दोऊ करत वियारी प्रेम सहित दोउ सुतनि जि
मावति रोहिनि अरु जसुमति महतारी दोऊ भैया मि
लि खात एक संग रतन जटित कंचन की थारी आल
स सों कर कौर उठावत नैननि नींद झमकि रही भारी दो
ऊ माता निरखति आलस मुख छवि पर तन मन डारति
वारी वारवार जमुहात सूर प्रभु वह उपमा कवि कैहै क
हारी १९० ॥ रागु केदारौ ॥ कीजै पै पान लला रे ल्या
ई है दूध जसुमति मैया कनक कटोरा भरि लीजै यह
पै पीजै अति सुखद रीजै कन्हैया आछो मेरो औटो

सुठिनीको अलमिलि मिगाई लचिकारि अचवत क्यों न नन्हे
या वहुत जतन नकरि करि राख्यौं बुजराज लेहै तेतुम कार
नवलमैया सूरदासप्रभुपै पावत बलराम स्याम दो
ऊजननी लेति वलैया २०० ॥ रागकेदारो ॥ वलमो
हनु दोऊ अलसाने कछु कछु खाइ दूध लै अचयो सुखज
मात जननी जियजाने उठहु लाल कहि मुखपखा
यो तुम को लैघो गाऊं तुम सोवहु मैं तुमहि सुवाऊं
कछु मधुरे सुरगाऊं तुरत जाइ पौढे दोऊ मैया सो वत
आईनीद सूरदास जसुमति सुखपावति पौढे वाल
गोवीद २०१ ॥ रागसूही ॥ माखनु वाल गुपाल हि भा
वै भूखे छिननु रहत नमन मोहनु ताहि वदों जो गह
लगावै आनि मथानी दह्यौ विलोयों जो लगि
लालनु उठन नपावै जागत ही उठि रारि करत अति
नहि माने जो इंद्र मनावै हौं यह जानति वानि स्या
मकी अखियामीचें वदन चलावै नंदसुवन की ल
गौं वलैया यह जुठनि कछु सूरज पावै २०२ ॥ रा
गविलावल ॥ भोर भयो जागो नंदनंदन संगसखा ठा
ढे जगवंदन सुरभी पैहित वछ पियावैं पंछी तरु
तजि दुहुं दिसि धावैं अरुन गगन तमचुरनि पुकारे
तजि दुहुं दिसि धावे ... सिथल धनुष रति पति गहि डारे निसिनि घटी रवि

रथरुचिसाजी चंदमलिनचकईरतिसाजी कुमुदिनि
सकुचीवारिजफूले गुंजतफिरतअलीगनझूले दरस
नदेहुमुदितनरनारी सूरजदिनप्रभुदेवमुरारी २०३
॥बिलावल॥ जागियेबृजराजकुंअरकमलकुसुमफूले
कुमुदवृंदसकुचतभेभंगलतामूले तमचुरखगरोरसु लिं
नहुबोलतवनराई रांभतिगोखरिदिनवछराहितधा
ई बिधुमलीनरविप्रकासगावतबृजनारी सूरस्याम
प्रातउठौअंबुजकरधारी २०४ ॥बिलावल॥ भोरभयो
मेरेलाडिलेंजागोकुंअरकन्हाई सखाद्वारठाढेसबै
खेलौजदुराई मोकोमुखदिखरावोवारिनाऊंनसावहु
तुममुखचंदचकोरनैनमधुपानकरावहु तबहीघर
मुखद्दरिकैमकनिसुखकारी हंसतउठेप्रभुसेजतैंस
रजुवलिहारी २०५ ॥बिलावल॥ कमलनैनमंडप्र हरि
रोकलेवा माखनरोटीसंघजमोदधिभांतिभांतिके
मेवा खारिकदाखचिरोंजीकिसमिसिउजलगरीवादा
म सफरीसेवछुहारेपिस्ताजेतरवूजानाम अब
मेवाबहुभांतिभांतिहैंषटरसकेमिष्टान सूरश्याम
प्रभुकरतकलेउरीझैस्यामसुजान २०६ ॥अथगो
चारन॥रामकली॥ आजुमैंगाइचरावनजैहों वृंदाव
नकेभांतिभांतिकेफलअपनेंकरमेंषैहौं ऐसीअब

ह्विकहोजिनिवारेदेषोअपनीभांति ततततततकृपा
चलिहोकैसेंआवतहेरोराति प्रानजानगाईयालें
चारनघरआवतिहेसांझ तुम्हेरोवदनकमलतुम्हि
नेहेंगैगतघामदिमांझ तेरीसौंमोहिघामुनलाग
तभूषनहीभूषतेनक सूरदासप्रभुकेछोनमानतय
रेआपनीटेक २०७ ॥रागसारंग॥ मैयाहौंगाइचरा
वनजैहें तूकहिमहरिनंदवावासोंवडोभयोनडरेहौं
वंसीवटतरगाइनकेसंगषेलतअतिसुषुपैहों औ
दनभोजनदेदधिकांवरिभूषलगेतेषैहौं सूरदास
हेसाषसोंहेरेंजोजमुनाजलन्हेहौं २०८ ॥रागराम
कली॥ चलेसवगाइचरावनग्वाल हेरीहेरसुनतलरि
कनकीदौरिगएनंदलाल फिरिफिरितउनदेंजसुमति
देषेंदृष्टिनपरेकन्हाई जानीजातग्वालसंगदौरेटे
रतिजसुमतिधाई जातचलेगायनकेपाछेवलदाऊ
कहिटेरत पाछेंआवतिजननीदेषीफिरिफिरिइतकों
हेरत वलदेषोमोहनकोआवत सषाकिये सवठाढे ये
पहुचीआइजसोदारिससौंदोऊभुजपकरेगाढे हल
धरकह्योजानदेमोसंगआवहिआजुसवारे सूरदा
सवलसोंकहेजसुमतिदेषेरहियोप्यारे २०९॥
विलावल॥ षेलनकान्हचलेग्वालनसंग जसुमति

यहै कहति घर आई देषौ हरि कीन्हे जे रंग देषौ जाइ आ
जु वन कौ सुष कहा परयो सिघरयो है आनहि सौं लाग्यो
वे ही रंग अपनी ये टेक परयो है माषन रोटी अलसा
न ल जल ज सु मति दियो पठाई सूरनंद हसि कहति
महरि सौं आवत कान्ह चराई २०८ ॥सारंग॥ हरि जू
कौं ग्वालिनि भोजन ल्याई वृंदाविपिन विसद जमु
ना तट सुचि ज्यौं नारवनाई सानि सानि दधि भातु लि
यौ कर सुहृद सषा निकर देत मध्य गुपाल मंडली मो
हन छाक बांटि कै लेत देवलोक देषत सब कौतुक वा
ल केलि अनुरागी भावत सुनत सुनत सुष करि मनो
सूर दुरित दुष भागी २१० ॥बिलावल॥ वृंदावन देष
नंद नंदन अतिहि परम सुष पायो जहं जहं गाइ ग्वा
ल सषा डोलत तहं तहं आपुन धायो वलदाऊ मो कौ
जिनि छाडौ संग तुम्हारे ऐहौं कैसेहूं आजु जसोदा
छांडौ काल्हि न आवन पैहौं सोवत मोकौं टेरि लिहौ जै
वा वा नंद दुहाई सूर स्याम विनती करै वल सौं सष
नि समेति सुनाई २१० ॥रागु गौरी॥ वन तें आवत धे
नु चराए संध्या समै सांवरे सुष घर गोपद रज लपटाए
वरह मुकुट के निकट लसति लट मधुप वने लचि पाए
विलसत सुधा जलज आनन पर उडत न जात उडाए
विधि वाहन भछन की माला राजत उर पहिराए एक
वपु रही नाही वडे छोटे टोटा सिसु ग्वाल वने रूकदाए

सूरदासबलिलालप्रभुजीजीवनजननजसमाए २११
रागगौरी॥ आजुहरिधेनुचराएआवत मोरमुकुटब
नमाल।विराजतपीतांबरफहरावत जिहिंजिहिंभांति
ग्वालसबबोलतसुनिश्रवननिमनराषत आपुन
टेरिलेतनान्हेसुरहरषतपुनिमुषमाषत देषतिनं
दजसोदारोहिनिअतदेषतुब्रजलोगु सूरस्यामगाइ
नसंगआएमैयालीनोरोगु २१२ ॥गौरी॥ जसुमतिदौ
रिलियेहरिकनिया आजुगयोमेरोगाइचरावनहौं
बलिजाउंनिछनिया मोकारनकछुआन्योहैबलि
वनफलतोरिकन्हैया तुमहिमिलेमैंअतिसुषपायोमेरे
कुंअरकन्हैया कछुषाहुजोभावैमोहनदैरीमाषनरो
टी सूरदासप्रभुजुगजुगजीवहुहरिहलधरकीजोटी
२१३ ॥प्रथममाषनचोरीगौरी॥ मैयारीमोहिमाषनु
भावै जोमेवापकवानकहतितूमोहिनहींरुचिआवै
ब्रजजुवतीइकपाछेंठाढीसुनतिस्यामकीबात मन
मनकहतिकबहुमेरेघरदेषौंमाषनषात बैठेजाइ
मथनियाकैंढिंगमैंतबरहौंछिपानी सूरदासप्र
भुअंतरजामीग्वालिमनहिंकीजानी २१४ ॥राग
गौरी॥ गएस्यामतिहिंग्वालिनिघर देष्योजाइबार
नहिंकोऊइतउतचितैचलेघरभीतरहरिआवतगो
पीतबजानौआपुनरहीछपाइ सूनेसदनमथनिका
केढिंगबैठिरहेअरगाइ माषनभरीकमोरीदेषत

है लैलागेध्यान चितेरहतमनिषंभछांहतनतैसोकराम
सयान प्रथमआजुमैचोरीआयोभलोवन्योहैसंग
आमुषानप्रतिबिंवषवावतगिरतकरतकारंगु जोचा
होसुवदेउंकमोरीअतिमीठोअतिडारत तुमहिदेषितैंअ
तिसुषपायोतुमजियकहाविचारत कुनिसुनिवातस्या
मकीमुषकाउमगिहंसीतववनारी सूरदासप्रभुनिरषि
ग्वालिमुषतवभजिचलेमुरारी २२५ ॥ गौरी ॥ फूलाफि
रतग्वालिमनमैंरी पूछतसषीपरस्परवातैंपायोपरोंक
छ कहूंतेंरी पुलकितरोमरोमगदगदमुषवानीकहतनआ
वैं ऐसेंकहाआहिसोसषीरीमोसौंक्यौंनसुनावैं
तनन्यारोज्योंएकुहमारोहमतुमएकैरूप सूरदास
कहिग्वालसषीसौंदेष्योरूपअनूप २२६ ॥ गूजरी ॥ आ
जुसषीमनिषंभनिकटहरिजहंगोरसकौंगोरी निजप्र
तिबिंवसिषावतज्योंसिसुप्रगटकरींजिनिचोरी आध
विभागआजुतेंहमतुमभलीवनीहैजोरी माषनषाउ
कतनहिंडारतुहौंछांडिदेहुमतिभोरी हिसानुलेहुसवै
चाहतुहौंयहैवातहैथोरी मीठोअधिकपरमरुचिला
गेदेहोंकाढिकमोरी प्रेमउमगिधीरजनरह्योतवप्रगट
हंसीमुषमोरी सूरदासप्रभुसकुचिनिरषिमुषभजेकुं
जगलिहिषोरी २२७ ॥ बिलावल ॥ प्रथमकरीहरिमाषनचो
री ग्वालिनिमनइछाकरिपूरनआपुभजेप्रभुब्रजकीषो

री मनमैयेयहैविचारकरतहरिव्रजघरघरसवमाउं वा
लक पजसुमतिसुहिजानेंगोपिनुमिलिसुषमोगु
सूरदासप्रभुकहतप्रेमसौंयेमेरेब्रजलोग २१८ ॥
रामकली ॥ करतहरिग्वालसंगविचारु चोरीमाष
नषाउसंगमिलिकैरौवालविहारु यहसुनतसवसषा
हरषेभलीकहीकन्हार हास्यपरस्परदेततारीसौंहक
रिनदरार कहांतुमयहबुद्धिपाई स्यामचतुरसुजान
सूरप्रभुमिलिग्वालवालकरतहैंअनुमान २१८ गो
री सषासहितगएमाषनचोरी देष्यौस्याममवा
छपंथहेरें गोपीएकमथतिदधिभोरी हेरिमथानी
धरीमाटतेंमाषनहोउतरात आपुनगईकमोरीमांग
नहरिपाईघांघात पैठेसषानसहितघरसूनेंमाषनद
धिसवषाई छूछीछांडिमटुकीयादधिकीहांसिस
ववाहिरआई आइगईकरलियेलकुटियाघरतेंनिकरे
ग्वाल माषनकरदधिमुषलपटानोदेषिरहीनंदला
ल कहांआनुरजवालनसंगलेमाषनमुषलपटानो
देषततेंउठिभजेसषायहहरहघरकआरछपाने भुजग
हिलियोकान्हरग्वालनिकरेव्रजकीषोरि सूरदा
सठगिरहीग्वालिनीमनहरिलियोअजोरि २२०
॥ रागगौरी ॥ चकृतभईग्वालिनितनहेरौ माषनछां

गोपालमिलिसुषवनारतसवकोमाषनषाउ

डगरईमथिवेसेंहिंतवतैंकिसैंअवेस्यो देषेजाइमहु।किय
रातिमेरणीगहूँहेरी चकृतभईग्वालिनिमनअपनें
हूँढतिघरफिरिफेरी देषतपुनिपुनिघरकेवासनमनहि
रिलियोगुपाल सूरदासरसभरीग्वालिनीआमेहरीके
ख्याल २२१ ॥बिलावल॥ बूझतघरघरग्वालीयहबात
दधिमाषनचोरीकरिलैहरिग्वालसषासंगषात माष
नषातअचानकपावैंभुजभरिउरहिछुपावत मनहीम
नअभिलाषकरतिसबहृदैधरतियहध्यान सूरदासप्र
भुकोघरतेंलैदेहौमाषनषान २२२ ॥सारग॥ गोपा
लहिमाषनषानदै सुनिरीसषीकोऊजिनिबोलैवदन
दहीलपटानदै तुमजाननतिकछुवेनहिजाननतिमुनत हरें
मनोहरकानदै प्यायेजाइचांएनीलेहौंमोजसुमतिलौं
जानदै सूरदासप्रभुतुम्हरेंमिलनकोंरसघोंगीतनमन
प्रानदै २२३ ॥-गोचारन॥सारग॥ मैंअपनीसवगाइ
चरैहौं प्रातहोतवलकेसंगजैहौंतेरेकहैंनरहौं ग्वाल
नवालगाइयनकेभीतरनैकहुनहिंडरलागत आजुन
सोऊंनंदद्रुहाईरैनिरहौंगोंजागत औरग्वालसवगा
इचरैहैंमैंघरवैठ्योरहिहों सोरस्यामअवसोइरहौंतु
मधानजानदैमैंहों २२४ ॥केदारौ॥ वहतेंदुषह

सू॰सा
१६६

रिसोइगयौरी काहूहिनंलाग्योइहिंवातेंहिक्रमक्रमके
हरिरोधलियौरा एकदिवसगायौंगाइचरावनग्वा
लनसाथसवारें अवतोसोइरह्यौहैव्र।हिकेंप्रान।हि
कहाविचारैं इहेंतोसवबालिराम।हिलगिसंगलेगए
लिवारइ सूरनंदयहकहतमहरिसौंआवनदेफिरिधाइ
२२५॥ललित॥ जागियेगुपाललालआनंदनिधि
नंदलालजसुमतिकहैवारवारभोरभयौप्यारे नैन
कमलसेविसालप्रीतिवापिकामरालमदनललित
वदनऊपरकोटिवारडारें उगतअरुनविगतिसंर्वरी
ससंकिकिरनिहीनदीनदियमलीनछीनद्युतिसमूह
तारे मनहुज्ञानघनप्रकाशवीतेसवभवविलासआ
सत्रासतिमिरतौनतरनितेजजारे बोलतखगमुकरनि
रंकमधुरकैप्रतीतिसुनहुपामप्रानजीवनिधनमेरेतु
मप्यारे मनौवेदवंदीमुनिसूतवृंदमागधगनविरद
वदनजैजैजैजैनकैटभारे विगसतकमलावलीयचले
प्रपुंजचंचरीकगुंजनकलकोमलधुनित्यागिकंज
न्यारे मनौविरागपाइसकलसोकगृहविहाय
प्रेममत्त।फिरतभृत्यगुननगुनतिहारे सुनतवचन

प्रियरसालजोगोग्रतिसेदयालमोगोजंजालविपुलदुषक
स्वटोरे त्योगेभ्रमपुंददंदनिराविकेमुषारविंदसूरदा
स आनिग्रनंदमेटेदभोरे २२६ ॥रागविलावल॥
करहुकलेउकानपियारे माषनरोटीदियोहाथपर
वलिवलिजाउहोंषाउललारे टेरतग्वालद्वारहेठाढे
आएनवनेहोनसवारे षेलहुजाइव्रजहिकेभीतरदू
रिकहूंजिनिजैहोवारे टेरुहेवलरामस्यामको
आवहुआइधेनुवनचारे सूरस्यामकरजोरिमातसों
गाइचरावनकहतहहारे २२७ ॥विलावल॥ मैया
रीमोहिदाउटेरत मोकोंवनफरतोरिदेतहैं आपुनुग
इनघेरत औरग्वालसंगकवहुनजेहोंवसवमोहि
षिझावत मेंअपनेदाउसंगजेहोंवनदेषनसुषपा
वत औरदेपुनित्यावतघरकोंनमोहिजानदेत
सूरस्यामकहेजसुमातिमैयाहाहाकरिकरिकेत २२
८ ॥सारग॥ वोलिलियोवालिरामहिजसुमति आ
वहुलालसुनहुहरिकेगुनकालिहितेलंगयोकरनअति
स्यामहिजानदेहमेरेसंगतूकाहेउरपावति मेंअप
नेहिंगतेंनहिं श्री श्री श्री श्री

तासु जियहि प्रतीत न आवति हंसी महरि विलखी याते सुनि बलि हारी यासु भवी जात लिवाइ सूरके प्रभु कों कहति बीरके सषती २२९ ॥राग नट॥ अति आनंद भयो हरि धाए टेरत लाल ग्वाल सब आवहु मैया मोहि पठाए उनते सषा हंसत सब आए चले कुंवार रूवन देषहु वनमाला तुम कौं पहिराइ हि धातु चित्र तनेर बहु गाइ लई सब घेरि घर निनितें महर गोप के बालक सूर स्याम चले गाइ चरावन कंस उराहिं के साल २३० ॥राग नट॥ चले वन धेनु चरावन कान्ह गोप बालक कछु सयाने नंद के सुत नान्ह हरष सौं जसुमति पठाए स्याम मन आनंद गाइ गोसुत गोप बालक मध्य आनंदकंद सषा हरि कौं यह सिषावत छांडि जिनि कहूं जाहु सघन वृंदावन अगम अति जाइ कहूं भुलाहु सूर के प्रभु हंसत मन में सुनत ही यह बात मैं कहूं जिनि संग छांडौं वनहि बहुत उरात २२१ धनासिरी॥ हेरी देत चले सब बालक आनंद सहित जात हरि षेलत संग मिले पशु पालक कोऊ गावत कोऊ वेनु बजावत कोऊ नाचत कोऊ धावत किलकत कान्ह देषि यह कौतुक हरषि सषा उरलावत भली करी तुम मोकों ल्याए मैया हरषि पठाए गोधन वृंद लिये

सू.सा
969
२८१

व्रजवासिनव्रजप्रभातप्रहुंचाए चरतधेनुअपनेअ
पनेरंगअतिहिसघनवनचारी सूरस्यामगिरिधिरना
रवरावतजसुमतिकौसुतवारी ॥ २२२ ॥ अथवृष
भासुरवध ॥ सोरठि ॥ इहिअंतरवृषभासुरआयो दे
षोनंदसुवनग्वालनसंगपहैघातहेपायो गयोसमा
इधेनुपतिहि जैमननैभेदाउविचारे हरितवहिलषिलि
योअसुरकौडोलतुधेनुविडारे गइयाविडरीचलीजि
तहितकौसषाजहांतहांघेरे वृषभसंगसौंधरनि
ल्यो उसासतबलमोहननमहेरे आवतुचलेस्यामकेस
नुषनिदरिआपुअनुसारी कूदिपस्योहरीऊपरआ
योविधिपोयुनअतिभारी धाइपरेसवसषाहांत्रदेषत
नस्यामकौमास्यो धाउपकरिभुजसौंगहिलेस्यौभूत
लमांहपछारो परोअसुरपरवतसमानवैचकृत
भएसवग्वाल वृषभअंगनिवेहमसवधाएयहतौ
कौऊविकराल देषिचरितजसोमतिसुतकेमनभेव
रतविचार सूरदासप्रभुअसुरनिकंदनसंतनप्रान
अधार ॥ २२३ ॥ गौरी ॥ धन्यकान्हधनिधनिव्रज
आए आजुसवनिघरिवेयहवातोधनिनुमहम
हिवचाए यहकैसोअति होतनकैसेभुजनिछिरा
यो पलकहिमांझसवनिकेदेषतमास्योधरनिगि
रायो अवकौंहमजुमकोनहिजान्योंतुमजगतीप्रति

पालक सूरदासप्रभुदुष्टनिकंदनब्रजजनकेदुषघाल-
क २३४ ॥कल्यान॥ आवतमोहनधेनुचराए मोर
मुकटसिरउरवनमालाहाथलकुटगोरजलपटाए
कटिकिंकिनिधुनिकंझरवाजतचरनचलतनूपुरख-
राए ग्वालमंडलीमध्यस्यामघनपीतवसनदामि
निहिलजाए गोपसषाआवतगुनगावतमध्यस्यामहल
धरछविछाए सूरदासप्रभुअसुरसंघारिब्रजआवत-
मनहरषवढाए २३५ ॥कल्यान॥ एगोरेनुराजितआ-
वतहै मोहनलाल गोपदरजमुषपरछविलागतिकुं-
डलनैनविसाल वनमोहनवनतेवनेआवनलानिमे
घाजाल ग्वालमंडलीमध्यविराजतवाजतवेनुरसाल
सूरस्यामवनतेंब्रजआएजननिलियेअंकमाल २
३६ ॥कान्हरौ॥ तेरौमाईगोपालरतनसरौ जहंजहंभिरत
प्रचारियेजवरिनहिंपरतहैपूरे वषभतरूपदानवरत्नुआ
यौमोछरनमांघसं[illegible]यौ पाउपकरिभुजसौंगहि
वाकौंभूतलमांहपछार्यौ कहनगुपालजसुमति-
धनिमैंपावउंपूततैंजायौ यहवोउआदिपुतस-
ओनारीभागहमारेआयौ चरनकमलवंदितरहियेअ-
नुदिनुसेवाकीजे वारंवारसूरकैहैप्रभुवांहैहवेलेया-
लीजै २३७ ॥सोरठि॥ जसुमतिवारवारपाछितानी सुनि
करतूतिरषापुरवीजवग्वालकहीमुषवानी गोपनि-

मीनरूप्रायसमानोकान्हहिमारनताक्यो मैनहिका
हूकोकछुघात्योपुन्यनिकरवरनाक्यो सुनिजसु
मतिमैयाकरिषाउतिहरिकेमाएथ्याल पर्वतउ
ल्पदेहधारिगोपलमैंनिधायोविहाल तुमरारलाकौं
यहनाहीयहब्रजकोरषवार सूरदासमनमोह्यो
सवकौमोहननंदकुमार २३८ ॥माषनचोरीकान्ह
रो॥ हसिजननासोंवातनकहतहरिदिष्यौमैंवृंदाव
ननीकें॥रतिरमनीकभूमिद्रुमवेलीकुंजसघनि
निरषतसुषजीकें जमुनानिकटधेनुचराइकहत
वातमातामनवीकें भूषमिटीवनफलषाएघ्यास
जमुनजलपीकें सुनतयसोदासुतकीवातेंउति
आनंदमगनतवहीकें सूरदास प्रभुविश्वभरन
जेचोरभयेब्रजननकदहीके २३९ ॥कानरो॥ चली
ब्रजघरघरनियहवात नंदसुतसंगसषालानेचो
रिमाषनुषात कोउकहतिमेरेभवनभीतरअव
हिपैठेधाइ कोउकहतिमोहिदेषिद्वारेंगएउनहि
पराइ कोउकहतिकिहिभांतिहरिकोंदेषोंअपनेधा
म हेरिमाषनुदेहिआछोषाहिजितनोस्याम कौ
उकहतिमेंदेषिपाउंभरिधरयौअवचारि कोउकह
तिमेंवांधिराषोंकोसकेनिरवारि सूरकेप्रभुमिलन
चारनकरातिउक्तिविचारि जोरिभरिविधिसोंमनाव

न पुत्र षनंद कुमार २४० ॥कानरो॥ ग्वालिनि घरा एक आ
नि सांझ की अंधेरी मंदिर मैं आए समाई स्यामलन निल
षिन जाइ देह में हरूप को होनो कहे निवेरा दीपक गृह
दान करयौ भुजा चारि प्रगट धरयौ देषि भई चकित ग्वा
लि इन तउ न कोउ हेरी स्याम हूं देषे अति विसाल मा षनद
धि विंद जाल मन मोह्यो नंदलाल वाल हाथ हू घेरी जु
वती अति भई विहाल भुज भरि दे अंक माल सूरज प्र
भु अति कृपाल डारयो तन घेरी करसों कर लेत मार म
हरि पिउ जु गई लिवार आनद उर मैन माई वातन हे अनेरी
२४१ ॥कल्यान॥ जसुमति धौं देषि आंगें आनि हैले पि
छानि वाहि यां गई ल्याई कान्ह ओर कोन्हि नेरी अवलों
मैं करी कानि सहा दूध दही हानि कान्हैं हैं अनेरी दी
पक मैं रैवारि देषन भुज न मरवारि हारी हौं धरनि करति
दिन दिन को घेरी दिषियत नहि भवन मांझ जे सा
ई दिन ते सिये सांझ छल सो कछु करति फिरत महर
कौ जु टेरी गोरस न छोंटर ही सो भान हि जानि वही
मानो जल जमुन विंदु उगा न पथ पैरौ उरहनो दिन देहु
का हि काहे तू इतनो रिसाइ नांहि व्रजवास सास ऐसी
विधि मेरी गोपी निरषति सुमार जसुमति कोहे कुमा
र भूली वमत रूप मानु आनन कौउ हेरी मनमन विहस

धँ

सू.सा
२०३

नगपाल मनपाल दुष्ट साल जानेंभो सूरदास चरित कान्ह
क्रैरो २४२ ॥गौरी॥ देखिसखिरि हरिग्वालिनि दुवारे नवइ
अधुरिचीमन अपने भीतर नाकपरे पिछवारे सूनें
भवन कहूं कोउ नाहीं मनोयाहि कोराजु भांडें धरनउघा
रनुमूंदनु दधि माखन कैकाज रैनि जमाइ धरयो हो गो
रसु परयो स्याम के हाथ आहट सुनि जुवती घर आई
देख्यो नंदकुमार सूरस्याम मंदिर अंधियारें निरखन
वारंवार २४३ ॥रागगौरी॥ अंधियारे घर स्याम रहे दु
रि अवही मैं देख्यो नंदनंदनु चकित भयो मन ही मन
हाथुरि पुनि पुनि चकृत होति अपने जिय कैसा है य
ह वात मूंदनी काढि गवे विरहे हरि करें आपनी घात
सकल जीउ जलथल के स्वामी चोंटी दई उपाइ सूरदा
स प्रभु देखि ग्वालिनी भुजपकरे तव आई २४४ ॥गौ
री॥ स्याम कहा चाहत से डोलत बूझे हूं ते वदन दुरावत
सूधे बोलन बोलत सूनें निपट अंध्यारे मंदिर दधि
भाजन में हाथ अवकहि कहा वने हो कउनर कोउ नाहि
न साथ मैं जान्यो यह घर आपनो है या धोखे मैं आयो
देखतु हीं मोर सम्में चींटी काढन को कलनायो सुनि मृदु
वचन निरखि मुख सोभा ग्वालिनि मुरि मुसिकानी सू
रस्याम तुम हो रतिनागर वानत्ति हारी जानी २४५

लैसे मात भ्रके लै आपुन समान हीं की उ.साथ

॥सारंग॥ जसोदा कहां लौं कीजे कानि दिनप्रति कैसे
सही परति हैं दूध दही की हानि अपने या बालक की
करनी जौ तुम देखौ आनि गोरस खाइ ढूंढि वासन सब
भलौ परी यह बानि मैं अपने मंदिर के कोने माख
न राख्यौ जानि सोई जाइ तुम्हारे लरिका लीनौ है पहि
चानि बूझि ग्वालि निज घर मैं आयौ नैकु न संका मा
नि सूरस्याम तब उत्तर बनायो चींटी काढत पानि
२२६ ॥रागगौरी॥ आपु गए हते ए सूने घर सखा सबै
बाहिर ही छांडे देख्यौ दधि माखन हरि भीतर तुरत
मथ्यौ दधि माखन पायौ लै लै खात धरत अधरनि पर
से नकु दै सब सखा बुलाए तिनहि देत भरि भरि अपने क
र छुटकि रही दधि बुंद हृदै पर इत उत चितवत करि
मन मै डर उठत ओट लै लखत सकुन पुनि लै लै खात दे
त ग्वालिनि वर अंतर भई ग्वालि वह देखि मगन भई
अति उर आनंद भर सूरस्याम मुख निरखि थकित भ
ई कहत न वनै रही मन मैं थर २४७ ॥धनासिरी॥ गो
पाल दुरे हैं माखन खात देखि सखी सोभ जु बनी है स्या
म मनोहर गात उठि अवलोकि ओट ठाढे है जिहि विधि
हैं लखि लेत चकृत वदन चहु दिस चितवत है औरस
खनु कौं देत सुंदर कर आनन समीप अति राजत इहं

अधार मनोसरोज विधुवैनवंचिआरि लियोमिलनउ
पहार गिरिगिरिपरतवदननतेंऊपरदैदपिसुनकेविंड
मानुसुभगसुधाजनवरषतीप्रियजनोआगमदंड
वालविनोदविलोकिसूरप्रभुसिथलभईव्रजनारि कु
रेनवचनवरजिवेकारननरहाविचारिविचारि २४८
॥सारंग॥ ग्वालिनिजौदेषेघरआइ माषनषाइ
मैं राइस्यामतवआएनरह्यौछपाइ ठाढेहामथनि
वही पाकेदिगरीतीपप[illegible]रीअमोरी आ[illegible]गईआ
इइनपाइलेगयोकरिचोरी भीतरगईजहांह
रिपाएस्यामरहेगहिपाइ सूरदासप्रभुआगेग्वा
लिनिआगेअपनोनाउसुनायौइ २४९ ॥गौरी॥
जोतुमसुनहुजसोदागोरी नंदनदनमेरेमंदिरमें
आजुभरनगएचोरी होंनईआनिअचानकठाढी
कह्योभुवनमेंकोरी रहेछिपाइतनकमिचकसें
नईसहजमतिभोरी जवगहिवाहकुलाहलुकीनें
नवगहिचरननिहोरी लागेलैननैनभरिआसूतव
मैंकानिनतोरी मोहिभयोमाषनकौसंसौरीती
देषिकमोरी सूरदासप्रभुदेतदिनहुदिनऐसी
रिकसलोरी २५० ॥सारंग॥ जानिजुपाएहोहरिनीके
मागनइतेलाडिलेनागरगोधिरहेदिनप्रतिपाघरी

के रोक्यौ भवन द्वार खुन सुंदरि नूपुर मूंदि अचानक ही के
अवकौ पनैं जैयसु अपनै वल भाजन भंजि दूध दधि-
पीके सूरदास प्रभु भलेपरे पफंदी नौ जानत भाव नी
जीके २५१ ॥रामकली॥ माषन चोरी मै पायो मै जु
कहति सषी हो नकहा है भाजन लगतु छु पायो जो-
चाहो तौं जान क्यों पैये वहुतदिननु हौं पायो वार-
वार हौं कालागी मेरौ घात नआयौ नोहू लेन की
करी चामठी घूंघट मैं डरपायो विहसत निकस रहा
दोऊ दतियान वलैनं लगायौ मेरो लाल कों मारि-
सकै को रोहि निगाहि हलरायो सूरदास प्रभु वालक
लीला विमलि विमलि जसु गायो २५२ ॥रागनट
दूधी ग्वालि जमुना जाति आपुना घरगए पूछत
कोन है कहि वात जाइ देषे भवन महिया ग्वाल वाल
कदोइ भारदेषत अनिउरानै दुहुं दीनो रोइ ग्वा-
लके कांधे चढे तव तिषे सीकेउतारि दह्यो माषन
षात सव मिलि दूध दीनो ढारि वछ लै सव छोरि
दीनै गएवन समुहाइ छिरकि लरिकनु महा सो भरि
ग्वाल दीनो चलाइ देषि आवति सषीघर को स-
षा निरषे दौरि आनि देषे स्याम घर मैं भई ठाढी पौरि

सू॰सा
१९५

प्रेम अंतर रिस भरयौ मुख जुवति बूझति बात चितै मु
सतन सुधि विसारी आयो उर नख घात अति हि
रिस वस भई ग्वालिनि गृह देह विसारी सूर प्रभु भुज
गहे ल्याई महरि सौं अनुहारि २५३ ॥गौरी॥ महरि
तुम मानौ मेरी बात ढूढि ढांढी गोरस सव घर तौ हं
स्यौ तुम्हारे तात कैसे कहि सकै ते लाजे ग्वाल अंधा
देलात अंस भाव वोलन आई है ठाठ ग्वालिनि प्रा
त चाखन महां दूध धोरी को नेरै वैसें घातु और क
हत कछु सकुचत हौं कहा दिखाऊ गातु ऐसे मो तो वै
रे अचगरे कहा वनावति घात चितवत चकृत
ओट दाढे भये जसुदा तन मुसक्यात हेतु न वडे सू
र के प्रभु कौं घालरि कहा है जात २५४ ॥गौरी॥ सां
वरहि वरजति क्यौं जु नहीं कहा करौं दिन प्रति भीवा
ते नाहिन परति सही माखन खात दूध लै डारत ले
पत देह दही ता पाछे घरहू के लरिकन भाजत
छिरकि मही जो कछु धरहि दुराइ दूरि लै जानत त
हीं नही सुनहु महरि तेरे या सुत सौं हम पचि हारि
रही चोरी अधिक चतुरई सीखी जाइ न कथा कही
ता पर सूर बछरुनि ऐ ढीलत वन वन फिरत वही
२५५ ॥कान्हरौ॥ अवजे घु उठहू वोलत तु लोगु पांचव

रसआरतकछुकदिननकेतोकवमयोचोरीजेए रहमिस
देषनआवतिग्वालिनिमुहष्टादेकुमंवारि आनदो
सेकोदोसलगावतिदईदईगोमारि कैसेकरियेभुजा
पहूचीकोनवेसिछाआयो ऊषलऊपरआनिपीढि
धरितापरसषाचढायो जोनयत्यहिचलहुसंगजसुम
तिदेषौनैननिहारि सूरदासप्रभुनेकुनवरजोमनमें
महरिविचारि २५६ ॥देवगंधार॥ मेरेगोपालुतनक
सोकाजिनदधिकीचोरी हाथनचावतिआवतिग्वा
लिनिजीभमकरहीथोरी कवसीकेचढिमाषनषा
योकवदधिमटुकीफोरी आगुरिकुकहनहिचाषत
घरहीभरीकमोरी इतनीसुनतघोषकीनारीविह
साचालीमुषमोरी सूरदासजसुदाकोनंदनजोकछु
करेसुथोरी २५७॥ कान्हरो॥ इनआषियनुआगेतेंमो
हनुएकोपलजिनिहोहुनन्यारे होंवलिगईदरसवि
नुदेषै विनुतलफतहैंनेन।निकेनारे आनोसषाव
लाइआयनेंइहिआगनषेलोमेरेवारे निरषतहों
कितकीमनिज्योंसुंदरस्यामविनोदतिहारे मधुमे
वापकवानमिठाईआटेमीठेविंजनषारे सूरदासप्र
भुमनजोइछासोईसोईमागिलेहुमेरेप्यारे २५८
नरनारायन॥ मेरेलाडिलेहोजिनिजाहुकहूंनेरहीं

सू.सा
१५५
१६

काजैगुपालसुनहु लाडिलेलालराखेहैं भाजनभरिसुर
सषहू काहेंकोंपराए जातनकरतइतेउपाइदूधदहीघृ
तमाखनचहू करतिकछुनकानिवकतिकहुवानि नि
पटनिलजवैनचिलवहू बृजकोवाहिगवारिहाटकोवे
चनहारी सकुचनदेतगारीघगरहू कहोलोंकहौ
रिसकैवतभइहींकसही मिससूरस्यामवदनचहू
२५९ धनासिरी।। चोरीकरतकानुधरिपाए निसवा
सरमोहिवहुतसतायो अवहरिहाथहिंआये माख
नुदधिमेरोसवषायोवहुतअचगरीकीनी अववैसे
घातपरेहो ललनातुम्हेंभलेंमैंचीनी दोउभुजपक
रिकहो कतजैहो माखनलेहुमगाइ तेरीसौंमैंनेकुन
चाखोसखागएसवखाइ मुखतनचितैविहसिहरि
दीनोरिसतवगईवुझाइ लियोउरलाइग्वालिनी
हरिकोंसूरदासवलिजाइ २६० ।।धनासिरी।। मथति
ग्वालिहरिदेखीजाइ गएहुतेमाखनकीचोरीदेख
नछविरहेनैनलगाइ डोलतुतनुसिरअंचलउ
घरेंपोवेनीपीठिढुलतिइहिभाइ वदनइंदुपैपान
करनकोंमनहुउरगउडिलागतधाइ निरषिस्याम
अंगअंगप्रतिसोभाभुजभरिधरिलीनोउरलाइ
चितैरहीजुवतीहरिमुषकौंमुषमैनैनसैनदै चितहिचु

राइ तनमनधनगतिमति बिसराई सुंदरतानैनकु
माधुरिखाई सूरदासप्रभुरसिकसिरोमनि तु म्ह
री लीलानीकैहेगाई २६१ ॥ ललित ॥ देखिहरि
मथतग्वालिदधिभेदसौंठाढी जोवनमदमातीइ
तरातीवेनीछुटीअतिनीकीछविबाढी दिनथोरीभोरी
अतिकोरीदेखतहीजुस्याम भएचाढी करतनिहै
ढुफूंकारनिमथानीसोंमारासिरजामहिगाढी इत
उतअंगमुरतिघूंघटओरनिअंगियावनीकुचनसौं
माढी सूरदासप्रभुरीझिथकितभएमनहुकामसां
चेमरिकाढी २६२ ॥ बिलावल ॥ गएस्यामतिहिं
ग्वालिनिकेदर देखीजाइमथतितिहिठाढी आपुल
गेखेलनद्वारेघर छिरिचितभईहारदृष्टिपरिगएवो
ललिये हलवेसूनेघर लियेलगाइभादिनकुच
केबिचगाढेंचापिरहीअपनेकर उमगिअंगअं
गियाउरदरकीसुधिबिसरीतनकीतिहिंऔसर
नवभएस्यामुवरखद्वादसकेरी फूलईजुवतीवाछ
विपर मनहरिलियोतनकेसँदेहगएदेखिरही।सु
रूपमनोहर माखनलैमुखधरतिस्यामकेसूरजप्र
भुरतिपतिनागरवर २६३ ॥ बिलावल ॥ ग्वालिउर
हनेकेमिसआई नंदनंदनतनमनहरिलीनोबिनु

सू॰सा

७७

देखेंछिनरहैंनजाई सुनहुमहरिअपनेसुतकेगुन
कहाकहौंकिहिभांतिवनाई चोलीफारिहारलगा
हितोरयोइनवातनिकहहोतिवडाई माषनुषा
इषवावनग्वालनजोउवरयोसोदियोलुटाई सु
नहुसूरचोरासहिहानिअवकैसेंसहिजातढुठा
ई २६४ ॥सारंग॥ छूंठहिमोहिलगावतग्वारि वे
लतमेंमोहिलियोवोलिहैदोउभुजभरिदाबी॥
अंकवारि मेरेकरअपनेकुचधारति आपुहीचो
लीफारि माषनुआपुहिमोहिषवायोमेंकवदी
नौडारि कहजानेंमेरोवारेभोरोछुआमहरिदेंदें
मुषगारि सूरस्यामग्वालिनिमनमोह्योचितेर
हिइकटकहिनिहारि २६५ ॥गौरी॥ कवहिकरन
गएमाषनचोरी जानतिहौजुकटाछतिहारेकम
लनैनमेरोइतनकसोरी दैदैदगाजुलाइमवनमें
भेटतिभुजभरिउरजकठोरी उरनषचीन्हदिषाव
तिडोलतिकान्हचतुरभएतूअतिभोरी मोघरआ
वतिउरहनेकेमिसचितेरहतिज्योंचंदचकोरी स
रसनेहजानतनहिहटवैवोनैननप्रीतिजानतिनहि
नोरी २६६ कहाकहौंहरिकेगुनतोसौं सुनहुम
हरिअवहीघरमेरेघाजेरंगकीनेमोसौं मेंदाघ

मथति आपने मंदिर गए नहांइहि भांति मोसौं कह्यौ
वान सुनु मेरी मैं सुनि कै मुसिक्याति वाहपकरि
चोलागहि प्यारी मरि लीनौ अंकवारि कहत न
वने सकुच करि वातें देषो हूदौउ घारि माषनुषा
इनि दरिना कौ विधि एहें तेरे अंगे सकुचित नक
हैं जान २६७ ॥गौडमल्हार॥ ग्वालिनि स्याम तन देषि
न व आपु तन देषि भीति होइ नो चित्र अवरेषि कह
हां मेरो कुंअर है पांच हौ वरष को रोइ अजहूं पै पान
मांगे कहां तू ढीठ जोवन मंद सुंदरी अठिलान फिर
ति गोपाल आगें कहां मेरो कान्ह कौन तनक सी अगु
री वउ वडे नष निके चीन्ह तेरे मष करि हंसे गो लागु
अंकवारि निज कहां पाए स्याम मेरे मुष मुरकि नैन
नि हंसी नागरि उरह मो देनिन चित अधिक वाठी
सूरप्रभु सूर सर्वसु हास्यौ सांवरे अनऊ न त महरि ढि
ग देति ठाढी २६८ ॥गौरी॥ कन है कान्ह काहू के जा
न एस वठी ग गरव गोरस के मुष सम्हारि वोलति नहि
वात जोइ जोइ तचे सोई सोइ नि वतव मांगि लेइ कि
नितान ज्यौं ज्यौं वचन सुन्यौं मुष अमत त्यौं त्यौं सु
ष पावत सव गान के सो देव परी इन गोपिनु उरह

सू.सा
१८
१७८

नैकेमिस आवतिप्रात सूरसकनिहठिदोकुलगावति
घरहू श्रीभाषतुनहिप्रात २६८ ॥अथ धेनुदुहनसी
धनसमै॥ बिलावल॥ धेनुदुहत हरिदेषत ग्वालि
नि आपुन वैठिगए तिनकैसंग।सिषवहु मोहि कह
तगोपालनि आलितुम्हैगोदुहन।सिषवैं दुहासं
वै अवगाइ औरदुहैं।जेनिनंदढुहाईउनसोंकह
तसुनाइ वडौभयोसवदुहतुरहौंगो आपनी धेनु
निवैरि सूरदासप्रभुकहतसौंहुदैमोहिलाजौतुम
देरि २७० मैंदुहिहौंमोहिदुहनसिषावहु कैसें
गहतदोहनीघुटुवनिकैसेंवछराथनलैलावहु
कैसेंलैनोईपगवाधतिकैसेंलेगैयाअटकावहु
कैसेंधारदूधकीवाजतसोईसोईविधितुममोहिव
तावहु ।निपटभईअववसांझकन्हैयागाइनपैकहूं
जावहु चोटलगावहु २७१ ॥कानरौ॥ आवहु कान्हसांझकी
वरियां गाइनमांझनयेहोठाढेकहतिजननिजह
वडाकुंवरियां लरिकाईकहूंनेकुनछांडतसोइरहौ
सुथरासेजरियां आएहरियहवातसुनतहीधाइ
लिएजसुमतिमहतरियां लेपोढी आंगनहीसुत
कौंछुटिगईरही आछीउजियरियां सूरस्यामकछु
कहतकहतहीवसकरिलिए आइनींदरनियां २७२

॥कानरो॥ आगनमेंहरिसोइगएरी दोऊजननीमिलि
केहरएकरिसैजसहितनवभवनलेघेरी नेकुनहींघर
मैवैठतहैं षेलहिकेअवरंगरयेरी इहिंविधिस्यामकव
हुंसोएवहुतनींदकेवसहिभयेरी कहतिरोहिनीसोव
नदेहुनषेलनदोरनहारिगयेरी सूरदासप्रभुकोमुषनि
रषतियहछविनितहिनएरी २७३ ॥ललित॥जागो
जागोहोगोपाल नाहिनइतनौसोइयेसुनिसुतप्रातसमैस
विकाल फिरिफिरिनिरषिनिरषिछिनछिनसवगोप
नकेवाल दिनविगसतमनोकमलकोसप्रतिज्यौमधु
पानिलीमाल जोतुमसुहिनपत्याहुसूरप्रभुसुंदरस्या
मतमाल तौतुमहूआपनउठिदेषोनिद्रानेनविसा
ल २७४ ॥विलावल॥जागहुजागहुनंदकुमार रविवहु
चढेरेनिसवनिघटीउघरेसकलकिवार वारवारजल
पियतिजसोदाउठमेरेप्रानअधार घरघरगोपीदही
विलोमहिकरकंकनछनकार सांझदुहुनतुमकहीलो
गाइकोंनातेहोतिअवार सूरदासप्रभुउठेसुनतहीली
लाअगमअपार २७५ ॥विलावल॥तनककनककी
दोहनीदैदेरीमैया तातदुहनसीषनकहैमोहिधौरी
गैया अटपटेआसनवेठिकैगोयनकरलीनो धारअ
नतहींदेषिकेंमोहनहंसिदीनो घरघरतेंआईसवेदे

बन ब्रजनारी चितै चोर चित हरिलियौ हंसि गोपबि॰
हारी विप्र बोलि आसन दियौ चारि वेद उचारी सूरस्या
म सुरभी दुही संतनि हितकारी २७६ ॥गोचारन॥बिला
वल॥ जागिये गुपाललाल प्रगट भयो हंसमाल मिट्यो
अंधकाल उठौ जननि मुख दिषाई मुकलित भये कम॰
लजाल कुमुदबंद जन बिहाल मेटहु जंजाल त्रिविधि॰
तापतनन साई ठाढे सब सषा द्वार कहत नंद के कुमार
टेरत हैं बारबार आई धेन न्हाई गैयनि भई बडी बार भ
रि भरि पै थननि भार बछरा गन करै पुकार तुम बिनु जदुराई
तातें यह अटक परी दुहन काज सौंह करी उठि आवहु क्यों
न हरी बोलत बल भाई मुषतें पट झटकि डारि चंदबद
न देउ घारि जसुमति बलिहारि वारि लोचन सुषदाई
धेनु दुहन चले धाइ रोहिनि लई बुलाइ दोहनी॰
मुहिं दे मगाइ तब हाले आई बछरा थन दियो लगाइ
दुहन बैठि कै कन्हाई हंसत नंदराइ तहां मात दोऊ आई
दोहनी कहूं दूध धार सिषवत नंद बारबार यह छबि न
हि वारपार नंदघर बधाई तब हलधर कह्यौ सुनाइ गा
इ नु मन चलौ लिवाइ मेवा लीनो मगाइ विविधि रस॰
मिठाई जेंवत बलराम स्याम संतनि सुषभयो धाम
धेनु काज नहि विश्राम जसुदा जल ल्याई स्याम राम॰

मुषपषारिग्वालवाललियेहंकारिजमुनाजलतटवि
चारिगाइनहंचराई श्रंगवेनुनादकरतमुरलीमुषमुष
रधरतजामेंमनहरतेंग्वालगावतसुरराई वृंदावनकु
रतजाइधेनुचरावतअनुअपाइ स्यामहरषपाइनिर
षिसूरजवलिजाई २७७ ॥सारंग॥ चरावतवृंदावन
हरिगाइ सषालियेसंगसुवलश्रीदामाडोलतहेंसु
षपाइ क्रीडाकरतजहांतहांसवमिलिअतिआनंदव
ढाइ वगरिगईगैयाँ वनवीथिनदेषीअतिवहुताइ
कोऊगएग्वालवनघेरनकोऊगएवछरूलिवाइ आ
पुहीरहेअकेलेवनमेंकहूंहलधररहेजाइ वंसीवट
सु[illegible]सीतलयमुनातटअतिहिपरमसुषदाई सू
रस्यामतवैविधिविचारिनसषाकहांविसराए २७८
॥अथवत्सासुरवध॥नटनारायन॥ चलेवछरूचराव
नग्वाल वृंदावनसवछांडिकेंगएजहंवननालपर
मसुंदरभूमिदेषनहरषुमनहिवढाइ आपुलागेतहां
षेलनवछरूदियेवगराइ जानिकेंहलधरगएनहंवा
लवछरारापास रोहिनीनंदनवहिदेषनहरष
नएहुलास नालरसवलरामचाषेमनभयोआनंद
गोपसुतनसवटेरिलीनेसुधिभईनदनंद कहोवछरा
हांकिआवहुचलहुजहांकन्हाइ नालरसकेपानतेंअ

सू०सा

निमत्रमैवलराइ नहाछलकरिहमजआयोधरेवघ

राजेबि प्रिरनुदूढनुस्यामनैंआतिप्रवलवलकोदे

खि सैवेवछरनुघेरित्याएवहुनघेस्योजाइ दाउकहि

वालननिटेस्योयबमसुननघराइ कहोमननरहिआ

वहिमास्योउदेवलहिसम्हारि टेरिलिघेसवग्वालबा

लकनाए आपुप्रचारि आगेदेहनकोंविउस्यो पूछनक

हाथलगाइ पलरिनैंभुजसोंप्रिराघोतालनैतरआ

इ असुरलैतनहसोंपछारोगिरोतनहघहराइ बछाप्र

रकोंमारिहलधरचलेसवनिलिवाइ सूरप्रभुकोंबी

ननासीतिंहूभुवनवडआइ २७९ ॥सारंग॥ वारवारहरिक

हतमनहिमनअवहिरहेसंगचारनधेनु ग्वालवाल

कोउनवहुवनदेष्योटेरतनाउंलैनदैसेन आलसगा

नजानिमनमोहनवैठेव्रहतछांहसुषचैन अवनि

रहतकहुंसुनततनहांकछुनहिगोरंननवातकवैन

व्रषावंतसुरभीवालकगनकालीदहअचयोजल

जाइ निकसिआइसवतटठाढेभएवेठिगएजहंत

हंअकुलाइ वनघनदूहिस्यामतवआएगोसुत

ग्वालरहेमुरछाइ मनमैंध्यानकरतहीजान्योका

लीउरगुरह्योघांआइ गरलत्रासनरिआइरह्योउ

रिअंतरजामीसवकेनाथ अमृतदृष्टिनारिचिते

सूरप्रभुवोलिउठेहरिगावतगाथ २८० ॥सारंग॥

प्रावहु:
आवहुकान्हजूपाईहिसवधेनु कुंजकुंजमेंदखिहू
रेत्रिनचरतपरमसुषचैन दुमनचठेसवसषापु
वारतमधुरसुनावहुवेन जिनिधावहुवलिचर
नमनोहरनठिनकंठमनऔन वारवारव्रजकौ
नउवारेपियोवालीमथिधेनु सूरस्यामसंतनि
हितकारनप्रगटभयेसुषदेन २८१ ॥सारग॥ पाई
पाईहिमैयापुंजवंदमैंटली अवेकेअपनीहटकि
चरावहुजेहैंहरआघाली आवहुवेगिविकलउ
ठुंदिसिसिलैंकतडोलनअकुलाने सुनिमदुवचनदे
षिउनिनरहराषिसवेसमुहाने तुमतोषिरन
अनतहांदूंरतएवनषिरतिअकेली घांवागई
औनपरलेहोसघनवहुतदुमवेला सूरदासप्र
भुमधुरवचनकहिहरषतसवहिवुलाए नित्य
भरतआनदगोचारनसवेरहमयेआए २८२
॥रामकली॥ तातेतरपिकह्यौवनमाली पसुनन
चपलसरूपनजानतडोलतचालीचाली धरित
नसगुनत्रिपरहरनप्रभुआपुकमलपतिपाली
जदपिवृषभसुतापतितजिकेषिरनिवुमतिकी
घाली अतिश्रमभयोसकलवनदुतदुमवेली
दोजाली सूरदाससंतनंहितराहिंअवशेषैनेंटा
नेनदी

सू॰सा
१८१

ली २८३ ॥ नटनारायन ॥ मोहि वन छांडि आए ग्वा
ल कहां तें कहं आइ निकसे वने रेने से ष्याल कुरछि
न्नाहे गिरिधर नीक हाय हजंजाल मे इहा जौं आर
दे बौ परे सव वेहाल आनि अव घो जल जमुन के
कौंन वहि गए अकुलाइ निकसि कैं तुम हूल आए
गिरि घेरे सव आइ प्रान विनु हम सव भए तें तुम हि
दियो जिवाइ सूर के प्रभु तुम जहां तहं हम हिले तव
चाइ २८४ ॥ गौरी ॥ वलदाऊ कहि स्याम पुकारयो
आवहु वेगि चलौ घर जैये वन हमिं फनि होत अंध्या
री ल्याए वोलि सषा हलधर कौं हंसे स्याम मुष
चाहि वडौ वेर भई तुम्हें न मैं या गाइन लेहु निवा
हि हेरी देत चले सव वन तें गोधन दिये चलाइ सूर
दास प्रभु राम स्याम दोऊ व्रजजन के सुषदाइ २८५
गौरी ॥ वे मुरली की टेर सुनावत वृंदावन वासि वास
र सव निसि आगम जानि चले व्रज आवत सुवल
सुदामा श्रीदामा संग सषा मध्य मोहन सुषपा
वत सुरभी गन सव ले आगे करि कोऊ टेरत कोऊ वे
नु वजावत केकी पछ मुकट सिर भ्राजित गौरा राग
मिले रस गावत सूरस्याम के ललित वचन पर गो
रज छवि कें हू चंद छपावत २८६ गौरी हरि आ

वनआरनुराछे मोरमुकटमकराकृतकुंडलनैनविसा
लकमलतेंआछे मुरली अधरधरनसीखतेंहैंवन
मालापीतांबरकाछे ग्वालबालसबबरनबरनबन
कोटिमदनकीघाछविलीवाछे पोहचेआइस्यामब्र
जपुरमैंघरहिचलेमोहनवनआछे सूरदासप्रभु
दोऊजननीमिलिलेतिबलाइबोलिमुखवाछे २८७

॥कल्यान॥ आनंदसहितसबैघरआए धन्यजसोदा
तेरोबारोहमसबमरनजिवाए नरवपुधरेदेवयहको
ऊआइलियौअवतार गोकुलगाइग्वालगोसुतके
येईराखनहार येपीवतिपूतनाकिपाती।त्रिनावर्तउ
हिमाति वकवकासुरवत्सासुरमारयौरामकृष्णदोउ
भ्याति जबतेंजन्मलियौब्रजभीतरतबतेयहैउपाइ
सूरस्यामकेबलप्रतापतेंवनवनचारतगाइ २८८

॥सारंग॥ हमहिउनकौनकौरैमैया जौलनघि
रतसकलवृंदावनजातेमीतकन्हैया जबजबगाढप
रतिहैहमकौंनववारिलेतसहैया ।चिरजीवहुजसु
मतिसुततेरेहरिहलधरदोउभैया इनतेंबडोओ
रनहिकोऊइहिसबदेतबडैया २८९ ॥कानेरो॥ सू
रस्यामसन्मुखजेआएतेसबस्वर्गचलैया २९०

॥कानेरो॥ कहतिजसोदाबातसयानी भावीनाहिं
मिटैकाहूकीकरतनाकीगतिकाहूनजानी जन्नुमर

सू.सा. १८२

योजबतेब्रजहरिकोंकहाकियोऊधिकरिरषवानी कहांक
हांतेंस्यामसुनउबस्योंकिहिराखोंताअवसरआनी नेसी
श्री सककटतेंरषमपूतनात्रिनावर्तकीचलतिकहानी क्रो
मेरेपाछितादमेरेअवअनजानतसवकरीअयानी ले
वलाइछतियासोल्याएस्यामरामहरषितिनंदरानी
नूषेनएप्रानअधपातहितातेआजुवडूनपाछिता
नी रोहिनितुरतन्हवाइदुहुनकोंमातोंभोजनकोंअ
तुरानी स्याईयासिदुहुनकोथारीजेवतवल मोह
नराचमानी मांगिलियोसातलजलअचयोमुषधो
योचलअनलेपानी वीराधानदोविदोऊवारावोऊ
जननीमुषदेषिसिरानी रतनजटितपलिकापरपो
ढेवाविनजारहमरजधानी सूरदासकछुजूठिमांग
तुतपपाऊंकहिदीजेवानी २८० ॥ललित॥ हौंनाहि
नेजगाइसकतिसुनिवातसजनी अपनेजानन अज
हुंकान्हमागनसुषरजनी जबजबहों निकटजातिरह
तिलागिलोभा ननकीसुधिविसरिजातिनिरषतमु
षसोभा वचननिकोंबहुतकरतिसोवतिजियठाढी
नैननिसुविचारकरतिदेषतनहचिवाढी इहिविधिवद
नारबंदजसुमतिजियभावे सूरदाससुषकारासि काये
वरनिआवे २८१ ॥विलावलसूहो॥ नंदमहरकेभाव
तेंजागोमेरेवारे प्रातभयोउठिदेषियेरविकिरनिउ

त्रिआरे ग्वालवालसवटेरहिंगैयावनचारन लालउ
ठामुखुधोइयेनमीवदनउघारन सुघतेपद न्यारोकि
योमालाकरआपने देखि(ब)दनचकृतभई सोवतकी
सपने कहाकहोंउठिरूपजोदेखोवरनिनावै सूरस्याँम
केगुनअपारनंदसुअनुकहावे २८२ ॥ललित॥
उठेनंदलालसुनतजननीकीवानी आलसभरि
नैनसकल सोभाकीखानी गोपीजनविथकित
व्हैचितवतिसबठाढी नैनकरचकोरचंद्रवदनप्री
तिवाढी मातजलझारलैकमलमुखपखारो नैन
नीरपरसकरतआलसहिविसारयो सखाद्वारठाढे
सबटेरतहैवनकों जमुनातटचलोकान्हचारन
गौधनकों सखासहितजेमुहमैंभोजनकछुकीनो
सूरस्यामहलधरसंगसखाबलिलीनो २८३ ॥रसो
ई॥बिलावल॥भोजनभयोभावतेमोहन तातोइ
जेइजाहुगेगोहन खीरखांडखीचरीसमारी मधुर
महेरीगोपनप्यारी राइभोगलियोभातुपसाई मूंग
दरहरीहींगलगाई सदमाखनतुलसीदेनायो घिर
तसुवासकचोरानायो पापरबरीअचारपरमसुचि
अदरकअरुनिबुआनिदैहैरुचि सूरनकरितरिसरस
तोरई सेमिसिंगरीछमकिधरेई भरतानटाघटा
ईदीनी भाजीनलीभांतिदसकीनी सागचनास

सू.सा

२८२ गुसाचोलई सोवासनसर ऐसों भरसाई वधुवामली
भांतिकचिरांध्यो हांगलगाइ लाइ दधिसांध्यो घोइधि
रवरकागपरी छुनि टेंटी टेंटस छोलिनि पेपुनि कुंडु
रूअलवरोरा भौरे कचरी चारचचेंडुसोरे वनेवनाइ
करेलाकीने लोनलगाइ तुरतनरिलीने फूलेफूल स
कौंली हजनाछौंके सनतचिहाइ नाजके खोके फूलकरीलं
पावरिनम परीआमाक्ति करीरअमलसम अपतइहि
अंविलीदई खटाई जेंवत षटरस जात लजाई पाठा
वहुतप्रकारनिकाने तिनसोस्वाद सवेह रिलीने घी
राराभतोरई नामिं अताचि नलचि अंकुरी जिपजामें
सुंदरतपरतालुरानै रतवसलीनो अवहातानै कक
री कचरा अतकचनारौ सरसनिमोननिस्वाद स
मारौं कैयोभांतिके रकारिलीने देकरोवहरदारं
गमीने वरीवरिलअतवरा वहुतविधि षारेषाटेमा
टेहेनिधि पानीराराइ नोपकोरी उभक्तौरी गुणछ
सुखिसोरी अमतवउहरहेंरससागर वेसरसालूने
अधिकोनागर बाटी [illegible] कठा विचित्र वनाई जेंवत
वहुंनवारलचिआई रोटीलचिरकानिके वेसनवारि
अजवाइनिसे घोमिलाइ धरि अवहि अंगाकरितुरत
वनाई जेमजिमजिवालनिसंग षाई माउमाडिडु
नोरेचुपरे वहुत घृतपार आपुहाउवरे पूरिसपूरक

चौरीकेरी सदलउज्जलसुंदरसोरी लुचईललितलाप
सीसोहे स्वादसुवासुसहजमनमोहे मालपुआमा
षनमथिकीने आसगूसितरविसमरंगलीन्हे लाव
नलाडूलागतनीके सेवसुहारीघेवरघीके गोधागू
देपालमसूरी मेवामिलेकपूरानिपूरी ससिसमसुंद
रसजलआदरसे ऊपरकनीअमियजैमेवरसे वडु
नजलेवजलेवावोरी नाहिनघटतिसुधातेंथारी दे
षतहरषहोतहेसमी मानहुंउदबुधाउपजतुआमी
घेनीघुरमिलिमिलीदूधसंगमेंश्रामिश्रितनईएक
रंग साज्योदह्योअधिकसुषदाई ताऊपरमनिमधु
रमलाई षोवाषाईओटिहिरांष्यो सुहैमधुरमाठे
रसचाष्यो वासोंधीसिषिरनिअतिसोंधी मिलेमि
रचमेटतिचककोंधी छाछिछवालीधरीधुंगारी
छूरहेउठतिधारअन्यारी इतनेजतनजसोदाकीनें
नवमोहनवालकसंगलीनें वैठेआइहसतदोऊभैया
प्रेममुदितपरसतिहैमैया थारकटोराजरितरतनके
जतिसववासविविधिजतनके पहिलेपनवारीपर
सायो नेवकआपुमनकरषोरुउठायो जेंवतनहविआधि
कोआधिकैया भोजनहूविसरतिनहिगैया सोनलज
लकपूररससचयो सोमोहननिजुनचिकेअचयो

महरिमुदित नितलाललडावै नेकुघकहूंदेवनपावै
धरितघीघारीजलल्याई भरोखुनघिरचाँदे आई
पीरिपानपुरानेवारी बातभई डुनि दातनहारा म
गमदकनन कपूरकरलीने वांटिवांटिग्वालनिकों
दीनो चंदनओतआरगाजा आनो अपनेकरवलकें
अंगवान्यौ ताया छें आपुनहूलायो उवरोवड़तस
वनिपुनिपाछो सूरदासदेख्योगिरिधारी वोलिदई
हंसिजूठनिथारी यहजिवनारिसुनेजोगावै सोनिज
भक्तिअभैपदपावै २८४ ॥विलावल॥ देषिसषीदु
जनेवनजात रोहिनिसुतजसुमतिसुतकीछवि गोर
स्यामहरिहलधरगात लालाम्बरपीतांवरओढेय
हसोभाकछुकहीनजाति जुगलजलजजुगतउन
मनहुमिलिआरसपरसजोरतहैनात सासमुभट
मकराकृतकुंडलझलकनविविकेपोलइहिंभांति म
नहुजलदजुगपासजुगलरवितापरइधनुकनी
आंनि अटिकछनीकरलकुटमनोहरगोचारन
चलेमनमनमानि ग्वालसषाविचश्रीनदनंदन
वोलतवचनमधुरमुसिक्यानि चितेरहीव्रजकीजु
वतीसवआपुसुहामेंकरतविचार गोधनवृंदलाए
सूरजप्रभुवृंदावनगएकरतविहार २८५ ॥अथव

कान्हुरवधा॥ सारंग॥ वननवन ब्रिंद चरावत धेनु स्याम
ल धरं संग संग बहु गोप बालक से न वृषित भए कान्हि
मोहन सखनि टेरत वैन बोलि ल्याव बहु सुरभि गन सब
चले जमुन जल देन सुनत ही सब वहां लै प्याए गाइ ग्वार
ए कौन हेरा दै दै बाल बालक लियो जमुन जल गैन द
नु असुर विरूप माया रह्यो छल करि आइ चोंच इक पुहुमि
लगाइ इक अकास समाइ आगे बालक जात हे ते पा
छे आए धाइ स्याम सो सब कहन लागे आगे एक व
लाइ नितहि आवत सुरभि लीने ग्वाल गोसुत संग
कबहु नहिं इहि भांति देख्यो आजु के सो रंग मनहि मन
तब कृस्न जान्यो वकासुर विहंग चोंचि पारि विदारि
डारों पलक मैं करौ भंग निदरि चले गुपाल आगे वका
सुर के पास सखा सब मिलि कहन लागे जीवे की न
हि आस अजहुं नाहि डरात मोहन बचे कितने गास न
वकै कोहरि चले सब मिलि मारि करहु बिनासु चले
सब मिलि जाइ देख्यो अगम तन विकरार उन धानि उ
न व्योम कै विच गुहा के आकार पैठि वदन विदारि डा
रो अति भए विस्तार मरत असुर विकार पारी मार सो
नंदकुमार सुनत धुनि सब ग्वाल डरपे अवन उवरे स्या
मु हम हि वरजत न मान्यो देख्यो कियो जैसे काम देखि ग्वा
लन विकल जानत उठे तब बलराम वकावदन विदा

सू.सा
१२५
८४
१८१

रिगायो अवहिं आवत स्याम सषान वगरे टेरि लीने
सवै आवहु धाइ चोंच मारी वक संघार्यो तुम हृदन रोस
हाइ निकट आये गोपवालन देषि हरसु सुपाइ सूरके
प्रभु चरित आनित नेति निगम निगाइ २८६ ॥मारु॥
ब्रजमे कोउ पञ्यो है ऐहै नैया संग सषा सब कहत परस्प
रं इनके गुन अगनैया जबते ब्रज अवतार धर्यो इन कौ
उनहि घात करैया किति किवा नय ह वक विदारो धनि ज
सुमति जिन जितैया विना वर्ने पूतना पछारी तब तिरहे
न्हैया सूरदास प्रभु की यह लीला हम कत जियपाछै नैया
२८७ ॥धनासिरी॥ वकविदारि चले व्रजकों हरि संग
सषा आनंद करत सव अंग अंग आनंद करत सकल घा
न विचित्र करि वनमाला पहिरावत स्याम हि वारवार
अंक वारि धरत भरि कंस निपात करेंगे तुमही हम जा
नीयह वात सही परि पुनि पुनि कहत धन्य नंद भज
सुमति जिनि इन कौ जन्मे सुधन्य करि कहत यहै सव जा
न सूरप्रभु आनद आसू भरि लोचन ढरि २८८ ॥रामग्री
री॥ वलि वलि मोहन मूरति की वलि वलि कुंडल वलि
नैन विसाल वलि भ्रकुटी वलि तिलक विराजित वलि
मुरली वलि शवरि माल वलि कुंतल वलि पाग लट
पटी वलि कपोल वलि मुख वनमाल वलि मुसिक्यानि

महामुनिमोहनवलितउपेरैनागिरिधरलाल वलिजे
जसघाअंसुघरमेलेवलितुलहीवलिसुंदरचाल वलि
जाइघनीचोलवींनोवलिसूरदासवलिवरनगुपाल २
९९ ॥कल्यान॥ सुंदरस्यामसुंदरवरलीलासुंदरवोलनर
चनरिसाल सुंदरचारुकपोलविराजितसुंदरउरजुवनी
वनमाल सुंदरचरनसुंदरहैनषमनिसुंदरहैकुंडल
मकराल सुंदरमोहननेनचपलकियेसुंदरग्रीवावाहु
विसाल सुंदरमुरलीमधुरवजावतसुंदरहैंहलधरगोपा
ल सूरदासजोरीअतिराजतिवृजकौंआवतसुंदरचाल
३०० ॥कल्यान॥ सुंदरस्यामसषासवसुंदरसुंदर भेषध
रेगोपाल सुंदरपथसुंदरगतिआवनिसुंदरमुरलीस
वदरसाल सुंदरलोकसकलवृजसुंदरसुंदरनंदमनोह
रवाल सुंदरवदनविलोकनिसुंदरहलधरसुंदरसुं
दरचाल सुंदरगोपगाइअतिसुंदरसुंदरगुनसवकर
नविचार सूरस्यामसंगसवसुषसुंदरमनहिंहेनलेत
अवतार ३०१ ॥गौरी॥ देषिसषीवनतेंवृजआवतहैं
नंदनंदन सिषिसिषंडसीसमुषमुरलीवन्योतिक
लकुउरचंदन कुटिलअलकमुषचंचललोचननिर
षतिअतिआनंदन कमलमध्यमानोदेषंजनव
धेआइउडिफंदन अरुनअधरछविराजतजवगाव

सू.सा
९८८
१८८

तकलमंदन मुक्तामनोनीलमनिमेंपुट धरेमेराजि मर
विंदन गोपभेषगोकुलगोचारतहैं श्रमअसुरनिकं
दन सूरदासप्रभुसुजसवषानतनेतिनेतिश्रुति छंद
न ३०२ ॥गौरी॥ सांवरोमनमोहनुमाई देषिसषीव
नतेंब्रजआवत सुंदरनंदकुमारकन्हाई मोरपंषसिर
मुकट विराजतमुषमुरलीसुरसुभगसुहाई कुंडल
लोलकपोलनकीछविमधुबोलनिबरनिनजाई भ
कुटीविकटनेननिछेनिनकि तिलककीरेषबनाई मनोम
रजादउलंघिअधिकबलउमगिचलीअतिसुंदरताई
फिरि कुंचितकेससुदेसवदनपरमधुपनकीमालाँआई
मंदमंदमुसिक्यानिमनोघनदामिनिदुरिदुरिदेतिदि
षाई सोभितसूछमनिकटनासापुटअनुपमअधरन
कीअरुनाई जनोसुकसुरंगविलोकि बिंबफलचाष
नकारनचोंचचलाई ३०३ ॥गौरी॥ देषौनदनंदनआ
वत वंदावनतेधेनुवंदमेवेनुअधरधरेगावत तनघ
नस्यामकमलदललोचनअंगअंगछविपावत सु
रभीकारीगोरीधूमरीधोरीलेलेनामबुलावत संगवा
करें लगोपालसषासवसोभितसवमिलिपंत्रवजावत
सूरदाससबुनिरषतहोमुषगोपीप्रेमवढावत ३०४
॥गौरी॥ मेरेनेननिरषिसुषपावत संध्यासमेगोपगो
धनसंगवनतेंबनेब्रजआवत वलिवलिजाउमुषार

विरदकीमंदमंदगतिधावत नटवररूपअनूपछबीलौ
सबहीकेमनभावत गुंजाउरबनमालमुकटसिरबेनुरसा
लबजावत कोटिकिरनिमनिमुषपरकासतउपति
कोटिलजावत चंदनषोरिकाछनीकीछबिसबकेमन
हिंचुरावत सूरस्यामनागरिनारिनुकौंविरहकौताप
नसावत ३०५ ॥कानरौ॥ आजुबनेबनतेंब्रजआवत
नानारंगसुमनकीमालानंदनंदनउरपरछबिपावतसं
गगोपगोधनसंगलीनेनानागतिकौतकउपजावत
कोउगावतकोउनिर्तकरतकोउघतकोउकरतालब
जावत राहतिगाइबछहितसुधिकरिप्रेमउमगिथ
नदूधचुवावत जसुमतिबोलिउठाहराषितकैकान्ह
धेनुचराएआवत इतनीकहतआइगएमोहनजन
नीदोउहिलैलावत सूरस्यामकेकृतजसुमतिसोंग्वा
लबालसबप्रगटसुनावत ३०६ ॥कानरे॥ ब्रजबालक
सबजाइतुरतहीमहरमहरिकेपाइपरे ऐसोपूतज
न्योजगतुमहीधन्यकोबिजहस्यामधरे गाइलिवा
इगयेबंदावनचरतिचलीजमुनातटहेरि असुरएकु
छगरूपधरिरह्योबैठोतीरबाइमुषघेरि चोंचएकुए
हमीकरिराषीएकरह्योनैगगनलगाइ हमबाजत
पेलनिहरिस्वायोवदनचारिपलमांहगिराइ सुनतज नंदै
सुमतिचकितचितसुनिचकितगोकुलनरनारि सूर

सू सूसा

दासप्रभुमनहरिलीनोनवजननाभदिदईअंकवारि ३०७
॥गौरी॥ तुमकतगाइचरावनजात पितातुम्हारोनंदमह
रसोजाकेभोजसुमतिसामात खेलतरहौआपनेघरमेंमा
खनदधिभावैतखात अमृतवचनकहौमुषअपनेरोम
रोमपुलकितसवगात अवकाहूकेजाउकवहूंनहिआव
तिहैजुवतीइतरति सूरस्यामभेरेआगेरहौकहूंजनजात
होनात ३०८ ॥सारंग॥ मैयाहोंनचरैहोंगाइ सगरेग्वाल
घिरावतमोसोंमेरेपाइपिरात जोनपत्याउपूछिवलदा
वहिअपनीसोंहदिवाइ इहसुनिसुनिजसुमतिग्वालन
कोंगारीदेतरिसाइ मैपठवतिअपनेलरिकाकोंआवैम
नुवहराइ सूरस्याममेरोअतिवालकुमारतताहिरिंगा
इ ३०९ ॥माखनचोरी॥धनासिरी॥ माखनुमांगतजसुम
तिसों मातासुनततुरतलैआईदेतिखवाइमगनमन
रतिसों मैयामेंअपनेकरषैहोंधरिदेमेरेहाथ माख
नखात चलेउठिखेलनसखाजुरेसवसाथ मथुराजानग्वा
लनादेखीचरचिलईहरिआइ सूरस्यामताघरकैपाछैं
वैठिरहेअरगाइ ३१० ॥धनासिरी॥ मथुरावेचनजाति
होदहियो मेरेघरकेद्वारसखारीतवलौंदेखतिरहियो स
दमथनकैमाटअछूतेसोंपतिहौंतोहिसखिहियो
औरनेतोउतनाहिनयावजमैनंदसुवनसखीआवतलखि

।यो येसुमनवचननिकटव्हैमोहनसुनैंउरसवगाहियो
सूरप्रभुत्यौंगईग्वालिनीउलिपखोज्योंउहियो ३११
॥नट॥ देख्योजाइस्यामघरभीतर अवहीनिकसिकह
तिमईसोफिरिआईतुम्हरेउर सषासाथकेचमकिग
एसवगाह्योस्यामकरधाइ औरनिजानिजानमेंदासों
तुमकहजाउपराइ वहुतनअचगारीकरतफिरतहोमैंपा
इकरिघात वांहपकरिलैचलीमहरिपेकरतरहतउतपा
त देखो महरिआपनेसुतकौ कवहूंनहिपत्याइवैरै ति
स्यामभवनहीअपनेंचितैचितैपाछैतातिवांहपक
रिल्याईकानैंगनिहिवेसरसग्वारि ॥ सूरस्याममे
रोअगोछेलतुजोवनमदमतवारि ३१२ ॥सारंग॥ ज
सुदातूजुकहतिहामोसौं दिनप्रतिदेनउराहनोआव
तिकहातिहारोकोसौं यहेउरहनौसत्यकरनकौगो
विंदहिगहिल्याइ देषनचलीजसोदासुतकौंदेखै गए
सुतापराइ नैरहिईमैनमतिनांहीवदनदेखिपहि
चाने सुनरीसषीकहतिउरलमैहियाकंन्यासौजाने
नैंजोनामकान्हमैरैकोसूधौहैकरिपायौ सूरदास
स्वामीयहदेषोतुरतनिधियाहैआयौ ३१३॥गौरी॥
रहीग्वालिहरिकोमुषचाहि कैसेंचरितकियेहरिअ
वहीवारवारसुमिरतकरनाहि पकरिवांहहोघर

सूरसा
१८८

रनैलपाईकिहाचरिनकीनेहैंस्याम जानतवनेकहितन
कूछुभावैकहतिमहरितेसौसीवांम जानीवातनु
म्हारीसबकीजनुमतिबहैौर्इहांतेजांहि सूरदासप्रभु
केगुनऐसेंतुमहिकरीनवजीतीनांहि ३१४ ॥गौरी॥
स्यामगएग्वालिनिघरसूने माषनषाइडारिसबगोरस
बासनफोरिसौंरहउकीने बडोमांटरकबहुतदिननकौ
ताहिकरोदसटूक सोवतलरिकनुछिरकिमहासौंहस
तचलेदेकूक आइगईग्वालिनितिहिऔसरनिकसत
हरिघरिपायो देषेघरवासनसबफोरे दहीदूधगर
कायो देउभुजधरिगाढेकरिलीनेगईमहरिकेंआगे
सूरदासअबबसेकौनुह्यांपतिरहिहैब्रजत्यागे ३१५ ॥बि
लावल॥ ऐसेहालमेरेघरमेकीनेहौंल्याईतुमपासपक
रिकैं फोरेसबबासनघरकेदधिमाषनषायोउबरयो
सोढारयोरिसकरिकैं लरिकनछिरकिमहासोदेषोंउप
ज्योपूतसपूतमहरिके बडोमाटघरधरयोजुगनिकौ
सोऊटूकपांचछहकरिकैं यारिसपाटचलेनवपाएहौं
ल्याईतुमपासपकरिकैं सूरदासप्रभुकौयौंराषौज्योंरषि
यतुगजमदकौजरिकैं ३१६ ॥कान्हरौ॥ करतकान्हब्रज
घरनिअचगरी षीझतिमहरिकान्हसौंपुनिपुनिउरह
नेलेआवतिहैंसिगरी बडेबापकौपूतकहावतुहमवे
वासबसतइकबगरी नंदहुतेएबडेकेहैहैफेरिबसैहै

पहवृजनगारी जननीकेधीघतहरिरोइधूर्वैहोमोहि
लागावतिधारी सूरस्यामसुरुषपोंछि जसोदाकहति
सवैंजुवतीहैंलंगरी ३१७ ॥सारंग॥ नितहिनितसवउ
ठिआवतिमोर मेरेवारिहिदोसुलगावतिग्वालिनिजो
वनजोर दूधदहीमाषनकेकारनकवगायोतेराओर घ
नमातीइतरातिडोलतिसकुचनहींकेरसोर मेरोकन्हैया
कहातनककोसोतूहैकुचनकठोर तेरेमनकोइहांकोतुहै
पावौआजुक टके कोंछोरत कायरनेनचलावतिआ
वतिजातिनहाँवृजतिनुआनोरि सुनहुसूरग्वालिनीवा
तेत्रसतकीन्हजोवनधनमोर ३१८ ॥नट॥ मेरोमाईकोन
कोदधिचोरे मेरेवहुतदईकोदीमोलागावियनहैंओरे
कहाभयोजोतेरिभवनगयोपियोतनकलेमोरे नाऊप
रकाहेगरजतिहौआईमनोचढिघोरे माषनुषाइम
होसवडारोवहुरोभाजनफोरि सूरदासयेरसिकग्वालि
नीनेहनवलसंगजोरे ३१९ ॥रामकली॥ अपनेगांउ
लेहुनदरानी वडेवापकीवेटीतातेंपूतहिभलेपढावति
वानी सषामीरलेयैठतघरमें आपुषाइंतोसहिए मैंजु
वचलीसामुहेपकरनतवकेगुनकहकहियै भाजिगए
दुरिदेषतहूमैंघरपीठीतेंआइ हेरेहेरेवानीगहियांछे
वांधीपाटीलाई सुनमैयायाकेगुनमोसोंइनमुहिलि
योवुलाइ दधिमेंपरीसेंतिकीचींटीमोपेंसवेकढाइ

सू॰सा
१८८

टहलकरतियाकेघरकीमेंयहपतिसंगमिलिसोईसू
रवचनसुनिहंसीजसोदाग्वालिरहीमुषगोइ ३२०
॥सारंग॥ महरितुमव्रजचाहतिकछुओर वातएकमें
कहींकिनांहीआपुलगावतिषोर जहांवसेपतिन
हीआपनीतजनकहीसोठौर सुतकेमएघरघरवधाईलाइलोगनुदेषतिहौर आनपराइदेतिघरलू
टनकहतिकरोयागौर व्रजघरसमुपिलेहुमहरिटी
हाहाकरतिकरजोर सूरसुननग्वालिनिकीवातेंरही
जसुमतिमुषमोरि ३२० ॥नट॥ लोगनिकहतघुकति
तूवोरी दधिमापनुगांठिवधुदेराषतिकरनुफिरनुसुत
चोरी जाकेघरकीहानिहोतिहैनितसोइनहिआनि
कहेरी जातिपांतिकेलोगनुदेषतिओरवसेंहोनेरी
घरघरकानुषानुकोडोलतआतिहिरूपनतूहेरी सू
रस्यामकोंजवजोईभावेसोईतवहीतूदेरी ३२१
॥मलार॥ महरितूवडीरूपनहिमाई दूधदहीविधि
कोहैदीनोसुनतउरधरतिछिपाई वालकवहुतनहीं
रीतेरेएकेकुंअरकन्हाई सोऊतोघरहीघरडोलत
माषनुषातचुराई विरधवैससूहेएपूतनितेवहु
तेविधिपाई ताहूकेषिवेपीवेकोंइतनीकहाचतुराई
सुनहुनवचनचतुरनागरकेंजसुमतिनंदसुनाई॥

सूरस्यामकौचोरीकेमिसदेषनकौयहआई ३२२

॥नट॥ अननतसुतमोरसकौंजननजात घरसुरभानव
लाषदुधारीओरगानिनहीजाति नितप्रतिसवेउ
रहनोकेमिसआवतिहैंउभिप्रात अनसमुझेअ
पराधलगावतिविकरवनावतिवान अतिहिनिसं
कविवाहनिसन्मुषसुनिसुनिनंदरिसात मोसौंरूप
नकहतनेरेगृहढोटाहुनआघात करिमनुहारिउठा
यगोदलैसुतकौवरजिवजाति सूरदासप्रभुदिनप्र
तिहठकियेंदुषपावतहैतात ३२३ ॥विलावल॥
भाजिगयोमेरोभांजनफोरि लरिकासहसएकसंग
लीनेनाचतफिरतसांकरीषोरि माषनुषाइजगाइ
वालकनुवनचरसहितवछरुअनुछोरि सकुचनकर
नफागुसौषेलतनारदितहंसतमुषमोरि वातनकहो
तेरेढोटाकीसवव्रजनवंधोप्रेमकीडोरि ऐलासौपठि
आवतसिरपरजोभावेसोलेजुअजोरि आप॰ षाइ
सोसवहमजानेंऔरमदेजुसिकहेरेतोरि सूरसुतहि
वरजोनदरानीअव[illegible]रततचोलीवदजोरि ३२४ ६०
॥नट॥ स्यामसवभांजनफोरिपराने हांकदेतपैठतहै
पेलानेकनमनहिडराने सीकेमोरिमारिलरकन
कौंमाषनदधिसवषाइ मो[illegible]नसचौरदधिकांदोलरि

सू॰सा
९८०

कहुरोवतपाएजाइ सुनहुसुनहुसवहिक्रिलरिक्राने
रोसोकहुंनाहि हाटनिवाटनिगालिनकहूंकोऊच
लतनहींउतयाहि रिजुआयेकोषेलुकन्हैया सव
दिनषेलनुघाऊ रोकिरहतगाहिगली सांकरिटेरी
वांधनपाग वारिनेंसुनएठंगलाए मनहीमनहि
सिहाति सुनहुसूरग्वालिनिकीवातेंसकुचिमह
रिपाछिनाति ३२५ ॥सारंग॥ कन्हैयातूनहि मोहि
उराग षटरसधरीछांडिकतपरघरचोरीकरिषा
तु कैंवनवकततोसोंपचिहारीनेकहुलाजनआईवू
जपरगनसिकदारमहरतूताकीकरतुननहाई पूतस
पूतभयोकुलमेरेअवमेंजानीवात सूरस्यामअ
वलौंतूहिवकस्योतेरीजानीघात ३२६ ॥गौरी॥
सुनिरीग्वालिकहाइकवात मेरीसौंतुमयाहिमारि
योजवहीपावोघात अवमैंयाहिपकरिवांधोंगाव
हुतेंमोहिषिझाइ सांटनिमारिकरौंपहुनाईचित
वतवदनचन्हाई अजहूंमानिकह्यौकरिमेरेघरघ
रतूजनिजाहि सूरस्यामकह्योकहूंनजैहोंमातामुष
ननचाहि ३२७ ॥विलावल॥ तेरोलालमेरोमाष
नुषायो दुपहरदीसजानिघरसूनोढूंढिढंढोरीआ

वहीपायौं बोलि किवारसूने मंदिर मैं दूध दह्यौ सब लर(
रिकनु षायौ छींके तें काढि षाट चढि मोहन कछु षा
यौं व ढरकायौ वार कै देवस्पौंनहि मानै तो ठाढे कौ कदुम
नेठंगलायौ सूरजदास कहति ब्रज नारी पूत अनोर(
षो तेंहीं जायौ ३२८ ॥ अथ जमलार्जुन मोक्ष ॥ राग
गौरी ॥ कैसा रिस मैं जो धरि पाऊं कैसे हाल करौं हरि धं(
रि कौं तुम कौं प्रगट दिषाऊं सटिया लिये हाथ नंदरानी
थर थरात रिस गात मोर विनाआजु जो छांडौं लागे
मेरे तात रहि अंतर ग्वालिनि स्त्रक औरे धरे वांह हरि ल्या
वति मैलो महरि सू धौ सुत जायौ चोली हाल वनाव
ति रिस मैं रिस अति ही उपजाई जानि जननि अभि
लाष सूर स्याम भुज गहे जसोदा अब वांधौं कहि मा
ष ३२९ ॥ सारंग ॥ जसुमति रिस करि करि रजु करषे
सुत हित क्रोध देषि माता के मनहि मन हरषे उमनत
षीर जननि करि व्याकुल इहि विधि भुजा छुडायौ
भांजन फोरि दह्यौ सब डार्यौ माषन भुइ लपटायौ
ले आई जेवरि अब वांधौं गरव जानि न वंधावै अं
दि गुर द्वै घटि होति सबन सौं पुनि पुनि और मगावै
नारद साप भए जमलार्जुन इन कौं अव जु उधारौं (
सूरदास प्रभु कहत भक्त हित जनम जनम तन धारौं ॥

सू॰सा
१८१

॥३३०॥ धनासिरी॥ देषिसषीजसुमतिबौरानी घर
घरडोलतिलेतिदामरीबांहगहेहारिकाविततानी
ज्ञानतिनहीजगतपतिमाधौजिनतेसबआपदानसा
ना जाकैनामकहतिपुनितानी नाहिदेषिबांधतिन
दरानी अषिलब्रह्मंडउदरमैंजाकेजिनकीजातिजल
थलजुसमानी मुषजंभातत्रिभुवनदिषरायोअ
चरजकथानजानिवषानी ब्रह्मादिकसनकादिसु
कादिकभ्रमतरहतइमहूनहिजानी सूरदासप्रभुहि
वेसियेलागतिजोकछुकहोगर्गमुषवानी ३३१
॥रामकली॥ जसोदाएतोकहारिसानी कहाभयो
जोअपनेसुतपैमहिठारिपरीमथानी रोसहरोसभ
रेढुगनारेषिरतपलकपरपानी मनहुसरदकेकमल
कोसपरमधुकरमीनसकानी श्रमकनछिचितनि
रषिवदनपरयहछविकहतनमानी मनौचंदनव
उमगिसुधासुवउपरवरषाठानी यहगृहगोकुल
दईदावरीबांधतिभजनवरानी आपुवंधावतभ
कनिछोरतवेदविदितभईवानी गुनलघुचरन
करतिश्रम [illegible] जिनमौनिरषिवदनमुसिकानी
पुं॰गं सिथलसवदेषिसूरप्रभुसोभासिंधुतिरानी ३३२
॥रामकली॥ माषनषातपराएघरकौ नितप्रति

घ
तह सम ग्वालनी महियै मे घ शब्द कर मांट घवरको व्रित
न अहिर जियत मेरे घर दधि मथि लै बेचन महि मरको
नवल घवे नुदुह तहें निन प्रनिवजे मांउ हे नंद महरको
नाके पूतन कहावत हो जू चोरी करत उघारत घरको सूरस्या
म कतनें नुम बैहो दधि माघन तुमरे जह तह टरको ३३३
रामकली ॥ मैया मैं नाहीं दधि खायो ख्याल परै ए सखा स यें
बै मिलि मेरे मुख लपटायो देखि बिचार उ चै ग्रह नाघर
भाजन छींके च ढायो नहां निरखि नान्हे पाइ नु कर नैसे सों
मैं पायो मुख दधि पोंछि कहत नंदनंदन दै ना पाछि दुरा
यो उारि सांट मुसिकयाइ नबहि गहि सुत कों कंठ लगायो
बाल बिनोद मोद मन मोह्यो भक्ति प्रताप दिखायो सूर
दास प्रभु जसुमति के सुख शिव बिरंचि [illegible] बौरायो ३३४
॥ रामकली ॥ जसुमति तेरो बारो बान्हु अति हे अचगौरो
दूध दह्यो माषन लै डारि दे नु सिगरो भोर उठि नित प्र
ति केरे मोसों झगरो ग्वाल बाल संग लिये घेरि रहै ब
गरो हम नु महे एक सबै कों नु कात अगरो लियो दियो
सोई कछु डारि देहु झगरो सूरस्याम तेरो गुन निमें आ
नि नगरो बोली अहहा न नोरि लियो झगरो ३३५ ॥ राम
कली ॥ देखो माई या बालक की बात बन उपवन सरिता
सब मोहे देखत स्याम लगात मारग चलत अनीति कर
त बरन हरि हठ कें माघन षात पीतांबर वे सिर ते ओठ

तअंगचलदेमुसिक्यात तेरीसोंकहकहौंजसोदाउरहने
देतलजात जबहरिआवततेरेआगेसकुचितनकु
छैजात कोमकोनगुनकहौंस्यामके नेकुनकहुंडरात
सूरस्याममुखनिरखिजसोदा कहतिकहायहबात २
३६ ॥नट॥ नंदघरनिसुतभलोपढायो ब्रजवीथिन
पुरगलिनघरनिघरघाटबाटसबसोरमचायो लरिकै
नमारिभजतकाहूके काहूकोदधिदूधलुटायो काहूके
घरकरतभंडाईमेंज्योंत्योंत्योंकरिपकरनपायो अब
तोरन्हैंजकरिकरिबांधोइहिंसबुतुम्हरोगाउंभजायो
सूरस्यामभुजगहिनंदरानीबहुरिकान्हअपनेढिंग
आयो ३७ ॥बिलावल॥ सुमिरीसुनिनृमहरिजसोदा
तैंसुतभलोलजायो काकेनहींअनोषोढोटा।किहिन
कठिनदुषजायो मैंहूअपनेऔसरयौनेबहुतनदि
ननिमेंपायो इहिढोटालेग्वालिभवनमेंकछुचित
स्योकछुषायो तैनैग्वालिपकरिभुजयाआवदनंद
ह्योंलपटायो सूरदासग्वालिनिअतिहूठावरवट
कान्हवंधायो ३८ ॥सारग॥ बांधोआजकोनतोहिघो
रैंवहुतलंगरस्योकानीमोसोंभुजागहिरजऊषलसों
जोरैं जननीअतिरिसजानिबंधायोचितैबदनलो
चनजलढौरे यहसुनिब्रजजुवतीसबधाईकहतिका
न्हअबक्योंनहिछोरैं ऊषलसोंगहिबांधिजसोदा

मारनकोसा।दीवरनोरे सांटीदेखिग्वालिपहिरनाना वि
कलमईजहंनतमुषमोरे सुनहुमहरिऐसीनाहितू
घिघेसुतवांधनिमाषनदाधिथोरे सूरस्यामकोंवहु
तसनायोचूकपरीहमतेंयहमोरे ३३८ ॥आसावरी॥
जाऊचलीअपनेअपनेघर तुमहिसवैमिलिदीदुकरा
योअवआईवंधनछोरनवरमोहि अपनेवावाकीसों
कान्हेअवनपत्याऊं मावनजाहिअपनेअपनेसवला
गतिहौंमैपांउ मोकौजिनिवरजोकोऊजुवतीदेषोंहरि
केख्याल सूरस्यामकोंकहतिजसोदावडेनंदकेलाल ३
३९ ॥सोरठि॥जसोदाभाईवारवारमुषजोवै कमलनैन
हरिहिचकनुरीवैवंधनछोलुजसोवै जौतैरसुतषराई
अचगरोतऊकोषिकोजायो कहाभयोजोघरकेढोटाचो
रीमाषनषायौं कोरीमटकीदह्योजमायोजाकुनपूजन
पायौ तिहिंघरदेवपितरकाहेकोंजिहिंघरकानुरआ
यो जाकोनामलेतचमुछूटेकर्मफंदसवकाटे सोहरि
प्रेमजेवरीवांध्योजननिसांटलियेआरे सूरदासप्रभुम
नहेततेदेहधरनहीआयो दुषितजानिदोऊसुतकुवेर
केनाहिनआपुवंधायो ३४० ॥सारंग॥माईनेकनदार
करतिहिलकिनुहरिरोवे वजहूंनेंकछिनहियोतेरोहे
जसोवे पलनायोटाहिजिनहिविकटवाउकाटे उ
लटेभुजवांधितिहिलकुटलियेआरे नैकहुनयाकि

छितपाननिर्द्दई अहीरी जानेसिवसनआदिकरहत
मदालोमा सूरदासप्रभुकोमुखनिरखिदेखिमोमा
३४१ ॥ बिहागरो ॥ कुंवरजललेलोचननभरिभरिलेत बारक
वदनविलोकिजसोदा ननरिसकरतअचेत कोरिक
भरितेदुमहदामरीआरिकछिनकरबेत कहितेंबीधै
सेंग्रावतुहे सिसुपेतामसुएत मुखआसुमाखनके
कनिकानिरखिनैननसुखदेत मानोश्रवतसुधानिधि
मोतीउडगनअवलिसमेत सवसुतोक्योघरावरि
कीजेसूरस्यामसेहेत नाजानोकहिपुन्यप्रगटभए
यहिब्रजनंदनिकेत ३४२ ॥ केदारो ॥ हरिकेवदननैन
धोंचाहि ननककदधि मारनजसोदाइतोकाहिरिसा
हि लकुटडरतेंदेखियतहेसजलसोभितडोल नील
नीलदलदलतमानोओसकनककरतलोल वान
वसनमनालजेसेंप्रातपंकजकोस निमतमुख
घरअधरसूचितसकुचमेंकछुरोस कितिकगोर
सहानिजानोंकरतिहोउपमान सूरएसेवदनऊपर
वारिकोधनप्रान ४३ ॥ केदारो ॥ मुखछविदेखिहो
नदघरनि सरदनिसिकेअंसुआनितरंडुआमार
हरनि ललितश्रीगोपाललोचनलोलआसूढरनि
मनहुवारिजविलखिविविध्रमपरेपरवसपरनि कनक

मनिमै मकर कुंडल ज्योति जगमगकरनि मित्र मोचन नम
नहु आए तरल गति दोऊ तरनि कुटिल कुंतल मधुप
मिलि मनो कियो चाहत लरनि वदन कांति अनूप सो
भा सकै सूरन वरनि २४४ ॥केदारो॥ हरि मुख देखि हो नंद
नारि महरि ऐसे सुभग सुत सोंइ नेको हनिवारि सज
ल मंजुल लोल लोचन सरद। चितवनि दीन मनहु खे
लत है परस्पर मकरध्वज द्वै मीन ललित कनक मंजुत
कपोल तिल सत कज्जल अंक मनहु राजत रजनि पूर
न कला कलेवेगि वंधन छोरि तनमन वारि लै हियलाइ
नवल किसोर स्याम ऊपर परसूरजन वलि जाइ २४५
॥विहागरो॥ कहौं तो माखन ल्याऊं घर तें जाके काज आन
कौं लकुटी छांडे नाहिन करतें माहरितो हिम सील दूरि ये
अमित अमित भोउर तें ज्यों जल सुत हित सभै पाइवे मैल
तन नाहासरतें अहो जसोदा ऊखल वांध मोहन हे आपुन तें
सूरदास प्रभु परिहसि परिहीं खिवै मुख मैन निनतें २४६
॥कल्यान॥ कहन लगी अव वडि वडि वातें ढोटा मेरो तुम
हा वंधायो तनक हि माखन खात अवम् हि माखन देति
मगाए मेरे घर कछु नाहि डरहन कहि कहि सांझ सवारे तु
म हि वंधायो वाहि रिसहा मे मो कौं गहि दीनों अव लागा
पछितान सूरदास अव कहति जसोदा वूझै सवको आपनु
२४७ ॥धनासिरी॥ सुचितदे चितै तन नैन न कोर सु कुचत

सीतभीतज्यौंजलतहैतुवकरतलुट।निरखिसखिचोर आ
ननलालितश्रवनजलसोभितअतनचपललोचनकी
कोर डारतमनौगतुकसुधामरी।विधुमंडलनउमैचकौ
र सुभगमनालजुगलजुगऊपरवांदेउखलरामकठोर
मानोभुवंगभरतवांवीपरउरफिरहीकंठअगारजोर
लघुअपराधदेखिअतिसोचतिनिर्दईदोव।जुसमतो
र सूरकहासुसौंरतनारिसकहतनवेकछुमाखनचोर
३४८ ॥विलावल॥ जसोदादेखिसुतनकीओर वालवैसर
सालपररिसएतीकहाकठोर वारवारडारतितुवतन।नि
मितदधिमुखचोर तरनिकिरनिपरसिमानोकुमु
दिविधुमतिभोर आसतेंअतिचपलगोलकजलजमो
ननिछोर मीनमानोवधिकवंनसाकरतजलचकछोर
नंदनंदनजगतवंदन।गिरतआंसुजोर सूरदाससूरज
महरिसुखहितनिरखिनंदकिसोर ३४९ ॥धनासिरी॥
चितैधौंकमलनैनकीओर कोटिचंदवारौंयामुखछ
विपरयहैसाहुकौचोर उज्जलअतनअसितदेखतिहैं
दुहुंनैननकीकोर मानौसुधापानकेकारनवैठेनिक
टचकोर कतहिरिसातिजसोदाइनसौंकौनग्यानहैतोर
सूरस्यामवालकमनमोहननाहिनतनकिसोर ३५०
॥सारग॥ ववनेवांधेऊखलदाम कमलनैनवाहिरक
रिराखेतूंवैठीसुखधाम हौ।निर्दईदियाकछुनाहीला

गिरगिहकाम देषिछुधानेमुषक्षुमिलानोअतिक्रो
मलननस्याम छोरहुवेगिदैनवङोवेरभईवातिगए
जुगजाम म नेरेग्रासनिकटनहिआवतवोलिसव
लननहिराम जननारनभुजआपुवंधाएवचनान्नियो
रिबितानम ताहिदिनतेंयहप्रगटसुरप्रभुदामोदरसोना
म ३५१ ॥गौरी॥ वारोहोवेकरजिनहरिकौंवदनछुवो
री वारोंवहरस नाजिनिवोल्योंजुगारी ऐसीमेंमों
ही भईजसोदानंतोसोंकोहादेषौ गोपाललालका
योक्योंहाथपसारी कुलिसनेंकठिनवाहवेतेरी छ
नियाअजहूनदइवतिज्योंदेषनउरमुरारी क्रितिकगो
रसहानि जाकौंतूंतोरतिकानिउरस्योंनहिसूरस्याम
केरोमरोमपरवारी ३५२ ॥सोरठि॥ जसुदातेरोम
लोहियोहेंमाई कमलनेनमाषनकेकाजेवांधेऊ
षललाई जोसंपदादेवमुनिदुर्लभसपनेहूदईने
दिवाई याहीतेंतूगर्वभुलानीघरवैठेनिधिआई
जोमूरतिजलथलमेंव्यापकनिगमनषोजतपाई
सोमूरतिनेंअपनेआगनचुटकीदेदेनचाई काहू
कोसुतरोवतदेषतिदौरिलेतहियलाई अवअपने
घरकेलरिकाकौंइतीकहाचतुराई वारंवारजलजलो
चनभरिचितवतकुअरकन्हाई कहाकरोंवलिजा
उं छोरतीमोहूसोंहदिवाई सूरपालकअसरानिजु

रसालकत्रिभुवनजाहिदुराई सूरजदासमनअवसमा
धौंनातेकछुनवसाई ३५२ देषिरीनदनंद
नकोर त्रासतेंननत्रिसतमेंहरिनवननआननजोर
वारवारजरातहैकछुवरनवंदनहिथोर मुक्तरमंडल
मुरनमानोंछिनहुछिनछविछोर सजलचपलक
नीनकोपल अहनऐसेडोल रिसभरेअंवुजअंवरमी
नरभ्रमतयोंभ्रमितोर उरलैलगाइवहाइरिसजियतज
उपूरतिकठोर कछुकमलनाक्रतजैसेंमनिमानिमेरो
निहोर सूरस्यामविलासकोनिधिमलेमाषनचोर ३
५४ नवतेंवांधेऊषल[illegible]आनि वालमकुंद
हिअननरसावतिअं[illegible]ति अंगकोमलजांनि धूतकाल
नेवांधेमोहननरानिचरमाथिआजि कुम्हिलानोमुष
चंदरिषावतिदेषोधोंनंदरानी मेरेत्रासतेंजोउनछो
रिनुअवछोडउहुनुमवां[illegible]नि कमलनैनवांधेई छोडे
तूवैठीमननमनि जसुमतिकेमनसुषकेकारनआपु
वंधावतपानि जमलार्जुनमुक्तिकरनेकोसूरस्याम
यहठानि ३५५ कान्हसोंआवतिक्योंव
रिसान लैलैलकुटकठिनअपनेकरपरसतिकोमल
गातदेषिजुआंसूगिरतनैननतेंसोभितहैंढरिजात मु
क्तामनोंचुनतषगषंजनचोंचपुटानसमात उरनि
डोलडोलतहेरहिविधिनिराषिभ्रमवसानिवात मा
नोसूरसंकेतसरासनउडिवेकोअकुलात ३५६

यसोदायहनबूझियेकाम कमलनैनकीभुजा॥
देखिधौंनेबांधेहेदाम पुत्रहुतेंप्रीतिमनहिकोककुलदी
पकमनिधाम देखियतकमलवदनअकुलानेमोंनि
रमोहीवाम अतिसुकुमारमनोहरनाहिकरानितनाम मूरतै
हरिपरिवारिआरिसतनतनमनधनगोरसअरुधाम तुम
येनेमंदिरमैवैठाहरिआंगनहैधाम यहसुनिग्वालि
जनकेवोहितपतितपावनहैनाम सूरदासप्रभुतिन
केवसहैंयहे ठरीघनस्याम ३५७ ऐसा
रिसनोकौनदरानी भलीवुद्धितेरेजियउपजीवडीवेस
अवमईसयानी ढोटाएकभयोकैसेहुकरिकौनकौनके
नकरिविविधिमानी करमकमेरेकेअवलौंउवस्योना
कोमारिपितरदेवानी कोनिर्दईरहतनेरेघरकोनैरेसंग
वैठेआनी सुनहुसूरकहिकहिपाछेनाहीजवनाच
लीघरहिविनछानी ३५८ हलधरसोंकहिग्वा
लिसुनायो प्रातहितैंतुमरोलघुभैयाजसुमतिऊ
षलवांधिलगायो काहूकेलरकहिहरिमारयोभो
रहिआनितिनहिगुहरायो तवहीतैंवांधेहरिवैं
ठेसोहमतुमकोंआनिजनायो हमवरजीवरज्यौ
नहिमानतिसुनतहीवलआतुरह्वैंधायो सूरस्या
मवांधेऊषललगिमानोडरतनअतिहिंत्रसायो ३
५९ ॥सारंग॥ यहसुनिकेंहलधरतहंधाए देखिस्या

सू.सा
१९६

मऊखलसौंवांधेनवहिदोऊ लोचनभरिआए मैंवर
कें ज्योंबारकन्हैया मलाकरीदोऊहाथवंधाए अजहूंछा
ड़ौगेलंपराई दोऊकरजोरिजननिपैहैआए स्यामहि
छोरिमोहिवरुवांधोनिकसतसगुनभलेनहिपाए मे
रेप्रानजीवनधनकान्हतिनकेभुजमहिवंधेदिखाए
मातासौंकहकरौंठिढाई सोसरूपकहिनामसुनाए सू
रदासतवकहतिजसोदा दोऊभैयातुमइकमतआए
३६० ॥सारंग॥ इतोकियोसुकहारीमैया कौनकाजय
हदूधदहीछोभुकरायोकन्हैया आईसिखतनसवै
पराएस्यानीग्वालिवैरैया दिनादिनदेनउरहनेआवे
ढुकिढुकिकरतिलरैया सूधीप्रीतिजसोदाजानीस्या
मसनेहीगैया सूरस्यामसुंदरहिलगानेवहवलभइ
जौमैया ३६१ ॥केदारो॥ काहिकौंकलहुनाध्योदारुन
दावरिवांध्योकठिनआसोमेरोमैया नाहिकसकतु
मतुनिरखिकोमलुतनुतनकदधिकाजभलीतुममै
या हौंतौनभयोरीघरदेषतौनेरीयोंअरघोरतोवा
सनसवजानतीवलैया सूरदाससहितहरिलोचन
आएहैंमेरि वलहूकोवलजाकोसोईकन्हैया ३
६२ ॥विलावल॥ काहेकोजसोदामैयात्रास्याहैवा
रोकन्हैयामोहनमेरोमैयाकितनोदधिपियतौं
होनभयोनवघरसांटीदीनीरसरसवांध्योकरजेव
२

रानिकसें देखिजियतो गोपालतोसवनिप्यारोनाको (
तेक्रोनो प्रहारोजाकोहै मोक्रोगारो अजगुतियतो ओ
रजोहोतो वोऊविकुजननीज्ञानतोसोऊ वेसेंज्ञान
पावतोंअंगुरिनिछियतों ढगेवादेंवलवीरुनेन (
नि टरतुनीरहरिजूतेप्यारोनोकोपूधर छिपियतो
सूरदासगिरिधरनिधरनीधरहलधरयहछविसदा
हरिहोमेरेजियतो ३६२ ॥सोरठि॥ काहेकोहरिदूतनेनो
त्रास्यो सुनिरीमेयामेरैमेयाकितनेगोरसुनास्यो
जवरजुसोवरगोढवाधेघरघरमारीसांटा सूनेघ
रवावानंदनाहीऐसेकहिहरिढ्रगी ओरनेवछुट (
देवीस्यामहिताकोवरेनिपात् नूजोभरेवातसोई (
सांचीवहावहोंतुहिमात् गाढेवरतवातसवहल
धरमाखनुप्यारोतोहि ब्रजपास्योजानोमुहिगारों
छोरतिकाहिनओहि काको ब्रजमाखनदधि तिहि
कोवांधेवन्हाई सुनहुसूरहलधरकावानीजननी
सेनवताई ३६५ ॥सारग॥ सुनहुवातमेरीवलराम (
करनदेहुइनकोमहिसे वाकोहेको चोरीजगटतनाम
तुमहीकहोकमीकाहेकीनवनिधिमेरेधामें वरज
तिमुतजाडुवहूजिनिकहिहारीनिसिजांम तुमहु (
मोहिअपराधलगायोमाखनप्यारोसाम सुनिमैया

सू॰सा
२२८

तुहिंछांडिकहौंकितहिंकोराषैनेरेनाम नेरीसौंउरहनोलैं
आवतिहटहिव्रजकीवाम सूरस्यामनहिहोअकुला
के नेकवबांधेदाम ॥सोरठि॥ जसुदानोहि बांधतवंधौं
आयो करक्यौंनाहिनेअनतननेरोयहकहिनाहिबि
ग्रायो शिवविरंचिमहिमानहिजानतसोगाइतु
संगधायो तानेतूंहपहिचानतिनाहीकोनपुन्यतें
पायो इतनीकहतरसिकमननवहीरोससहितवल
धायो कहाभयोजोघरकेलरिकाचोरीमाषनषा
यो अपनेकासववंधनछोरेप्रेमसहितउरलायो
सूरसवचनैमनोहरकहिकहिअनुजसूलविसरायो
३६७ ॥सोरठि॥ कहाकरौंहरिवहुतविहाई सहिन
सकीरिसहीरिसमनरिगाई वडैनेटाठकन्हाई मेरोक
मा ह्योनेकुनाहि [illegible] करतकरनआपनीटेक भोरहोत
उरहनलेआवतीव्रजकीवधूअनेक फिरतजहां
तहांदूंदमचावतघरनहीरहतछरोक सूरस्यामत्रि
भुवनकेकरताजसुमतिकहतजेनेक ३६८॥ गोरी
निरविस्यामहलधरमासिकाने कोवांधेकोछोरेउ
नकौंरहमहिमायेईपेजाने उतपतिप्रलेकरतहैं
येईसिससहसमुषसुजसुवखाने जमलार्जुनतोरि
उधारनकारनकरनकरनमनमाने असुरसिंघारन

भक्तहितकारनपावनपतितनमहावतवाने सूरदासप्र
भुमातुभक्तकौं अतिहितजसुमतिहाथविकानें ३
६७ ॥गौरी॥ हरिचितएजमलार्जुनतन अवहीआ
जुइन्हैउधारौंयेहैंमेरेइजन इनकेहेतभुजावंधका
इअवविलंवनहिलाऊं परसवरीतनुनतहिगिराऊं
मुनिवरश्रापमिटाउं एसुनमोरवकुतदुषपायोसन
कादिकमुनतारो सूरदासप्रभुकहतमनहिमनवारिवंधन
निवारौं ३६८ ॥रामकली॥ जसोदाऊषलवांधेस्या
म मनमोहनवाहिरहीछोंडेआपुगइगृहकाम दह्यो
मथतिमुषतेंकछुवकरतिगारीदेदेनाम घोरघर
डोलतिमाषनचोरतषटरसमेरेधाम व्रजकेलरि
कनमारिभजतहैंजाहुनुमहुवलराम सूरस्यामकु
षलसोंवांधौंनिरषतिव्रजकीवाम ३६९ ॥गूजरी॥
जसोदाकान्हतेंदधिप्यारो डारिदेहुकरमथनमथा
नीसरसतनंददुलारौं दूधदहीमाषनलेवारोंजा
हिकरतितूगारौं कुम्हिलानोमुषचंददेषिछवि
कोहिमनेकनिहारौं ब्रह्मसनकशिवध्यानतपाव
तसोव्रजगोपनचारौ सूरस्यामपरवलिवलिजैयें
जीवनप्रानहमारौ ३७० ॥धनासिरी॥ जसुमति
किहियहसीषदई सुतहिवांधितमथतिमथानि
ऐसीनिठुरभई हेरीलिजुवतिनवोलीनोतुम

सूःसा
६१९८

सर्वसतहानिनई लरिकहिंयासुदिषावतताहियेनर
भुरझाईहो मेरेप्रानजीवनधनमाधोबांधेवेरभई
सूरस्यामकहंयासुदिषावनतुमकहनकहतिदई २
७१ ॥धनासिरी॥ तवहिस्यामएकबुद्धिउपाई जुव
तीगई घरनिसवआपनेग्रहकाजजननी अटकाँ
ई आपुतुगएजमालार्जुनतरपरसतपातउठे घहराई
दिये गिराइ धरनिदोउतरुसनआदिकप्रगटभए
आई दोउकरजोरिकरतदोउअस्तुतिचारिभुजा तिन्हे प्रगटदिषाई सूरधन्यव्रजजन्मुलियोहरि धरनी
की आपदानसाई २७२ ॥विलावल॥ धनिगोविंदध
निगोकुलआए धनिधनिनंदधन्यनिसिवासरध
निजसमति धनिउरधरिआए धनिधनिवालचेलि
जमुनाधनि धनिवनसुरभीवंदचराए धनियह
समयोधनिव्रजवासी धनिधनिवेनुमधुरधुनिगा
ए धनिवनउरहनो धनिधनिधनिमाषन धनिमो
हनषाए धन्यनतरुउषलतरुगोविंदहमहितेनधनि
भुजनवंधाए २७३ ॥विलावल॥ गोविंदतेरोसरूप
निगमनेतिनेतिगावे भक्तनिकेवसस्यामसुंदरदेह
धरेआवें जोगीपीग्यानध्यानसपनेहुनपावे नं
दघरनिवाधिताहिनपिस्योनचावें गोपीजनप्रेम
आनुरागिनकोसुषदीनो आपनेरसविसालकी

हूनहिचीन्हो श्रुतिसुमृतिसवपुरानकहतमुनिवि
चारी सूरदासप्रेमकथासवहीतेन्यारी ३७४ ॥मरौ
लौ॥ निगमसरूपदेखिगोकुलहरि जाकोदूरिदरसुदे
वनिसोवध्योजसुदाऊखलरामधरि खुटिकिनुदे
देग्वालनचावतकान्हवाललीलाकरि जिहिंउरमव
नतपवनरविससिजलसोवयौंडोरेलघुरिपाकेउरि
छीरसमुद्रसिनसंतनहिमांगतदूधपतोषादैभरि
सूरदासगुनकेगाहकहरिरसनागारुगएजनेमा
तरि ३७५ ॥सोरठि॥ जाकोवूझाअंतुनपावैं नोपैं
नंदकीनारिजसोदाघरकेटेलकरावैं सेससनकनार
दमलोशमुनिजोवेगुननितगावैं निसिवासरबो
जपचिहारेमनसाध्याननआवैं धनिधनिगोकुल
धनिवनितानिरखतस्यामवंधावैं सूरदासप्रभुप्रे
महिकेवससंतनदरसदिखावैं ३७६ ॥कानरौ॥ ध
न्यधन्यरिषिआपहमारे आदिअनादिनिगमन
हिजानततेहरिप्रगटदेहव्रजधारे धन्यनंदधन्य
मातजसोदाधनिआगनमैखेलतबारे धनिस्या
मधनिदामवधाएधनिऊखलधनिमाखनखायो
दानवंधुवनतनामिधिलेप्रभुराखिलेउरमसरण
तुम्हारे सूरस्यामकेचरनसीसधरिअस्तुतिकरि
निजधामसिधारे ३७७ ॥विलावल॥ परजिप

सू॰सा
१८८

जानिगुपालबंधाए आपदधुहि सुतकुबेरके आनि
भएतरुजमलसुहाए व्याजनंदकुलोचलजलठा
रनऊषलदामसहितचलिआए बिटपभंजिजे
मलाजुनतारेऊरिअसुतिगोबिंदरिझाए तुम
बिमुखोबदानकोनदीनबलदारे निजगुनसगुन
रूपधरिआए सूरदाससस्यामगुनगावतहरषवंत
निजपुरसिधारे ३७८ ॥रामकली॥ दोऊभैरध
रां रनिपरेभहराइ जरहिसहितआखैंआघातशबद
सुनाइ भएचकितलोगबृजकेरहेसकुचिउराइ को
ऊरहेआकासदेखतकोऊरहेसिरनाइ घरनिलौं
जकिरहेजहंतहंदेहगतिबिसराइ निरखिजसुम
तिआजिरदेखेबंधेनाहिंकन्हाए बृछदोऊधर
परदेखेमहरिमानप्रकार अबहिआंगनछांडि
आइचप्योनलवेडार मेंअभागिनिबांधिराखेनं
दप्रानअधार सोरसुनिनंदद्वारआए बिकलगो
पीग्वार देखितरुअतिमनडरानोहेंबडेबिस्तार
दुहुंनतरबिचस्यामबैठेरहेउषललागि भुजाछो
रिउठाइलीनेमहरकैहैंभाग निरखिजुवतीअंग
हारिकेचोटकऊजानिलागि कबहुंबांधतिकब
हुंमारतिमहरिबडीअभागि नैनभरिजलढार

दिऊ जसुमति सुतहि कंठ लगाइ जरहरि साजि हिं तुम
हि वांध्यो लगे मोहि वलाइ नंद मोहिं न हार कहे गे देषि
नलदेऊ आइ मैं मरो तुम कुसल रहो दोऊ स्याम हल(
धर भाइ आइ जो घर नंद देषै तरल गिरे दोऊ भारि ॥
वांधि राषति सुतहि मेरे देषत महरि हिंगारि तातक
हि तव स्याम दोरम हहरि लियो अंक वारि कैसेंउ वेरेक्स
नरतें सूरतें वलिहारि ३७८ ॥नट॥ मेरो मोहन हों तो
पर वारी कंठ लगाइ लियें मुष चूमति सुंदर स्याम मुरा
री काहे को दाम ऊषल सो वांध्यो हो कासाम हतारी(
अति हि उतंग वयारी न लागी क्यों टूटे जुमभारी वारं
वार विचारि जसोदा यह लीला अवतारी सूरदास स्वा
मी की महिमा कापर जाति विचारी ३८० ॥सारग॥
अव घर काहू के जिनि जाहु तुम्हरे आजु कमी काहे की
कत तुम अनतें नेषाहु वैरे जेवरी जिनि तुम वाधो वेरे
हाथ महराइ नंद मोहि अति त्रासत है ते वांधे कुंअ
र कन्हाइ रोगु जाउं आपने हल धर की छोरत है तेव
स्याम सूरदास प्रभु पात फिरो जिनि माषन दधि
वदाम ३८१ ॥सारग॥ व्रज जुवती स्याम हि उरलाव(
ति वारंवार निरषि कोमल तन करजोरति विधि को
जमुनावति कैसें वचे अगमन तन के तन मुष चूमति
यह कहि पाछि तावति उरहने ले आवति जिहिं कारन

सोसुषफलसूरनकरपावति सुनहुमहरिइनबैंतुम
वांधति भुजगहिहिचिन्हेवंधनेदिखावति सूरदासप्र
भुअतिरतिनागरगोपीहरषिहृदेलपटावति ३८२
२ ५
लीलाभजमलार्जुनचौपई॥विलावल॥ ग्वालिउरहनो
भोरहिल्याई जसुमतिकहंतेरोगयोकन्हाई भलो
कामतेंसुतहिपठायो वारेहीतेंमूडचढायो माष
न[illegible]मथिमरीधरीकमोरी अवहीसोहरिलैगयोचोरी यहसुनतहिजसुमतिरिसमानी कहांगयो
गहिसारंगपानी षेलततेंओचकहरिआए जननी
वांहपकरिबैठाए मुषदेषततवजसुमतिजान्यों मा
षनवदनकहांलपटान्यों षिरिदैवौतोग्वालिनिया
छें मानामुषचितवतनहिआछें चोरीकेसवभा
उवनाए मातासंटियाकेलगाए माषनषानजा
नपरघरकों वांधोंतोहिनेकनहिधरकों वांहगहेदृ
ढतिषुरिडोरी वांधोंतोहिसकैकोछोरी वांधिपची
डोरीनहिपूरे वारवारघीघतिरिसमूरे घरघरतेंजे
वरीलयाई निसहाथिसकरिदेषनधाई चकृत
भईदेषिठिंगठाढी भनोचित्रेरैलिषिलिषिकाढी
जसुमतिजोरिजोरिजुवांधे आगुरेकजेवरिघरि
सांधे जवजान्यों जननीअकुलानी आपुवंधायो
सारंगपानी नवकेहेनरषरीवंधाई सनकादिकसु

नकीसुधिन्जाई मातोहेतजननिसुखकारी जानिबंधा
यौंआवनवारी सुखजन्माइत्रिभुवनदिखरायो चर
नकियोतुरतहिविसरायो बांधिस्यामबाहिरलैआई
यौं गोरसघरघरखात्तुराई ऊखलसोंगहिबांधिक
न्हाई नितहिउरहनोसह्योनजाई इनकैहैजाति
एकघिरिआवैरैनिदिनातमोहिछिहावैं माखनद
धिनैरेघरनांहि धामधरयोचोरीकरिखाही नौल
खधेनुदुहतघरमेरें केतेग्वालरहतगोधेरें मथन
नंदघरसहसमथानी ताकेसुतचोरीकीवानीको
सोंकहतिआनिब्रजनारी बोलिजातिनहीलाजन
मारी नंदमहरिकीकरतुनन्हाई विरधावेससुत
भयोकन्हाई तुम्हरेगुनसवनीकेजाने नितवरजो
कवहुंनहिमाने कोऊछोरेजिनिरिसठकन्हाई बांधे
भुजदोउऊखलनाई भवनकाजकीगेनदरानी आं
गनछोरेस्यामबिनानी उरहनदेनग्वालिजेआ
ई तिन्हेंजसोदादियोबहराई चलीसवैमिलिसो
चतिमनमें स्यामहिगहिबांधिहेछनमें हंसतवा
तकहाकिनांही ऊखलसोंसुतबांधोबांहा क
हाकहोंवाछविकोंमाई वावीपरआहिकरतलरा
ई कान्हवदनअ~~तिकोमलसार~~ हीऊन्हिलानो
मानोकमलहिमहितिरसानों उरतेदारघेनेनचप

सू-सा
२०१

लजाति बचनसुधासरसी नन्नरतगाति यह सुनि जो
रजुवति सब आई जसुमति वा घेरन हिं न्हाई भ(
लो सुनि तेरे जिय उपजी ज्यों ज्यों दिन भई त्यों निपजी
छोरहु स्याम करहु मन लाहो अति निर्दई भई तुम
जाहो बाहिर बांधि सुत हि बैठास्यो मथति दही माख
नतो हि प्यारो छांडि देहु वांहि जाउ मथानी सोहा(
वावति छोरहु आनी हांसी नारन सबै नु मआई अ
ब छोरोंगी तिहिं कुअर कन्हाई जु महा मिलि रसवादु(
व गायो उर सनदैरै मूठ धिरायो सब हि नु गोधन सौ
हरिवार । चिनै रहे मुख कुअर कन्हाई नवनु मनों
प्रेबो लिबुलाई । निहि बारन तुम धाई आई यह सु
नि बडुरि चली बिलखाई कहा न गैवलि जाउं मन्हा
ई मूरिघ बो बोऊ कहा सिषावै या ना मति न छुरह
तन आवै नारि गई फिरि भवन आतुरा जो छोउ(
फिजसोदा कीन्हा याकी जाति अभै हम चीन्हा यैहे(
कहति अपने घर आई मा मैं न हि निनो समुझाई
मथति जसोदा दही मथानी तब हि कान्ह के सोम
तिटानी भक्तवछल हरि अंतरजामी सनकादिक
सुत दोऊ नामी इहिं अवतार कहीं इन्हैं नारन इन
को दुष अवकरों निवारन जो जिहिं दानति हिंह(

गहिलगायो जमलार्जुनपैपूतआयौ रजुवांधिऊष
ललेआइकैयो आगेनिकसिनेगमहिहटकैयो अर
अरातदोउवृक्षगिरेधर अतिअघातभयोवृजरूप
र भएचकृतवृजकेसववासी इहिअंतरदोऊकुंअर
प्रकासी संषचक्रकरसारंगधारी भक्तहेतप्रगटेव
नवारी दोषदूरसमनहरभवदायो तुमहिविना
प्रभुकोनसहायौ धनिवृजतुम्हतहांवपुधारी
धनिजसुमतिवृसहिअवतारी धन्यनंदधनिध
निगोपाल धन्यधन्यगोकुलकीवाल धन्यगाइ
धनिदुमवनचारन धनिजमुनाहरिकरतविहार
न धन्यउरहनोग्वालहित्याई धनिमाषनचोरन
दिवाई धन्यदाम भुजतुम्हवंधाए गरुडकंठव
चनमुषभारी सरनराषिलेहुगर्वप्रहारी वारवार
चरननिपरेधाई कृपाकरीभक्तनसुषदाई साधुसा
धुकरिश्रीमुषवानी विदाभएसनकादिकवषा
नी जमलार्जुनतारिपठाए नंदवारदोऊत
रुगिराए निरषिजसोदाआंगनआई दूहूंत
रुविचकन्हाई दोरिपरेवृजकेनरनारी नं
दद्वारकछुहोनगुहारी देषेआइवलदोउगोरे
प्रेमनजसुमतिआहितुम्हारे तुरतकंठहरिऊषलतें

सू.सा
२०२

ल्याए देषनजननिनैननमांहिआए वजूदेहहरिकौहि
माइ जहांतहांविधिहोतसहाइ प्रथमपूतनामा
रनआइ पैपीवतवहतहांनसाइ त्रिनावर्तलीग
योउडाइ आपुहिगिरोसिलापरआइ वगासु
र आवतहीजांन्यौं सुनीवहतज्यौंलेतपरान्यौं
सकटासुरपलनाहिंगआयौ कोजानैकिहिंता
हिगिरायौ षेलतमैंकैसीइकुमारयौ षींचतो
रिवहधरनियछारी ग्वालनिकेसंगगाएगोचा
रन तहांवकासुरलाग्योमारन कौनकौनवरवर
हेटारयौ जसुमतिवांधिआजिरलैडारयौ वहुनेउ
वरयौआजुकन्हाइ उषलवतगिरेतहराइ क
हाकरौंकहतनवनिआवै तुरतआइहरिकौंतुव
मा चावै सवहिनुपेलिकरतमनआई प्रम्यनंदके
वचेकन्हाई मुषचूमतिलैलैउरलाए जुवतिनु
क्रियेंआपुमननभाए लेउननीयुतकंठलगाव
ति चोरीकीवातैंसमुझावति मेरिसहारिस
करनलालसौं भुजवांधेमनहंसतष्यालसौं॥
मेवरजोजुमकरतआंचेरी उरहनकौगाढीरहें
सिगरी वारवारननदेषतमाई गिरनवछक
हुं चोटनपाई कहतस्यामसैंअ तिहैडरानौ

ऊषलननमेरह्यौछिपानो वानसुतहिवूहतिनंदरानी
कान्हकहेमुषउरवीवानी हरिकेचरितकयाकोजाने
जसुमतिअतिवालककरिमानें अछिनवूलजीवकेदा
ता माषनकोंवांधतिहिमाता गुनअपारअवगतिअविना
सी सोप्रभुघरघरद्योषविलासी ऊषलवंध्योजुहेतभक्त
के येमानायेपिताजनकवे जमलार्जुनमोतकराए प्रत्रहे
तजसुदागृहआए ऐसेहरिजनकेसुषकारी प्रगटेनू
पचतुर्भुजधारी जोजिहिंभाव भजेहरिजैसें प्रेमवस्यहुष
नकेतैसें सूरदासयहलीलागावें कहतसुनतसवकेम
न भावें जोहरिनध्यानउरराषे आनदसदांदुरितदुषना -परं
षे ३८२ ॥सारंग॥ भूषोभयोआजुमेरेवीरो भोरहिंग्वारि
डरहमो ल्याई उहियहव्रियोयसारो पहिलेरोहिनिसों
कहिराष्योतुरतकरोज्योनार ग्वालवालसवकोलिवि लिए
लिवैठेनंदकुमार भोजनवेगिल्याउमैयाकछु भूषल
गीमुहिभारी आजुसवारेकछुनहिषायोसुनतहंसी
महतारी रोहिनिचितैरहीजसुमतितनसिरधुनिधु
निपछितानी परसहुवेगिवेरकतलावतिभूषोसा
रंगपानी वहुव्यंजनवहुभांतिरसोईषटरसकेपरका
र सूरस्यामहलधरदोऊभैयाओरसषासवग्वार
८३ ॥रसोईदूसरी॥सारंग॥ नंदभवनमेंकान्हअरोगें
जसुदाल्याईषटरसभोगें आसनदेचौकाआगेंधरी
जमुनाजलराष्योहारीभरी कनकथारमेंहाथधुवाए

सद्यहसैतहंभोजनन्याए लैलैधरानिसवनिकेआगे
मातुपरोसेजोहरिमांगो बारबांउद्यतलावनलाउ
जेसोहोहिनअमतमाइ औरलेउ कछुसुतबुजराजा
लुचईलसीघिवरबाजा येराघागजलेवपिरा गोंदपाग
तितिनिगिनीगिदोरा गोघाइलाइचीपागअमता सीरो
संजोलेबुजपाती छोलिधरेबरबुजावेरा सीतलवास
करनअतिघेरा घरिकदावस्गरा चिरौरा पाउवरामले
तवनवोरी वेसनपुरीसुखपुरीसाजे आछोद्धधवमल
सुबपाजे मेयामोहि औरनिनि प्यावे धोराबों
पेमोकोंभावे वेलाभरिहलधरकोंदीनो पावतपे
अमृतिवलकीनो ग्वालसखासवहिजुपेअचयो
नीकेओरिजसोदारचयो दोनामेलिधरेजुवाहौं
सहोइनोल्याघुवा माठेआतिकोमलहैंनीके तातेजु
रतवभोरेघोके पेनीसेवअंदरसेप्यारे लेआपुजे
वुहमेरेप्यारे हलधरवहाल्याऊरामेया मोकोंदे
नाहिलेनुकन्हैया जसुमतिहरखभरोलेपरसाति
जेंवनहैअपनातहिसोआति कान्हमांगिसानल
जललियो भोजनवीचनीरलेदियो मातुपसार
रोहिनीत्याई घरनसुगंधनुरतदेताई नातलाव
तिचावादिवडुलेभ मातुपर्यौसोमातासुलेभमूंग
ससूर उरदचनादा ॥ कनकवरनधरिघटविपछा

रा रोटीवाउीपोरीहोरी इकवोरी इकघीवचभोरी गायो
छ्योनारिधरीकंवोरी कछुमांप्योकछुपेटाछोरी मा
टेनेलचनाकीभाजी एकमकूटनादिंमहिसाजी मा
टेच्चरपरेकूरा हौंसहीइनो ल्याऊमूरा मुगौरीप
नौरापनोपकोरा एकौरेभाजेउखरा पापरवरा
मिथौरीफुलोरी कूरवरीकावरीपिठौरी वड़ुनमि
रच्चदेकियोनिमोना वेसनकेदसवीसकरोना
ननकोरादेंसम्कचेउा पापपिंडाकोपलीभाउाच
दलेइचाल्हरआमपोई मध्यमेलिनिवुआनिरचोइ
इ नचितलजानलोनपापागी कठाकूपालकूस
रेमांगी सरसौंमेथासोवापालक वथुआसाधिलि
योजुनालक हींगहरदमिर्चेंछौकेनेले आइक्को
रआंवरीमेले सालनसकलकपूरसुवासत स्वाद
लेतसुंदरहरिग्रासत आंवआदिवेसवेसंधाने स
वचाषेगोवरधनराने कान्हहेहेंमातअघानो
अवमोकौंसीतलजलआनौं अचवनलेधोइनवक
रमुख सेसुनवरने भोजनकीमुष उज्जलपान
कपूरकसूरी चंदनअंगसवनिकेवरच्यौं जसुम
तिवेसुखकोनहियरच्यौं मांगिजूठिसूरजननी
न्हो वांटिप्रसादसवनिकोंदीन्हो जन्मजन्मचाखों

॥ सूरसागरपत्रकीछविसे

सूरसा

२०४

जूठनिको चेरो नंदमहरजैघरकौ ३०४ ॥कान्हरो॥
जसुमति कहति कान्हसों मेरे अपने आगनमें हीतुम
खेलो बोलि लेहु सबसखा संगके मेरो कह्यो कबहुं जि
नि ठेलो ब्रजवनिता सब चोर कहति तुहि लाजनि
सकुचि जात मुख मेरो आजु मोहि बलराम कहतहे कू
टेहू नाउं धरतिहे तेरो जब मुहि रिस लागति तब त्रा
सति बांधति मारति जैसे चोरी सूर हसति ग्वालिनि
देतारी चोरनाउं कैसेहु सुतमेरो ३०५ ॥कान्हरो॥
मोहि कहतिं जुवती सब चोर खेलत रहों कहूंमेवाहि
र चितैरहति मेरी सब और बोलिलेत भीतर घर अ
पनें मुखचूमति भरि लेतिं अकोरि माखनहेरि दे
तिं अपने कर कछु कहि विधिसों करत निहोर जहां
मोहि देखति तिनहं टेरति मैं नहिं जातु दुहाई तोर सू
रस्याम हसि कंठ लगायो वे तरुनी कहं बालक मो
र ३०६ ॥कान्हरो॥ वोलिलेहु हलधरभैयाकौं मे
रे आगें खेलकरो कछु नैननि सुख दीजे मैयाकौं
मैं मूंदो हरि आंखि तुम्हारी बालक रहे लुकाई ह
रषि स्याम सब सखा बुलाए खेलनहि अंखिमुदाइ
हलधर कह्यो आंखिकौ मूंदैं हरि कह्यो जननि जसो
मति सूरस्याम लिये जननि खिलावति हरषि स

हितमनमोदा ३८७ ॥गौरी॥ हरिअपनीतवआंगिमुदाई सषासहितवलराम छपाने जहंतहंगएभगाई आन लागिकहजननीजसोदाघरमेंहिं वलरामु वलदाऊ कों आवन देहैं श्रीदामासोंकाम दोरि दौरि वालकसव आवन छुवतमहहरिको गात सवआएहेसुवलश्रीदा मा हारेअवकेतात भोरपाहिहरिसुवलहीधाएगघो श्रीदामानाइ देदैसोंहनंदवावाकीजननपिलेआइ हंसि हंसितारीदेतसषासव भएश्रीदामाचोर सूरदा सहंसिहकतिजसोदा जीत्योहे सुतमोर ३८८ ॥केदौ ॥ चलोलालकछुकरोविपारी रुचिनाहीमेरीकहू परकभोजनकरोकहारी वेसनमिलेसरसमेदाको अतिकोमलपूरीहेभारी जेवहुस्याममोहिसुषदाजे तोतेकहीनुहेपेप्यारी निकुआसूरनुआंवसंधानो औरकरोंदनुकीकचिन्यारी वारवारकहतिजसोदा कहिस्यावेरोहिनिमहतारी जननामुनतनुरतलेआ ई ततकतनककघरिकंचनथारा सूरस्यामअकेलेषायो जलअचयोकरुवदनपषारी ३८९ ॥केदौरा॥ योहि योलालमेंतरुचिकरिसेजविछाई अतिउजलहेसेज नुम्हारीसोवतअतिसुषदाई षेलततमनिसिअधिक गईसुतनेननिमीदघमाई वदनजलातअंगजोंडाव नजननापहोवतिपाइ मधुरेसुरगावतिकेदोरोसुनत

सू.सा
२०५

स्यामचितुल्यांर सूरदासप्रभुनंदसुवनकौंनींदगई
नवआई ३८०॥विलावल॥ जागियेगुपाललालग्वा
लद्वारठाडे रैनिअंधकारगयौचंद्रमामलीनभयो
तारेगनिदेषियतनहि तरनिकिरनिचारे मुकलि
तभयेकमलजालगुंजकरतभृंगवालप्रफुलितवन
पुहपडालकुमुदिनिकुम्हिलांनी गंधवगनगानक
रैं स्नानदाननेमधरनहरनसकलपापवदतविप्रवेद
वानी वोलतनंदवारवारमुषदेषैंतुवकुमार गाइनुभ
ईवडीवारवृंदावनजैवे जननिहोतिउठौस्यामजानन
जियरजनितांम सूरदासप्रभुकृपालतुमकोंकछुषैवे
३८१॥विलावल॥ भोरभयौवलिजांउंजागौमदनंद ता
तजामगमाईचवाईआनंदभई तरनिकीकिरननितैंचंदभ
सै योमंद तमचुरषगरोरआलिवरनवसौरवेगिमोचन
करहुसुरभिगलफंद उठहुभोजनकरहुसिसुवोलितना
घर गरहुजननिप्रगलितदेहुरूपनिजवंद विधानिदधिमथन
करहिंमधुरिधुनिश्रवनंसुनिकृष्णतुनाविमलजसुव
रतिआनंद सूरहीनामउधारनजगजीवनितुनति
कौंगुनदेषियकितमयोछंद॥३८२॥विलावल॥ कौं
नपरीनंदलालहिवानि प्रातसमैंजागनकीवरीयांसो
वतहैंपीतांवरतानि मातायसोदाकवकीठाढीदधिऔ
दनभोजननिलियापानि तुमसोहनजीवनधनमेरे

मुरलीनेकमुनावहुजान संगसषाव्रजबालघेरेसवम
षवनधेनुचरावनजानि इहमुनिउठेअचंभनंदनंदनेवें
सीवेनुमंगगौंमदुआनि जननीकहतिलेहुमोहनदं ″म ने
धिओरनआनौघनसांनि सूरप्रभुवलिचरनारविंद
कीजिहिंलगिलालजगेहितमानि ३८३ ॥रामकली॥
भोजनकरतगोकुलराइ पंचअंमृतविविधषटविधि
रसहचिकियेहितभाइ गोपग्वालसषाहनेसंगलि
येनिकटवुलाइ हासिमुषननदेतमोहनआपुलेतछ
उाइ देषहिउपनंदकौतिकआनदउरनसमाइ निरषि
प्रभुकीप्रगटलीलाजननिलेतिमलाइ नंदनंदनीरसी
लेअचैउठेअघाइ सूरजूठिनभक्तिपाईदेवरहेलुभाइ
३८४ ॥अथअघासुरवध॥धनासिरी॥ नंदसुतलाडिले
होसवव्रजजीवनप्रान वारवारमातावहैजागोस्याम
सुजान १ जेमुमतिलेतिवलाइमोहनभयोउठोकन्हाई
संगलियेसवसषाद्वारठाढेवलभाई सुंदरवदनदिषा
इयेहरोनैननकौताप नैनकमलमुषधोइयेकछुमैरे
कलेउआप २ माषनरोटीलेहुसरसदधिरेनिजमाइ
यौ षटरसकेमिष्टानसोईजिवहुतचिआयौ मोषे
लीजेमांगिकेजोइजोइभावेतोहि संगजेवहुवलरा
मतमनरुचिउपजाहुमोहि ३ तवहंसिचितयेस्यामसज
नेवदनउघारी मानहुपेनिधिमथतप्रेमप्रतिचंदरउ

सूसा
204

न

रउजियारो सखासु[न]नदेखन चले मानहु नैन चकोर
जुगल कमल जनो इंदु पर वैठि रहे अति भोर ४ नवउठि
आ कान्ह मातु जलवदन पखारो ५ वोलि उठे वलरा
म स्याम करत उठे सवारो दाऊ जू कहि हंस मिले वाहगा
ही वैठाए माखन रोटी सद दही जेंवत रुचि उपजाइ
५ जल अचयो मुख धोइ उठे वल मोहन भाई गाइले
ई सव घेरि चले वन कुं आरव नाई टेर सुनत वलराम श्री
आए वालक धाइ लै आये सव घेरि घरनें वछरा गा
इ सखनि कान्ह सो कही आजु वृंदावन जैये जमुना
तट विनु वडुत सुरभिगन तहां चरैये ग्वाल गाइ सव
लै गए वृंदावन समुहाइ अति ही सघन वन देखिकें
को३ हरा खि उठे सव गाइ ७ कोऊ टेरत [त]हां कि सुरभिगन
जोरि चलावत कोऊ हेरि देत परस्पर स्याम सिखावत
न अंतरजामी कहत जिय हमहि सिखावन टेरि स्या
म कहत अव कोमई पुनि धौं लाजै घेरि ८ कोऊ मुर
ली कोऊ वेनु शब्द सिंगी कोऊ पूरे कृस्न क्रियो मन ध्यां
न असुर रच वस्यो अधूरें वालक वछरा निरखि हौं एक
वार लै जाऊ कछु वजन नाऊ अपुन पौ अव लौं रह्यौ सुभा
उ ९ असुर कुल हिंसा धारि धरनि कौं भार उतारौं कप
ट रूप राखि रह्यौ दनुज इहि नेरत पछारौं गिरि समान ध
तनु रि अगम [illegible] वे ह्यौ वदन पसारि सुख भीतर वन घन नदी

मैयाछरद्कुरिभारि पैठिगएसबग्वालधेनुवछरासब
लीनें देषिमायावस्तनूलिहरे त्रिन[illegible]मकुनकीने
कहनलगेसबअपुनमैंसुरभीचरेअघारि मानहुपर्व
तकंदरामुषसबगएसमार ११ सबमुषगएसमारि
असुरसबचालउसकोसैं अंधकारइमिभयोमनैंनि
सि[illegible]वादरजोरयौं अतिहिउरेअकुलाइकैंग्वालवछ
सबगारि त्राहित्राहिसबकरिउठेपरेकहांहमआइ १२
धारधीरकहिकान्हअसुरयहउंदलानांही अनजान
तसबपरेअघामुषभीतरमांहा जिउत्यागोयहसुन
नहीअबकोसकैउवारि वानेदूनीदेहधरिनवअसु
रनसकोसम्हारि १३ सबकरोअघानुअघासुरटेरि
पुकारयौं रहोअधरदोऊचापिवुद्धिवलसुरतिसं
म्हो बुझवारिसिरफोरिनिकटसेगोकुलराइ वाहिर
आवतिनिकसिकैमैवारिलियोसहाइ १४ वालकवा
हिरावछराधेनुसवैंमनअतिहिसकानें अंधकारमि
टिगयोदेषिजहंतहंअकुलाने आएवाहिरनिकसि
कैंमनसबकियोहुलास हमआग्यानकनउरमुहैंका
न्हसदाहमपास १५ धन्यकान्हधनिनंदधन्यजसु
मतिमहतारी धनिलियोअवतारकोषिधनिजंहेह
दइनारी गिरिसमाननअतिअगमपन्नगकोअनु
हारी तमदेषनपलएकमैंमारयोदनुजपचारि १६

सूसा
२०८

हरिहंसिवोलिवेनसंगज्योतुमनहिहोते तुमसब
कियोसहाइ भयोनवकाजमोतें हमहूतुमहूमि
लिवेठिकैंवनभोजनकैरेजाइ वंसीवटभोजनव
हुतजमुनतटदियोपठाइ १७ ग्वालपरमसुषपा
इकैदिसुषकरतप्रसंसा कहावहुतजौभएसपू
तोइकैवंसा चढिविमानसुरदेषहीगगनरहे
भरिछाइ जैजैधुनिनभकरतहैंहरषिपुहपवरषा
इ १८ वृह्मसुनीयहवातअपरघरघरनिकहांनी
गोकुललीन्होजन्मकैतुयहमैनहिजांनी देषौंइ
नकौषोजुलैसोचुपरौंमनमांहि सूरस्यामग्वालि
निलियेंवंसीवटकीछांह १९ ॥अथवृह्मावत्सवाल
हंसंत कहरन॥धनासिरी॥ भएनदलालवेठिनकछाहकी
वंसीवटअतिसुषदअतदुमषासचहूहैं वेठिग
एसुषपाइकैंग्वालवाललियेसाथ अतिआनंद
पुलकितभयोगावतहैंहरिगाय १ अहिरलियेम
धुछाककुरतवृंदावनआए विंजनसहसप्रकार
यसोदावनेपठाए स्यामकहीवनचलनहोमाता
सोंसमुझाइ उतनेंवेआएसवैंदेषनहोसुषपाइ
२ कान्हदेषिमधुछाकपुलकिअंगअंगवढायौं
हरिहंसिवोलेतवैप्रेमसौंजननि[illegible]पठायो जाके
पहुचेआनिकैंनलोकन्योसंजोग वारवारकहिस

षनसों आजुकरैंसुषुभोगु ३ वनभोजीविधिकरतकन्है
पलकौ पातमंगाए तोरिपानपलाससरसदोना
वहुत्याए भांतिभांतिभोजनधरेदधिलवनामिष्टा
न ४ वनघरलुएमगाइकैं लागेतचिसोषान ७ वन
भोजननहिंकरतसंगमिलिसंगसुदामा स्यामकुं
आरप्रेमनमहमंगलअनश्रीदामा कान्हसवैमि
लिषातहैंलेलेकोरछंडाइ औरनदेतवुलाकैंउ
हाकिआपुमुषनाइ ५ व्रह्मादेषिविचारिसषिकों
नईचलाई मुहिपठयोजिहिसोपिताहिकहिकैहौं
जाई देषौंधौंयहकौतुहैंवालवत्सहरिलेउं व्रह्म
लोकलेजाउंगोंयहवुधिकरिदुषदेउं अंतरजामी
नाथ तुरतमनकीविधिजांनी वालकैंछिरियेघरैधेनु
वनकहूंहिरांनी जहांतहांवनढूंढिकैंफिरिआएहरि
पास सषासवनिवितारिकैंआपुनुमारौदास ७
हरिलेवालकवत्सव्रह्मलोकहिपहुचायो फिरिआ
वेजौकान्हकहूंकोइनाहिंवनायो प्रभुनवहांजाना
राहिविधिलैगयोचुराइ जौजिहिरंगजिहिरूपकोवा
लकवत्समगाइ ८ तौतैंकीनेओरव्रह्मइंदनालउ
पायो आपनोकरितिहिंजानिक्रियोताकोमनभायो
उद्धारनमांनसमर्थएमनहरिकीनोध्यान अनजा
नेहमयहकरानएनचेभगवांन ९ वहेवुधिवहेप्रत्र

सू॰सा
२०८

तिवहैंपुत्रछतनसवके वहैनाउवहैमाउधेनुवछरा
मिलिरवकि स्यामकह्यासवसखनिसोंल्यावऊगो
धनघेरि संध्याको आगमनभयोवृजजनहाकौघि
॥ १० सुनतग्वाललैधेनुचलेवृजवंदावनतें आ
नहिवालक जांनिउरसेसवग्वालेमनतें मध्यकियों
लेस्यामकोंसखाभएचहुंपास वत्सधेनुआगें
दियेआवतकरतविलास ११ वाजतवेनुविषानुस
वैअपनेरंगगावत मधुरीधुनिगोरंभवरनपगधूरि
उडावत मोरमुकटसिरसोहईवनमालाकटिपीत
गोरजमुखपरराजई मनहुचंदकनसीत १२ देषि
हरषिवृजनारिस्यामपरतनमनवारति इकइकरूप
निहारिरहीमेटतिचितआरति कहाकहैंछविआ
जकीमुखमंडितमुषधूरि मानहुपूरनचंद्रमाकहूंर
हौंआपूरि १३ गोकुलपहुंचेजाइगाइअपनेघर
वालवं॰
गोसुतओनरनारिमिलीअतिलाइहेनगर प्रेम
सहितवेमिलनतहैंजेउपजेहैंआज जसुमतिमिलिसु
तसोंकहतिरेनिकहतकिहिंकाज १४ मेघरआवन
कहेसखासंगकोउनआवें देषतवनअतिआगम
उरैवेमुहिडरपावें वारवारउरलाइकैलेवलाइयाछि
नाइ काल्हिहिनेवेऊसवेल्यावहिगाइचराइ १५
पहसुनिकेहरिहंसेकाल्हिमेरीजाइवलेया मुखल

गामुहिवकुतनुरतकहीदेवछुमैया माखनदीनोहाथ
केयहतवलोमुखमाऊ नातोजलुहैंधामकौतनग
कनेंलसौन्हाऊ २६ जवजसुमतिगहिवांहतुरतही
रिलेअन्हवाए रोहिनिकाजेज्योनारस्यामवलिरा
मवुलाए जेंवतअतिरुचिपावहीपरसतिमाताहे
त जेंरुउठेअचवनलियोदुहुनरवारालैन २७ स्या
मउनीदेंजानिमातारचिसोसेजविछायो नाय
रयोढेलालुअतिहीमनहरषवढायों अंगमर्द
नविधिगर्वहतअरतननलागीवार सूरदासप्रभुके
चरितपावनकोउनपार २८६ ॥नट॥ विधिमनही
मनसोचुपरो गोकुलकौरचनासवदेषतअति
जियमांझउरो मेविरंचिविरचौजुगमेरोंयहकहि
गर्ववढायो व्रजनरनारिवालवालकहिकौने
ठाटरचायो वृंदावनवटसघनछांहतर मोहन
सवैवुलायो सषासंगमिलिकरिवनभेजाविर
धिमनभ्रमुउपजायो धेनुरहीवनभूलिकहूं
हिवालकभ्रमतनपाए वालकवत्सहरेचतुरानन
वृह्मलोकपहुचाए पानेस्यामअतिहीअकुलाने
तुरततहांउठिधाए सूरदासप्रभुगर्वविनासनन
वकृतफेरिवनाए २८७ नट नवहरिहस्योविधि
कोगर्व वछवालकलैगयोधरिनुरतकीनेसर्व

सू·सा
२१२

ब्रह्मलोक दुराइ आयो चारि न देषन आप बछ बालकदे
खिकै मन करन पछितान तव गयो विधि [illegible] लोक
अपने हि खिकै फिरि आइ जानि जिय अवतारु एरन
पचो पाइ नुधाइ वहुन मै अपराध कीने छमा कीजै
नाथ जानि मैं यह नही कीनी जो सिसु करि रह्यौ माथ व
छ बालक आनि सन्मुख सरन सरन पुकारि सूर प्रभु के
चरण गहि करि निकट राखु मुरारि ३९८ ॥ जैतसिरी ॥
वदन विरंचि विशेष सुन्दर व्रजवासिन के श्री हरि जिन
के भेस सुन्दर व्रजवासिन के जोति रूप जगधाम जिन के
गुन जगतन पिता जगदीस जोग जग्य जप तप व्रत दुर्लभ
सो प्रभु गैया गोकुल ईस रचना करी रोम वि[illegible]रार कोटिनन को
टि कोटि ब्रह्मंड सो लीनो अव छेरा गिज सोदा अपने
भाइ भुजदंड जाके उदर लोक कै जल थल पंच तत्व चोदा
नि सो वालक द्वै हलन पलना जसुमति गृह आनि छि
ति मिति त्रिपद करी करनो मैं वलि छलि दियो पतार दे
हरी उलंघि सकति नहि सो अव षेलन नंद दुआर अ
नुदिनु सुरन पंचसुधा रस चिंतामनि सुरधेनु सोतजि
जसुमति को पय पिवत भक्तन के सुषदैन रवि ससि कोटि
कला अवलोकित त्रिविधि ताप छै जाइ सो अंजन करि
लेसुत की चछु आंजति जसुमति माइ दाता भक्ता वृती
हर्ता विश्वंभर जग जानि ताहि लाइ माखन की चोरी वां

षेउसुमतिरानि वेदविदांनउपनिषत श्रपैसोमहु
मुक्षानांहि गोपीग्वालनकेमंडलमेंहांसिहंसिजूठन
षांहि कमलानाइकत्रिभुवनदाइकदुषसुषजिनके
हाथ कांधकमरियाहाथलकुटियाविहरनवनगो
साथ भक्तवछलबिलअंतरजामारहेसकलभरिपू
रि ३८८ ॥गौड़मलार॥ आदिसनातनहरिअविनासी
सदानिरंतरघटघटवासी पूरनब्रह्मपुरानवषानो च
तुराननमेंअंनुगोंजांन्यो गुनगनआगमनिगमनपा
वें नाहिजसोदागोदखिलावें एकनिरंतरध्यावेअं
ध्यानी पुरुषपुरातनहेनिर्वानी जपतपसंजमध्यान
नआवे सोईनंदकेआंगनध्याए लोचनश्रवनन
रसनानासा नाघरपाननतनुपरगासा विस्वभरन
निजनामुकहावें घरघरगोरसजाइचुरावें सुकसार
दसेकरहिविचारा नारदसेपावहिनहिपारा अवरन
वरनसुरतिनहिधारे सोगोपिनुकेवरनुनिहारे जरा
मरनतेंरहितअमाया मातपितासुतबंधुनजायाग्या
नरूपहूदेमैबोलें सोवछरनुकेपाछेडोले धरजल
अनिलअनलनभछाया पंचतत्वमिलिजकउपा
या कानुउरैजाकोउरभारी सोऊषलवांध्योमहता
री मायाप्रगटसकलजगमोहे कारनकरनकेरसोसो
हें ब्रह्मादिकतिहिंपाहनपावें सोगोकुलमेंगाइचरा

सात्रजीक वर्षाहे विद्धारे पतित श्रीमन मई

वै अच्युतरहैसदाजलसाई परमानंदपरमसुषदाई
लोकरचैराषैश्रुतिपारैं सोग्वालिनिसंगलीलाधारैं
सुनअतीतअविगतिनजनावैं जसअपारश्रुतिपार
नपावैं जाकीमहिमाकहतनआवै सोगोपीनिसि
रासरमावै जाकीमहिमालषैनकोई निर्गुनसगु
नधरैवपुदोई चौदहभुवनपलकमेंटारैं सोवन
वीथिनकुटीसवारैं चरनकमलनितरमापलोवै चा
हतनैककैनैनभरिजोवै अगमअगोचरलीलाधारी
सोराधावसकुंजविहारी भागवडेजुसकलव्रजवासी
जिनकेसंगरमैंअविनासी सूरसुजसुकहिकहावषा
नैं गोविंदकीगतिगोविंदजानैं ४०० ॥लीलासंपूर्ण॥
सारंग॥ कह्यौगोपालचरनहैगैसुनहमसवबैठिक
लेऊकाजै सीतलछांहवृक्षकीसुंदर निर्मलजल
जमुनाकोपीजै भोजनकरनसबाइककैवोलैवछर
कनहूंदूरिगए जदुपतिकहौघेरिहौंआनौं तुमजेवहु
निहचंतभए चतुराननवछरालेगोयो फिरिमाधो
आएउहिंठाउं वालकवछरहेलोकैस्वरवारवारटेरन
लैनाउं जान्योछललव्रह्मामनमोहनगोपीगाइवछ
नदुषपैहैं तजिहैंप्रानसवैमिलिसुनकोमिथ्वेमहह
जोआजुनऐहैं वाहीभांतिवदनरूपवेसइ सिसुसव
अगिवछयाछैं व्रजवालककर
रचेनंदसुतआन

तेंमिलेमधुरसुरगान सूरप्रीतिअधिकताहतेंकरतीवृ
जवनितानाअनधेनु सूरजप्रभुअच्युतवृजमंगलघरघ
रलागेसुबदेन ८०१ ॥मलार॥ बिनवेचतुराननकरजो
रे तुवप्रतापजानोनहिप्रभुजूकरिअस्तुतिलटछोरे
अपराधीमतिहीननाथमूहौंचूकपरीनिजभोरे म
नक्रतदोषछमौनाकहनामेज्योंमूपरसतओरे जुगजु
गविरदुयैहैचलिआयोसरनकहतुअवहोरे सूरदासप्र
भुपछिलेलेखेअवनवनेमुखमोरे ८०२ ॥धनासिरी
माधौजूजोजनतेंबिगरै सुनकृपालकरुनामैकवहू
प्रभुनहिचितधरै ज्योंसिसुजननीजठरअंतरगतिसत
अपराधकरै नऊननयनमोबिषेबिचितविगसित
अंगभरै द्विजरसमारलितुविन हौतिजवनवरिसब्रा
हिकरै छमिछतछोमछार.मधुमिश्रितमुखसमायस
चरै निजतनव्याधिविषमतनव्याकुलजोजनताज
रै बुद्धिवलहितउपचारजतनकरिजियनदोषुसच
रैं जदपिविटपजरहतनहेनकरिवरकुदारपकरै न
दपिसुभाउसुसीलसुसीतलरिपुतनपातापुहरे छर
विध्वंसहलतनकृपाकरिरवेतवीजुसचरै सोसऩमुख
सुखसहितसनोगुनसलिवकुकारनिपरै कारनकरन
अनंतअजितकहिहिविधचरनपरै यहकलिकाल
चलतनहिमोपैसूरसरनउवरै ८०३ ॥सारंग॥ मा
धौमोहिकरौवृंदावनरेनु जिनचाननिडोलतनंदनं

सू॰सा
२११

दनदिनश्रीचारतधेनु ऊहाभयोयहदेहदेवधरिओ तऊंचौपऊपायोग्रेनु सबजीवनिलेउदरमांग्रश्रु महाश्रीलेजलऊरतहैसेन हमतेधन्यसदायेश्रेनु डुमवालऊरस विषान्यनवेनु सूरस्यामजिनऊेसंग ऊेलतऊंसिवोलनमथिपियतहिस्रेनु ४०४ ॥सारंग॥ ऊसेवसियेव्रजऊीवाथिन ग्वालनिऊेपनवारेपुनि उदरभरैयेसाथिनि पेड़ेऊेसवव्रछविराजत छायापरमपुनीतन ऊुंजऊुंजप्रतिलोटिलोटिरतिरजलागे रंगरीतन निसदिनुनिरथिजसोदानंदनअऊजमुनाजलगीतन परसतसूरहोततनपावनदरसनऊरतऊतीतन ४०५ धनियहवृंदावनऊीरेनु नंदकिसोरचराईगैयांमुषहिवजायोवेनु मनमोहनऊोध्यानधरेजोअतिसुषपावतचेनु चलतऊहामनुवसनुपुरातनजहांलेनुनहिदेनु इहांरहौजहंजूठिनपावौंव्रजवसीऊेग्रेनु सूरदासद्यांऊीसरवरनहिऊल्पव्रक्षसुरधेनु ४०६ ॥वछहरिवालऊवछहरनलीला॥ धनासिरी॥ व्रजऊीलीलादेषिग्याननिधिभोगयो त्रिभुवननारऊुआनिभयोगोऊुलअवनारी षेलतग्वालनिसंगरंगआनंदमुरारी घरघरतेछाऊेंचलीमानसरोवरतीर नंदनंदनसंगचले वालऊसषाअहार १ अंजनसऊलसमार सषानिवालऊसषाअहार

कें

केआगेराषे षाटिमीठे स्वादसवैरसलैलैचाषे रुचिसों
जेंवनग्वालसवलेलै आपुनषात भोजनकोसवस्वा
दलैकहतपरस्परवात २ देषनगनगंधर्वसकलसुर
पुरकेवासी आपुसवैवेकहतहंसनयेईअविनासी
देषिसवैअचरजभयोकह्योब्रह्मासोंजाइ कोअवता
साकहतसोंग्वालनिसंगसोषाइ ३ यहसुनिब्रह्माच
ल्योतुरतवृंदावनआयो देषिसरोवरसलिलकमल
नि हिमध्यसुहायो परमसुभगजमुनावहै तहवहै
त्रिविधिसमीर पुहपलताद्रुमदेषिकैंचलितभयो
मतिधीर ४ अतिरमनीककदंवछांहरुचिपरमसु
हाई राजतमोहनमध्यअवलिवालककीछविछाई पाँ
प्रेमभगनकेपरसपरभोजनकरतगुपाल ल्यावहु
जोसुनहेरिकैंप्रभुपठयेद्वैग्वाल ५ वनउपवनसव
ढूंढिसषाहारिफिरिआए वछराभयेअदषकहूं
षोजतनहिपाए सवेसषावैठेरहौ मैंदेषौंषोंजा
इ वछहरनलियजांनिप्रभुआपुगएवहराइ ६
जवगोविंदुगयेदूरिवालकनहरौविधातालेहैंगु
रतमंगाइआपुविहैंजगताता ब्रह्मलोकब्रह्मागयो
लैवालकवछसंग प्रभुकीलीलागमिनहाक्रीयो
गर्वअतिअंग ७ नवचिंतामतिचितैअंगाइकुबुध्य
विचारी वालकएवनाइरचेवेहीउनहारी करत

सूरसा
212

२१२ कुलाहल सब मए वृजघर अपने धाइ आनि आदर करि
करि लिये अपनी अपनी माइ ८ वृला कियो विचार
जाइ वृज गोकुल देषौं काहि है सो कुसंताप जाइ पितु मा
नही पेषौं आए तहं विधना चले घर घर देष्यो आइ सं
ध्या समै होत कौतूहल जहं तहं दुहिये गाइ ९ यह गो
कुल कि धौं और कि धौं मैं हो भ्रम भूल्यो यह अविनास
होइ ग्यान मेरे भ्रम हल्यो अंतरजामी जानि के धौं हरेव
छले आइ जगत पिता मैं संभ्रम्यो गए लोक फिरि धाइ
१० देषौ जाइ जगाइ बाल गो सुत जहं राषे विधि मन च
कृत भए बहुरौं वृज कौं अभिलाषे छिन भूतल छिन
लोक मैं छिन आवैं छिन जांइ ऐसें ही करत बरषादि
न वात्यो चकित भए विधि पाइ ११ तब हरि प्रगट ग्यान
चित मैं जब आयो घरूधरू मेरी बुद्धि कौ कहम सो वेत
वटायो लै वे गो सुत गोपाल हि सरन गयौ द्वै साधु चा
रौ मुष अस्तुति करन छमो मोहि अपराध १२ अन
जानत यह करी तुम हि सो है वरि [illegible] आई जे मेरे अप
राध छमहु त्रिभुवन के राई ज्यौं बालक अपराध सत
जननी लेत सम्हारि सरन गए राषत सदा और न स
कला विसारि १३ जो रउदित पद्योत नाहि क्यों तिमि
र नसावै दीपक बहुत प्रकास तरनि सम क्यों कह पा
वै मैं वृह्मा इक लोक कौ ज्यौं गूलर फल जीव प्रभु तुम्ह
रे रूप रोम पर कोरि वृह्म अस साव १४ मिथ्या यह सं

साल्हऔर मिथ्यायह माया । मिथ्या है यह देह कहो क्यों
हरि बिसराया तुम बिनु जानो जीव सब उतपति प्रले
समाहि सरन मोहि प्रभु राखिये चरन कमल की छा
ह १५ करो मोहि ब्रज रेनु देह वृंदावन वासा मांगोय
है साऊं और नहि मेरे आसा जोई भावे सोई करहु लता
सलिल दुम गेहु ग्वाल गाइ को भत्तु करो मन हुलसत्प
व्रत ... एहु १६ जो दासन नन गनाग अमरपति हू नहि पा
यो सो जन तुगगए वाति अंत मो हू नदि षायो य
ह ब्रज पारस नित्य है मैं अब समुझि आई वृंदावन रज
व्हे रहों मोहि न लोक सुहाइ १७ मांगत वार वार मेमे
पो बग्वालनि कोपाऊं आप लियो कछु जानि मन ल
हि उदर पुराऊं अब मेरे निज ध्यान यहु रहे जू दिन धार
और विधाता को जिये मे नहि छांडो पार १८ तब बो
ले प्रभु आपु वचन अब मेरी मानो और काहि विधि
करौं तुम हितें कौन सयानो तुम ग्याता अमधर्म के
तुम तें सब संसार मेरी माया अति गम कोउन पावे पा
र १९ श्री मुख बानी कहत विलंब अब ने कुन ... व
हु ब्रज पारस मीं करहु देह के पापन सावहु तुरत ...
जो उकहि लोक कों विधि कानी मनहारि बूझा कारि अ
स्तुति चले हरि दीनो उनाहार २० धनि वछ राध
नि वाल कजिन हितें दासन पायो उर मेरो धो नि भैयो

सू०सा

२१३

सुमग्मा लापहिरायो धनिजसुमति जिनवसह्रियो अ
विनासी अवतार धन्यगोपीजिनकेसदनमाखनुखा
नमुरारि २१ मथुराआदिअनादिहैदेहधरिआपुन
आयो धनिदेवैवसुदेवपुत्रनुममांगेपाए चारिव
दनमें नहक्रहेंसहसाननननहिजान गाइचारावतग्वा
लसंगनरतनंदनीआन २२ जोगीजनअवराधि
धिरतज्ञिहिध्यानलगाए ते वृजवासिनुसंगधिरतअ
निद्रमवदारो वृंदावनवृजकोमहतुकोपैवरनोजा
इ चतुराननपगापरसिकेलोकगयोसुखुपाइ २३
हरिलीलाअवतारपारसारदनहिपावे सतगुनअ
पाप्रतापकछुकतातेकहिआवे सूरदासकैसेंकहै
महापतितअवतार सेससहसमुखजपतुहैसोऊ
नपावेपार २४ ४०७ ॥सोरठि॥ गोविंदचलतदेखि
यतनीके मध्यगुपालमंडलीराजत काधेंधारलियें
सीके वछरावृंदघेरिआगेंकरिजनजनसृंगवजाए
जानौवनकमलसरोवरतजिकें मधुपउमडिआए
वृंदावनप्रवेशअघमाऱ्यो वालकजसुमतितेरो स
रस्यामयहकहतिजसोदाचितेवदनसुतकेरो ४०८
॥विलावल॥ आजुजसोदाजाइकन्हैयामहादुष्टइक
माऱ्यो पन्नगरूपगिलेसिसुगोसुतइहिसववसाजु
उवाऱ्यो गिरिकंदरासमानभयोवउ अवअघवदन
पसाऱ्यो निदरिगुपालुपैठिमुखभीतरखंडखंडकरिडा

स्यौं जाकेवलहमवरननकावै सकलभुवनत्रनचारी जा
नेसवैहमैजसेरआगेंयहकहूंअैनाहिहास्यौं वरषगए
सवकहनमहारसोंअवाहिअघासुरमास्यौं सूरदास
प्रभुकीयहलीलाकोकोमूलइनपास्यौं ४०९ ॥रागनट॥
जसुमतिसुनिसुनिचकितभई मेंवरजतिवनजानुकन्हैया
याकाधौंकोरदई कहांकहांतेंउवस्यौमोहनकोहूंननकु
उरैन आपुनकहानकसौबावैं सुनहुवनहूमेंघात मे
रीकहौसुनैंजोश्रवननिकहतिजसोदाबाहति सूरस्याम
कह्यौवनहिनजैहौंयहकहिमनमनराहति ४१० ॥नट॥
हरिकीलीलाकहतनआवैं कोटिब्रह्मंडछनकमेंनासैछि
नहीमेंउपजावैं नालकवछब्रह्महरिलेगयोनाकोगर्वनि
वावैं ऐसोपुरिषारथसुनिजसुमतिबाहतिफिरियछि
तावैं ।सिवसनकादिअंतुनपावैंभक्तवछलकहवावैं सू
रदासप्रभुगोकुलमेंसोघरघरगाइचरावैं ४११ ॥गोरी॥ आ
घामारिआएनदलालु व्रजजुवतीसुनिकेउठिधाइघर
घरफिरेंनकरेंनसवग्वाल निरषतईवदनचकितभईसुंद
रीमनहीमनयहकहिअनुमानु कहतिपरस्परसत्यवा
नयहकेमकौरइनकीसरआन येईहैरतिपतिकेमोहन
येईहैंहमरेपतिप्रान सूरस्यामजगनीमनमोहनवारवा
रमागतकछुदान ४१२ ॥गोरी॥ मागिलेइजोभावैप्यारे
वहुतभातिमेवासवमेरे ओषटरसपाकारहैंन्यारे स

सु.सा
२१८
२५

वैं जोगिराषति हितनु म्हरे मैं जानति तु मवानी तुरत मथो
माषन दधि आछेरा षाउदेहु सो आनि माषनु दधि मोहि
लागत प्यारो ओर न भावै मोहि सूरजननि माषन दधि
दोनों वात हंसत मुष जोहि ४१३ ॥चकई औ राधे लिवो॥
विलावल दे मैया मोरा चकडोरा जाउ लेहु आरे पर राषे का
ल्हि मोल लै राषे कोरी लै आए हंसि स्याम तुरत ही दे षिर
हैं गगन गवहु डोरा मैया विना और को ल्यावै वारवार हरि क
रत निहोरा वोलि लिये सव सषा संग के षेलत कान्ह नं
द को पोरा तैसेई हरि तैसेई सव वालक कर भौंरा चकरि
नि की जोरा देषति जननि यसोदा यह सुष विहसति वार
वार मुष मोरा सूरजननि दास प्रभु हंसि हंसि षेलत व्रज
वनिता डारति त्रिन तोरी ४१४ ॥कानरो॥ मेरे हिय परे मां
रुलगे मन मोहन लै गयो चोरी अवही इह मारग है नि
कसे छवि निरषति त्रन तोरी मोर मुकट श्रवननि मनि
कुंडल उर वनमाल पिछोरी दसन चमक अधरन अरु
नाई देषति परी ठगौरी व्रज लरिकनि संग षेलत डोलत
हाथ लिये भौरन चकडोरी सूर स्याम चितवत गए मोतन
तनु मनु लियो अजोरी ४१५ ॥टोडी॥ नवनी मेरे ज्यो न हि
रहि सकतु जिन देषो नित हीं वह मूरति नैन नि तन लागो
रहतु ग्वाल वाल सव संग लगाए षेलत मैं करी भाव च
लतु उर छिमस्यो मेरो मनु नव मैं कर छटकत चकडोरि

हलतु अबमेकहाकरौमेरासजनीसुरतिहानितबदनुदहतु
सूरस्याममेरोचितहरिलीनोसकुचछांडिनोहासौंकह
ति ४२६ ॥राधाजीसोप्रथममिलापुश्रीकृष्णजीको॥टोडी॥
खेलनहरिनिकसेव्रजषोरि कटिकछनीपीतांबरओढेहा
थलियेभौराचकडोरि मोरमुकटकुंडलश्रवननिवरद
सनदमकदामिनिछविथोरि गयेस्यामरवितनयाकेत
टअंगलसितचंदनकीषोरि औचकहींदेषीतहंराधानेन
विसालभालदियेरोरी नीलवसनफरियाकटिपहिरेवेनी
पीठिरुरतिहकझोरि संगलरिकिनीचलीइतआवतिदिन
थोरीअतिछविनननजोरि सूरस्यामदेषतहींरीझेनेननै
नमिलिपरीठगोरि ४२७ ॥टोडी॥ बूझतस्यामकोनतूगो
री कहांरहतिकाकीहैवेटीदेषीनाहींकहूव्रजषोरी काहे
कोहमव्रजतनआवतिषेलतिरहतिआपनीपोरी सुन
तिरहतिश्रवननिनंदढोटाकरतुरहतुमाषनदधिचोरी
तुमरोकहाचोरिहमलैहैंषेलनचलौसंगमिलिजोरी सू
रदासप्रभुरसिकसिरोमनिवातनिभुरैराधिकागोरी ४२८
॥धनासिरी॥ प्रथमसनेहुनमनजान्यौ नैननैननकीनी
सववातैंगुपितप्रीतिसिसुताप्रगटान्यौं षेलनकवहु
हमारेआवहुनंदसदनव्रजगाउं द्वारआइटेरिमोहिली
जौकान्हहैमेरौनाउं जोकहियैघरदूरितुम्हारैवोलत
सुनियैटेरी तुमहीसौंहवृषभानववाकीप्रातसांझइक
फेर सूधीनिपटदेषियततुमकौंतातेंकरियतुसाथ

सू॰सा
२१५

सूरस्याम नागर उत नागरि राधा दोउ मिलि गाथ ४१८ ॥न
ट॥ सैन नि नागरी समुझाइ खरिक आवहु दोहनी लै यह
है मिस छल पाइ गाइ गिनती करन जैहैं मोहि लैन इराइ
बोल वचन प्रमान कीनो हृदय न आतुरताइ मन कवद
न सुठारि सुंदरि सकुचि मुख मुसिक्याइ स्याम प्यारी नै
न राचे अति विसाल चलाइ गुपित प्रीति न प्रगट कीनी
हृदे दुहनि छपाइ सूर प्रभु के वचन सुनि सुनि रही कुंअ
रि लजाइ ॥४२०॥सारंग॥ गई वृषभानसुता अपने घर
संग सखिनु सौं कहति चली यह को जैहै खेलन इन के दर
बडी वेर भई जमुना आए खीझति दैहै मैया वचन कह
ति मुख हृदे प्रेम दुख मन हरि लियो कन्हैया माता कहति
कहां हुति प्यारी कहां अवार लगाई सूरदास तब कहति
राधिका खरिक देखि मैं आई ४२१ ॥रामकली॥ नागरि म
न गई अरुझाइ अति विरह तन भई व्याकुल घर न नैक
सुहाइ स्याम सुंदर मदन मोहन मोहनी सी लाइ चित
चंचल कुंअरि राधा खान पान भुलाइ कबहुं विहसति
कबहुं विलपति कबहुं सकुचि लजाइ मात पितु कौं त्रा
स मानति मन बिना भई बाइ जननि सौं दोहनी मांगति
वेगि दे री माइ सूर प्रभु कौं खरिक मिलिहौं गए मोहि
बुलाइ ४२२ ॥धनासिरी॥ मोहि दोहनी दे री मैया खरि
क मांझ अब हौं हि आई आहिर दुहत सबै गैया ग्वाल दु

हतसबगाइहमारीअपनीजबदुहिलेत घरकोमो
हिलगिहेघरिकोमेंतूआवैजिनिहेन सोचतिच
लीकुंअरिघरहितेंघरिकोगईसमुहाइ नवदेघहुब
हमोहनमूरतिजिनमनुलियोचुराइ देषेजाइनहां
हरिनाहांचकृतभईसुकुमारि कबहुंइतकबहूउतओ
लतलागीप्रीतिष्ठुमारि नंदलियेंआवतहरिदेषे
तबपायोविश्राम सूरदासप्रभुअंतरजामीकीनेपूर
नकाम ४२३ ॥धनासिरी॥ नंदुगएघरिबेहरिलीने
देषातहांराधिकागोरी स्यामबुलाइलइनहांची
न्हे महरिकहेंहोंघेलौतुमदोऊ दूरिकहूंजिनिजैहो
गनतीकरतग्वालगोइतुकीमुहिनियरेतुमरेहो सु
निबेटीवृषभानमहरकीकान्हहिलियेषिलाइ
सूरस्यामकोदेषेरेहोंमोरेजिनिकोऊगाइ ४२४
॥नट॥ नंदबाबाकीबातसुनोहरि मोहिछांडिकरि
कहुंजाउगेल्याउंगीतुमकोधरि भलीभईतुम्हेसौंप
गएमुहिजाननदेहौंतुमको बांहतुम्हारीनेकुन
छांडौंमहरिषीझिहेंहमको मेरीबांहछांडिदेरा
धा करतउपरपट घोतें सूरस्याम नागरनागरि
सोंकरतप्रेमकीबातें ४२५ ॥धनासिरी॥ बातनिल
इराधालाइ चलहुजैयेविपिनिवृंदाबनहतस्यामबु
धाइ जबजहांतनभेषु रीतहांतुमहोजाइ नेकहु
धा

नहिं कोऊ अंत निगम भेद न पाइ जुवपरसत नैं घात मे
रेजाम दंदगं वाइ चतुरनागरि हंसा रही सुनि चंद्रवदन
नवाइ मदनमोहन भाउ जान्यौं गगन मेघ छवाइ
स्यामस्यामा कुंजलीला सूर क्यौं कहै गाइ ४२६ ॥ अ
थ सुखविलास ॥ गौडमलार ॥ गगन गरजि घहराइ जुरी
घटा कारी पवन झकझोर चपला चमकि चहूं ओर सुव
न तन चितै नंद उर भारी कह्यौ वृषभान की कुंअरि
सौं बोलि कै राधिका कान्ह घर लिये जारी दोऊ घर जा
हु संग गगन भयो स्याम रंग कुंवर कर गहे वृषभान वा
री गए वन घन ओर नवल नंद किसोर नवल राधा नव
कुंज भारी अंग पुलकित भये मदन तन मन जये सूर प्र
भु स्याम स्यामा विहारी २४७ ॥ कमोद ॥ नयो नेहु नयो
मेहु नयो रस नवल कुंअर वृषभान किसोरी नयो पी
तांवर नई चूनरी नई नई बूंदनि भीजति गोरी नए कुं
ज अति पुंज नए द्रुम सुभग जमुन जल पवन हिलोरी
सूरदास प्रभु नवरसा विलसत नवल राधिका जोवन
भोरी ४२८ ॥ कान्हरौ ॥ नवगुपाल नवेली राधा नए
प्रेमरसपागे नवतरुवन विहार दोऊ जीउन आपु आपु
अनुरागे सोभित सिथिल वसन मनमोहन सुखवत
श्रमके वागे मानहुं वूहि मदन की ज्वाला वहुरि प्रचारन
लागे कवहुं वेरि अंग भुज धरि वैं पाकक पोल निदागे
अनिरस रासि कलुटावत सूरत लाल चलगे सभागे

मानऊं सूरकल्पद्रुमकी सी छिलैउनकीफलआगे नाहिचूक
नरा चितचोरभामिनी नासुखमें दोऊ पागे ४२९ ॥मलार॥
उतारहैनकुंवरनितें हाहा हरिमिलत होत हैं अंतनयहमन
ढिग्योविचार भुजावामपरकर छविलागति उपमा अंनुन
पार मनहुकमलदलमेंकमलमध्यतें यह अद्भुत आकार
कुंवरअंकपरसपरजनुजुगचंदकरत चितचार रसनव
सनभरि चापि चतुर अतिकरत अंगविस्तार गुनसागरअ
रु सागरनिधिमानन सुखक्यों हार सूरस्यामस्यामागौर
सरामिरी है नंदकुमार ४३० ॥कान्हरौ॥ नवलकिसोरनव
लनागरिया अपनी भुजास्याम भुजऊपरस्याम भुजा
अपनें उरधरिया क्रीडाकरततमालततनरस्यामा स्या
म उमगिरसभरिया यौंलपटाइरहे उरउरज्यों मरकत मनि
कंचनमेंजरिया उपमांकहि देउंकोलाइक मन्मथकोटि
वारनें करिया सूरदास बलिबलिजोरीपरनंदकुंअर वृष
भानकुंअरिया ॥गौरी॥ आजुमदनंदन रंगभरे विविधलो
चनविसाल दोऊ केमनमनचितहरे भामिनि मिलेपरम
सचुपायो मंगलप्रथमकरे करस्यौंकर उरजस्यौं कंचनज्यौं
अंबुजउरजधरे आलिंगनदैंअधरपानकरि खंजनखंज
लरे हरकरी मानु कियोनवभामिनि नवगहिपाइपरे
पुहुपमंजरी मुक्तामाला अंग अंग अनुरागभरे रचनासूर
रचीवृंदावन आनंदनाजकरे ४३२ ॥मरा॥ हरहंसि भामि
नीउरलाइ सुरतिअंतनागपालरा सेजानिआलसवराइ

सू॰सा
२१८

हरिबिप्यारी अंकभरिप्रियर हौ वेठलगाइ हावभावक्रटाक्ष
लोचनकमलाकेकसुभाइ देखिवालाअतिहिकोमलसुख
निरखिमुसक्याइ सूरप्रभुरतिपतिकेनाइकराधिकासुख
दाइ ४३३ ॥गौडमलार॥ नवलगुनिहिनवलवियानयौं
नेंदरासविचितनुमले प्रानपतिपियकोअधरधरोरी प्रा
नोरीति प्रानवंचनकरतनिरखिनागरिनैनचितुकसों
मोरी नवक्रामकेलिक्रमनायवंदचंदयचकोरचातिकस्यां
नियोरी सुनिसूरदासरसरासिरसवरासिकैचलीजमों
हरितिलकुहंसगोरी ४३४ ॥गूढ़ागवनगौरी॥ तुरतगए
नंदसदनकन्हाई अंकमदेराधाघरपठईवादर जहंतहं
दियेउआई प्यारीक्रासारी आपुनैलेपीतांबररा धाउर
लाई जौदेखैजसुमतिहरिओढैमनयहकहतिकहां धौं
पाई जननीनैननवहिलखिलीनेनवहिस्यामरहबुधि
उपाई सूरदासजसुमतिसुतसौंवहैपीतउढनियाकहां
गंवाई ४३५ ॥सारंग॥ पीतउढनियाकहांबिसारी यहं
तोलाल ढिगनिकीओरेहैं क्राहूकीसारी हौगोधनलैगए
योजमुनातटजहांहतीपनिहारी भीरभईसुरभीसववित
रामुरलीभलीसम्हारी हौंलैभज्योओरक्राहूकीसौम
लेगईहमारी सूरदासप्रभुभलीवनाईबलिजसुमतिम
हतारी ४३६ ॥धनासिरी॥ मैप्यारीमैंजानतुवाकौं पीतउ
ढनियाजोमेरिलिंगईलेआनोधरितांकौं हारक्रीमायाको
उनजानेआंधिधूरिसीदीनी लालढिगनक्रासारीतांकौं

पीतउरनियाकीनी पीतांवरलैजननिदिषायौलै
आमेनिहिपास सूरमनहिमनकहतिजसोदाननन
परावतगास ३३७ ॥धनासिरी॥ स्यामहिदेषिमहरि
मुसकानी पीतांम्बरकानेपरविसरोलालढिंगनिकी
सारीआनी औरनीआनिदिषाईमोकोतनहनिनुकी
सिषईवुद्धिगानी घरघरलैमेरोसनभरवतऐसीयेस
वदिनकीजानी हरिअंतरजामीरतिनागरजानिलईजे
ननीपहिचानी सूरनिरषिमुषसकुचिभगनेयालीला
कायहेसयानी ३३८ ॥कल्यान॥ सुंदरिगईगृहसमुहाई
दोहनीकरदूधलीनेजननिटेरिवुलाई प्रेमशनिनिचोल
हरिकौंकहौधरयोजुछपाई औरकिऔरेकहतिकछुमा
नामनमहिउराई कुंअरिकौमुकुंडीदिलागी।मेरोषिवेपाछ
नाई सूरतवव्रषभानघरनीराधिकाउरलाई ४३९ ॥कान
रो॥ जननीकहतिकहाभयोप्यारी अवहीषरिकगईतनी
केंआवतहीभईकौनविथारी एकविदि नियासंगमे
रेतीकारेषाईताहितहारी मोदेषतवहपरीधरनिमें
उरपीअपनेजियभारी स्यामवरनरकढोटाआयोयह
नहिजानतुकरनुकहारी कहतुसुन्यौवहनंदकौवारो क
छुपडिकेंवहतुरतहीझारी मेरोमनुभरिगयोत्रासतेंअ
वनीकौमुतिलागतमारी सूरदासअतिचतुरराधिकाय
हकहिसमुझाईमहतारी ५४० ॥गौडमलार॥ कुंअरिसौं
कहतिवृषभानघरनी नैकुनहिघररहतितोहितिननोत्र

हृतिरिसनिमोहिरहतिवनमईहरनी लरिकिनीसवनि
घरतोसानहीकोऊ निडरचलतनमचितैयोंनवैधरनी
व टीकरखवरटरीसांपसोऊवरीवानैमहततोहिलगीनि
जरनी लिखिमेटैकौनकरतारकैरेजोनसोईद्वैदैहौं
नहारकरनी सुतालईउरलाइननिरखिपछिनाईउ
रनिगईकुम्हिलाइसूरवरनी ४४१ ॥गौडमलार॥ मह
रवृषभानकीयहेकुमारी देवधामाकरनद्वारद्वारेयर
नपुत्रदेतीसरीयहेवारी मईवरससातकीसुभघरीजा
नकीप्यारीकुहुंभांतिकीवचीभारी कुंवरिदेखन्हवाइक
ईतनमुरहारवसनपहिराइनखछूवोहतिप्यारी जाति
जिनिघरिकूबोलिअपनेसदनयहसुनतहंसतिस्याम
नारी सूरप्रभुध्यानुधरिहरखिआनंदभरिगाउँघरिखिल
हौंइतिकारी ४४२ ॥आराधाजोजसोदागृहभवन॥

के ॥आसावरी॥ खेलनेंमिसकुंअरिराधिकानंदमहरकै

घरआईहौं सकुचसहितमधुरेकरवानीघरहोकुंअरक
न्हाईहौं सुनतस्यामकोकिलसमवानानिकसेअति
अतुराईहौं मातासोंकछुकरतकलहहरिसोडारयोवि
सराईहौं मैयारीतूंइनकोंचीन्हतिवारंवारवताईहौं
जमुनातीरकाल्हिमैंभूल्योवांहपकरिलैआईहौं आव
तिइहांतोहिसकुचतिहैमैदैसोहवुलाईहौं सूरदासप्रभु
ऐसेगुनआगरनागरिवहुतरिझाईहौं ४४३ ॥आ
मैनसैनसंभाषनुका

सावरी॥ कोजानेहरिकीचतुराई

तो प्यारी कौ उरन पति विदाई मनहीं मन दोऊ रही मगन भ
ए अति आनंद उर मैं न समाई करपद नष हरि भाव बतावत
ए कप्रान द्वै देह बनाई जननाइ दै प्रेम उपजावत कहति
कान्ह सौं लेहु बुलाई सूरस्याम गहि बांह राधिका ल्या
ए महरि बिहसि बेदाई ४४५ ॥सूही॥ देषि महरि मन
ही मुसिकांनी बोलि लई वृषभानि नंदरानी कुंअरि क
हति मधुरे मधु बानी ब्रज मैं तौ हि कहूं देषी कौन गाउं है
तेरौं भली करी कान्ह हि गहि ल्याई भूल्यौ तौ सुत मेरौ
नैन बिसाल बदन अति सुंदर देषत नाकौ छोटौ सूर
महर सबिता सौं बिनवति भली स्याम की जोटी ४४
५ ॥नट॥ नामु कहा है तेरौ प्यारी बेटी कौन महर की है
तू कहि सो कौन तेरी महतारी धन्य कोषि जिन तो कौं
राषेना धन्य घरी जिहिं तू अवतारी धन्य पिता माता ध
नि तेरी छबि निरषति हरि की महतारी मैं बेटी वृषभा
न महरि की मैया तुम कौं जानति जमुना तट बहु बार
मिलन भयौ तुम नाहिन पहिचानति ऐसी कहि वा कौ
मै जानौं वे तौ बडौ छिनारि महर बडौ लंगर सब दिन
कौं हंसति देति मुष गारि राधा बोलि उठी बाबा कछु तु
म सौं ढा[illegible] कौ ना ऐसें समरथ कब मैं देषे हंसि प्या ठौं
री उर लीना महरि कुंअरि सौं यह कहि भाषति आउ
करौं तेरी चोटी सूरदास हरषी नंदरानी कहति महरि
हम जोटी ४५६ ॥गौरी॥ जसुमति राधा कुंअरि सवा

सू॰सा
२२

रति वेंउवारश्री वेंतसी सबै प्रेमसहित निरवारति मांग
पारि वेनी हि संवारति गूंथी सुंदर भांति गोरे भाल बिंदु
वदन मनो इंदु प्रात रवि कांति सारी चीर नई फरिया
लै अपने हाथ बनाई अंचैल सौं मुख पोंछि अंग सब आ
पु हि लै पहिराई तिल चांवरी बतासे मेवा दियौ कुंआरि
का गोद सूर स्याम राधा तन चितवत जसुमति मन मन
मोद ४४७ ॥कल्यान॥ खेलो जाइ स्याम संग राधा यह
सुनि कुंआरि हरषमन कीनो मिटी जु अंतर बाधा जन
नी निरखि चकृत भई ठाढी दंपति रूप अगाधा देखति
भाउ दुहुनि कौ सोई जो चित करि अवराधा संग खेलत
दोउ घगरन लागे सोभा बढी उपाधा मनहु तडित घन
इंदु तरनि है बाल करत रस साधा सूरदास प्रभु कौन रच्यौ
विधि सोत नग्यो न नताधा ४४८ ॥केदारो॥ विधि कै आ
न विधि कीनो सो तु निरखि छवि सुखमानत न यास कल
मन रत पोतु रमा गोरी उर्वसी रति इंद्र विमौं समेत तू
ल दिनमनि कहा सारंग नाहि उपमा देत चरन कमलनि
हारि न छवि आजित देखें नो कि चित गुन महिमा ल
जानत धार राखन रोकि सूर आनि विरंचि विरचें भक्तनि
ज अवतार अचल केवल सबल देखै आधान सभल
सिंगार ४४९ ॥राधा गृह आवन॥ नट॥ राधे महरि सौं व
हि चली आनि खेलति रहौं प्यासे स्याम नम हि लि मिली

वोलि उठे गुपालु राधा सकुच जिय कतन राति में बुलाऊं
जहां आवति जननि जौं कतन उरति मैया जसोदा देखितो
कौं करति कितनो खेरु सुनत हरि की वात प्यारी रही
मुसकत नजोरु हंसा चला वृषभान तनया भई बहुत
अवार सूर प्रभु चितते टरत नांहि गई घर के द्वार ४५०
॥विहागरो॥ वूझति जननि कहां हुती प्यारी किनि ते
रे भाल तिलक रचि दीनो किहिं कच गूंथि मांग सिर
पारी लेखेति रही नंद के आंगन जसुमति कहा कुआरि
द्यां आरी तिल चावरी मोदक रिदीनी मेरि दई प्यारि न
वसारी मेरो नाउ वूझि वावा कौ तेरो वूहि दई हंसि गारी
मो तन चितें चितें ढोटा तन कछु सवि तानन गोद प
सारी यह सुनि कै वृषभान मुदित चित हंसि हंसि वू
झति वात दुलारी सूर सुनत रस सिंधु वढायो दंपति म
नमें यहै विचारी ४५१ ॥विलावल॥ मेरे आगे महरि ज
सोदा मैया री तुहि गारा दीनी वावा वान सवै मैं जा
नति वे जैसी निसा मैं चीन्हा तो कों कहि पुनि कहो वबा
कौं वडो धूतु वृषभानु नव मैं कहो ठग्यो कवनु म कौं
हंसि लागी लपटान मली कहति मेरी वेटा। लियो
आपनो दाउ जो मुहि कह्यो सवै गुन उनके हंसि हंसि
कहत सुभाउ मेरी प्रिरि वूझति राधा सों सुनत हंसति
सव नारि सूरदास वृषभान घरनि जसुमति कौं गाव

त्रिगोरि ४५२ ॥गौरी॥ कहत का कुंज नीसमुहाई जहां तहां डारे रहत खिलोना राधा जनि लेंआइ चुराइ सो हरि सबारे आवन लागी ४५३ ॥रामकली॥ सेंतति महरि खिलोना हरिके जानति टेव आपने सुत की रोवतु है विनु लरिके धरि चोगान गेंद मुरली धरि और भोंरा चकडोर प्रेम सहित ले ले धरि राखति हे सब एक ही ठो र श्रवनन सुनत अधिक रुचि उपजत हरि की वितियां जोरी ४५४ ॥गोरधनपूजाविचार॥रागबिलावल॥ नंद महर सों कहत जसोदा सुरपति की पूजा विसराइ जा की कृपा वसत व्रज भीतर जा के दीन्हे भई वडाइ जा की कृपा दूध दधि पूरन सहस मथानी मथति सदाइ जा की कृपा अन्न धन मेरें जा की कृपा नौ निधि आई जा की कृपा पुत्र भयो मेरे कुसल रहो वलराम कन्हाई सूर नंद सों कहत जसोदा दिन आयो अव करहु चढाई ४५५ ॥रागसूहा॥ वाजति नंद अवास वधाई वेठे खेलत द्वार आपने सात वरस के कुंअर कन्हाई वेठे नंद सहित वृषभानु अरु सकल गोप वेठे सुखदाई थापे देत घरन के द्वारें गावति मंगल नारि वधाई पूजा करत इंद्र की जानों आवत है देखो सुरराई वार वार हरि पूछत नंद हि कौन देव की करत पुजाई इंद्र वडे कुलदेव हमारे उन तें यह सव होति वडाई सूरस्याम तुम्हरे हित कारन यह पूजा हों करत सदाई ४५६ ॥रागबिलावल॥ व्रज घर

सूरस्याम सों कहत जसोदा दधि वलि तोरी

घरआतिहोतुकुलाहल ग्वालफिरतउमगेजहंतहंसवअ
तिआनंदउमाहल मिलतपरसरअंकभदेदेसकटनआ
जनसाजत दधिनोनीमधुमांटधिरतलेस्यामरामसंग
राजत मंदिरमैलेधरतउजागरभटरसकीज्योनार उाल
नभरीअतक्रलसनएभरीजोरतहैंपरवार सहससकव
भियानआनिभरीनंदमहरघरहीगो सूरचलेसवलै
घरघरतेसंगसुवननंदजीगो ८५७ ॥रागनटनारा
यनी॥ कहतजुरेवृजवासीलोग सुरपतिपूजामेटिगुव
रधननहिवाकेसंजोग जोजनवीसएकअतआगरीदेरा
जहिंउनमान वृजवासीनरनारिअंतनहिमानोसुधन
सुधान इकआवतवृजतेइनहीगोएकउतेतेजातनंद
लियोतिनग्वालसूरप्रभुआएगएतहंशातराग ८५८
मेघदलपरतवृजलोगदेषें चक्रतजहंतहांभएनिरषि
वादरनलग्वालअतवालडरिगगनपेषें उमडिवा
दरसजलकरतअतिमहावलगरजिरजपरकरतअं
धकाली चक्रतभएनंदअतिमहरिचक्रतभईचक्रत
वषभानकीरातिविहाली घटाघनघोरिघहरातिं
गररातिअतिदेषिदरातवृजलोगउरपें तडितआघा
ततरातउतपातसुनिनारिनरसकुचितनप्रानअर
पें कहाचाहतभयोकहें क्योंहूवचें भएआगनभव
नविकलडोलें मेटिपूजासुरपतिनंदकेनंदजूसूरप्र

सू॰सा
२२१
२१

भुवरन आनंद कीलालें ४५८ ॥राग मलार॥ बादर घुमरि
घुमरि आए व्रज पर बरषें वारी घुमडी घटा अति
ही सजल चपला चमचमात सब ही डरत गात डुरे ति
स पितामात व्रज पर ह्वै भल भल मई हि पले आकाल वृज
न यो अंधकाल चक्रत है ग्वाल बाल घहरात घन चल
यूजा मेदा नंद लाल इंद्र करी यह हाल सूर स्याम राषो
आपु गिरवर कर पल ४६० ॥राग मलार॥ बतियां कहति
हैं व्रजनारि धरन सें तन धाम बासन नहीं सुरति संभारि
पूजि आए गिरि गुवरधन देति पुत घन गारि आपनौं कु
ल देव सुरपति धस्यौ जाहि विसारि सूर कोन उबारि लैहें
इंद्र चढयो विचारि ४६१ ॥राग सोरठ॥ व्रज के लोग फिरत
वितताने गैयन लै बन ग्वाल गए ते धाए आवत व्रज
हि पराने कोउ चितवत नभ ति न चक्रत हैं कोउ गिरि परत
धरनि अकुलाने कोउ पड़ै चै जैसे तैसें व्रज कोउ दूहत घ
र न हि पहिचाने सूरदास गोवरधन पूजा कीनी भरि लै फ
ल यौ विहाने ॥राग बिलावल॥ राषि लेहु गोकुल के नाथ
व भाजन गाइ गुवाल गऊ सुत विषम बूंद लागति ज्यों सा
यक बरषत मूसलधार सेन पति महा मेघ मघवा के
पायक तुम विनु ऐसो कोन नंद सुत यह दुख दुसह मे
टिवे लायक अघ मर्दन वक बदन विदारन बगा विना
सन व्रज सुखदायक सूरदास प्रभु ताको यह गति जाके

तुमहौ सदा सहायक ४६२ ॥रागगौरी॥ स्याम लयो गिरि
राज उठाई धीर धीर हरि कहत सवन सौं गिरि गोवरध
न करै सहाई नंद गोप ग्वालन के आगे देव कह्यो यह
प्रगट सुनाई काहे कौं व्याकुल भए डोलत रच्छा करै देवता
आई सति वचन गिरि देव कहत हैं कान्ह मोहि करलेहि
वनाई सूरदास नर नारि व्रिज की कहत धन्नि तुम कुंअ
र कन्हाई ४६४ ॥रागविलावल॥ गिरि जिनि गिरै स्याम
के कर तें करत विचार सकल नर नारी भेउ पजनु है या
वादर तें लै लै लकुट ग्वाल सव दौरे करत सहाई ऊचें
पर तें यह अति प्रवल स्याम तन कोमल रच्छा करी रा
म ऊपर तैं जमला अर्जुन सुत कुवेर के ते ऊ तारि उपारे
जर तें सूरदास प्रभु इंद्र गरव कियो वज राख्यो अहे अ
व अपवर तें ४६५ ॥रागमलार॥ सुरपति चरन परयो
गहि धाई जुग जुग धर्यो सुमिसगुन जानौं आयो स
रन राखि सरनाई मैं विसर्यो तुम्हरी माया तें तुम
विनु नाही और सहाई सरन सरन प्रनिपात कहि व्र
हि मुहि राखि राखि त्रिभुवनपति राई मोतें चूक परी
विनु जानें कीन्हौ है अपराध वनाई तुम माता तुम ही
जग ताता तुम ग्याता अपराध छिमाई वालक जन
मा सौं विरचै ज्यौं माता ताकौं लेति मनाई ऐसे ही
मोहि करौ कृपा प्रभु सूर स्याम ज्यौं सुत हित माई ८

सू.सा
२२२

४४६६॥राग मलार॥देखौमाई दवरन वरषाई मदन गुपाल धरयो गिरिवर घन इंद्र टळर लाई जा नेरा न सदा सुख कौ तासों कौ नवडाई सेवक करै जु स्वामी सरवरा तिन वातन पति आई इंद्र ही वव लहा तिहांरे देखौ अकिल गंवाई सूरदास कौ ते सांवनाजि हिं वन सिंधु बन्हाई ४६७॥राग सोरठ॥गिरिजै से लयौ उठाइ कोमल कर स्याम तिजसुधाय हन हिकहि लेति वलाइ महाप्रलै जल ता पर राख्यौं नगगोवरधन भारी नेकु न हि टारयौ नघ पर ते मेरौ सुत अहंकारी कंचन थार दूव दधि रोचन सजि नंदबौर लै आई हरषति तिलक करन मुख निरषति भुज भरि कंठ लगाई रिसकरि कै सुरपति चढि आयौ देतौ वज हि वहाई सूर सो स्याम सों कहति जसोदा गिरि वर वडौ कहाई ४६८॥राग बिलावल॥घरन घरन व्रज होति वधाई सात वरस कौ कुंअर कन्हैया गिरिवर धरि जीत्यौ सुरराई गरवसहि त आयो व्रज वौरन यह कहि कहि मेरी नगति घटाई सात घौस भरि वर षि सिरानो तब आयौ पाइन तर धाई कहां कहां न हि संकट मेटत नर नारी सब करत बडाई सूर स्याम अब कै व्रज राख्यौ ग्वाल करत सब नंद दुहाई ४६९॥राग नट॥राखियौ व्रज नंद किसोर आयौ इंद्र गारव करि चढि कै सात घौस वरषत भयौ भोर वाम भुजा

गोवरधनधरिकर अतिकोमललनघहीकोजोर गोयाग्वा
लगाइं वजराखीतनिकनआई बूंदनजोर अमरायपति
नक्चरनपस्योगहि जबबानेचुसिघनकेजोर सूरस्या
मकतनाकरिनाकोंपठेइ योकरिमाननिहोर ४७०
॥रागविलावल॥ जागोलालग्वालसबटेरत बारंवार
जगावतिमाता लोचनखोलिपलकपुनिभेरत पुनि
कहिउठीजसोधामैयाउठोकान्हरविकिरनउजेरत सू
रस्यामहंसिचितैमातमुखपटकरलैपुनिपुनिमुखपे
रत ७१ ॥रागसारंग॥ रीहतग्वालरिझावतस्याम मुर
लीवजावतसघनवुलावतसुवलसुदामालैलैना
म हंसतसघाकरनारीदैदैनामहमारीमुरलीलेन
स्यामनहतआवतुमहुंवुलावहु अपनेंकरतेंग्वालन
देत मुरलीलैलेसंबैवजावत काहूपेनहिआवेफप
सूरस्यामतुम्हरेमुखवाजतिकैसैंदेखोरंगअनूप
४७२ ॥रागटोडी॥ छाकलेनजोग्वालपठाए तिनन
सोंपूछतिमहरिजसोमति छांडिकन्हैयाहिआए
हमहिपठाइदयोनदनंदनभूखेअतिअकुलाए धे
नुचरावनहेवृंदावनहमइहिकारनआए यहकहि
ग्वालगएअपनेगरहवनकीखबरिसुनाई सूरस्या
मबलरामजाननेमगचितवतउठिधाई ४७३॥रा
गसारंग॥ छाकलियेंसिरस्यामवुलावत टूंढतफिर
तग्वालनवहरिकौंकहूंभेदनहिपावत टेरसुनत

सू.सा

२२२

काहू की श्रवनानि तहीं सुरत उठि धावत पावत नहीं स्याम बलराम हि व्याकुल है पछितावत वृंदाबन

...

म बलराम कहाँ हैं छाक लेवाकिन लाल ४७४ ॥राग सारंग॥ आई छाक बुलाये स्याम यह सुनि सबधाय बेनु सिखाए सुबल सुदामा और राम श्रीदाम कंवल पत्र दोना पलास के सब के धरि धरि परसत जात ग्वाल मंडली मध्य स्याम घन सब मिलि भोजन करत चखत खात ऐसी भूख मांझ यह भोजन पठै दयो है जसुधा मात सूरदास प्रभु आपुन नहि जेवत ग्वालिनि कर तैं लै लै खात ४७५ ॥राग हमीर॥ यह कोउ जानै री बात। चितवनि कै चंद्रमै कौ कै धौं मुरली मांझ गोरी देखत सुनत मन मोहि जात सुर नर मुनि मृग गन खग गोरी जब ते दृष्टि परे मनमोहन गृह मैं मेरो मन न लगोरी सूरस्याम बिनु छिन न रहौं मैं रो मन उन साथ पग्यो री ४७६ ॥राग अडाना॥ स्याम सुंदर आवत बन तें बने आजु दे खि देखि री छबि नैन रंजन सीस मुकुट डोलत श्रवन कुंडल लोल भृकुटि धनुष नैन खंजन गांजन रसन दामिनि ज्यों तैं उर पर माल मोतिन बाल सँग आनंद कीने मंजन सूरस्याम प्रभु राम संतन के सुखधाम कीनें भंजन ४७७ ॥राग अडाना॥ मउर मगुपर खरली नैं कंजन ... मुंदर बरन सुखसदन लाल कौं निरखि नैन मन थाको

एक बार वीथन नि कर्यो मैं लाल
गम गयो है इह वीथिन तैं ऊकि झरोखा झांक्यौ [illegible] एक
चतुरई कीनी गेंद उछारि गगन [illegible]तांकौ वारौ लाजवे मिस
रिनी भई मोकों मैं गंवारि मुख ढांको करि जु गयौ है कछु
चितवनमें यातें रहत मदन मर छाक्यो सूरदास प्रभु सर्व
स लै कै हंसत हंसत रथ हांक्यौ ४७८ ॥ राग सुघराई ॥ आ
वत वनतें सांझ देख्यो मैं गायन मांझ काहू को ढोटा जाके सीस
मोरपखियां अति से कुसुमत मंदार घनै नचं चलमानौ रि
स भरि कै लरत जुगम खियां केसरि को षोरि क्रियें गुंजा वन
मालहियें उपमान कहि आवे जैसी बनी नखियां राजति
पीरी पिछोरी मुरली बजावे गोरी धुनि सुनि भई बौरी रही
न कि आखियां चल्यो हेरत पाग गिरय स्यो तु घेम ग भा नि
नि भवन ल्याई के रग है कखियां सूरदास प्रभु चित चोरि
लयो मेरे जांन और न उपाव दाव सुनौ मेरी सखियां ४७९
॥ राग कल्यान ॥ अंग अंग भूषन जननि उतारति डुलरी ग्री
व माल मोतिन उर लै भुज स्याम निहारति छुद्रावली उता
रति कटि तें सेति धरति मन हो मन वारति माखन भोजन
करत चंदानन वार वार कहि मुख हि पखारति आइ स्या मं
धरि उर पायो यह कहि कहि के अति प्रेम विचारि सूरदा
स प्रभु मात जसोधा पट लै अंग दुकुह बर झारति ४८० ॥ रा
ग कल्यान ॥ ए दोउ मेरे गाइ चरैया मोल विसाहि लयौ मैं
तुम कों तब तुम दोउ रहे नन्हैया तुम सौं टहल करावति । दि है
स दिन और न टहल करैया यह सुनि स्याम हंसे कहि दोउ

सू॰सा

२२४ झूठकहतिहैमैया जानपरतनाहि सांचकुठाई धेनुचराव
नरहतछुरैया सूरदासप्रभुहंसतिजसोधामैंचेरीकहि
लेतिवलैया ४८१ ॥रागविहागरा॥ देखतनंदकान्हअति
सोवत भूखेआजुरहेवनभीतरयहकहिकहिमुखजोव
त कह्यौनांहिमाननचाहूकौ अपहवदोऊवीर वारवा
रतनधौछतकरसौंअतिहाप्रेमकौपार सेजमगाइल
ईतहां अपनीजहांस्यामवलराम सूरदासप्रभुकाहिंग
पौढे आपनंदअनतवांम ४८२ ॥रागविहागरा॥ जा[illegible]उठे सि
नवकुंअरकन्हाई मैयाकहांगईमोढिगतेंसंगसोवतजा
नेवलभाई जागेनंदजसोधाजागीवोलियौहरिपास
सोवतझिझकिउठेकाहेतेंदीपककियोप्रकास सपनेकौ
ऊपस्योजमुनादहकाहूदयौगिराइ सूरस्यामसौंकहति
जसोधाजिनिहूकान्हउराइ ४८३ ॥रागसूहा॥ कंसबु
लाइदूतइकलीनो कालीदहकेफूलमगाए पत्रलिखाइ
तासकरदीनो यहकहियौव्रजजाइनंदसौंकंसराइएका
जमगाए तुरतमगाइदीजियेअवहीभलीभांतिकहि
कहासमुझाए यहअंतरजामीजियजानीआपुरहेव
नग्वालपठाए सूरस्यामव्रजजनसुखदायककंसका
लजियहरषवढाए ४८४ ॥रागविलावल॥ नंदसुनत
मुरझाइगए पातिवांचिदूतमुखवानीसुनिकैचकृतभ
ए वलमोहनघुटरुनवाकेमनआजुकहीयहवात
कालीदहकेफूलकहांधौंकोआनोपाछिनातऔरगो

पसवनंदतुलाए कहतसुननतयहवात सुनोसूरनयरहि

रंगआयोमनमोहनघरघात ४८५ ॥रागनट॥ स्याम

सखाकोगेंदचलाई सीदामापुनिअंगवचायोगेंदप

रीकालीदहजाइ धाइआहीतवपेंटस्यामकोदेवनमेरी

गेंदमगाइ औरसखाजिनिमोकोंजांनोमोसौंतुमजिन

करोढिठाई जानिवूमतुमगेंदगिराई अवदीनेहीवनै

कन्हाई सूरसखासवहंसतनपरसपरभलीकरीहरिगेंद

गंवाई ४८६॥रागसोरठ॥ पेंटछांडिमेरीसीदामाकाहेको

तुमरारिवढावततननिकवातकेनामा मेरीगेंदलेवतताव

दलेवांहगहतहोधाइ छोटेवडेनजानतेकाहूकरततवरा

वरआइ हमकाहेकेतुमहिवरावरवडेनंदकेपूत सूरस्या

मदीनेहीवनिहैंवहुतकहावतधूत ४८७ ॥रागसोरठ॥

रिसकरिलीन्हीपेंटछुटाइ सखासवैदेषतहैंठाढेआ

पुनचलेकदमपरधाइ नारीदैदैहंसतसवैमिलि

स्यामगएतुमभागिडराइ रोवतचलेसिदामाघरको

जसुमतिआगेंकहिहोंजाइ सखासखाकहिस्याम

पुकारयौगेंदआपनीलेहुनआइ सूरस्यामपीतांव

रकाछेंकूदिपरेदहमेंघहराइ ४८८ ॥रागगौरी॥ झा

रहारकहिसखनपुकारयौ गेंदकाजयहकरीसिदामा

नंदमहरकौढोटामारयौ जसुमतिचलीरसोईभीतरन

वहिग्वालिरकछोंना दउकोरहीद्वारेपरठाढीवातक

हूनहिनीकी आईवहुरिनिकसिनंदरानीवहुरीदो

सू.सा
५ 224

डुमिटाई मंजारी आगे दै निकसी पुनि फिरि आंगन आई
व्याकुल भई निकसि कै बाहिर कहां धौं कुअर कन्हाई बा
धौं काग दाहिनौ बार सुख्याकुल घर फिरि आई छिन
भीतर छिन बाहिर आवति छिन आंगन इहि भांति सू
रस्याम कौ टेरति जननी नैक नहि मन सांती ४७९ ॥
रागनट॥ नंद घर निसो पूछत बात बूदन कुराइ गयौ कैयौं
नेरो कहां गए बलमोहन तात भीतर चले रसोई बार न छी
कभई तेव आगन आए पुनि औरौ दै गई मंजारी औ
र बहुत ही असगुन पाए मोहि भए कुसगुन घर पैठत
आजु कहा यह समुझि न जाइ सूरस्याम कहां गए आजु
धौं बार बार पूछत नंदराइ ४८० ॥रागगौरी॥ महरमह
रि कौं गयौ जनाइ बन भीतर छन बाहिर ठाढे बन बा
हिर हां देखत जाइ इहै कौं सरस बसखा पुकारत रोवत
महर आए ब्रज कौं धाइ आतुर आइ नंद के घर में हरि सौं क
ह्यौ सुनाइ चकृत व्है दोऊ पूछन लागे कहौ बात हम
कौं समुझाइ सूरस्याम खेलत हा कदम चढि कूदि परे का
लीदह जाइ ४८१ ॥रागसोरठ॥ सपनौ परगट कियौ
कन्हाई सोवत ते निस आजु उरा मौंह मसों कहि इहवा
न जनाइ धरनि परा मुरझाइ जसोधा नंद गए जमुना
तट धाइ बालिक सबै नंद संग धाए ब्रज घर जहां तहां सो
र मचाइ आह आह करि नंद पुकारत बहुरि गिरे महराइ
लोटत धरनि परत जल भीतर सूरस्याम दुख पाइ ४८२

॥रागगौरी॥ ब्रजबासी यह सुनि सब आए कहां परयो वह
कुंअर कन्हाई बालनि ले सो ढोर दिषाए सूनो गोकुल
कियो स्याम तुम यह कहि लोग उठे सब रोइ नंद गिरन स
बहु न धरि राष्यो पौंछत बदन नीर ले धोइ ब्रजबासी न
बकहत नंद सौं मरन भयो सबही कौं आइ सूरस्याम बि
नु कौ वासिये ब्रज धृग जीवन नहि भौन कन्हाई ४८३
॥रागसोरठ॥ महरी पुकारत कुंवर कन्हाई माषन रह्यौ
तुम्हारे कारन आजु हां कौ से रत गाई अति कौ मल तुम्हरे
मुख लायक तु महो मेरे नैन जुडाई धौरी दूध आटि हे रा
ष्यौं आपने कर तुहि गए वनाई वरजति ग्वालि जसोधा
कौ सब यह कहि कहि नीके जदुराई सूरस्याम सुत विरह
मात कौं यह वियोग वरन्यौ नहि जाई ४८४ ॥रागमारू॥
उरग स्त्रिनि नारि दिगारि गिरधारी जू पूंछ परलात दे अहि ज
गायो उठौ अकुलाइ उरपाइ फुफकार करि देषि बालक गर
ब अति वढायो करत फन घात विष जात उतरात अतिना
र जरजात नहि गात परसें सूरप्रभु स्याम अभिराम तन
जांनि कै नैन अहिराज विषज्वाल वरसें ४८५ ॥रागका
न्हरा॥ उरग नारि सब कहति परसपर देषो या बालक कौ वा
न विषज्वाला जल जरत जमुन कौ या के तन नहि लागत
ताप यह कछु जंत्र मंत्र जानत है अति ही सुंदर कोमल गा
त हैं अहिराज महाविषज्वाला केती करत सहस फन घा
त छुवत न हीन नयाके विष कहुं अवलौं वच्यौ पुत्र

सू:सा
१६ २२८

चितमात सूरस्याम सोंदावव चायौ ग्वाली अंग लपेट तु
जात ४८६ ॥बिलावल॥ उरगनायो हरि कौंलपटाइ बिक
नवचन कहि कहि मुख भाषत तुमो कौंन हि जानत आहि
राइ लयौ लपेटि चरननतें सिरलौं अति ही हमसौं करत
ढिठाइ चापत कहा टकु हैं अति ही वह अपनी जुवतिन कौं
सकुति दिखाइ प्रभु अंतरजामी सो जान्यौं नव उरी सवस
कुचमिटाइ सूरदास त्रिभुवनपति बैठे ग्वाली बिकल
भयौं तव जाइ ४८७ ॥रागकान्हरा॥ जवहि स्याम तनअ
तिविस्तारो पटपदात टूटन अंग आन्यौं सरनसरन आहि
राज पुकारयौ यह वानी सुनि नैंनकमल में अति मन
में सकुचाए यहै वचन सुनि सुपद सुता मुख अति हा
वसनवढाए यहै वचन गजराज सुनायो गरुड छांडि त
हं धाए यहै वचन सुनि लक्षा गृहतें पंडौ जरत वचाए य
हवानी सही जातिन प्रभु पै ऐसें परम कृपाल सूरदास
प्रभु अंगसकोरो व्याकुल देख्यौ ब्याल ४८८ ॥रागगौरी
॥ जसुमति टेरत कुंअर कन्हाई आगें देषि कहति वलराम
रस्यौ हि कहां तेरो भाई मेरो भैया आवत अवहीं तोहि दिषा
ऊं भैया धीरजकरौ नैनकतु मदेषौ यह सुनि लेति वलैया
धं पुनियह कहति मोहि परमोधत धरनि गिरी रैनि मुरझाई
हैं सूरविना सुत अति व्याकुल मेरो वाल कन्हाई ४८९
॥रागनट॥ आवत उरग नाथें स्याम नंदजस धा गोप गो
पिनु कहत हैं वलराम मोरमुकट विसाल लोचन श्रवं

नकुंडिल लोल कटपीतंवरभेषनटवरनतनकनप
नडोल दिव्यदुंदुभीवाजतिकुसमनगनवरषाइ सूर
स्यामविलोकिपुरजनमातपितसुखपाइ ५०० ॥राग
कान्हरा॥ कनककनकधृत निरखत नखसुंदर जलभीतर
जुगजामरहेकहुंमिट्योनहांतनचंदन वहिपैकाछें
कटपीतांवरसीसमुकट अतिसोहित मनोगिरिपर
मोर[illegible]नचतहैदेषतव्रजजनमोहत हरषतअ
मरअमरललनासंगभेजे धुनिचहुंओर सूरस्याम
कालीपरनिरतत आवतनंदकिसोर ५०१ ॥रागका
न्हारा॥ गरुडत्रासतेंजोरहांआयो तौप्रभुचरनकमल
फनफनप्रति अपनेंसीसधरायो धनिकरिआपद
यो षगपतिकोंरहांनवरह्यो।छिपाई प्रभुवाहन
डरभागिवच्योअहिनातरलेतोखाई यहसुनिकुल
नागरिनदनंदनचरनचिन्हप्रगटाए सूरजदासअ
भेकरिताहीउरगदीपपहुंचाए ५०२ ॥रागगौरी॥
वृजवासिनसोंकहतकन्हाई जमुनातीरआजुसुख
कीजे यहमेरेमनआई गोपनसुनिअति हरषवढा
यो सुखपायोनंदराइ घरघरतेंपकवानमंगाए वा
लिनदयोपठाई दधिमाषनषटरसकेभोजनतुर
नहींल्याएजाइ मातपितागोपीग्वालनकौंसूरजप्र
भुसुखदाइ ५०३ ॥रागगौरी॥ तुरतकंवलअवदेहुप
ठाइ सुनहुतातअवविलवनकीजे कंसचेरेरजऊप

रआइ कंवलमगाइ लएनवऊपर कोटि कंवल लेदएपठा
इ बहुतविनेकरिपातीपठईन्रपलाजैसवपुहपगनाइ
नैसीमोकौंआग्यादीजौपुहपधरेजलमांझभिजाइ सूरदा
सप्रभुन्रपप्रतापतेकालीनागंयोपहुंचाइ ५०४ ॥रा
गसोरठ॥ सहसमकटभरिकंवलपठाए आपनेसरकेर
औरगोपजेतिनकेसाथपठाए औरबहुतकांवरिदधि
माखनअहिरनकांधेजोरी निरपहाथपत्रयहदीजोविं
नतीकीजोमोरी मेरोनामन्रपतिसौंलीजौस्यामकंव
ललेआयो कोटिकंवलआपुनन्रपमांगेतानकोटि
मेलपठायो न्रपतिहमेंअपनोकरिजानैतुमलायकअह
मनांही सूरदासकहियोनिरपतिसौंतुमहिछोडिकहं
हांजाहीं ५०५ ॥रागनट॥ भीतरआइगोपबुलाइ इ
देदुखसुखहृदयकमलकटिदएवजहिपठाइ नंदकोसिर
पावदीनौंगोपसवपहिराइ यहकह्यौवलरामस्या
महिदेखिहौंदेऊआइ अतिहिपुलकपारथकियौउन
कंवलवेहोल्याइ ५०६ ॥रागधनाश्री॥ यहसुनिनंद
वहुतसुखपायो कंवलपठाएसोन्रपलानेदेखनको
दोऊसुतनवुलायो सेवावहुतमानिहैलीनानरनारी
मनहरषवढायो वडोवातभईकंवलपठाए मानौअ
पुनजानियेआयौ आनदकरिजमुनातटव्रजजनखे
लतखेलतघोसविहायौ दूकसुरवस्यामवचौकाली
नैंदूजहिकंसहिकवलचलायौ हसतस्यामवलरा

मसुनतयहहमक्रोदेषननयनिमगायौ सूरदासप्रभु
मातपितानाहितक्रोटिकंवलदैव्रजहिबचायौ ५०७
॥रागकान्हरा॥ दावानलव्रजजनपरधायौ गोकुलव्रज
वृंदावनवनद्रुमचाहुहैचहुँपासजरायौं घेरतआ
वतदसहुदिसातेंअतिनिकनैतनक्रोध नरनारीसबदेषि
चकृतभएदौलागीचहुँकोध यहतौअसुरघातनकियेऽ
आवनुनाहिनवचनसमाज सूरदासव्रजलोगनकहतय
हुउपज्योदौअतिआज ५०८ ॥रागकान्हरा॥ अबकैरा
षिलेहुगोपाल दसौंदिसातैंउडदुसहदौंकोवचिहै
यहकाल पटकतबांसकांसकुसचटकतलटकततालऽ
तमाल उचटतिअतिअंगारभभकतझरलपटनिझपऽ
टिकराल धूमधूंधिबाढीधरअंबरचमकतिउलमुख
ज्वाल हरनबराहमोरसुकसारिकजीव[illegible]जरतबेहाल
जिनिजियडरौनैनसबमूंदौंहसिबोलेनंदलाल सूरऽ
अनलसबबदनसमानीअभैकियेव्रजबाल ५०९
॥रागगौरमलार॥ दावानलअचैव्रजजनबचाए धरऽ
नअकासलौंज्वालमालाप्रबलघेरिचहुँपासव्रजवा
सआए भएबेहालसबदेषिनंदलालतबहंसतही
ख्यालततकालकीनौं सबनमूंदेनयननाहिछिनअंऽ
तरनहीअघाज्यौंनीरदौंअचैलीनौं देषौअबनैनभऽ
रिबुझिगईअगिनिडरचितैभयौसबनआनंदभारी
सूरप्रभुसुखदयौदावानलपीलयौकहतसबग्वाऽ

सू.सा

२२८

लधानिधनिमुरारी ५१० ॥रागबिलावल॥ तनिकन्हन्न

न्हादोहनीलैदेरीमैया तातद्दुहनसीषनकह्यौ धौरी

सीगैया ऊटपटेआसनबैठिकें चूंटिनुधालीलीनों धा

रअंतहीदेषिकैं रजपतिहसिदीनौ घरघरतें आई(

सबैदेषनब्रजनारी चितैचोरिचितहरिलयो हसिगो

पिनिहारी विप्रबोलिआसनदयौकहीवेदउचारी सू

रस्यामसुरभीदुही संततनहिंतआरी ५११ ॥रागसूहा॥

धेनिदुहतअतिहीरतिबाढी एकधारदुहेनीपहुंचाव(

तएकधारजहांप्यारीठाढी मोहनकरतेंधारचलावत(

मोहनमुखअतिहीछविबाढी मनोजलधारबरषिसो

ततलघुपुनपुनप्रेमचंदपरचाढी सषीसंगकी निरष(

तयहछविभईव्याकुलमनमथकीडाढी सूरसप्रभ

केबसदैसवभावचावतेंभईउचाढी ५१२ ॥रागरामकली॥

कैधोंहसितुंकरिगिरिधुरऊाई यहवानीकहिसषियन

आगेंमोकोकारेआई चलीलवारसुताकषभानकहि

घरहीतिनसमुझाई उरदयो भरीदूधदोहनीआवही

नाकीआई यहक्तोसुतनंदमहरको सबहम लोगरल

गाईसूरसषिनमुखसुनियहवानीतवयहवातसुना

ई ५१३ ॥रागमल्लार॥ उसीहौंस्यामभवंगमकारे मोह(

नमुखमुसक्यादुमनोमनजातुमैरसीमारें फुरैनमंत्र

जंत्रगाडेनांहीचलेगुनीगुनडारें प्रेमप्रीतिमुखहरिदेलां

गाउरतिहितनजारें निमषनहीकलहोतिसुवयोहंव(

कुंजनगुनीपविहारे सूरस्याममहरविनुयाकोकोसिरढारै
ढोरे ५१४ ॥रागधनाश्री॥ देखिचलोपियकुंअरकन्हाई
जाकारनतुमयहवनसेयौ सोत्रयमदनभवं गनभाई
नैनासिथलनासापुटसीतलपीतअंगकुधिबुधिविसरा
ई सकलसकानिघटमीजिपसीनेंउरतिगिरतिनतनतोरिजं
भाई अनजानतमूरनकोंजितततिउठिदौरै कछुजनकु
वताई नाहिकछुउपचारनलागतुनरमीडेंसहचरिपछि
ताई तुमदरसनसुकवारमनोहरयुंअोषदइकसखीलषा
ई जोसूरजप्रभुज्यायौचाहा ततनौंदुकनाकौंदहुदिखाई ५
१५ ॥रागसूहा॥ लोचनदएकंवरउघार कुंवरदेख्योनंदको
नवउदासकुचिसंभार वातपूछतजननिसोंरीकहाहियह
आज मरननेंतूवचीप्यारीकरतिहेकहालाज नवकहति
मुहिकारेखाईकछुनहिसुधिगात सूरप्रभुहिज्याइला
न्हीकहिकुंअरसौंवात ५१६ ॥चारहरनरागसूहा॥ आ
पुकदमचढिदेषतस्याम वसनआभूषनसवहरिलीनें
विनावसनजलभीतरवाम मूंदेंनैनध्यानधरिहरिकौ
अंतरजामीलीनोजान वारवारसविनासोंमागतपावैहम
पतिस्यामसुजान जलतेंनिकसिआइनवदेख्योभूषन
वसनतहांहिनांहि इततउतहेरिचकृतभईसुंदरिसकुचि
गईपुनिजलहीमाहि नाभिप्रजंतनीरमैंठाढी थरथरअं
गकंपतसुकुवार वचौलेगएवसनआभूषनसूरस्यामउ
रप्रीतिविचार ५१७ ॥रागरामकली॥ हमारेअंवरदेहुम

तारी तुमलेचीरकदमचढिवैठेहमजलमांझउघारी नट
परविनुवसननक्यौंआवैंलाजलगतिहैभारी चोलीहा
रतुम्हेंहमदैहैंचीरदेहुतुमडारी तुमयहवातअचंभो
भाषतनांगीआवैंनारी सूरस्यामकछूछोहकरौजिय
सीत॰गलिततनजारी ५२८ ॥रागआसावरी॥ हाहाक
रतिघोषकुमारि सीततेंतनकंपतथरथरवसनदेहमुरा
रि मनहिमनमेंभयोअतिसुषदेखिकैगिरधारि पुलकि
तस्याअंगदेखेकहतभूषनभारि नेकनहींतुमछोहआ
वतुकपेहमसवनारि सूरप्रभुहरिअतिनिठुरहैंनंदसुत
बनवारि ५२९ ॥रागगौरी॥ पनघटरोकेंरहतकन्हाई ज
मुनाजलकोउभरननपावैदेषतहीफिरजाई तवेस्याम
रकवुद्धिउपाईआपुनरहेछिपाई तटठाढेजेसखासंग
केतिनकोंलयोवुलाई वैठास्योग्वालनकौंदुमतरआ
पुनफिरफिरदेषत वडावारभईकोऊनआईसूरस्यामति
नलेषत ५३० ॥रागधनाश्री॥ वृजगैडेकोऊचैननपावत
न वालसघालीनसंगडोलतदिदेहांकजहांतहांधावत
काहूआईडुरीपटकारतकाहूकीगागरीढरकावत काहूकौं
गारीदेभाजतकाहूकौलेअंगलगावत काहूनहिमानत
वृजभीतरनंदमहरकोकुंअरकहावत सूरस्यामनटवर
वपुआछैंजमुनाकेतटमुरलीवजावत ५३१ ॥रागटोडी॥
गोकुलकेग्वैंडेंइकसांवरोसोढोटामाईआंषिनकेंपैंडेपें
ठजाकैपैंडेपेंसोहैं कलनपरति।छिनुगृहभयोमानों

वजुनन्तु धनु नेमप्रान साखसहरयौहैं भवननभावैमाई
आगननहस्यौजाई ज्ञौ हाइ हाइ देखोजे सो हालक्नरी
है सूरदासप्रभुनीक्नेगावतवजावतहैं मानोमंजुमुरली
पयूषरसभरयौहै ५२२ ॥राग नट॥ राधासखिन लई बुलाई
चलोजमुनाजलहिं याचली सबसुखपाइ सबनधरि
धरिकलसलीन्हे तुरतपहुंचीजाइ तहां देखे स्याम सुंदर
कुंअरमनहरषाइ नंदनंदनदेखिरीझे चितेरहे लुभाइ
सूरप्रभुक्नो प्रियराधे भरतिजलमुसक्नाइ ५२३ ॥राग
गूजरी॥ घरहिं चलीजमुनाजलभरिकैं सखिनुवीच
नागरीविराजति भईप्रीतिउरहरिकैं मोहनक्नो मोहनी
लगाई सखी यांचलीउमडिकैं सूरस्यामप्यारीक्नेवस
भए रोमरोमरसभरिकैं ५२४ ॥राग धनाश्री॥ सखिन
वीचनागरियाआवै छविनिरखतरीझे नंदनंदनप्यारीम
नहिरिझावै कबहुंकआगेकबहुंकपाछेनानाभाववता
वै राधायहअनुमानक्नेरहोरिमेरेचितहिचुरावै आगें
जाइननकलकुदोले पंथसंवारिवनावै निरखत जहां
छांहप्यारीक्नो तहांतहांछांहछुवावैं छविनिरखत
तनवारिआपनों नागरिजियहिजनावै अपनेसि
रपीतंबरवारतक्नेसोलचिउपजावै ओढिउढोंनाच
नतदिखावैरहसिसनिक्नटहिआवै सूरस्यामक्नेसेभा
वनसोंराधामनहिरिझावै ५२५ ॥राग कल्यान॥ बोले
रावरीहोंनवदेहीं घरमेरोजवभरिदेहोक्नहामयोजो

सू०सा
२३०
२०

नंदवडेनेतमतुमसेनहिंघरजैहौं एकगावएकठांववासइक
तुमकहिहौंक्योंमेंसहौं सूरस्याममैहौंतुमहैंनउरीहौंज्वाक
स्यालगेअवदैहौं ५२६ ॥रागटोरी॥ आवतहीजमुनाजलपा
नी स्यामवरनकाहूकोढोटानिरषिवदनघरगैलभुलानी
उनमोतनमेंउनतिनचितयोतवहीतेंउनहाथविकानी
उरधकधकीटकटकीलागीतनव्याकुलमुखकरतनवानी
तवकह्योमोहनमुहितूकोहैयावृजमेंनहि मैंपहिचानी
सूरस्यामछविदेखिलानमईमनोमाझिजलवूंदसमा
नी ५२७ ॥रागधनाश्री॥ काहूनोहिंवगोरीलाई पूछ
तिसषीसुनतिनहिंनेकोनोहिंवधोंवगमूरिषवाई चोंर
विपरीसपनेंज्योंजागीयहवानीकहिसषिहिसुनाई
स्यामवरनइकमिल्योढुटोनातिनमोकोंमोहनीलगाई
मैजलभरिआवतिहीइतकोंआइअचानकअंकमलाई
सूरस्यामसवसषिघनआगेवातकहीसवलाजगंवाई
५२८ ॥रागमलार॥ मेरोगोलनछांडैसांवरोमैंकैसैंपनि
याजांवरी इहिसकुचनिडरपतिरहौंमुहिघेरैनकोऊनां
वरी जितदेषौंतितदेषियैरीरस्यानंदकुंवार इतउत
देषिचुराइकैमुहिपलकनकरतजुहार लकुटलियेंआ
गेंचलेहौंपंथसवारनजाइ मोहिनिहोराआइकैसषि
फेरिचितैमुसकाइ जमुनाजलगागरिभरौंजवसिरधरौं
उठाइ कंचुकीतेंआंचरउडौमेरौहियरात।कीलतचाइगा
गारिमोरेकांकरीहोइडुरामारैलाल गैलमांझठाढोरहेमुहि

सुमटनु आवतजात हौंसकुचनवो लोनहा मोहिलोकला
जविनुसंक मोतनछुकैंजोचलेताहिमरतुहैअंग निकट
आइमुखनिरखिकैंसकुचेवहुरिनिहारि उठकिओटनी
ओटदईपीतंबरमोपैडारि जवकहुंलगनहिलागईवाकें
जियआकुलाइ नवहठिमेराछांहसौंराखेछांहछुवाइ
काजपरयोघरकोरहैदहुगुरजनकोसोर मेरोजियमाटें
वंध्योपीतंबरकेछोर अवलोंसकुचअटककरी अवपग
टनुअनुराग हिलिमिलिकेसंगखेलिहौंमानिआपनो
भाग घरघरव्रजवासीसवैंऔगुनकहेंपुकारि गुपतप्री
तपरगटकरौंकुलकानिनिवारि जवलगमनमिलिहैन की
हीनचौजुपुटकेनांच सूरस्यामकेसंगरहौंकरौमनोरथ
सांच ५२९ ॥रागआसावरी॥ मोहनविनुमननारहैसुनिमाई
री कोटिभांतिकरिकरिरहीसमुझाईरी लोकलाजकुलका
निमनहिनहींआईरी हेरीहिरदेंमांहिमोहनीलाईरी
सुंदरवरप्रीतमनोरंगसुखदाईरी सूरदासप्रभुविनार
ह्योनहिजाईरी ५३० ॥रागबिलावल॥ नंदकोनंदनसां
वरोमनेमोचोरेंजाइ रूपअनूपदिखाइकैंओठकठाक्यो
आइ मोरमुकटकुंडलश्रवनपीतंबरफहराइ अधर
नपरमुरलीधरेंमधुरातानवजाइ चंदनकीखोरकियें
कटकाछनीवनाइ सूरदासवेंटप्रभूजमुनानिकटकन्हा
इ ५३१ ॥रागनट॥ मेरोहरिनागरसोंमनमान्यो मनमो
होसुंदरवरनायककलामईसवजगजान्यो विसरादेहगे
हसुधिविसरीविसरिगईकुलकान्यो सूरश्यामप्रजेया

सू॰सा
239
२३१

मनकीनवभावैभोजनपायौ ५३२ ॥रागरामकली॥
सषीमुहिहरिदरसकौचाव होंजुराची स्यामसूरतिला
वलोगरिसाव स्यामसुंदरमदनमोहन अंगअंगसु
भाव सूरस्वामीप्रीतिकारनसीसरहौकिजाव ५३३
॥रागभैरौ॥ मोरनेंकांन्ह करनसोंझगरौं औरनुछाडि
परैहठमेरै नितप्रतिकलहकरनुगहिडगरौं बिनुबोहनी
नेकुनहिदै हों ऐसेछानिलेतकिनसगरौं सबकौउजा
नुमधुपुरीबेचनकोनैदयौकाहिभरिगगरौं मुखचूमत
हंसिकंठलगावत अतिहीकहियतलालअचगरौं सूर
सनेहग्वालिमनअटक्यौ छांडोपरतनहींयहडगरौं ५
३४ ॥रागगूजरी॥ गिरवरधरौआपनेघरकौं नाहीके
वलदानलेतहौंरोकिरहतिजियपरकौं अपनेंहीघरव
उकहावतमनधरिनंदमहरकौं यहजानतिनुमगाइचरा
वनजानसदावनवरकौं मुरलीकटचघरनीआमूष
नमोरपषौवासिरकौं सूरदासबांधेकामरियाऔरल
कुटियाकरकौं ५३५ ॥रागविलावल॥ यहकामरिक
मरीकरिजानत जाकीजितनीबुद्धिहृदैमेंसोतितनो
उनमानत याकामरीकेऐरोमपर वारौंचारपटंं
वर सोकमरीतुमनींदतिगोपी तीनलोकआडंबर क
मरीकेवलअसुरसंघारे कमरीतेंसवभोग जातपां
तकमरीसवमेरी सूरसवैयहजोग ५३६ ॥रागविला
वल॥ धानिधनिकमरीहोप्यारे लालस्यामकी यहें
आरडिवै [illegible] जानवनपहे सेजकोवसननमेहंकी

निवारनिहै यहै छाँह घामकी यहै ओढि कै परनपीरसी
नकी हरनि कैयहै लैकरन ओट कोटि बामकी यहै जाति
यहै पांति अयासा यहै संघात सूरस्याम सुखदा है सब
विसरामकी ५३७ ॥राग बिलावल॥ अब तुम साँची बा
त कही इतने पर जुवतिन कौ रोकत मांगत दान दही
जो हम तुम्हें कह्यौ चाहत हीं सो आ मुख प्रगटायौ य
ह तुम जाति उघारि आपनी जुवतिनु मैं लौ हसायौ तु
म कमरी कै ओढनहारे पाटंबर नहि छाजत सूरस्याम का
रो तन ऊपर कारी कामर राजत ५३८ ॥राग मलार॥ तोहि
कारी कामरि लकुट भूलि गई अब पीतंबर पहिरे हूं करन
व लासी गोकुल की गायन चराइ बौहे छांडि दयो नव
ल तिय संग डोलें घर मविसासी गोरस चुराइ खाइ व
दन दुराइ राखे मन न धरत बृंदावन कौ मवासी सूर
स्याम तोहि घर घर सब जानत हैं इहा वलि कौ हैं तिहारी
दासी ५३९ ॥राग बिलावल॥ हारे तोरि विथुराइ दयौ मैं
या सौं कि न कह न चली तुम दधि माखन सब छीन लयौ
रि सकरि धाइ कंचुकी फारी अब तो मेरो नांव भयौ का
ल्हि नहीं इह मार ... कै हौं ऐसो मो सौं वैर भयौ मला
वात घर जाव आजु तुम मांगन जोवन दान नयौ सूरदा
स मुख हाँ हा रिस जुवतिन उर अंतर आनंद छयौ ५४०
॥राग नट॥ दान लेहु जाहि हम घर कौं काहे कान्ह बेत हो

गारी जो कोउ कहौ कहै हटकै राउहि मारग आवै रजवा
सी नला करी दधि माषन षायो चोली फारि ई तुम डा
री जोवन दान कहूं कौ मांगत यह सुनि सुनि अति लाजन
मारी होति अवार दूरि घर है अति पियाला मिउ रति हैं मा
री सूरस्याम काहे कौं झगरौ तुम सुजान हम मुगद गवारी
५४१ ॥ राग बिलावल ॥ कहौ कान्ह कहा कहियतु हम सों
जा कारन जुवती सब हट की सो पूछति हैं तुम सों लोंग दा
ष नारियल सुपारी कहा लादे हम आवें हींग मिरच
पीपरि [illegible] अजवायन ए सब बनज कहावें कूट
कायफल सोंठ चिरैता गुरजीरा कहुं देषत आलिम जीव
लाष सेंदुर कहुं ऐसी बिधि औरेषत बाउबिरंग बहेरा ह
रैं पापरि कौ ब्यौपारी सूरस्याम जो गें सब भूले जोवन
भाए मुरारी ॥ लीला बरनन ॥ राग जैतसिरी ॥ जब दधि बेचन
जाइ न बमारग रोकि रहै ग्वालन देषत धाइ कै अंचल झ
गरै अहो नंद आनारि गारि कै सा किन दाजि एक कै
र बसुवास सुनो जे सो नहि कीजे सुत औसो तुम षिझति
नहि कौन रहै इहि गांव जेहै बज्रनजि अंतही बड़ी सुनों
नहि नांव कहा कह निडर पाइ कछु मेरो घट जिहै तुम वा
धति आकास वात न कूठ अ सेहै जोवन धन नयो सब न
पे तुम कैसा इत राति कूटे कान्ह दो सदै तुम ही बजन जिजा
नि हम है कूटा कहति और कौं बूझि न देषो हम सौं माग
त दान करत गोवन न बोले षो महुकी टोरे सा सतें मर कट

लेयवुलाइ महाहाठमानैनहीं माखनसहदधिखाइ
ग्वालिनि ढीठगवांरिआन्हमेरोअतिभोरो तेरोगोरस
सवढुरतभयोरीमेरोथोरो बोलतलाजतुहेनहींसव
तुममईगवारि ऐसीवेसिहारिऔरें कहावतावतिनारि
अहोजसोधामहरइनको मामेंपीवे हमेंकहाहेहोत
वहुतदिनमोहनजीवें. सुतकेआमनजानेंहा वेरेग्वा
पनीटेक दसेगेयनजोवडोहेजानिपांतिसवएक कहा
गेयनकीचलीकहाअवचलीजातको चकृतभई मेतुमें
कहतअनमिलतवातकी जेसीमोसोंकहतिहों कोसुनि
केपतिआइ कौनपरतितुम्हऔंपरीमोहिकहोसमुझा
इ अहोजसोधावातकोलिकीसुनीकिनांहीं वंसीवट
कीछांहगहीहरिमेरीवांहीं होसकुचनवोलीनहिंवहु
सखियनकीभीर गहिवहियांमुहिलेचले हंससुताके
तीर औरीमेमंतगुवालिनिरतिजोवनमदमातीगो
रसवेचनहारगरवगूजरइतराती अनमिलतीवातें
कहे सुनियेतेरीनांहि कहांमोहनकहांतूरहे वेसेंग
हितेरीवांह सांचीहेंसवकहतिहूंनहिकवहुंतुमसों
सुतकोराखतिकानविलगमानतिहोहमसों कुंजन
मेंआउतोंरेंमनोवाहीकोराज संकसकुचमानेंनहीं
रहतभयोसिरताज ऐसीवातेंकहतिमनोहरवरस
वाखयों इसहसयोनहिंजातनेकडरवोईसकौं

धन्नि धन्नि तुम पहं कहति हो मोकों आवति लाज भारव
न मांगत तुरोट तिहि देसदे तिवे काज हरि जानत है अंतरमं
त्र सीषो कहुं ढोना बनि बन नत नव नाइ धराहि आवतु
बनि छैना एक घोस किन देषहु अंतर रहो छिपाइ दस
है कै बीस कैनै मनन देषो नआइ जाय चली घर ओट नैन
भरि हम देषे हैं बीस बास दस बरष एक इक दिन लेषे है
उठि लगावति नान्ह कैं वैरे जैरै वह आषि धूगरा धूग
नौ कूदपर मोहि बुलावति साषि धिरा तुम्हारे पूत घि
रत हम आंव यौ आना सुतकों हट वति नांहि औटि दूक
मारी दीनी महतारी दोऊ सुने बने वे मग रोअन जाइ आ
इक हों दुख आपनों ए अनि उठति रिसाइ कहा कैरों तुम
बातन कहूं आवहूं लगावति तऊ बिनु इहां सुनाइ मोहि
कै सें यह भावति बहु तउ रहनों मुहि देषो अब जौ सो जि
निदेहु तुम तत तनी हरि तन तुनहि मन अपने गुमि लेहु
निरउतर भइ ग्वालि बहुरि कछु कहत न आयौ मन
उपजी कछु लाज गुपत हरि सौं चितु लायौ लाला लति
न गुपाल ना कहत सुनत सुखदाइ दांन चरित सुख दे
षि कैं सूरदास बलि जाइ ५४२ ॥रागरामकली॥ राधे सौं
मा षन हरि मांगत औरन की मटुकी को षायौ तुम्हरो कै
सो लागत लै आई विषमानसुता हंसि सद लौनी है मे
रौ लेहु दीनो आपने कर रहि मुख बात अलप हंसि हेरो
सब हुन तें मीठौ हिय पह रुधि मधुरे कहयौ सुनाइ सूरदा

सपनुसुखउपजाएव्रजललनामनभाइ १४४ ॥अथ
दानलीला॥आसावरी॥सुनितिमचरौसोरघोषकी
नागरी तौसतसाजिसिंगारचलीव्रजनागरी नौसत
साजसिंगारहारपाटंबरसोहैं एकतेएकविचित्ररूपत्रि
भुवनमनमोहैं इंदाविंदाराधिकास्यामाकामानारि
ललिताअरुचंद्रावलीसवनमधिसुकुवारि चलीव्रज
नागरी कोऊदधिकोउदूधदाछिलेंसचलीसयानी कोउ
उमटुक्कीमाथेंधरिकोऊनौनीतमथानी घरघरतेंव
नितिकसिंजुरीजमुननटजाइ सवनुहरषमनमेंभ
योउठीस्यामगुन[illegible]इ चलीव्रजनागरी यहसुनिनं
दकुवारसखासवढिंगसवैवुलाए मनोजन्नीआरसव
लसेनमहाराजजगाए सवनुसेनदैसांवरेराधेंहुमन
चढाइ औरगोपनिजसंगलैरोकिरहेमगजाइ आए
नंदलाडिले एकसयानीसखाघेरिसवसषीवुलाई
पावनमेंइकवारलूटिहमलईकन्हाई नेकहेरिकेंफि
रिचलोइतनेसहितहुलास नहिंऊगोरोंफिरिहोइगो
यागोकुलउपहास कहतिव्रजनागरी उलटिचलीसव
ग्वालिनहयोंकोउजाननपावें रोकिरहेसवग्वालआ
पुवातनविरमावें सषासवलनवयोंकह्योतूनागरि
हरिजोग कैसेंवानछिपाइयेन्यांकहतव्रजलोग क यँ
हतव्रजलाडिलो कोऊसांगाकोउवेनुकोऊलैनंत्रव
जाए छांडिछांडिउमडारउतरिधरनीधासिआए

सू॰सा

२२४ सोछिनमछि आराधिका साछिनमछिविलवार उगरैठा
न्यौं रानकौं कालिंदी के तार आपु वृजलाडिलें नंदे
नागरि दान कान्ह ठागे वृंदावन गोप और सब संग चराव
न वछरा गोधन वडे गोपकी लाडिली तूं वृषभानकु
मारि नेकदहा कें कारने कित हि वढावति रारि कहत
तुम लैं वृजलाडिलौं आपुन जो दधि मांगि तनि कैलेघाहू तु
म आगें जो देहिं कान्हवरजौं कित नाहूं या मग गोरस
वें चवें नित प्रति आवन जांन हमैं छापदिवरावह का
परपाहि स्यो दांन कहति वृजनागरी इते मान सतरा
ति ग्वालि कहा जानि तैं पाए आधिक अमूतर धरा तिक
रति कित नैन कषाए इतना हम सों कों कहै या वृंदावन
वीच तु हम मांट दरकाइ हौं मचि हैं गोरस काच कह
तु नंदलाडिलौं कहो अकन्है या ठाट आहि तुम आज
हूं वारे काये पाहि रो दान कव हितुम भए अधिकारे
मातापिता जैसे चलैं तैसे चलिये आपु कहि न कंस
मधुरा वसैं कों कहि लेय सराप कहति वृजनागरी
तू कहि जाइ उतालजहां भूपाल तुम्हारों हम वृंदाव
न चंद कहा काहिं तुहमारों सेससहस फन नाथियों
सुरपति दानों अंस आगिनपान कियो सावरें कि
न कवा पुरें कंस कहत नंदलाडिलौ जिन केतुम सु
कुमारति न्हें हो नाके जौनों जो पूछौं सत भाव आदि
उहां उरपानों गरभ सां टिज सु धा करी तु मन वखाए

रत वातन वडे नहू जिये सुनो स्याम उनपान कहति व्र
जनागरी अरी ग्वालि मे मंतन झो नैव चन अनेरो कव
हि वालि नम यो कियो न व गामे वसेरों असुर पुहम प
र वाडि यो विधि की न्हे यह ख्याल कंवल कौ स अलमोर
ए त्यों मुरए गोपाल कहतु व्रज लाडिलो तुम जो मुरए नं
दन हत हैं तुम सोंढोटा दधि ओदन के काज देह धरि आ
ए ढोटा गढि गढि छोलन सांवरे भलो व नावन साम
राधो जिनि मूलियो हम समरथ की वाम कहत व्रज
नागरी जो हरदेह न धरै दीन को कोउ नै धारें कंस केस
को गहै प्रहम को मारउ नारें निगम कहा जस गावहीं मु
नि कह ध्यावै ध्यान दास पास गोविंद के पावै पद निर्वा
न कहतु व्रज लाडिलो जो इतनो गुन आहि तिहारे दास
कन्हाई तुम निर्मै पिद देतें सेंइहू यहे व नाई जोग जुगति
करि गावहीं तुम गति कहा ख्याल जल तरंग की मीन ह
म बांधी प्रेम के जाल कहति व्रज नागरी जदा मसम तन
देहें व थाक रि निरम वढावें मूनि दाहि निदे पन हां व सिमो
हि न पावे नजि अभिमान जु गावई गदा स्त्रीपर कास
इहर समान जु गावई तिहिं घट मेरो वास कहत व्रज ला
डिलो तुम हिं जाव पेखान्ह से हो उपहास घनेरो हम अही
र मत हीन मो हि लीज्यो ज्यों चेरो हम जु प्रेम मई वावरी
लयो वंदने हार नादिन नैं घेरा चल्यो कान्ह तुम्हारो जार

३५

कहति ब्रजनारी सब लसखान कहै हो ग्वालि रहु बठ्या भ्रमा
ऊं नोतन अधिक सुभाव रूप उपमान हिं पाऊं गुपतमे
ट विधनार चोर तिन्है सांवरे जोग यह संयोग सुनि ग्वा
लिनी न्यार कहत ब्रजलोग कहतु नंदलाडिलो ऐसी
बातें कहत कान्ह हमसों काहे तें चोरी बातें छांडि मैं न
भरि लैं चाहे तें देत उरहनो रावरे वछरा दांवरि चोर जब जसु
मति ऊखल बंधे तब हम दाने छोर कहति ब्रजनागरी वा
लि कहूं पाऊं जान कहा हम काहू जानें अ न उतर घर जाइ वि
लगाय कोन हि मानें वे दिन सुमिरो ग्वालिनी साखि जसु
न कौं पानि सब न कहा हम सों करी बसन चुराए जानि कं
हतु नंदलाडिलो कान्ह होत कहा ढीठ देन मुख ऊपर गारी
जहां छाजें तहां देहु यहां कोउ दासि तुम्हारी हरियाद धिके
वारने कोंन बढावे रारि याव न में रूनरान हों रोक विराना
रि कहति ब्रजनागरी गहि अंचल ठकठोरि नोरि हा
रावलि आरी मटकी धरी उतारि मोरि भुज कंचुकी फारी गुप
तसे न रे सांवरे कमरी धरी तुराइ या कमरी के कारने अभरन
यै लैं छुराइ कहतु नंदलाडिलो ऐसी कमरी आज कान्ह ऐसौं
कहां नहि हूजे कांचे पोत गिरि जाइ मोतिनु कौं पूजे अन मोगे
होंगार पिहोंनु मकाम रिकोतें ल सुन कमुदरियान गजरा
स्याम तुम्हारे मोल कहति ब्रजनागरी शिव विरंचि सनका
दिकआदि कोऊ नहि जानें सेस सहस फन रटैं निगम गुन ता
सबषानें तेरी सों सुनि ग्वालि नाहि मेरे मन माहि मों

नचनुईसदेषिपैयानभरी औछाहि कहनुनंदलाउलों जा
औरनोंप्रतापघेनुआहेतुचरावें परनारीघरजाईलोकल
जाहांवावे घरकेवागरावरेवातें कहनवनाई ग्वालनकी
लैघातहौजूठाछाछिछिनाई कहेनिव्रजनागरी गोकु
लकेतविलाससघासवसंगहमारे देवरूपसवग्वालकरत
कौतूहलभारे सुनौवचनयहग्वालिनीजातिअमरकीवेल
तिहूंलोकमेंगाईहौंवृंदावनकीवेल कहतुनंदलाडिलों ल
षोउपरनाछिनिदौरिउारनअटकायौ देष्योसघनदधिवां
टिषाटपहमीठरकायौ भेटिअंकभरिसांवरेकीविलासकी
वात हसनपरसपरग्वालसविमिलिविमलिदधिषात क
हतनंदलाडिलों काम्हपेरिसवदेहमहीजोवनकेमातें व
सतएकहिगांवकानराषतिहैंतोते नवनकछूवनिआईहैं
होहींवरजनहार ग्वालनकोवलदेषिहैं धरिहौंलाउउना
र कहनुव्रजनागरी अवलौराघीकानकान्ह अवतुमसौं
लरिहौं उरधरिहैंरिसकोपिवराजिअनउतरधरिहैं मोआ
गेकौछोहराजीस्योचाहतुमोहि कोकेवलरतरातहौरे
हौंनषतरतोहि कहनिव्रजनागरी सुनतहसेनंदलाल
ग्वालिमननामसआन्यो वेचेअमृतवेनकोपिमारिक
हतनजानो कहांवसतिहै ग्वालिनीसोपुरमुगदगांवा
र व्रजवासीजानैंकहानामसकौव्योहार कहतनंदलाड
लों पंथछाडिनंदलालदानहमतुम्हेनदेहैंविनाकेहैव
जलोगकहौकैसेंयातियेहैं लाजनहीयहवातकावोल

सू.सा
236

नहोसबनराइ कहंकंसहानिपाइहि गहननिरोगेपाइ
कहतिब्रजनागरी ।चितै।चितैमुसिकाइहाथपूरनद
।घेदोनां दूनसुंदरी।विचित्रउतैंहासियांमसलोनां
अतितामसनुहिग्वालिनी होंजानोतोहि आदि व्री
चतुराइआदितें करनचलाप्रियादि कहतुनंदलाउ
छोर लों लईओटनीदूरिउारनउरझाई दयोसवनदाधिवां
टिझटकिमटुकीढारनाई वरतिकोनक्योहमरतोहिब्र
धूलाजनआवैं ओरजोकोसोकरैकहोवेसैंपति आ
वैं मटुकीलईउतारिकेंनरिविलासकीवात नेरंवदम
केवेठिकें।विमलिदिमलि[illegible]घिवान कहनुनंद
लाडिलो सेससेजविसारभूमिजाकीफुलवारी पवनबु
हारेयौरसदासंकरकुटवारी धर्मराजजहांपौरियासन
कादिकप्रनहार मेघछ्यानवेंकोटिहैंजलकेढोवनहा
र कहतुनंदलाडिलो जन्मजननिपर हस्योनानकोर
धर्मनसाथों नंदगोपघरआइपिताकोनांवधरायो
इनमैनेइननेकरेआदिघ्या।छिपियाइ तुम्हेदोसनाहिसा
वरें छोटयौगुन्योनजाइ कहतिव्रजनागरी आगमत
अलखअपारआगमअविगतिअविनासी आदिपरम
परसोत्तममायाताकीदासी तोहिमिलेजोछैनएक
हारहीगहिमोन तेरेंआगेग्यावग्वालिनीद्वैमेंजोछौ

कौन कहतु नंदलाडिलो हम सों छाहिं कान्ह जिन्हों तुम
से प्रतिपाले तुमपूरि सब भांति मात पित संकट घाले
चलत कहा उपराह दे अजहूं नहिं बिसात तुम सिर त्रन
दै पूछिये कहां गये वे सात कहति व्रज नागरी कंस के स
करा हौं भूमि को भार उतार्यो उग्रसेन सिर छत्र चौर अप
ने कर ढारौं मथुरापुर जु वसाइ हौं असुरन कौं जम हाथ दे
नंदलन विरदावली सांचा त्रिभुवन नाथ कहतु नंद लाडि
लो नव छिन मार्यो कंस भूमि को भार उतार्यो मात गोद तें
जाइ छिपे गोकुल पग धार्यौ अव तौ वहु तव नाइ हौं दही
दूध की घात जो पैं वलि वलवार हौं मधपुरा लौं छिन जात
कहति व्रजनागरी जव जैहौ मधुपुरी वहुरि गोकुल नहि
ऐहौ यह अपनो परताप नंदजसुधा हि दिखैहौ वचन
लागि कै हम कियो जसुधा कौ पै पान मोहि गोप जिनि जां
नियो ग्वालि निसु मो निदान कहतु नंद लाडिलो वहुत
दिनन में कान्ह आजु रहि मारग आई तुम रे कान नंदलाल
वहुत हम दई ढिठाई कान्ह विलग जिनि मानहु राखौ पि
छलौ नेहु दूध दही कौ कोंगिनें जो भावे सो लेहु कहति
व्रजनागरी लै आगै दधि धर्यौ कान्ह लीजे जो भावै धार
मंजारी जार आज कांहू नहिं आवें हम अनुपम घात कौं
लेन दान कौ नांव हम तुम तो व्रज लाडिले वसत एक ही गां
व कहति व्रज नागरी नवरस सखि आतुर स्याम के रू

सू-सा
२३८

पसमानी कहतिचलीदेसेनकान्हअंतरगतिजानी कुंज
कुटीमेंलाउलिआयौभलौमनाइ अबहचिराधाकौरबी
साधियनमांहीजाइ कहतिब्रजनागरी हमगंवारितुम
नहनरूपत्रभुवनमनमोहे तीनलोकपरमानत्रासि
घासनसोहै हमैगरवसवमिटिगयौदेखिचरितरहिबा
ल दयौदानमनमानिकेजीतेमदनगुपाल कहतिब्र
जनागरी धनिनंदकौग्रेहधन्नगोकुलतहांआए धनगो
धनधनिगोपिकाहरिदरसनपाए धनियहकगरौआ
जुकौघासघनाहीधार नंदसुवनपरवारिये तनमनवारं
वार कहतिब्रजनागरी अभरनदएमगाइकियौगोपि
नुकौभायौ हिलिमिलिकियौसनेहुआपुकरमांटउठायौ
जुगलकुंवरकेवारनेंगईसकलब्रजनारि कुंजकेलिमनमैंब
सेंगाईसूरसंभारि ५४५ ॥रागटोरी॥ यावनमेंकोउहै कैनां
हीं वारवारपूछतिविरछनकौंसोरसगोरसलेहौकेहमैं
जांही आपुहिकहतिलेहुनाहीदधिकोरहुमननतरजाति
मिलतिपरसपेहांसिहंसिदेषतिकहतिकहाइनराति नाकौं
कहतिनासुधिमांहीसोजैनतिमनमांहीं सूरस्यामर
समरीगोपिकावनमेंयौवतराही ५४६ ॥रागसारंग॥
नेकनहींघरसोंमनलागत पितामातगुरजनपरमोध
नतिनकेवचनवानसमलागत तिनकौंधृगधृगकह
तिमैमननतिनकौंनवेभलेहीत्यागति स्यामविमुख

नतनारियथासवकौसेमनजधनौ अनुरागति तिनकौव
दनहरसजिनिहजौवारवारविधिसौयहमागत यहत
नसूरस्यामकौ अखैनिकन विसरति सोवतजागत ५
४७॥ राग कान्हरा॥ दधिवेचनिरजगलीफिरें मोरसले
नवुलावतकोउ नामसुधिनेकहुनकरें उनकीवातसु
नतनहिंश्रवननकहतकहायहघरनजरें दूधदहीं
कहालेतनकोउ पानहिनेसिरलियेफिरें वोलिउठोपुनि
लेहुगुपालहिघरघरलोकनलाजनधरें सूरस्याम
कोरूपमहारसजाकेवलकाहूनडरें ५४८ ॥ राग मलार॥
कोउमाईलैहैरीगोपालहि दधिकौनामस्यामसुंदरर
सविसरिगयोव्रजवालहि मटुकीसीसफिरतिव्रज
वीथिनवोलतिवचनरसालहि उफनततकचुवत
चहुंदिसतेंचितलाग्यौनदलालहि हंसतिरिसात
वुलावतिव्रजतेंदेखौउलटीचालहि सूरस्यामवि
नुऔरनभावेवाविरहिनवेहालहि ५४९ ॥ राग का
न्हरा॥ मटुकीसिरधरिलएग्वालिनीकान्हकान्हकर
तीडोलेरी विवसभईतनमननसंभौरैआपुविका
नीविनुमोलेरी जोरईपूछनुयामेकहाहैरीलैलेकहति
फिरतिढोलेरी सूरदासप्रभुकेरसवसभई ग्वालिनि
विरहावसवौलेरी ५५० ॥ राग धनाश्री॥ वेचतिहैदधि
व्रजकीषोरी सिरलेभारसुरतिनहिंआवतस्याम
स्यामटेरतिहैभोरी घरघरफिरतिगुपालहिवेचति

मगनभई मनकुंअरकिसोरी सुंदरवदननिहारनकारन
अंतरलागी सुरतिनकाओरी ठाढीरहतिठगीमारगमें मां
नहाटमंदुकासिरफोरी सूरदासप्रभुरासिकसिसेमनि
चितचिंतामनिलयोवरजोरी ५५१ ॥ रागधनासिरी
गोविंदसोंप्रीतिकरीतवहिक्योंनहटकी अवतोवात
फैलिपरीजैसेंविरधवटकी घरघरनितयहैघेरवानीघट
घटकी मैंदेखेहस्तिसमानफिरतिप्रेमलटकी मेंतोयह
सवेसहीलोकलाजपटकी वेलततेंचूकजानहोनिकलानटकी
जलरजामिलिगांठिपरीरसनाहरीरटकी
छोरितेंनाहिछुटतिकईवारझटकी मेंटतक्योंहूनमिट
तिछापपरीटटकी ५५२ ॥ रागकान्हरा ॥ मेंअपनोमन
हरिसोंजोरयों हरिसोंजोरिसवनसोंतोरयों नाचि
कछोनवघूंघटछोरयों लोकलाजउरफटकिपछोरयों
आगेंपाछेंसमुझिवहोरयों मांझवाटमटुकीसो
फोरयों नहिमान्योकहिसवननिहोरयों कहाभयो
काहूमुखमोरयों सूरस्यामसुंदरचितचोरयों लोक
वेदतिनकासोतोरयों ५५३ ॥ रागकान्हरा ॥ राधेविवस
स्यामविनुछीन सारंगवरनविलासविलोचनहरि
सारंगजानिरतिहीन सारंगवचनकहतिसारंगसों
सारंगरिपुदेराखतिजीन सारंगपानगनुहिपुसारंग
कहाकरनचालिलेहुनछीन सुधापानधरिकुचनी
कोविधिरहसोसुखमंदिरामहीहीन सूरप्रभुईसनजाहु

रतिनागरभुजायसारिवामकरलीनी ५५४ ॥रागजैतसिरी
व्रजवसिकाकेवोलसहों तुमविनुस्यामकोरनहि
जानोंसकुचिनतुमैकहों कुलकीकानिकहांलोंकरि
हौंतुमकोंकहांलहौं धिगमाताधिगपिताविमुखतौ
भावेतहांवहौं कोऊकछुकरैकहैकछुकोऊहरिविनु
पलनरहौं सूरस्यामतुमकोंविनुदेषेंतनमनजीवद
हौं ५५५ ॥रागसारंग॥ स्यांमकौनकारेकेगोरे कहारह
तकोकेहौंढोटा विरधततनकेधौंहैंमोरे इहांरहतकै
औरगांवकहूँ मैंदेषेरीकहूंनांहीउनको कहोंउन्हेस
मुझाइवातयहमोहिलगावतिहौतुमजिनको कहां
वाहीवेआहिकहांकेतुममिलवतिहौकाहेऐसी
सुनोसूरमासीमोराकोंजोरिजोरिलावतिहौकैसी ५५६
॥रागसूहा॥ सुतालियेजननीसमुझावति सांग
विटोयनकेमिलिविलैस्यांमसोपसुनिसुनिरिस
पावति जातेंनिंदाहोतिआपनीयातेंकुलकोगारा
आवति सुनिलाडिलीकहतिहैंतोसोंपरयातेंरिसक
रिधावति अवसमुझीमैंवातैसुनिकैहूहैनहिएवात
उआवति सूरदाससुनिसुनिएवातैंराधेमनमनहरषवढा
वति ५५७ ॥रागभैरव॥ राधेदधिसुतक्योंनदुरावत
ति हौंजुकहतिवृषभाननंदनीकाहेजीवसतावति
जलसुतदुषीदुषीहैमधुकरदोपंछीदुखपावत

सारंगदुखी होत सारंग विनु नो हि दया लहि आवति सारं
ग विंदुर पुजी मैं वक ओट करि जो सारंग सुखपावत सूरदा
स सारंग विहि अमन सारंग कुलहि लजावति ५५८
॥राग विहागरा॥ मेरी सी कहो हैन करति अजहूं भोरी
थिरही हौं कहति तो सो उरति ससिनिरखि मुखचं
ल तु नांहि नैनैन निरखि कुरंग कंवल खंजन मीन म
धुकर होत है चित भंग देखि नासा कीर लज्जित अधर
दसन निहार विंवउर जत विधू न विद्रुम दामिनी उरभार
उर निरखि चकवा नभ नर्त्तन कटि निरखि वनराज चा
ल निरखि मराल भूले चलत ते मनराज अंग अंगन अनू
प सोभा मन हि देखि विचारि सूर मुखपट देति नाहे न
वरस दस भुजभार ५५९ ॥राग सूहा॥ अवराधा तुम भई
थं सयानी मेरी सीख मानि हि हिर्दे जहां तहं डोलति बू
झि आयानी भई लाज की सामानन मैं सुनियह बातन कु
अरि मुसकानी कहा हसति मैं कहति भलातै सुनत र
नही लोगन की वानी आजुहि तें कहुं जानन दैहौं कहा
कहति री अकथ कहानी सूरस्याम के संग न जैहौं जा
कारन तू मोहि रिसानी ५६० ॥राग टोरा॥ भूलीवा
त वावा आवनरि कान्ह लगाई देति मुहि गारी कैसी
वउी भई कवत है कान्ह मोहि मारग मैं रोक्यो जाति दु
नी सखियन संग लैके कहन लगे मुहि दैह खिलौना

तादिन मेले भगी तुरैंवैं छांडि आवैं मुहि कान्ह कुंअर सौं
तिनसौं कहति फिरति तोसौं हैं सूरजन निसुनि सुनि ए
वातें कहति कहावति मोसौं हैं ५६१ ॥राग गौरी॥ वडी भई सौं क
महिमा ई लरकाई वारेही तें ढंग न न लागी आजु आपनी
टेक चलाई अवही मचली जाइ तवे पनि कैसें मो सौं जा
ख बुझाई मानी हारि महरि मन अपने वोलि लई हैं सखि
कुलराई कंठ लगाई लेइ अति हित सौं कपुनि पुनि कहि
मेरे रहि आई सूरदास अति चतुर राधिका राखि लई नी
का चतुराई ५६२ ॥राग कल्यान॥ सखियन यहै विचार प
र्यो राधा कान्ह एक भए दोऊ हम सौं कोप कर्यो वृंदावन
तें अवही आई जियमें हर्ष वढायो औरै भाव अंग छ
वि औरैं स्याम मिले मन भायो तव वह सखी कहति मैं
पूछी मोतें न भिरि हंसि हेर्यो जव ही कही सखि मिलि
तो हि हरि तव हि सुमुख मोसौं फेर्यो एरी वात चलावन ला
गी मैं वाकौं पहिचानी सूरदास प्रभु स्याम मिलत ही
औसी भई सयानी ५६२ ॥राग नट नारायन॥ काकौ
काकौ मुख खाई वात न क्यौं गहियै पांच कौ लागावै सात
कूरे ही वनावै वात सांची तौ नैं कहा इतौ तो सव सहियै वा
त नाहिं आकास सुनत न आवै सास वोलिन कछु आवै ता
तें मोकौं न कहियै औसें कहे मन नारि विना भए चित्र कारि काहे
कौं मैं देख्यौ कान्ह कौं नैं कियौ सहियै घरघर भयौ घेर वयो

मोसोंकियौवैरयहसुनिसुनिमाईइदेसहिदाहियें सूरदास
परउपहाससहोइमेरोसिरनंदलालमिलेतौपैऔरकहा
चहियें ५६७ ॥रागकान्हरा॥ बनीमोतिनकीमालमनोह
र सोभितस्यामसुभगउरऊपरमनोगिरितेंसुरसरीधसी
धर तटभुजडंडभवरभृगुरेषाचंदनचित्रतरंगजुसुंदर
मनकीभिरनहियेकुंडिलछविमगरमीनआवततागें
सर जगयपवीतसुदेससूरप्रभुमध्यधारसिवारवेनावर
संषचक्रगदापद्मपानआहिकंवलकपोतहंसकोनेघर
५६८ ॥रागसारंग॥ विधितेंचूकपरीमेंजानी आजुगुविंद
हिदेषिदेषिहौंइहैंसमुझिपछितानी राचिपचिसोंजस
वारिसकलअंगचतुरचतुरईठानी दृष्टिनदईरोमरोमप्रति
इतनीकलानसानी कहाकरौंअतिसुखदैनैनाउमगिच
लेभरिपानी सूरसुमेरसमाइकहांलौंमध्यवासनापुरानी
५६९ ॥रागरामकली॥ देषौमाईसुंदरताकोसागर बुधिवि
वेकबलपारनपावतमगनहोतमननागर तनअतिस्या
म अगाधअंवुनिधिकटपटपीततरंग उरमोतिनकीमा
लविराजितआइमलिमनोगंग चितवतचलतअधिक
उरउपजतिभौंरपरतसवअंग नैनमीनमकराकृतकुंडिल
भुजबलसुभगभुजंग मोरमुकटकंचनमनिभूषनअवलो
कनिसुखदेत मनुजलनिधिमथिप्रगटभएहैंसासिश्रीसु
धासमेत देषिसरूपसकलगोपीजनथकितभईव्रजनारि
नदिपसूरकहिसकतनसोभारहेप्रेमपचिहारि ५७०

॥राग केदारा॥ प्यारे नंदलाल हों मोहीं तेरी चाल मोर मुकुट डो
लन मुख मुरली अलमंद मजुतमाल सिंघासन नाचत आ
नंद मकराकृत कुंडिल छबि राजति अति लोल कहत आध
र मुसकनि मैं मधुर मधुर बोल चितवन चष अतिहि चप
ल अति भ्रूभंग धनुक बान उरि मनो बस भयो अनंग बदन
सुधा को सरवर कुटिल अलिक चार मानो मृगनैन निकै बाधी
फंदवार पीतंबर छबि निरख घन दामिनि लजियाइ चमकि
चमकि सावन मनु घन मैं दुरि जाइ चरन कमल उलमिलत
अति राजति बन माल प्रफुलित केल नाम नौ चढी हैं तमाल
सूरदास या छबि पर वारौं तन प्रान गिरधर प्रिय देखि देखि
कहा कै रौउं नमान ५७१ ॥राग आसावरी॥ रूप मना मजब
स्रवन सुन्यौरी तबतें भूभरइ हौं बौरी वन समान घरबार
गुन्यौरी भरि भरि आवत नैन चैन नहिं वेन घटे यह कहा
भई री मूली भूष दिसा सव तन की कछू और रे सा होइ ग
ई री को माता को पिता वहिनि को भ्राता को मन मर न दहा
री सूरस्याम जब परे दृष्टि मग लोक लाज कुल कानि व
हारी ५७२ ॥राग सुघराई॥ मोहन मुरली वजाइ री काई हों
मोहारी हौं मोहारी सांझ समै देखै मैं आ बिन तब तें चित
वत मग जोहारी कौंरे देह गृह सुधि का को निस दिन कल
न परति मोहारी मैं हरि हाथ बिकानी सजनी कहत पुर
कारि तौ दोहारी मिलत न हां न हिं संग ते त्यागत नातें दूछ
तु हौं ती हारी सूरस्याम तब तें नहिं आए वे विसवासी हैं

सू॰सा
२४१
४१

ढ़ोहारी ५७३ ॥राग अडाना॥ स्यामभेसे रूठोनामोहि मो
हारी मोहारी जवनैंमें देषे स्याम सुंदर अन्हाई माई चलि
न सन्नति आमन पति दोहारी ओलैं आई कोने भाऊ चरनच
लाई कोने वहियां गहामेरी सोधो कोहारी सूरदास प्रभु दे
वे सुधि बुधि रही नहीं अति विदेह भई अव में वूझति तो
हारी ५७४ ॥राग सुधराई॥ अंषिपन वसें जियरा में वसें
हियरामे वसे निसदिन प्यारो मनहू में वसें रसना में वसें
अंग अंग वसें सुनंदवारौ सुधिहू में वसें वुधिहू मे वसें उ
रजन में वसें जु मुरारवारो सूरस्याम वन घरहू वसें संग ज्यों
रंग जल हो तन न्यारौ ५७५ ॥राग विलावल॥ देख्यो मैं
दधिसुत में दधिजात एक अचंभो देषि सषारा हिपुमे रि
पु जु समान दधिपर कीर कीर पर पंकज पंकज के दो पात
यासो भांति देषि पसुषा लिन फूले अंगन समात सुंदर
वदनावि लोकन स्याम को नंद निरषि मुसकात औसो
ध्यान धरें जो हरि को सूरदास वलिजात ५७६ ॥राग
सोरठ॥ नंदनंदन विन कलन परें अति अनुराग पुं
जजुवती सव जहां स्याम तहां चित धरें भवन गए
न हां मन नहि लागि गुरगुरजन अति त्रास करें वेन छुक
हैं भरें वपू औरि सासन न दया पर न हरें यहे जु मे पिति
मात सिषायो वोलन हे नहि रिसन जरें सूरदास प्रभु
सों चित उरझो यह समुझै जिय ध्यान धरें ५७७ ॥राग सा
रंग॥ हम अहीर व्रजवासी लोग औसे चलो हंसे नहि
कोऊ घर में वैठि करो सुख भोग दही मही लोना घृत वे

चौंसवै बरौ अपने अपजोग सिरधर नंद समधु पुरी वै दयौ छि
न भमांझ करि उरै सोग दूनिदूनि धरनी परा धारौ अवला
मानुख करन अजोग सबौ सूर अवनव जानौ गे जबदि बि
राधा संजोग ५७८ ॥राग गौड मलार॥ मुनि कुल करानि जु
मैल लनासौं अगरौ मांडौंगी मैं उन केवी च परौ जिनि अ
धरन घाडौंगी चतुरंगा सौं काम परयौ है मैं सं छाडौंगी सूर
दास प्रभु नंद नंदन कोरस तें आरौंगी ५७९ ॥राग गौड मलार॥
सुता सौं कहति वृषभान घरनी कहां तू राधिका भोर तें फिर
नि है मुगति मो पैन हि जाति वरनी तोरि मोतिन लरी गुप
न कर धरी वह नेह वस सकुचि रहि केन वोलो मनौ खंज
न चपल चंद मंद राय रे उ उतन न हि वन तरन उनडोले कहां ने
रा भ्रकुटि परा धौं लाडिली अवै ते तू कहां जाइ मीरी सूर
जननी कहै आजु वोले न तु हि पर हि धरि हौं आइ धारगी नी
री ५८० ॥राग नटनारायनी॥ जननी एनि पुनि गैरौ नि
हारै देखौं नहा मोन सि री माला सो जिनन [illegible] ति तहूं डारै
वोले न हा सुवात सुनि रहै मन ल्ला गभु सकान अति
ही मोकौं पेच भरि है वनि हैर हा कौ जांन भला बूझ मेरे
चित आरै दुख प्रीति है सांची सूर न राधिका नागरि म
न बच हरि नागर रंग राची ५८१ ॥राग धनासिरी॥ जा
वन हांमुत सिर राग गंवाई सो नि सैंघ खेर पैही अैसो ढंग
लाई मोरि जोरे जुहो व रजति हौ दे षौ रागु नमार इक टक
नगासन सत दामन कौ लाघर कौ दे दसाई जावे हाथ परै

सूसा
२४२

सवदेह धरेवेहे निधियाई सूरस्नतिरी कुंवरीराधिकानोर
को महीमलाई ५८२ ॥रागकल्यान॥ जेहो कहा सुनसिरी
मोरी अवमुधिभई लई वाही नेह सनिचलाइ घभानकि
सोरी देषो धौं कहा करी हौं बाको वडे लोगहू सो घतचोरी
जो कहूं बोज लगा रूपाईहौं लेहौं छानिपकरिवरजोरी मो
को आजुअवेरलगी गाइ दूहों गी वज घरघर बोरी विहस
तिसूरचलानिघिरकेहूं सवसों चतुरराधिकाजोरी ५८३
॥रागविलावल॥ महरि कह्यौ नंदलाउले संगसघा बुला
वहु औरें ज लेऊ आइकै हलधर कोल्यावहु हलधर लएउ
लाइकें मोहन अरि आदर दाऊजू व लिजेंइयै भोजन नि
जमंदिर कान्ह जाइनुमजेंवहु मोको भूंषनाही सषासंग
ह रिलेगए वैठे इक ठाही षटरसविंजनकोगिनैं वहुभां
तिरसोई सरसक निकवेसनमिलीतच रोटीपोई प्रे
मसहितपरसन लगी हलधरकीमाता ग्वालसषासव
जोरिकै वैठे नंदजता सषासवैजेंवनलगेहरि आए
सदीनों सूरदास प्रभु आपहू अरु ओरहि लीन्हौं ५८४
॥रागआसावरी॥ नंदमहरजूकैपिछवारेराधा आनिवा
तानीहो मनी अंवदलमोर देषिकै कोकिलअतु आवा
नीहों झूठेनामलेतिललितानौ काहेजाइ परानी हो
वृंदावनमगजातिअकेलीसिरलिदहीमथानीहो मैवि
दानिरषतिद्धरेके स्यामतवैपहिचानीहो कोअक लाव
दानीहो ५८५ ॥रागराम
गुनआगरनागरसूरचतुराईदानीहो
कली॥ स्यामसषाजेंवतहा छांडे काकोकोरडारिपन

वोरेअरुचलेअतिचांडे चअनभरिजननीलषिदोऊचअत
नएसबग्वाल अतिआतुरतुमचलेनहांहो सांचीनहीगु
पाल अवहीएनसषायहकूमैगाइरहावनत्यार सुनैसू
रमेजेवनवैठेपोवहतुधिगईमुलार ५८६ ॥रागमलार॥ ओ
रूरआयोसीतलवूंदयवनपुरवाई जहांतहांतेउमडिघु
मडिघनकारीघटाचहूंदिसछाई भीजतदेषाराधामाधो
लेनारीअमरीउढाई अतिजलभीजिचीरवरटपअंगुओ
रसवेटपरतुअंवराई अंपतुतनत्रयओढ्रियहंसिनैंअ
पनेअंगलगाई ऊरअगोरसूरप्रभुप्यारीरहेउपरनावितन
समाई ५८७ ॥रागमलार॥ दोऊमिलीभीजैनअटकेवात
न स्यामास्यामकुंजतेनिकसेअंवरलागेगातन गोपि
ग्वालसवनलवनवनितातोऊनहासंगसाथन परमा
नंददासप्रेमगाकुरवूंदवरावतपातन ५८८ ॥रागमलार॥ हरि
संगनीकीलागतिवूंदें - कंचुकीचूरचूनरीभीजो घेलतिक
हूंपरीसिरमूंदें ससिवदनीमृगनैनीवाला नवनवलस
कुचमूंदें नहिंअंगमुदितसूरजप्रभुमेटतिविरहादूंदें
५८९ ॥रागमलार॥ दीजैकान्हकांधाकामरी नन्हिनन्हि
वूंदनवरषनलाग्योभीजतिहैनूसपामरी हसिहंसिरी
झिवेरिरहेदोऊओढिसुभगपीतंवर वारवारअतुलार
राधिकादेषोमेघाडंवर शिवसनकादिकनारदसारदअं
ननपावेतुमहीरि सूरस्यामगतिलषिनपरतिकछुवार

ना ग्वाल निज संवर ५८० ॥ राग कनड़ा ॥ मेवलि जो वढ़
ने पाको करते और डारि उठि धायो ध्यान वात मुनि गैया
को धौरी गाइ आपनी जानी उपजी प्रीति लेवे याको ना
तो जल समोइ पग धोवति सरस प्रीति हित मैया को जो
अनुराग जसुधा के उर वरने वुद्धि न कैहै याको यह सु
ख सूर और कहुं नांही सौ है धात वल मैयाको ॥ ५८१

॥ राग सोरठ ॥ राधा उर उरात घर आई देखत हौं की राति
महतारी हरषि कुमरि उर लाई धीरज भयो सुता मा
ता जिय दूरि कियो मन सोच अपनी को में काहे त्रासी
वहस्त्री यौं यह पोच लैरी मया मोति सिरी यह जाको
रन मे त्रासा सूर राधिका के गुन ऐसा मिलि आई आवि
नासी ५८२ ॥ राग आसावरी ॥ स्याम भए र ष भान सु
ता वस और नहीं कछु भावे हो जो प्रभु ति हूं लोक कै
नाइक सुर मुनि अंत न पावे हो जा कौं शिव ध्यावत
निस वासर सहसानन नित गावे हो सो हरि राधा
दव दन कौं चषचकोर तरसावे हो जाको देषि अने
क अनंगनि नागर चित भर मावे हो सूर स्याम कोस्या
मा ऐसीं ज्यों संग छोह डुलावे हो ५८३ ॥ राग राम
कली ॥ सारंग सारंग धरहि मिलावहु सारंग विनै कर
ति सारंग सौं सारंग दुख विसरावहु सारंग समैं दहत
अति सारंग सारंग सारंग न नहि दिखावहु सारंग प

ति सारंग धरिजैहो सारंग जाइ मनावहु सारंग चरन सुभ
ग करि सारंग सारंग नाम बुलावहु सूरदास सारंग उप
कारी सारंग मरत जियावहु ५८४ ॥राग विहागरा॥ मोतें
यह अपराध पर्यो आए स्याम कहा भए ठाढे मैं अपने मन
गरब धर्यो जानि बूझि मैं यह ब्रत कीन्हो सो मो सीस पर्यो
मन अपने ढिग ही तें मो सों बारंबार लर्यो मैं अब विमु
ख रहौ विसन मुख नेकु न उतहि ढर्यो सूरदास मन आप
स्वारथी आहि न काज सर्यो ५८५ ॥राग सोरठ॥ मनजो
कह्यो करै री माई नैरी न कही बात सत होती । मिलतो उन
हा कौं उठि धाई निलज भई सुधि बुधि विसराई गुरजन
बरत लराई इन कुल कानि उतै हरि कोरस दुविधा मैं दिन
जाई आप स्वारथी सब दे घतै हैं ये मो कौं दुखदाई सूरदा
स प्रभु चित्त आपनौं बरतन कह्यौ रिसाई ५८६ ॥राग दे
साष॥ मैं कियौ मानैं पैम न न रहै कोटि जतन करि करिय
चिहारी मोहि विसरि उनसो चगा है मोकौं निदरि मिल्यो
है हरि कौं इतनेपरतन मदन दहै सूर स्याम संग नैन त्याग
तु सो अति [illegible] पर आपमान सहै ५८७ ॥राग विलावल॥
भूलि नहीं अब मान करौरी जातें होइ अकाज आपनौं का
हे करि सुमरौरी ऐसो तन में गरब न राखौ। चिंतामनि वि
सरौरी ऐसी बात कहे अब कोऊ ताके संग लरौरी लाज पं
थ चलिवे कहा सरि है स्याम हि संग फिरौरी सूर स्याम जो

अपुस्वारथी नाहिन दरस धरोंरी ५९८ ॥राग आसावरी
मोतें चूक परी मैं जांनी मिलें स्याम बकसाऊंरी कहा करों
दसनन तृन धरि धरि लोचन नीर बहाऊंरी चरन कमल
गोंगहि करसौं अपने सीस छुवाऊंरी मुख चितऊं पु
नि धरनि निहारौं ऐसी रुच उपजाऊंरी मिलौं धाइ अ
कुलाइ भुजन भरि उरजी तपति बुझाऊंरी सूरस्याम आप
राध छिमा हीं अबकैं कहि जु मनाऊंरी ५९९ ॥राग गौ
रा॥ हरि सों मेरौ मन यौं लाग्यौ ज्यौं ठग लागै पर छांहा मेरौ
मन जिय पिय बसत है पिय जिय मो मैं नांहा ज्यौं चकोर
चंदा कौं निरखत इत उत दृष्टि न जाई सूरस्याम छिन छि
न जुग सम सो क्यौं करि रैनि बिहाई ६०० ॥राग टोडी॥ ललि
ता मुख चितवनि मुसकानी आपुहं सो जिय मुख अवलो
कन दुहू परे तिन जानी अति आतुर ह्व धाई ब्रं आई ता तें व
दन दुरायौं पूछत हैं कन नंद नंदन जू चितवन नैन न चुरा
यौं न वबोली कहा चतुर नागरी अचरज कहा सुनाऊं सू
रस्याम जो चलो तुरत हां नैन न निजाइ दिखाऊं ६०१ ॥रा
ग मारंग॥ अद्भुत एक अनूपम बाग जुगल कमल पर गज
बर क्रीडत ता पर सिंघ करत अनुराग हर पर सरवर सर
पर गिरवर गिरि पर फूले कंज पराग रुचिर कपोत बसत
ता ऊपर ता हां अमृत फल लाग फल ऊपर पुहुप पुहु
प पर पल्लव ता हां रहत रूप बक मृग काग खंजन धनुक

चंदनाऊपरतहांवसतहैमनधरनाग यहरसविरसहो
तनहिन वहूंसोभानहांकरतिनहित्याग सूरदासप्र
भुतपतहरतलछिवमौरतिपतिसिंधुसुहाग ६०२
॥रागनट॥भुजभरिलईहिरदैलाइ विरहव्याकुलदेखि
वालानैनदोऊभरिआइ रैनिवासरवीचहीमेंदोऊग
एमुरझाइ मानौविरछतमालवेलीकनकसुधासिंचा
इ हराछिउहउहकुसुमफूलेप्रेमफलनलगाइ कामविर
छनवौरतरनेमुरतिमेंविसराइ देखिललितामिलन
वहआनंदउरनसमाइ सूरहाछेस्यामस्यामात्रविधि
तापनसाइ ६०३ ॥रागरामकली॥ ललिताप्रेमविवसभ
ईभारी वहचितवनिदोऊनैनपरसपरलखिसोभाव
नवारी ईकटकअंगअंगअवलोकतअतिविवसभएमु
रारी कहतनवनैंदुहुनकीसोभाएकतेंएकअधिकारी
ललितासंगसखिनसोंभाखतिदेखौछविप्रियप्यारी
सुनौसूरज्यौंहोमअगिनघृतताहूतेंयहन्यारी ६०४
॥रागकेदार॥जदपिराधिकाहरिसंग हावभावकटाक्ष
लोचनकरतनानारंग हृदैव्याकुलधारनांहावदनक
वलविलास ज्यौनिंजलनामपुनिपुनिज्यौंअधिक
हियास स्यामरूपअपारइतउतलोभपतिविस्तार
सूरगतिनहिलहतकोऊदुहुनमिलिअधिकार ६०५
॥रागविहागरा॥ नखसिखअंगअंगछविदेखतनैना

सू.सा
२५४

नाहिंअघाने निसवासरएकटकहीराषेंपलकलगाइ नजांनें छवितरंगआनितसरिताजललोचनत्रिप तिनमानें सूरदासप्रभुकीसोभाकोंअतिलालचललचानें ९०६ ॥रागविभास॥ ललितासंगसषिनकोलीनें दंपतिसुखदेषतिअतिभावतुरकटकलोचनदीन्हें प्यारेस्यामअंगअंगकीसोभानिरषेदेष्योचाहत आवत नागरनागरिवननेंनिंदरावतनआगाहत उतउदार सोभाकीसीवांइतहिलोभनहियार सूरस्यामअंगअंगकीसोभानिरषतवारंवार ९०७ ॥रागमारू॥ नयेसंग मरतिषेतनीके एकतेंएकरनधीर जोधाप्रबलसुरतनहिनेकअतिसवलजीके मोंहकोउंडकसिवानतीछनकुटेनैननाराजोकटाछनिहारें हंसनिअतिपरसपरचमककौकामहाउगीकरवारवारनसंभारें पानपटउरिकंचकुचसुचिकरनसेलकचसन्नाहटूटेसुतनतें भुजाभुजधरनमनोदुरिदसंडनलरनउरउरनभिरेंदोउजुरेमननें लंकलपटानिमनुसुभटचोटनलरनषेतरतिसेजरचिनांमकीन्हा सूरप्रभुरसिकरसमिनिमहाराधिकानागकोंसहितसुखलूटिलीन्हो ९०८ ॥रागविलावल॥ धनिकान्हधनिराधागोरी धनियहभागसुहागधनियहधनिनवलनवलानवजोरी धनियहमिलनधनियहवेनिधनिअनुरागनहीतर

चथोरी धनियह अरसपरस छविलूटन धनियह मत्त
चतुरमुख भोरी प्यारी अंग अंग अव लोकति पिय
अवलोकत लगति ढगोरी सूरदास प्रभु राधिका मन
ए नागरि पर वारत त्रैतोरी ६०८ ॥राग धनासिरी॥ नाग
रि छवि पर री झे स्याम कवहुं क वारत है पीतंवर कवहुं
क वारत मुक्तादाम कवहुं क वारत हैं वर मुरली कवहुं क
वारत मोहन नाम निरषि रूप मुष अंत लहत न हित न
मन वारत पूरन काम वारंवार सिहात सूर प्रभु देखि देषि
राधा सी वांम छिन कौ पल क ओट न हिं चाहैं मन य
ह भाषत आठौं जाम ६१० ॥राग विलावल॥ स्याम नि
रषि प्यारी अंग अंग सकुचि रहत मुख नैन न हि चि
तवत जिय वासि रहत छविली संग चपल नैन दीरघ
अनियारे हाव भाव नाना गति रंग वारौं मीन कोटि अं
बुज गन षंजन वारौं कोटि कुरंग लोचन नहिं हरात
स्याम के चित न हू विन ललना के अंग सूरदास प्रिय प्यारी
के वस ज्यौं वस डोर पिरति हि चंग ६११ ॥राग आसावरी
निरषि स्याम प्यारी अंग सोभा मन अभिलाष वढाव
ते हैं प्यारी के आभूषन लै लै अपने अंग वनावते हैं
कुंडल न कनरव न लेसा जत नासा वेसरि धारते हैं वें
दी भाल मांग सिर पारत वेनी गूंदि संवारते हैं प्यारी ने
न न की अंजन लै अपने नैनन अंजते हैं दे पीतंवर औ

सू॰सा

२५७६

छिओरछनीराधाकोमनरंजतहैं कंचुकीभुजघहरतउरधा
रत अंगहमैंलेहिनावतहैं. सूरस्यामललाचतनमत्रय
पर श्रीसिंगारसुखपावतहैं ६१२ ॥रामनट॥ स्या
मास्यामछविकीसाध भृकुटकुंडिलपातपटछवि
देखिरूपअगाध प्याहाहाकरतिपुनिपुनिदेहुप्या
नममोहि अंगअंगसंवारिभूषनरहतिवाछविजो
हि काछिकछनीपीतपटनटविंदिनीरूतिसोभ इ
देवनमालाविनावतदेखिमनछविलोभ स्वनकुंडि
लधारिसोभासीसरविसीचंद सूरस्यामसुहागिनैं
लचननवसेनरउंड ६१३ ॥रामनट॥ तिहारीमुरलीनैं
नवजाऊं जैसीतानतिहारेमुखनीसमधुरसुनाऊं
जैसीआपअधरधरिमूंनतमैअधरनपरसाऊं हा
हाकरतिपाइलागतिहीं वांसवंसुरियापाऊं सारंग
नटपरलैंजुमिलिवैंरागअनुपउपजाऊं तुम्हरेआ
भूषनमैंपहिरौंअपनेतुम्हेपहिराऊं तुमवैठोउठिमं
नसजिवैंहींगहिचरनमनाऊं सूरस्यामगिरधरछ
विधरिवैंभुजभरिअंकलगाऊं ६१४ ॥रामनट॥०
मुरलीलईकरतेंछीननासमेछविकहिनजाईचतुरना
रिनवीन कहतिपुनपुनस्यामआगेंमोहिदेहुसिखाइ
मुरलीपरमुखजोरिदोऊअरसपरसवजाइ कहमधुर
वनादउचारतपुर्यरिसकरिगान वारवारसुआधराघत

वजतिनहिं अकुलात श्यामभूषन स्यामपहिरत स्याऽ
मभूषननारि सूरप्रभुजारिमानवैठेअपअराति मनुहा
रि ६१५ ॥रागसारंग॥ प्यारीजरिवांसुरीलई सनमुऽ
खवैठेतुमसुनौरसिक पियललितनअंगभई उरतिऽ
रागरागिनीतरंगनिछिनछिनउपजनई आलवालऽ
नंदलालश्रवनपरजतिमोहना छई वमनसुधावरऽ
वरनअमितछविमनमोहनाचितई मनोचकोरमन
मचिकैमगात्रनसुधिविसरागई अरिपितंवरछांहमां
हअलवेलीजरिदई सूरदासहंसिकमलनैनजोराधा
अंगदई ६१६ ॥रागविलावल॥ लालनिठुरकेवैठिरहे
प्यारीहाहाकरतिनमानतपनिपुनिचरनगहे नहिवो
लतनहिचितै मुखतिन धरतीनषनकरोवत आपुहं
सतिपुनिपुनिउरलागनचऊनहोतिमुखजोवत कहा
करनएवोलतनंनाहा पियपह खेलमिटावहु सूरस्या
ममुखचंदजोटि छविहंसिकैमोहिदिखावहु ६१७
॥रागधनासिरी॥ नागरिहंसतिहृदेंउरभारा कवकुंअ
रमरिलितिउरजविच कवहुंकरतिमनुहार मानकरत
नीकौनहिंलागतदूरिकरोयहष्याल नेकनहिंचितव
नराधातिननिठुरभएनंदलाल सीसधरतचरननैपुऽ
निपुनित्रयकोरूपनिहारत सूरदासप्रभुमानधरयौंऽ
रिदधरनीनषनविदारत ६१८ ॥रागगौडमलार॥ निर
खितियरूपपियचकतभारी किधौंवेपुरषमैंनारिकैनाऽ

सू.सा
२४०
१२५५

खिरलषकैं सवैतनसुधि विसारी उतहितनाचैनैति
रमुकुटकुंडिलश्रवनमालउरअधरमुरलीविराजै इ
तहित्रियरूपकरि मांगवेनी सुभ्राभालवेंदाअंस
नमहाछाजै नागरीहठतिजोंकृपाकरिमुहिभजौ
परीकहम्चूकमुहिकहौप्यारी सूरप्रभुनागरीवि
हाररसमगनके देषिछवि हंसतिगिरिराजधारी
६१९ ॥रागधनाश्री॥ तियपियलीन्हीअंकलाइ
षेलहिमेंतुहिविरहवरायोगईकहाविततराइ कोहे
विवसमई विनकारनअैसोगईडराइ सुनिप्यारी
यहलाववनायोअंतरगयोजनाइ वारवारआलिं
गनदीन्हों रहीकहमुरझाइ सोचीकनकलतासूर
जप्रभुअंमृतवचनसुनाइ ६२० ॥रागमलार॥
स्यामतनतीयभूषनविराजै कनकमनिमुकुटकुंडि
लश्रवनमालउरअधरमुरलीधरैंनारिछाजै नि
रषिछविपरसपरछकेदोउनारिवरगयौनजि।विर
हउरप्रेमपयागीगे सूरप्रभुनागरिहंसतिमनमहं
सतिवसतिमनस्यामकेवदनभागे ६२१ ॥रागनट॥
नागरिभूषनस्यामवनावत श्रीनागरिनागरउर
सोभाकरीनिरषिमनभावत स्यामाकनकलकुटक
रलीन्हैपीतंवरउरधारैं उतगिरिधरनीलंवरसारी घूंघ
टओटनिहारैं कहतपरसपरकोविलवानीस्यामना

रियतिराधा सूररूपनागरिपतिगावतिमनउपजीआ
तिसाधा ६२२ ॥रागनट॥ नीकैंस्यामम्मानतुमधारौ
तुमैवैठोउरमानहानिमैंमेटौमानतुम्हारो यहमन
साधुवडुतेहैमेरेतुमविनुकौननिवारे नागरिपाछिदि
येननसोभावारंवारनिहारे अपनीमांगभालवेंदीछवि
नैननअंजनरेष सूरनिराषिपियघूंघटकीछविनेन
नलगतिनिमेष ६२३ ॥रागधनासिरी॥ कुंजवनगवन
दंपतविचोरैं नारिकौभेषकरिनारिकैमनहिहरिमुकर
लैभावतीछविनिहारैं भामिनिअंगवहभेषनटवर
निरषिहंसतहीहंसतसवमेटिडारे सहजनिजरूपधरि
तुरतमनभावतीआपभूषनसवैअंगधारे नीयकोरूप
धरिसंगराधाकुंवरजातवषभोरिनहिलषतुकोऊ
सूरस्वामीस्वामिनिवनेहैंएकसेनहीअंतरअरसपरस
दोऊ ६२४ ॥रागधनासिरी॥ मनहीमनरीझतिहैराधा
वारवारपियरूपनिहारे निरषतिभालविंदसेंदुरकोवा
छविपरतनमनधनवारैं यहमनकहतिसषीजिनिदे
षेंयूछेतिकहाकैहों तिहूंभवनसोभासुखकीनिधि कैं
सेइन्हैतुरैहों पगनूपुरछविंयनकीकुनक निचलतिष
रसपरवाजति सूरस्यामस्यामाललिजोरीमनिकंचन
छविलाजति ६२५ ॥रागकल्यान॥ स्यामास्यामकुंजव
नआवत भुजभुजकंठपरसपरदीन्हेयहछविउनहीपाव

सू॰सा
२४८

४९

त इनतेचंद्रावलीजातिरजउततेंदोऊ आए हरिहि
तेचितवतितउनहीतिनइनदकनेननलगाए इनराधाइ
सरीकोनहेंपाकीनहिंपहिचानें वृजवषभानसुतीजु
वतिनकोंएकएकतरिजानें यहआईगोकुलओरगावतें
छविसांवरीसलोनी सूरआजुयहनईतियायेएकही
अंगनिलोनी ६२६ ॥रागगौरी॥ यहवषभानसुतावद
कोहै याकीसरजुवतीकोउनाहीं यहत्रभुवनमनमोहै
अतिआतुरदेषनकोंधाईनिकटजाइपहिचानें वृजमें
रहतिकिधोंकहुंऔरेपूछेंतेनवजानें इहमोहनोकहातें
आईपरमसलोनीनारि सूरस्यामदेषतमुसकानीकरी
चतुरईभारी ६२७ ॥रागकल्यान॥ सकुचछांडिआवहुतहैंज
नाऊ एतोचलेआपनेकाजेमैंइनकूंसमुझाऊं मनहीमन
नएजवजानैगेंजानिवृक्षिस्वराऊं यहचतुरईकाछिकेंआ
एसोअवप्रगटदिषाऊं अतिचतुरंगकहावतदोऊ इन
कोंलाजलजाऊं सूरस्यामराधाकीकरनीमिहमाप्रगट
सुनाऊं ६२८ ॥राधासारंग॥ कहिराधायहकोहेरी आ
तिसुंदरीसांवरीसलोनीत्रभुवनजनमनमोहेरी औरं
नारियाकीसरनांहीकहेनहमसोंजोहेरी आओसुताव
धूहैकाकीआवीजुवतीसोंहेरी जैसीतुमतेसोहैएऊम
लावनीतुमसोहेरी सुनौसूरअतिचतुरराधिकाएचतुर
नकोमोहेरी ६२९ ॥रागएमन॥ मथुरातेंयहआईहैं
ललितासंगगईदधिवेंचनउनसोंइंमेंचिन्हाईहै वृ

हासनेहजानिरीसजनीआजुमिलनहमपाईहै सूरमोहि
देहुनहीआईअवहीसंगउठिधाईहै ६३० ॥रागसोरठ॥
इनकौव्रजहीक्योंनबुलावहु ऐयछमाननपोरिकेआगे
केगोकुलनिकटवसावहु एऊनवलनवलतुमहूहो
मोहनकौदेउमिलावहु कौनहिदेषिवरातिजातिघूंघट
काहेनलाजछुडावहु यहअवराजेकैछ्योनहिअवहूंजुव
तिनजुवतिबुलावहु सूरसषीराधासोंप्रभुनिजुनिकहतिजु
हमेंमिलावहु ६३१ ॥रागविहागरा॥ मथुरामेंवसवासह
मारौ राधासोंउपकारभयौयहदुर्लभदरसनभयौतुम्हारौ
वारवारकरगहिगहिनिरषतिघूंघट परहिओटिकरि
न्यारौ परसिकपोललेतिचुटकाभारि काहेनहसिहंसि
हमेंनिहारौ कछुमेंहूंपहिचानतिनांहीतुमकौंतुम्हेंमि
लाऊंनंदहुलारौ काहेकौतुमसकुचतिहोगीकहौकहा
हैंनामतुम्हारौं ऐसासषामिलातुहिराधातुमहमकौं
काहेनविसारौ सूरदासदंपतिमनजान्यौंऐसैंकैसैंहो
तुउवारौं ६३२ ॥रागरामकली॥ राधासषावडुतमनभा
ई जवतेंइनसोंनेहलगायौवहुतनभईचतुराई औरम
एइनतेंतुमकौंमुखवारहूजनतेंनिदराई काहूकौंमनमें
नहिंजानतिहमहूसवविसराई तुमहूंकुसलकुसलहैं
एऊआपुस्वारथीमाई सूरपरसपरदंपतिआतुरचतुर
सषीलेषिपाई ६३३ ॥रागरामकली॥ यहसषिआवलौं
कहांदुराई इनेघोसहमनवहुनदेषीआवजुकहांतेंआ

ई त्रभुवनकीसोभासवगुननिधिहैविधिमेउपजाई वि
धमानवृषभाननंदिनासहचारिसवसुखदाई ऋय
नेमनतक्रितक्रितौलातिहोंजिनकासुंदरताई दुसहह
पकीरासिराधिकाकैहोकहांतेपाई राचिरहेरसमत
सूरदोऊनिरखैनैनलगाई चान्हेहीजजाकुंजवनन
दंशाउदेवचतुराई ६३४ ॥रागगौरमलार॥ नंदनदनहं
सिनागारिमुखचितैहरषिचंद्रखलीकंठलाई वामभुज
रवनदक्षिनभुजासखीपरचलेवनधामसुखकहिनजा
ई मनौविवदामिनीवीचनवघनसुभगदेखिछविकाा
मरतिहूलजै क्रिधौंसुभलताविचलसतनमालतर
भामिनिनिवीचगिरधराविराजै गएगहकुंजअलपुंज
गुंजततहांदेखिआनंदभरिसूरस्वामी राधिकारवनम
नरवनछविनिरखिकैहोतमनहीमनैकामकामी ६
३५ ॥रागकेदार॥ कुंजसुहावनभवनआइकैवनिठनि
वैठेराधाश्रेन फुलितकुसुमसक्रिरनिजगभगेनेसा
वहैत्रविधिगतिपौन अलिगनपिकमंगलगावनधु
निसुनिभावतिदंपतिवसिश्रेन सूरदासप्रभुप्या
रीदोऊराजतसाजतरतिपतिसेन ६३६ ॥रागविलावल
संगसोहतिवृषभानकिसोरी सारआचेतनवनेवरसारं
गवरनैछविकैसेमतिमोरी सारंगधरीअधरकैसारंगज
वसारंगमतिभोरी सारंगवदनपीठपरसारंग सारंगगति
करिथोरी सारंगफुलनिवृजनरचिसारंग सारंग अंगघु

नमुजजोरी विहातसघनकुंजसषिनिरषतसूरस्या
मघनदामिनिगोरी २७ ॥रागकान्हरा॥ राधेउपमेगो
रधनधारी कनकलतागनचंपकलीतनहरिकेप्रान
राधिकाप्यारी मरकतमनिनंदलाललाडिलीकंचन
ननरषभांनदुलारी सूरदासप्रभुप्रीतिपरसपरजु
वतिनजुगलचनेवनवारी २८ ॥रागविलावल॥
कुंजभवनराधामनमोहन रतिविलासकरिमगनभ
एअतिनिरषतनैनलजोहन तियतनकोदुषहरि
लियोपियदैदेअपनीसोंहन वारवारभुजधरिअंक
मभरि मिलिबैठेदोउगोहन पीतंवरपटसोंमुषपोंछ
तहरषिपरसपरजोहन सूरस्यांमस्यामामनहरिकव
तनैनकुचनटकटोहन ६३९ ॥रागविहागरा॥ वनह
धामसुघरेनिविहारे जैसीनवलराधिकानागरि
तैसेनवलकन्हाई जैसीफुलनितीरजमुनाकोसीत
लपवनसुगंध जैसीकंठकोकिलाकुहकनिराजति
सुखसननबंध रतिविहारकरिप्यायपियारीप्रातचले
वृजधाम सूरदासदोउवांहजोटीराजतस्यामास्या
म ६५० ॥रागललित॥ नवलकुंजनवलरसदोऊरा कुं
जतहैंरंगभीनें कुसमनसेजतेंउठेभोरहीमिलिअंस
नभुजदीने अरुनैनेननघरेघविराजतिवसनयल
टितनलीने सूरदासप्रभुपियप्यारीकोंनिरषति

सू
सा.
२५०

सविद्रुमदाने ६५१ ॥रागकेदार॥ सघनकुंजमनहरनधा
मतेंनिकसतदोऊऐसेलागे स्यामघटापियदामिनि
भामिनिराजतएकसंग अनुरागे आलसभरेअंगअर
तिसोहतअरुननेनसबनिसकेजागे सूरजप्रभुप्यारा
छबिगावतपावतनाजिनेंवडभागे ६५२ ॥रागभै
रो॥ सोहतघूंघरवारेवार उरझिरहेमुक्ताहलसरि मि
लिमोनिरवारनिनार रितमाननछुटिवंदकंचुकीटू
टेउरतेंहार सूरस्यामसंगप्यहरसलूटतरीझीवारंवार
नवलस्यामनवलाश्रीस्यामा दोऊ
६५३ ॥रागसूहा॥
रजनवांहांजोटीचलेजातरजधामा याछबिकोउप
मादीवेकौंनाहिंकोऊतिहुंधामा दामिनिघनपटतर
दीवेकौंसकुचतिअविलेनामा सुधासरोवरपरसपरदो
ऊसुखदायकदिनजामा सूरदासप्रभुनागरनागरि
जीनेरतिअरुकामा ६५४ ॥रागविहागरा॥ सुंदरहरि
सुंदरवरलीला सुंदरबोलनवचनरिसाल सुंदरवदन
कपोलनेनअतिसुंदरयूगावनीवनमाल सुंदरउर
नघमनिजुविराजति सुंदरहैकुंडिलमकराल सुंदरचा
लमनोहरराजतिसुंदरसोहनवांहविसाल सुंदरमुर
लीमधुरवजावतिसुंदरसंगश्रीराधावाल सूरदास
दंपतिअतिराजतव्रजकौंआवतहैंनदलाल ६५५
आधोमुखनीलंवरढांकोविथुरीअलकैं
॥रागटोडी॥
सोहैं एकदिसामनुमकरचांदनी घनविजुरिनमनमो

है नवहु केसपाछेलैउरति निकसतु ससितुपजो
हैं सूरदास प्रभुयह छविदेषत त्रभुवनउपमाटोहैं
६४६ ॥सारंग॥ दर्पनलै कजराहिसंवारत सासर
फूल अतिलसत नागजस्योताकी छविऊपरमनवा
रति करनफूलनवालियेसवारतिवेंदावूंदलिलाट
सुधारति सूरस्यामउरिदेषनदरपनमुरवतेंर्ईवट
कुपलकनटारत ६४७ ॥रागमलार॥ नेजुनीलप
ट ओढचढ्योरी जलसुतकिरनिमहासोमानकि
मनोउवतहाराहगढ्योरी भूमघसनकिरमंजन
करतहीनालछिरवितनमांहरढ्योरी सूरदासप्र
भुआनितमिहमा कमलकमलपरमोरिरढ्योरी
४८ ॥रागधनासिरी॥ मेउनकेगुननकिंजानति स
दनजाहुमरजादजेहैं कह्यौनकाहूमानति अ
पनाढिसाकहोंकहांलोसीजेसीविपदापाई म
थुराचलीजानिदधिवेंचनघेरिलईउनिआई
गोरसलेआभूषनछीन्योंवेअनेकहमएक स
रस्यामजोदेषनपैहें करिहिंअपनीटेक ६४८
॥रागगोरमलार॥ धनिहरिनैनधनिरूपराधा
धनिवहमुरनर अतधनिप्रतिविवमुखधनिरं
पतिरहतनेमअआधा धनिसिंगारधनिधनि
निरषनिप्रभुधनिछविलूटलूटतमुरारा सूर

सू॰सा
249
५१

प्रभुचतुरचतुरानवलनागरीरहे प्रतिबिंबपरेनैं
नधारी ६५० ॥रागकेदारा॥ स्यामाअपनो
रूपदेषिदेषिरीझिरीझिनेकहूं दरपनदूरिनकर
ति अपनीछविजुनिहारति अपनोतनमनवा
रतिविवसहोतिप्रतिबिंबकेपावनपरति कबहूं
स्यामसकुचमानतियहजियउनमाननातियासों
जितिप्रतीकैनेहडरडराति सूरदासप्रभुप्यारी
कीछविनिरषतन्यारेकैहैछिनइतउतटारति ६
५२ ॥रागकान्हरा॥ देषिरहीश्रीकुंअरिराधिकाह
रिसौंनेनमुदाई अतिहीचपलमहाअनियारे
नहिपियपानसमाई छिनबोलतछिनडोलतन
नागरमुषरसमनमुसकाई ज्योंमानिधरमानि
छांडिबहुरिफिरिधननमिलेतुछिपाई स्यामअंगु
रियनअंतरराजत आतुरदुरिदरसाई मनमरक
तमनिकेपिंजरनमें विवषंजनअकुलाई करक
पोलविचसुभगतरोनासोभावडीसुभाई मनु
सरोजहुरिमिलनसुधानिधिपीडिनसंगसहाई
अपनेपानपकरिमोहनकेकरधरिलएछिनाई
कुमुदचकोरजोर ससिजुदवेदिनबरज्योतिस
काई उपमाआहिदेऊंकोलायकदिषीबहुतबना
ई सूरदासप्रभुदेषतसोभारतिलछिकामल

जाइ ६५२ ॥राग गौड मलार॥ स्याम भुजवाम गहि
सुमुख आने मलेजु मलैमैं सखी धो वैर हार हे लो
चन जु सुंदरि आति पिराने दुरै वैठे भवन कुंज मम गा
है क्यों नाहि मन रवन तुम हो नन्हाई सूरप्रभु इराबि
प्यारी लई अंक भरि मकर की घात करि वाहि सुनाई
६५३ ॥राग गूजरी॥ नागरि यह सुनि कै मुसक्यानी
कोजानैपिय सिहमा तुम्हारीनै ननाचितै ल जानी
मैवैठी प्रति विंव विलोकति आपने सहज सुभाइ
आएकहा अचानक ही एयइम्म ति लषी न जाइ
रूपसुंदर कहजे आति नागर तीजे कोक प्रवीन सूरदा
स प्रभु अवही तो तुम जु सुधा सुवन नवीन ६५४
॥राग विलावल॥ हंसत चले नवकुंअर कन्हाई मन
के करे मनोरथ श्री राधा के सुखदाई उत हरषत ह
रि भवन सिधारे नागरि हरष बधाई जव सुधि आ
वे मुकुर विलोकनि तव तव रहति लजाई इहि अंत
र सखियन संग लीनें चंद्रावलि तहां आई सूरदा
स वह कुंअरि राधिका आदर कै वैठाई ६५५ ॥राग
आसावरी॥ हम तेरें नित प्रति हा आवति सुनौ राधि
का गोरी हो कैसो आदर कवहुं न कीन्हो जैसें अव
जु निहोरा हो कोउ आजु हरष जिय उपज्यो कहा
कछु तुम पायो हो कै धौं आजु मिले नंदनंदन पि
य लो दुख विसरायो हो उमग्यो प्रेम रह्यो नहिं

सू.सा

२५२

रोक्यौ सवि पियन वहि जु सुनायो हो सूरस्याम मो
भवन पधारिये यह मनहि मनहि मन भायौ है ६५३ ॥राग
विलावल॥ स्याम संग सुख लूटति हो सुनु राधे रीझि
हरि तो पर [illegible] उनतें तू छूटति हो भली भई ह
रि कै संग पायौ वैं तुम सौं रति मानत हौ आवत जात र
हत गृह तेरे अंतर हित पहिचानति हो तुम अति च
तुर चतुर वे तुम तें रूप गुनन दोउ नीके हो सूरदास
स्वामी स्वामिनि दोऊ परम भाव ते जीके हो ६५४॥
रागअडाना॥ भली भई जो लालन आए फूली अंगन
समाई गारस्यो जो र प्रेम भरि नाचौ तनमन देहुं वधा
ई धनि धनि भाग सुहाग धन्नि अरु धनि धनि कुंव
र कन्हाई धनि धनि रैनि धन्नि दिनु ऐसो धन्नि घरी
में पाई धन्नि गृह धनि दिहस घरी धनि प्रति विंव सु
लाई धनि धनि सूर नैन मूंदे बर धनि धनि पिय सुख
दाई ६५५ राग बनि बनि आवत हैं प्रिय मेरे ह
रि हंसि दिपत अति सुघर उपजत अहसन मुख जब
हेरें आनंद उरन समात निरखि मुख जब पिय आ
वत नेरैं सूरदास प्रभु की मूरति जिय टरै निन सांझ स
स्याम अचानक आए
वेरें ६५६ ॥राग॥
री पांछि ते लोचन दोऊ मूंदे मो कौं इंदे लगा एरी
देवन जान पलक अंतर कहुं मे बड भागन पाएरी
यह उपगार तुम्हारौ सजनी रूसे कान्ह मिलाएरी

नागरिजाइनुरनलैआई जिय अपना धछिमाएरी
सूरदासप्रभुनैननलागेभावनहीविसराएरी ६५७
॥रागबिहागरा॥ देषेस्याम आवतकुजात ब्रजकी
षोरअकेलेनिकसेपीतंवरकटपरफहरात लटकत
मुकटमस्तकमोहनकेचमकातिचलतमंदमुसका
त पगहिजातवकुरिमिरिहेरतसैननेदैदैलछिनं
दनात निरषतनारानगरथकितभईरीझिरीझिम
नमांहिसिहात सूरस्यामअंगअंगमाधुरेचम
किचमकिचकचौंधतगात ६५८ ॥रागकेदार॥ लो
चनहरनअंबुजमान चलतमनमथसरनचाह
तुधनुषतजितजिवान ।चिकुरकोमलकुटिलराज
तरुचिरविमलकपोल नीलनलिनसुगंडरसज्यों
थकितमधुकरलोल स्यामउरपरपरमसुंदर सज
लमोतिनुहार मनहुमरकतशैलतेंवहिचली
सुरसरिधार सूर[illegible]कटपटपीतराजतसुभग
छविनंदलाल मनौकनककलनानअवलीवी
च[illegible]विटपनमाल ६५९ ॥रागनट॥ मोहन
मेरेमनहिहरत अंगअंगनपनउरमतलोचनवि
नुदेषेंछविकलनपरत कुंडिलमुकटभालगोरे
चनमनौसरदशशिउदौकरत सूरदासप्रभु
ननअवलोकनदृष्टिकहूंतनउननटरत ६६०
रागनट॥ नैनामेरेबसनरहे देषतदरसस्याम

सुंदरश्रौंजलकीठरानिवहैं वहनीचेकों धावतइ
नहूं वेईपंथगहे वहनौजाइसमातुउदधएप्रेम
सिंधुउमहे वह अगाधकहूं वारपारनहि एसोभा
नहिंपार लोचनमिलित्रिवेनीह्वैकै सूरसमुद्र अपा
र ६६१ ॥रागविहागरा॥ मननैनेनाढीठभए वह
नोआइमिलतुहि नवहूं एजुगएसुगए ज्यौंभुजंग
कांचुरी विसारतु वहुरिनताहिनिहारतु त्यौंएमो
हिछांडिकेसटके वहुरिनदरनपगधारत रईनुसाहि
नमिलोमनवहुरयौंएनउहांतेंचालत सूरस्याम
संगसुषहींडोलत औरनवेघरघालत ६६२
॥रागगौरी॥ नैनाउनहींकेजुभए मनचितगयोन
हिमेजान्यौंएदोऊ निदरिगए एैसोभएभांवतें
हरिकेंसदारहतउनपाहीं वरजीउतसिरधुनत
नारिसवयहकहितहिपछितांहीं सूरषकाजेउ
किपाछिलाहमकरिदीनेआगे अवतौमिलेस
रकेपुरुजकीकेसेंपावतमांगें ६६३ ॥रागपूरवी॥
नैनानहिआवेंमोपास केसेंहकरिनिकसेइहां
तें अतिहीभएउदास अपनेस्वारथकेसवकोऊ
मैंजानीयहवात निधरकभएपयूषपाइकेंअ
ववेकाहिपत्यात षटरसभोजनत्यागिकहूंको
ऊ रूषीरोटीषात सूरस्यामरसरूपमाधुरी

भरि पीवत नन अघात ६६४ ॥ रामैरी ॥ नैन परे हरि
पाछें री । मिले जाइ अतुराइ स्याम कौं री ऊ नट व
र का छेरी । निमष नाहीं लागत इक टकहीं । निसि
वासर नहि जानत री । निरषत अंग अंग की सोभा
यहीं परस चमानत री । नैन परे परवस री माई ऊ
न तौ एवस की न्हे री । सूरज प्रभु सेवा परसी ऊ उन अ
पने करि लीन्हे री ६६५ ॥ राग बिहागरा ॥ नैना म
ए जाइ गुलाम । मन बेची लै बस हमारा हु नो स
धा वे काम । प्रथम भेद करि आइ लै च लै पाव ह का
यौं काम । वे चि दए निधरक हरि लीन्हे मरद मु स क जौं
। नि दै दाम । वा नी जहं तहां घर गा सो मोल लए को
नाम । सुनौ सूर यह दो स हमारो सांच कहति है वा
म ६६६ ॥ कान्हरा ॥ नैनन कहो कहां भुव आई लूट
न हैं छवि स्याम लाल की नो षा करि निधि पाई
थोरे ही में ओंधि परे ए अति हि चले इतराई उ
रनबान देत नहि काहू ओछे घर निधि आई । य
ह संपति है तिहुं भवन की सो इन सब आपनाई
सूरज मोहि साधि धोषे में अपनी बात बनाई
६६७ ॥ राग कान्हरा ॥ नैना अपनें घर केरी लूटत
दे ह स्याम की सोभा जो हम पर वे तर केरी यह जां

जानी नेकरि सजनी नहीं हमारे उरनेरी वे जानत
हम सरनौ त्रमुवन औसे रहत न निठुर नेरी औसा
रि सआवत उनऊपर करौं उन्हे घरघरनेरी सूरस्या
म के गरव भुलाने वे उनही परबरनेरी ६६९ ॥राग
टोडी॥ इननैननवहुतसतायो अवलौंकनि करा
मे सजनी वढुतै मूड़ चढायो निदरे रहत कहां लौं
तोसौं मोही दोस लगायौ लूटत अपुन सवै अंग
सोभा हमकौ ध्यान वतायौ निसदिन एकरत अ
चारी मनु निधनी धन पायौ सुनौ सूर इनकौ प्रत
पालत आलस ने कन आयौ ६६८ ॥राग रामकली
लोचन भए स्यामके चेरे इतने पर सुख पावत कोटि
क मो तिन फेरिन हेरे गिरत फिरत हरि चरनन औसें
वसजु भए हे उनही उनकौ वदन विलोकत निसदि
न मेसो कहीन सुनहीं ललित त्रभंगी छवि परअ
टके पट के मो सौं तोर सुनौ सूर यह मेरी करनी उनके
हरि सौं जोर ६७० ॥राग विलावल॥ नैनन कौ सुख ह
म दुख पावें औसो को पर वेद नि जानैं जासौ कहि जु
सुनावें तातै मौन भली सव ही सौं कहि कहा मान
गवावें लोचन मन इंद्रा हरि भजि के तजि हम कौं सुख
पावें वे तौ गए आपनी करनी विरथा जिय भरमावें
सूरस्याम हैं चतुर सिरोमनि तिनसौं भेद सुनावें ३

६७१ ॥धनासिरी॥ कोनैननकीकथासुनावै इनकौं गुनऔगुनहरि आगेंपलपलभेदजनावै इनसौंजु मपरतीतवढावततहैं अपनेंकाजी स्वारथमानि लेतरतिकरिकैं बोलेंहीजीहांजी एगुननहिंमान नकाहूकौ अपनोसुषमानिलेत सूरजप्रभुएपाहिलें हितकरिफिरियाछेंदुषदेत ६७२ ॥रागधनासि री॥ नैननतेंयहभईवडाई घरघरएजुचवावच लावतहमसौंभेटनभाई कहास्यामभिलिवैठेक वहूं कहांजातिरजऔसी लूटेएउपहासहमारोयह नौवात ऐनेसी एईघरघरकहतफिरतहैंकहाक रैंपचिहारी सूरस्यामयहसुनतहसतहैंनेनकिये अधिकारी ६७३ ॥रागविलावल॥ जदिपनैनभर नटरिजात इकटकनिरषिरतनहिंकवहूंतपितन होइअघात अपनेंसुषकारनएनिसदिनअंमृत सुंदरगात लैलैभरतआपनेभीतरऔरनहींपतिया त जोरैलजैसोरैहें अपनेनिलजनकीकहावात सुनोसूरजैसेएलोभीधनिइनकेपितमात ६७४ ॥रागविलावल॥ जैलोभीतेंदेहिकहारी जैसेनैं न आपनेजानेतैसेनिठरमहारी मनअपनोकव हुकहूरतहैंएनाहिंहोंहिहमारे जवतेंगएनंदनंद नढिंगतवतेंफिरिननिहारे कोटिकरोएहमेननमार

नैंनगाधे रूप अगाधा सूरस्याम जो कवहूं आसौं रहे हर
मारि साधा ६७४ ॥रागकेदार॥ मैंना भरे घर के चोर
लेत नहिं कछु वनै दुरन औदे दिषि छवि भयौ भोर नहीं
त्यागत लेत नव नै रूप जे गए आस अलक डोरी वां
धि राषे न जो उनकी आस मे वहुत भरि वाजि हारी
नि उरनि कसे घेरि सूरस्याम वंधाइ राषे अंग अंग
छवि घेरि ६७५ ॥रागजैतसिरी॥ लोचन भए प
षेरू भाई गीधे स्याम रूप चारि कौं अलि कग्रीद प
रे जाई मोरमुकट टाटी दै आगें दूवयो अंग अभंग
चितवन लगी चलाई चोट की चांपा अलकन तरंग
दोरि गए मुष मृदु मुसकनि लिलोभ पीज रा डारे
सूरदास मन व्याधि हमारौ गृह वन तें जु विसारे ६
७६ ॥रागविहागरा॥ नैनां ऐसे हैं विसवासी अ
पकाज कीन्हो हम कौं तजि तव तें भई निरासी प्रन
पालन करि वडे करे हम जांनि आपनों अंग निम
षनि मष में धोवति आंजति लिषवति भाव तरंग
हम जान्यो हम कौं एके हैं ऐसे गए पराई सुनों
सूर वजै हौ वरजत चेरि भए वजाई ६७७ ॥राग
जैतसिरी॥ नैनां भए प्रगट हौ चेरे ताकौं कछु अ
हिमान न मानत हम एकिये वडेरे जो वरजों यह
वात भली नहि हंसत न कुल हि लजात फूले फि

रतकुनावतसबकौंइतनेपरनउारत जेतौकह्यौह
मैंजिनिहंसाउैंकुमविनुतनवेहाल तमकिउठेए
वानसुनतहीगाधेगुनगोपाल मुकटलटकभौं
हनकीमटकनिकुंडिलझलककपोल सूरस्याम
मदुमुसकनिऊपरलोचनलीन्हेमोल ९७८ ॥
रागसोरठ ॥ लोचनओलतभंगभएरी लोकलाज
ननवनवेलानाजिआतुरहिजुगएरी स्यामरूपर
सवारिजलोचननतहांजाइभ्रमरेरी लपटेलटकि
पिरागविलोकनिसनिकैनिवलपरेरी हंस[illegible]
कासविलासदेखिकैनिकसतएनितहांपेरनर
सूरस्यामअंबुजकरचरननजहांतहांभ्रमिवेरत
९७९ ॥ रागधनासिरी ॥ मेरैनैनकुरंगभए जोव
नवनतेंनिकसिचलेएमुरलीनादरए रूपव्या
धकुंदनइतिदीपकछिकिनिघंटाघोष व्याकुर
लफिरकहांटकदेखतगुरजननतजिसंकोचमोह
कमाननैनसरसाधेंमारनचतवनिचार ठौररहे
न्हैगिरिसूरवेमंदहसनिसिरढार ९८० ॥ रागरा
मकली ॥ नैनाभएस्यामवसमोर ज्यौंकुरंगवस
होतुनादकैतजतुनहांसोठौर ज्यौंमधुकरवस
कोसकमलकेज्यौंवसचंदचकोर तैसेंएवसभ
एस्यामकेज्यौंगुडियावसडोर ज्यौंवसस्वांति

सू.सा
२५६

वूदके चात्रक ज्योंवसजलके मीन ज्योंसूरजप्रभु
केवसलोचनछिनछिनप्रीतिनवीन ६८१ ॥राग
सोरठ॥ ऐसेवस काहूनहिं कोऊ जैसेवसहैंनंद
नंदनके एनैनाममदोऊ चंदचकोरनहीसरद्र
केएकोपलनविसारत नादकुरंगकहापटतर ए
व्याधजुरतनहीमारत एवसभएसदासुखलूटत चतु
रैचेरेकीन्हे सूरदासप्रभुअवनकेपतिनेइनवस
करिलीन्हे ६८२ ॥रागजैतसिरी॥ एनैनाआपस्वा
रथके औरइन्हैंपटतरक्योंदीजे जैहिवसपरमार
थके विनादोसहमकोंपरत्यायोसुखकारनभए
चेरे मिलेजाइवरज्योनहिंमान्योतिकेनदइनेडेरे
इनकोभलोहोइगोमैसेनेकनसेवामानी सूरस्यां
मतिनपरकहारीझे इनकीगतिनहिजानी ६८३
॥रागनट॥ लोचनभएअतिहीढीठ रहतहैंहरिसंग
निसदिनु होइवहुरैईठ वदतकाहूमांहिंऐसे मिठ
रमोहेकंत वारवारउआइहारीइनहिंवहुविरतंत
ज्योंसुभटरनदेखिटरतनलखेतविचारि सूर
त्योंमनमुखहिधावतनिमखआवनधारि ६८३
॥रागजैतसिरी॥ सेवाइनकीवृथाकरी नैनभएदु
षदाइकहमकों अवहीजानिपरी घूंघटओटमह

लमैं राखति पलकन पाट दए इन ज्यों कह्यौ करयौ हर
म सोई न अपने न भए अव पाई इन की लंगरा
ई रहत जु पेट समाए सुनो सूर लोचन वट पारे स
व इन के गुन पाए ९८५ ॥राग बिलावल॥ नवतें नैन
रहे इक टक हीं जवतें देखे नंदनंदन कुं। मिले जु अ
टक भटक हीं मुरली धरें अनन अधरन पर कुंडल
झलक कपोल निरखन इक टक पलक भुलाने मनों
बिकाने मोल हम कों वे काहे न बिसारे अपनी सुधि
उन नांही सूरदास घर विसिं धस मानें हम विरथा प
छिताहीं ९८६ ॥राग मलार॥ नैनौ नैन न मांझ समा
ने टारे टरत न इक पल मधुकर ज्यों रस मैं उरझाने म
न गति पंग भई सुधि बिसरी प्रेम सुमाइ लुभाने मि
ले परसपर खंजन मानों झगरत निरखि लजाने म
न वकु चपल ओट नहिं भावति छिन युग जुग पर मां
नें सूर स्याम वस भए जाइकैं जिहि विति सो जानें ९
८७ ॥राग बिहागरा॥ नैना लोभहि लोभ भरे जैसें
चोर भरे घर पैठत बिडरत उघरि गिरे अंग अंग सो
भा अपार निधि लैनें सोच परे जो देखे सोई मन भाए
लेत कित नहीं धरें चोल भधे ज्यों टरत न टारें लोक ला
ज न डरे सूरदास प्रभु ताथन आयौ सोभ जाग पक
रे ९८८ ॥राग सारंग॥ नैना इहिं ढंग परे कहा क

सैमाई आएनहिंश्रोनकाजविरमिरहेजाई अब
लौंइहिंआसरहामिलिहेफिरि आई मांवरिसीपा
रगएनारिओपराई लोभहिमहानेह कपटकोजना
ई सोभाहरिचोरिचोरिधरनुहेंदुराई विहरतयात
नविसारिऐसेदुखदाई गारेकोमरिनहेनिपटैअ
न्याई मोसोतजिनेहकरतएमहाठिठाई सूरदास
प्रभुआगेंचलोकहिंधाई ६८९ ॥रागनट॥ मेरेनैन
चकोरभुलाने अहनिसलषतपलकसुधिविसरी
रूपसुधानअघाने सोवतहूननिमषत्यागतेहैं
वदनाहिमांझसमाने सूरस्यामकोदेषिललि
ततनअंगअंगउरझाने ६९० ॥रागविहागरा॥
लोचनलालचतेंनटरेरी हरिसारंगसोंसारंग
लीधेदधिसुतकाजजरेरी ज्योंमधुकरवसपरेकेत
कीनहिंइहातेंनिकरेरी ज्योंलोभीलोभैनहिंछां
उतपुनिअतिउमगभरेरी सनमुखरहत्तसहत
दुखदारुनमृगज्योंनहांउरेरी वहधोषोएजान
तहैंसवजीयतसवदाणिरेरी ज्योंपतंगवहिपर
तप्रेमवसजावतमुरझिमरेरी ऐसेएहरिछवि
उपरवंधिचितवतरहिनमुरेरी जैसेमानअहार
लोभतेंलीलतपरेगरेरी सूरसुभटज्योंरननहिंछा
डतजवलौंधरनिगिरेरी ६९१ ॥रागविहागरा॥

स्याम छबि बिलोचन भटकि परे अति हिं भए बिहाल स
खाए निसदिन रहत न घरे हमन जिगए लूटबेकार
ना उहां सुधरे अगोट अपनो करयो नु रन प्रफलपायो
कित मुख घूंघट ओट इकटक रहे परायेबस कैं दुष
सुष समुझि न जाइ सूरबहों ऐसोलोचन बन स्या
वे सिंध तराइ ६८२ ॥रागनट॥ नैन भए बोहित के का
ग उड़ि उड़ि जात न पार नहि पावत फिरि आवत तिनहिं
लाग ऐसी दिसा भई री इनकी अबलागे पछितान
मोबरजत बरजत उठि धाए नहि पायो उनमान वह स
मुद्र जिनि बूझें दरसन धरी न्हाम सुधरास सुनौ सूर
ए चतुर कहावत वह छबि अति परगास ६८३ ॥रा
गरामकली॥ नैनन मान अपमान सह्यो अति अ
कुलाइ मिले बरजत हूं जदिपकोटि कह्यो जा जीवा
नपरी सषी जैसी लै सोई टेक रह्यो ज्यों मरजादमूट
नहि छाड़त तुम नहि कैसे नेकु गह्यों जैसे नीरप्रवाह स
मुद्र हि बह्यो सु बह्यो बह्यो सूरदास इन ऐसी कीन्हा फि
रि मो तन न नल ह्यो ६८४ ॥रागबिहागरा॥ नैन गए न
फिरि री माई ज्यों मरजादा गई सेतु की बहुरि फिरि न हि पा
ई ज्यों वालापन बहुरि न आवें फिरि न हित तरुनाई ज्यों जल
व धूवा हिरा परि कि फिरि कुल में न समाई ज्यों जल टरनु

सू॰सा
२५८

फिरतु नहियाछे आगे आगे जाइ तैसी दसा भई इनकी हूँकी सूरस्याम सिरनाइ ६८५ ॥रागसूहा॥ जबतें नैन गए मुहि त्यागि ईडी गई गियो तन तें मन उन बिनु अति सूनो मुहि लाग वे निरदई मोह मेरे जिय कहा करौं मैं भई बिहाल गुरजन तजी इहां इन त्यागी मो कौं परयौ महाजंजाल इतकी भई न उनकौ सजनी भ्रमत भ्रमत मैं भई अनाथ सूरस्याम कौं जाइ मिले ए दरसन करि मैं भए सनाथ ६८६ ॥रागबिलावल॥ नैनन सोंज गरी करि हौंरी कहा भयो जो स्याम संग हिं वाह पकरि सब मु खलरि हौंरी जनम तें प्रतिपाल करे वउ दिन दिन कौ लेखौ करि हौंरी रूपलूटि कीन्ही इन काहे अपने बांटे कौ धरि हौंरी इन माता अत पिता एकु है हौं काहे उन तें उरि हौंरी सूर अंस जो नाहि देहिगे उनके रंग मैं हूं उरि हौंरी ६८७ ॥रागआसा॥ नैना अटके रूप सों पल रहत पसारें निसवासर नहि संग तजें भरि भरि जल ढारें अतन अधर दुति दसन की चपला चमके घन कुटिल अलिक छुटि घूं घुरी सम नाहुत सें घन चंप कली सी नासिका रंग स्याम हि लीन्हे षंजन मृग वकुवा रने नैनन पर कीन्हे नहां ए रहे बुलाइ कें अंकुस मुकि नजाई सूरस्याम के बस भए मोहनी लगाई ६८८ ॥रागनैतसिरी॥ लोचन भूलि रहे तहां जाइ अंग अंग

छबिनिरखिमाधुरीइकटकपलबिसराइ अतिलो-
भीअचवतअघातनहिएनेपरललचात देनमहां-
काह्सुनेनहूंआपुनउरतघात औछेहाथपरा अपा
रनिधिकाहूंमनआवे सूरस्याममहनहा क्यौंसोपा-
यहकहिकहिपछितावे ६९९ ॥रागधनासिरी॥ नैन-
नयहकुटेवपकरी लूटतहेंहरिरूपआपहीनिसदिन
पहरघरी जानततेंअतिहीसुखपाएताते अतिअतु-
राए मिलेअचानककबउभागकिपूरनदरसनपाए
लोभावउ भैरेगोपितुसरहिइमनकीगतिन्यारी सूरस्या
मरनेकोंभएमौरेहमकोंनिठुरमुरारी ७०० ॥राग-
भैरो॥ सुनिसजनीमोसोंइकवात भागविनांकछु-
नाहिंपैयेतूकाहेपुनिपुनिपछितात नैननिकहुत
कराहरिसेवापलपलघरीपहरदिनरात मनवचक-
मउरनाईजनकेधनिधनिहिततिनकोजात कैसेंमिले-
स्यामनिनकोंराजैसेंमनकोंहितकेमात सूरदासके
प्रभुकृपासिंधवेसहजवडेहैंतात ७०१ ॥रागरामक- नमुन
ली॥ सजनीमोतेंनैनगए अवलगआ सरहीआ-
वनकोहरिकेरंगछए जवतेंकवलवदनउनदरस्यो-
दिनदिनऔरभए मिलेजाइहरदीचूनाज्योंएकहिरं
गरए मोकौंतजिभएआपस्वारथीटारिसमकादए
सूरस्यामकेरूपसमानेमानोवूंदतए ७०२ ॥रागसा

मलारी॥ नैनगएरीआतिअकुलात ग्रहमरौऐसीआ
तुरतामएपवनज्यौंपात ज्यौंधावतजलसजनीमार
गकहूंनहागहरात ज्यौंआएरितराजसभारीवेला
दुमनतुरात एवसऐसेंजानौउवैकेव्याकुलपछि
तात सूरदासक्योहूंनहिमोरेगोधेस्यामलगात ७
०३॥राग आसावरी॥ नैननतैंहरिआपस्वारथीआ
जुवातयहजानारी एउनकौवेउनकोंचाहतमिलेहू
धअरूपानारी सुनियतपरमउदारस्यामघनरूपरा
सिउनमाहीरा कीजेकहाअपनआसंपतिनैननहा
जुपत्याहीरा विलसतडारतरूपसुधानिधिउमगा
कछूनचलावैरी सुनौसूरहमस्वातबूंदलौरटलार
गीनहिपावैरी ७०४॥रागविहागरा॥ कपटीनैनन
तेंकोऊनांही घरकौभेदऔरकेंआगेक्यौंकहिवेकौं
जांहीं आपुगएनिधरककै हमतैंवरजिवरजियाचि
हारा मनकामनाभईपरपूरनगिरिरीझेगिरधारी ह
न्हैविनाउनउन्हैविनाइनअंतरनाहीभावतु सूरदा
सयहजुगकीमहिमाकुटिलतुरतफलपावतु ७०५
॥राग विहागरा॥ सजनीनैनागएभगाइ उरवाता
कौंनीरवढेकैसोंपिरहिंधाइवरतभवनजैसेंतजिय
तुहेनिकसनकौंअकुलाइ सोआपनोनहिपाइपिव
पंथकौंवासालेइजुआइ ऐसोदिसाभईहैइनकी

सुषपायोहुंजाइ सूरदासप्रभुऔएनैनामिलेनि-
सानवजाइ ७०६ ॥रागबिलावल॥ वारिजवदननि
हारिथकितभएलोचनमधुपलालचामेरे मिलेजा
इअकुलाइअगमनेरहाभयोजोघूंघटघेरे चंचल
चपलअटकनहिमानतवरवटचितैंचपरिभएचे
रे वादहिंमोहेंसोंरकतिवावरीमाननकोनमाने-
अवनेरे मननाहिरहोतमंगामूरतिएकान्हकैनै
उधेरे सूरस्यामसुंदरमुखनिरखतगएमनविस
रिदाहिनेडेरे ७०७ ॥रागरामकली॥ नैननवानि
परीनहिंनाको फिरतसदारहेपाछेपाछें नहां
लागनिहिंजीको लोकलाजकुलकीमरजादाअनि-
हांलौगनिफीको जोवानतिमोकौंरीसजनाकहेंहों-
काहियाहीको अपनेमनउनमलीकरीहेमोहिरं-
हहिवाको सूरदासएजाइलुभानेमदनमुसकनिह
रिपाको ७०८ ॥रागधनासिरी॥ ऐसेनिठुरनहीं
जगकोऊ जैसेंनिठुरभएडोलतहेमेरेनैनादोऊ नि
ठुरहनज्योंससिचकोरसोंवेवाबिनुअकुलाहीं निठु
ररहतदीपकपतंगउडिज्योंजरिबरिमरिजांहीं नि-
ठुरहनजैसेंजलमीननहिंतेसीविसाहमारा सूरदा-
सधगधगहेतिनकौंपरयारानविचारा ७०९ ॥

सू॰सा
२६०

२६०

राग आसावरी॥ परीमेरैनैननऐसीवांनि जवतेंग
पुषनवलगनिरषतमुषसुंदरताआषानि मोधेवा
धेरहतनसधीरीत जोलोभश्रीभानि सुंदरश्यामषचं
दविलोक्योज्यौंचकोररतमानि अतिआधीननीर
भरिआएसहतनदरसनहानि अवकहाकरौंवांधि
करिसौंपेसूरस्यामकैपानि ७१० ॥रागजैतश्री॥
नैननऐसीवानिपरी लुवधेस्यामचरनपंकजसौं
मोकौंतजीषरी घूंघटओटकियेराषतिहौं अपनी
सीजुकरी गएपेलितासौंनहिंमाननदेषौज्यौंनि
दरी गएक्षुगएफिरिनहितुहरयौंकहाधौंजायधरी
सुनौसूरमेरेपतिपालेलेवसकरेहरी ७११ ॥रागसा
रंग॥ नैननहींसमुझाइरही माननहींकह्यौका
हूकौ कुटिलसुटेवगही अनजानतहीचितैवदन
छविसनमुखसूलसही ननविसस्यौकुलकांनि
गवांईजगउपहासदही इननेंघरसंतोषनमान
तमरजादनलही सूरदासइनलोभिनकेसंगवन
वनफिरतवही ७१२ ॥रागरामकली॥ नैनाकहेन
मानतमेरे हारिमानिकैरहीमोनगहि निकटसुन
तनहिटेरे ऐसेभएमनौंनहिंमेरैजवतेंहरिमु
षहेरे मैंपछितातिजिनैवसु।धिआवतिउनदानेमु
हुडेरे इननेंपरकवहूंजोआवतदुरिदुरिमरतघ

मेरे मोहू परवस उनहि चलावत हू तमए उन मेरे लोक वेद
कुलकानि न मानत आनि हो रहत अनेरे सूरस्याम धों क
हा ठगोरी ल्याइ दिये धरि चेरे ७१३ ॥रागकल्यान॥ अव
हू जो आवत ए मेरे ढिग माई री आवत हां ये हे व्र हत स्या
म तु हि बुलाई री नेकहू न रहत विरमि जात उहां धाई री
मानो पहिचान नहीं ऐसी विसराई री उनको सुषदेत
मोहि दहि वे को पाई री सूरस्याम संग रहत निसवासर जा
ई री ७१४ ॥रागरामकली॥ नैनां मो को नहीं पत्याहीं जे
लव धे हरि रूप माधुरी औरा न तवे नांहीं जिन दधि दूध
घे निले चाखो ते क्यों निरसे छाछें क्यों मधुकर मधु
को सकमल तजि तच मानत हे आके जे षटरस सुषभो
गकरत हे ते के सें षर षात सूर सुनो लोचन हरि रस तजि
हम सों क्यों उपजात ७१५ ॥राग इ नैनेन नक
और नजाई कहा करों वरजत हूं चंचल लागत हिं उठि धा
ई वाट घाट छिन मिलत मनोहर नहि ए चलत लजाई
माधे न नक चोर ज्यों आतुर वह छवि चितै चुराई लो
चन मधुप लता ज्यों पावत हरि छवि मुष लषि पाई
घूंघट वसन जल हीन मीन ज्यों उठत अधिक अकुलाई
निलज भए कुल कानि गंवाई तासों कहा वसाई सू
रस्याम सुंदर मुष छवि विनु देषै रहो न जाई ७१६
॥रागसोरठ॥ जाकी जैसी टेव परे री सो तो टरे जीय

सू. सा
५४१
८१

केपाछेंजोईजोईधरनिधरेरी जैसेचोरनजेनहिचोरी
वरजेवहोकेरी धरिजोजाइहानिपुनिपावनुवकन
हिवकनमेरेरी जदिपमेसमुझावतिपुनिपुनियहक
हिकहिजुलेरी सूरस्यामदरसनतेंइनटकलननि
मषधेरेरी ७१७ ॥रागविहागरा॥ लोचनसपनेकेभ्र
मभूले जोइरविनिरषतसोपुनिनांहीभरमहिंओरें
भूले इनटकरहतटरतनहिकवहुं अपनेपरहेफूले
मिदरेंरहतमोहिनहिमानतकहतकोनहमभूले मो
नेंगएषईकैअतिहाजैसेवेनिरमूले सूरस्यामघरवि
सिंधपरेअतिरूपरंगअनकूले ७१८ ॥रागविलावल॥
नहीनीठनेनैनेंगोर क्रितनोमिवरजतिसमुझावतिउर
लटिकरतेहेंओर मोसीलरतभिरतहरिसनमुषमहा
सुभटज्योंधावत मोहेंधनुषसरसरसकटाछनमार
करतनहिंआवत मानतनहीहारिजोहारतअपनेम
ननहिंटटत सूरस्यामअंगअंगकासोभालोभसेनेले
लूटत ७१९ ॥रागगोरी॥ नेनाकरतघरहाकीचोरीचो
रनगएस्यामअंगसोभाडनसिरपरीठगोरी अपवस
करिइनकोंहरिलीन्होमोतिनमेरिपठायो जोकछुर
हासंपदामेरेंसोलपावनाहिवतायो आएधाइतुरत
निधरकेगएसंगलगाई सूरस्यामजैसेहेंमाईउ
लै
लटीचालचलाई ७२० ॥रागकान्हरा॥ लोचनलाल

चीमए रोके रहत नन सारंगरिपके हरि सरूप गीधए काजरकुलम मूंदि मैं राखे पलककपाट दए यह मन दून बोलि लिले निकस्यो हरि पै सट किगए अनि आ धान पंच तें न्यारे है कुल छांडि दए सूरदास प्रभु हरि सुंदरवर विनु गथ मोल लए ७२१ ॥राग बिहागरा॥

नैना स्याम रंग हेरमचे सारंगरिपतें निकसि निलज कै प्रगट आछि केनाचे मुरली नाद मृदंग मृदंगी अधर वजावे तार के निधरक हरि कारन चावत लोभ न चावन हार चंचल ता किरन न नटा सुरस भाव वतो वेनी के सूरदास रीझि गिरधारी गुन ऊपर उनहीके ७२२ ॥राग आसावरी॥

नट के वटा भए ऐनेन देखत नहीं उ द्रुजात कहां धो पलक रहत नहि रोकेन स्यांमी सएवनेरहत हैं। छि न ओरे। छिन और औसें जात रहत न हिरोके दूहां उहां नेंदोर गए सुगए प्रेरि अवकाए जात लागीन ही वार सूर स्याम सुंदरता चाहत जाको वारन पार ७२३ ॥राग बिहागरा॥

मो ते नैन गए री ऐसें वधिक पंजरा भीत रें न बग छूटि भजत है जैसें सकुच प्रांर में परे रहत है ते धों ते रि के सें मैं भूल्या या लाज भरो से रावत ही दे वे सें स्याम रूप वन मांझ समाने मो पर रहत अनैसें सूर मिले हरि सो अनुर के गुरमिलो सुत तेसें ७२४ ॥राग धना सिरी॥

नैना भए विराने चेरे नंदलाल लागे सगडोलत रहे न हाव समेरे जदिप जतन किये जुगवत ही स्यामल सोभा घेरे

सू॰सा
२६२

अवमिलिगएदूधपानीज्योंनिरवतनहींनिवेरे कुल
आंकुसआरिजपथतजिकेंलोकलाजदईडेरे सूरस्याम
केरूपलुभानेक्योंहूंफिरतनफेरे ७२५ ॥रागरामकली
जाकोजेसीवानिपरी कोउकोटिकरोनहिछूटे जोईध
रनिधरी वारेहतिंदनकेएदामचंचलचपलअनेरो वा
जतहीवरजततउदिसेरेभएस्यामकेचेरे एउपजेआछे
नितकेलंपटभएवजाए ७२६ ॥रागआसावरी॥ नेन
नकोरीयहीसुहाइ लोभेजाइरूपमोहनकेचेरेभएवजाइ
फूलेफिरतगगनतनहिंकाहूं आनदउरनसमात यहेवात
कहिसवनसुनावतनेकुनहिंलजात निसदिनकरि
सेवाप्रतिपालिवडेभएजवआइ तवहमकोंएछांडिभगा
नेदेषोसूरसुभाइ ७२७ ॥रागविहागरा॥ षंजननेन
रूपरसमाते अतिसेचारविमलचंचलगतिपलपींजरान
समाते चलिचलिजातनिकटश्रवननिकेंउलटतआलि
कफंदाते सूरदासअंजनगुनअटकेनतरहतवहिउडिजा
ते ७२८ ॥रागधनासिरी॥ अखियांनिरषिस्यामसुषफूली
चकतभईमदहसनिचमकपरदंदकुमुदज्योंफूली कुं
लललज्जाकुलधर्मनामकुलमानतनाहिनएनो ऐसेंए
वसभईस्यामकेवरजतसुनततननेकौ एलुवधाहरिरूप
माधुरीतनकादसाविसारी सूरस्याममोहनीलगाई म
७२९ ॥रागजेतसिरी॥ अखियांहरिके
कुपदिकेंसिरडारी
हाथविकानी मदमुसकानमोलविनलीन्हीयहसुनि

मैंसदाकीतेसियां षडिडोनिकसीमाजराइ संगकोलोसोह

सुनपछितानी कैसें रहत उर हतीमेरव सअब कछु औरैं भां
ति अब वे लाज मरत मुहि देषे वेहीहरि मिलिपांति स
पनेंकीसी मिलन करातिहैं कब आवत कब जात सूर मि
लीआनंदनंदनकौं अंतनहींपतियात ७३०॥ राग
अंषियन ऐसीधरनधरी नंदनंदन देषे सुचपावें मो
सों रहत डरी कबहु रहति निरषि मुषसोभा कबहुं देह सु
धिनाहीं कबहूं कहतकौन हरिकौ हम ज्यौं तननहे परछांहीं
अंषियां ऐसें गई स्याम मिलि नहीं रह्यौ कछु भेद सूर
स्यामकौं परम भांवती पलक नहोत विछेद ७३१॥ रा
ग विहागरा॥ अंषियन तवतें विरधस्यौ जवहम हटक्की
हरिदरसनकौं सुरसनहीं विसस्यौ तवहीतें उनिहमे
भुलायो गईउ तनहिकौंधार अबतौ तरकिनरकि ऐंढति
हैं अनिहीं लेति विराट मई जाइ वे स्यामसुहागिनि व
डभागिनी कहावें सूरदास ऐसी प्रभुतातजि हम पै क
वें आवें ७३२॥ राग जैतसिरी॥ धनि धनि अंषियां
वडभागिनि जेविनस्यामरहतिनहिनेकौ कान्हा ति
न्हेंसुहागिनि जिनकौं नहीं अंगतें टारत निसदिन दर
सन पावें तिनकी सरवरि है से कोऊ जे हरि कें मन भावें
मनहीमननें मईउजागर अब हम परसि समानी सूर
स्याम अति सीसु मई हैं ऐसा रहति भुलानी ७३३ ॥ राग
विलावल॥ ए अंषियां वडभागिनी जिनरिज एस्याम अं
गतें नेकन टारहीं वासर अरुजाम ऐवेसी हैंलो भिनी

सू.सा.
२६३

छविधरानिचुराई औरन औसाकरिसकै मरजादजाई
एतौपहिलेंमनगयैअवतौंपछितात उनकेगुनगुनिगु
निजुरैतौहूनपत्यात ढूंढ़ासवन्यारीपरी सुखलूटतिआं
खि सूरदासजेसंगतन हाँतेमरिहैंझांखि ७३४॥अथमु
रली प्रसंग॥रागबिहागरा॥ आछिनकीसुधिभूलिगई
स्याम अधरमृदुसुनतमुरलिकाचकृतसबेभई जोजैसें
तैसेंरहिगई सुखदुखरह्योनजाइ लिखीचित्रकीसी
सबहैगई इकटकपलविसराइ काहूसुधिकाहूसुधि
नाहीं सहजमुरलिकागान भवनरमनकीसुधिनरही
तनसुनतसबदयह आन आछिनतेंमुरलीअतिप्यारी
एवेरिनिवहसौत सूरपरसपरकहतिगोपिकायहउपजी
अदभौत ७३५॥रागसारंग॥ अधररसमुरलील्
टनलागी जारसकौंषटरितनतनगारयो सोरसपियतिस
भागी कितहीरहतिकहांतेंआई कौनेयाहिबुलाई
चकृतभईबूजवासिनयहतौभलीनआई सा
वधानक्यौंहोतनहितुमउपजीबरीबलाई सूरदास
प्रभुहमपरयाकौं कीन्हीसौतिबजाई ७३६॥रागबि
हागरा॥ स्यामसुहागिनीमुरली भेदनानाकरतिहर
षतिउनिहरखिउरली सदासुनिसुनिरहतयाकीअतिम
धुरमुरली रैनिबासरटरतिनाहीरहतितहांघुरली
भईव्याकुलचरितदेषतिनारिवृजकुरली सूरश्याहिज

पंथविसर्यो भवनउरझुरली ७३७ ॥राग सारंग॥ अवमुर
लीपतिक्यों नब्रहावत राधापतिकाहेक्रों न हिये सुनन
लाउजियआवत वहअनुभनि सुनि नाम हमारे अ
वहमक्रों नहिं भावत फेरें थे चले घेरहमसों करि नोवी
धिनक्रिनछावत काहेकौं द्वे नाव चढ़ने हैं इन नालिप
नक्रावत सुनो सूर यह कौन भलाई हंसि हंसि वेन व
दावत ७३८ ॥राग सारंग॥ वावरी वांसुरी सों जु लौरे
वासों प्रेम ने मनु मसों नहिं गिरधर अधर धरे जो लौं
मधु पीवति जीवति है पल छिन नहिं विसरे सूरज प
भु रसवस भए वाकी सरवर कौन करे ७३९ ॥राग धना
सिरी॥ यह मुरली जरि गई न तवही जव अपनो कुल
दाह करायो न वंक्रे सनि वहीं ऐसी चतुर चतुरई की
न्ही आपवचा सवजारी कैसे मिली सूर के प्रभु कों वि
धना कीगति न्यारी ७४० ॥राग हमीर॥ आजु वजाई
मुरली मनोहर सुधि न रही कछु मोतन मन में मेंजल
नाजल भरन जाति हरि दाढे वृंदावन में नाना राग रा
गिनी गावत धरि अधराम्रत वेन सूरनिरषि हरि अं
ग अंग माल्यो मैन भरि नैन ७४१ ॥राग केदार॥ आ
जुवन वेनवजावत स्याम यहकहि कहि चकत भई
गोपी सुनत मधुर सुर ग्राम कोऊ ज्योंनार करति कोऊ
वैठी कोऊ ठाढ़ी है धाम भनो चित्र की सलि षिका भ
९ कोऊ जेंवत कोउ वैठी जिमावत कोउ सिंगार वाम

सा
२५८

सुनतपरसपरनांम सूरसुनतमुरली भई बौरामदनकि
यौतनताम ७४२ ॥राग विहागरा॥ बंसीवनराजआ
जुआई रनजीति मेटतिहैं अपनेवलसबहुनअरीरति
विडुरेगजजूथसीलसेनाहीभाजी घूंघटपटओट
टूटिछूटेंदृगताजी ओहूपतिगृहतजेंआहूतनत्रानर
आहूसुषसूरनलह्यौसुनतसुजसकान ओऊपदप
रसिगईअपनेमनदेस ओऊरसरंगभरानेभईनेरेस
देतसवनमारतमिलिदसौंदिसदुहाई सूरश्रीगुपाल
लालबंसीवसमाई ७४३ ॥रागसोरठ॥ मुरलीमधुर
वजाईस्याम मनहरलियौभवननहिभावैं व्याकुल
वजवांम भोजनभूषनकीसुधिनाही तनकीनहि
संभार गृहगुरलाजलोकउरछोरह्यौनकुलव्यौं
हार करतसिंगारविवसभईसुंदरिअंगनगईभुलाइ
सूरस्यामवनवेन ~~[illegible]~~ वजावतचितहितरा
सरमाइ ७४४ ॥रागधनाश्री॥ चलीवनवेनसुनतस
वधाइ मातपितावंधूपतित्रासतजातिकहांअकुला
इ सकुचनहींसंकाकाहूंनहिरि निकहांतुमजाति जर
ननीकहतिदईओघालीकहिवौंरतराति मानतनहीं
कह्यौकाहूकौं निकसीनातौतोरि जैसेंजलप्रवाहभा
दौंकोसोकोसकैवहोरि ज्योंआतुरीभवंगमत्यागतु
मातपितासौंत्यागें सूरस्यामहरिहाथविकानीअ
लिअंवुजअनुरागे ७४५ ॥रागविहागरा॥ मुर

लीवजोवनस्याम लषिलजतकोटिककामहरिमोहनीव
पुधरयौं नवकामकोमदहरयौ श्रीमदनमोहनलाल
नवनागरीसंगवाल नवकुंजजमुनाकूल रहेदेषिसू
रसुभूल ७४६ ॥रागसूहा॥ अथश्रीराधिकाविवाहमं
गल॥ मुरलीअधरधरेनंदलाला सुनिकैसवदचलीव
जवाला यहवृतधरिचितदेवीपूजी हेमोहनकामना
नहूजी दीजेनंदसुवनपतिमेरो जोयेहोइअनुग्रहते
रौं ॥छंद॥ नवकरिअनुग्रहवरदियोजववरषभानकिन
यकियो तिरलोकभूषनपतिप्रलषतासमनहिकोऊ
वियो अतिउवटिषोरसिंगारिसषियनकुंवरिचुपरे
पान चाहतकियोरतनेमसोंसोघराविधनाआन
मोरमुकटरचिमोरवनायो माथेंधरिकैहारवरआयो
तनस्यामलअरुपीतदुकूले देषतघनअरुदामिनी
भूले ॥छंद॥ दामिनिघनकोटिवारोंजवनिहारेंमुषछ
वे कुंडिलविराजतगंडमंडलनहीसोभाससिरवे औ
रकौनसमानत्रभुवनसकलगुनजामांहिहै मनुमोर
नाचतसंगडोलतमुकटआपरछांहहै गोपीसवर
सौतिंआई मुरलीधुनिपदैवुलाई विधिआनंदमं
गलगाए वहुफूलनमंडपछाए ॥छंद॥ छाएजुफूल
नकुंजमंडपपुलिनमेंवेदीरची वैठेजुस्यामास्याम
त्र्यथवरतहांअतिसोभासची उतश्रीविलालरहाकु
लाहलहूनसकलव्रजनारि आईजुजुवतीदुहूंदिस
तेंदेतिआनदगारि मिलेमनदेइकभासनवैसे वि

नवनचरा किये नवधैसे रासमंडलमें भुजभुजजोरा
स्यांमसांवरेराधागोरी पानग्रहनविधिसोंहरिकी(
न्हो नवमंडप मनरिभांवरिदीन्हो ॥छंद॥ देनभांवरिकुं
जमंडपमूंथहिनहिरदेंपरी अतिराचिपरमपटीरअं
गनिविकटरंदासुमधरी कोयेसुगानपानिनवडुविर(
धिवेदनचिसुंदरधुनी नंदसुनवृषभाननंनयारास
मेंजोरीवनी मनमथसेनामएवरानी डुमवकुझूले(
अनअनभांती सुरमुनिवंदाजननजसगाए मघ(
वाराजनआनंदवजाए ॥छंद॥ वाजेनुवाजनसव
लनमपुरपुहपअंजुलिवरषहीं देवदिव्यविमान
वैठेकहतजैजैहर्षहीं सूरदासननयोआनंदपु(
जोमनकीसाधिका श्रीलालागिरधरनवलदूलह
दुलहिनीश्रीराधिका ७४७ ॥रागविहागरा॥
॥धमार॥ नाछूटैमोहनडोरनांहीं अहोकसिवांधी
लडिलसीकोघान माखनघाइ क्रियेवलभारीप
रिहैसोअवसवजान प्रथमव्याहविधिआनिर(
चीहैंकंकनचारविचारि रचिराचिपचिपाचिगांठि
दईहैंनवलवधूव्रजनारि वडेहोइनोछोरन्लेहु(
जू सकलघोषकेराइ कैकरजोरिकरौविनतीकै
लगीराधेजूकेपाइ यहनहोइगिरवरकरधरि(
वोसुनोंकुंवरिगोपीनाथ आपुनकौंतुमवडेक

हावत आपन लगे है हाथ वहुरि सिमिटि कै रजसु
दरि मिलि रानी गांठि घुराइ छोरो वेगि किलेउ
आपनी जसुमति माइ वुलाइ पचिहारे वै यो हे न
हि छूटति वंधी प्रेम अजोरि देषि सपहरा ति
कुकुमकी मुदित भई मुष मोरि अवजि निकै रौ सहा
इ सषी री छांडो सकल सयान कुलहि न छैहे दूल
ह कौ कि वोले पिता वृषभान कंवल कवल कै वर नि
यो है पान पिया कै लाल अवकुल कवि सांचे भए
जव भई करलीवाल लीला रास गुपाल लाल कीजे
रीरसि क वषान सदा रहै अवचल यह जोरा वलि
वलि सूर सुजान ७४८ ॥राग सूहा॥ रास रसिक गोपा
ल लाल व्रजवाल संग विहरत वृंदावन सहस सुर
न मुरली वाजति धुनि सुनि मोहे सुर नर गंधर्प गन
तत न कान्ह अलत न गोपि का कटि पीत वरलीलव
रतन नाथेई नाथेई नहत सूर प्रभु निरषि परसपर
रीझत मन मन ७४९ ॥राग देवगंधार॥ ए दोउ राजत
स्यामा स्याम व्रज जुवति नमंडली विराजत देषति सु
रगन वाम धन्नि धन्नि वृंदावन के सुष सुर पुर कौने का
म धन्नि धन्नि वृषभान सुता धनि मोहन गोपिन ना
म धन्नि पुलिन जमुना तट सुंदर धन्नि सरद की जाम
क्यौ हू सूर जनम व्रज पावै यह सुष नहिं तिहु धाम ७५०

॥राग गौडमलार॥ निरखि ब्रजनारि छवि स्याम लाजै बि
खिधि बेनी रची मांग पाटी सुभग भाल बेंदी निरखि इं
दु लाजै श्रवन ताटंक सुधि नासिका इ गन लखि मीन
खंजन कीर कोटि लाजैं अधर बिद्रुम दसन मांहि दुति
दामिनी सुभग बेसरि निरखि काम लाजैं चिबुक तर कं
ठ श्री माल मुक्ता न उर कुच उंच नदेखि गिरि हेम लाजैं
सूर की स्वामिनी स्याम की भामिनी निरखि पिय प
रम सोभा सु लाजै ७५१ ॥राग केदार॥ उघटत स्याम नि
रतति नारि धरे उपंग धरे उपजे लेत हैं भेद्यारि ताल मु
रज अत नाद बीना धंजरी रस सार सबद संच मृदंग मि
लवत सुघर नंद कुमार नागरि सब गुन न आगरि मि
लि चलति पिय संग कबहुं गावति कबहुं निरतन क
बहुं उघटत रंग मंडली गोपाल गोपी अंग अंग सुढार
सूर प्रभु घन नवल पागिनि दामिनी छवि वार ७५२
॥राग विहागरा॥ पिय संग खेलत श्रम भयो अति उरे हां
कौं त्यार अपुन अंचरा लै सु बाऊं बदन गरम कौ बार न
नत उघटत अलक बिथुरी ताहि लेहु संवारि सूर प्रभु कौं
जौ न चाहें जाहि औरें वारि ७५३ ॥राग विलावल॥ मा
॥रागा ईश्री कृष्ण जी कौ॥ तुहि गारि कहा कहि दीजि जे हैं
नातनैरी जगत न कहियै जानिगो त
नांम कहा कहि लीजि और कौन बेद बखानियै
न जानियै गुन रूप की उन हारि
जिन विरध है ल्याग वांई नारि की कुव ते सहा अन

गिनतजानेजारन्नीन्हे देषिसोवरहैनहा नेरीमाइप्रहम
कुलषोयोवनकोनोनहीविगोयो ॥ छंद ॥ सुरञ्ज सु
रनरसवविगोएफिरतिनिसिवासरघनी । सिरसेत
पटवटलाललहंगालीलचोलीतनवनी कछुमंदगा
तिमुसक्याति सुरनरनागमुनभीतरलेसें वलजांवजा
दौपतितुम्हारी माइलाषिसवजगहसें कछुकहिनजा
इगतिवाकी वहरहतिमदनमदछाकी “वहहैमदनम
दमहाछाकी निलजकुचटंधैनहीं वानिरषिमुषस
वछैलमोहैं विक्कलह्वैधावैंनहीं तिहिमोहनीछवि
निरषिनैनन क्योंनक्रोनपटैं इहिभांतिचोपलट
गाइचंचलसदारतिसंसोक्रै तिहिभरमभुलानेमो
गी वसकीन्हेतुमजोगी ॥ छंद ॥ वसकियेतुमसेवहुत
जोगीछत्रपतिक्नेनकहों अरुजीवजंतअनेगजलथ
लनेगनहिसुधिवुधिलहीं अवतुमहूंकछु समुझा
इदेषो छाडिपहलज्यागहै सवजगतकोउपहासछू
टै औरकुलकीपतिरहै तुमठाकुरहोजगजाने तुम
कहियतपरमसयाने ॥ छंद ॥ तुमजुठाकुरजगतकहि
यतसुजसजगमेंजानियें याजगतकेउपहासकारन
साधगारिवषानियें सवसुधिरहानहिसोधपायो
अंतकछूनहिसूझियै सुनिसूरश्रेष्ठसजनतुम्हरेकु
लनऐसीवूझियै ७५४ ॥ राग विहागरा ॥ प्रीतमसोंमा

सू॰सा
२६१

भिनिवहौमुहिनंधचरावहु निरतकरनमुहिरसमम
योनाश्रमहिमिटावहु धरनीधरनवनैनहिपगञ्र
तिहिंपिरानें त्रयावचनसुनिगरवक्ने पियञ्रतिसुस
ज्ञाने मैंञ्रवगतिञ्जजञ्रलषहौंयहमरमनपायौ भा
वैवससवमैंरहौंनिगमनभरमायौ एकप्रानदोदेह
हैं दुविधानहितामैं गरवकियौनरदेहतेमैंरहौंनया
मैं सूरस्यामअंतरभएसंगतेंनजिनारी जहांतहांठा
ठारहीसवगोपकुमारी ७५५ ॥रागविहागरा॥ अंतरध्या
नसमौ॥ नवहरिभएअंतरध्यान जवकियौमनगरव
प्यारी कौनमोसीआन अतिथकितभई नैननमोहन
चलिनमोपैजाइ स्यामभुजभरिआपुनकांधेलेहु
मोहिचढाइ गएसंगविसारिरसमैंविरसकीन्हौवा
ल सूरप्रभुदुरिबालिनदेषततुरतभईवेहाल ७५६
॥रागटोडी॥ स्याम गएजुवतीसंगत्यागी चकृत
भईतरुनीसवजागी प्यारीरागलगाइविहारी कुंज
लतानतरुनितहूंडारी संगनदेषेगिरवरधारी दसौं
दिसानिनदृष्टिपसारी स्यामनदेषेकह्यौपियारी
वामवेरलीन्हौसुविहारी परीमुरझिधरनीसुकुवा
री आहचाहकहिकहिवनवारी भईव्याकुलतनन दि
सारी सूरसंगतजिगएमुरारी ७५७ ॥रागविहागरा॥
व्याकुलभई घोषकुमारि स्यामनजिसंगतेंकहांगए
पहकहतिव्रजनारि दसौंदिसनभटुरमदेषतचक्र

तभईविहाल राधिकानहितहांदेषीकह्यौयहकहाष्याल
कछुदुषकछुहरषकान्होकुंजलैगएस्याम सूरप्रभुसंग
देषिहमकोंकरैऐसेकांम ७५८ ॥विहागरराग॥ वनकुंज
नचलीव्रजनारी सदाराधाकरतिदुविधादेतिताकौंगारि
संगहीलेगईहरिकोंसुषकरतिवनधाम कहांजैहोदूंढिलै
हैंमहारसकिनवाम चरनचिन्हनचलीदेषतराधिका
पगनांहि सूरप्रभुपागदरासिगोपीहरषिमनमुसकांहि
७५९ ॥रागविलावल॥ जवदेषाद्रुमतरयरीमुरछीसुकुमारी
चकृतभईसवसुंदरीयहतौराधारी तोहीकोंषोजतिस
वैपरिरहीकहारी धाइपरीसवसुंदरीजोजहांतहांरी
तनकीतनिकौंसुधिनहीं व्याकुलभईवाला यहतौअ
तिवेहालहैकहांगएगुपाला वारवारवूझतिसवैनर
हिंवोलतिवानी सूरस्यामकाहेतजीयहकहियछि
तानी ७६० ॥रागगौरी॥ नंदनंदनउनकोहमजानति
ग्वालनसंगरहतजेमाईपीरकहातेमानत वनवनधे
नुचरावतवासरवयावधनभ्रमनाहीं देषिदसाव
षमानसुताकीततनीसवपछितांहीं कहाभयौत्वय
हरजोकान्हायहनवूझियेस्याम सूरदासप्रभुमिलो
कृपाकरिदूरिकरौमनताम ७६१ ॥रागकल्यान॥ राध
कासोंकह्यौधीरधरिरी ।मिलैंगेस्याव्याकुलदिसाजि
निकरैहरषजियधारिदुषदूरिकररी आपुजहांतहां

२ सू. सा
६८
२६८

गईविरहसववपगिरहीं कुंअरिसोंकहीअवस्यामस्यांवे
फिरतिवनवनविकलसहससेंारहिसकलवूझरनअ
छिलनहींपावें गएकहांतजिहमेंजुवतिकहतीफिरें
स्यामतनदहतुसवघोषनारी सूरप्रभुस्यामस्यामा
चरितदेखिकैं करतिअंतरहूहैंभीतभारी ७६२ ॥राग
बिलावल॥ कहूंनपावेस्यामकोंपूछतिवनवेलीसवे
भईव्याकुलफिरेंतनमदनदुहेली मृगनारीसोंपू
छहीं कितेहेसुषसारी कंवलसरोवरपूछहीं विरहा
नलमारी कनकवेलसीसुंदरीदुमकेतरठारी मनुद
मिनिधरनीपरीघनस्यामविसारी कृतउतनेंफिर
आवहाजहांराधाप्यारी सूरस्यामअजहूंनहींमि
लिकरतअपारी ७६३ ॥रागरामकली॥ कहिधौंरी
वनवेलीनेंकहुंदेखेहैंनंदनंदन पूछतिहींमालती
कहूंतेंपायेहैंतनचंदन केधोंकुंदकदंववकुलवट
चंपकतालतमाल कहिधौंकंवलकहांकमलापति
सुंदरनैनविसाल मुरलीअधरसुधारसपावतिरहैं
जमुनकेतीर कहितुलसीतुमसवजानतिहौकहांघ
नस्यामसरीर कहिधौंमृगीमयाकरिहमसोंकहि
धौंमधुपमराल सूरदासप्रभुकेतुमसंगीहैंकहांपर
मदयाल ७६४ ॥रागकाफी॥ ओउकहूंदेखेनंदलाल
सुंदरगोदानेनविसाल माथेमुकटवनीउरमाल

सोहेमनमोहनगोपाल निसवनगईसवेरउवाल
अंतरध्यानभएरचिष्याल ढुमढुमटूंढनभईविहा
ल सूरस्यामविनुभयोअंजाल ॥७६५॥ रागविहा
गरा॥ तुमधनितुमाहिंमनमेरें कान्हमनवचतुम्हें
चाहोंकलनविनहेरें छियोचाहोंअरसपरसअ
स्कोनाहींमान सुनीचाहोंसदाश्रवननमधुर
मुरलीतान कुंजकुंजनिफिरतिफेरतितुमगुनन
कीमाल सूरप्रभुहरिवेगमिलियेहरोसवजंजाल
७६६ ॥रागकान्हरा॥ प्रगटभएनंदनंदनआइ प्या
रीविरहविरहअतिव्याकुलधरनेंलईउठाइ उभे
भुजाभरिअंकमदीन्होराषीकंठलगाइ प्राननतेंप्या
रीतुममेरेंयहकहिदुषविसराइ हंसतभएअंतरह
मतुमसोंसहजकेलउपजाइ धरनिमुरझिपरीतुम
कोहेकहांगईचितुराइ राधासकुचिरहीमनमांहीक
ह्योनकछुसुनाइ सूरदासप्रभुमिलिसुघरीन्होउ
घउरस्यौविसराइ ७६७ ॥रागसूहा॥ जुवतिनकोंदि
यौधीरजुआइ अंतरतेंप्रभुप्रगटभएरासहतप्रेमव
सकुंअरकन्हाई सुषसकौंवहुस्योंभरिदीन्होवहे
भावसवमानिलियो यहजाननिहरिसंगनवहीतें
विछुरेनहिसववहाहियो वहीरासमंडलरसजान
ति विचगोपीविचस्यामवही सूरस्यामस्यामाबघि
नाइवनवहीपरसपरप्रानिनई ७६८ ॥रागसारंग॥

बहुरिस्यामसुखरासिकियो मुजमुजजोरिजुरीब्रज
बालावैसेंहीरसउमगिहियो वैसेहिमुरलीनादप्र
कास्योवैसेंहिसुरनरवसकुभए वैसेंहीउडगनसहि
तनिसापतिवैसेंहिमारगभूलिगए वैसेहिदिसाभ
ईजमुनाकीवैसेंहिजिततितपवनभयो वैसेंहिनिर
ततरंगबढ्योवैसेंहिविहसनिश्रमजयो बहीनिसा
वैसेंहीजुवतीवैसेंहिहरिसंवेभजीं सूरदासवैसेंहीमो
हननिरखिपियारीबहुरिलजीं ७६९ ॥रागविहागरा
स्यामछविनिरखतिनागरीनारि प्यारीछविनिरखत
मनमोहनसकुततनैनेनपसारि पियसकुचतनहिदृष्टि
मिलावतसनमुखहोतलजात श्रीराधानिदरेंमव
लोकतिअतिहिरदैंहरखात अरसपरसराधामोहन
मिलिसंगगोपीगोपाल सूरदासप्रभुसवगुनलायक
दुखनवैउरसाल ७७० ॥रागविहागरा॥ रचेलचरास
स्यामसुजान प्रथममुरलीनादकरिहरि हर्योसबकौ
ग्यांन सवनउलटीरीतिकीन्हीदेवमुनिनरआदि य
जवधूमनकामपूरनकियौनिरखिअनादि सहज
सुखनिसावालसोवतसोरचीषटमास हेतजुवतिन
सुखवढ्योकरीपूरनआस मेटिअंतरध्यानदुखसव
बहीराखैभाव सूरप्रभुमिहमाअगोचरनिगमजं
तनपाव ॥रागनट॥ मोहनरच्योअदभुतरास संगमि
लिवृषभानतनयागोपिकाचहुंपास एकहीसुरस

कलमोहे मुरलीनादप्रकास जलहुथलकेजीवथाकेरहे
मोनउदास चकितभयोसुमीरसु निरषेंजमुनउलटीधार
सूरप्रभुव्रजवामामिलिवनवासकरतविहार ७७१ ॥राग
नट॥ विहरतरासरंगगुपाल नवलस्यामासंगसोहति
नवलसंगव्रजवाल सरदनिसअतिनवलउजलनव
लतावनधाम परमनिरमलपुलिनजमुनाकलपद्रुमवि
सराम कोसद्वादसरासमंडलरच्योनंदकुमार सूरप्रभुसुष
दयोनिसवासिकामकोटिकवार ७७२ ॥रागललित॥
रासरसिश्रमितभईव्रजवाल निससुषदैजमुनाजलले
गईभोरभयोतिहिंकाल मनकामनाभईपरपूरनरहीन
एकौसाध षोडससहसनारिसंगमोहनकान्होसुषअ
गाध जमुनाजलविहारतनदनंदनसंगमिलिसुकुमारि
सूरधन्निधरनीवृंदावनरविततयाअनुसारि ७७३
॥रागकान्हरा॥ धन्निसुकमुनिभागौतवषान्यौं गुरकी
कृपाभएजवपूरननवरसनाकरिगान्यौं धन्निस्यामवृं
दावनकौसुषसंतनयातेंजान्यो जोरसरासरंगहरिकी
न्हो वेदनहूंठहरान्यौं सुरनरमुनिमोहितभएसवहीसं
नुसमाधिभुलान्यौं सूरदासतहांनैनवसाएऔरनकहूं
पत्यान्यौं ७७४ ॥रागगौरमलार॥ रैनिरसरासकुष
करतवीती भोरउठिसवैमिलिगएजमुनासलिलन्हात
जलकेलिअतिवढीप्रीती एककंगमलतिइकहसति
हरिसंगरसएकजलमद्धिइकनारठाढी एकअतिउर

सू॰सा
२६०

७४

तिरकतंक्रमरिलैचलतिरक्रसुघकरतिअतिपाढिचाडी
कहुनहिउरतिजलमाहिकीउाकरनरहनमननिउरजेपोक
नमारी सूरप्रभुस्यामस्यामासवैगोपिकामिटीतनसा
धमएमानभारी ७७५ ॥रागसोरठ॥ साधनहीजुव
तिनमनराषी मनवांछासवहुनफलपायोवेदउपनि
षदसाषी भुजभरिमिलेकठिनकुचचापेअधरसुधा
अतिचाषी हावभावनैननसेननदेवचनिरचनिमु
षभाषी सुखमान्योतिशगाढिकरिगायोकछूनहुवि
धाराषी सूरदासव्रजनारिसंगहरिवाकीरहीनकाषी
७७६ ॥रागसारंग॥ मोरनकेचंदवामाथेपरराजतरु
सखीमुख गान चिरसुदेसरी कमलवदनपर[illegible]मौहैंघूंघरवारे
केसरी सोहेंधनुषवदगपनिचसवारीभालतिलमनु
वानरी मोरउवतरविअंधकालकोंमिटियोमनोसंधा
नरी मनिमयजटितमनोहरकुंडलराजतनवलकपो
लेरी कालिंद्रीमैंरतिपतिचंचलमानेघेरतडोलेरी
सुभगनासिकामुक्ताराजेझलमलातछविदेनरी अरु
नअधररसमुघमिठवोलनिआनितकछुमुसक्यान
री मानोंपक्वविंवनेसघारीहैअनुरागचुचानरी द
सनदमकिदामिनिसीदमकतिसोभाकहतनआवे
री याहीतेंदारयोउरफाटेताकीसमनाहिपावेरी चि
बुकचारमनुआमसजीरीराजतित्रिवलीग्रीवरी षें
चिसिततीनरेषामनुकामरूपकीसीवरी भुजविसाल

वंसबतमसवैंभूमलवैंवंलपगनवद
कीगेउदरी

चंदनअतिचरचितधरेअधरमुखबासुरी मानोसुधास
रोवरकेढिंग ब्रीडतजुगकलहंसरी उरपुनीतओपउप
जावतिमाथरमुक्ताहाररी सांवलगिरितेंसुरसुरिमानो
आवतिहेविविधाररी नाभिगंभीरसुधासरसीमनु
त्रिवलीसिढीबनाईरी विरजवधूमृगनेनीप्यासी
अतिआतुरढिगआईरी कटप्रदेससुंदरसुदेसअति
नापरकिंकिनिराजेरी पानिनितंवजंघकोसोभादेषत
मृगपतिलाजेरी रनीपीतुरीअसमसधारीचरनअं
बुजनखलालरी मंदमंदगतिचलतसुधारीमनुद्विरद
कीचालरी कंचनवरनपीतउपरेनांसोहतस्यामल
अंगरी मानोआवतआगेपाछेंनिसवासरइकसंग
री सूरदासमनवसोनिरंतरमनमोहनअभिरामरी
कालिंद्रीमेंविहरतदोऊममप्रभुस्यामास्यामरी ७७७
॥रागकान्हरा॥ विहरतहैंजमुनाजलस्याम राजतहैंदोऊं
वाहांजोरीदंपतिअरुव्रजवाम कोउठाढीजलमांहिजंघ
लौंकोउकटहृदकोउग्रीव यहसुखवरनि निसकैकैसोको
सुंदरनारीसीव स्यामअंगचंदनकीआभानागरिकेस
रिअंग मलयाचलकुमकुमांमिलिभईजलजमुनाके
रंग निसश्रममिटयोमिटोआलसतनपरसिजमुनाभ
ईपावन सूरस्यामजलमध्यिजुवतिगनजनजननेम
नभावन ७७८ ॥रागबिलावल॥ विहरतिनारिहंसत

नदनंदन अंकमभरि भरिलेत अनंदन। निर्मल देह छु
टत तन चंदन अति सोभा त्रिभुवन जन वंदन कंचन
पांछिनारि अंग सोभा वेउन्ह वेउन्ह लोभा कोऊ
अंकभरि चलति अगाधा परसि परसपर मेटति साधा
कोऊ भाजै कोऊ पाछें धावै जुवतिन सों कहि नाहिं भ
गावै नाकी गहि अथाह जल डारें सुख व्याकुल ता
पनिहारें अंदलगाइ लेत पुनि ताही देत अलिंगन री
झत जांही सूरस्याम ब्रज जुवती भोगी जाकौं धावत
शिव मुनि जोगी ७७९ ॥राग कल्यान॥ जल क्रीडा करि
सुख उपजायौ रास रंग मन तें न हि भूलत वही भेद मन
भायौ जुवती करि कर जोरि मंडली स्याम नागरी वीच
चंदन अंग कुमकुमा छूटत जल मिलि भई कीच जो
सुख स्याम करत जुवतिन संग सो सुख तिहुं पुर नाहिं सू
रस्याम देखत नारिन कौं रीझि रीझि लपटाहिं ७८० ॥रा
गरामकली॥ रीझि स्याम स्यामा रूप नैसिये लवें टेगरि
उरपरस्रवत नीर अनूप श्रवत जल उरपर तिधारा न
ही उपमापार मनौ उगलत राहु अमृत न नख(?)गिरि
परहार कुचन परसत स्याम सुंदर नागरी सिरनाइ सूर
प्रभु तन काम व्याकुल गए मन हि सिहाइ ७८१ राग
जमुना जल क्रीडत हैं नंदनंदन गोपी वृंद मनोहर च
हुं दिस मधि कर घनि वृंदन सोभित पान परसपर छि
रकत सिथल होत भुज चंदन ज्यों अहपति कंचु रा कोल

घुलघुछेरतु हैं अंगवंदन भीजेकेसमुदेसअंबन्नन चुव
न अंगगतिमंदन मनमुषभरिगंडूषन्नमलनैतेंडारतआ
लिआनंदन दुरिलेचलतप्रयाहिअंनभरि ज्योंलुबुध
नुषगफंदन सूरजस्वामीश्रीपतिन्नेगुनगावतुहैंश्रुति
छंदन ७८२ ॥रागसारंग॥ स्यामास्यामसुभगजमुना
जलसुभ्रमरतविहार सेतन्नमलइंद्री वरपरमनुमोरहि
मएनिहार श्रीराधाकरअंबुजभरिभरि छिरकतवारंवा
र कनकलसामरकतरसघनतर प्रफुलितचारुघ्नार
अतसीकुसुमन्नलेवरलुवधेपूतिविंबितनिरधार ज्यों
वसचकअगनसेऊलतसषीसवकरतविचार धाइग
हतवषभानसुताहरि मोहितसवसंसार मानौसूरज
लदअतिवढिन्नै भेटतुअंमतधार ७८३ ॥राग॥ ल
छिमुषउमगिआयौआजु जलविहारविनोदमेंसषि
रुचिरतनकौसाजु भीजिपटलपटयौसुभगउरहीन्नै
सरिरैनि सरसपरससुभावमानौंजगेनिसकैनैन न
पुलकंचितन्नेसमाईसरससोभाभेव सुभगराजतन्ना
मदुमकौमनौअंकुरनेव जु वतगनसवजुटहिजिनन्नि
तभरतअंजुलनीर सूरसुभगगुपालतनतचसुषदस्या
मसरीर ७८४ ॥रागकल्यान॥ राधेछिरकतिछीट छर
वीली उचकुचकंचुकिगूथ छूटेवंदलटकिरहीलूटकी
ली वदनचंदताटंकनकैरतनजटितमननीली ग

सू॰सा
१७[illegible]२

तिगयंदमगराजनटीपरसोहतिकिंकिनिमाली मचोमे
लजमुनाजलअंतरप्रेममुदितरसआली नंदसुवनभु
जग्रीवविराजतभागवेलअमराली वरषतकुसुमदेव
अंबरसोदुंदुभिकरतधुनाली सूरदासस्वामीकेविह
पं॰की रतजमुनातरंग[illegible]ली ७८५ ॥रागगूजरी॥ ठाढेस्या
मजमुनातीर धन्निपुलनपटीरपावनजहांगिरधर
धीर जुवतिवनिवनिभईठाठाउरनपहिरेंचार राधि
कासुषपरमदायककनकवरनसरीर लालचोलीलाल
उंडियासंगजुवतिनभीर सूरप्रभुछविनिरषिरीझेम
नुभयोमनकीर ७८६ ॥रागगौरी॥ भएस्यामअतिव
सराधाकें नामलेतपावनआधाके प्यारेस्यामअंजुर
लीडारें वाछविकोंचितलाइनिहारें मनोजलदजल
मं॰न उारतधारें मनहीमनतनधनवारें निरषिरूपनहिं
धीरसंभारें सूरस्यामतिहिअंगमधारें ७८७ ॥राग
रामकली॥ स्यामास्यामअंगमभरी उरजउरपरसाइ
भुजभुजजोरिगाढेधरी जुरतमनसुषमानिलीनोना
रितिहिंगटारी परसपरदोउकरतक्रीडे[illegible]घिकाअरु
हरी ऐसोईसुषदयोमोहनसवेआनंदभरी करतरं
गहिलोरजमुनाप्रेमआनंदपूरी रासनिसश्रमहरिकी
न्होधन्निधन्नियहघरी सूरप्रभुतटनिकसिआए ना
रिसंगसवघरी ७८८ ॥रागनट॥ तवहूंस्यामममनल

लचाल कहतहेंघरजावसुंदरितुमनआवेवात घटसह
सदसगोपकन्यारैनिभोगीरास एकछिनमईकोऊन
न्यारीसवनउपजाआस विहसिसवघरघरपगाईव्रज
गईव्रजवाल सूरप्रभुनंदधामपहुंचेलखोनकाहूख्या
ल ७१९ ॥राग॥ व्रजवासीसवसोवतपाए नंदसु
वनऐसीमतिठानीघरकेलोगउनजाइजगाए उदेप्रा
नगायापुषमाघनआतुररैनिविहानी ऐंडनअंग
जंभातवदनभरिकहतसवैसुनवानी जोजैसेंसोतैसें
लागेंअपनेअपनेकाज सूरस्यामकेचरितअगोचर
राषीकुलकीलाज ७२० ॥रागविलावल॥ व्रजजुव
तीरसरासपगी कियोस्यामसवकौमनभायो निस
रतिरंगजगी पूरनव्रह्मअलषअविनासी सवनुसंग
सुषदीन्हा जितनीनारिभेषभईतितनीभेदनकाहू
कीन्हो वहसुषटरतनकाहूमनतेंपतिहितसाध
पुराई सूरस्यामदूलहदुलहिनसवनिसभांवरिदि
भाई ७२१ ॥रागगूजरी॥ स्यामास्यामकेउरवसें
रैनिनिरततरिझिपियमनतडिततेंछविलसे स्या
मतारसमगनडोलतसवनैननैजैसें कोककला
प्रवीनसुंदरिगनतगुनगरगसें करतसदनसिंगार
वैठीअंगअंगप्रतिरसे सूरप्रभुआएअचानकदेषि
जिनकोंहसे ॥७२२॥ रागरामकली॥ पियनिरषत

सू.सा
263

२८७ प्यारी हंसि दीनो रीझि स्याम अंग अंग निरषत हंसि ना
गरि उर लीनो आलिंगन दै अधर दसन षंडि कर गहि
चिबुक उठावत नासा सों नासा लै जोरत नैन नैन प
रसावत इहि अंतर प्यारी उर निरष्यो झझकि भई तब
न्यारी सूरस्याम मो कों दिषरावत उर ल्याए धरि प्या
री ७८३ ॥राग टोडी॥ मान समै॥ अब जानी पिय बात
तुम्हारी मोसों तुम मुष ही की मिलवत भावति है वह
प्यारी राषि रहत हृदे पर जाकों धन्नि भाग है ता कौ जो
से कहूं लषे नहि अब लौं जैसे वस भये वा के भली करी
यह बात जनाई प्रगट दिषाई मोहि सूरस्याम वह प्रा
न प्यारी उर मैं राषी पोहि ७८४ ॥राग धनासिरी॥
सुनत स्याम चक्रत भए बानी प्यारी पिय मुष देषि
कछु कहि सि उर मैं अति मुरझानी अधर कंपि रिस
भौंह मरोरी मन नहीं मन घुहरानी इकटक चितै रही
प्रतिबिंब हि सौति साल जिय आनी जा हि जहां जा के
रस पागे हम सों दुराव थां कहां नी सूरदास प्रभु तुम बउ
नागी बड भागि निवह जानी ७८५ ॥राग धनासिरी
प्यारी सांच कहति किं हांसी काहे कों इतनी रिस पा
वति कित तुम होउ उदासी पुनि पुनि कहति कहां
अब हाते कहा ठगी सी ठाढी इकटक चितै रही हिरदै
तिन मनो चित्र लिषि काढी समुझौ नहि कहा मन

आईनिनकहांरिसपागे सूरस्याममएकामआतुरेभु-
जागहनतियलागे ७२६ ॥रागधनासिरी॥ मोहिछु
वौजिनिदूरिरहौजू जाकौहृदैंलगाइलईहिं ताकीवां
हगहौजू तुमसरवग्यऔरसवमूरखसोरानीअरुदा
सी मैंदेखतिहिरदैंवहवैठीहमतुमकौं भईहांसी
वांहगहतकछुलाजनआवतिसुखपावतमनमांही
सुनौसूरमोतिनकौइकटकचितवनउरपतनांही ७२७
॥रागआसावरी॥ एकसमैमंदिरमेंदेखेराधाजू अरुनंद
कैसोर दछिणकरमुकरस्यामाकेनजनहंसचुपचुग-
तिचकोर तामेंएकअधिकछविउपजीऊपरमधुपकर
तघनघोर सूरदासप्रभुइंदुसकानोरविससिओरवेठेए
कठौर ७२८ ॥राग॥ गुरजनमेंवेठी दुरिस्यामास्याम
मनावनजांही मनमुषकेकेंचारनछुवाईमोरमुकटप
रछांही तवदरपनलैंनिरषनलागीकहतिहैनांहीं
नांही सूरदासमोहनपाछेंकेंछविनिरषनसुषमांही
७२९ ॥रागआसावरी॥ तेजनहरिपेंपुआरेजाइ जिनकी
यहसवसोजराधिकानोतनलईछिनाइ इंदुदेविनोवद
नविगोयौंअलकनिअलिसमुदाइ नेननमृगवेननन-
पिकलूटेविलपतहरिहिसुनाइ कंवलकोरकेहरकपो
तगजकनककदलिदुषपाइ विद्रुमकुंदभुजंगसंगमनि
सरनगएअकुलाइ अनिअनीतिजियजांनिसूरप्रभुपद-

ईमोहिरिसार बनवोलीव्रजनाथवेगचालिउ बिजनरदे
आर ८०० ॥रागधनासिरी॥ धनिवृषभानसुतावडभा
गिनि कहानिहारतिअंग॥ अंगछवि धनिस्यामअ
नुरागिनि औरत्रयानबसिबसिंगार सजितेरैसहज
नपूरे रतिरंभाउरवसीरमासानिाहिनिरखिमनझूरें ए
तवगननसुहागिनिमांहीतोहीगननपियारी ८०१
॥रागटोरी॥ झूलनमहलझूल्योझूलनसिज्याझूलीकुंज
विहारी झूलेराधाप्यारी झूलिदंपतिनवलमगनकैझू
लिझूलिझरिकेलनियारी झूलीलताविविधिजसुम
नगनझूलेआननदोऊसुषकारी सूरस्यामप्यारीपर
वारनझूलेझूलजुवेलिनिवारी ८०२ ॥रागरामकली॥
देखिसखिपांचकंवलकिसंभएककंवलसवृजवराजितु
निरखतनेनअचंभ कोंवलकंवलाकंवललियेकरकं
वलसुकोंवलअंग कोंवलकोंषकंवलमनवांछितपर
ननकवहूंभंग षट्कंवलसुषसनमुषचितवतवहूवि
धिरंगतरंग तिनमेंतानसोमवंसावसतानसुकुस्विप
अंग जुपदकमलसनकादिकदुर्लभजिहिंमेनिकसीगं
ग नेकंवलासूरजनितचंपतिनिपटनिरंतरसंग ८०३
॥रागनट॥ देखिसखिचरिचंदइकजोर निरखतवेदि
पियाप्रियसंगसारसुताकीओर देससिस्यामला
लधनसुंदरदेविधिबागतिगौर ८०४ तिनमधिचा
रिसुभागकनिराजतथापलआढचकोर देखतवेनेम

हतिनहिं आवेंअतिचौरेमनमोर सूरदासऐसासोभा
परवालिवलिजुगलकिसोर ८०४ ॥रागनट॥ लखिरी पु
गट द्वादशनेन षटइंदु द्वादशनरनसोभितविमलउड
गनसेन दशअष्ट अंबुज आनंकहत मुख कोकिलामु
रएग दसदोर विद्रुमदामिनीषट्व्यालनीनिविवेक
त्रवलि परआग्रलविराजत दैपरसपरनारि रजकुंव
रिगिरिधरतु आरपरसूरजनवलिहार ८०५ ॥रागनट
दंपतिकुंजद्वारेंषरे । सिथलअंगमराजे अंवररूप अ
तिहीभरे सुरतिमेंसवरैनिवानीगमतिपूरनरंग जल
ददामिनिसंगसोहतभरेआलसअंग चक्रतहेंवरज
नारिनिरषतिमनोचंदचकोर सूरप्रभुरषमानमन
या।विलस श्री रिनिपतिजोर ८०६ ॥रागकेदारा॥ आ
जुआएधाममेरेनवलनंदकिसोर चंदनूउनटहरिरङ्ग
रहींवनाऊंगोर कोकिलाबोलेपपीहाऔरवोलेमो
र सूरकहिवोलेनरकवैरामहातमचोर ८०७ ॥राग
रामकला॥ राधेनंदद्वारगुपाल बोलिलीन्हादेखिल
लितासिनदेतनकाल गएहरषनगृहतादेवोउनजा
नतऔर मिलीहरिकोंलाइउरभरिचांपिकुचनकठोर
नहोमेरीधामकवहूंक्योंनआवतस्याम सूरप्रभुकु
ह्योआजुनागरिआइहिंहमजांम ८०८ ॥रागगौरी॥
सांझहितेहरिपंथनिहारें ललितार चिकेंधामआपनो

सू·सा

२९५ सुमनसुगंधनिसेजसंवैरे कबहुंकहोनिवारनैनाराक
बहूंगननगानकेनारे कबहुंकआइगलीमेंजोवतिश्र
जहूनआएस्यामपियारे वेवहुनाइकअंतलुभानेंश्रो
रवामकेधामसिधारे सूरस्यामतिनपलववतिवालाति
मचरजहांनहांसबदपुकारे ८०९ ॥रागभैरौ॥ दरपनलें
प्यारेमुखजोगें कहतिप्रयाछविहेरीजू मेरीसौंहहहाक
रिपुनिपुनिउनकाहेमुखफेरोजू सकुचतकहावोलके
सांचेमेरेग्रहतौआएजू रैनिनहीतोअबहिकृपाभई
धनिजिनिस्वांगकराएजू मेरेकहेविलगजिनिमानौं
मेतुवकरतिवडाईजू सूरस्यामसनमुखनहिचितवत
रहेधरनिसिरनाईजू ८१० ॥रागभैरौ॥ ललितातमर
चरवोलसुन्यौ वेवहुनाइकअंतलुभानेंनहिआएजिर
यकहागुन्यौ विनआरनदेआसगएपियवारवारजिय
सीसधुन्यौ सूरजप्रभुयातेंनहिआएमातापिताकौ
त्रासघनौ ८११ ॥रागललित॥ क्योंमोहनदरपननहिं
देखौ क्यौंधरनापगनखनकेरोदतक्यौंहमतननहि
पेखौ क्यौंठाढेवेठतक्योंनांहीकहापरीहमचूक यौ
नंवरगाहिकह्यौवेहियरहेकहाकेमूक गयौकहांउरतें
उघरेनानखछितविनगुनमाल सूरदेखलटपटीब
सपागपरजावककीछविलाल ८१२ ॥रागएमन॥
ऐसीकहोरंगीलेलाल जावकसोंकहांपागरगाईरं

गोरोजीनामिलिक्योऊवाल वंदनरंगकपोलनदीन्हें अ
धरअंजनमएस्यामरिसाल जिनतुसारि मनइछा
पुरई धन्निधन्निपियधनिवहवाल मालामहांनि
लाविनुगुनकीउरछविदेखिभईवेहाल सूरस्याम
छविसवैविराजति जहांदेखिअतिभयोजंजाल ॥१३
॥रागकाफी॥ लालउनीदे लोइनन आलसभरेआए
उरलेकामकीवेलसोंकीनेंविरमाए सिथलपागरस
नाकिजावकअंगभीनें पाइपरेअपवसकरेनव
सखसदीनें लालीमेरेलालकीतननेंतेंभईदीला
लालीलालनिकीगई आईमुखपाला विनगुनमाल
हियेलसेंप्रियप्रातिनिसानी सखिरिसालहमकोंदई
तुमदेहुविरानी उगमगातपगकोंधरोउनकोंहगधा
ए हमअंतरअंतरवसोपायमोमनभाए उलटि
नहांपगधारिये जासोंमनमान्यो छपदअंतनजि
वेलसोंलुहिप्रेमनजान्यो नवहंसिवोलेस्यामज
तुमतेंकोंप्यारी तुमविनुकलमोकोंनहीं अतिहीसु
खकारी वचनचतुरईछांडियेंकहांवेठेआई सूर
स्यामगुनरासहोंनाहीपरटाई ॥१४ ॥रागसुध
राई॥ आएलालनजामिनीभोर नीलकलेवरकोंम
लऊपरगाडेकुचरहेकठोर निसिवसिरहेमुहभामि
भो नकेंइहांउठिआएँभोर सूरजप्रभुउनविजेनपावनइ
नचोरनमनमोर ॥१५ ॥रागसुघराई॥ लालनल

सू॰सा
२५६

लनामेंअंकियो पीककपोलअधरपरअंजन आव
मैं अभालदियो चंदनाचित्रमेदिकें आरकुमकुंरंगि
हियो पीतंवरगहिडारिओनके लीलंवरहिलियो
लालीदेखियरी लीलाधेंपुलकितदेखिजियो सूर
दासप्रभुनवलरसिलीउरदेअमननियो ॥ १६ ॥ राग
विलावल ॥ आजुहरिनैनउनींदेआए अंजनअध
रलिलाटमहावरआएनैनतंवोलखवाए दसनदा
गनखरेखवनीननकंकनपीठगडाए सिथलदेहखसि
रपागलटपटीभ्रकुटीचंदनलाए विनुगुनमालवि
राजतिउरपरअकनखरेखछिपाए सूरदासप्रभुयहि
अचंभोतीनतिलककहांपाए ॥ १७ ॥ राग विलावल
आजुहरिआलसअंगभरे अवहुंकवांहजोरिऐंडाव
नवहुनजंभानखरे केवैठोकेपांवधारियेंदेखतनैनसि
रानें सांझआइरजदरसनदीन्हेंकेउदिहोतविहानें
अवहुंकद्वारभएपिछवाठे भोरिवेडअन्हाई सूरस्याम
वहुंसोरवरातिवुहरहेहांनुमधरालगाई ॥ १८ ॥ रागवि
लावल ॥ भोरहिआएमुखहिलजानें रतिकीकेलिवि
लिमुखसीचतसोभितअरुननैनअलसानें काज
रेखवनीअधरनपरनैनकपोलपीकलपटानें मर
गैकंजऊपरवैठेअलिउडिनसकतमकरंदलुभानें
हेहियहारअलिंकतविनुगुनआएरातिरनजातिस
जानें पानें सूरदासप्रभुयारधारियें हौंपरहाथवि

आनें ॥ रागगौरी ॥ तुमकौंकंवलनैनकछिगावत वदनकम
लउपमायहसांची तागुनकौंश्रगटावत सुंदरकरकंवल
नकीसोभाचरनकमलकहिवावत औरअंगकहिकहाव
थानोंइनहिनेहीगुनगावत स्यामनामअदभुतयहवा
नीश्रवनसुनतसुखपावत सूरदासप्रभुग्वालसंघातीजां
नेंजाततजनावत ८२० ॥ रागबिलावल ॥ तुमन्यारेकहाव
तकमलनैन कंवलचरनकरकंवलवदनछविअतजुसु
नावतमधुरवेन प्रातप्रगटअतिरतहिजनावतफुलसत
आवतअंगदेन निसदैद्वारकपाटसकलवधुमधुपिन
धावतपरमचैन क्यौंहौंआजुउदासअंतचितवसत
सदाजलसंगऐन सूरकपटप्रलनवहिपाइहौउनैंआर
पिजवकरिहौसेन ८२१ ॥ रागभैरौ ॥ धीरधरौफलपाव
हुगे हमसौंकहतऔरकीऔरैइनवातनमनभावहुगे
कवहुराधिकामानकरैगीअंतरविरहजनावहुगे नित
चरित्रहमहीदेषेंगीजैसेंनाचनचावहुगे हाहाकारम
हाविननीकरिपाइनसीसछुवावहुगे सूरस्यामअतिच
रनहावततनुराईविसरावहुगे ८२२ ॥ रागबिलावल ॥
रसिकरसिकईजानिपरी जवतेंइतआएप्यारीवहतवही
नेंअतिरिसनभरी नवजोवनतुमसौंनवजोवनइतनेपर
सवगुननभरी लाजनहींमेरेघरआवतजाहुजानिकैत्रया
कुरी अंजनअधरकपोलनवदनपीकपलकछविदेखि
डरी सूरस्यामरतिचिन्हदिषावनमोंआएभलेहरी ॥

सू.सा
२[illegible]

८२३ ॥[illegible]॥ स्यामहंसे प्यारीमुष फेर्यौ रिसनदहाजु
हारइ कहीयहबसकीनोमनमेरो जाइहंसोपियनाही
आतें मेरीजोअतिभारी ऐसेहंसिके ताहिरिझावहु दे
हुं कहा अबगारी होतिअवारगवन अब कीजे धरतीक
हानिहारत सूरस्याममनकीमैजानीताकेगुनहि विचारत
८२४ ॥रागकेदार॥ मैजानीहोप्यारेललनानहींपिसि
धारो जहालाग्यौ न ये नेहरा मुषकीहलभलाई मोसों
कहन आए जियकी जासोंतुमबिनुसूनोवाकौगेहरा
सबसुषवहहेदेन अधरनयनउर ओरलबिषबिमहासु
षभयोदेहरा वेतिसंवारेयगधारौ सूरस्वामीतहां
नहींतुकैसोंआवततुरतदेषौमेहरा ८२५ ॥रागमा
लकोस॥ तुमजिनिसकुचौप्यारेमेरेरतिमानीतहांजाइ
रहो अब मैअतिहीसुषपायो प्रीतममेरे अंगनांपाव
धर्योजब मैननअपतभएदरसनदेषतश्रवनअपतभ
एवचनसुनेतब सूरदासप्रभुचरनछुवेकहतिरोमरोम
पुलकअंगहेसब ८२६ ॥रागकान्हरा॥ कहांगईहाचं
चलताई मोसोंकहादुरावतनागरनागरिरेनिजगाई
ताहीतें अतिअरुनभएद्दगधनियहसुंदरताई मनौअ
रुन [illegible] अंबुजपरबैठेमधुकरमहारिसाई उडिननसकत त
ऐसेमनवारेलागतपलकजंभाई सूनोसूरअतिअंग
माधुरे आलसभरेकन्हाई ८२७ ॥रागसारंग॥ बहुरि
पछितेंहेरीब्रजनारा देषिजाइठाढेमगजोवतसुंदरस्यां

म मुरारी ऐसी निठुर नेक्ष नहिं चितवनि चंचल नैन पसा
री कहां गरब धराऊ तेनमें दीखि नाहिनें वारी ता जि
अभिमान मानरी भामिनि निमेंजु कहति मनुहारी सूर
हे सखी तासुन धोखेंहू कबहूं कचरत जु बारी ८२८ ॥रा
ग भूपाली॥ तू कोहै री कौन पै पढाई ने री कहा भी मोने तू
जु कहति है स्याम कौन से देखें नहिं पहिचानि और कहति
कहा नेम लयो इहां कौ वे सी हे जानी सूरदासप्रभु रसिक
व डे तू पढई विडा सयानी ८२९ ॥राग पूरवी॥ तू हठ छां
डि मानरी प्यारी परम चतुर गुन रूप आगरी अति ही त्र
या निहारी मनमोहन तन मदन दहतु है तो उठ पार न
प्यारी सूरदास प्रभु विरह विकल हैं नैन न निरखि निहा
री ८३० ॥राग मलार॥ तऊ तोगावारिजहारी तो सौं
कहूं नंदनंदन हंसि कहौ रतनें हीं कौं तू अबका अनज
न रबोल तिन कह्यो मान तिन हीं री स्याम सुंदर हंसि हं
सि देत सुनि सुनि करति न कान इभरुन हा चो बार रहारी
कहा कहैं हरि सौं तो सौं मुहलगावें बारि प्रेरि डारी यांके
रोम रोम पर जिन ऐसी बात कहारी सूरदास प्रभु कौं कहा
कहि वर तोंरतन नी अबहूं काहू कीन सहारी ८३१ ॥रागका
नरा॥ सुनि प्यारी राधिका सुजान कहि धौं कौं न जान
स रि है री रहि है हूदे अभिमान जिनके चरन रमापति ला
गत सब गुन रूप निधान तिनके मुखके वचन मनोहर
सुनि के करति न कान परम चतुर सुंदर सुख नारी तो सी

२. सू.सा
२७८

ञ्यानआन कीजे ग्रहाअपनकी संपति विना भोगवि
नदान ऐसी विथा होति निसि हरि कीं जिनि हठ करे
विहान नांहीं कहत और के काठे सूर मदन के वान ८३२
॥रागसारंग॥ चलि वन मोन मनायें मान अंचल ओ
ट पुहप दिखरायो धर्यो सीस पर पान ससि तिन चितै
नैन सेऊ मूंदे मुख में अंगुरी आन यह चरित्र अपदा की
वानी कुस कानि जिय जांन रेखतीन भूम पर बैंचात्रन
नो रयो अरनान सूरदास प्रभु रसिक सिरोमनि मिलऊं
स्यांम सुजान ८३३ ॥रागगौडमलार॥ सेन दै कह्यो वन
धाम चलायें रहे स्याम भरि काम न हों आनि मिलि हों
भाव वहि कहें मन भावडि ठरा छियो दें व सुख नु है सं
गरंगरालि हों जो नि आतुर प्रया नारि आतुरराइ स्यां
म कौ रहसि सुभ सौध दाने सूर प्रभु हरा षिके धाम कुंज
न गए सुचित सुख सेज के साज कीनें ८३४ ॥रागका
फी॥ आरा धा नागरि मन हस्यो हों मेरे ललना सक
ल जुवतिन सिरताज छवि मोहन तेरी प्रान पियाकों
वरनों नंदकुमार जो तुम आदि अंत लों मेरो मानो
यह उपगार चंद्रमुषा मोहे अलक विच वंदन ति लक
लिलार मनु सरसुती भवंगन परसति श्रवति सुधा
आधार नैन मीन सरवर आनन में चंचल करत विहा
र मानो करन फूल चारे कोउ चकत वारंवार वेसरिव
नी सुभग नासा पर मुक्ता परम सुठार मनु तिल फूल

सुधराविंबापरराजतबूंदसुसार अधरबिंबछविधौंराज
तिसोविहसनिवरषतफूल मानौतडितवीजबोए
हैंमध्रिसुधाकेमूल सुठिसुठारठोढीपरलीलासुंदर
ताकोसार चूवतिजोतिसुधाधरमानोरहिगईबूंदम
झार कंठसिराउ रषदिक विराजतगजमोतिनकेहार
दहिनावर्तदिनमनुधूकोंमिलिनछिन्ननवार कुचजु
गसुंदरकुंभरतमावलिनाभिसुहृदपरझार ज्यौंजलसो
भिलपोअसवितजोतिनुलसतुसिवार रतनजरित
गजरावाजूबंदसोभितभुजनअपार अंगोदासुमनगफूल
फूलेमनुमदनविटपकीडार छीनिलंकनाबीधुनिवा
जतिकानिरसनाऊनकार मेरवांधिबेठ्योमनुहुलहम
न्मथआसनमार जुगलजंघजेहरजरावकीराजतिप
रमउदार राजहंसगतिचलतिजुसुंदरीअतिनितंबकेभा
र छुटकिरह्योलहंगासुलगाजकौतनसुषसारासार
सूरशुअंगसुगंधसुमोहनभौंरभ्ररनगुंजार ॥ ३५
राग पूरवी ॥ सखिनसंगराधिकावाननिनवलसु
समकाकलियां एकविहसमएकहिवानिकरषफुन
आगरलियां सोभाराजतिअतिसुंदरकरलियेरंगाला
उलियां एकनस्यामभमालदेएकनबेनीगूंदतिभलियां
बरनविहारपरसपरसुंदरडोलतकुंजनगलियां सूरदा
सप्रभकोतिकदेषतहरषिबरनतरंगरलियां ॥ ३६

सू॰सा ॥रागरामकली॥ सुनादधि पतिसोंक्रोधभरी अंचरलेन
१७८ नई छिनवालहि सारंग संगलरी नवश्रीपतियह बुद्धि
विचारी मानिलेहाथधरी वहअतिचतुरनागरी सोकर
लेमुषमांझभरी चांपनचरनसेहसचलिअयो उदया
चलहिउरी सूरदासस्वामीलीलाहितअंगलाइउवरी
८३७ ॥रागरामकली॥ सकुचतनउदधसुतामुसक्यानी
राधिसारथीसहोदरतापट अंचरलेतनजानी सारंगपा
नमूंदिमगनैनीमनिमुषमांझसमानी चरनचांपिमह
प्रगटकरी पियसेससीसमुषदानी सूरदासतवकहाक
रैतियलाजनयहमतिठानी कुचअंतरमनरिचापिकहि
नउरस्यामकंठलपटानी ८३८ ॥रागललित॥ ऐसेई सु
धरेंनिविहानी भोरभए व्रजधामचलेदोउमनमननारि
सिहानी प्यारीगईवृषभानपुरातिनचलेस्यामनंदधा
म परमदामहलधरतहांठाढेउनदेषावहवाम श्रमच
लेसंध्यावृजआएमनमनकरतविचार कहौसूरसकुच
नहटकत घरआएनंदकुमार ८३९ ॥रागबिलावल॥
आजुवनानवरंगकिसोरी रसिककुंअरमोहनसंगजोरी
विथुरीअलकसिथिलकटडोरी गनकलताजनुपवनझ
कोरी अधरदसनछतनकछूछवि थोरी दरपनलैलेदेषति
मुषगोरी मुषसोहतअतिहाभईभोरी सूरसषाउारति
तिनतोरी ८४० ॥रागकान्हरा॥ आजुराधिकारूपवनायो
वरानिनजाइकहतिनहिआवत मुषछविसोभाअंगन

नपायो कंचुकि खिचत हार मोतिन कौ चौकी कौ न गालिग
नुसुहायो मानौ दीपक उदित भवन मे तिमिर समिटि सर
नागन आयो अधर दसन अमन के कलसा पियत नवेन्यो
दुडुमडर आयो इतने ऊपर निरखि सूर प्रभ ले दूती दरपन
दिखरायो ८४१ राग आजु बनी वृषभानकुंवारि गिरध
र वर राधा तू नारि हम सौ करति दुराव वृथारी इन वातन
तू लहति कहारी आलस अंग भरग जो सारी जैसी छवि
[illegible] कहि आलि कहारी सूरदास छवि पर वलिहारी धनि
धनि तुम से उवर नारी ८४२ ॥रागनट॥ तेरे नैन कि धौं एवां
न ये मेरे जिय मुरझि परयो धर क्यों अरराधे प्रान खग पर
कवल कमल पर कदली कदली पर हर थान हर पर सहस
खर पर गिरवर गिरिवर पर ससि भान ससि पर भन [illegible] को
किला तानि जवारक रन उनमान विच विच दामिनि दु
ति उपजाति है मधुप जूथ उपमान तू नागरि सव गुनन
उजागरि पूरन कला निधान सूर स्याम तो दरसन कारन
व्याकुल परे अजान ८४३ ॥रागसोरठ॥ राधे हरि रिपु क्यों
न छिपावति मेर सुता पति ता कौ पति सुत ता कौ क्यों न म
नावति हर वाहन ता वाहन उपमा सो तू मन हि दिढावं
ति नो अलसात वीस तु हि सोहत काहे गहर लगावति
सारंग वचन कह्यौ करि हरि कौ सारंग वचन न भावत
सूरदास प्रभु इरस विना तौ लोचन नीर ढरावत ८४४
॥राग सारंग॥ राधे तुम उउगन पति सुत हान तेरे

सू॰ सा
२८९

षवनगावनहरिक्रीनोराहवाहनगतिक्रीन नौसनसा
जिसिंगारवदनपैउ।दिसारंगसुतदीन सूरदासप्रभुतोहि
मिलनक्रौंसेलसुतासुतक्रीन ॥८४५॥रागमलार॥ नैं
जुकमलपरकमलधस्योरी जलसुतपानमसुतरिपवं
धूआयुधआनन।विलषभयोरी मेरसुतापतिवसन
जुमाथेकोटिप्रकासनसारंगयोरी मारतसुतपतिउ
रपरयासापतिवाहनभोजननसुहाई हरसुतवाहन
आससनेहामानोअनलदेहउनलाई उदधसुतापति
नाग्नरवाहननतावाहनऐसेसमुझावें सूरस्याममिलि
धरमसुवनरिपताऐनारहिसललवहावें ८४६
॥रागसारंग॥ मैजुगईविपमानछुडावनहोहींराजी
आई ऐसीछविआनिहीराजतिहै मोपेवरनिनजाई
आपुहीचलियेवदनदेखियेज्योंसुरहीनिदराई सूर
स्यामप्यारीअतिराजतितुमराखौरेवुहाई ८४७ ॥राग
रमम॥ विरसनकजिभामिनिरसमैकाजेरसकीवातहौं
पर्ईतुहिलेनसांवरेतोविनुकछुनसुहात।विनैकरतिर
तोयारपरतिहौंछिनछिनिसिघटिजात सूरस्याम
तेरीमगजोवतअतिआतुरअकुलात ८४८ ॥आसा
॥विहागरा॥ उनरनदेतिमोहनीरातैं सुनिसबवातनें
कनहिंमटकी वधूमथानिदधिरजनीवीतीसलिवाह
नहरनीलषिलटकी नैननारेंअडोलधरेरीपानकपो
लनाहिसुधिघटकी अगाधवंधसुधिकौंनपरीहरुपरम

मांवतीनागरनटकी घूसमानआएजुसुपतऋषि भोरवे
रमईतिमचररटकी सूरदासवलिवलोराधिका भली
वनीछवि नीलेपटकी ८४९ ॥रागसारंग॥ राधिमात
जिमानमयाकर तेरेचरनसरनत्रभुवनपतिमेटि कलप
तूहोकुचलपतर जिनकेचरनकमलमुनिवंदतसोतो
ध्यानधरेधरनीधर अहोवावरीकहातेंआन्हो प्रानमप
देदएवेरिनिघर तुमनागरिथीनागरहैतुमसुंदरिवेश्री चे
सुंदरवर वेहरिनौदुषहरतसवनकौतूवृषभानसुता ह
रिकोहर जेतुमिकछुकह्यौचाहतिहैउनहीजानिस
वामोसोलर नवहासूरनिरषिकह्यौललनाआयौउ
धारसवैनेरेघर ८५० ॥रागआसावरी॥ दूतीयाउनमा
नकरी चतुरचतुरईभईनियासौंसुनिरिसजातिहीभरा
पहविचारिमनराषितुरतहीआएआपहरा सूरसहज
हामानमनायौसोयहकिनहुंकारी ८५१ ॥रागविहा
गरा॥ श्यामुषदेष्यौस्यामनिहार कहाकहौंआननकी
सोभारहतविचारविचार वारीदिनघूंघटपटहांतेस उद्घं
नमुषदयौउघार मनोसुधाकरछीरसिंधतेंनिकस्यो थनं
कलंकपषार मुक्तामांगसीसपरराजतरहिसोभाआर
कार मानौंउडगनससिनयोजानिकैआएकरनजुहार
केसरिआड सिंदूरविंदविचमगमदद्यौसुधार मनुवि
धू...ऊपरआलिविच्यौपंषपसार चंचलनैननच पपुंहप
हूंदिसाचितवतविवषंजनउनहार मनोपरसपरक
भ्रकुटीविकटनिकटनैननकराजतदृस्प्राकार

सू॰सा
२९१

रतनलराई ष्रीरवचावतरार वेसरिके मुक्तामें झाई विरन
विराजत चार मानों सुरगुरु सुत्र भूमसुत निवैठे राजदुवा
र अधर बिंब विच दसन विराजत दुति दामिनि चमत्का
र। चिवुक बिंद रचि दयो विधाता रूप सींव निरधार लो
लमाल कुच बीच विराजति सोभित ष्रियो सिंगार
मानों दिग निरधूम अगिन के तप बैठे त्रिपुरार कंठ पोत
पट नर दीवे औं नाही कछु अनुसार कंचन तन केसे जा
विराजत ज्यों रवलया चमतार नत छिन दष परे नंदनंदन
लज्जित भई सुकुमार लीनौं उमगि उबाहें भैं अंकम भरि
सूरदास बलिहार ८५२ ॥मलार॥ राधिका विव
स करि स्याम पाए विरह विये दूरि जिय हरष बहरि के भ
ये सहस मुष सेस जे नैनन गाए मानन जि भामिनी मौन
कौ मिलि हस्यौ करति पुनि केन कोत्रास भारा ओर विधि
निपुन दोउ स्याम स्यामा विविध कुंज गृह द्वार गति सु
सारी भक्ति के हेत औतार लीला करत रहत प्रभु तहां नि
ज धाम जानौं प्रगट प्रभु सखवज नारि के हित विविध
देत मन काम मिलि संग ताकौं ८५३ ॥ ॥
रागमार विंद्रावन स्याम सुभग नारि संग सोहें ठाठे
नव कुंजन ते परम चतुर गिरधर वर राधापति राधा अ
रसपरस मोहें अनूप छांह जमुनतीर जल ललना सु
भग नारप हिरे अंग विविधि चार नैसत सब साजें
बारबार विनै करत मुष निरखत पाइ परत पुनि पु

रु मधुमजगजंघविराजत नितंभलसुधनसमार मनुलपेनवल

।निरधरनछिरनप्रियकैमनआजें बिहसतप्यारीसमाय
घनदामिनिसंगरूपकंटगहन भरतगीतमूलनआसा
धा जमुनापुलिनअतिपुनीतपायनेहिंडोररच्योसू
रजप्रभुहंसतगहतरजनतनीराधा ८५४ ॥रागम
लारहिंडोरना॥ ।हिंडोरनामाईझूलतगोकुलचंद संग
राधापरमसुंदरदोऊ बरतअनंद देखंभकंचनकेमनो
हररतनजटितसुरंग च्यारिडाडीसरिलसुंदरनिरखि
लजतअनंग पटुलीपिरोजालालललटकनझूमकाव
हुरंग मरुवेनोमानिकचुनालागोविचविचहीरात
रंग कलपद्रुमतरछांहसीतलत्रिविधिमंदसमीर ल
तालटकैंभारकुसमनपरसिजमुनानीर हंसमोरच
कोरचातककोकिलाअतिभीर नवनेह नवलकि
सोरराधेनवरंगगिरिधार ललितादिसखादेति
झोटारीझिअंगनसमार लाडिलीसुकुमारिडरपति
स्यामउरलपटार गौरस्यामअंगमिलिदोउ भए
एकहिभांति नीलपीतदुकूलदुतिघनदामिनीदुरि दुर
जाति कुंजकुंजझुलाइझुलवति सहचरीचहुंओर
मनौंकुमुदिनकमलफूलेनिरखिजुगलकिसोर व्र
जवधूतननोरिडारतदेतप्रानअंकोर सूरकोंव्रजवास
दीजैनागरनवलकिसोर ८५५ ॥रागकेदाराहिंडोलना
।हिंडोरनाझुलतस्यामास्याम व्रजजुवतिनमंडलाच

सू॰सा
१८८२

हुयें।निरषतविथकितवाम कोऊगावतिकोऊहरषिझु
लावतिसवपुरवतिमनसाध कोउसंगमचवतिगहति
कोउमचितपज्योंरूपअगाध कोउउरपतिहाहाकरि
विनवतिप्यारीअंकमलाइ गाढेगहतपियाअपनेंभु
जविलगनअंगउराइ अवजिनिमचोयाइलागतिहों
मोकोंदेहुउतारि यहसुनिहंसतमचवतअतिगिरधरउ
रतिदेषिअतिनारि प्याराकहतिटेरिललितासोंमेरा
सोंगहिराषि सूरहंसतललिताचंद्रावलिकहाकहति
पियराषि ८५६ ॥रागमलार॥ जमुनापुलनिरच्यौ
हिंडोर घोषललनासंगनतनीतननंदकिसोर
एकसंगलेमचतमोहनएकदेतिझुलाइ एकनिरषति
अंगरकटकइकउठतिहैं गाइ स्यामसुंदरगोपिकाग
नघेरिरहींवनाइ मनौजलदकदामिनीगनचहन
लेहिलुकाइ नारिसंगवनवारिगावतकोकिलाघन
घोर झूलतझुलवतमुकटसिरपरमनौनिरततमोर
कमलमुषदुहुंपासकुंडलनिरषजुवतींभोर चक्र
वाकचकोरलोचननाहिरहेहारिओर थकितसूरप्रभु
निभएस्यामास्यामओरनिहार हरषिप्रभुमनअपा
रवरषतकहतजैजैकार गहतमनमनयहैरसपा
होरतनमडार देहधरिजहांसूरविलसतपरमपूर
नसार ८५७ ॥रागकेदार॥ हिंडोरनाझूलनआंईप

चंगावरनपाटआडांअतिहांवानिकवनाई झूलत
जुवतीनंदलालसंगएवेसरूनदाई सूरदासप्रभु
मोहननागरआपुनझूलिजुलाई ८५८ ॥रागकेदार
झूलतनदनंदनडोल कनकखंभजराइपटुलीलगे
रतनअमोल सुभगासरसमुदेसडांडीरचीविधनागो
ल मनोसुरपतिसुरसभातेंपठेदयोहिंडोल जवहिजु
लियततीयदंपतिविरहसुलगतरोल उदसपतिविच
चढिविवानहिनिरखिदैदैओल थकेमुषनकुछकहि
नआवेदेखिडोलकमोल सषासवसुषसाजनान्हे
वदतिमधुरेवोल थकेरतिपतिदेखियहछविरूं
ढरह्यौभ्रमभूलि सूरयहसुषअमतगोपीपियति
हेअतिजुलि ८५८ ॥रागविलावल॥ नितधामबंदा
वनस्याम नितरूपराधावृजवाम नितरासजल
नितविहार नितमानषंडितअभिसार परमरूप
आएकरतार गनगंधर्पआएत्रभुवनसार नितकुं
जसुषनितहिंडोल नितत्रिविधिपौनजुसमीरल
कोर सदावसंतरहतनायास सदाहरषनहीनही
उदास कोकिलकारसदानहीरोर सदारूपमनम
थचितचोर विविधिसुमनफूलेदुमसार उनमतम
धुकरभ्रमतअपार नवपदलवनसोमाएक विरेहै

नहरिसंगसषीअनेक कहूंकहूंकोकिलासुनाइ सु
निसुनिनारिभईहरषाइ वारवारकहिहरिहीसुनाव
ति रितवसंतआईसमुझावति फागचरितरससुंद
रगारें षेलेसवमिलिसंगतुम्हारें सुनिसुनिसूरस्या
मसुसकाने रितवसंतआईहरषानें ८६० ॥वसं
तलीलारागवसंत॥ देषतवनव्रजनाथआजुअतिउ
पजतहैअनुराग मानौंमदनवसंतमिलेदोऊ षेलत
फूलेफाग कुंजाझालिरितझरनि सानउपटेरभरेगुंजा
र मानौंमदनमंडलीरचिपरवीनतचेहैमिहार द्रुम
गनमाक्षिपलासमंजरीउदितअगिनकीनाईं अपने
अपनेमेरनमानौंहोरीहरिषेलगाईं कोकिलारव
पोतऔरषगाकरतकुलाहलभारी मानौंलेलेनावप
रसपरदेतदिवावतगारी कुंजकुंजप्रतिकोकिलगुं
जित अतिरिसविमलिवनी मानौंकुलवधुवेलज्यात
जिगावतिअटनचढी प्रफुलितलताजहांदेषतहैंत
हांतहांअलिजात मानौंपातितसुषनअवलोकतप
रसतगनिआगात वहुविधसुमनअनेगछविरंगउ
निमझांतिधरी मनुरतिनाथहाथसोंसवहुननोतन
रंगभरी औरनहालोंकहोंत्रपानिधिवृंदावनवनराज
सूरदासप्रभुसवसुषक्रीडितस्यामतुम्हारेराज ८६१
॥रागवसंत॥ आयोआयोपियरितवसंत दंपतिमन

सुषपरिहैअनंत आगबिलोवोसंगकंत हाहाकरिकन
महतिदंत सुरतगईहरिलेमनाइ हरषिमिलोउरलेंह
लाइ दुषडास्योतुरतेभुलाइ सुषदुहुंवनकेनहिंउरसमाइ
रितुवसंतआगमनजानि त्रीयनराष्योमानमानि सूरदा
सप्रभुमिलेआनि रसराष्योरतिरंगठांनि ८६२ ॥रागव
संत॥ आयोजानिरितुवसंत ललनासुषदीन्हेतुरंत फू
लेवनसुमननयपलास रतिनायकसुषकोविलास संग
नारिचहुंआसपास मुरलीअमृतनरतिभास स्यामा
स्यामविलासएक सुषदायकगोपीअनेक नजननहीं
काहूविसेष अलषनिरंजनविविधिभेष प्रागरंगरस
करनस्याम जुवतिनपूरनकरनकाम वासरहसुषदेनजा
म सूरस्यामवहुकंतवाम ८६३ ॥रागआसावरी॥ उप
वाजनलागेहेला चलौचलौजैयेजहांतहांरावेलतस्या
मसहेला जहांघनसुंदरसांवरेनहिमिसदेषनदाव वे
रीएगुरजनभएकीजेकोनउपाव आवहुवछरामेलि
येंवनकोदेहिविडारि वेदैहैंहमहीपठेहमदेषेरूपनिहा
रि ओजनगागरिठारियेजमुनाजलकेकाज इहमिस
वाहिरनिकसिकैंजाइमिलेव्रजराज रागरंगरंगिमतिय
रच्योनंदराइदरवार गावतिसकलग्वालिनीनाचतनस
कलगुवार घरघरआनंदमेंजाइसुजोवनसार गाइ
वेलिहंसिकीजियेफागवडोत्योहार मुरलीमुकटविरा
जई कटतरराजनुपीन सूरजप्रभआनंदभरेगावतिहो

सू॰सा
२८४
२८५

रीगान ॥ ८६४ ॥ रागआसावरी ॥ राजकुमार छबीले होलल
ना धनि धनि नंद जसोमति धनि धनि गोकुल गांव
धन्नि कुंअर दोउ लाडिले मोहन जाकौ नांव सषा नाम
ले बोलहीं सुबल तोष सीदाम जहां तहां तें उठि चले बो
लत सुंदर स्याम गिरवरधारी रस भरी मुरली मधुर बजाइ
स्रवन सुनत गोपी सबैं चली घरन तें धाइ भेष विचित्र
बनाइकैं भूषन बसन सिंगारि मंदिर तें सजि सब चलीं बा
नि कवनि कवनि नारि एक ओर जुवती जुरी एक ओर बल
बीर बांसन मार मचा मनौ रूप सुभट रनधीर सकल ब
धू आईं सबै अपने अपने टोल झूमक लै लैं गावहीं विच
विच मीठे बोल एक सषा तब सैन दै लीने सुबल बुलाइ
ऐसें हूं बैनैं नै कै दै मोहन आय कराइ बहुरि उलटि ब्रजसुं
दरी मोहन लीने घेरि नैनन काजर दै चलीं हंसत बदन
तिन हेरि झंझ मुरज दइ दुंदुभी बाजे बहु विधि साज वि
च विच भेरि झमक मैं घोष सबद नभ येगाज इहिं विधि हो
री षेलहीं सकल घोष सुखदाइ गिरवरधारी रूप पर सू
रजन बलि जाइ ८६५ ॥ रागगौरी ॥ गोकुल सकल
चली ग्वालिनी घर घर षेलत फाग तिन मैं राधा लाडिली जि
नकौं अधिक सुहाग झुंडन मिलि गावति झूमक नंद दु
वार प्रभु हंसि षेलन आंई मिलि संग नंदकुंवार मोहन
दरस दिषाव दुरौ तौ नंद की आन रसिक राइ सुंदर बरसा
धा जीवन प्रान जसुमति सुत चित चुभि रहा बहुत न्यारि

कुसका[illegible]न अंतनहींलचउपजेसहजपरायहवान उ
रनस्यामघरपाएराधाभरिअंकवारि कनककलस
केसरलैभरिधाईव्रजनारि औरोभैरोसखिस्यामहि
यानायिछैरीपाग देहगेहसुधिविसरैनंदनंदन अनु
राग सूरप्रभुपालकपाविनुयहरसलहैनकोइ श्रीव
षभानकिसोरीस्याममगानमनहोइ ८९६ ॥राग
कल्यान॥ विंद्रावनखेलतहरिहोरी वाजततालमृदंग
झांझउप नंदलालवृषभानकिसोरी होंअपनेगृहतें
निकसीसखिसाससवेत्रासनन दरीचोरी औरस
खासवछांडिस्याममोकरमेरीपकरीगहितोरी स्या
मवरनअतिसुंदरसांवरो कनकवरनराधेतनगोरी सू
रजकेप्रभुदोऊराजतपाससंचनकासीजोरी ८९७
॥रागगौरी॥ होरीकिखिलारमांवतेयोंहाजाननदेहीं वा
गेवीरिजोवनिआएजागेहिभागहमारैनैनन भरिभरि
राखोंमृगवानलैहों न्यारेकैमुखमांडिहों अखियांजु
अंजेहों वीरीपलटिजोरसोंलेहुं नंदलाहूकोप्यारे औ
रैनभरनदैहोंन्यारेहो खिलैहों लोनीमूरतिमाधुरी
हंसिहंसिदैंलगैहों सूरदासमदनमोहनसंगहिलमि
लिदोऊजलभीनरंगजैसेंजलहासमैंहों ८९८ ॥राग
धमार॥ होरीखेलतरंगसोंव्रजराजकुंअरवृषभान
पौरि सुनिमुरलीउपताललालचटीअटाअटारिन
दौरिदौरि जोप्यारीकैप्रेमहेतमन उमांविलौरीखा

मांझीआर आवति मोहि भेद मन हर्षति बरषति रंगा
नि सुरस बनाइ कंचन की पिचकारी कर लिये एक न भ
री गुलाल गोद एक न लिये करी धपूल नवा सकु। चि
सूर भई मुदितमोद ६९ ॥रागगौरी॥ ब्रजराज लैडै ने गा
ईये हो मनमोहन जाको नांव खेलत फाग सुहावनो री
गमी। जेर ह्योसब गांव तालपषा बजवाजहां होइ प्रस
हनाइ भेरि श्रवनसुनत सब सुंदरी देवुंडन आई घेरि
इते गोप सब राजहां उन सब गोकुलनारि आति माजीवे
भांवती देहि परसपर गारि चोवा चंदन छिरकही होइ
इत अबीर गुलाल मुदित परसपर खेलहीं हो री बोलत
ग्वाल गोपिन मिलि हलधर पकरि छांडे पाइ लगाइ
दाऊ आजु भले बने आए आंखि अंजाइ बहुरि सिमि
टि सब सुंदरी मिलि पकरे गोकुलनाथ नवकुंकुम मु
ख मांडि के रची बेनी गूंथी माथ नवनंदरानी वाचव
बहु मेवा दई मगाइ पट भूषन पहिराइ सबन कों मि
राखि सूर बलि जाइ ८७० ॥रागगौरी॥ ऊंचो सो गोकु
ल गांव तहां हरि खेलत होरी चलि सखि देखन जाहि
पिया अपने की चोरी बाजत ताल मृदंग और खिंनर धु
नि थोरी गावति दे दे गारि परसपर भामिनि भोरी बू
का सुरंग अबीर उडावत भरि भरि झोरी नवल छबीले
लाल तनी चोली की तोरी राधा चली रिसाइ ढांठ कों
खेलैं हो री खेलत में कहा मान सुनो वृषभानकिसोरी

सूरस्याम उर लाइ हंसत भुज गहि कै भोरी ८७१ ॥रा
गनट॥ खेलत फाग कहत होहोरी इत नागरी समाज र
विराजत उत मोहन हलधर की जोरी बाजत ताल मृदं
ग झांझि डफ रंज मुरज बांसुरी धुनि थोरी नख निगारि
देगावति ऊंची तान लेति आछी तिय गोरी कुमकुम रं
ग भरे पिचकारी नउतम पट कटि नवल किसोरी उम
गि चल्यौ रंग जहं तहं मनु बह्यौ अनुराग सरोवर छोरी
भरि भरि आनि अबीर उडावति गोविंद निकट जाइ ढु
रि चोरी मनौ प्रचंड पवन बस पंकज गगन धूरि सोभि
न चहुं ओरी कनक कलस कुमकुम भरि लीन्हे ब्रजसु
रनामें घसि घोरी खेल परसपर कीच मची धर अधि
क सुगंध भई बहु खोरी ग्वाल बाल सब संग मुदित
मन जाइ जमुन जल न्हाइ हिलोरी नए बसन आभूष
न पहिरत औरन देत पितंबर छोरी दए जसुमति आन
द जुत तिलक अति दुति राजति दधि रोचन रोरी सूरस्या
म विप्रन बंदीजन देत रतन कंचन की बोरी ८७२॥
रागनट॥ हरि संग खेलन फाग चली चोवा चंदन अर
गर अरगजा छिरकति नागरि रंग गली राती पीरी अंगि
याय हिरें अतलन नूमक सारी मुख तंबोर नैनन भरि आ
जर देति भांवती गारी रितु बसंत रति नायक आगम जो
बन भार भरी देखन रूप मदनमोहन कौ नंद दुवार ख

सू-सा
२९९
२०६

री कहिनजाइगोकुलबासिनिहमाघरघरगोकुलमांहा सू
रदाससुनिक्योंकरबरनौंसोसुषनिंदुपुरनांही ८७३
॥रागसारंग॥ कर लियेंडफहि बजावैं होहोंसनाकरिव
लारिहोरीकी संगसषीसबबनिआवत छबिमोहन
हलधरजोरीकी लालगुलालसमूहउडावत भरिभ
रिफेंट लियेंझोरीकी हाथनलेभरिभरिपिचकारी ना
नारंगसुमनवोरीकी कोउमारतकोउदावनिहारतअ
रसपरसढोराढोरीकी षेलतफागकरतकौतूहल
बुधिहरेमनमथजोरीकी बरनवरनसिरपागजोवनी
कछबकटछबिचंदनषोरीकी लालंबरबंबुकीसुरंगत
नअतिराजतिराधागोरीकी मानौदामिनिघननरह
निदुरिषुगटहंसनचितवनभोरीकी नषसिषस
जिसिंगारबजजुवतीननउंडियाकुमकुमबोरीकी पान
भरेमुषचमकतचौकाभालदियेंदीरोरीकी कनक
कलसकुंकुमभरिलीनेभरिफूलेलरंगढोरीकी जुव
तिवृंदबजनारिसंगलेजाइगहनबजकीषोरीकी
घरघरतेंधुनिसुनिउठिधांई जेगुरजनपरजनचोरी
कीउतहिसषाकरछरीलियेसुबगारिदेनसकुचन
तोरीकी इतहिसषीकरवांसलियेंपिचकारमचीझोरा
झोरीकी पाछैतेंललिताचंद्रावलिहरिपकरेभुजभ
रिकोरीकी बजजुवतीदेषतहांधाईजेहांनहांतेंचहुं
ओरीकी एकनपटपातंवरझटक्योइकमुरलीलईकर

मोरीकी इकतुखसौंमुषजोरि रहतिइक भरति अंक
रतिपति ओरीकी नवतुमची रहे रजमु नातव सुधिवि
सरि माषन चोरीकी अवहमदाव आपनी लैहें
पाइपरी राधागोरीकी अपने अपनेमन सुषक आ
रन सव मिलि अंग झोरीकी लालंवर पीतंवर सौं लै जोरी
गांठि दई कासिके डोरीकी कनकलस केसरि भरि
ल्याई डारि दई हरिपर रोरीकी अति आनंद भरी सव
जुवती गावति गारि सवै होरीकी अमरविमान चढे
सव देषत बहुत सुनत जे धुनि सोरीकी सूरदास प्रभु नि
केसें वरनें रविमोहन राधा जोरीकी ८७४ ॥राग
नट॥ षेलत स्याम ग्वालन संग एकगावत इकनाच
त इक करत बहु रंग वीन मुरज उपंग मुरली झांझि झा
लरि ताल वदति होरो वो । लिगारी निराधे वैव्रजवाल
कनकलस नघोरि केसरि करलै वजनारि जवहिं आ
वति देषि तन नीम जनहैं झिलकारि दुरि रही इक घारि
ललिता देषि आवत स्याम घेरि भरि अंकवार औच
क धाइ आई वाम बहुत दीठ्यो देरहे हो जानवी अव
आज राधिका दुरि हंसति ठाढी निरषि पियमुषला
ज लई आह छानि मुरली छीन इंग छोयं पटपीत सीस
वेनी गूंथि कानी अचगरी अन रीति गए करतें छूरि
मोहन नारि सव पाछितानि सासकर धुनि माडि वोल

सू·सा
२८८
सा·

तिमलीलैगरभांति दावहमनहिलैनपायोबसनन
लेतीलाल सूरप्रभुन्हा जाकेगेञवरमपराइहिं
ख्याल ८७५ ॥रागधनासिरी॥ नागरिराधायेमोहन
लेआई पाएघेरिसांवरीषोरिजहांनकछूवसाई लो
चनआंजिभालवेंदीदेप्रनिपुनिपाइपराई वेनीगू
थिमांगसिरपारीकछकछुवहिगाई प्यारीहंसति
देषिमोहनमुषजुवतीहंसावनाई सांवरेअंगव
सूनीसारीअपनेंकरपहिराई कोऊभुजागनिकछु
कोऊ कोउगाहिचितुकउठाई कोउकपोलछूकहति
ललितअतिकोउमुषमुषहिमिलाई एकअधरग
हिसुभगकहतिरीबोलतनहींकन्हाई लालंचरगाहि
छूटचूनरीहंसिहंसिगांठिजुराई जुवतीहंसतिदेति
करनारीभयोस्याममनभायो वनकमलसअरगाजा
घोरिकैंहरिकेसिरढरकायो नंदसुनतहंसिमहरिप
टाईजसुमतिधाईआई पटमेवांदिस्याम छुटाए
सूरदासवलजाई ८७६ ॥रागगौरी॥ घरघरतेंसु
निगोपीहरिसुघरेमनआई निरषिस्यामरज
नारिहरषिमनानिकटवुलाई सुनतनारिमुसकाइ
वांसलीनेंकरधाई ग्वालनजेरीहाथगारिदेवयन
सुनाई सवलानामगुवारिअचानकगहेकन्हाई
सषीवुलाईदेरिदेंआवहुरीमाई एकसुननही

धाइ बीस बीस न तहं जाइ तूटि परी चहुं पास घेरि लीने
बल भाइ इक परली नहो छाति मुरलिया लई छुआइ
लोचन नगरज गाजि भांति सौं गारी गाइ जब हि स्याम
गकुलात गह तगाह उरलाइ चंद्रावलिसों कह्यो गृथि
कुच सौंह दिवाइ नवतन पाइ परा रकुंज रकीवाह छु
राइ यह सुख देखत नैन सूरजन वलि वलि जाइ ८७७
॥ रागकान्हरा ॥ मनहरि लीनो नंद ढटौना चितवनि मैं वा
के कछु टोना मोहीं निरखत अंग सलोना ऐसी छवि
कहुं भई न होना कालिंदि रहे जमुना तट जोना देख्यो वो
र सांवरी वोना वोलत नहि रहत वह मोना खेलत फा
ग ग्वाल संग छोना मुरली बजाइ विसारत भोना मु
हि देखत आवही वियोगी ना नटवर अंग सुभस जे
सजीना त्रिभुवन वस कीनो नन वौना सूर नंद सुत व
दन लजोना ८७८ ॥ रागगौडमलार ॥ खेलत रंग रह्यो
एक ओर व्रजसुंदरी एक ओर मोहन वरन वरन ग्वाल
वने नंद महर गोप चुने इक गावत एक निरतत गोह
न बजावत मृदंग आरस परस करे विहार सो नाको वार
पार इक इक करे सोहन कनक लकुट हम लिये धाइ रस
वे हर षहिये व्रजललना सूर प्रभु मनमोहन ८७९
॥ रागटोरी ॥ ग्वालिनि जोवन गरव गहेली राधा के स
ग आगम सहेली कुमकुम उवटि न कतन गोरी अं

सू.सा
२८८

गसुगंधिलगाइकिसोरी दछिनचीरतिपाईलहंगा
पहिरेसोहतमोलनमहंगा गूंदीकुसुममांगमोतिन
मनु केसरिआडभालभ्रकुटीधनु काजररेषनैनअ
नियारे खंजनमीनमधुपमनहारे श्रवननकुंडलर
विससिजोती नकवेसरिलटकैगजमोती दसनअ
नारअधरविंबजानौं चिबुकचारुमृदामधुमानौं
कंठकंबुमुक्तावलहार जनुजुगनीरविचसुरसरिधार
कुचचक्रवाकघसससिभ्रमभूले वैठेविछुरिदुहूंजन
फूले करकंकनचूरागजदंती नषमनिमनमोमिंटति
कंती नाभिहिरदतनहाटकवरनी कटमृगराजनितं
बमनहरनी कदलीजंघचरनकलनूपर मनोमराल
करतगतनूपर भूषनअंगनसजिसंवारें गावतिफाग
नेरनेकारें सुनिसुंदरवरवाहिरआए श्रीहलधरसव
ग्वालबुलाए इकतिनग्वालएकतिननारी बेलम
चौवजनेबिचभारी कुमकुमचंदनअरगजाघोरें
हाथनपिचकारीलेदौरें गोपीगोपमरीझकझोरी अं
चलगांठिपरसपरजोरी उडतगुलालअहनभयो
अंवर कुमकुमकीचमचीधरनीपर चंगमृदंगवां
सुरीवाजें पकरतएकएकवकुभाजें राधामिलि
सषीयनअपनेवीरबुलाएयो
रवमंत्रउपायो हलधरअपनेवीरबुलाएयो
संगरवनस्यामहिलें
कानलागिस्याममसमुझाए

आए हरिके हाथगहे चंद्रावलि आजर लै आई संध्यावलि ललिता लोचन अंजन लागी चंद्रभागा मुरली लै भागी इन लैलाचति हरदन पोलन इन लैपो छति नरति नलो लन इन उलमी अंगन अवलोकति चुंमनदानदेति इनरोकति मगनमई उरमें नसंमारति लालभुजा आ पनउरधारति पुरजन घर सेवै मिलि देखें ऐसन है पि यकोमुखमांडे तिनहुलोचन नचनसमलेखै एसन है पगवाले छांडे भामिनिलयो पटपीत छुडाई राधारा धाति करमवडाई सिमिटै सबा छुडावन आए उनैपेछ टनन मोहन पाए वांसनमारमचाइ रआडे ग्वालभ गे मिलि एसन छांडे वलसियो वीचग्वाल समुझाई मोहन मेवामोलमगाई पगुवाल योलाल छुटना ए हंसतग्वाल गुपालतहां आए नवमोहन हलधर पकराए करकुनलनि अपनेमनभाए नाबनैन मुख काजरलायो हरदनलसहलधरसिरनायो वहुतभ रेवलरामसवनगाहि धोलागिरमनुधानचलीवहि नवहिचलेजमुनाजलकूल गोपग्वाल भए अनकू ल जोरसवाढ्यो मिलनतहोरा सारदनहां वरनेंमति थोरा सूरदास सोनैसें गावै लीलासिंधपारनहिपा वै ८८७ ।।रागगौरी।। वहुरचौसरौरीरहीआवाबि निमथुराजाकु परवनरी घरअपनें कुसलविलिन

सू.सा
२८६
२८२

रनाकु पंइहनिथिअरिवरानिहोंसारदरूपासमाज आ
गुनमदनमहीपमेंकरीयेइहिंविधिराज परिवापियच
लियेनहीं सवसुषकोफलपाग प्रगटकरोयहजानिकें
अंतरकोअनुराग करेंहैजादिनसोधकें भूपतिकेजे
धाम ससिरेषासिरातिलकेंदें सवकोउकरेंप्रनाम क
नकसिंघासनवैठियेंजुवतिनकेउरआन छत्रचौरअं
चलधुजाघूंघरपटअतितान तीजतिहूंपुरप्रगटहेंअ
पनेअपनेदेस सुनिइकइकउमदमदमेंरहसकरें
सुवेस चौथचहूंजुगचालहेंयहआनीइकराति व
निजोतिनकोभेसहें छांडिसकुचकुलनीम पाचेंप
रमनपहेरीचलीसकलरजवाल नारिपुरुषसादर
करेंवचनप्रीतिप्रतिपाल छटिछरंगरसगावहीताल
तानवंधान छिनेचारतिनाथकोसोहतिऔरेंवा
न सुनिसातेंसवजगभइ सवनमनोमतिएक न्रप
तिकेहेंसोकीजियेंकोराषिजेवेष औरेंसुनिसवज
गभईराजाकीसचजानि करोरूपातेसावरेंआयुस
माथेमानि नौमीलोसनसाजिकें अरसुगंधआनि
हार मनोचलीहेंमाइकें मनसिजभोनसुहार द
सेंदिसासिधिसोधिकें वोलेरानाराइ आजकरो
हाचिआयनीआवहुकाजसिराइ सुनिआयुसए

कादसी बोले सब सिरनाइ जग जीतें बल आपनें त्या
न बैराग छुडाइ देखि भले भट आवही द्वादश द्योस
विचारि अरु अपनें सी सबे होइ संग नरनारि ढोल
भेरि उपंग बांसुरी बाजहिं बहुत निसान मिलौ लोक
पति छांडि कें भए बिछोह निदान रथ अनेक रावत
सजे घुरन भए असवार धोर धात तरंग बर भरे जितेक
सुहथियार जहां जहां सेना चली भ्रमत अबधू सि
र केस आपुस में समुझें नहीं राजा संग आवे स जेवे
कहूं देखे नहीं कबहूं सुने न कान तिन कुलकोनि द्या
न ली लागी पुत्र पुरान धाइ धरी जे कुलवधू हारि
पेरवीप हिचानि मुख गुलाल सों माड हांने अन राखे
कानि भसम भरें भीजा फिरें छिरके चंदनवार म
रजादा राखे नहीं अटपट लेहि उगार तहां सुनें तप
संजमा घरमें धरि अवार छिरके तिन्हें निसंक के
पकरैं पौरि किवार पंडित लखि बिस्वा बधू सबन
गयो तपसार तेरस चौदस द्योस है जिन जेते जम
हार हून्यो प्रगट प्रताप तें दोरि मिले पाताल जे
हां न हा हो रीजरा मनो मवासी आगि सबनां बेगा
वें ... सबैं सबै डउबें छरार साध असाध समुझें न
हां बोले सबै विकार अति आनीति मति देखि कें

सू.सा
२६०

परिवापुगटीआनि विमलवस्त्रसाजेसवनग्ररजादा
चरिआनि सुनिविनतीरिनिराजआपुसमुझेमनमां
हि जहांधर्मअपनोंरहैवसेंहमारीवांह आवहुस
वआदरकेरीहसिजोरीउहिहाथ परमधरममनरा
खहांकृपाकैरेरतिनाथ औरकहांलोंवरनियेंमन
सिजकेगुनग्राम सुनौस्यामइहिमासमेंकियेजुआ
रनकांम सूरजरसकिनराधिकाकहिमाधोसोंवात
स्यामकृपाकरिघररहौवरजतिमधुवनजात ८८१
॥रागमलार॥ हरिविधतुमजनिचलनकह्यौयहजि
निमोहिसुनावहु प्रीतमयहजिनिगहनिगहौजो
चलिहौतौसवहीचलिहैं प्रानलेनिवहौ प्रानग
एपुनिमिलौमानिहौंयहजिनिप्रानसहौ प्रानतौ
आनजनमहूहैंतुमफिरिमिलतनहौ जानराइजि
यजानिमानिमुखअवधीवाररहौ विछुरनपीरक
ठिनमरतेजौउइहिंदुखनदहौ सूरजप्रभुकेलाल
चउनकौंवहजिनिउमहौ ८८२ ॥रागसोरठ॥
नृपतिमनयहा।विचारपर्यौ क्योंमारोदोऊनंद
ठ टोनाअेसीआरनिअर्यौ अवहुंकसमहनुआपचलि
धाऊंयहाविचारकर्यौ सातधौंसमेवधीएकना
इहिगुनमनहिउर्यौ पुनिसाहसजियमेंजरिदेग्यौं
तानोकालसर्यौ सूरस्यामवलरामहदेतेंनेअन

हो बिसरै ॥८८३॥ ॥राग सोरठ॥ महर ढुंढोना सालरहे ज
न मनहाने नंदनंद पइब गुनि गुनि हृदे गहे दनुज सुना
पहिले संघारी पै पीवन दिन सात गयो सुतिण्यावरि
कागासुर आइगि स्यो मुरझात रेना सकट छिनमें सं
घार्यो केसी हत्यो विचारि जेजे गए बहुरिन हि दैखे सब हा
उरे मारि ज्यों त्यो करौ दुहुन संघारौ वाननहा कछु औ
र सूर नृपति अति सोच परयो जियय हो नरतमन दौर
॥८८४॥ ॥राग रामकली॥ नंदसुत सह जतु लाइ पठाऊं
स्याम राम सुंदर अति कहियत देखन आज मगाऊं जैहैं
कौन नेम करि ल्यावै भेद न जानैं कोई महर महरि सौं
हितकरि ल्यावै महा चतुर जो होई इहिं अंतर अकूरख
लायौ अति आतुर महराज सूर चलो मन सोच बढायो
कोहै ऐसो काज ॥८८५॥ ॥राग धनासिरी॥ आतिआ
तुर नृप मोहि बुलायो कौन काज ऐसो अटक्यो है
मन मन सोच बढायो आतुर जाइ पौरि भयो ठाढो क
ह्यौ पौरिया जाइ सुनत बुलाइ महल में लीन्हो सुफ
लक सुत गयो धाइ कछु डर कछु धीरज मन धारें ग
यौ नृपति के पास सूर सोचि मुख देखि डरानो ऊरध
लेत उसास ॥८८६॥ ॥राग मारू॥ सुनो अकूर यह बात सां
ची कहौं आजु मोहि भोर तें चेत नाही स्याम बलराम
यह नाम सुनि नाम मुहि का हि पठऊं जाइ तिनहिं पां

सू.सा
२८१
स्.२

हो प्रतिकार नंदसों सहज वानि में हे तुरत ल्यावे हुहुन
नृपति वोले देषिवे कों वहुत साध जानि सुनत भई अति
हि सुंदर सुने दुहु अमोले कमल जैनि उआरग जाति
ल्याए सुने वहे वतसास अवउन्हे देहीं सूरप्रभु स्या
म वलराम कों उरनहीं वचन ए ते सुनत हरष पेहें ।
८८७ ॥राग॥ कंस नृपति अक्रूर वुलाए वेठिह
कुमंत्र उठि कीन्हों राम कृष्ण दोउ वीर मंगाए कहुंग
ज मह्ल द्वार देराषि कहूं धनुष कहुं वीर नंद महर केवा
लि कुमारें करेन हेत सरीर उन्हे वुलाइ वीच ह्या मारों
नगर न आवन पावें सूर सुनत अक्रूर कहत नृप म
न मन सोच वढावें ८८८ ॥राग विलावल॥ महराज
क्यों आजु हों सपने डरआने पोढे जव हो आनिकें
देषि विलषाने कहा सोच ऐसो परयो ऐसो प्रथमी
की आज्ञा सुधि मन में रहाक हीये भ्रम जीको रानी
सव व्याकुल भई कछु भेद न पावें नव आ उनसह
जे कह्यो वह नहीं जनावें सावधान करि पोरिया वे
दारि जगाए सूर प्रास वल स्याम के नहि पल कलगा
ए ८८९ ॥राग विलावल॥ उतनंद हि सपनो भयो
हरि कहूं हिराने वलमोहन कोऊ लेगयो सुनि कें
विलषाने ग्वाल सषा रोवत कहें हरि तो कहुं
नांहा संग ही संग षेलत रहे यह कहि पछिताहीं

दूत एक संग लै गयो बलराम कन्हाई कहा ठगोरी
सा करी मोहन ना लगाई वा हाके दोऊ के गए हंसि
देषत टाठे सूरज प्रभु वे निठुर हैं अति ही के गाठे
८२० ॥राग सोरठ॥ व्याकुल नंद सुनत यह बानी ध
रनी मुरछि परी अति व्याकुल विवस जसोधा रानी
व्याकुल गोप ग्वाल सब व्याकुल व्याकुल व्रज की
नारी व्याकुल सषा स्याम के जन जे व्याकुल हरि की
प्यारी धरनी परत उठत व्याकुल है पुनि धावत इ
हि अंतर नंद जाग धक धकात उर नैन श्रवत जल
सुत अंग परसन लाग विसरत सुनिज सुमति अ
ति रोई कहा महर भरमावें सूर नंद घरनी के आगें
यह वेदन न सुनावे ८२१ ॥राग सोरठ॥ सुफलक सु
त मन परयो विचार कंस नरेस भयो हत्यार नगर
मांझ कीन्हो रथ ठाढो सोच परयो मन मन अति गाढो
मंत्र कियो निस मेरे साथ मो हिले न पठयो व्रज ना
थ गज मुष्टिक चानूर निहारे व्याकुल नैन नीर
अति ढारे अति वालिक बलराम कन्हाई कहा करें
मुष्टिक छु न वसाई कैसें आनि देव में जाई मो दे
षत मारें दोऊ भाई मोरे मोहि बदले मैं लै आगे कों
रथ नेक न टेले सूरदास प्रभु अंतरजामी सुफल
क सुत मन पूरन कामी ८२२ ॥राग कल्यान॥ सुफ
लक सुत हृदै ध्यान कीन्हो अविनासी हरि करता स

मर यहै सब घट के वासी प. न्हेधन्नि कंस गह्यौ मो
हि जिन पठायौ मेरो कारिकाज मीच अपनी कौं धा
यौ द्रहि गुन रथ हां कि देयौ नगार रह्यौ पाछें भयौ सो
सब कस्यो हरस हति न भगमाला हरख्यौ अक्रूर सूर
मिलि हों गोपाला ८९३ ॥राग कान्हरा॥ आज वे च
रन देखिहौं जाइ जे पद कमल प्रिया आउरनें नेक न
सके भुलाइ जे पद कमल सुरसरा परसें तिहूं भुवन
जल छायौ सूरस्याम पद कमल परासि हौं मन अ
तिवर्यौ व धायौ ८९४ ॥राग कल्यान॥ आजु जाइ
देखौं वे चरन सीतल सुभग सकल सुख दाता दुसह
दुख भै हरन अंकुस कुलस कमल धुजा चिन्ह न
अरुन कंज के रंग गोचारत वन जाइ पाइ हों गो पसब
नके संग जाकों ध्यान धरत मुनि को विद सुरा विरंच
अनर्इस नेई चरन प्रगट कर परसों इन कर नैन न सा
स देखि सरू पहिर हि न सकों गोर थतें धरि हों धार
सूरदास प्रभु उभै जा भरि हं सि के दिहें उटाइ ८९५
॥राग कल्यान॥ विंद्रावन ग्वाल संग गो वे हरि चारें अ
पने जन हेत काज बज कौं पग धारें जमुना कौरि पार
ग एस्याम रे न हेरी हलधर संग सखा लए सुरभी
न घेरी धेनु दुहन सखन कह्यौ आपु दुहन लागे
भक्त हेत श्री विंद्रावन गोकुल विच जमुना के आगे

कुहकि कुमत कुहे मत यो आसंगा कों

कृपालयहसुखउपजायौ सूरजप्रभुस्यामदरसतुमफलक
सुनपायौ ८९६ ॥रागविहागरा॥ व्याकुलभएव्रजकेलो
गस्यामनहिमनमेंआनतपरमपूरनजोग कोनमार
नाकोचितहिकोनपतिकोनारि मेरिदोउअक्रूरकेसंग
दयौनेहविसारि सबकहतयहकहांआयोकूरयाको
नाम सूरप्रभुसंगश्यामजैहैंओरसंगबलराम ८९७
॥रागविहागरा॥ चलन[illegible]चलनस्यामकहतलेनकोऊ
आयौ नंदभवनभनकसुनीकंसकहिपठायौ व्रजकि
नारिगेहविसारिब्याकुलउठिधाई समाचारपूछनकों
आतुरहैंकेआई प्रीतिजानिहितमानिविलखवदनवा
ढी मानोंवेआतिविचित्रचितेरेलिखिकाढी ऐसीगति
ठौरठौरकहतनबनिआवैं सू[illegible]रस्यामविछुरेंदुखभर
नकाहिभावैं ८९९ ॥रागसारंग॥ सबमुरझानीरीचल
वेकीसुनतभनककोगोपीग्वालसुयनकोलनगोकुल
रीमाईमूंदचनक वसनमलीनछानदेखियतहीर
करहतिजुवनीवनक जानैंहैंपियकमलनैनसेवेवि
छुरेसोत्रयकेसेंरहतिदिनक यहअक्रूरकहांतेंआयौ
दाहनलाग्यौदेहकनक सूरदासस्वामीकेविछुरनघ
टेरीहैहैंप्रानतनक ९०० ॥रागरामकली॥ मेरेमाईनि
धनीकोधनमाधौ वारमवारनिरखिसुखमानतितज
तिनहींपलआधौ ।छिनछिनअंगलगावतप्रीतमप्रेम
प्रगटहोवांधौ निसदिनचंदचकोराआखिनतिटी

नदरसकौसाधौ करिहैकहाअकूरहमारौदैहैंप्रानअगा
धौ सूरस्यामघनहोंनाहिपठऊंआरकंसविनवांधौ ९
०१ ॥रागसारंग॥ ब्रजवासिनुकेसरवसस्याम अरेअक्रू
र कूवर पारे कहाकरिहै मोहनवलराम अपनोलाग
लेघेघरिजोकछुराजअंसकेदाम औरमहरलेसंगसि
धारौ नगरकहालरकनकौकाम सुनियतसाधपरम
उपगारी सुनियतवडौतुम्हारोनाम सूरदासप्रभुपठैम
धुपरीकोजीवैछिनवासरजांम ९०२ ॥रागसारंग॥
नाहिकोऊस्यामहिराखैजाई सुफलकसुतवैरीभयोमो
कौंकहानिजसोधामाई मदनगुपालविनाघरआंगन
गोकुलकाहिसुहाई गोपीसकलठगीसीठाढीकहाठ
गोरीलाई सुंदरस्यामरामविनदेखेंइकछिनरह्योनजा
ई सूरतिन्हैलेचलौमधुपरीहिरदैंसूलवढाई ९०३
॥रागसोरठ॥ जसुधावारवारयौंभाखै हैकोऊब्रजहि
तूहमारौचलतगुपालहिराखै कहाकाजमेरेछग
नमगनकौनृपमधुपरीवुलायो सुफलकसुतमो
प्रानहरनकौंकालरूपह्वैआयो गोधनकंसलेहिस
वहाआतमोहिवंदलैमेलैं मोहियहीदुखकमलनै
नमेरेआगेंआगेंखेलैं कोकरकंवलमथानीगहिहै
कोयहमाखनखैहै वडौरीइंदुवराखिहै ब्रजपरकोन
मेरकरलैहै टेरि टेरि धरपरनिजसोधाअधरवद

नविलखानी सूरजदिसानहीलौंवरनेदुखितनंदकीरानी २०४ ॥रागविहागरा॥ जसुमति अतिहीभईविहाल सु फलकसुतयहतुम्हेवूझिये हरतहमारेवाल एदोऊ यावजनजीवनकहतिरोहनीरोइ धरतीगिरतिदुरति अतिव्याकुलगहिरामनननहिंजोइ निठुरभएजवतें यहआयोघरहुंआवतनांहा सूरकहांपतयालतुम्हा रेहमतुमविनुमरिजाही २०५ ॥रागसोरठ॥ कन्हैया मेरीछोहविसारी क्योंवलरामकहतत्नांहीमैतुम्हरा महतारी नवहलधरजननीपरमोधतमिथ्यायहसं सारज्यौंसांवनकीवेलिप्रफुलितफूलतिहैदिनचार हमवालकतुमकोंकहासिखवेंकहुंतुमहातेंजात सूर हूदेधीरजअवधारेंकाहेंकौंविलखात २०६ ॥राग रामकली॥ मधुपुरीस्यामसुनेहैंजात सकुचनकहिन सकतिकाहुसोंगुपतहृदेकीवात संकितवचनअना गतकोऊकहिजुगयोअधरात नींदनपरैघटैनहिरज नीसोउभएपरभात नंदनदनतौऐसेलागेज्योंज लपुरयनपात सूरस्यामसंगतेंविछुरतहैंअवजैहैंकु सलात २०७ ॥रागआसावरी॥ स्यामगएसखिप्रानर हैंगे अरसपरसज्योंवानेंकहियततैसेंवहुरिकहैंगे रू दुवदनचगानेनहमारेजानितजोरचहैंगे वासरनिस कहुंहोनकन्यारेविछुरनदुःदेसहैंगे एककहोंतुमआ गेवानीस्यामनजाररहैंगे सूरदासप्रभुजसमतिकौं

नजिमथुराकहांलहैंगे ९०८ ॥रागसारंग॥ मोहनने कवदनति
नहेरौ राखौमोहतातजननीकौंमदनगुपाललालमुखफे
रौ पाछेंचढीविमानमनोहरवहुरोहोतअधेरौ विछुरत
भेटदेहुठाढेंकैंनिरखौघोषजनमभौफेरौ समदुहुसखाऽ
स्यामदूनगाहिगहिअपनीगाइग्वालसबघेरौ गएनफे
नसूरताओसरखुधवलग्यानजुहाराछैरो ९०९ ॥राग॥
अवनंदगांइलेहुसंभारि जोतुम्हारेंआनिविलमेंचराइ
दिनचारि दूधदहीखवाइकीनेंवडेअतिप्रतपारि एतु
म्हारेगुनहृदैतेंआरिहैंनविसारि मातजसुधाद्वारठाढी
चलेआंसूढारि कह्यौरहियौसुचितसोंयहग्यानगुर
उरधारि कौंनसुतकोपितामातादेखिहृदैविचारि
सूरकेप्रभुगावनकीनोकपटआगरधारि ९१० ॥रा॥
मलार॥ सखीरीवहदेखौरथजात कंवलनैनवे
कांधेऊपरपीतवसनफहरात लसंजाइजवओरअट
नकीप्रानरहतकैसेंगात चहतिअखंडननवधुज
तान्यौंऊपरपवनवहात मधुछुडाइसुफलकसुत
लेगयौज्योंमांखीभईदीन सूरदासप्रभुदेखतविनु
सकलविरहआधीन ९११ ॥रागसारंग॥ पाछेंहीऽ
चितवतमेरेलोचनआगेंपरतनपाइ मनलैचली
माधुरीमूरतिकहाकरौंव्रजजाइ पवननभईपताका
अंवरभईनरथकेअंग धूरनभईचरनलपटातीजा

नारहांलैसंग अवनहिनहांनैरोंमेरीसजनीजिहिंवि
धिमिलैंगुपाल सूरदासप्रभुपठैमधुपुरीमुरलि
परीव्रजवाल ८१२ ॥रागविलावल॥ विछुरेश्रीव्रज
राजआजुतैनेननतैंपरतीतगई उठिनगएहरिसंग
तबहीतैंव्हैनगएसखिस्यामभई रूपरसिकलाल
चीकहावतसोकरनीकछुवेनभई सांचेक्रूरकुटि
लएलोचनवृथामीनछविछीनिलई अवकाहेजल
मोचतसोचतसनमुखहीतेंस्हलसही सूरदासयाही
तेंजुभएइनपलकनहठिदगादई ८१३ ॥रागसा
रंग॥ मनहोंऐसेंहीमरजैहों इहिआंगनगुपाल
लालकौंकवहुंकनियालैहों कववहमुखवहुरों
देखौंगीकितऐसौसुचपैहों कवमोपेमाखनमा
गेंगेंकवरोटीधरिदैहों मिलनआसतनप्रानरह
तहैंदिनदसमारगजैहों जौनसूरकान्हआवैंहैंतौ
जाइजमुनधसिलैहों ८१४ ॥रागसारंग॥ कहियो
पथिकस्यामसमुझाइ वहनातौनहिमाननमोह
नमनैतुम्हारीधाइ एकवार माखनकेकाजेरा
खेमैंअटकाइ वाकौविलगानमानौमोहनलागै
मोहिवलाइ वारहिवारयहीलौलागीगईपाथि
कमैपाइ सूरदासयाजननीकौजियराखौवदन
दिखाइ ८१५ ॥रागकेदारा॥ मथुराकेलोगनसुख

पायौ नटवरभेषकाछिनदनंदनसंगसुफलकसुत
आयौ प्रथमरजिमारिनदनंदनगोपवृंदपहिरायौ
धनुकतोरिलीलानटनागरनवगजषेलषिलायौ
रंगभूमसुष्टिकचानूरसोंभुजभरितालवजायौ नागर
नारिनारिदेकंसहिअजुगतजुकवनायौ पुनहिनि
सानभेरिसहनाईमाहूरागसुनायौ उपटिआनंदमेह
रनपगाजकोमाथोफेरिनवायौ गनगंधर्वसुमन
सुरवरषतजोतिनअंवरछायौ मातपितवंदाछोरसु
रप्रभजगतविमलजसगायौ ८१६ ॥सोरठ॥ नवरिस
करीमहावतभारी जोनहिआजुमारिहौंनीकेंकंसडा
रिहैमारी आंकुसराषिकुंभपरघुरकोहलधरउठेहं
कारी धाइपवनहूतेंअतिआतुरधरनीदेषतभारी
नवहरिपूछगहादतिलाकरवंधफेरिसिरवारी पटक्यो
पुहमफेरिनहिमटक्योलीनेदंतउपारी डुंडुभरडुरि
ददसनरूपछविसोंनिरषतसवपुरनारी सूरदास
प्रभुसुरसुषदायकमारीनागपछारी ८१७ ॥रागवि
लावल॥ एईसुतनंदअहीरके मारेरजिकवसनसव
लूटेसंगसषावलवीरके वीरदोउकांधेधरिआएदंत
कुवलयासरारके निसपतिमंडलमद्धिमनोमनि
धरिदएनारदहारके उडिआएहैंहंसमनोतजिमान
सरोवरतीरके सूरदासप्रभुतायनिवारनहरनसंकट

छपारके ८१८ ॥रागकल्यान॥ नंदके नंद सवमल्ल मारे हे
ि यह आचरज नुरत ही दौरिकै पौरि या जाइ नपैपे पु
कारि सुनत ठाढौ भयौ हां कि तिन कौ दयौ उन जुगल
धनुष तानन निहारे सुभट वोले सवै आपु ही विनक
हे मारि उरे सवै मल्ल मेरे अचगरा करि रहे वचन गाढे
कहे उर नहीं करन सुन उहिर वैरे रंगमहल पैरो कहा रे नं
तु मन मैरो धारि करषंड गति हि न चलावै जियत अव जा
व गो वहुरि घर आजु हौ नां हि जानन सूर कहि सुनावै ८१९
॥रागमारू॥ देषि नृपन मन हरि च मनि न हिये गरद
नु जली न्हा करा हि वाजूनैं से घुमन मारयौ कराग म कहि
रहैं रह्यौ ठ म कि गहि केस लै चले तै सैं टेलि हल धर
दयौ झे लि न वहारि लयौ महल कै नले धरनी गिरायौ
अमर जै धुनि भई हां क न भुवन न गई कंस मारयौ नि
उर देव छायौ धन्नि वानी गगन धरनि पाताल लौं ध
न्नि हो धन्नि वसदेव ताता धन्नि औतार सुरधरनि उप
गार कौं सूर प्रभु धन्नि वलराम भ्राता ८२० ॥रागविला
वल॥ मथुरा के लोग न वात सुनी यह उग्रसेन को राज
दयौ सिंघासन वैठारि कपा करि आप हाथ सौं चौंर
लयौ मात पिता को संकट मेट्यौ देवन जै धुनि सवद
कियौ रानी सवै भरत तें राषी उ नि प्रभु वहुतैं करि वि
नयौ यह सुष सुनि वसुदेव देवकी हरषित भयौ अति

सू·सा
२९६

दुहुनहियौ सूरदासप्रभु आएमधुपुरी दासननितेंपरलोक
कियौ ८२१ ॥रागरामकली॥ मथुरापरगटाइयह वात
राजिकहनिगजमहनमारितनिकसेनंदतात धन्निमा
ता धन्निपितोहिं धन्निधन्निवहरात जवलयौ औतारध
रतोधन्निधनिसोमात कंसकेसीछोभि दीऊ अमुरवि
येनिपात सूरजोधासवेमारे महाजाननघात ८२२
॥रागविलावल॥ कंसमारिमुरराजदियौ मातपिताबं
दनतेंछौरे दुखविसरौअतिहुलसहियौ उग्रसेनकों
धायमिलेहरि अचलराजमरिअभिजियौ असुरवं
सनिरवंसकिये सवजेसेंशोऊ नहाकियौ मिलीकु
वरीचंदनलेकेंसहजहीहरिकोंनामलियौ सुनो
सूरनपशसजातिहीवीचसुकृतअतिदरसदियौ
८२३ ॥रागनट॥ जानेगांववाहवलवसियतुनासोंक
हावसारै ठाकुरसोसेवकसरवरकैरैरनवाननपाति
जाई सूरखरेउनंदयेमांगतुपतिअरुलाजगंवाईस
रदासनितहिंकाकौडतहैजिहिंतिनकुंवरकन्हाई ८२४
राग कुबिजासदनआएस्याम अपानरिहरिगएप
थमहिभईअनूपमवाम प्रीतिकेवसदीनवंधूभक्ति
वत्सलनाम मिलीमारगमलयलेकेंभईपूरनकाम
उरवसीपटतरहिनाहींमेनुकाबिहिकाम सूरप्रभु
मिहमाअगोचरवसेदासीधाम ८२५ राग

कुबिजासी भामिनी सोनारी कंसहि चंदन लियेजाति ही बी चमिले नाओंदेनारी हरि नरवि पाव रोपटरानी हरि चरि नामरी कुबिजा मिटायो डारि कहत मधुपुरी जहांतहां दासी कहि डारति जिभारि कुबिजा म लिय कहत जो कोउ ताहि उघति देगारि सुनो सुरस्यानी सुनि पावे त्रासहोत जिनि मोरे डारि ८२९ ॥रामविलावल॥ आसपरस सवाबालक हैं जव मारो हरि रजिक आवन नही मन जान्यो हम नहि निवहें वैसो धनुषतोरि सब जो धाति न मारत नहि विलमकीयो विकत मतं गानि हूं पुरनामी। छिन कहि में सो धरनि परयों वेसे मल्ल नदाव विसारयो मारि कंस निरवं सकियो सुनो सूरए हैं अविनासी इनते प्रभु नहि औरबियो ८२७ ॥रामसोरठ॥ मेरे मोहन तुम विनु नाही जे हों महरि रोरि आगे जव ओहें कहा ताहि में कहों माधन मथिराखो हे तुम हित वेगि चलो मेरे प्यारे निठुर भये मधुपुरी आइकें काहे असुरन मारे सुषपायो वसदेव देवकी आरु सुषसरणादियो ये हे कहत नंद सब पास वचहत न हमें हियो जब जड़ितामाया उपजाई ऐसें प्रभु जदुराई सूरनंद परमोधि पगावत निठुर ठगोरी लाई ८२८ ॥राग॥ सोरठ॥ नंद विदा के धोषसिधारे विछुरन मिलन राजविधि जैसी रहि संकोच न मारे कहियो जाइ जसोधा आगे नैनन नीर ढरैरी जिनि सेवा करी जानि सुत आपने कियो

श्तपालहमारो हमकौंकहतुम्हैं और कछुनाहीतुमजिय
जानिविचारो सूरदासप्रभुयहविनतीहै उरतेंजिनिप्री
तिविसारो २२९ ॥रागधनासिरी॥ चलेनंदव्रजकौंसमु
हाइ गोपसखापरमोधियतवाए चलेसवहिंअकुलाइ का
हूसुधिनरहीतनकीकछुलपेटेरातपरेपाइ गोकुलजा
तफिरतजिनमधुवनमनजिनिउतहिचलाइ विरहसिं
धमेंपरेअचितकैंश्वासचलेवहाइ सूरस्यामवलराम
छांडिकैंव्रजआएनियराइ २३० ॥रागकल्यान॥ मथुरा
रामँ तजिस्यामनंदविरजआए वारवारमहरिकहतिजनमध
गकहाए कहूंकहतिगोपीहरिचरित्रनकीकरनी यहसु
निनंदव्याकुलकैंमुरछिपरेधरनी टेरिटेरिपुहमपरत
व्याकुलव्रजनारी सूरजप्रभुकोंनंदोसहमकौंजुविसारी
२३१ ॥रागसारंग॥ उपलटिपगकैसेंदीन्होनंद छांडेकहां
उतहीसुतमोहनधाराजीवनमतिमंद कैंतुमधनजोव
नमदमातेकैंतुमछूटेवंद सुफलसुतवैरीभयोहमकौं
लैगयोआनंदकंद रामकृष्णविनुकैसेंजीजेकठिनप्रा
निकोफंद सूरदासप्रभुभईअनाथिनीतुमविनुगोकु
लचंद २३२ ॥रागसोरठ॥ सराहियेनंदतुम्हारोहियो
मोहनसोसुतछांडिमधुपुरीगोकुलआइजियो कहाक
होमेरीलाललडैतोजवतुमविदाकियो जीवनिमूरीह
मारेव्रजकीवसुदेवछीनिलियो हौंनिजसोचवहुतकरि

हारीवरजनगवनकियो सूरदासमेरोलालप्रानपतिपरह
थजादिद्यौ ८३३ ॥रागसारंग॥ परेषोकौनवातकौकीजे
नाहरिजातिनपातिहमारी कहामानितुमलीजै नाहिन
मोरचंद्रिकामाथेनाहीउरवनमाल अवराजतराजनके
भूषनसुंदरस्यांमतमाल नंदनदनगोपीजनवल्लभ
अवनहिंकान्हकहावत वासदेवजादौकुलदीपकवंदी
जनवरनावत विसरयौसुखनातौगोकुलकौनांहिह
मारेअंग सूरस्यामहितिगईसगाईवामुरलीकेसंग
८३४ ॥रागनट॥ देषोकूवरीकेकाम निजुकहावतिपटरा
नीवेउरराजास्याम कहैनाहीउनेदासीवेनहीगोपाल
वेकहावतिराजकंन्या वेभएभूपाल पुतबकोयहसवै
सोहेंकूवरीकिहिंकाज सूरप्रभुकौंकहाकहियेवोचिषारी
लाज ८३५ ॥रागविलावल॥ वेकहाजानेंपीरपराई सुंदर
स्यामकमलदललोचनहरिहलधरकेभाई मुषमुरली
सिरमोरपषोवावनवनधेनुचराई जेजमुनाजलरंग
रंगेहेंअजहूंगईनकराई वेभूलेहैंदेषिकूवरीरमसव
गईभुलाई सूरजचात्रकबूंदभईहैंहेरतरहेहिराई ८
३६ ॥रागजैतसिरी॥ सषीरीकाकोमीतअहार काहेकौंस
षिमरिभरिआरतिकनैननकौनीर आपुनपियतपि
यावतदुहिदुहिइनधेननकौषीर निसिवासरछिनुन
हिविसारतुहेंहंसमुताकौतीर मेरेहृदैंकदिनदौंलागी
जानेहैंननकेचीर सूरदासप्रभुदुषितजानिवेंछांडि

गयोवेपार ८३७ ॥रागरामकली॥ गुपालहिपाऊंधौंकिहिं
देस सींगीमुद्राषप्परलैकेंकरिजोगिनकौभेस ढूंढ्याप
हरिभभूतलगाऊं जटावगाऊं कैस हरिकारनैगोरषजं
गाऊंजैसेंस्वांगमहेस तनमनजारौंभसमचढाऊंवि
रहिनगुरउपदेस सूरस्यामविनुहमहैंऐसीजैसेंमनि
विनुसेस ८३८ ॥रागधनासिरी॥ नवनैंमिटैसवैआनं
द याव्रजकीअवसवैसंपदालैजुगएनंदनंद व्याकु
लभईजसोधाडोलतिदुषितनंदउपनंद धेनिनहुधि
श्रवतिहचनमुषचरतिनहाडनवंद विमुषवियोग
दहतउरसजनीवाढिरहेदुषदंद सीतलकौनकरैरीमा
ईनहारूहाहारिचंद रथचढिचलेकहानहिंकाहूचाहि
रहीमतिमंद सूरस्वानवूंदआसालगितृभ्रतपपीहापं
द ८३९ ॥रागमलार॥ व्रजकेविरहीलोगविचारे विनुगो
पालठगासीठाढीअतिदुरवलतननगारे नंदजसोधामा
रगजोवतनितउठिसांझसकारे चहुंदिसकान्हकान्हक
हिटेरतअसुवनचलतपनारे गोपीग्वालगऊछुतसव
एअतिहीदीनदुषारे सूरदासप्रभुविनुऐसोतितम
नौचंदविनुतारे ८४० ॥रागकेदार॥ हरिसुतपावसप्र
गटभयोरी मारतसुतवंधपतिशोहतताप्रतिपालछंरा
हिगयोरी हरसुतवाहनअसनसनेहीसोलागतअंग
अनलभयोरी मृगमदस्वादमोदनहिंभावतदधिसुत
भानसमानभयोरी वारिजसुतपितकोधरियोसवि

मोटि सकात दकार दयौरी सूरदास विनु सिंधु सुतापति कोपि सम
र कर चांपलयौरी ८४१ ॥राग केनरा॥ गिरिधर जब सौं गो
कुलनाथ अवन तुम्हें जगार पटवैं गोधन नके साथ वरजे
न मापन धामन कवहूं दछीलेन लुराइ अवन देहि उराहनो
नंद घरनि आगे जाइ नहिं देहि दावरी जोरि कैं अलल सुट
जसुधा पान चोरी न देहि उधारि कैं आगुन न कहिहैं आन क
हिहैं न चरनन देरैं जावक पुहुन वेनी फूल कहिहैं न करन
सिंगार वरन रवसन जमुना कूल करिहैं न कवहूं मान हम
हठिहैं न मागन दान कहिहैं न मृदु मुरली वजावन करन
तुमसौं गान देहु दरसन नंद नंदन मिलन ही की आस सू
र हरि के दरस कारन मरत लोचन प्यास ८४२ ॥अथ गौर॥
सार॥राम नट॥ ऊधौ वेगि तुम व्रज जाहु सुत संदेस सुनाइ
मेटौ वदन मनि को दाहु आमपावक तुल्य तन मैं विरह स्वा
स समीर मसम न कहीं होंन पावत लोचन न के नीर आजु
लौं रहिं भांति सैवें कछु सांसरार रीन यर विनु समाधान
हि क्यों धरें तन धार वार वार कहा कहैं तुम सपा साध
प्रवीन सूर प्रभु मति विचारि ये जिय मनो जल विनु मी
न ८४३ ॥राग गौरी॥ घहरजि नित्या वहु गोकुल जाइ
तुम्हें विना व्याकुल हम कैहैं जदुपति करी चतुराइ अ
पनो हार चतुर न मगायो दयो तुरत पलनाइ अपने अं
ग आभूषन करि करि आपुन ही पहिराइ अपनो मुकुट

पितंवर अपनो देत सवहि सु षपाइ सूरस्याम नंद रूप उपन
क सुत भ्रगु पद अंग वनाइ ८४४ ॥रागगौरा॥ ऊधौ व्रज
कौं गवन करौ हमि विना विरहनी गोपि आति न कौ दुःष
हरौ जोग ग्यान परमोधि सवन कौं ज्यों सुष पावे नारा पू
रन ब्रह्म अषिल परषे कौ मोहि विसारैं डारा सषा श्रवी
न ह मारे तुम हौं तुम सौं नाहि अरु मिंत सूरस्याम रहि का
रन परवत कै आवहु तुम सत ८४५ ॥रागगौरी॥ ऊधौ
व्रज जिनि गहर लगावहु तुम व्रजनारि ग्यानि मति सकु
चौ क्यौं हूं जोग सुनावहु वानी कहत समुझि वेले हैं अहें
हमारे मानौं विरह दाह वे सुनत तपै हैं मानौं अनल हि
पानौं अव हीं जाहु विकल सव गोपी जोग वचन अरि
पो षो सूर नंद जननी जसुमति कौं वेगि जाइ संतो षो
८४६ ॥रागविहागरा॥ पत्री स्याम लिषी वनाइ नंदवा
वा सौं विनै करजोरि जसुमति माइ गोप ग्वाल सषान
कौं हि लि मिलि जु कंठ लगाइ और व्रजनरनारि जेती
तिन हि प्रीति जनाइ गोपि कनु लिषि जोग पठयो भा
व जानि न जाइ सूर प्रभु मन और यह कहि प्रेम लेत उ
ठाइ ८४७ ॥रागपूरवी॥ पाती लिषि ऊधौ कर दीन्ही
नंद जसोधहि हित करि दीजौ हंसि उपनंक सुत लीन्ही
सुषहु वचन कहि हैं तुज नायौ तुम हौ हितू हमारे वा
ल जांनि पठए न्रप उरतें तुम प्रतपालन हारे कुविजा
सुनो ज्ञान ऊधू महल हि लयौ वुलाई अपनें करपा

वूजे

नी लिखि दीन्ही राधहि सहन बड़ाई मोकौं तुम अपराध ल
गावति कृपा भई बिनु आस कहति कहा मो पर ब्रज नारी
सुनौ न सूरजदास ८४८ ॥राग मलार॥ हम पर काहे कौं रुख
ति ब्रजनारी सा मैं भाग नहीं काहू कौं हरि की कृपा भई न्या
री कुबिजा लिख्यौ संदेस सबन कौं अरु कीनी मनुहारी
हौं तौ दासी कंसराइ की देखौ हृदै बिचारी मलन मांझ ज्यौं
गरई तौं वरी रहति धूरे परडारी अब तौ हाथ परी जंत्री के
बाजति राग दुलारी तन मेरौ टेढ़ौ सब कोऊ जानै परस
त भए मुरारी सूरदास स्वामी करुनामै अपने हाथ संवा
री ॥८४९॥ राग बिहागरा॥ तब ऊधौ हरि निकट बुलाए
लिखि पाती दोउ हाथन दीन्ही अरु मुख बचन सुनाए
ब्रजबासी जावत नर नारी जथैले लहु मवनयात जो
जिहि बिधि तासौं तैसैं ही मिलि कहियौ कुसलात जो
सुख हम मनु मतै हैं पावत सो त्रिभुवन मैं नांहीं सूरज प्रभु
देसौं ह आपनी समुझाए मन मांही ८५० राग जस
मति करति मोकौं हेत सुनौ ऊधौ कहत न बनत नैंन
भरि भरि लेत कुहुन की कुसलात कहियौ तुम्है भूल
त नांहि स्याम हलधर सुत तुम्हारे और कौन कहांहिं
आइ तुम कौं धाइ मिलिहैं कछू कारज और सूर हम
कौं तुम बिना कछु सुख नहीं तिहुं ठौर ८५१ ॥राग बिला
वल॥ जबहि चले उधो मधुबन तैं गोपिनु सगुन जना
इ गए बारबार भौंरा लगे कानन कछु जिय अंतर हरष

सू॰सा ३००
१००

भए जहां तहां काग उड़ावन लागी हरि आवत उड़ि जाइ क
हां समाचार कहि जबहि सुनावति उड़ि बैठत सुनि अंत
कहां सषी परसपर षेल रचति हिं आजु स्याम के आव
ते हैं कै धौं सूर कोई ब्रज पठयौ। चिन्ह चतुर के पावत हैं
८५२ ॥राग धनासिरी॥ कनैंया हुँ नहीं रे काग जो गोपा
ल गोकुल कौं आवैं तौ हौं हौ बड़भाग दधि ओदन दोना
भरि दैहौं अरु अंचल की पाग मिलि हौं हृदै सिराइ कैं
कै भरि भेटि विरह की आगि जैसें मात पिता नहिं जानत
अंतर कौ अनुराग सूरदास प्रभु कैरैं कपात बजवतें दंहि
सुहाग ८५३ ॥राग धनासिरी॥ कोउ माई आवतु हैं तन
स्याम जो जैसें तैसें उठि दौरी छांड़ि सकल गृह काम रो
मरोम गदगद तेही छिन सुष सीचत अभिराम इतनी
कहत आइ गए उधौ रही ठगी सी बांम ज्यौं निधि पाइ गं
वाइ हाथतें भई व्याकुल तन नताम ~~८५४~~ सूरदास प्रभु र
हां कवकौं हें वंधिकु विजारस दाम ८५४ ॥राग विलावल
जब कह्यौ आए स्याम नेंही परी सु राधिका ब्रज
बाला जो जहां रही तहीं सपनें भीर जधानी के गई ज्यों
जागें कछु नाहि वारवार रथ और निहारैं स्याम विना
अकुलांहि कहां आइ भरिहें ब्रजमोहन मिला कूवरी
नारि सूर कहत सब कह्यौ आए कियें कामसर मार ८
५५ ॥राग कल्यान॥ भली भई हरि सुरति करी उधौ मह
रि कुसलात कहिये आनंद उमगा भरी भुजा गहे गोपा

परस्यो घिनि मानौं सुफल घरी पाती लिखि स्याम पठयो यह सुनि मन हि उरी निरखि उपलक सुत न्यारे तुला ने मा नो रूपहरी सूर स्याम कौं सबै यही री श्रवन न सुनी परी २५६ ॥राग॥ रजघर घर सबै होत बधाए कंचन कलस दूब दधि रोचन मह रिमह रि वृंदावन स्याए मिलि ब्रज नारि तिलक सिर कीन्हो करि परदक्षिना तास पूछे कुसल नारि परहर षति आए सब व्रज वास सकल सकातै धकुधका तउर अब कब कान्ह सब वरारे सूर उपलक सुत बोलत नाहीं अति हीं है के राखे २५७ ॥राग नट॥ ऊधौ कहो हरि कुसलात कह्यो आवन किधौं नाहिं बोलि जो मुख वात एक छिन जुग जात हम कौं बिनु सुने हरि प्रीति आपु आए कपा कीन्ही अब कहो कछु नीति तब उपलक सुत सबन बोले सुनौ श्री मुख जोग सूर सुनि सब धार आई हर दिनी ले लोग २५८ ॥राग धनासिरी॥ सुनौ गोपी हरि कौ संदेश करि समाधि अंतरगति धावहु यह उनको उपदेस हौं सब गति अविनासी पूरन सब घट रह्यौ समाई नगुन ज्ञान बिनु मुक्ति नाहिनैं वेद पुरान निगाई सगुन रूप तजि नगुन विचारौ एक चित एक मन लाइ आदि ताप सब तापतु रत तरि मिलि हौ प्रभ कौं जाइ इस हसंदेस सुनत माधौ कौ गोपीजन बिलषानी सूर विरह की कौन चलावै बूडत मन बिनु पानी ५२ ॥राग मलार॥ रहु रे मधुकर मदमत वारे नो हि कहा जैसी निरगुन सौं जीवें कान्ह हमारे लोट

तनै

२

टनुअवलनवीचकुंजमेंनीचनअंगसमारे वारवारछबिरत
मदिराकेवोलतवचनउधारे तुमअजानतहोवेसीग्वालि
निजेसीतु[illegible]मतुम्हारे घरीपहरसवकौंविरमावतजोर
आवतसोरकरि तनमनआपिरहोहमतवहीकाकोंमि
लहिउधारें वालोयनवलिजावतुम्हारे सूरस्यामगुनन्या
रे २६० ॥रागधनासिरी॥ मधुकरकहांसिषावनआयो
एतौनेनरूपरसराचेकह्योनकरतपरायौ जोमजुगतिहम
कहूनजानेनाकछुवूझगयानौ नवकिसोरमोहनमदुमृ
रतितासौंमनउरझानौ भलीकरीतुमआएऊधोदेवोद
साविचारी दारउपाइ।मिलासूरकहौ ओरतिहरहिहमारी
२६१ ॥रागमलार॥ पातीहेमधुवनतेंआई सुंदरस्यामआ
न्हलिखिपठई आनिसुनौरीमाई अपनेअपनेगहतेनि
कसीलेपातीउरलाई कहाकोरेहमसूनेगोकुलहरिविनु
नित कछूनसुहाई नेननीरअतिभरिरहतो ऐमवघानतुझा
ई सूरस्यामस्वामीमथुरावसिहमराक्षुधिविसराई २६२
॥रागमलार॥ उसीमिस्यामअंगमकारे चितवनिअरुमु
सकानिमाधुरीजातमेरसौडारे आवतिलहरिविरहजोवर
नकीउरतिपहननजारे भलीभईजोऊधौआएवदैदेचर
लेहमारे जंत्रनचलेमंत्रनहिफुरई गुनीचलेगुनहारे म
दनगुपालगारुहमारे जोविषलहरउनारे
सूरदासप्रभुतुम्हरेदरसविनुह
मसिरकारीवारे २६३ ॥रागसारंग॥ सुनियतमुरलीदेखिडरा

न दूरिहि तेसिंघासनबैठेसीसनाइ मुसक्यात मोरपख
कौविजनविलोकतवहरावततहिवात जोकहुंचलति
हमारीचरचाचालतहीचुपजात सुरभीलषतचित्रकी
रेषा सोचतनहिपछितात सूरदासजोबजहिविसार्योंदूध
दहीकितषात २६४ ॥रागसारंग॥ विनगुपालेवैरिनिभई
कुंजें तवबेलतालगतिततनसीतलअबभईविषमज्वा
लकीपुंजें वथांवहतजमुनाजलगहरोंवथाकमल
फूलनअलिगुंजें पवनपानघनसारसजीवनदधिसुतकि
रनतेजततनभुंजें तुमऊधोकहियौमाधौसोंमदनमारिकी
न्हीहमलुंजें सूरदासप्रभुन्हरेदरसकौंमगजोवतअखि
यांभईछुंजें २६५ ॥रागमलार॥ ऊधोवजवांचतनहिपा
ती कितलिषिलिषिपठवतनंदनंदनकठिनविरहकी
काती नैनसजलकागदअतिकोमलकरअंगुरीअति
ताती परसतजैरेविलोकतभीजेदुहुंभांतिदुषछाती
सुमिरसनेहनंदनंदनकोगोपसुताउनमाती क्योंसम
झौंएअंकसूरप्रभुविरहमदनसरघाती २६६ ॥रागमला
र॥ लिषीआईवजराजकीछाप ऊधोबांधेफिरतसीस
परदेषतिआवतिताप नउतमरातिनंदनंदनकीघरघर
थापीथाप वहतजाउजोगओराधौअविगतकथाअना
प हरिआगेंकुविजाअधिकारिनिक्योंजीजेंइहिंदाप सू
रसंदेसैसुनियनलागेकहीकोनकपाप २६७ ॥राग

सू.सा
३०२

धनासिरी॥ ऊधौ कहा करैं लै पाती जब लग मदनगुपाल
न देखौ बिरह जरति मो छाती निमष एक मुहि बिसरति
नांही सरद समै की राती पीर पराई जानौ ऊधौ तुम हो स्वा
मसघाती आपुन जाइ मधुपुरी छाए परवत मदन ब
राती सूरस्याम स्वामी सौं कहियौ बतियां ठकुर सुहा
ती ६६८ ॥रागधनासिरी॥ अति मलीन बृषभानकुमा
री हरि श्रमजल भीजी उर अंतर ता लालच न्धोवति
नहि सारी अधमुष रहि ऊपा नहिं चितवति ज्यौं जूवा
गत हारयो ज्वारी छूटे चुहर बदन कुंमिलाने ज्यौं नल
नी हिमकर की मारी हरि संदेस सुनि जाइ मृतक भई बि
रह जरी दूजें अलि जारी अब कैं मिलौं सूर के प्रभु जू ब्रज ब
निता बिन स्याम दुखारी ६६९ ॥रागधनासिरी॥ उलटी
रीति तिहारी ऊधौ सुनै सु ऐसी को है हम अबला अहीर
सठ मधुकर तिन्हें जोग क्यों सोहै बूंची षुभी आंधरी का
जर नकटा पहिरे बेसरें मुंडली पाटियां पारयौ चाहै कौ
ढिनि अंग गहिके सर बहिरी पति सौं मतो करै सोऊ नर
कैसें पावै यही न्याव तिन कौ है ऊधौ जो हमैं जोग सि
षावै जो तुम कौं हम ल्याए ऊधौ सो हम सिर करि लीन्हे
सूरदास प्रभु निरगुन हैं जो सरगुन काहे कीनी ६७०
॥रागधनासिरी॥ ऊधौ जोग सिषावन आए कैसें धीर
जधरैं चोरि चोरि चित चोरी चोरां प्रीति जोरि नहि जा
ने पहिलै जोग कहा भयौ ऊधौ अबर हि जोग उबानें

उनहरिहमसोंप्रीतिजुकीनी जैसेंमीनअरुपानी न
छिनलछिनजियनिकसनलाग्यौपानीपारनजानी
निसिबासरमुहिपलकनलागेंकोटिजतनकरिहारी
ज्योंभवंगतजिगयौकाचुरीसोगतिभईहमारी एक
समेंश्रवननमेंमोहनमोहनकरनफूलपहिराए (
अबमोहनमाटीकेमुद्राऊद्धवहाथपठाए वेनासु
भगगुहीकरअपनेचरननजावककीन्हो कहाकहौं
अबसूरस्यामकौनिपटकठिनमनकीन्हो ८७१ ॥रा
गधनासिरी॥ आएनंदनंदनकेग्रेहगोकुलआनिजोग (
सिखाऐंभलीतुम्हारीजेव जबवृंदावनरासरच्योहै (
तबहिकहांतुमहेव अबजुवतिनकौंजोगसिखावत (
भसमअधारीलेव अबलनकौंतुमयहमतिठानी
ज्योंजोगीतुकोंभोग सूरदासप्रभुसुनतआधेकदुख
आतुरविरहवियोग ८७२ ॥रागगूजरी॥ ऊधोजो (
गसिखावनआए सिंगीभसमअधारीमुद्रालेजदु
नाथपठाए जौपैजोगलिख्यौगोपिनकौंकतरस
रासखिलाए तबहींक्योंनग्यानउपदेस्योअधरसु
धारसप्याए मुरलीस्वादसुनतबवकाननसुतपति
ग्रहविसराए सूरदाससंगछोडिस्यामकोंहमेंभएप
छिताए ८७३ ॥रागगूजरी॥ मधुकरकाकेमीतभए
द्यौसचारिकरिप्रीतिसगाईरसलेअंतगए उवन

सू॰सा
३०३

भिरत आपने स्वारथ पाखंड आगू हद ए चाउ सरे पहिचा
नत नांही प्रीत मञार नन ए बेलत भिरत मनो बोरा नें
हीन जू पान हए सूरदास प्रभु दूत रावरे दुख वे बीज व ए
८७४ ॥ राग रामकली ॥ मधुकर प्रीति कीयें पछितानी
मैं जानी ऐसी निबहेगी उन कछु और ठानी ओर
न की कौन पतीज्यो बोलत मधुरी बानी हमकों लि
खि लिखि जोग पठावत आप करत रजधानी सूनी
सेज स्याम बिनु मो मैं तलफ तिरेनि बिहानी सूरदा
स प्रभु प्रीति सुमिरि कें नैन चले हैं पानी ८७५ ॥ राग
मलार ॥ हमारे हरि हारिल की लकरी मनसा बाचा औ
र करम नाडि करिय हृ पकरी सोवत जागत निस आ
रु बासर कान्ह कान्ह जकरी यह तो जोग ऐसो लागत
है ज्यों करई ककरी कौन ब्याधि स्याए आलि हम कौं ल
सू तो सिखनिबगरी यह तो सूर तिन्हें लै दीजे जिनको मन च
करी ८७६ ॥ राग मलार ॥ काहे कों गोपीनाथ कहावत
जो पै मधुकर कान्ह हमारे तो क्यों न गोकुल आवत सपनें
की सी प्रीति जानि कें न हमें कलंक लगावत जो पै कान्ह कू
बरी रीझे काहे न बिरद बुलावत ज्यों गजराज काज के औ
रे औरे दसन दिखावत ऐसें ही कहि वे सुनिवे को सूर ह
मैं बौरावत ८७७ ॥ राग मलार ॥ बिलगि जिनि मानो ऊ
धौ प्यारे यह मथुरा काजर की ओवरि जे आवें ते कारे

तुमकारे सुमलक सुतकारे कारेकुटिल भंवारे निनहूं
मांझ अधिक छबि उपजत कमल नैन [illegible] निर्यारे मा मै
नौलीलं वरनैं करिज मुना आनि पधारे नवतें जमु
ना भई स्याम जल सूर स्याम गुन न्यारे २७८ ॥राग
॥सारंग॥ राषौ यह सब जो गऊ अटपस्यौ ऊधौ पाइ परौं
कहां रस प्रीति कहां तन सोधन सुनि सुनि लाज मरौं चं
दन छांडि बिभूत बनाऊं यह दुख कौं जु करौं नासा कर
गहि जोग सिषावत वेसरि कहां धरौं सूरजदास यही व
त मेरें हरि पल नहि बिसरौं २७९ ॥रामसारंग॥ तुम्ह
री प्रीति किधौं तरवारि दृष्टि धार धरि लई जु पैनी घा
यल सब व्रजनारि परी सुमार षेत ब्रिंदावन नाहीं मानी
हारि विह्वल विकल संभारि छिन छिन वदन सुधानि
धि वारि किर पावरी जोग लिषि पठयौ मन सुधि करी ह
मारी कछु रन सेष हितजो सूर प्रभु अव जिनि मुरी
धारि २८० ॥रामसारंग॥ सुनौ सषि परदेसी की वा
त वादि गए अवधि अरध मंदिर की हरि अहार चलि
जात ससि रिपु वरष भानु जुगे रिपे सम हर रिपु करै
फिरि घात नौ ग्रह वेद निष्व अरध गुनि को हट कै गो
षात रविपंच कै लेचले स्याम घन याही तें अकुलात
नाहिन सूर मिलौं रनने घर ग्यान दौ बियै जात २८१
॥रागसारंग॥ प्रीति करि दीनी गरे छुरी जैसें वाधिक चु

२४

गाइकपटकनपाछेंकरतदुरी मुरलीमधुरचेंपसुरकों
पौमोरचंदपंदवार नेनविलोकनिलगनलगतपुसि
सनतनपंषपसार नलपतघंराडिचलेमधुवनकौं
वहुरिनकीन्हीसार सूरदासहरिकलपतरोवरवहुरि
नवेरेंडार ८८२ ॥रागसारंग॥ ऊधोदीनीप्रीतिदिनाई
वातनसुहृदकरमनपटीकेचलेचोरकीनाई विरहावी
चवराइसलिलमनुअधरमाधुरीप्याई मोहिजानि
पगेअंतरगतओषदमिलननसाई गरलदानदेवपी
वेकौंयाकौंयहीउपाई करोकाजमेरेतिनदेषोदुषदे
च्योनहिजाई सूरदासऐसेआलिजगमेंतिनकीगति
नहिंगाई ८८३ ॥रागसारंग॥ ऊधोमनतौनहिंदसवी
स एकहुतोसुगयोहरिकेसंगआराधेजगदीस भईसि
पलवासिथेमाधौविनुज्योंदेहीविनुसीस स्वासाअ
टकिरहीआसालगिजीजेकोटिवरीस तुमजोसषा
स्यामसुंदरकेसकलजोगकेईस सूरजदासरसिककी
वतियांकोपुजवैयहरीस ८८४ ॥रागसारंग॥ हरिका
हेकेअंतरजामी जौनहिआइमिलेइहिऔरसेअवर
।धिवतावतलामी कहिनप्रीतिपुहपमधुकरकीअप
नकाजकेकामी तेवयोंपीरपराईजानैजेहेगरूरकेगा
मी माएप्रीतिप्रगटिगईघरसेजैसेंआईघामी सूर
दूतेपरअनुपमरतिहांऊधोपीवतमामी ८८५

॥राग सारंग॥ ऊधौ जोग कि धौं यह हांसी ब्रिन्हीं प्रीति हमारी हरि ज्यों दई प्रेम की गांसी तुम हौ बडे जोग के पालिक संग लीन्हो कुबिजा सी सूरदास सोई पै जानै जा उर लागे गांसी २०६ ॥राग सारंग॥ कहौ तो जो कहिवे को होइ श्रीनाथ बिछुरे की वेदनि जानत नाहिन कोइ जो हम कंधर सुधार सपी पारहा मदन गति मोइ कहा कहौं कछु कहत न आवै तन मन रह्यो समोइ बिरह विथा वेदनि उर अंतर जामी जानै सोइ सूरदास सनकादिक दुर्लभ सो हम भेटी पोइ २०७ ॥राग सारंग॥ ऊधौ जाके माथे भाग बिलपति रहै सकल ब्रजवनिता चेरी चपल सुहाग आए जोग कौ विलिब दावन आदि प्रेम को वाम दासी जो पटरानी कीनी है मेटि न वैराग भली सुहायो साथ वन्यो है राजहंस अरु काग निलज भए दोऊ बेलत है वारह मांसी फाग लौंडी कौडी रीवाजी है हांसी अरु अनुराग सूरदास प्रभु यही अचंभो चतुर चचोर तर्क आग २०८ ॥राग नट॥ ऊधौ तुम ब्रज पैंठि करी लै आए हौ न प्रा जानि कैं सब तें अैवसे करी हम अहीर माषन मथि वेचें सवन टेक पकरी यह निरगुन निरमोल गांठरी क्यों नाहि वरत धरी यह व्यौपार उहां जु समातो इतनी वडी नगरी सूरदास गाहक न हि कोऊ देषत गोरे परी २०९ ॥राग धनासिरी॥ ऊधौ जोग ठगोरा ब्रज न विकै है मूरी के पातन के वदले को मुक्ताहल दे है यह व्यौपार तुम्हारो ऊधौ अैसो ही धर्यो रैहै जिनि पै ते लै आए मधुकर ति

सू॰सा
२९५

नहि कै पेट समै है दाघ छांड़ि कै कहु कनिबौरी जो अपने मु
ख नैहै गुन करि मोही सूर सांवरें जो निरगुन हि निवे हैं
८८० ॥राग सारंग॥ ऊधो अब कछु कहत न आवै । सिर पर
सौति हमारे कुविजा चाम के दाम चलावै विसये सि छ अ
सुरदासि नु को अब कुलवधू कहावै नटनी लौं कर लिये
लकुटिया कपि ज्यों नाच नचावै कछु इक मंत्र पढ़ो चंदन
में ता तें स्याम हि भावै अपनें ही रंग रंगे स्याम लै सु कज्यों
वेढि पढ़ावै हम सौं वेत हेतु कुविजा सौं लिखि लिखि जोग
भए पठावै सूरदास प्रभु अति ही निठुर झूठे लोन लगावै
८८१ ॥राग सारंग॥ मीठी बातन मैं कहा लीजे जो ऊधो हरि
होहि हमारे करन कहैं सो कीजे । जिन मोहन अपनें कर आ
नन करन फूल पहिराए तिन मोहन माटी के मुद्रा मधुकर
हाथ पठाए एक घोस वेनी विंद्रावन रचि पचि विविधि
बनाई ते अब कहत जटा राखन कों वदलो नाम कन्हाई
लाइ सुगंध बनाइ आभूषन अरु कीनी अरधंग सो वैअ
वकाहि कहि परवत है भसम चढ़ावहु अंग कहा करौं कु
रि नदनंदन तुम जु मधुप मंड पाती सूर न होहि स्याम
के मुख की जाउ न जारौ छाती ८८२ ॥राग सारंग॥ ऊधो
भले भूलि तुम मटके बहुत कही कछु लाल लडैते तुम ता
हीं पै अटके देख्यौ सकल सयानाते हारौ लीन्हें अति छ
रि मटके तुम्हे आपु वहराइ इनकौं वे कुविजा सौं अटके
ली जो जोग संभारि आपुनौं जाव तुरत ही टटके सूर स्या

मनजिकोउनलैहैंइहांइहिजोगहिकद्के ८८३ ॥रागनट॥
ऊधौजानीहरिचतुराई वारवारतुमकहतजुयामेंपावत
कौनंवडाई जोतुमकहतजुअगमअगोचरहरिरसतजेया किं
नजाई वाहिरभीतरस्यामहमारैतेसुनीइहिभलाई कै
तुमकहतिउकतिअपनीतेकैतुमकह्यौकन्हाई सूरदास
प्रभुविरहजरीहमविनुपावकदौलाई ८८४ ॥रागनट
ऊधौतुमजुनिकटकेवासी इहनिरगुनलैताहिसुनावौजे
मुडियाहैंकासी मुरलीधरनसकलअंगसुंदररूपसिंधकी
रासी जोगवटोरेंलियेफिरतहौव्रजवासिनुकौफांसी रा
जकुंआरभलेहमजानेंघरमेंकंसकीदासी सूरदासजदुकु
लहिलजावतव्रजहोतिहैहांसी ८८५ ॥रागनट॥ मधुव मे
नकेलोगनकोंपतियाइ मुषऔरैअंतरगतिऔरैपति
यांलिषतवनाइवनाइ ज्यौंकोइलसुतकागजियावैभाव
भगतभोजनषवाइ कुहकुहाइआएंवसंतरितअंतमि
लेकुलअपनेंजाइ ज्यौंमधुकरवेपुहपवासलेवहुरिन
वूझतआइ सूरदासप्रभुस्यामगातसौंनहिकोजियैस
गाइ ८८६ ॥रागनट॥ ऊधौअवधिआसगई जोगकीगति
सुनतमेरेअंगआगिवई धरतहिरदेंसुरतिमूरतितिहूं
तापनई सुलगिसुलगिजुउठतिहीतुमफूंकिआनिदई
सिंधछननजिचरनुकनयहसुनीवाननई भोगकुविजा
सुंदरीसोकौनवुधिदई नैननीरप्रवाहसलिताज्यालदे

सू॰सा
३२६

हर्षई सूरप्रभु की कृपा जाकौं संतन लसिद्धि भई ९९७ ॥राग
नट॥ जाहु जाहु ऊधो जाने हो जैसे हरि तैसे तुम सेवक कप
ट चतुराई साने हो नगुन ग्यान तुम पाइ गोपियन सिख
वन कौं व्रज आने हो यह उपदेस देहु लै कुविजहि जाके रू
प लुभाने हो कहां लगि कहौं जोग की वातें वांचत मैन चि
राने हो सूरदास प्रभु हम छोटे सव आपुन वार हवाने
हों ९९८ ॥रागनट॥ निरखत अंक स्याम सुंदर के वारवार
लेलावति छाती नैन नीर आगाद मसि मिलि गई कै गई
स्याम स्याम की पाती उनके गाखव वरत नहि आह अवहूं व्या
रन लागति नाती अव हम हूं धौं कहां भई हैं नित मुनि वि
न नाद मुनि जीती गोकुल वसत नंद नंदन ना निसदिन
कुंज प्रेमरस माती प्राननाथ अव कवहि मिलहुगे सूर
दास व्रजवाल संघाती ९९९ ॥रागटोरी॥ मधुकर जो हरि
कह्यौ सु कहियै न वहम अव उनहीं की दासी मौन गहे वैठी
रहियैं जो तुम जोग सिखावन आए हरिजू कौं कहा कहि
यें जो कछु लिख्यौ सु माथे अपनें आनि सोई सव साहि
यें सुंदर रूप लाल गिरधर कौं विन देखें कहा लहियै सू
रजदास समुझि उनकौ रिस अव कैसें निरवहियै १०००
॥रागगौरी॥ मधुकर उनकी वात हम जानी कोऊ कहुती
कंस की दासी कृपा करी भई रानी कुविजा नाम मधुपुरी
टेढी लिषु वास मन मानी कुटिल कुचील जनम की टे

हीसुंदरिकरिघरआनी अवयहनवलवधूकैवेगीव्रजकी
कहतिकहानी सूरस्यामअवकैसेंमिलिहैंयेजासोंनि
लोसपानी १००१ ॥रागकान्हरा॥ हमसोंतुमसोंकैसो नस
गाई हमअहीरअवलाव्रजवासीतुमजदुपतिजदुराई
कहाभयौजुभएनदनंदनअववेवदलेमाई सकुचन
आवतिघोषवसेकीनजिव्रजगएपराई ऐसेभएउहां
जोंदोपतिगएगोपविसराई सूरदासयहव्रजकौनातौ
भूलिगएवलमाई १००२ ॥रागसोरठ॥ निरमोहियासों
प्रीतिकीनीक्यौंनहीदुखहोइ कपटकीकरिकैपटाझी
तिलिगयौमनमोर सींचिआलमजीटअलिज्यौंविक
टकाटैकोर हमरेमनकीसोईजानेंजाहिवीतीहोइ
कालकरमहिकाढिमुखनेंपेरिदीन्हौहोइ सूरगोपिनु
ऊधोआगेंउहकिदीन्हौरोइ १००३ ॥रागविहागरा॥ ह
मपरहेतुकियैरहिवौ वहदिनऊधौविसरतुनांहा
छिरिछिरिकौचहिवौ देखेंजातआपनीअखियनुयात
नकौदहिवौ याव्रजकौव्यौहारआपसौंहरिआगेंकहि
वौ स्यामसरीरकमलदललोचनकवडुसरैलहिवौ स
वसुघलाउलडाइसूरप्रभुवहीसुधावहिवौ १०४ ॥राग
केदार॥ मनमेंरह्यौनाहिनठौर नंदनंदनअछितकैसें
आनियेउरऔर चलतचितवतघोसजागतसपनसों
वनराति हृदैनेंवहमदनमूरतिछिननुइततउतजाति

कहतकथाअनेगऊधौंलोकलोमदिखाइ कहांकरौंचितप्रे
मपूरनघटनसिंधुसमाइ स्यामगातसरोजआननल
लितअतिमृदुहास सूरप्रभुकेदरसकारनमरतलोच
नप्यास १००५ ॥रागसोरठा॥ हरिबिनुऐसेहीव्रजजीजे पं
कजवराछिसरसउरऊपरसारंगरिप जोभीजे नाराय
तिऊरिसिरपरदाढीपललोचननहिदीजे वारसअज्ञा
सवदकेमिलएनाकारनतनछीजे चंदतेचौथेंजान
मोपितुकौमधुपराछिजसुलीजे सूरदासप्रभुतुमअज
गजीवनदरसप्रगटह्वैदीजे १०६ ॥रागसारंग॥ हरि
सुमिरनकौसूलनजाई वलिवलिजांवस्यामसुंदरके
वहमूरतिवहरहीसमाई कवहुंमहासिंदेनेआलिंग
नकवहुंकहंसनबहोरतगाई एकवारवृंदावनभीत
रगाहिमेरीवहियालाजछुडाई ऊधोवेदिनविसर
तनाहीअवरहोजमुनातटजाई सूरदासहरिके
गुनगावतसुमिरिसुमिरिराधापछिताई १००७
॥रागधनासिरी॥ अखियांहरिदरसनकीभूखी कै
सेरहैंरूपरसरांची सुनिसुनिवतियांरूखी अवधि
अंतरक्रतकमगजोवततोहमेंनहीचूकी अवयह
जोगसदेसौंसुनिसुनिनहुआकुलानीदूखी वार
एकमुखआनिदिखाहुवेपैलेपियोपतूखी सूरसक
नहठिनावचलावहुजोजलसलितासूखी १००८

॥रागसारंग॥ आलीवक्र तिहैं नैंववारी गोकुलनंज्योकूव
रा कारन नेहनहोनजोरावरी जैसीवैयतुनैसोलुनिय(
तु काहे कों करति दौरावरी वहकुविजा असुरनकी दासी
उन्हैं सुहागलडावरी सूरदासपारसकेपरसें कंचन लोह
वावरी १००९ ॥रागधनासिरी॥ हमनंदघोषके वासी नां
मगुपालगुपालगोपिका गोपगुपाल उपासी गिरवर
धरनगऊधनपालिक श्रीगुपाल सुखरासी राजानंद
जसोधारानी सजल नदी जमुनासी मीतहमारेस्या
ममनोहर कंवलनैन अविनासी सूरदासप्रभुकहैं
कहालों असितमहासंगदासी १०१० ॥रागधनासिरी॥
मीठीवातहमारेआगें वारवार अलिकहा सुनावहु क
हौनजाइनारिनागरिसोवेसुनिहै तिनकौं समुझावहु
वजवासी अहारविरहीननरून आगेतुमकाहेनगाव
हु हमें छिजाइ आपुयति बोवन यामें कहौ कहा तुम(
पावन लोचनगए स्यामसंगहीसंग वडेचतुरतेउन्हें
बुलावहु सूरचकोरचंददरसननतजि वैसें जियेतरन(
दरसावहु १०२१ ॥रागकान्हरा॥ निरगुन कौन देसकौ
वासी मधुकर कहिसमुझाइ सुइदसों बूझति सांचुन
हांसी कोहैजनक कौनहै चेतन कौरानीकौदासी कै(
सोवरनभेषुहैकैसो किहिरसमें अभिलासी पावहुगे
पुनिकियो आपनो जौन कहोगे सांचो सुननमौनकै

सू.सा
३१८

रह्यौवावरौसूरसवैमतिनासी १०१२ ॥धनासिरीराग॥
ऊधौकहांकरनवजआए जोगग्यानहमकौंपरमोध
नहरितोनहींपठाए जामुखमुरलीधरिअद्भुतसुर
रागवजाइरिझावत तामुखस्यामकहेंक्यौंऐसी तिहिं
तुमहीतुवनावत अंगअंगआभूषनअपनेंकरकरि
हमैंवनायौं सूरदासप्रभुवैसिंतुमकरकंथाजोगपठा
यौं १०१३ ॥रागरामकली॥ जानीऊधौकीचतुराई जोत
कहतआध्यातमदेषनपावतकौनवडाई वेतुमकहा
सुनीकाहूकी वेतुमकहतकहाई जदिपअगमअगा
धअगोचरहरिरसतज्योनजाई वाहिरभीतरध्यानस
घनवनसुनियतदूरिभलाई सूरस्यामतजिनिगुरव
चनकहिविनुपावकदौंलाई १०१४ ॥रागसारंग॥ वे
वातेंजमुनातीरकी कवहुंसुरतिकरतहरिऊधौ हरन
हमारेचीरकी लैकरिचीरकदमपरवैठेलपकिचढनि
वलवीरकी हमजलभीतरतुमजलवाहिरदेहजुडानी
नीरकी अजौंरीवसननहमदेहैंधाइनंदअहीरकी
सूरदासप्रभुतुम्हौदासविनुकोजानैंपरपीरकी १०१५
॥रागनट॥ प्रेथौयहीस्यामकोआवैं तवकीप्रीति
चरनधजावककदए अवकुविजामनभावै तवकित
पानधर्यौगोवरधनकिनरजविपतिछुडावै तवकि
नमुरलीअधरनधरिकैलैलैनामवुलावै तवकितला

उलटाइलैउनौहसिंहासिकंठलगावै सोअवरूपअनूप
कृपानिधिनैननिहूंनदिषावै जोरहिअंगसमीपरैनि
दिनसोवयौंजोगसिषावै जिहिमुषअमापियौरस
नाभरि सोक्यौंविषहिपियावै करमीडतिपछितात
तिहृदैमेंक्रमक्रममनहितुलावै सूरदासप्रभुविरहवि
रहनीअतिहाअतिदुषपावै १०२६ ॥रागधनासिरी॥
मधुकररह्यौजोगलगनातौ कितरेवकतकोमकोज
अलिहोहिनरहांतैहांतौ जवहिलिमिलिपैपानक
रतहेतुधौंनवहिकहांतौ अवआयौनिरगुनउपदेसन
जोनहिहमैसुहानौ काचेगुनकरितनहिलपेटतुक
रिवारधलीनौतौ मेरैजानगह्यौचाहतुहिवहरिकैमे
गलमानौ रहांनयाकौगाहककोऊमतिचालेकछुवा
तौ अवयहसूरनहांलैदीजेजिनकेपेटसमानौ १०२७
॥रागधनासिरी॥ अवहरिकौरभएरीमाई वसनइतनि
येदूरि मधुकरहाथसंदेसपठयो चितचातुरीचूरि
रूपरासिसवगुनकोपरमतिस्यामसजीवनमूरि ता
सोंकहतनहिंमैदेष्यौहैसवहाभरिपूरि इन्हतौऐसे
हिदेहिसरसुनिरहीविरहतुरिहूरि तापरछरपरकर
नआएहैंधैलाइकीधूरि १०२८ ॥रागधनासिरी॥ ह
मतोकान्हकेलकीभूषी कैसेंनिर गुनसुनैंतुम्हारौ
विरहिनिविरहविदूषी कहियेकहाकहतनहिआ

वैजोहैकहिवेजोग पालागौंतुमहीसेवाउरवसनवावरे
लोग चंदनआभरनचीरचालवरनेकआपतनमकीजै
कुंडलमंडलभसमअधारीनवजुवतिनकौदीजे सूर
देखिउिरतामोपितुकीऊधोउिदवूनपायौ कहौकपा
निधिकेकृपालअतिमेंपढिवेसुपठायौ १०१९ ॥रागध
नासिरी॥ मधुकररहांनहीमनमेरौ उननैननमुसकानि
जानिलेकियोपरायौचेरौ सौंप्यौहाथनंदनंदनकेविस
र्यौवासवसेरौ ताविनुअवनहिलेयसघीरावहमन
काहूकैरौ सूररहांअवभलेनमधुकरकौरपठानसवेरौ
लएसिधारौमंदपरयौअतिरहनिरगुनमततेरौ १०२०
॥रागमलार॥ निसदिनवरषतनैनहमारे सदारहतपा
वसरितहमकोंजवतेंस्यामसिधारे अंजननैननरहत
नकवहूंमुषतंवोरभएकारे अंगकंचुकीसूषतिनाहिन
उचविचवहतपनारे चातकमोरकोकिलावोलनसु
निसुनिअतिमनजारे सूरदासप्रभुतुम्हरेमिलनकौं
मगजोवतदृगहारे १०२१ ॥रागसारंग॥ वहुरिहरिआवंहि
गेकिहिकाम रितवसंतगईमकरचांदनीअतवादरभए
स्याम छिनमंदिरछिनवाहिरठाढेहउगईघाम ता
रेगनतगगनकेसघारावीतेचारोजांम भईविहालसं
भारनतनकीरटलागीघनस्याम सूरदासप्रभुतुम्हरेदर
सविनुअसारहैवेचाम १०२२ ॥रागधनासिरी॥ कहां

लगमानौ अपनी चूक ऊधो हरि बिछुरत यह छती याके
नगई है दूक यह छल यह बनु तनु धनु जोवन भयौ भवंग
की फूंक इहै जरनु है दवा बंदलौं कठिन बिरह की अब आ
गामनि सिरतें हारि लीनी कहा करैं अहि मूक १०२२ सूर
दास ब्रजवास बस्यौ हौ मनौ दाहिने सूक १०२३ ॥ राग सा
रंग ॥ मधुकर यह कारेनु की रीति मन दै हरैं परायौ सरबस
करत कपट की प्रीति ज्यौं षटपद अंबुज दल अंतर रहत
निसा रति मानि दिनकर उदै अंत उठि बैठत ताफिरि न करै पह
हिचानि भूरि भुजंग पिटारी पाल्यौ ज्यौं जननी निजु तातु
कुल करतूति मिटत नहि कबहूं अंत सु डसि भजि जातु को
इल काग कुरंग स्याम घन हैं मैन देषे भावत सूरदास उन
ह[illegible] स्याम की फिरि फिरि सुरति लगावत १०२४ ॥ राग ॥
सारंग ॥ बातैं कहत सयाने की सी कपटनु म्हौरे प्रगट दे
षियतु ज्यौं नलनाएसासी हम सौं कहत नु म्हारे हित की
का है कौं हम भरमत हम हूं अपानु म्हारी ऊधौ थोरा थोरी
भरमत छारू बसारग एसु कलक पुत जातसु लागी बारन
सूरदास प्रभु पद रज ऊधो ना परठि बाड़ारन १०२५ ॥ राग
सारंग ॥ ऊधो अपनो जतन करौ हित की कहत अनहित
की लागति बिनही काज मरौ करौ जाइ उपचार आपनो
हम जु कहति है जी की कछुवे कहत कछू कहि आवतु धु
नि न दे षियतु [illegible] नीकी साध होइ तिहि उत्तर दीजे तुम ते

सू॰सा
३१०

मानीहारि याहीतेंनंदनंदन मानौपढएहौरहांरारि मधु
रावेगिनहीहोइनपाइनवीठेहैतनरोगु सूरदासप्रभुजेदर
सनविनुभएअरधजलजोग १०२६ ॥रागगौंडमलार॥
ऊधौजोहरिहितूहमारे तहियोजाइकृपाकरितुनसौंशिर
हवियाजियजारे ज्योंजलतुमगोप्रेमभिजावतप्रेमनदि
तघनतारे नहिंभीजितनहिंजातछारहै सुलगिसुलगि
भएआरे औरकपोतकोकिलाखंजनवधिकवियोगविडा
रे इतनीकुनवैयोंसहेसूरप्रभुरजकेलोगविचारे १०२७
॥रागटोडी॥ ऊधौतुमअतिचतुरसुजान जोपहिलेंरंगरं
ग्योस्यामरंगअवनचढ़सुरंगआन द्वैलोचनवेराटरूप
श्रुतगावतएकसमान भेदचकोरकियोंताहूमेंविधप्रा
नमरिपभांन विरहितुभेदकियोयालागोतुमहोपूरन
ग्यान दादुरजलविनुजियेपवनभखिमीनतजेहठिप्रा
न वारिजवदनेनैनषटपदमेरेअवकरिहैंमधुपान
सूरदासगोपिनुपरतिग्यानछुवैंजोगविरान १०२८॥
॥रागमलार॥ हमरैंकौनजोगविधिसाधैं वटुवाखारीडंड
आधारीइतनीकोआराधे पोनआसनविभूतमृगछा
लाइतनीकौतनवांधे सूरदासप्रभमानिनपरहरि छा
रगांठिकोवांधे १०२९ ॥रागसारंग॥ ऐसेसमएजोहरि
आवहिं निरखिनिरखिवहरूपमनोहरनैनवहुतसुच
पावैंहिं स्यामघटातैंसोईहरितवनत्योंवगपांतिदिखा

वहिं नैसैोईमोरकुलाहलसुनिकैं हरषिहिंउोरनगावहिं
कवहुंकआइजुहिलिमिलिषेलें कवहुंककुंजनगावहिं
कवहुंकसंगलैसषासेलपरमुरलीमलारवजावहिं वि
छुरेप्रानरहतनहिघटमें सोपुनिआनिजियावहिं
जहांजहांउठिचलेसूरप्रभुतहांतहांउठिधावहिं १०३०
॥रागटोडी॥ माधौतवहूतनेजततनकाहेकौंकियै अपनें
जानमाननंदनंदनअनेगभयनतेंराषिलियै अघव
कवतनविषमवंधनहतिव्यालजातिदौंअनलपियै
इंद्रमानमेट्यौगिरकरधरिछिनछिनव्रजआनंदजि
यै वारंवारकहांलौंवरनैंजोअनेगसुषहमहियै
सूरजप्रभुअवविरहकीवेदनिमेटिसकततनाहिकौनलि
यै १०३१ ॥राममलार॥ जोपैनंदसुवनघरहोते तौतुमर
पावसपिकविनतासुनिकेतहमडरतीतोते स्यामहि
विनाजांनिहमअवलातनरतिपतिअतिजोते वजप
रगरजिगरजिघनवरषतुमदनवढावतुपोते अवगोर
कुलपरवरसलागतुहैलेतनसमलसओतें सूरदासप्रभु
सजलधरनिविनुकहासिराइअवमोते १०३२ ॥रा
गकेदार॥ उडपतिसौंविनवैंमरगनैनी तुमहिकहतउ
डराजअमरनमेंनाजिसभावाकेतवरषतवहिनी उमा

पतिरिपुसुहिआधिनसतावै हा रिपुशानमसत्रु ॥ नितिनै
नी छपानछानहोतिमेरीसजनी भूमघसनिरिपुन
हांलौंदुरैनी मिलनआसलगिएदगदोऊपलनलगा
तरहटकदिनरैनी सूरदासप्रभुअतिआतुरकै जोवनर
हतगुपालकीसैनी १०३३ ॥राग बिलावल॥ जिनरोकै
पियजानदै होहरिविरहजरीजाचतिहौंइतनीवातमु
हिदानदै वेनसुननदेखनवन विरहतइहिसवकुदो
गुडानदै सुनिधुनिमगनभयौहैज्यौंमनुवरनिसकौ
नहिंआनदै जोकछुकपटकियौचाहतहौ सुमौनथा
हिनआनदै मनक्रमवचनसूरअपनोप्रनुराखौंमीन
नप्रानदै १०३४ ॥राग बिभास॥ सषारीकैसेंवननुवज
हरिकौंअवनसुनियतुहैमधुपुरीतेसजनी किनहुं
स्यामकोआवागमन निकटवसतमतिहानभईह
मविलीनचालिकैत्यागिभवन अवअपनेंकुलस
हितसषारीहरिसिधारेजीतिजवन आगमसुपंथ
दूरिदछिनदिसनहांरहतहैंसिंधलवन सूरदासन
रसनुमनुराहि विधिजदुपतिलोलेजातन्रवन १०३५
॥राग आसावरी॥ जौपेहमहिकहमनभावहि तौ
सुनिमधुपजसोधानंदनअवहींगोकुलआवांहि जि
ननैननमोहनमुषदेख्यौ निसदिनरूपनिहारयौ ते

नैनां अवरहन सूनमढ प्रीति नइ दौ विदारयौ ।जिनश्रव
नन सुने वचन मनोहर मुरली कलरवाजन जिनश्रव
नन अव सुनत संदेसन मधुप मरति हमलाजन जि
हितन आसन एकसैन सुष हरि समीप रति माना ति
हिंतन विरह सतावत सजनी एकौ विथा नजांनी स
सि समीर सौरभ औरौ सब जै जे इन समता है विषम वि
रहनी जानि जिदरमति नानें तन अति दाहें अति प्रचंड
हिय अंड महा भट जाहि सवै जगजानें सो मदाहि नें होइ
पापरैं कोपि धनुषन हिं तानें वनाविलास वजवासरास
सुषदेषि देषि सुचपावहिं सूरस्याम मिलि वहुरि क्रीड
विधि विना लाज कै गावहिं १०३६ ॥राग मलार॥ दिषि
घन चहुं दिसनें घन घोरें मानहु मत्त मदनके हाथी छू
टे वंधन तोरें अति मस्तुवत गंउतन मानौ वरसत थोरे
थोरें रूकतन न पवन महावत हूनें मुरतन अंकुस मोरें
लगि वगपंत सुमनौ दंतनि हैं अवधि सरोवर फोरें श्रीपति
विनु भूलें वन निकसी आइ कंचुकी वोरें एन समें आए
ऐरापति जदुपति सौं वरजोरें अव नौ सूरस्याम नेह राव
नु गरन गात जिम जोरें १०३७ ॥राग मलार॥ अषियां अ
ति हि करति हैं आर स्याम सुंदर वहु नायक मिस करि केन
जाहु दिन चार वांह थकी वार सहिउ आवत नकवदेषी डन
हार राधा स्याम स्याम कहि टेरें कालिंद्री के करार अम

लैनैनषंजनतिहिंऊपराजियवूडतुहैवार सूरदासप्रभुतुम्हरे
दरसबिनुसवनतनपंषप्रसार १०३८ ॥रागजैतसिरी॥
अननसवऐसैंलाग्योजान जोवनमगजुगजातसषा
रानिसदिनकलपसमान चात्रकअहपिकवचनस
षारीसुनिनपरतहैंकान चंदनअरुचंदाकीकिरनैंमनु
अनेगहैभान भूषनवसनधोंतजेसजनीजैपारनआनु
रषान भीष्मलौंतनसहतुकामसरज्यौंअरजुनकेबान
सूरसज्यासमसेजसुरंगपरछुटतनचंचलप्रान दरसन
रविजोअवधिवहैदीसूरसुमानतआन १०३९ ॥राग॥
॥सारंग॥ मधुकरतुमजुनिकटकेवासी यहपरमारथस
मुझिकहतहोजोगभलोहैकासी जोगजुगतिऔरधन
कीनोंसाधनमुकतिउदासी ज्ञानप्रकारकहाहमचमानैं
जेगोपालउपासी परमारथ्याजहांलगदेषेबिरहिनुके
दुषदाई सूरदासजेरंगेस्यामरंगजोरजोगसगाई १०
४० ॥रागदेवगंधार॥ जवतेंबिछुरेकुंजबिहारी नादिन
पैरैघटैनहरिजनीबिरहबिथाउरभारी दिगासुंदरावि
रहकीवेदनिजगममहाउज्यारी रविकीकिरनिल
गतिअतिसीतलससिसामतलअतिजारी श्रवननस
वदसुहारसषारी पिकचात्रकदुमडारी ननहिसुहाइन
अतिआतुरकैवंध[illegible]धोउतारी सूरस्यामबिनुबि

षलागतिहै कुसुमसेजवरषारी बिलषिवदनवषभान
नंदनी क्यौंपतिहु दीपजारी १०४१ ॥राग सारंग॥ जैतेदि
नबीते हरिबिनुदेषे गनततगनतसबमिटिगईसजनी
करअंगुरी नीरेषे पाएविरहअमरकरबिसेरभूलीने
नानिमेषे नेउतीयअवधिसूरजप्रभुमतिडरपहुउरले
षे १०४२ ॥रागमलार॥ मधुकरहमकौंकहासमुझावत
वारवारयहजोगगानवतअबलनिआगेगावत संषि
चंदनसुषआनिसुनावतकहिपैऐसुचपावत नंदनं
दनबिनुकपटकथासबकहिकहितचउपजावत देषिबि
चारितुहीअपनेमननागरहैजुकहावत सबसुमननं
तजिबहुरिनिदरिकरिकाहेकमलबंधावत कमलनै
नकरकमलवदनहैंयहीकमलमनभावत सूरदास
मनअलिअनुरागीकहिकैसेंसुषपावत १०४३ ॥रा
गजैतसिरी॥ ऊधोयहप्रेमरहितजोगुकहागायौ दीन
नपैनिदुरवचनकहेकहांपायौ ।जिनकैहमसषासाध
वातेंकहतिनकी श्रवनसुनैस्यामकथादासीहमजि
नकी जिननैननस्यामसुंदरकमलनैनहेर्यौ मूंदनैते
आंषिकहतकौनन्यावतेर्यौ अविनासीनिरगुनवृज
कहाआरभाष्यौ सूरदासजियकोजियकान्हरकहांराष्यौ
१०४४ ॥रागनट॥ मिलवहुपंथमित्रहिआनि जलज

सू. सा
१३

सुनहेसुतकीतचसोंभईरासकीहानि दधिसुतासुतकी
वलिमानोंइंद्रआयुधमानि गिरसुतापतितिलकुंवर
कसहनतुसायकतानि पिनाकीसुततासुवाहनभष
कोंभषविषषानि सषामगारिवसनभूषनमन
हुतासनजानि धर्मसुतकारिसुभावहितज्योसिरध
रियानि सूरदासविचित्रविरहिनिचूकमनमैंमानि
१०४५ ॥राग धनासिरी॥ जान्योनंदसुवनकौहेतु राज
नीतिकीनीतिसुनौहोवारिचरतिहैषेतु जिनकेसंगवि
हारकियेतेजोगसंदेसोदेतु इनवातनसोंइपिभूलेजा
केमननहिंचेत रीझैजाइकंसदासीपरसुधिवजवधून
नलेत सूरदासमनिभूषनऊपरसंषधरतहैंसेत १०४६
॥राग धनासिरी॥ जाकेगुनगावतदिनरात ताकोंनिर
गुनकहतमधुपतुमनईसुनीयहवात जोवारदज
लवरषैनिसदिनुउमडिभरैनदघात स्वांतविनानहिं
कलमधुकरसुनिषग-चात्रककेगात वंसीमधुरसुनाइ
हत्यौमनुदधिषायौलैपात सूरस्यामनृपराजभएअ
वगोपिनुदेषिलजात १०४७ ॥रागजैतसिरी॥ ऊधोका
पैयहवनिआवत सोतिहमारीसिरपरकुविजाचामके
दामचलावत प्रथमन्यावयहभलोविचास्यौ लिषिलि
विजोगपठावत हमतौभोगजनमहूंनजान्योंतापरजो

गसिषावत हमनमंई कुविजासीदासी आपुहि आपुहं
सावत परमतिजानीसूरराबरी अंमततजिविषपावत
१०४८ ॥रागगौरी॥ आजुब्रजकोऊहेइहां आयौ किधौं
बहुरि अक्रूरकूरयह जियतजांनिउठिधायौ नाकौरषदे
ख्यौ मैं ढौरेंतुमकछु सोधनपायौ कैधौंदुषितजानि
कै हमकौं पियसंदेसपठायौ आईसमिटिसषीपूछन
कौ ऊधौदरसनपायौ नवपहिचानितुहिन स्यामकौ
करि भुजरासिरनायौ हरिहिंकुसलकुसलतुमहूंमौकु
सललोगजिनि[illegible]यौ हे वहनगारकुसलसूरजप्रभुकरि
सुरषिजहां छायौ १०४९ ॥रागगौरी॥ देषौनंदद्वार
रथढाढौ बहुरिसषीसुफ[illegible]सुतआयौ पर्यौ संदेहु
रगाढौं प्रानहमारेतबहिंलैगयौं अबकिहिकारनआ
यौ हमजानीयहबातसषीरी कृपाकरनउठिधायौ
ईहिं अंतरा हे आनिउपलकसुतनिहिं छिनदरसनदी
नौं नवपहिचानिसषाहरिजूकौ परमसुचितमनकी
नौ नवप्रनामकीनौ अतिलचवेजौं अतसबहुनगरजो
रें सुनियतुहैं तैसेई देषे परमसुद्वंदजियभौरे तुम्हरौ
दरसनपाइआयनौं जन्मसुफलकरिजानौं ऊधौमि
लनभयौसुषसूरजज्यौं झषपाविपान्यौं १०५० ॥रा
गसारंग॥ सषीरीस्यामसबैइकसार मीठेवचनम

मोहरखोलत अंतरजार नहार नवरंग रंग काम कोइ लपि कन्ह
परिनु की चद सार मदन गुपाल मधुपुरी विरमे गैय नु मंग
लचार ऊनै आई घटा मेघ श्री छेम कीरति अपार सूरदा
स सरिता भरि उमडी चात्रक करत पुकार १०५१ ॥ राग सारं
ग ॥ ए ऊधो तुम सुनहु नवात आंखि देखि यत साखि बूझि
यत वगुलन मारन लात तो हम कहै हें सुनों जो । चित दे देखौ
हो रजजात काहिये जाइ मदन मोहन सों मदन वाधिक
की घात औरों कछु तुम पेव निआवै जो तुम मन पतिया
त अपनी कहीं सुनी उन है कीन पतघरी सब गात सुनि
मधुकर निरगुन उपदेस क्यों छूटे वहनात हम कों विना
नंद नंदन के कल न परे दिन रात ससि विनु जैसे मलिन क
मो दिन रवि विन ज्यों जलजात त्यों हम कमल नैन विनु
देखें तलफि तलफि मुरझात जिन श्रवनन मुरली सुर अ
चयों सिंगी सुनै उरात कुंकुम घसि आचित हरि क्र रत
न तिहिं क्यों भसम सुहात अवलन कों तुम जोग सिखा
वत कहत न नेक लजात जिन चाख्यो हरि परस अमीर
स ते क्यों कटु फल खात अवलों अवधि गनत जीवति हीं
अव नहीं प्रान घटात सूरदास प्रभु नंद जी नि पट हीं ज्यों ह
रे तन पात १०५२ ॥ राग सारंग ॥ ऊधो हम लाइक सुख
हो वात विचारि सुहाती कहियें नहि अनबोल रहो जि
हिं तुम कैसो सो ना जा ओवि अस जिहिं पदवी सब लहों य

हाविप्रीति वूझियेत मनोजवासुराभिनहो ऐतेपरापिरिप्रीरि
समुझावतजोगसुनावत इदोदेहो सूरकहोअलिप्रेरोदा
जैपेहोकहावहो १०५३ ॥ रागसारंग ॥ रहिरहि देख्योतेरो
ग्यान वहसुफलकसुतसवसिलेगयौ तूअवकरतुनिदान
रथावकतुआपलोकलगावतहेतूकहतसंदेस पहिलेही
उरपतिहीतेरोनाहिंमलोअवलेस जोगसवरसुनिविस
सोलागतुहममनवांछितकाम हमअपनेमनकचक्रम
हेंउनपरखोतमकीवांम हमजीवतिआसासुवासरन
चरनकमलकीप्रीति तिनकोकहतधूमघूटनकोदेखोय
हविप्रीति अजहुनसिरावो हियो तुम्हरो असुफलक
सुतदोउ सूरनिकयोखोहेमनमेंदेखिलयो अवसोक
१०५४ ॥ रागसारंग ॥ ऊधोहोहुआगेतेंन्यारे तुमदेखतनु
आधिकदहतुहेंअतेनेननकेतारे अपनोजोगुसेंतिध
रिराखोरहांदेतकितडारे सोकोजोअपनेमुखकहेतजि
मीठफलखारे हमरेसदावसतउरअंतरसुंदरस्यामपि
यारे सूरदासहमसवैसांचमतिएसवखोटेकारे १०५५
॥ रागनट ॥ तिहिनपत्यैयेजोकतहिनमाने सुनिमधु
कररसचाखिचाखिकेजांहुजहांतहांनीतमजाने कोर
लपालिकागप्रलपाएचलेउडाइजवभएसयाने यहतो
कथानंदकीदेखामधुवनतेलेमाधोआने तवतोचार
विचारनकीनोहोतुकहाअवभेपछिताने सूरदासप्र

सू.सा
394
१५

सुजिधके छोटे आमपयोजवनवपहिचाने १०५६ ॥रागसा
रंग॥ एसोंसुनियतहै वेसाष देषतिनहीं जतनजीवे कोजेरे
कोकेउलाष मृगमदमेले कपूरकुमकुमा केसरिमिलवौसा
ष जरतआगि नमैज्यों घृतनायौ तनजारिकेहैं राष ताऊ
परलिबिजोगपढायौ बाहुनावनजिदाष सूरदासऊधौकी
वातेंउठिउठि वैठीताष १०५७ ॥रागहमीर॥ ऊधौकहा जो
गुलेकीजतु उठियतुहै छिउसेयतुहै किधौं षेयतुहैं किधौंपी
जतु कैधौं कछू छिलौनासुंदरकैधौं भूषनहै नीको हमनिस
दिन नंदनंदनचाहैं मोहनजीवनजीको तुमजुकहत निरगु
ननिरअंतर निगमनतेंयहरीति प्रगटरूपछियेरासमनो
हरछांडें कौनप्रतीति ।शिवविरंचसनकादिकनारदसे
सजुवाकोगावें सोईसूरजसोधानंदन गोसुतवृंदचरा
वें १०५८ ॥रागगौरी॥ ऊधौऔरकछूकहिवेकौं पाला
गो सोऊकहिडारोहमसवसुनिसहिवेकौं यहव्योहारआ
जुलौं सजनीश्रवननसुन्यौनदेष्यौ नारसुतापतिय
ठआतिजीरन चाहतहमउरलेष्यौ निसदिनरहतनिम
षनहिविसरतहियेमनोहरऐन याजोगहिरहौंठौर
नाहिनै लैराषौसुषचैन व्रजवासीगोपालउपासीए
वातेंदेछांडि सूरमधुपलैराषिमधुपुरी कुविजाकेघर
गाडि १०५९ ॥रागकान्हरा॥ कैसेंजीवेकमलनैननविनां
नवसषिपलकलगातहूषपावतअवजुवरषभयोए

कछिनां ज्यौंऊजर छरिकौदेवी कोछूजेकोमानैं त्यौंगोपा
लविनांहमऊधोपरी विषमकोजानैं तुमसौहोइसु
कैसौकृपाकरिहम अवलाआधीन सूरवदनदेषैहाजी
वैंज्यौंजलपावैमीन १०६० ॥रागसारंग॥ ववलैकोवद
लौदयौजाव इनकेदोइहमारैएकैवडेजानियैराव तु
मअलिजानिहैमैमोरीसासाधोचाहतदाव हमरीविरम
करमएभाजतहृदैचोगुणाचाव अवतुमसाषिवदेत
हौजैयेमेरहुउरकोदाहु सूरदासक्योहारमजैनैहमतुम
दोऊसाहु १०६१ ॥रागसारंग॥ लिषिनहिंपठवतहैंद्वैवो
ल द्वैकोडीकेकागदमसिकोंलागतुहैवहुमोल हमउ
रवारस्यामपैलेतरवीचविरहकेजोर सूरदासप्रभुहम
रेमिलनकोंहिरदौनिचियौकठोर १०६२ ॥रागसारंग॥
जोगुलैमधुवनतिषवहुजाइ मनवचक्रमअवैजो
ऊधो संगहोचलौंलवाई सुचआसनरेचककमरूपर
कबुंमनकुसिषकोंभाइ विनुगुरनिवरसंदेसनुकैसें
यहऔराछोजाइ जोईजोईकरनदेषियैकृविजासोई
करहिंउपाइ संन्यासहिध्यावैंओवैसंगकहनजुहैंजदुरा
इ सूरदासस्यामकोजोरूचसोईहमधरैंसहाइ आपुस
मंगवरैंजोदासीमौकूतनपैतिनसाइ १०६३ ॥रागकेदा
र॥ ऊधौनैननिग्रहरतलीन्हों स्वांतविनासरसवन
रियतहैंग्रीवबंधाकिनकीन्हों मुरलीउचिनराऊकरि

सू॰सा
३१६

हमतैतोनवहिछांडिततुदीनो वहएष्रानजाहुक्रैसेंहा
वचनहोहुजिनिद्दीन्हें जोकछुजोगसिषावनआए
सुननहीतनमनछीन्हें कैसेंसूरश्रगोचालहियेमे
ननयावतचीन्हों १०६४ ॥रागसारंग॥ कहतकहाला
गतुयामांहें कोटिजतनकरिहौजोऊधोहमनपारहैहों
चाहें काहेकोंआपनेमनफूलतकरावकरमकालौहैं य
हमनतोआवहीनजिजैहोज्योंपयारकैगाहें कासीकै
लोगनलैसिषवहुजेसमुझतयामाहें सूरदासप्रभ
यावृजऊपराजीजनुहेमुषचाहें १०६५ ॥रागसारंग॥ न
अलिकहापरेयोहैपैडें तेरेवचनअजानलथनदुहि
जमवौहूदंदहेंडें यहउपदेससुनतहेमंहेंगोजोचाहेंव
होवडेरें राषतनहीजसोधानंदनकहतवचनजेवडें
छांडिराजमारगयहलीलाकैसेंचलेकुपैडें याआदरप
रआजहूंवैठेटरततनसूरपलैडें १०६६ ॥रागसारंग॥
जदिपमेंवहुतेंजतनकरे तदिपमधुपहरिप्रियाजानि
कें।छिनहुंनप्रानहरे सौरभसुमन।वि।वि।धलैसोव
तिसंततिसेजधरे सनमुषसहतिसमीरसरदससितऊ
नआंगजरे मधुकरमोरकोकिलाचात्रकसुनिश्रवनभरे ३१६
सदारहतिनिरषतिरतिपतिकोनेकनपलकपरे जा
नोनहीकौनगुनइहितनजातेंसवविउरे सूरदाससकु
चनश्रीपतिकेसुमटनवलविसरे १०६७ ॥रागसारं

ग॥ हमरैहृदै कुलसहजीते फाटनुनांहिअजोंउहिआसा
योसवाघसमवीते हमहूंसमुझिपरीनीकेकरियहर
असितनकीरीति वेलहितजेमरनहांसहैकरेमधुप
कीप्रीति अवतोवातघरीपहरकीज्योंवाहकीभीति
सूरस्यामदासीसुषसोवतनहांभएअनचीत १०६८
॥राग धनासिरी॥ मधुकरकोनदेसतेंआयो जवतेंकूरग
योलेमोहननवतेंभेदुनपायो जान्योसषासाथहरि
जूकौंअवधवधनकौंधायो अंगविभागनंदनंदनके
इहिंसकपदरसायो आसनध्यानपवनआराधन
अरुचितमौनवतायो हमविचित्रमनवुद्धिसुलछन
तिन्हेंजोगुवयौंभायो मुद्रासिंगीभसमत्वचामगकहां
जांविरहंस्यायो हमअतिकुसमवरनमुरलीमुषसूर
स्यामगुनगायो १०६९ ॥रागसारंग॥ गढेमनदोऊए
कहिसांचे नषसिषवेसियेस्यामकीसोभाएकमगु
लनावांचे दुरीअगिनदासनमेंजेसेंन्यौंतुमअंतर
स्याम हमजुनपतिउरअधिकशानिकैभाषतवचन
निकाम एसषिअसितदेहधरेजिननेअैसेईसवजां
नि सूरएकतेंएकआगरेहैमधुराकीषानि १०७०॥
॥राग धनासिरी॥ समुझिनपरैतुम्हाराऊधौ ज्योंत्रदोष
उपजेजकलागनिवोलतवचननसूधौ आपुनकोउप

चारनौरैअलि नवनौरनासिखदेहु महारोगउपज्यौहैतु
मकौंगहीसवारीरोगहु उहांमेखनानाभांतिनुकैअलम
धुरासोवैद हमकानरिउरपतिजियअपनेइहिकलं
कअतिवैद सांचीवातछांडिअलितुम्हरीमूठीकौंअ
वसुनिहैं सूरदासमकापलतजिकैहेसज्वारकितचुंनि
हैं १०७१ ॥रागविभास॥ इहिमनमाखनचोरगड्यो
अववैसेंनिकसतुसुनिऊधौतिरछौहैजुअड्यो जदि
पअहीरजसोधानंदनकैसेंजानतुछंडौं हांअवजा
दौंपतिकहियतुहैहमैंनलगतुवडौ कौंवसदेवदेवकी
कहियतुकौजानैंकौवूझै सूरनंदनंदनदिनदेखतऔ
रनकौऊसूझै १०७२ ॥रागसारंग॥ ऊधौमनसुनिजो
गडरी तुमनौचतुरकहावतअतिहीइतीनसमुझिप
री औरीसुमनअनेगसुगंधकसीतलरुचजुकरैंतु
मकोंकौंअलिविनांसरोजहिउरअंतरनधरै दिन
करमहाप्रतापतेजवलसवकौनैजुहरै क्योंनचकौ
रछांडिहिमकरकौंवाकौध्यानुधरै उलटीग्यानुसक
लउपदेसतुसुनिसुनिहृदौजरै जंवूरसतकहौंकिनर
लंपटमधुवरअंवपरैं मुकताअवधिमरालप्रानमम
जौंलगनाहिचरैं निघटैंनलखिसूरज्यौंजलविनुव्या
कुलमीनमरैं १०७३ ॥रागसूहा॥ हरिव्रजनवहि

कह्यौहिं आवन सांचेवचनसुनावहुऊधोविरहविथावि
सरावन हौंयहभेदकहाजानौप्रभुजानमधुपुरीछावन
इननीसुमिरिसुमिरिउरअंतरअवलागीदुषपावन १०
७४ ॥रागसारंग॥ कहौहेनिरगुनसौंपहिचानि मनमन
साजोरूपसिंधमेंरहीअपुनपौसानि जदपिआनिनु
परेसनऊधोपूरनग्यानवषानि चितचुभिरहीमदन
मोहनकीचितवनिमदुमुसक्यानि जोरयौनेहुनंदनं
दनसौंतजपरमतिकुलकांनि छूटतुनाहिसहऊजसु
निसूरजदुषसुषलाभअरुहानि १०७५ ॥रागधना
सिरी॥ तुम्हेमधुपगोपालदुहाई कबहुंस्यामकरतइन
कोमनकैधौसबैसुरतिबिसराई सांचीकहौदेहुश्रवनन
सुषछांडोछियाकुटिलदुतियाई जाचग्याकरिचरन
पकरियहकहियौवानहेतचितलाई हमअहारमतिही
नवापुरीहटकतहीहमकरीसगाई वैनागरनिरमो
हीअंगअंगमेरेकपटषोटीचतुराई भलकबछलहैनां
मतुम्हारौवेगिआरहमैलेहुजिवाई सूरदासप्रभुवि
रदलजावतमेटौइहांकीलोगहंसाई १०७६ ॥राग
धनासिरी॥ बातनसबकोऊसमुझावै जैसौप्रानमको
ऊनांहीजोव्रजनाथमिलावै आयौदूतनिकटकैवा
सीनिरगुनग्यानवतावै जोहमरेहितस्याममनो

हि१

मोहरनैननिक्योंनदिखावै पिछलीकथापुरातनसुनमुनि
सोअवश्रवनसुनावै सोनकहैजोनंदलालउलोसूरप्रभुनिव
सुनावै १०७७ ॥रागमलार॥ कहांलगराखैंरेमनधीर सु
नहुमधुपनैननकमलमांहीविनरैवेवलवीर दाहतदेहचंद
चंदनअरुसुमनसुगंधसमीर छिनछिनवहीसुरतिआव
तिचितचितवतजमुनातीर निसवासरसोवतनहेंजागतअ
तिअतिभीरउछीर सूरदासगउरहोहृदैमेंसुंदरस्यामसरी
र १०७८ ॥रागधनासिरी॥ ऐसोजोगुनहमपैहोइ आंखि
मूंदिकहांपावैंदूढैंअंधेरैंज्योंटकटोइ भसमलगावनकह
तजुहमकोंअंगकुमकुमाधोइ सुनिकैवचननिरसामधु
रआवतुहैअतिरोइ कुंतलकुटिलमुकटकुंडलछवि
रहीचितमेंपोइ सूरस्यामविनुप्रानरहैरहांकोटिकरोकि
निकोइ १०७९ ॥रागजैतसिरी॥ लरकाईकोप्रेमकहोअलि
कैसेंछूटतु कहाकहोंव्रजनाथचरितअंतरगतमेरोमन
लूटत वहचितवनिवहचलनिमनोहरवहमुसक्यानि
मंदधुनिगावन वहनटभेषनंदनंदनकोवहविनोदव
हवननेंआवन चरनकमलकीसौंहकरतिहोंयहसंदे
समुहिविषसोलागत सूरदासप्रभुनिमषनविसरतिमो
हनमूरतिसोवतजागत १०८१ ॥रागसारंग॥ औरसक
लअंगनतेंमधुकरअखियांवहुतदुखारी अधिकपि

रातिसि रातिनवहं जोरिजतनकरिहारी इकटकमार
जोवति चसरोवति महाविथानईमारी मरिगईवि
रहवारमो हनकीनिसदिनरहतिउघारी अंगअंगाश
तिग्यानसलाकेंजो सहिसकेतुम्हारी सूरसुअंजन
आंजिप्रेमरसवेदनिहरोहमारी १००१ ॥ रागमल्लार॥
सषीरीपावससेनपलान्यौं पायौवीचइंद्रअभिमा
नीहारिविनुगोकुलजान्यौं चहूंदिसातेंधूंधिदेषिय
तिकंपतिहेंअतिदेह मनुधाएतुरंगचंचलातिउड
छांईषुरषेह बोलतमोरसैलद्रुमऊपरवागजुउडतन
जिडारें मानोसहियाप्रेरिपरहासभाजनकहनपुका
रें गाजतमेघमयंदगुंजरत अरुदादुरदलकारे सूरज
प्रभुएतेपरवजकीलागतक्यौंनपुकार १००२ ॥रागके
दारा॥ गुपालहिवारेहीतेंटेव जानोंनांहिकहांतेंसीषे
चोरीकेछलछेव नवतौदूधदहीलेषातेंकरिरहतो
हमकानि अवक्योंसहीपरातिहेहमपेंमनमानिकीहानि
हानि तुमअलिसषास्यामकेकहियेराजनीतिसमु
झाइ राजोभएनजानिनहीलोभहिजेगापनहिंजेंदुराइ
बुधिविवेकवलवचनचातुरीपहिलेंलईछिंडाइ सूरदास
प्रभुकेगुनऐसेसोपेकहियेजाइ १००३ ॥रागमल्लार॥
सारंगस्यामहिसुरतिकराव पौढेहोंहिजहांनंदनंदनऊं

चेरेरिसुनाव गईगृीषमपावसरितुआईसवकाहूवि
नचाव तुमविनुव्रजवासी यौंजोलेंज्यौंकरिया।वितुनौ
व तुम्हरीकह्यौमानिहौंऊधौपालागोलेंआव अव
कावारसूरकेप्रभुकौंआविनआनिदिषाव १०८४॥

॥रागसारंग॥ देषौसारंगव्रजहिलियें सारंगकैहेतुनेयह
सारंगसारंगमनहिदियें सारंगउरसिसारंगपरसारंग
सारंग।विमलहियें सारंगठगीवहसारंगसारंगको
धा।कियेसारंगकेरिप्रभुजहिविराजतसारंगमनहिवियें
सूरजदासमिलेवेसारंगतोपेसुफलजियें १०८५॥

॥रागसारंग॥ मधुकरकौनमनायोमानें अविनासी
अतिअगमअगोचरकहाप्रगतिहैजानें।सिषवहुजा
अतिअगमअगोचरकहाप्रगतिहैजानें।सिषवहुजा
इसमाधिजोगमतिजेसवलोगसयानें हमअपनेंर
जऐसेहिंवसिहें।विरहवाइवौराने जागतसोवतनि
सअहवासररहिहैंरूपरमानें वालकिसोरकुंवरली
लासुषसिंधसुधाजुसमानें हमरेतनमनप्रानसूरह
रिमरहुमुसक्यांनविकानें यौंजुवूंदअलपषेनि।धेमें
सोकोजोपहिचानें १०८६ ॥रागधनासिरी॥ हरिमुषनि
रषिनिमेषविसारे ताहीदिनतेंभएउगंवरइननैननवे
नारें सहजसमाधिरूपरसअटकेटरतनइतउनटारे घूंघ
टपटपुरावनवीथिनमेंआहिनिसरठतउघारे तजीसिषा
सिषसासससुरकीलाजजनेऊजारे ताकेवीचविषम

आवेकोंवंधुपितापचिहारे सूरप्रभुनतिसमुझतिरानी
कैंऊधौवचननतिहारे कहाकरौसिषमाननतनांहीलोच
नहठीहमारे १०८७ ॥रागमलार॥ सषीरीस्यामकहा
हितजानें कोऊप्रीतिकरौकितनीहूंअपनेहीगुनठां
नें देषोइनजलदनकीकरनीबरषतपोषत आनें चा
त्रकसदाचरनकोसेवकदुषितरहतुजलपानें भंवरकु
रंगकागकोइलकोंकविजनकपटिबषानें सूरदाससर
वसजोदीजैंकारोकृतहिनमानें १०८८ ॥रागधनासिरी॥
ऊधौजोगुजोगिहिदेहु हमअबुधिकहाजोगुजानेंसषि
हमसौंलेहु चंदउदोचकोरचाहैमोरचाहैमेहु हमतो
चाहैंमदनमूरतिस्यामसंगसनेहु उंउभूझाभसमकंथा
कोकरैवनगेहु लाइचंदनअगरकेसरिक्यौंचढावैंषेहु
जोगकीगतिकठिनऊधौमोगहमसौंलेहु सूरअवैनों
दासदुर्लभरह्यौवचनसनेहु १०८९ ॥रागसारंग॥ मधु
करासमुझायोसौवेरानि अहोमधुपनिसदिनमरियतुहैं
कान्हकुवरकीसेरानि चितचुभिरहीत्रंभंगीमूरति चप
लदृगनकीहेरनि चितवनिलियोचुराइहमारोवामुर
लीकोटेरनि कहांलौंकहौंसुभगभुजसोभापीतंवरकी
फेरनि कहतनवनेंबांधवामरिछविवनगायनिकोघे
रनि तुमप्रवीनअलिहैमैंवतावनअबिमूरि भट मे
रनि नंदकिसोरछांडिकोलैहैंजोगजुगतिकीठेरनि

१२७

जहांनपरमउदारनंदसुतमुनतिपरोंनिनऊरारित सूर-
स्यामदिनक्योंजीजतुहैंनिरगुनननदिनरोरिन १०
८० ॥रागसारंग॥ ऊधौयहहितुलागतक्याहैं निसदि
ननैननतपतदरसनकोंनहतन्हैवहीमाहैं नादनयारि
चहूंदिसाचितवतविरहानलकेदाहैं उरतेंनिनसि-
नरोविनसीतलजोयैंकान्हहहांहैं जाकोमनुअटक्यो
हैजासोंवेनैसुओरनिवाहैं जिनिवोरेनिरगुनसमुझेमें
प्रेमनियंहैंचाहैं पालागोंऐसेंहिंरहनदेअवधिआस-
जलथाहैं सूरकहालेकैरैपपीहाकेतनसरसलितोहैं १०
८१ ॥रागसारंग॥ मधुकरकेहिनहिंजानतुवात धूंधि पूं-
न्नि हिरदैमुलगावतउदितनिरूंहांतेंजात जिहिउर
वसेजसोधानंदनिरगुनकहांसमात वितभरकतु-
हैप्रिरनकुसमविनुकहाहोतप्रलपात जदिपसकल-
वनवनविरहतअलिवसतकंतजलजात सूरदासवज-
मिलवनआएसादीकौकुसलात १०८२ ॥रागसार-
ग॥ मिलेंगोपालसोईदिननीको जोनिगवेदपुरानप
देहगांसतजेजियहीको मङ्गभलीभरनोनेहरनोच
लतमेघअरछीको चातृगमीनवेदिनसाधतजव-
धनपरतअमाको प्रूछतहोतोऊनरदीजे विनुप्रूछें-
रसफीको अपनीअपनीठौरसवेहेहारनभयोक्योंसा-
को सुनरेसूरमधुपरजआयोलेअपजसकोटीको स-

रधमधिनआनगनेजोपूमीकोउकौ १०८३ ॥रागसारंग॥
ऊजबसिद्दिविधिहानिभई इकहीगएकलपनतरूजेउप
जाविरहजरई जैसेंहटि कहितरसाइ नीपारहिआनिद
ई जबमनलयोदुस्तनवबोल्योसासीफूटिगई ज्यों
मलाहबिनुनावपाइकेंसुंदरिलेचढई बूडनलागीमं
झधारजबपतवारीनेदई लागिमरिकगरिभूमिकष्ट
पाईजेसआपजसजुतई अबलैसूरखितमेउपजास
वककरीकरई १०८४ ॥रागसारंग॥ मधुकरकौ गोपाल
कहांकौ वासीकासोंहेपहिचानि तुमसंदेसकौनकौ
ल्याएकहतकहाहोआनि अपनीचोंपआइउठिबै
ठतभवरमलोरसजांनि फिरिविहवेलिरहोकेसूषो
नाहिकहाहितहानि प्रथमस्याममनहर्योसवन
कौंउरगरंगलीदानि फिरिज्योंव्याधिकुरंगविवसक
रिहत्योविषमसरतानि पेपीवतफ्तनासंघारिआन
वांध्योवलिदानि सूपनषानारिकानिपातीसूरदास
पहवानि १०८५ ॥रागसारंग॥ ऊधौअवहमछोरकट
ककोपायौ वाजीनांतिरागपहिचान्योंजोनिरगुनलि
खिआयौ जोगीजहांहोइअधिकारीनोंवातहांवुवा
वें जानेकुलजेसीचलिआईतैसीतहांचलावें ऊवि
जाजहांभईपटरानीतुमसेभएउजीर सूरदासवजजु
वतिनऊपाकरनलगेउपचार १०८६ ॥राग सारंग॥

त सू.सा
१२१

ऊधोयहसुनिश्रावतिहांसी कहांकोटिब्रह्मासनका
दिककहांकंसकीदासी इंद्रादिकजोकौनचलावैसंक
रकरहिबवासी आगमनिगमजिहिंपारनपावैसोकु
विजाघरवासी कमलादासीपाइपलोटेकौनगनें
कुविजासी सूरदासप्रभुभक्तवछलहरिबंधेप्रेमकी
फांसी १०८७ ॥राग भैरौ॥ मधुकरपूरननाहमजानी
पाहीनेउनमानदेखियत कहनवडेअगवानी प्रथम
गाइगोधनसंगडोलेभएछाछकेदानी मनहरिलयो
वजाइबांसुरीअवकैवैरग्यानी अरधनिसाव्रजजु
वतीलैलैवनरचनलीलाठानी अवहुंराजनीतिसु
नियतुहैकुविजासीपटरानी महामहकाहेकोमारे
नवछिनसमतामानी सूरदासप्रभुनलमतिवनिता
तिनकीपीरनजानी १०८८ ॥राग ललित॥ इहांतुम
कहतकौनकीवातें सुनिमधुकरहमसमुझतिनांहीछि
रिपूछतिहैंतातें कोनरूपभयोकंसनिमार्यो कोवसु
दिवसुतआहि परममनोहरइहांनंदसुतजोजसुहै
मुखचाहि दिनप्रतजातधेनुवनचारनगोपसखनके
संग वासरगतिरजनीमुखआवतकरतनियमतिपंग
कोपुरानअविगतअविनासीकोविधिवेदअपार सू
रवथाकवादकरतुहैयाव्रजनंदकुमार १०८९ ॥राग

धनासिरी॥ वाजीतांनिरागसवकूंसों कुविजानेकीनीप
टरानी औनन्याववतुमकोयहसूंसो आपुनजारमधुपु
रीछाएहमकोंजोगलिषतहेसूधो घरघरमाषनचूर
नडोलेतिननेसषायवहावनऊधो वरनेंगहाकूवकुवि
जाछविसोअलिउन्हेंमनभावहूजो सूरपरेषेंकौनकी
जिये जिनअववाधनरचोहेदूजो ११००॥रामकेल
सिरी॥माधीजूविरमिविदेसरहे अमरराजसुतनामरेन
रिदिनचितवतनीरवहे मारुतसुतपतिनंदग्रहनजिह
रिमषवचनकहे जलरिपनामजानअवलागे आनेने
हनहे कुंतीपतिपितितासनारिधरताअरीअंगादहे घ
टसुतरिपतनयापतिसजनी अतिउरकपटगहे सेल
सुतापतितासुतवाहनवोलनजातसहे सूरदासयहवि
पतिस्यामसोंओसमुझायकहे ११०१॥रामनट॥म
धुकरएमनविगरिपरे समुझतनंहीग्यानगीताको
मदुमुसक्यानअरे हरिपदकमलविसारतनांहीसी
तलउरसंचरे जोगगंभीरहि अंधकूपज्यों चितवनद
रिउरे वालमुकुंदध्यानरंगरातेइकरकतेनटरे सूधी
होतिनपूछस्वानज्योंकोटिकवेदहरे चरनकमलअ
नुरागमागभरी अमियनगाजगरे सूरहमेंऐसेहिरह
नदेकान्हवियोगभरे ११०२ राग मधुकरकहांपरेय

हराति लोकवेदसवग्रंथरा हितयह कथाकहत।विश्रा
ति जनमभूमिव्रजजननीजसोधा।नहिं अपराध
तजी अतिकुलीनगुननरूप आगरी दासीजाइ भजी
जोगग्यान अस्तुतिगुनमधुकर क्यौंसमुझैं हमग्वारि
सगुनतजिज्यौं आसपेटकी कैरैगोदकोउारि सुनि
अलिदीठकपट हितस्वारथ तजियेवचनविसेष
मनक्रमवचन औरनाहिहमरें सूरस्यामतनदेष १
१०३ ॥रागगंधार॥ सषीरीमथुराहैंद्वैहंस इककअक्रूर
दूसरेऊधोजानततनीकेगूंस एदोउषीरनीर।निरवा
रैंइ।निवधाएकंस इनकेकुलऐसीचलिआईसदा
उजागरवंस अजहूंकृपाकरीगोकुलपैजा।निआप
नोअंस सूरजजोग।सिषावतिअवला।निसुनतहो
तिमनभ्रंस ११०४ ॥रागदेवगंधार॥ सगुनगोपाल
हिक्यौंहमदेत ऊधोकाइन मीठवातन।निरगु
नकैसैंलेत अर्थधर्मकाममनासुनावतसवसुषमुक्ति
समेत वाकीभूषगईमनलाडूसोंदेषौचितचेतजा
कोसिषविचारतवरनत।निगमकहतहैनेत सूरनाज
तजिकैंमुसमूटकैं कोनैहिंमतिएत ११०५ ॥रागमलार
इहिंविधिपावससदाहमारें पूरवपवनस्वासउरव
हिवहि दाहतिसांझसवारें वादरस्यामसेतनैनांज

लवरषतअसुवाधारैं अतनञ्चकासमनौदुतिदामिनीगरज
नामविचारी चात्रकदादुरमोरवकतवजरहतनिरंतरजोरैं पियं
एवतै तेंअटकेंआलिजवतेंस्यामरहितहितटारैं कहियैका
हिकोनंनयहजोनेंविरहाक्यौंहारैं तुमहीसोंकहिकहिप
छितानीसूरविरहकीधारैं ११०६ ॥राग॥ ऊधोकितवेवातैं
चाली अतिहीमीठीतुम्हेंमुषकीअरिउरअंतरसाली जेवे
लीनिजहस्तकमलसोंसींचिस्यामघनपाली अववेवेली
सूषनलागीछांडिगएवनमाली जववेकपाकरतगोकु
लपरसंगलितरजवाली सूरस्यामविनुतवनमुईक्योंवि
रहविथाकीघाली ११०७ ॥रागनट॥ उपमानैनएकरहा
कहीकविनवहुतैंप्रेमाधिकैंकहूंकाहूंनकही कहिचकोर
हरिमुषविधिविनक्योंजीवतिहैदिनराति जोअलि
हैहरिकमलवदनविनुठालेकितमहरात षंजनमनरं
जननजोकहियैंतऊनहींठहरात स्यामरूपसुंदरचोर
लगक्योंनाहींउडिजात जोकहियैविचारिचितअंतर
हैंहगमगहिसमान क्योंनहिजाइरहतवनहरिछ
विजोहैंमुषकीवान जौहैंमीनविछुरिहरिछविजल
कैसेंजीवतआहि हैएसूरपषानसूतरारहेजुरकटकचा
हि ११०८ ॥रागकान्हरा॥ ऊधोइननैननमुलियो नं
दनंदनसोपनरतनकोनोनाहिंऔरवियो ससिचकोर
चात्रकज्योंजलधारोसोवंध्योहियो निसदिनइननै

ननगोपालहिरदैकैप्रेमदियौ ल्याएपुहपग्यानगीतातु
मदृगअलिलचनकियौं हरिमुषकमलसूरमकरंदहिचाह
नहेंजुपियौं ११०९ ॥रागकेदार॥ ऊधौक्यौंराषेंइननैनन
सुमिरिसुमिरिएअधिकतपतहैंसुनततुम्हारेबैनन जुहैंम
नोहरइंदुवदनकेसादरकुमुदचकोर परमसदनसुषसजल
स्यामघनतिनकेचातकमोर मधुपमरालचरनपंकजके
गतिविलासजलमीन चक्रवाकहैंदुतिदिनअरकेंमृगमुर
लीआधीन सकलबिरजलागतुहैंसूनौंबिनुदेषेंवहरूप
सूरजदासनंदनंदनकौंनषसिषरूपअनूप १११० ॥राग
कामोद॥ पूरननाएनैननझूरे तुमजोकहतसुनतहममधु
कररहिदुषतेंअतिमरतविसूरे तुमअंतरजामीजानतस
वबुधिविचारकरिवचनसमूरे एरसमगनरूपसागरमैं
इननिकहाभावनावतधूरे एअलिचपलमूढरसलंपटअ
नसंदेसकथतकटकूरे कहांमनध्यानकहांब्रजवासि
निजिनहियकरनकुलसकरचूरे देषिप्रगटसरितासा
गरसमपूरनजलअतसीतलकूरे सूरस्वानकीबूंदवसे
चितचातककौलागतसबकूरे ११११ ॥रागहिंडोल॥
नैनाबिनुदेषेंनरहत जदपिमधुपतुमनंदनंदनकौं
निरगुनहीजुकहत हिरदैहीतुमहमेंबतावतसुधिकाहे
नगहत पराजुप्रकृतिप्रगटदरसनकीदेषौंईसुचहत

रहराए निरगुन संदेसन श्रवन सुन्यौन सहत अंतरतें संदे
सनु लहिए जासुनीजीयत अहत वदनसरोज विनां अवलो
के नाही सुषहिलहत सूरदास इनप्रीकीवातन सुनि सुनि
देहदहत ॥१२॥ ॥रागललित॥ अवऐनेनअनाथ हमारे म
दनगुपाल इहांतें सजनी सुनियत दूरिसिधारे मधुवनतें
आवनकीआसाजोरजोरमगहारे ज्यौंचात्रकचकोर
स्यामघनवदनसुधानिधिप्यारे हरिहेजलहममीनवा
पुरेकैसेरहैनियारे सूरस्यामकी नीकैसीगति मतनक
नउारतमारे ॥१३॥ ॥रागविलावल॥ कहियोमधुपजाइ
हरिजूसों मोमनअटक्योंनैननलेषें यहैदोसदैदैरुग
रनुतववनिरषत सुषनलगाकुनिमेषें तेइनपै अव
हीभरिमांगतविधिजोंलिषीदरससुषरेषें कैनु मताहि
वताइदेहुतो अवहीदरसजाइतुमपेषें अस्योरहत
संतोषनमानत वीचविचावकस्योजुविसेषें सूर
दासप्रभुया लागनतें नाही टरतवदनाविनुदेषें ॥
१४ ॥रागगूजरी॥ तुम्हरेविरहव्रजनाथगुसाई नैननन
दीवढी लिषेजाति पलकूलनदोऊ एतेमानचढी गो
लकनवकातरनसकतिहैं सककलधीरकूलवोरति ऊरध
स्वाससमीरवीहवललोककलाजनरुतोरति आजकी
चकुचीलभएमारहिवहिउरजानिचोल मनसाप

थकि थके चलवे तें क्यों पहुंचे मुखबोल नांही और उपा
व सिरीपति जिहिं अवलंबन न जीजे अंसूसलिल बूडत है
गोकुल सूरप्रभु करगहिलीजे ११५ **॥रागटोडी॥** ऊधो स्त
नी कहियो जाइ अति कृसगात भई वे हरिबिनु ज्यें म दुषा
री गाइ जलसमूह बरषत है नैनन नहीं न तिलेले नांव ज
हां जहां गोदुहनी करतें सोधति सोई ठांव परति पछार
षाइ तेही छिन अति व्याकुल कै दीन मानहु सूर काढि
डारि हैं जलते मधितें मीन ११६ **॥रागगुनकरी॥** ऊधो नं
दनंदन सों इतनी कहियो जदपि ब्रजअनाथ करि डार्यो
तदपि मयाकरर हियो तिनु मानो रिकरहु जिनि हमसों
एकवास की लाज निबहियो गुन औगुन न बिसारि इ
दैतें दासिनु जीदत नीरन सहियो तुम बिनु प्रान कहा
हम करिहैं को जिनु बिनु प्रान मसुछल हियो सूरस्या
म लिबिजोंगु परायो यह सुनि देह महादुख दहियो
११७ **॥रागगौरी॥** जाहु जाहु आगेतें ऊधो पतिराषति
हैं तेरी काहे कों आनि रोस बउआवत देषति आंखि जरति
हैं मेरी तुम जो कहत सतवत गोविंद सुनियत है कुबिजाउ
निचेरी दोऊ मिले तें सिरहीं तें से वे अहीर वह कंसकी चेरी ३२५
तुम कैसे जुबसीर पटावत कहा बुद्धि कहियेउन केरी सू
रदास प्रभु सब सुधि बिसरी गावत हैं ग्वालन संग हेरी

११८ ॥राग॥ कहियोजोहरि गोकुल आवैं दिनदसरहैंभ
लीकीनीवलि अवनहीं गहरलगावैं हमैंनकछुसुहा
तमैंबिना अंतगृहकाजनभावैं वालाबिलखिमुखगो
नचैरिनवत्सनत्योंनहिधावैं देषत अपनीआंखि
नऊधौबातनहिसमुझावैं प्रेमविचारतिनेननपतैहैं
सूरमिलैंसुषपावैं ११९ ॥रागधंमायच॥ ऊधौअखि
यांअतिअनुरागी इकटकमगजोवतिअरुरोवतिभूलि
हूंपलकनलागी बिनुपावसपावसरितुआईदेषति
हैंविदमान अवहूंकहाकियोचाहतहौ छांडौनीरस
ग्यान सुनिहौसषास्यामसुंदरकेजानतसकलसुभा
इ जिहिविधिमिलैंसूरकेस्वामीसोविधिहमैंबता
इ ११२० ॥रागहिंडोल॥ कवहूंवेऊवातैंकहिहैं नंद
कुमारमिलिहैंनंदनंदनहितकैदुषनदहिहैं तुम
वृजसमाधानकोपठए हमसौंकहनसदेसौ यहक
हांजोगसिषावनलागे अतिजीयभयौअंदेसौ ह
मकिंकरीकमललोचनकी वसकीनीमृदुहास सूर
दासअवक्योंविसरतहैं नषसिषअंगविलास ११
२१ ॥रागरामकली॥ ऊधौयहमनुऔरनहोइ जोपहि
लैंरंगरंग्यौस्यामरंगछुटतनदेषौधोइ एतौवचन
छांडिअलिमोसौंजेहैंदुषकीमूल जोगुहमैंऐसो
लागतहैज्यौंतुहिचंपककूल अवक्योंमिटतिहा

षबरि षा कहो कौन विधि कीजे सूरस्याम मुष आनि
दिषावहु जाद देषें दिन जीजे ११२२ ॥राग देसाषली॥ जदु
पति सो संदेस सषी हो कैसें कै जु कहों बिना कहे मन ही
मन भीतर कौलों सूल सहों जो विचार मो मन में आवतु र
षिय चिसो चिरहों मुष आनत उधो तिन चितवत न
कहि न सकों सषि हों सो सिष मो हि देहु री सजनी जा
तें धीर गहों सूरदास अपनी सेवा सों विनती कै निब
हों ११२३ ॥राग ललित॥ माधो नेक दिषाई देहु बात
न कें पलटें या तन तें जो भावै सो लेहु भूली फिरति चट
पटी लागी। विसरयो तनु अरु गेहु नवनीत इन अपराधी
नैनन बरजत नयो सनेहु कहियो मधुप जाइ पा लागों
विरह कियो तन नषेहु सूरजदास पथिक प्रानन पर तुम
करिहो [illegible] घर एहु ११२३ ॥राग विलावल॥ मधुकर यह
निहचें हम जांनी षोयो गयो नेह नगु करतें शतिकों
घरी भई पुरानी पहिलें मधुर सुधा रस पूषी दयों पोष
बहु लाड लडानी पुनि निरमोहि कियो ससि कों सो छं
डि चकोर हि गए पराती जैसें गए हमें तजि जैसें घनि
गुंजा चुरी डारि भुलानी बहुरि न सोधु लयो ज्यों रसघी
भंवर लता त्यागत कुम्हिली जो चित चोरि लयो। चितव
नि में निरआसा जिनि करों निहानी सूरपरे पसयान
चो तेरें ऊषा यों चाहें दानायानी ११२४ ॥राग विला

बल॥ मधुकर आवतु यही परिषो जो बारै तौं आसव देश्री व
ड़े भए यह देषो जो गाल्लरन आवहु मैं वनावनसुनि सुधि
भूली गात हमपरनेह न छूटत अरुछिन न दिन मोहन्न
बात श्रीयलसुत अरि पटरहतु हैं आपन्न आज लौं तौं र
राजसरेउ ढ़ि मिले आप कुल न्नहा वाइस न्नीपीर तववे
रास विलास कियेबहु वाजमुनतीतीर अवयह सूरदा
स प्रभुकी नो तनन होइ वलवीर ११२५ ॥राग मेघ मलार
नलीवातसुनि यतहैं आज को ऊन मलैनैनपरयौ है
तिन वनाइ अपने सव साज कंस मारि वसुदेव छुटाएरी
नौं उग्रसेन कौं राज कुसलछेम सौं रहन मधुपुरी निसदि
न करन राज के काज राजा भए नहीं हैं पहसुषसुरभीसं
ग आनगोपसमाज सूरदास जो कोटि करौ कोऊ आए कान्ह
रवजतें वाज ११२६ ॥राग गूजरी॥ जानि के वावरी जिनि हो
हु तनु भजे ऐसी कै जैहौं ज्यौं पारस छ्वै लोहु मेरे वचन
सतिकरि मानों छांडौ सव की मोह तौ लौं सव पानी का चु
परी जौ लौं अस्तुति होहु अरे अरे मधुपवात यह न हिन्न
हि न हावरावतु कोहु सूर सुवास छु डाइ घरव सैं हमें व
तावत सोहु ११२७ ॥राग देसी॥ जौ लौं हुदै ग्यान न हि आ
वै तौ लौं कोटि जतन करौ कोऊ विनु विवेक नहि पावै
विनु विचार सव है सपने सो मैं देष्यौ सव जोइ नाना दा
रमाहि ज्यौं पावक प्रगट मथे तें होइ तुम जो कहत सकल

सूसा
३२६
२६

घरव्यापकअमरसवहुनतेंनीरे नषसिषलौंतनप्रगटे
जरतकैक्यौंनकरतहेसीरे सांचेवोलसवेवोलतहैंमु
षमेंउारेगुरसी सूरजकौषदहमेवनावतज्यौंविषमाष
नगुरसी ११२८ राग ऐसीवातनकहौजिनिऊधौ नंद
नंदनकीकांनिकरतिहौंनांतरआषरसधौं वातनहीउडि
जाहुभवरज्यौंनाहींहेहमकाची मनक्रमवचनसोंधि
कहमतौमनमोहनरंगराची पालागौंसोईपैकहियौ
मिटैहृदैकौसूल मुरलीधरकौंआनिमिलावहुऔ
रैपीतदुकूल तुमएवातेकपटकीहमसौंमतिमिलव
हुगाहिछोल सूरवचनसुनिरह्यौठगोसोवहुरिनआ
वैवोल ११२९ ॥रागभूपाली॥ ऊधौकहासिषावनवात
प्रातहोतदेषतिहिंमोहनघरघरमाषनषात जिनकी
वातकहततुमहमसौंतेहमतेंनहिंदूरि हैंहियामिकट
जसोधानंदनप्रानसजीवनिमूरि लरिकनसंगलियें
दधिचोरतषातषवावतडोलत सूरदासक्यौंनीचें
चितवतअवकाहेनहिंवोलत ११३० ॥रागसिरीराग॥
कहाकहौंनेननकीवात एषगजुगलउउयौचाहतहैंप
लपिंजरानसमात इकटकमगजोवतअरुरोवतनलप
नवीततिजांम कलनपरतिइकछिनघरआंगनरटत
स्यामकौनाम अंसुवनसिथलभईएआंषियासवव्रज
वाटयौवार जोगसंदेसभंवरमनएतामधिकहिंविधिउ

नैंपर हरिकैविरहविथा अतिव्याकुलवचतिन अव
लादीन सूरदासगिरधरविनगोकुलजैसैंजलविनु
मीन ॥१३१॥ रागसारंग ॥ रे अलिकहासिषावन आयौ
एतैमैंनरूपरसमातेकहौंनसुनौंपरायौ जोगजुगति
हमकछुनजानैं अरुनौवूझ्यान नवलकिसोरमनो
हरमूरतितासौंमनउरझान मलीकरीतुमआएऊधौ
देषौदसाविचारि कहिवेविथासूरकेप्रभुसौं आरति
हरौहमारी ॥१३२॥ रागसूहा ॥ अलियहप्रकृतिप
रीमनमेरैं जोकोउकोटिकरौक्योंहूं करिफिरतुनहीं
अवफेरैं जादिनतेंजसुधागृहजनमेंसुंदरकुंअरकन्हाई
तादिनतेंवादरसपरसविनुऔरनकछुसुहाई औड
नहंसतेंकपा अवलोकनछिनसमानजुगजाते मरिम
रिपियतअमीछविसुंदरपैलोचननअघाते जागत
सोवतनिसिअरुवासरसुंदरनअतिभावें सूरदास
वाकमलनैननविनुवातनक्योंरहिआवें ॥१३३॥ राग
सारंग ॥ कहाजोराजाजाइभयौं हमकौंकहतऔरकी
औरैं धायौनेवनयौं अवलौंतौनतुतनुसौमोजनु
घरघरमांगिलयौ कैसैंसद्योजातहमपैयहजोगजु
पैदयौ वनवनधेनुचराइग्वालसंगमथिमथिपि
योघयौं सूरजप्रभुअववृजविसरायौछिनयहमतौद

यो ११३४ ॥रागआसावरी॥ ऊधौजोगबिसरिजिनिजाहु
बांधौगांठिछूटिजवपरिहैफिरिकहुंमतिपाछैनाहु ऐ
सोवस्तुअनूपमकौंआलिमरमनजानतऔर व्रजवनि
तानिनैनहीनामकौतुम्हरेंहौहैठौर जोहमहीकौंपठ
योमोहनसोहमनुमहादीनो सूरदासजिनिजोगफिर
योतिनजोगकवैतचकीनों ११३५ ॥रागधनासिरी॥
ऊधौभलीकरीतुमआए एवातेंकहिमहादुषसवव्रज
केलोगहसाए कौंनकाजवृंदावनकौंसुषदहीभातकी
छाक अवतौस्यामऔरकुबिजादोऊवनेएकहीताक
मोरमुकटपीतंवरमुरलीपठवहुसौंहैजेमारा अपनी
जटाजूटसिंगीफिरिलीजेभसमआधारी वेषमस्याम
सभाएकोरेविद्यापठेअनीति अतअचैवेजमुनाजल
सूरजकैयोंनकौरेविप्रीति ११३६ ॥रागदेवगांधार॥ क
हिवेमैंनकछुसकराषौं लावीवेलिदईअलितुमकौं
ववतरहौतिषपाषौं जानेहेतकहतनुमहमकौंसौंहें
कहुंकिहिकाधी तुम्हरौंनहोमुडोकौंयारोउथ्योजातु
ज्यौंआंधी कपटकथाव्रजकहनजुकोऊसुहेदईकौं
बोयौ सूरइतेपरसमुझतनांहीनिपटनांफसरिसो
यौं ११३७ ॥रागगौरी॥ ऊधौतेंकहाचतुरकहावतजे
नहिजानतपीरपराईवातनहियेजरावत जेसंकौ

ननीरकेंबिछुरेकोकरिजतनजियावत हमबिरहनिहैं
नंदनंदनकीतनिरगुनहीवतावत जोगभोगरसरी
गसोगसुषजानिजुगतिसुनावत सोवतजागतसप
नेरनिदिनवहमूरतिमनभावत एइगमधुपसुमनस
वपरहरिवदनकमलरसधावत ।तिनसंदेसनंदनंदनके
कहिकहिलचउपजावत जेजोगानिरमोहाजगतमेंकु
लवधुवनवहकावत तिन्हेंकुटिलकपटीचेतनअंतर
सूरदासकहिगावत ११३८ ॥रागमलार॥ कोउकहिप्री
तिनवादिसजानतु जोतुंबातकहतुअलिऐसीविथा
नहींपहिचानतु जेगुपालगहगहब्रजमांहाचोरिचो
रिदधिषात तेअबदुषितदेषिब्रजवासिनुनिठुरभ
एपुरजात सूरकुटिलताजिननासुनियतिजोगपुरा
नमगावत नबसिबलोंविषरूपवसनुपैमधुवनना
मकहावत ११३९ ॥रागमलार॥ ब्रजमेंजोगकरतजुग
वीतें विनास्यामसुंदरकेसजनीमदनदूततननजीते
ज्योंज्योंवचननिठुरसुनियतहैंजरतहमारेघीते अव
किनसुरतिकरतिगोकुलकीक्योंत्यागीहमजाते सरव
सदयौस्यामकेकारनहमअपनेतननहीते सूरजदास
हमारेलोचनभएकान्हविनुरीते ११४० ॥रागसारंग॥
जिहिंतनगोकुलनाथभज्यौ ऊधौहरिविछुरतनिन

स्व.सा
२८

विरहिनि सोनन नवहितज्यौं जवबहविरहवाइजोभरि
नैंवननन फिरैवौरानी नासौंकहतदेतिनहिंउनरतुमर
अतिपूरनपानी जवसंदनचढिगवन कियोहंसिपि
रिचितयौगोपाल नवहिशनदेहतजिसंगहीउठि त्ला
जेतिहिंकाल तुमरेभ्यानसुनेक्यौंऊधौजिहिंमनला
ग्योमीत सूरदासकछुकहतनआवैकठिनप्रीतिकीरी
ति ११४१ ॥रागसारंग॥ ऊधौभलीकरगोपाल गोकु
लतजिमधुवनहरिलोनीउनविनरजवेहाल चंदन
चीरचारुअतसीनलउरफूलनकीमाल तेअवपावक
समलागतुहैंकौकिलसवदजुकाल सरदनिसासिसि
विमलचांरनीमनौनरनिकीज्वाल सेजसिंघगृहति
मिरकंदरोउरकुविजानटसाल हमएहूतपंदकहांजो
नैंरजवासिनउग्वाल सूरनकवहूंहोहिआपनें
मोगीभंवरभवाल ११४२ ॥रागगौरी॥ ऊधौदृहिंरज
विरहवढ्यौ घरवाहिरसरितावनउपवनदेषेदुमर
नचढ्यौ निसदिनधूंधिमयानकदासतिदिसदिस
तिमिरमढ्यौ दिनदिनप्रवलहेतुअवलनपरजोवन
आनिउढ्यौ देहौंभसमकरीचाहतहैंहाहरिनामर
ढ्यौ सूरदासप्रभुनंदनदनविनुनाहिनपरतकढ्यौ ११
४३ ॥रागगौरी॥ ऊधौनिरगुनतुमहालेहु सरगुनमूर

निनंदनंदनहैंहमैश्रानिसोदेहु अगमपंथअति विक
टकहतहैंनहांसत्रुनकछुनांही सनकादिकसेभूलि
परतहैंहमकैसेंनहांजांही पाचतततपचीसपरकि
रतकहांघरतिहेजांनी हमकहारकैसेंकरिजानैंचारि
वेदकीवानी करिश्रमोधगोपिनुसमुझावात आतं
रगयानवतायो सूरहमारेप्रेमगांक्षिहैंनिकरस्याम
ज्रिहिंपायो ११४४ ॥रागसारंग॥ तुमरेबोलबोलपर
तीति सुनिहोऊधोहमजानतिहैंतुम्हरेगांवकीरीति
सुफलकसुतहरिलएसिधारेआवनकहिगएजीति
वातनुम्हारीकौनपतीजेजैसेभ्रमरकीभीति गमनत
अवधिवदीहरिहमसोंसोऊगईवितीति सूरदासप्रभ
मिलहुकृपाकरिसुमिरिपुरातनप्रीति ११४५ ॥राग
मलार॥ देखौलोगचतुरमधुवनकौ वातनहीगोपा
लविमोहेगुनजानतसवतिनकौ जवहरिगवनकि
योगोकुलतेंछांड्योमोहसवनकौ सूरदासप्रभुतुम्हरें
दरसकौंकलमलातमनमनकौ ११४६ ॥रागमलार
मधुकरतानतुहैंसवकोऊ पकेचोरचपलचितकेहौं
नवकारेतुमअोऊ सर्वसहरतकरतसुषआपनौं
वहुरिनतांकेहोऊ चदननाहिजापरप्रेमवसहोऊ
अपुनपोषोऊ परमकपटघोरविनवपुरोउवर

ननांहींसोऊ सूरसनेहकरैतुमसोंसोसकैजुआपविगो
ऊ ११४७ ॥रागगौरी॥ माधोछांडिदईपहिचान नव
नैविरहकुटिलयागोकुलकौनोंहेनिजथान घरघर
रोरपरीनिसवासरयहदुखबहुतरहैं सखिजनकामजा
नितनआकारकरनकुदारगहें लग नपुकारकयाकरि
आसारह्योहियोभरिपूरि कहानिदरईहानकऊधो
स्यामसजीवनिमूरि नवनैप्रेमविवसकरिअवयह
कहतजोगकीरीति द्वैनपालकरबांटतपरजासूरकौं
नयहरीति ११४८ ॥राममलार॥ ऊधोऔरैकथाक
हौ नतिजउग्यानसुनततनावततनवालिगहिमोनर
हौ जाकेसुनतमहारुचउपजैतपरमप्रेमचितलागे
सुंदररूपअनूपस्यामकौनासोंमनअनुरागे ग्रीष
मरितुआईरजऊपरतपतनैनरविहेरे सूरस्याम
कोजरतबुझावैमेहनेहवितुनेरे ११४९ ॥रागआ
सावरी॥ ऊधोअवयहजाइकैहो लेननधेहमेलोमा
नौकेहरिव्रजआइरह्यौं कानलदेहविरहदौंलागी
इंद्राजीवजरैं बुजैस्यामघनजोमुखमुरलीधूनिरस
बूंदपरैं सगुनसरोवरमांहमीनमनजियतिप्रेम
रसप्रीति तुमनिरगुनवातमेंडारतसूरकरतविपरीति
११५० ॥रागगौरी॥ रटतमनअनदिनपारवरा सु

निजलकमलनैनकीवानैंटारनप्रीतिजुरी नैननने
हकस्यों भंगीज्यौंरूपध्यानकरिजीते नैंदेवकरतकठि
नकानरज्योंजोगसंदेसनरीते जोरसरीतलताउरकीसो
नवक्योंचाहततोरी सूरप्रेमततकाहेंकाटततीधार
दटोरी १२५१ ॥रागधनासिरी॥ जोपैध्यानहांसोंपाति
पात तौऊधौतुमनिकटरहतक्यौं निरखिसांवरेगात
वानकहतजललेननैनभरिसुरतकरतअकुलात जोपै
हि इघटहरिआंऔंनपैउलटिमधुपुरीजात सगुनप्री
तिजुहमप्रनपालीदुखीहोतिदिनरात जुमनिरगु
नसोंप्रीतिकरीहैसुखवहुतपाछितात ११५२ ॥राग
मलार॥ सवजलतजेप्रेमकेनांतें पैचातककरकस्वांत
बूंदकौंरटतरहतदिनरातें देखौप्रीतिमीनकाजलवि
छुरकछिनमेंतनहारत तजतनप्रेमकुरंगनादरसज
दिपवधिकसरमारत औरनकछुचकोरहिभावतु
ससिदेषतजुगवीतें कोटिपतंगज्योतिवपुजास्यौ
भारैनप्रेमघटरीते इकछिनप्रेमनछांडहिमधुक
रहमहियस्यामविराजें सूरनजैंक्यौंमोहनमूरति
अनितदेहवेकाजें ११५३ ॥रागगौरी॥ जवजवसुर
तिहोतिवेवात सुनहुमधुपवावेदनकीगतिमनजा

नैकैगात रहतनहीं अंतरकैराखें कहतमहा कहिजात
जैसेंउरगछछूंदरिपकरैं छांडतवनैनखात याहीभां
तिसदायाव्रजमेंबीततहै दिनरात सूरदासप्रभुके
मिलिबिछुरें सुमिरिसुमिरिमुरझात ११५४ ॥रागनट॥
मधुकरप्रीतिकैसीहोइ बातसुनिगोपालकीचखउम
डिआएजोइ नाहिंपानीरहतइकछिननत्रुराखतुगो
इ लगैजोगसमाधिकैंकहिं किननदीनोरोइ कहालै
होजाइमथुराऔरदिनदोइ करतनुमजिहिंवा
उएतौप्रगटमिलवहुसोइ नंदनंदनरूपजलसौं
मलिनमुखलेधोइ सूरसकलविसारिजिहिंजल
रह्योहियोसमोइ ११५५ ॥रागसारंग॥ आखिनतें
छिनकान्हकरिनसकैंन्यारे कहारहैनैनाजोनि
कसिजांहतारे निकसतनहिंअंगतेंहरिजतननक
रिहारे मेलिजाहिंअंगअज्योंनसनकेनि[illegible]कारे
नवतेंनहिंरहत जवतेंअलिवचनसूरकूरसेउचारे
वहतअंसवनकेनारे ११५६ ॥रागगौरी॥ तुमअलि
कमलनैनकेसाथी इननेवडेकाजकेऔसरहोत
धूमकेहाथी जवसिसुहुतेंकुमारअसहमअतिप्री
तमहैंजानें अववसभएजाइदासीकेव्रजतेंप्रगटि
पराने करियहकपटइहनविद्यावसभगनरतनअं

गमरज्यों सूरअवधिपढि मंत्रसजीवनज्यावनि हमजि
यनरज्यों ११५७ ॥राग आसावरी॥ अबलघु औरैहे गु
चली मदनगुपालबिनायाव्रजकी सबै बातबदली म
गमदसाचकुमकुमा के जलसों चलि भई निअली सीतल
चंदहूतो सुनि सजनी तिनहू अधिकदली दुग्धफेनस
मसेजभई हरिगृह आनिन्य चली ऐसो विधि या विरह
ज्वालतें लागति नहीं भली अबबह असनबेलिसुनि
सूरजबहुविषफलनफली हरिविधुविमुषनेकनहिं
विगसतिमनसाकुमदकली ११५८॥रागमलार॥ विर
हजरी औनहीं कितजारतु रे पापी निरदई पपीहा पापीक्यों
अधरातपुकारतु सबघरसुखी दुखी नहीं कोउ नोवेद
न कोऊ नांहि विचारतु आपुनवकनकहु सम झतु नहिं
औरनतु कअक्लनि सरमारतु रतिरति कहा सुनावतु
औरन हमरी सौं दुखकहांधारतु सूरकहत ब्रजपर
जि निबोलहि कितेरे अगिलो जनमबिगारतु ११५९॥
॥रागमलार॥ रहुरि बदरा बरसन आए बीती अवधि जे
निनंदनंदन उमडि उमडि घनछाए सुनियतहैं सुरलो
कबसत सखि सेवकन हार पराए के वापिक की पाज्यो नि
कुंजहंन हते अतुराए बनदुषदे विहरावि द्रुमवेली दा
दुरमतु कजिवाए पंछीनि डरहोर अवलनपर कोपि

२१ सू.सा
339

कोपिउठिधाए जाननिनहीकोनगुनसजनीस्यामवहुतदिन
लाए सूरदासप्रभुओरखहावहैं मधुवनवसिविसराए
११६० ॥रागमलार॥ वदरियावधनविरहानिनुआई
पारयो दूंदमोरचातिकपिकचढिनगसिषरसुहाई दामि
निकरकरवारगहेअहसाथकवूंदवनाई मनमथघटाम
ईचिहूंदिसतेंवजसनमुषउठिधाई नदीमुहेगेरसंदेस
पग योवाटअनननअतिछाई इनहमदीनदुषामाधो
विनुदूजेगरजिउराई सुनोघोषजानिकेसजनीइनअ
तिपेलेजनाई वोराधेगिरधरिकरऊपरसूरहरिजुराई
११६१ ॥रागनट॥ आजुघनस्यामहिकीउनहार आयेम
नोसांवरेसजनी देषिरूपकोसार इंद्रधनुषपीतंवरमा
नोंदामिनिदसनविचार हेवगपांतिहारमोतिनुकोच
मकतिसोभाचार गरजगुहारलगेजनुगोविंदनिरषि
नेनभएवार सूरसकलगुनप्रमिरिस्यामकेविकलभई
व्रजनार ११६२ ॥रागमलार॥ कहाहमजानतिनाहींस्या
महि सेवाकरनकराउनअैसीगएजानिकुलनामहि जो
रिप्रीतिजेतोरेसजनीकौनमलाईतामहि नेकहापारप
राईजानेंलुवधेअपनेंकामहि हमसेवाफलपायोम
धुकरकहोजाइघनस्यामहि सूरदासप्रभुअवयहकी
रतिरचोकूवराधामहि ११६३ ॥रागसारंग॥ सपनहुंजोदे
षियेहरीनेननींदपरे विरहनीगोपालविनुकहुकहाउ

पावकौ चंदमंदसमीरज्वालन सदासेजवौरै कहूं काहूंमौ
तिमेरौमनन धीरधरै अतिजतनअनेगमजनी क
छुनचारसौ सूरविनुगोपालननकीकोनतापहरै
११६४॥रागसारंग॥ देषीकालिंद्रीअतिकारी कहियोपथि
कजाइ हरिजूसौहौविरहाजुरजारी गिरप्रजंकतैंपरीधर
निधसितलपतिरागतनभारी तटवारूउपचारचूरज
लवहातिप्रसेदपनारी परेयोविवसमनमीनपंककचष
काजरआयविसारी उरचकईचकवाहरिप्रमिरत निस
निरासअंधियारी भंवरमनौमतिभ्रमतिफिरतिहैं दि
सदिसदीनदुषारी सूरदासप्रभुजोगतिजमुनासोग
तिभईहिमारी ११६५॥रागधनासिरी॥सजनीफिरिकबहूं
नमिलेहरि कमलनैननमिलवेके कारनअपनोसौहौं
रहीबहुतकरि जेजेपथिकजातमधुवनकौं तिनसौंक
याकहीपायनपरि आहुनप्रकटकरीव्रजपतिसौंक
हिगएस्यामगईसखअवधिटरि धीरनधरतुप्रेमव्याकु
लमन लेतउसासनीरनेननभरि सूरदासतनथाकित
भईअवयहवियोगसायरनसकतितरि ११६६॥राग
मलार॥ मानोमाईसवनयहहैभावत अवतुहिदेसनं
दनंदनकौंकोउनसमयोजनावत उलहतनहिंनवपत्र
फूलफलपिकवसंतनहींगावत भ्रमतनमुदितकमल
परअलिकलगूंजिनप्रागउड़ावत पावसविविधिव

रनवादरघनउमडिनउहिदिसछावत कोकिलदादुरमो
रनवोलतदामिनिदुतिनदिषावत आवतनहीस्या
मकाहेतेंदिनदिनविरहवढावत सूरपीरव्रजनाहीजा
ननकितसखायकहावत ११६७ ॥रागसारंग॥ जोतूने
कहूंउडिजाहि कहावकतु अलिरेनिवासरविहैरैनाति
नचाहि विविधिवचनसुदेसवानीरहारिझवतु काहि
पतिहमारोपासलैकेंदूतौकहारिसाद नाहिनेंकोऊसु
ननसमुझत विकलविरहविथाहि स्यामलेतनदाधि
जारेवहुरिकहासमुहाहि रविलेअवअवधिलोंतनन
मदनमुषजिनिषाहि सूरवृजवरजनाथहितनेंविनामो
लविसाहि ११६८ ॥रागसारंग॥ रीकोयलतूसिषसुनि
मेरी जहांवसतहैंनंदनंदनतूतहांजाइआवकारिमेरी
रीकोयलतूआहिस्यामतनजानतिविथाविरहनितु
केरा हरिमुषवचनवोलिकलवानीश्रवनसुनाइमोहि
करिचेरा प्राननकेपलटेनहिपैयतसुनियतिविकति
सुजसकेरा औरनहीतोसीउपकारी जितेजगमैंहैंस
कीघनेरा कहियोप्रगटपुकारिद्वारदै अवलाआनि
अनंगनघेरा व्रजलैआवसूरकेप्रभुकों गाऊंगोकुलको
रतितेरी ११६९ ॥रागटोडी॥ मनोपुतअवभईपातरी ३३२
अनुजसहितवलिरामहमारे वारिकवहूंमिलिनजानरी

सरऔसरकछुनांहिविचारतएब्रजलोगनभलीबातरी
कंचनकांचकपूरकटुखरीपोतअरुहीरासमविख्यातरी
देषेदुऊंहंसमैंसपनेंलागतकहतकबमिलहिमातरी सू
रदाससुकायफलभोगक्योंहचकरिहैंज्वारपातरी ११७०
॥रागकेदार॥ बिधुबैरीसिरपरबसैनिसनींदनपरई नं
दनंदनसुरजनबिनांरहिमोंवसकाई गगनसिषरउतरै
चौगरवहिजियधुराई किरनसंगभुजभरिहैंसैउरतेंनउ
तरई सिरऊपरपैडोकियोअपजसहिनउरई सोपरयंक
रोसखीअबलाजिहिमरई घटनुबढनुहैप्रेतज्योंअबल
निसुधिहरई सूरदाससमसुमाईपैंज्यौंत्योंयहटरई ११
७१ ॥रागसारंग॥ कहियेजोकहिवेकीहोइ प्राननाथबि
छुरेकीवेदनिऔरनजानेंकोइ अधरसुधारसपीपीस
जनीरहामदनरसभोइ जोरसशिवसनकादिकपायौं
सोरसबैरीषोइ कहाकरौंकछुकहतनआवैसुषसपनें
भयोजोइ हमसौंकहिनकरीकमलापतिकहासुनाऊंरो
इ बिरहबिथाजानैपैसोईजापेबीतीहोइ सूरदासम
नहरनमनोहरलैजुगएमनगोइ ११७२ ॥रागमलार॥
सषीरीनंदबीनसुनिआई यहब्रजभूमिसकलसुरप
तिपैंमदनमिलनकरिपाई घनधावनबगपांतिसिर
परैंबैरषतडितसुहाई बोलतपिकतिनकौबरगारजनि
सासिमनुफिरतदुहाई मोरचकोरकपोतमधुपसुकसे

३४

रीनिसगनतिरहतिहींतरि ११८० ॥रागधनासिरी॥ सषा
रीदिषियतुहैंवहगांव जहांवसतहैं नंदलालसौंमोहन
मथुरानांव कालिंद्रीकेतीरवहतहैं परममनोहरठांव
जोतनपांयहोहिंरीमेरे आजुनहोउछिजांव हांनीहोइ
सुहोहिसषीरीहोइहांनाजुनषांव सूरस्यामकेदरस
परससुषउरअंतरनसमांव ११८१ ॥रागसारंग॥ कहां
रह्यौमेरोमनमोहन वहमूरतिजियतेंनहिविसरतिअं
गअंगसवसोहन कान्हविनागोवैंसवव्याकुलकोल्या
वैभरिदोहन माषनषातषवावतग्वालन सषालिये
सवगोहन जववेलीलासुरतिकरतिहों चितुचाहतु
उठिजोहन सूरदासप्रभुकेविछुरेतेंमरियतुहै अतिषो
हन ११८२ ॥रागमलार॥ जियमेंअतिहीहोंसरही मदन
गुपालसुनुरीसजनी वहरिनवांहगही नवरत्नछिन
विछुरनकीवेदनिहुतीनजातसही अववेउनहमइत
व्याकुलहैंऐसीव्यारवही कोअवजाइकहैहरिआगें
छियाजुहमनेंलही जोसुनिकैंआवेउनकेमनगवन
कैरैइनही एगुनसुमिरिलगीहिलकीउर विरहाअनल
दही सूरसंभाररहीनकछुतनठाढीधरनिठही ११८३
॥रागमलार॥ ऐसेंनंदराइकेवारे तिनकौंजिनिपतियाइ
सषीरीजिनतेंहैंनतन्यारे षेलतअंगसंगवृंदावननिम

षनहोतेन्यारे अबवेसुषदाखन भए हमकौं दैजुगए दुष
भारे उरपरमीजनुहैसारंगरिपु नैननीरवहुढारे सूरदास
प्रभुवेगिमिलौअब मेटौसूलहमारे ११८४ ॥रागसारं
ग॥ हरिविछुरनकौसूलनजाई वलिवलिजांवस्यामसुं
दरकैवहमूरतिचितरहासमाई एकद्यौसवंदावनभीत
रगहिअंबरामेरीलाजछुडाई कवहूंविहसिदेतआलिंग
नकवहूं दौरिवहोरतगाई वहदिनुमोकौंविसरतनां
हीं देषि स्यामजमुनातेंआई सूरदासप्रभुतुम्हरेमिल
नकौंनैननकरतअतिआतुरताई ११८५ ॥रागधनासिरी॥
नंदगुपालगोकुलकेवासी ऐसीवातसहेलीसुनिसुनि
लोगकरतहैंहांसी मथिमथिसिंधुसकलसुरपोषे सिंभू
कोविषआसी मामहिमारिराजदयौनानहिं आपुलई
हैदासी आजिपंथछुडाइगोपिकाकुलमरजादानासी
आपुकरतसुषराजसूरप्रभुहमैदेतदुषगांसी ११८६
॥रागविलावल॥ विछुरतश्रीव्रजराजआजुतैंनैननकी
परतीतिगई उडिनलगेहरिसंगअंगतजिकेनगएस
षिस्याममई रूपरासलालचीकहावतसोकरनीनैं
कछुनभई सांचेक्रूरकुटिलसुचमेचकवृथामीनग
तिछवि निलई अबकाहेजलमोचनसोचतसमौगएं
कछुहोतुदई सूरदासअवजउकैचितवतजातेपलक

नंदमादई ११८७ ॥रागधनासिरी॥ अबकैंमथुराहीवेमाधो
आंषोंवदनविलोकेविनुसखिजुगवीततपलआधो ।जिहिंकार
नआनिगईघातेंजियपदकमलनवांधो हियअंतराचि
नचाहदाहसौंलाजमहावनदाधो सोसपनेहूंडाढनआव
तुजोरहिजनतनुलाधो सूरदासतिहिंदेषनकारननैनमरतहैं
साधो ११८८ ॥रागकेदार॥ फिरिव्रजआइयेगोपाल नंदनं
पतिकुमारकहिहैं श्रवनकहिहैंवाल मुरलिकासुरसप्तधुनि
चलियेनिसानवजाइ दिगविजैकरिजुवति जे मंडलर
चौरासवनाइ सुरभीतुरंगसषासुभटसंगउठैगोषुररैन
गगनमंडलचढिचहुंदिसछाइहैरविऐन मधुपवंदीज
नसुजसकहिपरमआयसपाइ द्रुमलतानवकुसुमकुंज
नवसिहैंकुटीवनाइ सकलग्रामगोपेकपाय कपोरि
पापतहार सूरप्रभुब्रजराजकीजैआइअवकीवार ११८९
॥रागकेदार॥ इतनीदूरिगुपालहिमाई कबहूंनहोंमिलि
आई कहियेकहादोसकिहिंदीजेअपनीहीजडताई सो
वतसपनेमांझसषीरीज्योंनिरधननिधिपाई गनत
हीआनिअचानकओक्रिलउपवनवोलिजगाई जोजा
गीकछुहाथनआयोविकलभईअधिकाई ऐसेंहोंमि
लिविछुरिस्यामसौंमनहीमनपछिताई जोजानीनव
संगस्यामकेंक्योंसहतीकठिनाई समुझनपरीसूरतिहिं
औसरकीनीप्रीतिहंसाई ११९० ॥रागसारंग॥ गोपलरा

ऊधौ लिखु नाव मधुवन तें उपठाए स्याम कौं रज हिमें ले आव-
राज समाज नंदतसपानें तनमनधन गजवाज अववहवि
ऊतुवचन ही वदले सौ तू ले री आज जसनिधिउपगार परा-
यौ सौ ले क्यों परकाज सूरदास प्रनिश्चितयह औरहितवसंत
वनराज ११८१ ॥रागनट॥ वे गुन नांही उतरत उरतें जे जे किये
स्याम घन सुंदर सुनहु सखा सब धुरतें प्रथमहि अमित महा
घन बरखे त्रास भये पोपति सुरतें विकल जानि गोकुल कें नंदना
मैं मुरली नोगिरि नुतें औरन पटक्रीने वहुतें उन कंसजु नीच-
असुरतें सूरदास प्रभु कछुन सरी वासकल असुरमनि मुरतें
११८२ ॥रागसारंग॥ दिन दिन तो रन लागे नातौ मधुवन व-
सिगोपाल पियारे प्रेम किधौं हहिहांतौ सीतलतां उरकहूं न
दीसति सबब्रजलागत तातौ नंदलाल गोकुल आवनकी च
लति नहीं कछुवातौ पहिलीप्रीति कैनेंगई सजनी मनन-
रहनु वहरातौ सूरदास प्रभु के विछुरें नें भूली है सुधि सातौ
१५८३ ॥रागगौरी॥ मेरे कान्ह कमलदललोचन अवकी वा
र वहुरि ब्रज आवौ कहा लगे जिय सोचन यही लाल सारह
ति हमारे बैठे देषत रहियें गाय चरावन कान्ह कुंवर सौं मू-
लि न कबहूं कहियें अव ब्रज आइ बहुरि कब जरिहें दाधे मा-
षन की चोरी अपनें जियन वहुरि कव देषौं हारि हलधर की
जोरी एक वार कैं जांहि कृपा करि आन कहा है भेऊ नर अव कें-
आनि सूर सुषदीजे पहुनाई कै सतर ११८४ ॥राग मलार॥

३९ स.
332

देषौरनैनैननसौंघनहारे बिनुरितवाषननिसवासरअ
तिउमडिसजलदोऊनारे भीजतउरअंचलकंचुकिपटमि
लितजलअंजननारे मानौशिवजलसाईवैरहैमूरतिधरि
न्यारे वाढ्योसलिलप्रवलउरअंतरसुषसमूहहुमडारे
वदनसदनकरिरहेवचनषगदुषपावसकेमारे धुमरिघु
मरिवाषनहगपावसउरलागतअंधियारे भोरोवेसूरज
ह्रहिंऔसरबिनुउनगिरधरप्यारे ११८५ ॥राग सारंग॥ भूल
निहौकिनमीठीवातन एअलिहैंउनहीकेसंगी चंचलचि
तसांवरेगातन वेमुरलीजगमोहतधुनिमैंइनकीगुंजसुम
नमधुपातन एषट्पदवेदुपदचतुरभुजवाहभांतिभेद
नाहिंग्यातन वेनिसाहनसदानवलापुह एनितवसतन
वलजलजातन एउडिप्रातअंतमनरंजनस्यारघाम
हारसलोभीजिनिपतियाहुदुहंदुषदातन वेमाधोए
मधुपसूरसुनिदोऊनांहिघाटिनिजघातन ११८६ ॥रा
गधनासिरी॥ कौनकहैहैप्रीतिहमारी यहतौहमनवहीं
तेंजानीजवतेंभएमधुपअधिकारी कुटिलकरीलमहा
रिपचंपकनाहीतेंअसितनअधिकारी आयौरजहि
प्रानसोषनकौंकुसमलताकहा बिचारी जोनितन
ववेलीरसचाषतुअरुजानीसवतेंगतिन्यारी ताअलि
सोंहितकरतसूरप्रभुतौहमरीसवसुरतिबिसारी ११८७
॥रागसारंग॥ मधुकरविरहीप्रेमकरै ज्योंघटपुटबिनुरंगि

हितै

ऐ ज्यौं हूं रंग न रस हियरैं ज्यौं घट अनिल दहै तन अपनौं
पुनि लैं अगमी मैं ज्यौं धर बीज परै अंकुर गहि तौ सत मरन
मरैं ज्यौं सिर सुभट देहि रन सनमुष पाविप रताप तैरें सूर
गुपाल प्रेम पंथ हि चलि कौं दुख सुख हि डरैं ११२८ ॥राग
धनासिरी॥ ऊधो जाइ कहौं बूझि कुसरात जो कै ग्यान होइ
सो जानें कहा तुम्हारी बात कौरे नाम रूप पुनि कौरे कौरे सं
ग सषा सब गात जो कहुं भले हो हिं कारि बिन बदलि सुना
ले जात हम कौं जोग भोग कुबिजा कौं काकौं अंग न सुहात
सूरदास प्रभु सेय सिरीपति जिन पालि तेऊ पछितात
११२९ ॥राग धनासिरी॥ ऊधो हम तव ही तें जो गु लियौ
सुनि मधुकर जब तें मधुबन कौं माधौ गवन कियौ रहत सने
ह स्याम सुंदर कें भसम सिंघउ चढाए पहरि पुरातन चीर मेष
ला चिरि चिरि मेर चिराए श्रुत अवतंस मलिन मुद्रा बलि
पिरती अवधि अधार दासन भिक्षा मांगत डोलैं लोचन प
त्र पसार बेनी बनी कंठ सेली पिय सुमिरि सुमिरि गुन गा
वें बरन लवनि तनं डडोरा नित सुनत श्रवन दुष पावें
परम गुरु रजनाथ छाप करि दयौ मंत्र उपदेस चतुर चे
टकी मथुरापति सौं कहियो जाइ संदेस भोगी कौ देष्यौं
या ब्रज मैं जोगी करन जु आये देष्यौ सिद्ध तुम्हारौ साध
क जिन हौं इहां पठाये भोग मुगति भूले न हि भावत बि

रहमरीवैराग॥ गोरषसवदपुकारतिजारतिरसनारटिअनुरा
ग॥ सूरदासनिजनंनवातकौंयहीहमारौध्यान अलि
अवचलिऔनैउपदेसौघौकौतुम्हरौग्यांन १२००॥रा
गमलार॥ याविनुइहांन्रहोसनौलैशचासंगप्रगटन
थैहैदेतुहमहितुषदूनौं भएनिरदईअमुरसैलसुर
सायरसलिलसमेत उनहूंकृपाकरीयापरनैविरहनि
तनदौंदेत धनिकहूंजुकृपाहमऊपरकरतिस्यामकेहे
त जुगजुगजीवैसुराजन्हैंजुरराहअसनेन निरषि
चंदतिनसुमिरिस्यामसुनाविकलभईव्रजनार सूरदा
सप्रभुराखिलेहुयहजोमरनंकुमार १२०१॥राममला
र॥ प्रीतमविनुव्याकुलअतिरहियतु मधुवनजोजा
ताहौंहरिसंगकिनएतोदुषसहियतु काहेकाम [illegible]
कदुकअंगकरतौकिनवसंतरितदहियतु विनुपाव
सअतिनैनउमगिजलकितसलितउरवहियतु जो
जानतीवहुरिनाहिआवनधाइपीतपटगहियतु सू
रदासप्रभुकेविछुरेतैकहूंनहींसुषलहियतु १२०२
॥रागमालार॥ वरषारितुआईहरिनमिलेमाई गगन
गरजिघनदामिनिअतिहीदिसादिसाचमकाई मो
रपपीहादादुरवोलैंझिल्लीरटलाई कोयलहूनवंदला
गतिननसहानहींजाई पथिकनिपातीपठैरहीहों

कोऊ नहि जाई सूरदास प्रभु विथा न जानी जादौ कोराइ १२०३ ॥राग सारंग॥ धाते दुम करटे के माही विधुरे मदनगुपाल रसिक सखि विरह विथा उरवारी लोचन सजल प्रान ब्याकुल अति विरहानल की डाढी नंदकुमार कान्ह कछु ऐसी जल तें ज्यौं मीन बन काढी नव वेला उलडाइ गुहा सिखि नी सुंदरगाढी सूरदास प्रभु अवक्यौ विसरें कौन वात चित चाढी १२०४ ॥राग सारंग॥ गोपी प्रति ऊधव उतर ऊधौ सौं वार आवा मन मथुरा॥ आयौ उत तें गोउ जिन हि नंदनंदरसि धारे वहीवेन धुनि होर मनी आए रजप्यारे आई सब कुलवधू मिलि ऊधौ देखे जाइ ले आई रजराजस्यों आनंद उर न समाइ अरघ आरती तिलक दूव दधि माथे कीनी कंचन कलस मगाइ औरघरन्न रमारीनी गोपमीर आगन नई मिलि बैठे जदुजान जल झारी आगें धरी पूछत हरि कुसलात कुसल छेम वसदेव कुसल देवी वालि दाऊ कुसल छेम अक्रूर कुसल नीकें कुविजाऊ बूझि कुसल गोपाल की रही सकल गहि पाइ प्रेम मगन ऊधौ भए देखत व्रज कौ भाइ नव ऊधौ मन कही यह न बूझियै गुपाल हि व्रज कौ हेतु विसारि जोग सिखवें व्रजवाल हि पाती वांचि न आवई रहे नैन जल पूरि देखि प्रेम गोपीन कौं ग्यान गरव गयौ दूरि नव इन उत वहार नीर नैनन कौ सांध्यौ ढानी कृष्ण प्रेम माधवा लिगो

३५

पिनुपरमोधैर्यो जोवृतमुनिआराधहीमननमेंपावहिधाइ
सोवृतसाधैगोपिअनदेहुविधैविसराइ सुनिऊधोके
वचनरहीनाचेंअरिनारे मानोमांगतसुधाआनिविष
ज्वालाजारे हमअहीरजोनेअहाजोगजुगतिअरीरीति नं
दनंदनवृतछांडिकैंओलिखिपूजेभीति गोपीमायाअं
धरीआहिअघसमुझैनहिंवूझै ग्यानीआगिनतनेननाहि
सवआगम सूझै वूझैनिगमवुलाइकैंवातअहैसमुझाइ
आदिअंतजाकोनहींकोनपिताकोंमाइ ऊधोजुपेचरनभु
जनहींकोंनऊषलहिंवंधायो जुपैनेनमुषनहिचोरि
दधिकेसैंषायो कोंनषिलाएगोदमेंकहैतोतरेवैन ऊ
धोताकोध्यावहेजाहिनसूझैनेन गोपीआगिनतआग
मअपारऔरअविगतहेसोइ आदिनिरंजननामताहि
वंदेसवकोइ नेननासिकाअगूहैंतहांवृह्मकोवासअ
विनासीविनसैंनहीसहजजोतिपरकास ऊधोघरला
गेअलघेरकहेमननकोधांधावे अपनोघरपरहैरघेर
कहिकोनवुझावें मूरषजादोंजातिहैहमेंसिषावतजो
ग हमसोंभूलीकहतहोहमभूलींकेलोग सुनिगोपिनु
कोप्रेमनेमऊधोकोऊल्यों गावतगुनगोपालफिरेंकुंज
नमेंभूल्यो षनगोपिनकेपांपरैकहैंधन्नियहनेम षन
भुजभरिहमभेटहींऊधूछाक्योप्रेम ऊधोकहिसत
भावस्यावतुम्होंमुषसांचो प्रेमपरमरसअथाकहों

कंचनकौकांचो जोतैपारहजाइयैसोईसिषावहुनेम
मधुपतुम्हारासौकरैंजोगभलौकिधौंप्रेम गोपीप्रेम
प्रेमतेंहोइप्रेमतेंपारहिजैयै प्रेमबंधसंसारप्रेमपरमा
रथपैयै सांचोवूतहेप्रेमकौजीवनजनमरिसाल एकै
निहचैप्रेमकौ क्यौंनमिलैंगोपाल धनिगोपीधनि
ग्वालधनिसुरभीवनचारी धनियहपावनभूमिजहां
बिरमेंवनवारी उपदेसनआयेहुतेमोहिभयौउपदेस
ऊधौजदुपतिपैंगयौकियैंगोपकौभेस भूल्योजदुपति
नामकह्यौंगोपालगुसाई एकवारब्रजजाइदेहुगोपि
नदिषराई गोवरधनप्रभुधांडिकैं कहावसेरहांजाइ
कृपावंतप्रभुजानिकैंऊधौपकरेंपाइ प्रभुजूमोपैंव्रजकौ
प्रेमनेमवरन्यौंनहिंजाई उमग्योनैननीरकहतकछु
वातनआई सूरस्यामभूतलपरेरहेनैनजलछाइ पो
छिपीतपटसौंकह्यौं आलिआएजोगसिषाइ २२०५